अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवादित। - www.onlinedoctranslator.com

ईसा मसीह का एक्वेरियन इंजील

द्वारा लेवी एच. डाउलिंग (1844-1911)

के धर्म का दार्शनिक और व्यावहारिक आधार

विश्व का जलीय युग

यूनिवर्सल चर्च

से लिप्यंतरित

परमेश्वर के स्मरण की पुस्तक

जाना जाता है

आकाशीय रिकॉर्ड

किताब

सार्वजनिक डोमेन - प्रकाशन सूचना - सर्वाधिकार सुरक्षित

अवलोकन

सामग्री की तालिका: परिचय

पुस्तक का परिचय

लेवी द्वारा द एक्वेरियन गॉस्पेल ऑफ़ जीसस द क्राइस्ट - द बुक

भाग 1: नासरत के यीशु - खंड I से XII - (अध्याय 1 - 60) - पाठ

भाग 2: ईसा मसीह - खंड XIII से XVII - (अध्याय 61 - 158) - पाठ

पहाड़ी उपदेश (अध्याय 94-101)

भाग 3: परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/आरोहण/चर्च - खंड XVIII से XXII - (अध्याय 159 - 182) - पाठ

दृष्टान्तों का सूचकांक

आदर्श प्रार्थना

त्वरित संख्यात्मक संदर्भ सूचकांक:

त्वरित हिब्रू वर्णमाला अनुभाग सूचकांक

त्वरित संख्यात्मक - भाग - खंड - अध्याय - अनुक्रमणिका

त्वरित संख्यात्मक अध्याय सूचकांक

विषय-सूची (सारांशित) – कुंभ राशि का सुसमाचार

भाग 1 की सामग्री: नासरत के यीशु - खंड I से XII - (अध्याय 1 - 60) - जन्म से 30 वर्ष तक

भाग 2 की सामग्री: यीशु मसीह - खंड XIII से XVII - (अध्याय 61 - 158) - यीशु की आयु 30 - 33

भाग 3 की सामग्री: परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/आरोहण/चर्च - खंड XVIII से XXII - (अध्याय 159 - 182)

सार्वजनिक डोमेन - प्रकाशन सूचना

परिचय की सामग्री

परिचय प्रारंभ

--छलांग लगाओ **एक्वेरियन गॉस्पेल - क्विक इंडेक्स**

1. एक उम्र क्या है?

2. मीन राशि क्या है?

3. कुंभ राशि क्या है?

युगों का अंत

4. इस पुस्तक में जिस शब्द का प्रयोग किया गया है, उसमें मसीह का क्या अर्थ है?

मसीह

5. नासरत के यीशु और मसीह के बीच क्या संबंध था?

नासरत का यीशु

नाज़रीन की गवाही

6. इस पुस्तक के प्रतिलेखक लेवी कौन हैं?

लेवी का आयोग

भविष्यवाणी में लेवी

7. आकाशीय अभिलेख क्या हैं?

आदमी

लेविस द्वारा ईसा मसीह का एक्वेरियन गॉस्पेल किताब

परिचय

ईवा एस डाउलिंग द्वारा, पीएच.डी.

- संदेशवाहक को लिखें -

इस पुस्तक का पूरा शीर्षक "द एक्वेरियन एज गॉस्पेल ऑफ जीसस, द क्राइस्ट ऑफ द पिसियन एज" है और आलोचनात्मक पाठक इसके बारे में कई प्रासंगिक प्रश्न पूछने के लिए उपयुक्त है। कई प्रत्याशित प्रश्नों में ये शायद सबसे महत्वपूर्ण हैं:

1. एक उम्र क्या है? खगोलविद हमें बताते हैं कि हमारा सूर्य और उसके ग्रहों का परिवार एक केंद्रीय सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाता है, जो लाखों मील दूर है, और एक चक्कर लगाने के लिए इसे 26,000 साल से भी कम समय की आवश्यकता होती है। उनकी कक्षा को राशि चक्र कहा जाता है, जो बारह राशियों में विभाजित है, जिन्हें मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन के नाम से जाना जाता है। इन संकेतों में से किसी एक से गुजरने के लिए हमारे सौर मंडल को 2100 वर्षों से थोड़ा अधिक समय चाहिए, और यह समय एक आयु या युग का माप है। जिस कारण से खगोलविद "विषुव की पूर्वता" कहते हैं, राशि चक्र के संकेतों के माध्यम से सूर्य की गति ऊपर दिए गए क्रम से उलट है।

एक युग की शुरुआत का सटीक समय।

इस मामले को लेकर खगोलविदों में मतभेद है; लेकिन इस प्रस्तावना में हमें विभिन्न जांचकर्ताओं की राय के कारण बताने के लिए नहीं कहा गया है; हमारे वर्तमान उद्देश्यों के लिए पर्याप्त प्रमाणित तथ्य हैं। यह सभी आलोचनात्मक छात्रों द्वारा स्वीकार किया जाता है कि सूर्य हमारे ऐतिहासिक आदम के दिनों में वृषभ राशि में प्रवेश किया था जब टौरियन युग शुरू हुआ था; कि इब्राहीम एरियन युग की शुरुआत से बहुत दूर नहीं रहता था, जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता था। रोमन साम्राज्य के उदय के समय के बारे में सूर्य ने मीन राशि, मछलियों और मीन युग में प्रवेश किया, जिससे कि इस युग में नासरत के यीशु रहते थे।

2. मीन राशि क्या है? इस प्रश्न पर और विचार करने की आवश्यकता है। पिसियन युग ईसाई युग के समान है। मीन शब्द का अर्थ मछली होता है। संकेत को जल चिह्न के रूप में जाना जाता है, और मीन राशि स्पष्ट रूप से मछली और उसके तत्व, जल की आयु रही है। अपनी महान संस्थाओं की स्थापना में जॉन द हरबिंगर और जीसस दोनों ने पानी के बपतिस्मा के संस्कार की शुरुआत की, जिसका उपयोग सभी तथाकथित ईसाई चर्चों और पंथों में किसी न किसी रूप में किया गया है, यहाँ तक कि वर्तमान समय तक। जल शुद्धि का सच्चा प्रतीक है। बपतिस्मा लेने से पहले यीशु ने स्वयं अग्रदूत से कहा:

"सभी पुरुषों को धोया जाना चाहिए, आत्मा की शुद्धि का प्रतीक।" -- कुम्भ राशि का सुसमाचार 64:7

मछली ईसाई प्रतीक थी।

ईसाई शासन की प्रारंभिक शताब्दियों में मछली को हर जगह प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। अपनी उल्लेखनीय पुस्तक, "क्रिश्चियन आइकॉनोग्राफी" में, डिड्रोन कहते हैं: "मछली, आमतौर पर पुरातनपंथियों की राय में, यीशु मसीह का प्रतीक है। मछली को कई ईसाई स्मारकों पर और विशेष रूप से प्राचीन सरकोफेगी पर तराशा गया है। यह पदकों पर भी है, हमारे उद्धारकर्ता के नाम पर और उत्कीर्ण पत्थरों, कैमियो और इंटैग्लियो पर भी।

मछली को बच्चों द्वारा गले में लटकाए गए ताबीज, और प्राचीन चश्मे और तराशे हुए दीयों पर भी टिप्पणी की जानी चाहिए।

"बपतिस्मा के फोंट विशेष रूप से मछली के साथ अलंकृत होते हैं। मछली को लगातार टेबल के बीच में एक डिश पर रखा जाता है, अंतिम भोज में, भोज में इस्तेमाल की जाने वाली रोटियों, चाकू और कप के बीच।"

टर्टुलियन के लेखन में हम यह कथन पाते हैं: "हम मसीह में छोटी मछलियाँ हैं, हमारी महान मछली।" पिछले दो हजार वर्षों में, जिसमें मीन युग शामिल है, निश्चित रूप से पानी में से एक रहा है और उस तत्व के कई उपयोगों पर जोर दिया गया है, और समुद्र और झील और नदी नेविगेशन को उच्च स्तर की दक्षता में लाया गया है।

3. कुंभ राशि क्या है? मानव जाति आज मीन-कुंभ युग के शिखर पर खड़ी है। कुंभ एक हवाई संकेत है और नया युग पहले से ही हवा, बिजली, चुंबकत्व, आदि के उपयोग के लिए उल्लेखनीय आविष्कारों के लिए जाना जाता है। पुरुष हवा को नेविगेट करते हैं जैसे मछली समुद्र करती है और अपने विचारों को बिजली की गति से दुनिया भर में घूमती है। कुंभ शब्द लैटिन भाषा के एक्वा शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है पानी। हालाँकि, कुंभ राशि जल वाहक है, और राशि का प्रतीक चिन्ह, जो राशि चक्र का ग्यारहवाँ चिन्ह है, अपने दाहिने हाथ में पानी का घड़ा लिए हुए व्यक्ति है। यीशु ने इन शब्दों में कुंभ युग की शुरुआत का उल्लेख किया:

और तब जो घड़ा उठाएगा वह आकाश के एक चाप के पार चला जाएगा; मनुष्य के पुत्र का चिन्ह और चिन्ह पूर्वी आकाश में खड़ा होगा। तब बुद्धिमान अपना सिर उठायेंगे और जान लेंगे कि पृथ्वी का छुटकारा निकट है। — कुंभ राशि का सुसमाचार 157:29, 30

कुंभ युग मुख्य रूप से एक आध्यात्मिक युग है, और यीशु द्वारा दुनिया को दिए गए महान पाठों का आध्यात्मिक पक्ष अब बहुत से लोगों द्वारा समझा जा सकता है क्योंकि कई लोग अब आध्यात्मिक चेतना के एक उन्नत चरण में आ रहे हैं; इसलिए बहुत औचित्य के साथ इस पुस्तक को "द एक्वेरियन (या आध्यात्मिक) ईसा मसीह, मसीह का सुसमाचार" कहा जाता है।

एक महत्वपूर्ण घटना।

एक युग से दूसरे युग में प्रभुत्व का स्थानांतरण चेरुबिम और सेराफिम की दुनिया में एक महत्वपूर्ण घटना है। लेवी की पांडुलिपियों में हमें एक सबसे उल्लेखनीय पत्र मिला है जिसमें मीन युग से कुंभ युग में प्रभुत्व के हस्तांतरण का वर्णन

किया गया है, लेकिन यह निर्धारित करना मुश्किल है कि यह तथ्यों का पाठ है या भविष्यवाणी का बयान है। हम कागज को पूरी तरह से पुन: पेश करते हैं।

युगों का अंत

आत्मा में मैं आकाश के लोकों में फँसा गया; मैं सूर्य के घेरे में अकेला खड़ा था।

और वहाँ मुझे वह गुप्त झरना मिला जो बुद्धि और समझदार हृदय का द्वार खोलता है।

मैंने अंदर प्रवेश किया और फिर मुझे पता चला।

मैंने उन चौबीस करूबों और सेराफिमों को देखा जो सूर्य के घेरे की रखवाली करते हैं, वे शक्तिशाली लोग जिन्हें स्वामी बहुत पहले "चौबीस प्राचीन" घोषित कर चुके थे।

मैंने हर करूब और सेराफिम के नाम सुने और सीखा कि पूरी राशि में हर चिन्ह पर दो लोगों का शासन है - एक करूब और सेराफिम। और फिर मैं उस शिखर पर खड़ा हो गया जहां युग मिलते हैं। पिसियन युग बीत चुका था; कुंभ युग अभी शुरू हुआ था।

मैंने मीन युग के संरक्षक आत्माओं को देखा; रामसा चेरुबिम है; Vacabiel सेराफिम है।

मैंने एक्वेरियन युग के संरक्षक आत्माओं को देखा, और आर्चर करूब है; सकमाक्विल सेराफिम है।

त्रिगुणात्मक ईश्वर की ये चार महान आत्माएं पुच्छल पर एक साथ खड़ी थीं, और पवित्र तीनों की उपस्थिति में - पराक्रम के देवता, बुद्धि के देवता, और प्रेम के देवता - डोमेन के राजदंड, पराक्रम के, बुद्धि के और प्यार का वहाँ स्थानांतरित कर दिया गया था।

मैंने त्रिएक परमेश्वर के आरोपों को सुना; लेकिन ये मैं अब प्रकट नहीं कर सकता।

मैंने पिसियन चेरुबिम और सेराफिम से मीन युग का इतिहास सुना, और जब मैंने रामसा लिखने के लिए अपनी कलम ली तो उसने कहा:

अभी नहीं, मेरे बेटे, अभी नहीं; लेकिन आप इसे पुरुषों के लिए लिख सकते हैं जब पुरुषों ने ब्रदरहुड, पृथ्वी पर शांति, हर जीवित प्राणी के लिए सद्भावना के पवित्र नियमों को सीखा है।

और फिर मैंने एक्वेरियन चेरुबिम और सेराफिम को मनुष्य के पुत्र के आने वाले युग, बुद्धि के युग के सुसमाचार की घोषणा करते सुना।

और जब रमासा के सिर से मुकुट उठा लिया गया और कुंभ राशि के धनुर्धर के सिर पर रखा गया; और जब शाही राजदण्ड सेराफिम वाकाबील से सेराफिम सकमाकिल को स्थानांतरित किया गया तो स्वर्ग के आंगनों में गहरा सन्नाटा छा गया।

और फिर देवी बुद्धि बोली, और अपने हाथों को फैलाकर उन्होंने कुंभ राशि के शासकों पर पवित्र सांस की कृपा बरसाई।

मैं उनके द्वारा बोले गए शब्दों को नहीं लिख सकता, लेकिन मैं आने वाले युग के सुसमाचार को बता सकता हूं कि आर्चर ने ताज प्राप्त करते समय कहा था।

और मैं पुरुषों के लिए उस प्रशंसा के गीत की सांस ले सकता हूं जिसे सेराफिम सकमाकिल ने तब गाया था जब उसने नवजात युग का शाही राजदंड प्राप्त किया था।

मैं यह सुसमाचार सुनाऊंगा, और मैं यह गीत हर देश में, और सभी लोगों, और कुलों और पृथ्वी के सभी लोगों के लिए गाऊंगा।

4. "द क्राइस्ट" का क्या अर्थ है जैसा कि इस पुस्तक में शब्द का प्रयोग किया गया है? क्राइस्ट शब्द ग्रीक शब्द क्रिस्टोस से लिया गया है और इसका अर्थ है अभिषिक्त। यह इब्रानी शब्द मसीहा के समान है। शब्द क्राइस्ट, प्रति से, किसी विशेष व्यक्ति को संदर्भित नहीं करता है; हर अभिषिक्त व्यक्ति का मसीहा है। जब निश्चित लेख "द" को मसीह शब्द के सामने रखा जाता है, तो एक निश्चित व्यक्तित्व का संकेत दिया जाता है, और यह व्यक्तित्व कोई और नहीं बल्कि ट्रिनिटी के सदस्य के अलावा होता है, पुत्र जिसने दुनिया के गठन से पहले पिता-माता के साथ महिमा की थी। सभी प्राचीन आचार्यों की शिक्षाओं के अनुसार यह पुत्र प्रेम है; इसलिए, मसीह प्रेम है, और प्रेम ही परमेश्वर है क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। लेवी के आकाशीय पोर्टफोलियो में पाई गई एक और उल्लेखनीय पांडुलिपि मसीह, या प्रेम के ईश्वर का स्पष्ट संभव आदर्श देती है।

मसीह

सृष्टि से पहले क्राइस्ट ईश्वर पिता और माता ईश्वर के साथ आकाश में चले थे।

मसीह पुत्र है, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, शक्ति के देवता और सर्वज्ञ परमेश्वर, विचार के देवता द्वारा उत्पन्न एकमात्र पुत्र; और मसीह परमेश्वर है, प्रेम का परमेश्वर है।

मसीह के बिना कोई प्रकाश नहीं था। मसीह के द्वारा सारा जीवन प्रगट हुआ; और इस प्रकार उसके द्वारा सब कुछ किया गया, और संसार या मसीह के बिना लोगों को बनाने में कुछ भी नहीं किया गया।

क्राइस्ट इन्फिनिटीज के लोगो हैं और केवल शब्द के माध्यम से विचार और बल प्रकट होते हैं।

पुत्र को मसीह कहा जाता है, क्योंकि पुत्र, प्रेम, सार्वभौमिक प्रेम, को अलग कर दिया गया था, सभी चीजों के निर्माता, भगवान, संरक्षक और उद्धारकर्ता होने के लिए नियुक्त किया गया था, जो कुछ भी है, या हमेशा रहेगा।

क्राइस्ट के माध्यम से, प्रोटोप्लास्ट, पृथ्वी, पौधे, जानवर, आदमी, स्वर्गदूत और करूबों ने अपने जीवन के विमानों पर अपना स्थान बना लिया।

वे मसीह के द्वारा सुरक्षित हैं; और यदि वे गिरते हैं, तो उन्हें उठाने वाला मसीह है; और यदि वे पाप करने के लिथे अपके आप को बेच दें, तो मसीह छुड़ाता है।

अब क्राइस्ट, सार्वभौमिक प्रेम, अनंत के सभी स्थानों में व्याप्त है, और इसलिए प्रेम का कोई अंत नहीं है।

प्रेम के महान हृदय से अनगिनत आत्माओं को प्रेम की ऊंचाई, गहराई, चौड़ाई, असीमता को प्रदर्शित करने के लिए भेजा गया था।

हर दुनिया और तारे और चाँद और सूरज को इस प्रेम परमात्मा की एक मास्टर भावना भेजी गई थी; और सब के सब सहायक तेल से अभिषिक्त हुए, और हर एक मसीह हुआ।

उसकी महिमा में सभी गौरवशाली मसीह हैं, जिन्होंने प्रेम के शुद्ध सफेद वस्त्र को पृथ्वी के सभी विमानों में फैलाया - पृथ्वी का मसीह, उसका स्वर्ग, उसकी कब्रें।

समय के साथ प्रोटोप्लास्ट, पृथ्वी, पौधे, जानवर, मनुष्य ने पाप के लिए अपने जन्मसिद्ध अधिकार बेच दिए; परन्तु मसीह छुड़ाने के लिए उपस्थित था।

सभी अनंत में सबसे पवित्र स्थान में छिपा हुआ स्क्रॉल है जो भगवान, त्रिगुण भगवान के उद्देश्यों का रिकॉर्ड रखता है, और वहां हम पढ़ते हैं:

पूर्णता जीवन का चरम है। एक बीज अपने भ्रूण के जीवन में परिपूर्ण होता है, लेकिन उसका प्रकट होना, बढ़ना तय है।

हर विमान की मिट्टी में, ये बीज, जो भगवान के विचार थे, डाले गए थे - प्रोटोप्लास्ट के बीज, पृथ्वी के, पौधे के, जानवर के, मनुष्य के, देवदूत और करूब के, और वे जिन्होंने बीज बोए थे। क्राइस्ट ने ठहराया कि उन्हें विकसित होना चाहिए, और अंत में, अनगिनत वर्षों के प्रयास से, विचार के महान भंडार में लौटना चाहिए, और प्रत्येक अपनी तरह की पूर्णता होना चाहिए।

और प्रेम की असीम आशीष में मनुष्य को जीवद्रव्य का, पृथ्वी का, पौधे का, और पशु का, यहोवा बनाया गया; और मसीह ने घोषणा की: जीवन के इन स्तरों पर जो कुछ भी है, उस पर मनुष्य का पूर्ण अधिकार होगा; और ऐसा था।

और जिस ने मनुष्य को प्रभुता दी, उसने कहा, कि उसे प्रेम से राज्य करना अवश्य है।

परन्तु मनुष्य क्रूर हो गए और उन्होंने शासन करने की शक्ति खो दी, और प्रोटोप्लास्ट, और पृथ्वी, और पौधे और जानवर मनुष्य के साथ शत्रुतापूर्ण हो गए; उसने अपनी विरासत खो दी; परन्तु मसीह छुड़ाने के लिए उपस्थित था।

लेकिन मनुष्य ने अधिकार के प्रति अपनी चेतना खो दी थी; वह अब प्रेम की असीमता को नहीं समझ सकता था; वह स्वयं और स्वयं की चीजों के अलावा कुछ नहीं देख सकता था; परन्तु मसीह वहाँ खोए हुओं को ढूँढ़ने और बचाने के लिए था।

ताकि वह जीवन के सभी तरीकों में मनुष्य के करीब हो, कि मनुष्य प्रेम की शक्तिशाली आत्मा को समझ सके, पृथ्वी के मसीह ने किसी शुद्ध व्यक्ति में अपना निवास स्थान लेने के द्वारा मानव आंखों और कानों पर प्रकट किया, जो कई लोगों द्वारा अच्छी तरह से तैयार किया गया था प्यार का एक उपयुक्त स्थायी स्थान होने के लिए रहता है।

इस प्रकार मसीह ने प्रेम की बचाने की शक्ति को प्रकट किया; लेकिन लोग इतनी जल्दी भूल गए, और इसलिए मसीह को फिर से प्रकट होना चाहिए, और फिर।

और जब से मनुष्य ने देह के रूप में अपना स्थान ग्रहण किया है, मसीह प्रत्येक युग के पहले देह में प्रकट हुआ है।

5. नासरत के यीशु और मसीह के बीच क्या संबंध था? रूढ़िवादी ईसाई धर्मशास्त्री हमें बताते हैं कि नासरत के यीशु और मसीह एक थे; कि इस उल्लेखनीय व्यक्ति का असली नाम यीशु मसीह था। वे हमें बताते हैं कि गलील का यह आदमी मनुष्य के मांस में पहिने हुए बहुत ही शाश्वत ईश्वर था ताकि लोग उसकी महिमा को देख सकें।

बेशक, यह सिद्धांत स्वयं यीशु और उसके प्रेरितों की शिक्षाओं से पूरी तरह भिन्न है। कौंसिल में एक्वेरियन मास्टर्स ने इस प्रश्न का एक उत्तर तैयार किया है जो आवश्यक सभी सूचनाओं को इतनी अच्छी तरह से कवर करता है कि हम इसे पूरी तरह से देते हैं:

नासरत का यीशु

यीशु एक आदर्श यहूदी थे, जो यहूदिया के बेथलहम में पैदा हुए थे। उसकी माँ मरियम नाम की एक खूबसूरत यहूदी लड़की थी। एक बच्चे के रूप में यीशु अन्य बच्चों से अलग थे, लेकिन केवल इतना ही कि पिछले जन्मों में उन्होंने इस हद तक शारीरिक प्रवृत्तियों पर काबू पा लिया था कि उन्हें दूसरों की तरह लुभाया जा सकता था न कि झुकना। पौलुस सही था जब उसने इब्रानियों से कहा:

वह हर तरह से परीक्षा में था जैसे हम हैं, फिर भी पाप के बिना। ——इब्रानियों 4:15.

यीशु ने दु:ख सहा जैसे अन्य मनुष्य दुख उठाते हैं और दुखों के द्वारा सिद्ध किया जाता है; क्योंकि यही पूर्णता का एकमात्र मार्ग है। उनका जीवन क्रॉस और क्रूर व्यवहार के माध्यम से प्राप्ति का एक उदाहरण था। पॉल फिर सही था जब उसने कहा:

वह वह बन गया, जिसके लिए सब कुछ है और जिसके द्वारा सब कुछ है, बहुत से पुत्रों को महिमा में लाने के लिए, उनके उद्धार के कप्तान को दुख के माध्यम से सिद्ध करने के लिए। ——इब्रानियों 2:10.

कई मायनों में यीशु एक उल्लेखनीय बच्चा था, क्योंकि कड़ी तैयारी की उम्र में वह एक अवतार, दुनिया का उद्धारकर्ता बनने के योग्य था, और बचपन से ही वह बेहतर ज्ञान से संपन्न था और इस तथ्य से अवगत था कि वह नेतृत्व करने में सक्षम था। आध्यात्मिक जीवन के उच्च तरीकों में दौड़। लेकिन वह इस तथ्य के प्रति भी सचेत था कि उसे परीक्षणों, झंझटों, प्रलोभनों और कष्टों से महारत हासिल करनी होगी। और उसका सारा जीवन पाने में ही व्यतीत हो गया। उनकी मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान के बाद वे मिस्र में हेलियोपोलिस के मंदिर में साइलेंट ब्रदर्स के सामने भौतिक रूप में प्रकट हुए, और कहा:

मेरा मानव जीवन पूरी तरह से मेरी इच्छा को ईश्वर की इच्छा के अनुरूप लाने के लिए दिया गया था; जब यह किया गया तो मेरे पृथ्वी-कार्य सब हो गए।

आप जानते हैं कि मेरा सारा जीवन पुरुषों के पुत्रों के लिए एक महान नाटक था: पुरुषों के पुत्रों के लिए एक नमूना। मैं मनुष्य की संभावनाओं को दिखाने के लिए जीया।

जो कुछ मैं ने किया है वह सब मनुष्य कर सकते हैं, और जो मैं सब मनुष्य हूं वही होगा।

—– कुम्भ का सुसमाचार 178:43, 45, 46

यीशु उस आदमी का नाम था और इस तरह के आदमी के लिए यही एकमात्र उपयुक्त नाम था। शब्द का अर्थ है उद्धारकर्ता और यीशु एक से अधिक अर्थों में एक उद्धारकर्ता थे।

मसीह शब्द का अर्थ है "अभिषिक्त जन," और फिर यह एक आधिकारिक उपाधि है। इसका अर्थ है प्रेम का स्वामी। जब हम "यीशु मसीह" कहते हैं तो हम उस व्यक्ति और उसके पद का उल्लेख करते हैं; ठीक वैसे ही जब हम एडवर्ड, द किंग या लिंकन, प्रेसिडेंट कहते हैं। एडवर्ड हमेशा राजा नहीं थे, और लिंकन हमेशा राष्ट्रपति नहीं थे, और यीशु हमेशा मसीह नहीं थे। यीशु ने अपने मसीहीत्व को एक कठिन जीवन के द्वारा जीता, और कुंभ राशि के सुसमाचार, अध्याय 55 में, हमारे पास उनके मसीहा बनने या मसीह की उपाधि प्राप्त करने की घटनाओं का एक अभिलेख है। यहीं पर उन्हें पृथ्वी के सर्वोच्च अधिकारियों द्वारा मसीह-राजा के रूप में राज्याभिषेक किया गया था; ठीक से बोलना, 'प्रेम का स्वामी'; और यह हो जाने के बाद वह तुरन्त अपनी यहूदिया और गलीली सेवकाई में प्रवेश कर गया। हम इस तथ्य को पहचानते हैं कि यीशु मनुष्य थे और मसीह परमेश्वर थे,

<u>नाज़रीन की गवाही</u>

यीशु ने स्वयं इस मामले को स्पष्ट किया। एक बार जब वह बैतनिय्याह की एक मण्डली से बातें कर रहा था, तब लोगों ने उसे राजा कहा, और वह खड़ा होकर कहने लगा:

मुझे सीज़र के नियमों के अनुसार शासन करने के लिए सिंहासन पर बैठने के लिए नहीं भेजा गया है; और तू यहूदियों के हाकिम से कह सकता है, कि मैं उसके सिंहासन का दावेदार नहीं हूं।

लोग मुझे मसीह कहते हैं, और परमेश्वर ने नाम को पहचान लिया है; लेकिन मसीह एक आदमी नहीं है। मसीह सार्वभौमिक प्रेम है, और प्रेम राजा है।

यह यीशु केवल एक ऐसा व्यक्ति है जिसे प्रलोभनों से दूर किया गया है, कई परीक्षणों से, वह मंदिर बनने के लिए, जिसके माध्यम से मसीह पुरुषों को प्रकट कर सकता है।

तब हे इस्राएल के लोगों, सुनो, सुनो! मांसल को मत देखो यह राजा नहीं है। भीतर मसीह को देखो, जो तुम में से हर एक में, जैसा वह मुझ में रचा जाएगा, वैसा ही बनेगा।

जब तू विश्वास से अपने हृदयों को शुद्ध कर लेगा, तब राजा भीतर प्रवेश करेगा, और तू उसका मुख देखेगा।

—– कुम्भ का सुसमाचार 68:10-14

निश्चय ही इस प्रश्न का उत्तर मिल गया है। यीशु मनुष्य था; क्राइस्ट इज डिवाइन लव - द लव ऑफ गॉड, और तीस साल के कठिन जीवन के बाद आदमी ने अपने शरीर को पवित्र सांस के मंदिर के रूप में फिट कर दिया और लव ने पूरी तरह से कब्जा कर लिया, और जॉन (शिष्य) ने अच्छी तरह से कहा जब उन्होंने घोषणा की:

और वचन देहधारी हुआ, और हमारे बीच में रहा, और हम ने अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण पिता के एकलौतेरे की महिमा देखी। —– यूहन्ना 1:14

6. इस पुस्तक का प्रतिलेखक लेवी कौन था? लेवी के व्यक्तित्व के संबंध में हमें लिखने की अनुमति है लेकिन बहुत कम। इतना ही कहना काफी है कि वह एक अमेरिकी नागरिक हैं और बचपन से ही दुनिया के धर्मों के करीबी छात्र थे। जब वह छोटा था तब वह महीन ईथर की संवेदनशीलता से प्रभावित था और मानता था कि किसी तरह से वे संवेदनशील प्लेटें हैं जिन पर ध्वनियाँ, यहाँ तक कि विचार भी दर्ज किए जाते हैं। उन्होंने अपने लिए स्वर्ग के महान रहस्यों को सुलझाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ, ईथर कंपन के गहन अध्ययन में प्रवेश किया। चालीस साल उन्होंने अध्ययन और मौन ध्यान में बिताए, और फिर उन्होंने खुद को आध्यात्मिक चेतना के उस चरण में पाया जिसने उन्हें इन अति सूक्ष्म ईथरों के क्षेत्र में प्रवेश करने और उनके रहस्यों से परिचित होने की अनुमति दी। तब उन्हें पता चला कि उनके बचपन के दिनों की कल्पना सत्य तथ्यों पर आधारित थी,

"द कस्प ऑफ द एजेस" नामक उनकी पांडुलिपि में, जिसका एक हिस्सा हमने पहले ही इस परिचय में पुन: प्रस्तुत किया है, हमें आयोग की निम्नलिखित प्रति मिलती है, जिसे लेवी ने विसेल, बुद्धि की देवी, या पवित्र सांस से प्राप्त किया था।

लेवी का आयोग

और तब पवित्र व्यक्ति विसेल खड़ा हुआ और कहा:

हे लेवी, मनुष्य के पुत्र, निहारना, क्योंकि आप आने वाले युग का संदेशवाहक होने के लिए बुलाए गए हैं - आत्मा की आशीष का युग।

हे मनुष्य के सन्तान, चौकस रहो, क्योंकि मनुष्य अवश्य ही मसीह को, जो परमेश्वर का प्रेम है, जान ले; क्योंकि प्रेम मनुष्यों के सब घावों पर मरहम, और सब रोगों का उपचार है।

और मनुष्य को बुद्धि और शक्ति के साथ और एक समझ दिल के साथ संपन्न होना चाहिए।

आकाश को निहारना! विसेल की रिकॉर्ड गैलरी देखें जहां हर जीवित चीज के हर विचार और शब्द और कर्म लिखे गए हैं।

पुरुषों की जरूरतें कई गुना हैं, और पुरुषों को उनकी जरूरतों को जानना चाहिए।

अब, लेवी, मेरे शब्दों को सुनो: इन रहस्यवादी दीर्घाओं में जाओ और पढ़ो। वहां आपको दुनिया के लिए एक संदेश मिलेगा; हर आदमी के लिए; हर जीवित चीज के लिए।

मैं अब तुम पर पवित्र श्वास फूंकता हूं; आप भेदभाव करेंगे, और आप उन पाठों को जानेंगे जो परमेश्वर की ये अभिलेख पुस्तकें अब इस नए युग के पुरुषों के लिए रख रही हैं।

यह युग वैभव और प्रकाश का युग होगा क्योंकि यह पवित्र श्वास का गृह युग है; और पवित्र श्वास मसीह के लिए नए सिरे से गवाही देगा, अनन्त प्रेम के प्रतीक चिन्ह।

प्रत्येक युग में सबसे पहले यह लोगो देह में प्रकट होता है ताकि मनुष्य एक ऐसे प्रेम को देख और जान और समझ सके जो संकीर्ण, सीमित नहीं है।

सूर्य की प्रत्येक परिक्रमा में बारह बार यह मसीह का ईश्वर का प्रेम पृथ्वी के विमानों पर मांस में पूर्ण रूप से प्रकट होता है, और आप आकाश में उन चमत्कारिक पाठों को पढ़ सकते हैं जो इन मसीहों ने मनुष्यों को सिखाया है; परन्तु प्राचीनकाल के मसीहों की शिक्षा मनुष्यों पर न छापना।

अब, लेवी, आत्मा युग के संदेशवाहक, अपनी कलम उठाओ और लिखो।

उस क्राइस्ट की पूरी कहानी लिखिए जिसने सूर्य के वृत्त की ठोस चट्टान पर निर्माण किया - वह क्राइस्ट जिसे लोग हनोक द इनिशिएटिव के नाम से जानते हैं।

पैगंबर, पुजारी और द्रष्टा के रूप में उनके कार्यों को लिखें; पवित्रता और प्रेम के अपने जीवन के बारे में लिखें, और कैसे उन्होंने मृत्यु के द्वार से नीचे उतरे बिना अपने शारीरिक मांस को दिव्य मांस में बदल दिया।

और आप मलिकिसिदक की कहानी लिख सकते हैं, वह मसीह जो अब्राम के जीवित रहने के समय जीवित रहा, और लोगों को बलिदान के द्वारा जीवन का मार्ग बताया; जिन्होंने अपने जीवन को पुरुषों के लिए स्वेच्छा से बलिदान कर दिया।

और आप शांति के राजकुमार की कहानी लिख सकते हैं, वह मसीह जो बेतलेहेम में बच्चे के रूप में आया था, और जीवन के हर तरीके से यात्रा की, जिस पर मनुष्य को चलना चाहिए।

उसे तिरस्कृत किया गया, अस्वीकार किया गया और गाली दी गई; उस पर थूका गया, क्रूस पर चढ़ाया गया, कब्र में दफनाया गया; लेकिन वह पुनर्जीवित हुआ और मृत्यु पर एक विजेता बना कि वह मनुष्य की संभावनाओं को दिखा सके।

उसने एक हजार बार पुरुषों से कहा:

मैं मनुष्य की संभावनाएं दिखाने आया हूं; जो कुछ मैं ने किया है वह सब मनुष्य कर सकते हैं, और जो मैं सब मनुष्य हूं वह वैसा ही होगा।

मसीह की ये कहानियाँ पर्याप्त होंगी, क्योंकि इनमें जीवन, मृत्यु और मृतकों के पुनरुत्थान का सच्चा दर्शन निहित है।

वे आत्मा की सर्पिल यात्रा को तब तक दिखाते हैं जब तक कि पृथ्वी का आदमी और भगवान हमेशा के लिए एक नहीं हो जाते।

<u>भविष्यवाणी में लेवी</u>

लगभग दो हज़ार साल पहले एलीहू, जिसने मिस्र के ज़ोआन में भविष्यवक्ताओं के एक स्कूल का संचालन किया था, ने लेवी को इस प्रकार संदर्भित किया:

यह युग पवित्रता और प्रेम की पवित्रता के कार्यों को समझेगा लेकिन बहुत कम; लेकिन एक शब्द भी नहीं खोया, क्योंकि भगवान के स्मरण की पुस्तक में हर विचार और शब्द और कर्म की एक रजिस्ट्री है।

और जब दुनिया स्वीकार करने के लिए तैयार है, देखो, भगवान किताब खोलने के लिए एक दूत भेजेंगे और पवित्रता और प्रेम के सभी संदेशों को अपने पवित्र पृष्ठों से कॉपी करेंगे।

तब पृथ्वी का हर एक मनुष्य जीवन के वचन अपनी जन्मभूमि की भाषा में पढ़ेगा, और मनुष्य ज्योति को देखेंगे।

और मनुष्य फिर से परमेश्वर के साथ एक हो जाएगा।

—कुंभीय सुसमाचार 7:25-28.

लेवी के व्यक्तित्व के और संदर्भ, प्रतीत होता है, अनावश्यक हैं। यह मायने रखता है कि वह कौन है; ईसा मसीह के एक्वेरियन गॉस्पेल के प्रतिलेखन में उनका काम अभेद्य है। इस पुस्तक के सभी पाठों पर नाज़रीन की छाप है, क्योंकि दुनिया के महानतम गुरु के अलावा कोई भी व्यक्ति दिव्य प्रेम और ज्ञान के उच्च रागों को नहीं छू सकता था जो इस अद्भुत पुस्तक के पन्नों की विशेषता है।

7. आकाशीय अभिलेख क्या हैं? आकाश एक संस्कृत शब्द है, और इसका अर्थ है "प्राथमिक पदार्थ," जिससे सभी चीजें बनती हैं। कुंभ दर्शन के अनुसार, यह आत्मा के क्रिस्टलीकरण का पहला चरण है। यह दर्शन इस तथ्य को पहचानता है कि सभी मौलिक पदार्थ आत्मा है ; वह पदार्थ आत्मा है जो कंपन की कम दर पर चलती है, जैसा कि एक मास्टर ने इसे व्यक्त किया, एक कोगुलम बन गया। यह आकाशिक, या प्राथमिक पदार्थ, उत्कृष्ट सुंदरता का है और इतना संवेदनशील है कि ईथर के किसी भी स्थान पर थोड़ा सा कंपन ब्रहमांड उस पर एक अमिट छाप दर्ज करता है। यह मौलिक पदार्थ ब्रहमांड के किसी विशेष हिस्से में नहीं बल्कि हर जगह मौजूद है। यह वास्तव में "सार्वभौमिक मन" है, जिसके बारे में हमारे तत्वमीमांसा बोलते हैं।

जब मनुष्य का मन विश्व मन के अनुरूप होता है, तो मनुष्य इन आकाशीय छापों की एक सचेत पहचान में प्रवेश करता है और उन्हें एकत्र कर सकता है और उन्हें पृथ्वी की किसी भी भाषा में अनुवाद कर सकता है जिससे वह परिचित है। अनंत एक प्रकट में हम बल, बुद्धि और प्रेम के गुणों को नोट करते हैं, और एक व्यक्ति इन गुणों में से एक के साथ पूर्ण रूप से मेल खा सकता है, न कि दूसरों के साथ। कोई पूरी तरह से शक्ति के देवता की आत्मा में प्रवेश कर सकता है और बुद्धि की भावना से प्रभावित नहीं हो सकता है; या कोई पूरी तरह से ईश्वरीय प्रेम की भावना में लीन हो सकता है और बुद्धि और शक्ति दोनों से दूर हो सकता है। इसके अलावा, एक व्यक्ति पूरी तरह से पवित्र सांस, या सर्वोच्च बुद्धि की चेतना में प्रवेश कर सकता है, और प्रेम या बल के साथ संबंध में बिल्कुल भी नहीं हो सकता है। ज्ञान न तो बल या प्रेम की भावना से प्राप्त होता है।

चेतना: हम इसके तीन चरणों पर ध्यान देते हैं:

1. **ईश्वर और मनुष्य की सर्वशक्तिमानता की चेतना।**

2. **मसीह चेतना, या दिव्य प्रेम की चेतना।**

3. **पवित्र श्वास, या सर्वोच्च बुद्धि की चेतना।**

हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि चेतना के इन चरणों में से एक का जरूरी रूप से अन्य चरणों में से कोई भी अर्थ नहीं है। अक्सर ऐसे लोग पाए जाते हैं जो पूरी तरह से ईश्वर के प्रेम से भरे हुए हैं, मसीह चेतना के विज्ञान में बहुत आगे हैं, जो पूरी तरह से अज्ञानी हैं; प्राकृतिक चीजों या आध्यात्मिक चीजों के नियमों की थोड़ी सी भी अवधारणा नहीं है; महान शिक्षक जो पवित्र आत्मा है, के संबंध में नहीं हैं। आकाशिक रिकॉर्ड्स। जीवन के अविनाशी अभिलेख, जिन्हें आकाशीय अभिलेखों के रूप में जाना जाता है, पूरी तरह से सर्वोच्च बुद्धि, या सार्वभौमिक मन के क्षेत्र में हैं, और आकाशीय अभिलेख पाठक को पवित्र आत्मा, या पवित्र श्वास के साथ इतने निकट संपर्क में होना चाहिए, जैसे कि प्राचीन स्वामी सर्वोच्च बुद्धि की इस भावना को बुलाओ, कि हर विचार कंपन उसके अस्तित्व के हर तंतु में तुरंत महसूस होता है। भेद।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना अलग स्पंदन होता है और जब पाठक भेदभाव के नियम को पूरी तरह से समझ लेता है तो उसका पूरा अस्तित्व एक विशेष स्वर और लय के स्वागत के लिए तैयार हो जाता है, किसी अन्य स्वर या लय के लिए उस पर थोड़ा सा भी प्रभाव डालना असंभव है।

वायरलेस टेलीग्राफी में इस सिद्धांत का प्रदर्शन किया जाता है।

लेवी को भेदभाव के नियम को सीखने, और नासरत, हनोक और मेल्कीसेदेक के यीशु और उनके सह-मजदूरों के स्वर और ताल के साथ तालमेल में आने के लिए कई वर्षों की आवश्यकता थी। लेकिन सर्वोच्च बुद्धि की आत्मा के निर्देशन में, उसने इस उपलब्धि को प्राप्त कर लिया है, और अब वह तुरंत अपने पूरे अस्तित्व में महसूस करता है कि इनमें से किसी भी महान केंद्र से आने वाले थोड़े से स्पंदन हैं और निश्चित रूप से, उनके सभी प्रतिलेखन सही हैं अक्षर।

<u>आदमी</u>

मनुष्य क्या है कि तू उस पर ध्यान देता है, या मनुष्य का पुत्र कि तू उससे मिलने जाता है?

यह इब्रानी भजनकार, डेविड का गंभीर प्रश्न था, और 8वां भजन पूरी तरह से मनुष्य के चिंतन के लिए दिया गया है, जो प्रकट सृष्टि का प्रमुख कार्य है। लेवी को आकाशीय अभिलेखों, या सार्वभौमिक मन से इकट्ठा करने की अनुमति दी गई कई महान शिक्षाओं में से, हम मनुष्य पर एक पाते हैं जिसमें भौतिक पदार्थ में उसका अवतरण और भगवान के साथ एक शाश्वत एकता में उसकी अंतिम चढ़ाई इतनी ग्राफिक रूप से वर्णित है कि यह निश्चित रूप से इस परिचय में एक स्थान है, और हम इसे पूर्ण रूप से देते हैं:

वह समय कभी नहीं था जब मनुष्य नहीं था।

यदि मनुष्य का जीवन किसी भी समय शुरू हुआ तो एक समय आएगा जब वह समाप्त हो जाएगा।

ईश्वर के विचारों को सीमित नहीं किया जा सकता है। कोई भी सीमित मन अनंत चीजों को नहीं समझ सकता।

सभी सीमित चीजें परिवर्तन के अधीन हैं। सभी सीमित चीजें खत्म हो जाएंगी, क्योंकि एक समय था जब वे नहीं थे।

मनुष्यों के शरीर और आत्मा सीमित चीजें हैं, और वे बदलेंगे, हां, सीमित दृष्टिकोण से वह समय आएगा जब वे नहीं रहेंगे ।

परन्तु मनुष्य स्वयं न तो शरीर है, न ही आत्मा; वह आत्मा है और परमेश्वर का अंश है।

क्रिएटिव फिएट ने मनुष्य को, स्पिरिट मैन को, एक आत्मा दी है कि वह आत्मा के स्तर पर कार्य कर सके; उसे मांस का शरीर दिया, कि वह प्रकट की गई चीजों के स्तर पर कार्य कर सके।

क्रिएटिव फिएट ने स्पिरिट मैन को एक आत्मा क्यों दी कि वह आत्मा के स्तर पर कार्य कर सके?

रचनात्मक फिएट ने आत्मा को मांस का एक शरीर क्यों दिया ताकि वह उन चीजों के विमान पर कार्य कर सके जो प्रकट होती हैं?

सुनो, अब, हे संसार, प्रभुत्व, शक्तियाँ और सिंहासन!

हे करूबों, हे सारापों, हे स्वर्गदूतों और हे मनुष्यों, सुनो!

सुनो, अब, हे प्रोटोप्लास्ट, और पृथ्वी, और पौधे और जानवर!

हे रेंगने वाले पृथ्वी के जन्तुओं, हे तैरनेवाली मछलियों, हे उड़नेवाले पक्षियों, सुनो!

हे गरजनेवाली पवनों, हे गरजनेवाले और आकाश के बिजलियों, सुनो!

अब, हे अग्नि, जल, पृथ्वी और वायु की आत्माओं को सुनो!

सुनो, अब, हे सब कुछ जो है, या था, या हमेशा रहेगा, क्योंकि बुद्धि आध्यात्मिक जीवन के उच्चतम स्तर से बोलती है:

मनुष्य ईश्वर का विचार है; ईश्वर के सभी विचार अनंत हैं; वे समय के द्वारा नहीं मापे जाते, क्योंकि जो बातें समय से संबंधित हैं, वे आरम्भ और अंत से संबंधित हैं।

परमेश्वर के विचार अनंत काल से लेकर आने वाले कभी न खत्म होने वाले दिनों तक हैं — और ऐसा ही मनुष्य, आत्मा-मनुष्य भी है।

लेकिन मनुष्य, ईश्वर के बारे में हर दूसरे विचार की तरह, एक बीज था, एक बीज जो अपने भीतर ईश्वर की शक्तियों को धारण करता था, जैसे कि पृथ्वी के किसी भी पौधे का बीज उस विशेष पौधे के हर हिस्से के गुणों को अपने भीतर रखता है।

तो आत्मा-मनुष्य, ईश्वर के बीज के रूप में, अपने भीतर ईश्वर के हर हिस्से के गुणों को गहराई से रखता है।

अब, बीज परिपूर्ण हैं, हां, उतने ही परिपूर्ण हैं जितने स्रोत से वे आते हैं; लेकिन वे प्रकट किए गए जीवन में प्रकट नहीं होते हैं।

गर्भ में बच्चा मां के समान ही संपूर्ण होता है।

तो मनुष्य, बीज, को एक मिट्टी में गहराई से लगाया जाना चाहिए ताकि वह विकसित हो सके, प्रकट हो, जैसे कि कली फूल दिखाने के लिए प्रकट होती है।

मानव बीज जो परमेश्वर के हृदय से निकला था, आत्मा के स्तर, और प्रकट की गई वस्तुओं के स्तर का स्वामी होने के लिए पूर्ण रूप से ठहराया गया था।

सो परमेश्वर ने, जो सब कुछ है, इस मानव बीज को आत्मा की मिट्टी में फेंक दिया; वह तेजी से बढ़ता गया, और मनुष्य एक जीवित प्राणी बन गया; और वह प्राण के सारे राज्य का स्वामी हो गया।

हरक, अब, हर प्राणी को सुनने दो,

आत्मा का स्तर केवल आत्मा के विमान का ईथर है जो इतनी तेजी से कंपन नहीं कर रहा है, और इस विमान की धीमी लय में जीवन के सार प्रकट होते हैं; इत्र और गंध, सच्ची संवेदनाएं और सभी प्रेम प्रकट होते हैं। और ये आत्मा गुण शरीर को सुंदर बनाते हैं।

मनुष्य को आत्मा के धरातल पर कई सबक सीखने चाहिए; और यहाँ वह कई युगों तक रुकता है जब तक कि उसके सभी सबक सीखे नहीं जाते।

आत्मा के स्तर की सीमा पर, ईथर धीमी गति से कंपन करना शुरू कर दिया, और फिर सार ने एक वस्त्र धारण कर लिया; सुगन्ध और सुगन्ध, और सच्ची अनुभूति, और सब प्रेम मांस के वस्त्र पहिने हुए थे; और मनुष्य मांस पहिने हुए था।

सिद्ध मनुष्य को जीवन के सभी तरीकों से गुजरना होगा, और इसलिए एक शारीरिक प्रकृति पूर्ण रूप से प्रकट थी, एक ऐसी प्रकृति जो शारीरिक चीजों से उत्पन्न हुई थी।

दुश्मन के बिना एक सैनिक अपनी ताकत को कभी नहीं जानता है, और विचार शक्ति के अभ्यास से विकसित होना चाहिए।

और इसलिए यह शारीरिक प्रकृति शीघ्र ही एक शत्रु बन गई जिससे मनुष्य को अवश्य ही लड़ना चाहिए, ताकि वह प्रकट की गई परमेश्वर की शक्ति हो सके।

हर एक जीवित वस्तु को स्थिर रहने दो और सुनो!

मनुष्य प्रकट के सभी स्तरों का स्वामी है; प्रोटोप्लास्ट का, खनिज का, पौधे का, जानवर का; लेकिन उसने अपना जन्मसिद्ध अधिकार छोड़ दिया है, सिर्फ अपने निचले आत्म, अपने शारीरिक आत्म को संतुष्ट करने के लिए।

लेकिन मनुष्य अपनी खोई हुई संपत्ति, अपनी विरासत को पूरी तरह से वापस पा लेगा; लेकिन उसे इसे एक ऐसे संघर्ष में करना होगा जिसे शब्दों में नहीं बताया जा सकता है।

हाँ, उसे अनेक प्रकार की परीक्षाओं और परीक्षाओं को सहना होगा; परन्तु उसे पता चले कि करूब और सेराफिम जो सूर्य के स्टेशनों पर शासन करते हैं, और शक्तिशाली भगवान की आत्माएं जो सौर सितारों पर शासन करती हैं, उनके रक्षक और उनके मार्गदर्शक हैं, और वे जीत की ओर ले जाएंगे।

मनुष्य पूरी तरह से बचाया जाएगा, छुड़ाया जाएगा, उन चीजों के द्वारा सिद्ध किया जाएगा जो वह मांस के स्तर पर और आत्मा के स्तर पर भुगतता है।

जब मनुष्य ने शारीरिक चीजों पर विजय प्राप्त कर ली है, तब उसके शरीर के वस्त्र ने अपने उद्देश्य को अच्छी तरह से पूरा कर लिया होगा और वह गिर जाएगा, और नहीं रहेगा।

तब वह आत्मा के तल पर अटूट खड़ा होगा जहां उसे अपनी जीत पूरी करनी होगी।

असंख्य शत्रु मनुष्य के सामने आत्मा के धरातल पर खड़े होंगे; वहाँ उसे जीतना होगा, हाँ, उन पर हर एक को जीतना होगा।

इस प्रकार आशा सदैव उसका प्रकाशस्तंभ होगी; मानव आत्मा के लिए कोई विफलता नहीं है, क्योंकि भगवान आगे बढ़ रहे हैं और जीत निश्चित है।

मनुष्य मर नहीं सकता; आत्मा मनुष्य परमेश्वर के साथ एक है, और जब तक परमेश्वर जीवित है मनुष्य मर नहीं सकता।

जब मनुष्य ने आत्मा के स्तर पर सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है, तो बीज पूरी तरह से खुल जाएगा, पवित्र श्वास में प्रकट हो जाएगा।

तब आत्मा के वेश ने अपने उद्देश्य को अच्छी तरह से पूरा कर लिया होगा, और मनुष्य को कभी इसकी आवश्यकता नहीं होगी, और यह बीत जाएगा और नहीं रहेगा।

और तब मनुष्य पूर्णता की आशीष को प्राप्त करेगा और परमेश्वर के साथ एक हो जाएगा।

लेविस द्वारा ईसा मसीह का एक्वेरियन गॉस्पेल

-किताब-

भाग 1/अनुभाग ।

नासरत का यीशु

(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड ।

Aleph

यीशु की माता मरियम का जन्म और प्रारंभिक जीवन

अध्याय 1

फिलिस्तीन। मैरी का जन्म, जोआचिम का पर्व। मैरी को पुजारियों का आशीर्वाद प्राप्त है। एक पुजारी की भविष्यवाणी। मैरी मंदिर में रहती है। यूसुफ से मंगनी की है।

ऑगस्टस सीज़र ने राज्य किया और हेरोदेस अंतिपास यरूशलेम का शासक था।

2) तीन प्रांतों में फिलिस्तीन की भूमि शामिल थी: यहूदिया, सामरिया और गलील।

3) जोआचिम यहूदी व्यवस्था का स्वामी था, धनी व्यक्ति था; वह गलील के नासरत में रहता था; और यहूदा के गोत्र से हन्ना उसकी पत्नी थी।

4) उन से एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई, और वे आनन्दित हुईं; और मरियम वह नाम था जो उन्होंने बच्चे को दिया था।

5) योआचिम ने बालक के सम्मान में एक भोज किया; परन्तु उसने धनवानों, प्रतिष्ठितों और महानों को नहीं बुलाया; उसने कंगालों को बुलाया, पड़ाव, लंगड़ा, अन्धा, और हर एक को उसने वस्त्र, भोजन या अन्य आवश्यक वस्तु का उपहार दिया।

6) उस ने कहा, यहोवा ने मुझे यह धन दिया है; उसके अनुग्रह से मैं उसका भण्डारी हूं, और यदि मैं उसकी सन्तान को आवश्यकता पड़ने पर न दूं, तो वह इस धन को अभिशाप बना देगा।

7) अब, जब बच्चा तीन वर्ष का था, उसके माता-पिता उसे यरूशलेम ले गए और मंदिर में याजकों का आशीर्वाद प्राप्त किया।

8) महायाजक भविष्यद्वक्ता और दर्शी था, और बालक को देखकर कहा,

9) देखो, यह बालक एक प्रतिष्ठित भविष्यद्वक्ता की माता और व्यवस्था का स्वामी होगा; वह यहोवा के इस पवित्र मन्दिर में रहे।

10) और मरियम यहोवा के मन्दिर में रही; और महासभा के प्रधान हिल्लेल ने उसे यहूदियों के सब उपदेश सिखाए, और वह परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न हुई।

11) जब मरियम स्त्रीत्व की अवस्था में पहुंची तो उसकी मंगेतर याकूब के पुत्र यूसुफ और नासरत के एक बढ़ई से हो गई।

12) और यूसुफ एक सीधा आदमी था, और एक समर्पित एसेन था।

भाग 1/अनुभाग ॥

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड ॥
BETH

जॉन, द हरबिंगर (बैप्टिस्ट) और यीशु का जन्म और शैशवावस्था
(अध्याय 2-6)

अध्याय 2

जकारिया और एलिजाबेथ। जकारिया, एलिजाबेथ और मरियम को गेब्रियल के भविष्यसूचक संदेश। जॉन का जन्म। जकारिया की भविष्यवाणी।

यहूदा की पहाड़ियों में हेब्रोन के पास, जकर्याह और इलीशिबा निवास करते थे।

2) वे धर्मपरायण और धर्मी थे, और हर दिन वे व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजनों को पढ़ते थे, जो एक के आने के बारे में बताते थे, जो छुड़ाने के लिए मजबूत थे; और वे राजा की बाट जोह रहे थे।

3) अब, जकरयाह एक याजक था, और अपनी बारी में उसने यरूशलेम में मंदिर की सेवा का नेतृत्व किया।

4) जब जकरयाह यहोवा के साम्हने खड़ा हुआ और पवित्र स्थान में धूप जलाया, तब जिब्राईल आया और उसके साम्हने खड़ा हो गया।

5) और जकरयाह डर गया; उसने सोचा कि यहूदियों पर कोई बड़ी विपत्ति आने वाली है।

6) परन्तु जिब्राईल ने कहा, हे परमेश्वर के जन, मत डर; मैं तुम्हारे और सारे जगत के लिए पृथ्वी पर भलाई और शान्ति का सन्देश लाता हूँ।

7) देखो, शान्ति का राजकुमार, जिस राजा को तुम ढूंढ़ रहे हो, वह शीघ्र आ जाएगा।

8) तेरी पत्नी से तेरे लिये एक पवित्र पुत्र उत्पन्न होगा, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ता ने लिखा है,

9) देखो, मैं यहोवा के आने से पहिले एलिय्याह को फिर तुम्हारे पास भेजता हूं; और वह पहाड़ियों को समतल करेगा, और तराइयों को भर देगा, और छुड़ाने वाले के लिये मार्ग प्रशस्त करेगा।

10) युग के आरम्भ से तेरे पुत्र का नाम यूहन्ना, जो यहोवा की दया है, उत्पन्न हुआ है; उसका नाम जॉन है।

11) वह परमेश्वर की दृष्टि में प्रतिष्ठित होगा, और वह शराब नहीं पीएगा, और वह अपने जन्म से पवित्र सांस से भर जाएगा।

12) और जिब्राईल इलीशिबा के साम्हने खड़ी हो गई, जब वह अपने घर के सन्नाटे में थी, और जो बातें उसने यरूशलेम में जकरयाह से कही थीं, वे सब उसे बता दीं।

13) जब वह अपनी सेवा कर चुका, तब याजक अपने घर चला गया, और इलीशिबा के साथ आनन्दित हुआ।

14) पांच महीने बीत गए और जिब्राईल नासरत में मरियम के घर उसके पास आया और कहा,

15) मैरी की जय हो, जय हो! एक बार भगवान के नाम पर आशीर्वाद दिया; पवित्र सांस के नाम पर दो बार आशीर्वाद दिया; तीन बार मसीह के नाम पर धन्य; क्योंकि तू योग्य है और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा जो इम्मानुएल कहलाएगा।

16) उसका नाम यीशु है, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाता है।

17) जब यूसुफ का नित्य का काम पूरा हुआ, तब वह आया, और जो बातें जिब्राईल ने उस से कही थीं वे सब मरियम ने उस से कह सुनाई, और वे आनन्दित हुए; क्योंकि उन्होंने विश्वास किया था कि परमेश्वर के भक्त उस ने सत्य की बातें कहीं हैं।

18) और मरियम उतावली से इलीशिबा को जिब्राईल की प्रतिज्ञाओं के बारे में बताने के लिए गई; एक साथ वे आनन्दित हुए।

19) और मरियम नब्बे दिन तक जकरयाह और इलीशिबा के घर में रही; तब वह नासरत को लौट गई।

20) जकरयाह और इलीशिबा के एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और जकरयाह ने कहा,

21) परमेश्वर का नाम धन्य है, क्योंकि उसने अपनी प्रजा इस्राएल के लिए आशीषों का स्रोत खोला है।

22) उसके वादे सत्यापित हैं; क्योंकि जो बातें पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने प्राचीनकाल में कही थीं, उन्हें उसी ने पूरा किया है।

23) और जकरयाह ने शिशु यूहन्ना की ओर दृष्टि करके कहा,

24) तुम उस पवित्र का नबी कहलाओगे; और तू उसके साम्हने चलकर उसका मार्ग तैयार करेगा।

25) और तू इस्राएल को उद्धार का ज्ञान देगा; और तुम मन फिराव का और पापों के नाश होने का सुसमाचार सुनाओगे।

26) देखो, शीघ्र ही दिन का तारा ऊपर से हमारे पास आएगा, ताकि उन लोगों के लिए मार्ग को रोशन कर सकें जो छायाभूमि के अंधेरे में बैठे हैं और हमारे पैरों को शांति के मार्ग पर ले जाते हैं।

अध्याय 3

यीशु का जन्म। परास्नातक बच्चे का सम्मान करते हैं। चरवाहे आनन्दित होते हैं। जकारिया और एलिजाबेथ मैरी से मिलने जाते हैं। यीशु का खतना हुआ है।

यीशु के जन्म का समय लगभग था, और मरियम इलीशिबा को देखने के लिए तरस गई, और उसने और यूसुफ ने अपना मुँह यहूदिया की पहाड़ियों की ओर कर दिया।

2) और जब वे रास्ते में बेतलेहेम आए, तो दिन हो गया, और उन्हें रात को ठहरना चाहिए।

3) परन्तु बेतलेहेम यरूशलेम को जाने वाले लोगों से भरा हुआ था; सराय और घर मेहमानों से भरे हुए थे, और यूसुफ और उसकी पत्नी को आराम करने के लिए कोई जगह नहीं मिली, लेकिन एक गुफा में जहां जानवरों को रखा गया था; और वहीं सो गए।

4) आधी रात को रोना आया, जानवरों के बीच गुफा में एक बच्चा पैदा हुआ है। और देखो, मनुष्य का प्रतिज्ञात पुत्र उत्पन्न हुआ।

5) और परदेशियों ने उस बालक को लेकर मरियम के तैयार किए हुए सुन्दर वस्त्रों में लपेटकर उस कुंड में रख दिया जिसमें से बोझ के पशु चरते थे।

6) बर्फ-श्वेत वस्त्र पहने तीन व्यक्ति भीतर आए और बालक के सामने खड़े हुए और बोले,

7) सारी ताकत, सारी बुद्धि और सारा प्यार तुम्हारा हो, इम्मानुएल।

8) अब, बेतलेहेम की पहाड़ियों पर भेड़-बकरियों के बहुत से झुण्ड थे जिनकी रखवाली करनेवाले चरवाहे थे।

9) चरवाहे भक्त थे, प्रार्थना के पुरुष थे, और वे एक मजबूत उद्धारकर्ता के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

10) और जब प्रतिज्ञा का बच्चा आया, तो उन्हें एक श्वेत वस्त्र पहिने एक मनुष्य दिखाई दिया, और वे डर के मारे गिर पड़े। वह आदमी खड़ा हुआ और बोला,

11) डरो मत! देखो, मैं तुम्हारे लिए आनन्ददायक समाचार लाता हूँ। आधी रात को बेथलहम की एक गुफा में भविष्यवक्ता और राजा का जन्म हुआ, जिसका आप लंबे समय से इंतजार कर रहे थे।

12) तब सब चरवाहे आनन्दित हुए; उन्होंने महसूस किया कि सभी पहाड़ियाँ प्रकाश के दूतों से भर गई हैं, जिन्होंने कहा,

13) सारी महिमा ऊँचे पर परमेश्वर की हो; शांति, पृथ्वी पर शांति, पुरुषों के लिए सद्भावना।

14) तब गड़ेरिये फुर्ती से बेतलेहेम और उस गुफा में आए, कि वे उसे देखें और उसका आदर करें, जिन्हें लोगों ने इम्मानुएल कहा था।

15) जब भोर हुई, तो एक चरवाहे ने, जिसका घर निकट था, मरियम, यूसुफ और बालक के लिथे एक कमरा तैयार किया; और वे यहां बहुत दिन रहे।

16) तब यूसुफ ने फुर्ती से जकरयाह और इलीशिबा के पास दूत को यह कहने के लिथे भेजा, कि बालक का जन्म बेतलेहेम में हुआ है।

17) और जकरयाह और इलीशिबा यूहन्ना को लेकर जयजयकार करते हुए बेतलेहेम आए।

18) और मरियम और इलीशिबा ने सब चमत्कारिक बातें बताईं जो घटित हुई थीं। लोग उनके साथ परमेश्वर की स्तुति करने में शामिल हुए।

19) यहूदियों की प्रथा के अनुसार बच्चे का खतना किया गया था; और जब उन्होंने पूछा, तू बालक को क्या कहेगा? माँ ने कहा, उसका नाम यीशु है, जैसा कि परमेश्वर के भक्त ने घोषित किया है।

अध्याय 4

यीशु का अभिषेक। मैरी बलिदान प्रदान करती है। शिमोन और अन्ना भविष्यवाणी। बच्चे की पूजा करने के लिए अन्ना को फटकार लगाई जाती है। परिवार बेथलहम लौट आता है।

अब जब मरियम अपने पुत्र को चालीस दिन का हुआ, तब वह यरूशलेम के मन्दिर में ले गया, और याजक के द्वारा उसका अभिषेक किया गया।

2) तब उसने यहूदियों की रीति के अनुसार अपके लिथे शुद्ध करनेवाले बलिदान चढ़ाए; एक मेमना और दो कछुआ कबूतर।

3) शिमोन नाम का एक पवित्र यहूदी मंदिर में परमेश्वर की सेवा कर रहा था।

4) बचपन से ही वह इम्मानुएल के आने की तलाश में था, और उसने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि वह तब तक न चले जब तक कि उसकी आँखों ने मसीहा को मांस में न देख लिया हो।

5) और जब उस ने शिशु यीशु को देखा, तो आनन्दित हुआ और कहा, अब मैं कुशल से जाने को तैयार हूं, क्योंकि मैं ने राजा को देखा है।

6) तब उस ने शिशु को गोद में लेकर कहा, सुन, यह बालक मेरी प्रजा इस्राएल और सारे जगत पर तलवार चलाएगा; परन्तु वह तलवार को तोड़ देगा, तब जातियां फिर युद्ध न सीखेंगी।

7) मैं इस बच्चे के माथे पर गुरु का क्रूस देखता हूं, और वह इस चिन्ह से जीत जाएगा।

8) और मन्दिर में चौरासी वर्ष की एक विधवा थी, और वह नहीं गई, परन्तु रात-दिन परमेश्वर की उपासना करती रही।

9) और जब उसने शिशु यीशु को देखा, तो वह चिल्लाई, देख इम्मानुएल! उसके माथे पर मसीहा का सिग्नेट क्रॉस निहारना!

10) तब वह स्त्री, इम्मानुएल, हमारे साथ परमेश्वर की नाईं घुटने टेककर उसकी उपासना करने लगी; परन्तु एक, एक स्वामी, जो श्वेत वस्त्र पहिने हुए था, प्रकट हुआ और कहा,

11) अच्छी औरत, रहो; आप जो करते हैं उस पर ध्यान दें; तुम मनुष्य की पूजा नहीं कर सकते; यह मूर्तिपूजा है।

12) यह बालक मनुष्य है, मनुष्य का पुत्र है, और सभी प्रशंसा के योग्य है। तू परमेश्वर की आराधना और उपासना करना; केवल तुम ही उसकी सेवा करोगे।

13) स्त्री ने उठकर कृतज्ञता में सिर झुकाकर ईश्वर की आराधना की।

14) और मरियम शिशु यीशु को लेकर बेतलेहेम लौट गई।

अध्याय 5

तीन जादूगर याजक यीशु का सम्मान करते हैं। हेरोदेस चिंतित है। यहूदियों की एक परिषद बुलाता है। कहा जाता है कि भविष्यवक्ताओं ने एक राजा के आने की भविष्यवाणी की थी। हेरोदेस बच्चे को मारने का संकल्प करता है। मरियम और यूसुफ यीशु को ले जाते हैं और मिस्र भाग जाते हैं।

परात नदी के पार जादूगर रहते थे; और वे बुद्धिमान थे, सितारों की भाषा पढ़ सकते थे, और उन्होंने अनुमान लगाया कि एक, एक मास्टर आत्मा, पैदा हुआ था; उन्होंने उसका तारा यरूशलेम के ऊपर देखा।

2) और जादूगर याजकों में से तीन ऐसे थे जो आने वाले युग के स्वामी को देखने की लालसा रखते थे; और वे बहुमूल्य भेंट लेकर पश्चिम की ओर उस नवजात राजा की खोज में निकल पड़े, कि उसका सम्मान करें।

3) और एक ने सोना लिया, जो कुलीनता का प्रतीक था; एक और लोहबान, प्रभुत्व और शक्ति का प्रतीक; गोंद - इस प्रकार दूसरे ने ऋषि के ज्ञान का प्रतीक लिया।

4) अब जब जादूगर यरूशलेम पहुंचे तो लोग चकित हुए और आश्चर्य करने लगे कि वे कौन थे और क्यों आए थे।

5) और जब उन्होंने पूछा, जो बालक उत्पन्न हुआ है, राजा कहां है? हेरोदेस का सिंहासन हिलने लगा।

6) और हेरोदेस ने जादूगरों को अपने दरबार में लाने के लिए एक दरबारी को भेजा।

7) और जब वे आए तो उन्होंने फिर पूछा, नवजात राजा कहां है? तब उन्होंने कहा, परात के उस पार हम ने उसका तारा उदय होते देखा, और उसका आदर करने आए हैं।

8) और हेरोदेस भय से झुलस गया। उसने सोचा, शायद, याजक यहूदियों के राज्य को बहाल करने की साजिश कर रहे थे, और इसलिए उसने अपने भीतर कहा, मैं इस बच्चे के बारे में और अधिक जानूंगा जो एक राजा पैदा हुआ है।

9) और उसने जादूगर याजकों से कहा, कि वे नगर में कुछ देर ठहरें, और वह उन्हें राजा के विषय में सब कुछ बता देगा।

10) उस ने सब यहूदी शास्त्रियोंको महासभा में बुलाकर पूछा, यहूदी भविष्यद्वक्ताओं ने ऐसे के विषय में क्या कहा है?

11) यहूदी आकाओं ने उस को उत्तर दिया, और कहा, भविष्यद्वक्ताओं ने तो बहुत पहले ही बता दिया था, कि कोई इस्राएल के गोत्रों पर राज्य करने को आएगा; कि यह मसीहा बेतलेहेम में पैदा होगा।

12) उन्होंने कहा, मीका भविष्यद्वक्ता ने लिखा है, हे बेतलेहेम, यहूदिया, यहूदिया की पहाड़ियों के बीच एक छोटा सा स्थान, तौभी तुम में से कोई मेरी प्रजा इस्राएल पर राज्य करने को निकलेगा; हाँ, वह जो पुराने समय में, बहुत प्राचीन दिनों में रहता था।

13) तब हेरोदेस ने जादूगर याजकों को फिर बुलाया और उन्हें बताया कि यहूदी कानून के स्वामी ने क्या कहा था, और फिर उसने उन्हें बेतलेहेम के रास्ते में भेज दिया।

14) उस ने कहा, जा, ढूंढ़ ले, और यदि तुझे वह बालक मिले जो राजा हुआ है, तो लौटकर मुझ से सब कुछ कह, कि मैं जाकर उसका आदर करूं।

15) जादूगरों ने अपने रास्ते जाकर मरियम के साथ चरवाहे के घर में बच्चे को पाया।

16) उन्होंने उसका आदर किया; उसे बहुमूल्य उपहार दिए और उसे सोना, गोंद-इस प्रकार और गन्धरस दिया।

17) ये जादूगर पुजारी पुरुषों के दिलों को पढ़ सकते थे; उन्होंने हेरोदेस के मन की दुष्टता को पढ़ा, और जान लिया कि उस ने नवजात राजा को मार डालने की शपथ खाई है।

18) और इसलिए उन्होंने बच्चे के माता-पिता को रहस्य बताया और उन्हें नुकसान की पहुंच से बाहर भागने के लिए कहा।

19) तब याजक अपने-अपने घर चले गए; वे यरूशलेम से होकर न गए।

20) और यूसुफ बालक यीशु और उसकी माता को रात को लेकर मिस्र देश को भाग गया, और एलीहू और सलोमी के संग वे पुराने सोअन में रहे।

मासूमों का नरसंहार

अध्याय 6

हेरोदेस यूहन्ना के मिशन के बारे में सीखता है। बेथलहम के शिशुओं को हेरोदेस के आदेश से मार डाला जाता है। एलिजाबेथ जॉन के साथ भाग जाती है। क्योंकि जकर्याह यह नहीं बता सकता कि उसका पुत्र कहाँ छिपा है, उसकी हत्या कर दी गई है। हेरोदेस मर जाता है।

अब, जब जादूगर के पुजारी उस बच्चे के बारे में बताने के लिए वापस नहीं आए जो राजा पैदा हुआ था, राजा हेरोदेस क्रोधित हो गया।

2) तब उसके दरबारियों ने उसे बेतलेहेम में एक और बच्चे के बारे में बताया, जो पहले जाने और लोगों को राजा के स्वागत के लिए तैयार करने के लिए पैदा हुआ था।

3) इससे राजा और अधिक क्रोधित होता गया; उसने अपने रक्षकों को बुलाया और उन्हें बेतलेहेम जाने के लिए कहा, और शिशु जॉन, साथ ही यीशु को भी मार डाला, जो एक राजा बनने के लिए पैदा हुआ था।

4) उस ने कहा, कोई भूल न हो, और तू मेरे सिंहासन के इन दावेदारोंको मार डालना, और उस नगर के सब लड़कोंको जो अभी दो वर्ष के न हुए हों, घात करना।

5) पहरेदारों ने आगे बढ़कर वैसा ही किया जैसा हेरोदेस ने उन्हें करने को कहा था।

6) एलिजाबेथ नहीं जानती थी कि हेरोदेस उसके बेटे को मारना चाहता है, और वह और यूहन्ना अभी तक बेतलेहेम में थे; परन्तु यह जानकर, वह बालक यूहन्ना को ले गई, और पहाड़ियों की ओर दौड़ी।

7) हत्यारे पहरेदार निकट थे; उन्होंने उसे जोर से दबाया; परन्तु तब वह सब पहाडिय़ोंमें गुप्त गुफाओं को जानती थी, और एक में दौड़कर अपने आप को और यूहन्ना को तब तक छिपाती रही, जब तक पहरेदार चले न गए।

8) उनका क्रूर कार्य किया गया; पहरेदार लौट आए और राजा को कहानी सुनाई।

9) उन्होंने कहा, हम जानते हैं कि हम ने शिशु राजा को घात किया है; परन्तु यूहन्ना उसका अग्रदूत, हम न पा सके।

10) राजा अपने रक्षकों से क्रोधित था क्योंकि वे शिशु जॉन को मारने में असफल रहे; उसने उन्हें ज़ंजीरों में बांधकर टावर पर भेज दिया।

11) और अन्य रक्षकों को जकरयाह के पास भेजा गया, जो अग्रदूत के पिता थे, जब वह पवित्र स्थान में सेवा कर रहा था, यह कहने के लिए कि राजा चाहता है कि तुम बताओ कि तुम्हारा पुत्र कहाँ है।

12) परन्तु जकरयाह नहीं जानता था, और उस ने उत्तर दिया, कि मैं परमेश्वर का सेवक हूं, और पवित्र स्थान का दास हूं; मैं कैसे जान सकता था कि वे उसे कहाँ ले गए हैं?

13) और जब पहरूओं ने लौटकर राजा को जकरयाह की बातें बताईं, तो वह क्रोधित होकर कहने लगा,

14) हे मेरे रक्षकों, जाकर उस धूर्त याजक से कहो कि वह मेरे हाथ में है; कि यदि वह सच न बोले, और अपके पुत्र यूहन्ना के छिपने के स्थान को न प्रगट करे, तो वह मर जाएगा।

15) पहरेदारों ने वापस जाकर याजक को वही बताया जो राजा ने कहा था।

16) जकरयाह ने कहा, सत्य के लिथे मैं अपना प्राण तो दे ही सकता हूं; और यदि राजा मेरा लोहू बहाए, तो यहोवा मेरे प्राण का उद्धार करेगा।

17) पहरेदार फिर लौट आए और जकरयाह ने जो कहा वह राजा को बताया।

18) अब, जकरयाह वेदी के सामने पवित्र स्थान में प्रार्थना में लगे हुए थे।

19) एक पहरेदार ने पास आकर उसे खंजर से मारा; वह गिरकर यहोवा के पवित्रस्थान के परदे के साम्हने मर गया।

20) और जब प्रणाम का समय आया, क्योंकि जकरयाह प्रतिदिन याजकोंको आशीर्वाद देता या, तो वह नहीं आया।

21) और बहुत देर तक प्रतीक्षा करने के बाद याजक पवित्र स्थान पर गए, और उन्हें मरे हुओं का शव मिला।

22) और सारे देश में शोक, घोर शोक छा गया।

23) अब हेरोदेस अपने सिंहासन पर विराजमान था; वह हिलता नहीं दिख रहा था; उसके दरबारी आए; राजा मर गया था। उसके पुत्रों ने उसके स्थान पर राज्य किया।

भाग 1/धारा III

नासरत का यीशु

(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड III

GIMEL

Zoan . में मैरी और एलिजाबेथ की शिक्षा

(अध्याय 7-12)

अध्याय 7

आर्केलौस शासन करता है। मरियम और इलीशिबा अपने बेटों के साथ ज़ोआन में हैं और एलीहू और सलोमी उन्हें शिक्षा देते हैं। एलीहू का परिचयात्मक पाठ। एक प्रतिलेखक के बारे में बताता है।

हेरोदेस का पुत्र अर्खिलौस यरूशलेम में राज्य करता रहा। वह एक स्वार्थी, क्रूर राजा था; उसने उन सभों को मार डाला जिन्होंने उसका आदर नहीं किया।

2) उसने सभी बुद्धिमान व्यक्तियों को परिषद में बुलाया और अपने सिंहासन के लिए शिशु दावेदार के बारे में पूछा।

3) परिषद ने कहा कि यूहन्ना और यीशु दोनों मर चुके थे; तब वह संतुष्ट था।

4) यूसुफ, मरियम और उनका पुत्र मिस्र में सोअन में थे, और यूहन्ना अपनी माता के साथ यहूदिया की पहाड़ियों में था।

5) एलीहू और सैलोम ने इलीशिबा और यूहन्ना को खोजने के लिए जल्दबाजी में दूत भेजे। वे उन्हें पाकर सोअन में ले आए।

6) अब, मरियम और इलीशिबा अपने छुटकारे के कारण बहुत आश्चर्य कर रहे थे।

7) एलीहू ने कहा, यह कोई विचित्र बात नहीं; कोई (यादृच्छिक) घटनाएँ नहीं होती हैं; कानून सभी घटनाओं को नियंत्रित करता है।

8) पुराने समय से यह ठहराया गया था कि आप हमारे साथ रहें, और इस पवित्र विद्यालय में पढ़ाया जाए।

9) एलीहू और सलोमी मरियम और इलीशिबा को पास के पवित्र उपवन में ले गए जहाँ वे उपदेश देने के लिए अभ्यस्त नहीं थे।

10) एलीहू ने मरियम और इलीशिबा से कहा, तू अपने को तीन बार आदर दे, क्योंकि तू बहुत दिनोंसे प्रतिज्ञा किए हुए पुत्रोंकी चुनी हुई माता है।

11) जिन्हें ठोस चट्टान में एक निश्चित आधारशिला रखने के लिए नियुक्त किया गया है, जिस पर सिद्ध व्यक्ति का मंदिर टिकेगा - एक ऐसा मंदिर जो कभी नष्ट नहीं होगा।

12) हम समय को चक्र युगों से मापते हैं, और हर युग के द्वार को हम (मानव) जाति की यात्रा में एक मील का पत्थर मानते हैं।

13) एक उम्र बीत चुकी है; दूसरे युग का द्वार समय के स्पर्श से खुल जाता है। यह आत्मा की तैयारी का युग है, इम्मानुएल का राज्य, मनुष्य में परमेश्वर का;

14) और तेरे पुत्र ये ही पहिले समाचार सुनाएंगे, और मनुष्योंको भलाई का सुसमाचार, और पृथ्वी पर शान्ति का प्रचार करेंगे।

15) उनका एक शक्तिशाली काम है; क्योंकि शारीरिक मनुष्य उजियाले को नहीं चाहते, वे अन्धकार से प्रीति रखते हैं, और जब ज्योति अन्धकार में चमकती है, तब वे उसे नहीं समझते।

16) हम इन पुत्रों को प्रकाश के प्रकटकर्ता कहते हैं; लेकिन प्रकाश को प्रकट करने से पहले उनके पास प्रकाश होना चाहिए।

17) और तू अपके पुत्रोंको उपदेश देना, और उनके प्राणोंको प्रेम और पवित्र जोश से फूंक देना, और मनुष्योंके लिथे उनके कामोंके विषय में उनको बताना।

18) उन्हें सिखाओ कि ईश्वर और मनुष्य एक हैं; परन्तु यह कि मनुष्य ने शारीरिक विचारों और वचनों और कर्मों के द्वारा अपने आप को परमेश्वर से दूर कर लिया; खुद को बदनाम किया।

19) सिखाएं कि पवित्र सांस उन्हें फिर से एक कर देगी, सद्भाव और शांति बहाल करेगी;

20) कि कोई उन्हें प्रेम के सिवा एक नहीं बना सकता; कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपने पुत्र को मांस पहिनाया है, कि मनुष्य समझ सके।

21) संसार का एकमात्र उद्धारकर्ता प्रेम है, और मरियम के पुत्र यीशु, उस प्रेम को मनुष्यों के सामने प्रकट करने के लिए आते हैं।

22) अब, प्रेम तब तक प्रकट नहीं हो सकता जब तक उसका मार्ग तैयार नहीं किया जाता है, और कोई भी चट्टान को तोड़ नहीं सकता है और ऊंची पहाड़ियों को नीचे ला सकता है और घाटियों को भर सकता है, और इस प्रकार मार्ग तैयार कर सकता है, लेकिन पवित्रता।

23) लेकिन जीवन में पवित्रता, मनुष्य नहीं समझते; और इसलिए, यह भी, मांस में आना चाहिए।

24) और हे इलीशिबा, तू धन्य है, क्योंकि तेरा पुत्र पवित्र देह का बना हुआ है, और वह प्रेम का मार्ग प्रशस्त करेगा।

25) यह युग पवित्रता और प्रेम के कामों को समझेगा, लेकिन बहुत कम; परन्तु एक शब्द भी नहीं खोया, क्योंकि परमेश्वर के स्मरण की पुस्तक में हर विचार, और वचन, और कर्म की एक रजिस्ट्री है;

26) और जब संसार ग्रहण करने को तैयार होगा, तब परमेश्वर एक दूत भेजेगा, जो पुस्तक को खोलेगा और उसके पवित्र पृष्ठों से पवित्रता और प्रेम के सभी सन्देशों की नकल करेगा।

27) तब पृथ्वी का हर एक मनुष्य अपनी जन्मभूमि की भाषा में जीवन के वचन पढ़ेगा, और मनुष्य उजियाले को देखेंगे, और ज्योति में चलेंगे, और ज्योति ठहरेंगे।

28) और मनुष्य फिर से परमेश्वर के साथ एक हो जाएगा।

अध्याय 8

एलीहू के सबक। जीवन की एकता। दो स्व. शैतान। प्रेम - पुरुषों का उद्धारकर्ता। प्रकाश के डेविड। अंधेरे का गोलियत।

एलीहू फिर से पवित्र उपवन में अपने शिष्यों से मिला और कहा,

2) कोई भी व्यक्ति अपने आप में नहीं रहता है; क्योंकि हर एक जीवित जन्तु सब जीवित जन्तुओं से रस्सियों से बंधा है।

3) धन्य हैं हृदय के पवित्र; क्योंकि वे प्रेम करेंगे और बदले में प्रेम नहीं मांगेंगे।

4) वे दूसरे मनुष्यों के साथ वैसा नहीं करेंगे जैसा वे दूसरों से नहीं चाहते थे कि वे उनके साथ करें।

5) दो स्व हैं; उच्च और निम्न स्व।

6) उच्च स्व आत्मा से ओतप्रोत मानव आत्मा है, जिसे ईश्वर के रूप में बनाया गया है।

7) निचला स्व, शारीरिक स्व, इच्छाओं का शरीर, उच्च स्व का प्रतिबिंब है, जो मांस के धुंधले ईथर द्वारा विकृत है।

8) निचला स्व एक भ्रम है, और मर जाएगा; उच्च आत्म मनुष्य में भगवान है, और नहीं मिटेगा।

9) उच्च स्व सत्य का अवतार है; निचला स्व सत्य उलट जाता है, और इसी तरह असत्य भी प्रकट होता है।

10) उच्च आत्म न्याय, दया, प्रेम और अधिकार है; निचला स्व वह है जो उच्च स्व नहीं है।

11) नीच व्यक्ति घृणा, बदनामी, धूर्तता, हत्या, चोरी, और जो कुछ हानि पहुँचाता है वह सब पैदा करता है; उच्च स्व सद्गुणों और जीवन के सामंजस्य की जननी है।

12) नीच व्यक्ति वादों में समृद्ध है, लेकिन धन्य और शांति में गरीब है; यह आनंद, आनंद और संतोषजनक लाभ प्रदान करता है; लेकिन अशांति और दुख और मृत्यु देता है।

13) यह मनुष्यों को ऐसे सेब देता है जो आंख को भाते हैं और सुगन्ध से मनभावन होते हैं; उनके कोर कड़वाहट और पित्त से भरे हुए हैं।

14) यदि आप मुझसे पूछें कि क्या अध्ययन करना है, तो मैं कहूंगा, आप स्वयं; और जब आप उनका अच्छी तरह से अध्ययन कर लेंगे, और फिर मुझसे पूछेंगे कि आगे क्या पढ़ना है, तो मैं आपको जवाब दूंगा।

15) वह जो अपने निचले स्व को अच्छी तरह जानता है, दुनिया के भ्रमों को जानता है, जो बीतती है उसे जानता है; और जो अपने उच्च स्व को जानता है, वह परमेश्वर को जानता है; उन चीजों को अच्छी तरह से जानता है जो गुजर नहीं सकतीं।

16) तीन बार धन्य है वह मनुष्य जिसने पवित्रता को अपने से प्रेम किया है; उसे निम्नतर आत्म के खतरों से छुड़ाया गया है और वह स्वयं उसका उच्च स्व है।

17) मनुष्य उस बुराई से मुक्ति चाहते हैं जिसे वे पाताल लोक का एक जीवित राक्षस समझते हैं; और उनके पास ऐसे देवता हैं जो भेष बदलकर दुष्टात्माएं हैं; सभी शक्तिशाली, फिर भी ईर्ष्या और घृणा और वासना से भरे हुए;

18) जिनकी कृपा फल, और पक्षियों, और पशुओं, और मानव जाति के प्राणों के महंगे बलिदान के साथ खरीदी जानी चाहिए।

19) और फिर भी इन देवताओं के पास सुनने के लिए कान नहीं, देखने के लिए आंखें नहीं, सहानुभूति के लिए हृदय नहीं, बचाने की शक्ति नहीं है।

20) यह बुराई मिथक है; ये देवता हवा से बने हैं और एक विचार की छाया से आच्छादित हैं।

21) एकमात्र शैतान जिससे लोगों को छुटकारा पाना चाहिए, वह है स्वयं, निचला स्व। यदि मनुष्य को अपना शैतान मिल जाए तो उसे अपने भीतर देखना चाहिए; उसका नाम स्व है।

22) यदि मनुष्य को अपना उद्धारकर्ता मिल जाए तो उसे अपने भीतर देखना चाहिए; और जब दुष्टात्मा को सिंहासन से हटा दिया जाएगा, तब प्रेम, शक्ति के सिंहासन पर विराजमान होगा।

23) प्रकाश का दाऊद पवित्रता है, जो अंधेरे के मजबूत गोलियत को मार डालता है, और उद्धारकर्ता, प्रेम को सिंहासन पर बैठाता है।

अध्याय 9

सैलोम के सबक। पुरुष और स्त्री। मानव मनोदशा का दर्शन। त्रिगुण देव। सेप्टोनेट। भगवान ताओ।

सैलोम ने दिन का पाठ पढ़ाया। उसने कहा, सभी समय एक जैसे नहीं होते हैं। आज मनुष्य के शब्दों में सबसे बड़ी शक्ति हो सकती है; कल औरत सबसे अच्छा सिखाती है।

2) जीवन के सभी तरीकों में पुरुष और महिला को हाथ में हाथ डालकर चलना चाहिए; एक के बिना दूसरा आधा है; प्रत्येक के पास करने के लिए एक काम है।

3) लेकिन सभी चीजें सिखाती हैं; प्रत्येक का अपना एक समय और एक मौसम होता है। पुरुषों के लिए सूर्य, चंद्रमा के अपने स्वयं के सबक हैं; लेकिन हर एक नियत समय पर पढ़ाता है।

4) सूर्य की शिक्षा मानव हृदय पर ऐसे गिरती है जैसे धारा पर सूखे पत्ते, यदि चन्द्रमा के मौसम में दिए जाएं; और इसलिए चंद्रमा और सभी सितारों के पाठों के साथ।

5) आज एक उदास, निराश और उत्पीड़ित में चलता है; कल वही खुशी से भर जाएगा।

6) आज आकाश आशिष और आशा से भरा हुआ प्रतीत होता है; कल की आशा भाग गई है, और हर योजना और उद्देश्य शून्य हो जाता है।

7) आज जिस भूमि पर वह चलता है उसी को श्राप देना चाहता है; कल वह प्रेम और प्रशंसा से भरा होगा।

8) आज कोई उस से बैर, और तिरस्कार और डाह करता है, और जिस लड़के से वह प्रेम रखता है उस से डाह करता है; कल वह अपने शारीरिक आत्म से ऊपर उठ गया है और खुशी और अच्छी इच्छा की सांस लेता है।

9) हजार बार लोग सोचते हैं कि ये ऊंचाई और गहराई, ये हल्के दिल और ये उदास, हर जीवन में क्यों पाए जाते हैं।

10) वे नहीं जानते कि हर जगह शिक्षक हैं, प्रत्येक एक ईश्वर-नियुक्त कार्य में व्यस्त है, और मानव हृदय को सच्चाई तक पहुँचाता है।

11) लेकिन यह सच है, और हर किसी को वह सबक मिलता है जिसकी उसे जरूरत होती है।

12) मरियम ने कहा, आज मैं महान हूं; मेरे विचार और मेरा सारा जीवन ऊपर उठा हुआ लगता है; मैं इस प्रकार प्रेरित क्यों हूं?

13) सलोमी ने उत्तर दिया, यह महानता का दिन है; पूजा और स्तुति का दिन; एक दिन जब, कुछ हद तक, हम अपने पिता-परमेश्वर को समझ सकते हैं।

14) तो आइए हम ईश्वर, एक, तीन, सात का अध्ययन करें।

15) संसार के बनने से पहले सभी चीजें एक थीं; सिर्फ आत्मा, सार्वभौमिक सांस।

16) और आत्मा ने सांस ली, और जो प्रकट नहीं था वह आग और स्वर्ग का विचार, पिता-ईश्वर, माता-भगवान बन गया।

17) और जब आग और स्वर्ग के विचार ने एक साथ सांस ली, तो उनका पुत्र, उनका इकलौता पुत्र, पैदा हुआ। यह पुत्र प्रेम है जिसे मनुष्यों ने मसीह कहा है।

18) पुरुष स्वर्ग के विचार को पवित्र श्वास कहते हैं।

19) और जब त्रिएक परमेश्वर ने साँस ली, तो देखो, सात आत्माएँ सिंहासन के सामने खड़ी थीं। ये एलोहीम, ब्रह्मांड की रचनात्मक आत्माएं हैं।

20) और ये वे हैं जिन्होंने कहा, हम मनुष्य को बनाते हैं; और उनके स्वरूप में मनुष्य बनाया गया।

21) विश्व के प्रारंभिक युग में सुदूर पूर्व के निवासियों ने कहा, ताओ सार्वभौम श्वास का नाम है; और प्राचीन पुस्तकों में हम पढ़ते हैं,

22) ताओ महान का कोई प्रकट रूप नहीं है, और फिर भी उसने आकाश और पृथ्वी को बनाया और रखता है।

23) हमारे ताओ महान में कोई जुनून नहीं है, और फिर भी वह सूर्य और चंद्रमा और सभी सितारों को उगता और सेट करता है।

24) ताओ महान का कोई नाम नहीं है, फिर भी वह सब कुछ विकसित करता है; वह बीज के समय और फसल के समय दोनों का मौसम लाता है।

25) और ताओ महान एक था; एक दो बन गया; दो तीन बन गए, तीन ने सात को विकसित किया, जिसने ब्रह्मांड को प्रकट से भर दिया।

26) और ताओ महान सभी को देता है, बुराई और अच्छा, बारिश, ओस, धूप और फूल; वह अपने धनी भंडारों से उन सबका भरण पोषण करता है।

27) और उसी पुरानी किताब में हम मनुष्य के बारे में पढ़ते हैं: उसकी आत्मा ताओ महान से जुड़ी हुई है; एक आत्मा जो ताओ महान के सात श्वासों के भीतर रहती है; इच्छाओं का एक शरीर जो मांस की मिट्टी से उगता है।

28) अब आत्मा शुद्ध, भले, सच्चे से प्रेम करती है; इच्छाओं का शरीर स्वार्थी स्वयं की प्रशंसा करता है; आत्मा दोनों के बीच युद्ध का मैदान बन जाती है।

29) और धन्य है वह मनुष्य जिसकी आत्मा जयवन्त होती है और जिसका निचला आत्मा शुद्ध होता है; जिसकी आत्मा शुद्ध हो गई है, ताओ महान के प्रकटीकरण के परिषद कक्ष बनने के लिए उपयुक्त हो रही है।

30) इस प्रकार सैलोम का पाठ समाप्त हो गया।

अध्याय 10

एलीहू के सबक। ब्राहमण धर्म। अब्राम का जीवन। यहूदी पवित्र पुस्तकें। फारसी धर्म।

एलीहू ने सिखाया; उन्होंने कहा, प्राचीन काल में पूर्व में लोग भगवान के उपासक थे, जिन्हें वे ब्रहम कहते थे।

2) उनके कानून न्यायपूर्ण थे; वे शांति से रहते थे; उन्होंने भीतर का प्रकाश देखा; वे बुद्धि के मार्ग पर चले।

3) लेकिन शारीरिक उद्देश्य वाले पुजारी उठे, जिन्होंने शारीरिक दिमाग के अनुरूप कानूनों को बदल दिया; गरीबों पर भारी बोझ डाला, और अधिकार के नियमों का तिरस्कार किया; और इसलिए ब्रह्म भ्रष्ट हो गए।

4) लेकिन युग के अंधेरे में कुछ महान गुरु अडिग खड़े रहे; उन्हें ब्रह्म का नाम प्रिय था; वे दुनिया के सामने महान प्रकाशस्तंभ थे।

5) और उन्होंने अपने पवित्र ब्रह्म के ज्ञान का उल्लंघन किया, और आप उनकी पवित्र पुस्तकों में इस ज्ञान को पढ़ सकते हैं।

6) और कसदिया में, ब्रह्म को जाना जाता था। तेरा नाम एक पवित्र ब्रह्म ऊर में रहता था; उनका पुत्र ब्राह्मण धर्म के प्रति इतना समर्पित था कि उसे अ-ब्रह्म कहा जाता था; और वह इब्रानी जाति का पिता ठहराया गया।

7) अब तेरह अपनी पत्नी, पुत्रों, और सब भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों को पश्चिम में हारान में ले गया; यहाँ तेरह मर गया।

8) और अब्राम भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को लेकर पश्चिम की ओर चला गया;

9) और जब वह कनान देश में मोरा के ओक के पास पहुंचा, तो उसने अपने तम्बू खड़े किए और वहां निवास किया।

10) उस देश में अकाल पड़ा, और अब्राम अपक्की कुटुम्बियोंऔर भेड़-बकरियोंऔर गाय-बैलोंको लेकर मिस्र में आया, और सोअन के इन उपजाऊ मैदानोंमें अपना तम्बू खड़ा किया, और यहीं रहा।

11) और लोग अभी भी उस स्थान को चिन्हित करते हैं जहां अब्राम रहता था - मैदान के पार।

12) तुम पूछते हो कि अब्राम मिस्र देश में क्यों आया? यह दीक्षा का पालना है; सब गुप्त वस्तुएं मिस्र देश की हैं; और इसलिए स्वामी आते हैं।

13) ज़ोआन में अब्राम ने सितारों का विज्ञान पढ़ाया, और वहाँ के उस पवित्र मंदिर में उसने बुद्धिमानों की बुद्धि सीखी।

14) और जब उसके सब कुछ सीख लिया गया, तब वह अपके कुटुम्बियोंऔर भेड़-बकरियोंऔर गाय-बैलोंको लेकर कनान को लौट गया, और मम्रे के अराबा में अपना तम्बू खड़ा किया, और वहीं रहने लगा, और वहीं मर गया।

15) और उसके जीवन और कार्यों और उसके पुत्रों, और इस्राएल के गोत्रों के अभिलेख, यहूदी पवित्र पुस्तकों में अच्छी तरह से संरक्षित हैं।

16) फारस में ब्रह्म को जाना और जाना जाता था। लोगों ने उसे एक के रूप में देखा, जो कि सभी का अकारण कारण है, और वह उनके लिए पवित्र था, जैसे ताओ सुदूर पूर्व के निवासियों के लिए।

17) लोग शांति से रहते थे, और न्याय ने शासन किया।

18) लेकिन, अन्य देशों की तरह, फारस में याजकों ने आत्म और आत्म-इच्छाओं से प्रभावित होकर बल, बुद्धि और प्रेम को नाराज कर दिया;

19) धर्म भ्रष्ट हो गया, और पक्षी और जानवर और रेंगने वाले जानवर देवताओं के रूप में अलग हो गए।

20) समय के साथ एक महान आत्मा, जिसे लोग जरथुस्त्र कहते थे, मांस में आया।

21) उसने अकारण आत्मा को ऊंचा और ऊंचा देखा; उसने सभी मानव-नियुक्त देवताओं की दुर्बलता देखी।

22) वह बोला और सारे फारस ने सुना; और जब उस ने कहा, एक परमेश्वर, एक प्रजा और एक ही मन्दिर, तब मूरतोंकी वेदियां गिर गईं, और फारस छुड़ा लिया गया।

23) परन्तु मनुष्यों को अपने देवताओं को मानवीय आंखों से देखना चाहिए, और जरथुस्त्र ने कहा,

24) सिंहासन के पास खड़ी सबसे बड़ी आत्माएं अहुरा मज़्दा हैं, जो सूर्य की चमक में प्रकट होती हैं।

25) और सब लोगोंने अहुरा मज़्दा को धूप में देखा, और वे गिरकर सूर्य के मन्दिरोंमें उसको दण्डवत करने लगे।

26) और फारस जादूगर भूमि है जहां याजक रहते हैं जिन्होंने तारा को उस स्थान को चिह्नित करने के लिए देखा जहां मैरी का पुत्र पैदा हुआ था और शांति के राजकुमार के रूप में उनका स्वागत करने वाले पहले व्यक्ति थे।

27) जरथुस्त्र के उपदेश और नियम अवेस्ता में संरक्षित हैं जिन्हें आप पढ़ सकते हैं और अपना बना सकते हैं।

28) लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि जब तक शब्द जीवित नहीं होते हैं, तब तक कुछ भी नहीं है; जब तक उनमें निहित पाठ मस्तिष्क और हृदय का हिस्सा नहीं बन जाते।

29) अब सत्य एक है; परन्तु कोई भी सत्य को तब तक नहीं जानता जब तक कि वह सत्य न हो। यह एक प्राचीन ग्रंथ में दर्ज है।

30) सत्य परमेश्वर की खमीरी शक्ति है; यह सारे जीवन को अपने आप में बदल सकता है; और जब सारा जीवन सत्य है, तब मनुष्य सत्य है।

<u>अध्याय 11</u>

एलीहू के सबक। बौद्ध धर्म और बुद्ध के उपदेश। मिस्र के रहस्य।

एलीहू ने फिर सिखाया; उसने कहा, भारतीय याजक भ्रष्ट हो गए; गलियों में भुला दिया गया ब्रह्म। पुरुषों के अधिकारों को धूल में रौंदा गया।

2) और फिर एक शक्तिशाली गुरु आया, ज्ञान का बुद्ध, जो धन और दुनिया के सभी सम्मानों से दूर हो गया, और शांत पेड़ों और गुफाओं में मौन पाया; और वह वरदान था।

3) उसने उच्च जीवन के सुसमाचार का प्रचार किया, और मनुष्य को मनुष्य का सम्मान करना सिखाया।

4) उसके पास सिखाने के लिए देवताओं का कोई सिद्धांत नहीं था; वह सिर्फ मनुष्य को जानता था, और इसलिए उसका विश्वास न्याय, प्रेम और धार्मिकता था।

5) मैं आपके लिए बुद्ध द्वारा बोले गए कई उपयोगी शब्दों में से कुछ को उद्धृत करता हूं:

6) नफरत एक क्रूर शब्द है। यदि पुरुष तुझ से बैर रखते हैं, तो उस पर ध्यान न देना; और तुम मनुष्यों की बैर को प्रेम, और करूणा, और प्रीति में बदल सकते हो, और करूणा सारे आकाश के तुल्य है।

7) और सभी के लिए काफी अच्छा है। अच्छे से बुरे का नाश करो; उदार कार्यों से लोभ को लज्जित करना; सत्य के साथ उन टेढ़ी रेखाओं को सीधा करो जो त्रुटि खींचती है, क्योंकि त्रुटि है लेकिन सत्य विकृत है, भटक गया है।

8) और जो कोई बोलता है या बुरे विचारों से काम करता है, उसके पीछे दर्द होगा, जैसा कि गाड़ी चलाने वाले के पैर का पहिया होता है।

9) वह युद्ध में एक हजार आदमियों को मारने वाले से बड़ा आदमी है जो खुद को जीत लेता है।

10) वह महान व्यक्ति है जो स्वयं वही है जो वह मानता है कि अन्य पुरुषों को क्या होना चाहिए।

11) उसी के पास लौट जा, जो तुझ से शुद्ध प्रेम करता है, और वह पाप करना छोड़ देगा; क्योंकि प्रेम उसके प्रिय के हृदय को वैसे ही पवित्र कर देगा जैसे वह प्रेम करनेवाले के हृदय को शुद्ध करता है।

12) बुद्ध के शब्द भारतीय पवित्र पुस्तकों में दर्ज हैं; उन पर ध्यान दें, क्योंकि वे पवित्र श्वास के निर्देशों का हिस्सा हैं।

13) मिस्र देश गुप्त वस्तुओं का देश है।

14) युगों के रहस्य हमारे मंदिरों और हमारी चमक में बंद हैं।

15) सभी समयों और मौसमों के स्वामी यहाँ सीखने आते हैं; और जब तेरे पुत्र बड़े हो जाएंगे, तब वे मिस्र के विद्यालयों में अपनी सारी शिक्षा पूरी करेंगे।

16) लेकिन मैंने काफी कह दिया है। कल सूरज उगने पर हम फिर मिलेंगे।

अध्याय 12

सैलोम के सबक। प्रार्थना। एलीहू के समापन पाठ। अध्ययन के तीन साल के पाठ्यक्रम को सारांशित करता है। छात्र अपने घरों को लौट जाते हैं।

अब, जब भोर का सूर्य निकला तो स्वामी और उनके शिष्य सभी पवित्र उपवन में थे।

2) सैलोम सबसे पहले बोलने वाले थे; उसने कहा, सूर्य को निहारना! यह भगवान की शक्ति को प्रकट करता है जो सूर्य और चंद्रमा और सितारों के माध्यम से हमसे बात करता है;

3) पहाड़, पहाड़ी और घाटी के माध्यम से; फूल, और पौधे और पेड़ के माध्यम से।

4) भगवान हमारे लिए पक्षी, और हार्पसीकोर्ड, और मानव आवाज के माध्यम से गाते हैं; वह हवा और बारिश और गरज के माध्यम से हम से बात करता है; हम क्यों न झुकें और उनके चरणों में प्रणाम करें?

5) परमेश्वर दिलों से अलग बात करता है; और मन से अलग होकर उस से बातें करें; और यह प्रार्थना है।

6) यह प्रार्थना नहीं है कि ईश्वर की जयजयकार करें, खड़े हों, या बैठें, या घुटने टेकें और उसे मनुष्यों के पापों के बारे में बताएं।

7) पवित्र को यह बताना प्रार्थना नहीं है कि वह कितना महान है, वह कितना अच्छा है, कितना बलवान और कितना दयालु है।

8) परमेश्वर मनुष्य नहीं है जो मनुष्य की प्रशंसा से मोल लिया जाए।

9) प्रार्थना प्रबल इच्छा है कि जीवन का हर तरीका हल्का हो; कि हर कार्य को अच्छे के साथ ताज पहनाया जाए; कि हमारी सेवकाई के द्वारा हर एक जीवित वस्तु समृद्ध हो।

10) एक नेक काम, एक मददगार शब्द है प्रार्थना; एक उत्कट, एक प्रभावी प्रार्थना।

11) प्रार्थना का स्रोत हृदय में है; मन से नहीं, शब्दों से, दिल को भगवान तक ले जाया जाता है, जहां यह आशीर्वाद हो, तो हम प्रार्थना करें।

12) उन्होंने प्रार्थना की, परन्तु एक भी शब्द न कहा गया; लेकिन उस पवित्र मौन में हर दिल खुश था।

13) तब एलीहू बोला। उस ने मरियम और इलीशिबा से कहा, हमारी बातें कही गई हैं; आपको यहाँ अधिक समय तक रुकने की आवश्यकता नहीं है; कॉल आ गया है; मार्ग साफ है, तुम अपनी जन्मभूमि को लौट सकते हो।

14) एक शक्तिशाली काम आपको करने के लिए दिया जाता है; आप उन दिमागों को निर्देशित करेंगे जो दुनिया को निर्देशित करेंगे।

15) तेरे पुत्र मनुष्यों को नेक विचारों, और वचनों, और कामों की ओर ले जाने के लिथे अलग किए गए हैं;

16) मनुष्यों को पाप के पाप का बोध कराने के लिए; उन्हें निम्न आत्मा की आराधना से, और सभी भ्रामक चीजों से अगुवाई करने के लिए, और उन्हें स्वयं के प्रति जागरूक बनाने के लिए जो परमेश्वर में मसीह के साथ रहता है।

17) अपने काम की तैयारी के लिए तुम्हारे पुत्रों को बहुत से काँटेदार रास्तों पर चलना होगा।

18) अन्य पुरुषों की तरह वे भीषण परीक्षाओं और प्रलोभनों का सामना करेंगे; उनका बोझ हल्का न होगा, और वे थके हुए और मूर्छित होंगे।

19) और वे भूख और प्यास की पीड़ा को जानेंगे; और अकारण ठट्ठों में उड़ाए जाएंगे, कैद किए जाएंगे, कोड़े मारे जाएंगे।

20) वे बहुत देशों में जाएंगे, और वे बहुत से स्वामी के चरणों में बैठेंगे, क्योंकि उन्हें अन्य लोगों की तरह सीखना होगा।

21) लेकिन हमने काफी कह दिया है। सिंहासन के सामने खड़े तीन और सात का आशीर्वाद निश्चित रूप से आप पर हमेशा बना रहेगा।

22) इस प्रकार एलीहू और सैलोम के पाठ समाप्त हो गए। तीन साल उन्होंने अपने शिष्यों को पवित्र उपवन में पढ़ाया, और यदि उनके सभी पाठ एक पुस्तक में लिखे गए, तो यह एक शक्तिशाली पुस्तक होगी; उन्होंने जो कहा उसका हमारे पास योग है।

23) अब, मरियम, यूसुफ और इलीशिबा, यीशु और उसके अग्रदूत के साथ, अपने घर की ओर प्रस्थान कर गए। वे यरूशलेम के पास नहीं गए, क्योंकि अर्खिलाउस राज्य करता रहा।

24) उन्होंने कड़वे समुद्र के किनारे कूच किया, और एंगेदी पहाड़ियों पर पहुंचकर यहोशू के एक निकट संबंधी के घर में विश्राम किया; और यहीं इलीशिबा और यूहन्ना निवास करते थे।

25) परन्तु यूसुफ, मरियम और उनका पुत्र यरदन के मार्ग से चले, और कुछ दिनों के बाद वे अपने घर नासरत को पहुँचे।

भाग 1/धारा IV

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड IV
DALETH

जॉन, द हरबिंगर का बचपन और प्रारंभिक शिक्षा
(अध्याय 13 - 15)

अध्याय 13

एंगेडी में एलिजाबेथ। बेटे को पढ़ाती है। जॉन मथेनो का शिष्य बन जाता है, जो उसे पाप का अर्थ और क्षमा का नियम बताता है।

एलिजाबेथ आनंदित थी; उसने अपना समय यूहन्ना के साथ बिताया और उसे वह शिक्षा दी जो एलीहू और सलोमी ने उसे दी थी।

2) और यूहन्ना अपने घर के जंगलीपन और सीखी हुई शिक्षाओं से प्रसन्न होता था।

3) अब पहाड़ियों में बहुत सी गुफाएँ थीं। दाऊद की गुफा एक निकट थी जिसमें एंगेदी का साधु रहता था।

4) यह सन्यासी मथेनो, मिस्र का पुजारी, सक्कारा के मंदिर का स्वामी था।

5) जब यूहन्ना सात वर्ष का हुआ तब मतेनो उसे जंगल में ले गया और दाऊद की गुफा में रहने लगा।

6) मैथेनो ने पढ़ाया, और गुरु ने जो कहा उससे जॉन रोमांचित हो गया, और दिन-ब-दिन मैथेनो ने उसके लिए जीवन के रहस्यों को खोल दिया।

7) यूहन्ना को जंगल से प्रेम था; वह अपने मालिक और अपने साधारण किराया से प्यार करता था। उनका भोजन फल, और मेवा, जंगली शहद और कैरब की रोटी थी।

8) मथेनो एक इस्राएली था, और वह सभी यहूदी दावतों में शामिल होता था।

9) जब जॉन नौ साल का था तब मथेनो उसे यरूशलेम में एक बड़ी दावत में ले गया।

10) दुष्ट अर्खिलौस को स्वार्थ और क्रूरता के कारण अपदस्थ कर दिया गया था और एक दूर देश में निर्वासित कर दिया गया था, और यूहन्ना डरता नहीं था।

11) यूहन्ना अपनी यरूशलेम की यात्रा से बहुत खुश था। मथेनो ने उसे यहूदियों की सेवा के बारे में सब कुछ बताया; उनके बलिदान और उनके संस्कारों का अर्थ।

12) यूहन्ना समझ नहीं पा रहा था कि कैसे जानवरों और पक्षियों को मारकर और उन्हें प्रभु के सामने जलाकर पाप को क्षमा किया जा सकता है।

13) मथेनो ने कहा, स्वर्ग और पृथ्वी के देवता को बलिदान की आवश्यकता नहीं है। यह रिवाज, अपने क्रूर संस्कारों के साथ, अन्य देशों के मूर्ति पूजा करने वालों से उधार लिया गया था।

14) पशु, पक्षी या मनुष्य के बलिदान से कोई पाप कभी नहीं मिटता।

15) पाप मनुष्य का दुष्टता के गढ़ में भागना है। यदि कोई पाप से बचना चाहता है, तो उसे अपने कदम पीछे करना चाहिए, और दुष्टता के बाड़े से बाहर निकलने का रास्ता खोजना चाहिए।

16) लौट आओ और अपने हृदयों को प्रेम और धर्म के द्वारा शुद्ध करो, तो तुम्हारी क्षमा होगी।

17) यह संदेश का बोझ है जो अग्रदूत लोगों को लाएगा।

18) क्षमा क्या है? जॉन ने पूछताछ की।

19) मैथेनो ने कहा, यह कर्ज का भुगतान है। एक आदमी जो दूसरे आदमी को गलत करता है उसे तब तक माफ नहीं किया जा सकता जब तक कि वह गलत को सही न करे।

20) वेद कहते हैं कि गलत को ठीक करने वाले के अलावा कोई नहीं कर सकता।

21) यूहन्ना ने कहा, यदि यह सच है, तो क्षमा करने की शक्ति, सिवाय उस शक्ति के जो मनुष्य में ही है, कहां है? क्या मनुष्य स्वयं को क्षमा कर सकता है?

22) मथेनो ने कहा, द्वार चौड़ा अजर है; तुम मनुष्य के दाहिनी ओर लौटने का मार्ग, और उसके पापों की क्षमा को देखते हो।

अध्याय 14

मैथेनो के सबक। सार्वभौमिक कानून का सिद्धांत। मनुष्य की चुनने और प्राप्त करने की शक्ति। विरोध के लाभ। प्राचीन पवित्र ग्रंथ। दुनिया के इतिहास में जॉन और जीसस का स्थान।

MATHENO और उसके शिष्य, जॉन, पुराने समय की पवित्र पुस्तकों के बारे में बात कर रहे थे, और उनमें निहित सुनहरे उपदेश थे, और जॉन ने कहा,

2) ये सुनहरे उपदेश उदात्त हैं; हमें अन्य पवित्र पुस्तकों की क्या आवश्यकता है?

3) मथेनो ने कहा, पवित्र की आत्माएं हर चीज को उचित समय पर आने और जाने का कारण बनती हैं।

4) सूर्य के अस्त होने का, चन्द्रमा के उदय होने का, ढलने का, क्षीण होने का, तारे का आने-जाने का, वर्षा का गिरने का, हवा का बहने का समय होता है;

5) बीज का समय और आने वाला फसल का समय; मनुष्य का जन्म होना और मनुष्य का मरना।

6) ये शक्तिशाली आत्माएं राष्ट्रों को जन्म देती हैं; वे उन्हें अपने पालने में हिलाते हैं, उन्हें सबसे बड़ी शक्ति के लिए पोषित करते हैं, और जब उनका काम पूरा हो जाता है तो वे उन्हें अपनी घुमावदार चादरों में लपेटते हैं और उनकी कब्रों में रख देते हैं।

7) एक राष्ट्र के जीवन में और मनुष्य के जीवन में कई घटनाएँ होती हैं, जो उस समय के लिए सुखद नहीं होती हैं; लेकिन अंत में सत्य प्रकट होता है: जो कुछ भी आता है वह अच्छे के लिए होता है।

8) मनुष्य को एक महान भाग के लिए बनाया गया था; परन्तु वह ज्ञान, सच्चाई और पराक्रम से परिपूर्ण स्वतंत्र मनुष्य न बन सका,

9) यदि उसे घेराबंदी की गई थी, जो कि जलडमरूमध्य में बंद था, जहाँ से वह नहीं निकल सकता था, तो वह एक खिलौना होगा, एक मात्र मशीन।

10) रचनात्मक आत्माओं ने मनुष्य को एक वसीयत दी; और इसलिए उसके पास चुनने की शक्ति है।

11) वह सबसे बड़ी ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकता है या सबसे गहरी गहराई तक डूब सकता है; क्योंकि वह जो पाना चाहता है, उसे पाने की शक्ति उसके पास है।

12) यदि वह शक्ति चाहता है तो उसके पास वह शक्ति प्राप्त करने की शक्ति है; लेकिन लक्ष्य तक पहुंचने के लिए उसे प्रतिरोधों को दूर करना होगा; आलस्य में कभी कोई शक्ति प्राप्त नहीं होती।

13) इसलिए, कई तरफा संघर्षों के चक्कर में आदमी को वहाँ रखा जाता है जहाँ उसे खुद को निकालने का प्रयास करना चाहिए।

14) हर संघर्ष में आदमी ताकत हासिल करता है; हर विजय के साथ वह अधिक से अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करता है। हर दिन के साथ वह नए कर्तव्यों और नई परवाह पाता है।

15) मनुष्य को खतरनाक गड्ढों में नहीं ले जाया जाता, और न ही अपने शत्रुओं पर विजय पाने में मदद की जाती है। वह आप ही उसकी सेना, और उसकी तलवार और ढाल है; और वह अपने यजमानों का प्रधान है।

16) पवित्र लोग उसके मार्ग को प्रकाशमान करते हैं। मनुष्य को कभी भी मार्गदर्शन करने के लिए एक बीकन लाइट के बिना नहीं छोड़ा गया है।

17) और उसके हाथ में कभी जलता हुआ दीपक रहा है, कि वह खतरनाक चट्टानों, गंदले नालों और विश्वासघाती गड्ढों को देख सके।

18) और इस प्रकार पवित्र लोगों ने न्याय किया है; जब मनुष्यों को अतिरिक्त प्रकाश की आवश्यकता होती है तो एक गुरु आत्मा प्रकाश देने के लिए पृथ्वी पर आई है।

19) वैदिक काल से पहले दुनिया के पास कई पवित्र ग्रंथ थे जो मार्ग प्रशस्त करते थे; और जब मनुष्य को वेदों के अधिक से अधिक प्रकाश की आवश्यकता थी, तो अवेस्ता और ताओ महान की पुस्तकें अधिक ऊंचाइयों का मार्ग दिखाने के लिए प्रकट हुईं।

20) और उचित स्थान पर हिब्रू बाइबिल, उसके कानून, उसके भविष्यवक्ताओं और उसके भजनों के साथ, मनुष्य के ज्ञान के लिए प्रकट हुए।

21) लेकिन साल बीत चुके हैं और पुरुषों को अधिक रोशनी की जरूरत है।

22) और अब दिन का तारा ऊपर से चमकने लगता है; और यीशु मांस-निर्मित दूत है जो मनुष्यों को वह प्रकाश दिखाएगा।

23) और तुम, मेरे शिष्य, तुम्हें आने वाले दिन में आने के लिए ठहराया गया है।

24) लेकिन आपको हृदय की वह पवित्रता बनाए रखनी चाहिए जो अभी आपके पास है; और अपक्की वेदी पर के अंगारोंमें से अपना दीपक सीधे जलाना।

25) और तब तेरा दीपक एक असीम लौ में बदल जाएगा, और तू एक जीवित मशाल होगा, जिसका प्रकाश जहां कहीं मनुष्य रहेगा, वहीं चमकेगा।

26) लेकिन आने वाले युगों में, मनुष्य अधिक से अधिक ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा, और रोशनी और भी अधिक तीव्र होगी।

27) और फिर, अंत में, एक शक्तिशाली स्वामी आत्मा पृथ्वी पर पूर्ण मनुष्य के सिंहासन के मार्ग को प्रकाशित करने के लिए आएगी।

अध्याय 15

एलिजाबेथ की मृत्यु और दफन। मैथेनो के सबक। मृत्यु मंत्रालय। जॉन का मिशन। बपतिस्मा के संस्कार की संस्था। मैथेनो जॉन को मिस्र ले जाता है, और उसे सकारा के मंदिर में रखता है, जहां वह अठारह वर्ष तक रहता है।

जब यूहन्ना बारह वर्ष का था, तब उसकी माता मर गई, और पड़ोसियों ने उसके शरीर को हेब्रोन की कब्रगाह में, और जकरयाह की कब्र के पास उसके कुटुम्बियों के बीच एक कब्र में रखा।

2) और यूहन्ना बहुत दुखी हुआ; वह रोया। मथेनो ने कहा, मौत के कारण रोना अच्छा नहीं है।

3) मृत्यु मनुष्य की शत्रु नहीं है; यह एक मित्र है, जब जीवन का कार्य पूरा हो जाता है, तो बस उस रस्सी को काट देता है जो मानव नाव को पृथ्वी से बांधती है, कि वह चिकने समुद्रों पर चल सके।

4) कोई भी भाषा एक माँ के मूल्य का वर्णन नहीं कर सकती है, और आपकी कोशिश और सच्ची थी। लेकिन उसे तब तक नहीं बुलाया गया जब तक उसका काम पूरा नहीं हो गया।

5) मृत्यु के आह्वान हमेशा अच्छे के लिए होते हैं, क्योंकि हम वहाँ भी और यहाँ भी समस्याओं का समाधान कर रहे हैं; और व्यक्ति निश्चित रूप से खुद को ढूंढ लेगा जहां वह अपनी समस्याओं का सबसे अच्छा समाधान कर सकता है।

6) यह केवल स्वार्थ है जो किसी को फिर से मृत आत्माओं को पृथ्वी पर बुलाने की इच्छा रखता है।

7) फिर अपनी माँ को चैन से रहने दो। बस उसके नेक जीवन को आप के लिए ताकत और प्रेरणा बनने दें।

8) आपके जीवन में एक संकट आ गया है, और आपको उस कार्य की स्पष्ट अवधारणा होनी चाहिए जिसे करने के लिए आपको बुलाया गया है।

9) युगों के ऋषि आपको अग्रदूत कहते हैं। भविष्यद्वक्ता तेरी ओर दृष्टि करके कहते हैं, कि वह एलिय्याह है, फिर आ।

10) यहाँ आपका मिशन अग्रदूत का है; क्योंकि तू मसीहा के साम्हने उसका मार्ग प्रशस्त करने को जाएगा, और प्रजा को उसके राजा को ग्रहण करने के लिथे तैयार करेगा।

11) यह तत्परता हृदय की पवित्रता है; शुद्ध हृदय के सिवा कोई नहीं राजा को पहचान सकता है।

12) लोगों को दिल से पवित्र होना सिखाने के लिए, आपको अपने दिल और वचन और कर्म में शुद्ध होना चाहिए।

13) बचपन में ही तुम्हारे लिए मन्नत मानी गई और तुम नासरी बन गए। उस्तरा न तो तेरे मुंह को छूएगा, और न सिर को छूएगा, और न दाखरस और न ही ज्वलनशील पेय का स्वाद चखेगा।

14) पुरुषों को अपने जीवन के लिए एक पैटर्न की आवश्यकता होती है; वे अनुसरण करना पसंद करते हैं, नेतृत्व करना नहीं।

15) जो पथ के कोनों पर खड़ा होकर मार्ग की ओर इशारा करता है, परन्तु नहीं जाता, वह केवल एक सूचक है; और लकड़ी का एक ब्लॉक भी ऐसा ही कर सकता है।

16) शिक्षक मार्ग पर चलता है; जमीन के हर हिस्से पर वह अपने पैरों के निशान स्पष्ट रूप से काटता है, जिसे सभी देख सकते हैं और आश्वस्त हो सकते हैं कि वह, उनका स्वामी उस रास्ते से गया था।

17) पुरुष अपने आंतरिक जीवन को देखते और करते हैं। वे समारोहों और रूपों के माध्यम से भगवान के पास आते हैं।

18) और इसलिए जब आप लोगों को बताएंगे कि जीवन में पवित्रता से पाप धुल जाते हैं, तो एक प्रतीकात्मक संस्कार का परिचय दिया जा सकता है।

19) जो लोग पाप से दूर हो जाते हैं और जीवन में पवित्रता के लिए प्रयास करते हैं, उनके शरीर को पानी में धो लें।

20) सफाई का यह संस्कार एक तैयारी संस्कार है और जो इस प्रकार शुद्ध होते हैं उनमें चर्च ऑफ प्योरिटी शामिल है।

21) और तुम कहोगे, हे इस्राएल के लोगो, सुनो; सुधार और धो; पवित्रता के पुत्र बनो, और तुम्हें क्षमा किया जाएगा

22) शुद्धिकरण का यह संस्कार और यह चर्च जीवन में पवित्रता के द्वारा आत्मा की शुद्धि और आत्मा के राज्य के प्रतीक हैं, जो बाहरी दिखावे के साथ नहीं, बल्कि भीतर की कलीसिया है।

23) अब, आप कभी भी रास्ता नहीं दिखा सकते हैं और भीड़ को वह करने के लिए नहीं कह सकते जो आपने कभी नहीं किया है; लेकिन तुम्हें पहले जाना चाहिए और रास्ता दिखाना चाहिए।

24) तुम्हें सिखाना है कि पुरुषों को धोना चाहिए; इसलिए आपको मार्ग का नेतृत्व करना चाहिए, आपके शरीर को धोया जाना चाहिए, आत्मा की शुद्धि का प्रतीक।

25) यूहन्ना ने कहा, मुझे प्रतीक्षा करने की क्या आवश्यकता है? क्या मैं तुरन्त जाकर न धोऊँ?

26) मथेनो ने कहा, टिस वेल, और फिर वे यरदन के घाट पर, और यरीहो के पूर्व में गए, जहां इस्राएलियोंकी सेना कनान में पहिले उस पार गई, और कुछ समय तक वहीं रहे।

27) मथेनो ने अग्रदूत को सिखाया, और उसने उसे सफाई संस्कार का आंतरिक अर्थ समझाया और खुद को कैसे धोना है और भीड़ को कैसे धोना है।

28) और यरदन नदी में यूहन्ना नहाया गया; तब वे जंगल में लौट गए।

29) एंगेदी की पहाड़ियों में मथेनो का काम हो चुका था, और वह और यूहन्ना मिस्र को गए। उन्होंने तब तक विश्राम नहीं किया जब तक वे नील नदी की घाटी में सकारा के मंदिर तक नहीं पहुँचे।

30) कई वर्षों तक मैथेनो ब्रदरहुड के इस मंदिर में एक मास्टर था, और जब उसने जॉन के जीवन और पुरुषों के पुत्रों को अपने मिशन के बारे में बताया, तो हिरोफेंट ने खुशी के साथ अग्रदूत को प्राप्त किया और उसे भाई नाज़राइट कहा गया।

31) यूहन्ना अठारह वर्ष तक इन मन्दिर के फाटकों के भीतर रहा और काम करता रहा; और यहाँ उसने स्वयं को जीत लिया, मास्टर माइंड बन गया और अग्रदूत के कर्तव्यों को सीखा।

भाग 1/अनुभाग V

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड V
HE

यीशु का बचपन और प्रारंभिक शिक्षा
(अध्याय 16 - 20)

अध्याय 16

यूसुफ का घर। मैरी अपने बेटे को पढ़ाती है। यीशु का सातवां जन्मदिन। यीशु अपने सपने के बारे में बताता है; उनकी दादी की व्याख्या। उनके जन्मदिन का उपहार।

यूसुफ का घर नासरत में मार्मियन वे पर था; यहाँ मरियम ने अपने बेटे को एलीहू और सलोमी का पाठ पढ़ाया।

2) और यीशु को वैदिक स्तोत्र और अवेस्ता बहुत प्रिय थे; परन्तु सब से अधिक वह दाऊद के भजन और सुलैमान के तीखे शब्दों को पढ़ना पसंद करता था।

3) भविष्यवाणी की यहूदी पुस्तकें उसकी प्रसन्नता थीं; और जब वह सातवें वर्ष में पहुंचा, तो उसे पढ़ने के लिए पुस्तकों की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि उसने हर एक शब्द को स्मृति में रखा था।

4) जोआचिम और उसकी पत्नी, बच्चे यीशु के दादा-दादी, ने बच्चे के सम्मान में एक दावत की, और उनके सभी निकट संबंधी मेहमान थे।

5) यीशु ने अतिथियों के साम्हने खड़े होकर कहा, मैं ने एक स्वप्न देखा, और स्वप्न में मैं समुद्र के साम्हने, रेतीले तट पर खड़ा हुआ।

6) समुद्र पर लहरें ऊँची थीं; गहराई पर एक तूफान चल रहा था।

7) ऊपर किसी ने मुझे एक छड़ी दी। मैं ने छड़ी लेकर बालू को छुआ, और बालू का एक एक दाना जीवित प्राणी हो गया; समुद्र तट सभी सुंदरता और गीत का एक समूह था।

8) मैं ने जल को अपने पांवों के पास छुआ, और वे बदल कर वृक्ष, और फूल, और गानेवाले पक्षी हो गए, और सब कुछ परमेश्वर की स्तुति करने लगा।

9) और कोई बोला, मैं ने बोलने वाले को नहीं देखा, मैं ने यह शब्द सुना, कि मृत्यु नहीं है।

10) दादी अन्ना बच्चे से प्यार करती थीं; उस ने यीशु के सिर पर हाथ रखकर कहा, मैं ने तुझे समुद्र के किनारे खड़े देखा है; मैंने देखा कि तुम रेत और लहरों को छूते हो; मैंने उन्हें जीवित चीजों की ओर मुड़ते देखा और तब मुझे सपने का अर्थ पता चला।

11) जीवन का समुद्र ऊँचा उठता है; तूफान महान हैं। पुरुषों की भीड़ समुद्र तट पर मृत रेत की तरह बेकार, बेकार, प्रतीक्षा कर रही है।

12) तुम्हारी छड़ी सच है। इसके द्वारा आप लोगों को स्पर्श करते हैं, और प्रत्येक व्यक्ति पवित्र प्रकाश और जीवन का दूत बन जाता है।

13) तू जीवन के समुद्र की लहरों को छूता है; उनकी अशांति समाप्त हो जाती है; हवाएं ही स्तुति का गीत बन जाती हैं।

14) कोई मृत्यु नहीं है, क्योंकि सत्य की छड़ी सूखी हड्डियों को जीवित चीजों में बदल सकती है, और स्थिर तालाबों से सबसे प्यारे फूल ला सकती है, और सबसे अप्रिय नोटों को सद्भाव और प्रशंसा में बदल सकती है।

15) योआकिम ने कहा, हे मेरे पुत्र, आज तू अपने जीवन का सातवां पड़ाव पार कर गया है, क्योंकि तू सात वर्ष का है, और हम आज के दिन के स्मरण के लिये जो कुछ तू चाहते हैं वह तुझे दे देंगे; वह चुनें जो आपको सबसे अधिक प्रसन्न करेगा।

16) यीशु ने कहा, मुझे भेंट नहीं चाहिए, क्योंकि मैं तृप्त हूं। यदि मैं इस दिन बहुत से बच्चों को प्रसन्न कर सकूँ तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।

17) अब, नासरत में बहुत से भूखे लड़के-लड़कियां हैं जो हमारे साथ इस भोज को खाने और इस दिन के सुखों को हमारे साथ साझा करने में प्रसन्न होंगे।

18) सबसे बड़ा उपहार जो तुम मुझे दे सकते हो, वह यह है कि तुम बाहर जाकर इन दरिद्रों को ढूंढ़ो और यहां ले आओ कि वे हमारे साथ भोज करें।

19) योआचिम ने कहा, 'टिस वेल; बाहर जाकर ज़रूरतमंद लड़के-लड़कियों को ढूँढ़ो और उन्हें यहाँ ले आओ; हम सभी के लिए पर्याप्त तैयारी करेंगे।

20) और यीशु ने प्रतीक्षा नहीं की; वह दौड़ा; वह नगर की हर गंदी झोपड़ी और झोपड़ी में गया; उसने अपने शब्दों को बर्बाद नहीं किया; उन्होंने हर जगह अपने मिशन को बताया।

21) और कुछ ही समय में एक सौ तीन अंक के खुश, चीर-फाड़ वाले लड़के और लड़कियां मार्मियन वे का पीछा कर रहे थे।

22) मेहमानों ने रास्ता बनाया; बैंक्वेट हॉल यीशु के मेहमानों से भरा हुआ था, और यीशु और उसकी माँ ने सेवा करने में मदद की।

23) और सब के लिये पर्याप्त भोजन था, और सब आनन्दित हुए; और इसलिए यीशु का जन्मदिन उपहार धार्मिकता का मुकुट था।

अध्याय 17

यीशु नासरत के आराधनालय के रब्बी से बात करता है। वह यहूदी विचारों की संकीर्णता की आलोचना करता है।

अब, नासरत के आराधनालय के रब्बी बाराचिया, अपने बेटे की शिक्षा में मैरी की सहायता कर रहे थे।

2) एक सुबह आराधनालय में सेवा के बाद रब्बी ने यीशु से कहा, जब वह मौन विचार में बैठा था, दस आज्ञाओं में से सबसे बड़ी कौन सी है?

3) यीशु ने कहा, मैं दस आज्ञाओं में से बड़ी से बड़ी आज्ञा नहीं देखता। मुझे एक सुनहरी रस्सी दिखाई देती है जो सभी दस आज्ञाओं से होकर गुजरती है जो उन्हें तेजी से बांधती है और एक बनाती है।

4) यह डोरी प्रेम है, और यह सभी दस आज्ञाओं के एक-एक शब्द से संबंधित है।

5) यदि कोई प्रेम से भरा है तो वह भगवान की पूजा के अलावा और कुछ नहीं कर सकता है; क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।

6) यदि कोई प्रेम से भरा है, तो वह मार नहीं सकता; वह झूठी गवाही नहीं दे सकता; वह लालच नहीं कर सकता; भगवान और मनुष्य का सम्मान करने के अलावा कुछ नहीं कर सकते।

7) यदि कोई प्रेम से भरा है तो उसे किसी प्रकार की आज्ञा की आवश्यकता नहीं है।

8) रब्बी बाराकिया ने कहा, तेरी बातें ऊपर से ज्ञान के नमक से सजी हुई हैं। वह शिक्षक कौन है जिसने आपके लिए यह सत्य खोला है?

9) यीशु ने कहा, मैं नहीं जानता कि किसी गुरु ने मेरे लिये यह सत्य खोला है। मुझे ऐसा लगता है कि सत्य कभी बंद नहीं होता; कि यह हमेशा खुला था, क्योंकि सत्य एक है और वह हर जगह है।

10) और यदि हम अपने मन की खिड़कियाँ खोलेंगे, तो सत्य भीतर प्रवेश करेगा और अपने आप को घर में बना लेगा; क्योंकि सच्चाई किसी भी दरार, किसी भी खिड़की, किसी भी खुले दरवाजे से अपना रास्ता खोज सकती है।

11) रब्बी ने कहा, ऐसा कौन सा हाथ है जो इतना मजबूत है कि खिड़कियाँ और मन के द्वार खोल सकता है ताकि सत्य प्रवेश कर सके?

12) और यीशु ने कहा, मुझे ऐसा लगता है कि प्रेम, वह सोने की रस्सी जो दस आज्ञाओं को एक में बांधती है, किसी भी मानव द्वार को खोलने के लिए पर्याप्त मजबूत है ताकि सत्य प्रवेश कर सके और हृदय को समझ सके।

13) अब सांझ को यीशु और उसकी माता अकेले बैठे थे, और यीशु ने कहा,

14) ऐसा लगता है कि रब्बी को लगता है कि परमेश्वर मनुष्यों के प्रति उसके व्यवहार में पक्षपाती है; कि यहूदियों पर कृपा की जाती है और वे अन्य सभी पुरुषों के ऊपर धन्य हैं।

15) मैं यह नहीं देखता कि कैसे भगवान अपने पसंदीदा और न्यायी हो सकते हैं।

16) क्या सामरी और यूनानी और रोमी उतने ही पवित्र नहीं हैं जितने कि यहूदी हैं?

17) मुझे लगता है कि यहूदियों ने अपने चारों ओर एक दीवार बनाई है, और वे इसके दूसरी तरफ कुछ भी नहीं देखते हैं।

18) वे नहीं जानते कि वहां फूल खिल रहे हैं; कि बुवाई का समय और कटाई का समय यहूदियों को छोड़ किसी और का है।

19) यह निश्चित रूप से अच्छा होगा यदि हम इन बाधाओं को तोड़ दें ताकि यहूदी देख सकें कि भगवान के अन्य बच्चे हैं जो उतने ही महान हैं।

20) मैं यहूदी भूमि से जाना चाहता हूं और अपनी जन्मभूमि के अन्य देशों में अपने रिश्तेदारों से मिलना चाहता हूं।

अध्याय 18

यरूशलेम में एक दावत में यीशु। बलिदानियों की क्रूरता से दुखी है। हिलेल से अपील करता है, जो उसके साथ सहानुभूति रखता है। वह एक साल मंदिर में रहता है।

यहूदियों का बड़ा पर्व चल रहा था, और यूसुफ, मरियम और उनका पुत्र और उनके बहुत से भाई यरूशलेम को गए। बच्चा दस साल का था।

2) और यीशु ने देखा कि कसाई मेमनों और पक्षियों को मारते हैं और उन्हें वेदी पर भगवान के नाम पर जलाते हैं।

3) क्रूरता के इस प्रदर्शन से उनका कोमल हृदय स्तब्ध रह गया; उस ने सेवा करने वाले याजकों से पूछा, पशु और पक्षियों के इस वध का क्या प्रयोजन है? तू उनका मांस यहोवा के साम्हने क्यों जलाता है?

4) याजक ने उत्तर दिया, यह हमारा पाप का बलिदान है। परमेश्वर ने हमें इन कामों को करने की आज्ञा दी है और कहा है कि इन बलिदानों में हमारे सभी पाप धुल जाते हैं।

5) यीशु ने कहा, क्या तुम पर कृपा करके यह बता सकते हो कि जब परमेश्वर ने घोषणा की कि किसी भी प्रकार के बलिदान से पाप मिट जाते हैं?

6) क्या दाऊद ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर को पाप के लिए बलिदान की आवश्यकता नहीं है? कि होमबलि को पापबलि करके उसके सम्मुख उसके सम्मुख लाना पाप है? क्या यशायाह ने भी ऐसा नहीं कहा था?

7) याजक ने उत्तर दिया, हे मेरे बालक, तू अपके पास है। क्या तुम इस्राएल के सभी याजकों से अधिक परमेश्वर के नियमों के बारे में जानते हो? यह लड़कों के लिए अपनी बुद्धि दिखाने की जगह नहीं है।

8) परन्तु यीशु ने उसके ताने नहीं माने; वह महासभा के प्रधान हिल्लेल के पास गया, और उस ने उस से कहा,

9) रब्बोनी, मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ; पास्कल दावत की इस सेवा से मैं व्यथित हूं। मुझे लगा कि मंदिर भगवान का घर है जहां प्रेम और दया रहती है।

10) क्या तू उन मेमनों का कांपना, उन कबूतरों की बिनती नहीं सुनता, जिन्हें मनुष्य वहां मार रहे हैं? जलते हुए मांस से जो भयंकर दुर्गन्ध आती है, क्या तुम्हें उसकी गंध नहीं आती?

11) क्या मनुष्य दयालु और न्यायी हो सकता है, और फिर भी क्रूरता से भरा हो सकता है?

12) जो परमेश्वर बलि, लोहू और जलते हुए मांस से प्रसन्न होता है, वह मेरा पिता परमेश्वर नहीं है।

13) मैं प्रेम के ईश्वर को खोजना चाहता हूं, और तुम, मेरे स्वामी, तुम बुद्धिमान हो, और निश्चित रूप से तुम मुझे बता सकते हो कि प्रेम के ईश्वर को कहां खोजना है।

14) लेकिन हिल्लेल बच्चे को कोई जवाब नहीं दे सका। सहानुभूति से उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसने बच्चे को अपने पास बुलाया; उसके सिर पर हाथ रखा और रोया।

15) उस ने कहा, प्रेम का परमेश्वर है, और तू मेरे संग चल; और हाथ में हाथ डाले हम निकलेंगे और प्रेम के परमेश्वर को पाएंगे।

16) और यीशु ने कहा, हमें जाने की क्या आवश्यकता है? मुझे लगा कि भगवान हर जगह हैं। क्या हम अपने दिलों को शुद्ध नहीं कर सकते हैं और क्रूरता और हर बुरे विचार को दूर नहीं कर सकते हैं, और एक मंदिर नहीं बना सकते हैं, जहां प्रेम के भगवान निवास कर सकते हैं?

17) महान महासभा के स्वामी को ऐसा लगा जैसे वह स्वयं ही बच्चा है, और उसके सामने उच्च कानून के स्वामी रब्बोनी खड़े थे।

18) उस ने मन ही मन कहा, यह बालक निश्चय ही परमेश्वर का भेजा हुआ भविष्यद्वक्ता है।

19) तब हिल्लेल ने बालक के माता-पिता को ढूंढ़ा, और कहा कि यीशु उनके साथ रहे, और व्यवस्था के उपदेशों, और मन्दिर के याजकों की सारी शिक्षा सीखे।

20) उसके माता-पिता ने हामी भर दी, और यीशु यरूशलेम के पवित्र मन्दिर में रहा, और हिल्लेल उसे प्रतिदिन शिक्षा देता था।

21) और हर दिन गुरु ने यीशु से उच्च जीवन के कई सबक सीखे।

22) वह बालक हिल्लेल के पास मन्दिर में एक वर्ष तक रहा, और फिर अपने घर नासरत को लौट गया; और वहाँ उसने यूसुफ के साथ बढ़ई का काम किया।

<u>अध्याय 19</u>

मंदिर में बारह वर्ष की आयु में यीशु। कानून के डॉक्टरों के साथ विवाद। भविष्यवाणी की एक किताब से पढ़ता है। हिल्लेल के अनुरोध पर वह भविष्यवाणियों की व्याख्या करता है।

फिर यरूशलेम में बड़ा पर्ब्ब चल रहा था, और यूसुफ, मरियम और उनका पुत्र वहां थे। बालक बारह वर्ष का था।

2) और यरूशलेम में बहुत से देशों से यहूदी और मत अपनानेवाले थे।

3) और यीशु मन्दिर के प्रांगण में याजकों और चिकित्सकों के बीच बैठा।

4) और यीशु ने भविष्यवाणी की एक पुस्तक खोली और पढ़ा:

5) हाय, एरियल पर हाय, उस नगर पर जहां दाऊद रहता था! मैं एरियल को नष्ट कर दूंगा, और वह कराहेगी और रोएगी:

6) और मैं उसके चारोंओर शत्रुतापूर्ण चौकियोंसे डेरे डालूंगा;

7) और मैं उसको नीचा कर दूंगा, और वह पृथ्वी पर से बातें करेगी; वह जानी-पहचानी शक्ति की तरह दबी हुई आवाज़ से बात करेगी; हाँ, वह केवल अपना भाषण ही फुसफुसाएगी;

8) और धूल के कणों के समान बेहिसाब शत्रु उस पर अचानक आ पड़ेंगे।

9) सेनाओं का यहोवा गरज और आँधी, और आँधी के साथ उससे भेंट करेगा; भूकंप के साथ, और भस्म करने वाली लपटों के साथ।

10) देखो, इन सब लोगों ने मुझे छोड़ दिया है। वे वाणी से मेरी ओर आकर्षित होते हैं, और होठों से मेरा आदर करते हैं; उनके मन मुझ से दूर हैं; मेरे लिए उनका डर मनुष्य से प्रेरित है।

11) और मैं अपक्की प्रजा इस्राएल पर प्रतिकूल श्वास फूंकूंगा; उनके ज्ञानियों की बुद्धि नष्ट हो जाएगी; उनके होशियार लोगों की समझ नहीं पाई जाएगी।

12) मेरी प्रजा अपनी युक्ति को यहोवा से छिपाना चाहती है, कि उनके काम दिखाई न दें। वे मूर्छित होकर अपने कामों को रात के अन्धकार से ढांप लेते, और कहते, अब हम को कौन देखता है? अब हमें कौन जानता है?

13) बेचारे, मूर्ख लोग! क्या वह जो उसके बनानेवाले के विषय में कहा गया है, कि वह कुछ भी नहीं, मैं ने ही अपने आप को बनाया है?

14) वा घड़ा बोलकर उस से कहना, जिस ने घड़ा बनाया है, तुझ में कोई हुनर नहीं; आप नहीं जानते हैं?

15) लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं रहेगा; वह समय आएगा जब लबानोन एक फलदायी खेत होगा, और फलदार खेत अखाड़ों में बदल जाएंगे।

16) और उस दिन बहरे परमेश्वर की बातें सुनेंगे; अंधे परमेश्वर के स्मरण की पुस्तक पढ़ेंगे।

17) और दु:ख उठानेवालों को राहत मिलेगी, और वे भरपूर आनन्द पाएंगे; और हर एक की जरूरत की आपूर्ति की जाएगी; और ऐसा होगा कि सभी मूर्ख बुद्धिमान होंगे ।

18) लोग लौट आएंगे और पवित्र को पवित्र करेंगे, और अपने हृदय में वे उसका आदर करेंगे।

19) जब यीशु ने इस प्रकार पढ़ा, तो उस ने पुस्तक को एक ओर रख दिया और कहा, हे व्यवस्था के स्वामी, क्या तू भविष्यद्वक्ता के वचनों को हमारे लिये स्पष्ट करेगा?

20) अब, हिल्लेल व्यवस्था के आकाओं के बीच बैठ गया, और वह खड़ा हुआ और कहा, शायद हमारा जवान रब्बोनी जिसने वचन पढ़ा है, वह दुभाषिया होगा।

21) और यीशु ने कहा, भविष्यद्वक्ता का एरियल हमारा अपना यरूशलेम है।

22) स्वार्थ और क्रूरता से ये लोग एलोहीम के लिए एक बदबू बन गए हैं।

23) भविष्यद्वक्ता ने इन दिनों को दूर से देखा, और इन दिनों को उसने लिखा।

24) हमारे डॉक्टर, वकील, पुजारी और शास्त्री गरीबों पर अत्याचार करते हैं, जबकि वे खुद विलासिता में रहते हैं।

25) इस्त्राएल के बलिदान और भेंट परमेश्वर के लिथे घृणित हैं। एकमात्र बलिदान जिसकी ईश्वर को आवश्यकता है वह स्वयं है।

26) इस अन्याय और मनुष्य की मनुष्य की क्रूरता के कारण, पवित्र व्यक्ति ने इस राष्ट्रमंडल के बारे में कहा है:

27) देखो, मैं उलट दूंगा, हां, मैं उलट दूंगा, वह उलट दिया जाएगा, और वह तब तक न रहेगा जब तक कि उसका अधिकार न आ जाए और मैं उसे उसे दे दूं।

28) सारे जगत में अधिकार की एक ही व्यवस्था है, और जो उस व्यवस्था को तोड़ता है, वह दु:ख उठाएगा; क्योंकि परमेश्वर न्यायी है।

29) और इस्राएल बहुत दूर चला गया है; न्याय, न ही मनुष्य के अधिकारों पर विचार किया है, और परमेश्वर की माँग है कि इस्राएल सुधार करे, और फिर से पवित्रता के मार्गों की ओर मुड़े।

30) और यदि हमारी प्रजा परमेश्वर का शब्द न सुनेगी, तो दूर से जातियां आकर यरूशलेम को लूट लेंगी, और हमारे मन्दिर को ढा देंगी, और हमारी प्रजा को बन्धुआई में करके परदेश में ले जाएंगी।

31) लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं रहेगा; यद्यपि वे दूर-दूर तक फैले हुए हैं, और पृथ्वी के राष्ट्रों के बीच इधर-उधर भटकते हैं, उन भेड़ों की तरह जिनका कोई चरवाहा नहीं है।

32) वह समय आएगा, जब परमेश्वर बंधुआई की सेना को फिर से लाएगा; क्योंकि इस्राएल लौटकर कुशल से रहेगा।

33) और बहुत वर्षों के बाद हमारा मन्दिर फिर बनेगा, और जिस का परमेश्वर आदर करेगा, और जिस से शुद्ध मन प्रसन्न होगा, वह आकर परमेश्वर के भवन की बड़ाई करेगा, और धर्म से राज्य करेगा।

34) जब यीशु ने यह कहा, तो वह हट गया, और सब लोग चकित होकर कहने लगे, निश्चय यह मसीह है।

अध्याय 20

दावत के बाद। स्वदेश यात्रा। लापता यीशु। उसकी तलाश की जा रही है। उसके माता-पिता उसे मंदिर में पाते हैं। वह उनके साथ नासरत को जाता है। बढ़ई के औजारों का प्रतीकात्मक अर्थ।

पास्का का महान पर्व समाप्त हो गया और नासरी अपने घरों की ओर जा रहे थे।

2) और वे शोमरोन में थे, और मरियम ने कहा, मेरा पुत्र कहां है? लड़के को किसी ने नहीं देखा था।

3) और यूसुफ ने उनके कुटुम्बियोंमें से जो गलील को जा रहे थे, ढूंढ़ा; परन्तु उन्होंने उसे नहीं देखा था।

4) तब यूसुफ, मरियम और जब्दी का एक पुत्र लौटकर सारे यरूशलेम में ढूंढ़ा, परन्तु उसे न पाया।

5) तब वे मन्दिर के आंगन में गए, और पहरुओं से पूछा, क्या तू ने इन आंगनों के बारे में बारह वर्ष की अवस्था में, गहरी नीली आंखों वाला एक गोरे बालों वाला लड़का यीशु को देखा है?

6) पहरेदारों ने उत्तर दिया, हाँ, वह मंदिर में है, अब कानून के डॉक्टरों के साथ विवाद कर रहा है।

7) और पहरूओं के कहने के अनुसार उन्होंने भीतर जाकर उसे पाया।

8) मरियम ने कहा, हे यीशु, तू अपने माता-पिता के साथ ऐसा क्यों व्यवहार करता है? लो, हमने तुम्हारे लिए दो दिन मांगे हैं। हमें डर था कि कोई बड़ा नुकसान आप पर आ गया है।

9) और यीशु ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि मुझे अपने पिता के काम के बारे में होना चाहिए?

10) परन्तु उस ने घूमकर सब व्यवस्या के चिकित्सक का हाथ दबाकर कहा, मुझे भरोसा है, कि हम फिर मिलेंगे।

11) और फिर वह अपने माता-पिता के साथ नासरत को गया; और जब वे अपके घर पहुंचे तो उस ने यूसुफ के साथ बढ़ई का काम किया।

12) एक दिन जब वह काम के लिए औजार ला रहा था तो उसने कहा,

13) ये उपकरण मुझे उन लोगों की याद दिलाते हैं जिन्हें हम मन की कार्यशाला में संभालते हैं जहाँ चीजें विचार से बनी होती हैं और जहाँ हम चरित्र का निर्माण करते हैं।

14) हम अपनी सभी रेखाओं को मापने के लिए वर्ग का उपयोग करते हैं, रास्ते के टेढ़े-मेढ़े स्थानों को सीधा करते हैं, और अपने आचरण के कोनों को चौकोर बनाते हैं।

15) हम अपने जुनून और इच्छाओं को धार्मिकता की सीमा में रखने के लिए वृत्त बनाने के लिए कम्पास का उपयोग करते हैं।

16) हम कुल्हाड़ी का उपयोग गांठदार, बेकार और नुकीले हिस्सों को काटने के लिए करते हैं और चरित्र को सममित बनाते हैं।

17) हम हथौड़े का इस्तेमाल सच्चाई को घर तक पहुँचाने के लिए करते हैं, और इसे तब तक थपथपाते हैं जब तक कि यह हर हिस्से का हिस्सा न हो जाए।

18) हम समतल का उपयोग जोड़ की खुरदरी, असमान सतहों, और ब्लॉक, और बोर्ड को चिकना करने के लिए करते हैं जो सत्य के लिए मंदिर बनाने के लिए जाते हैं।

19) मन की कार्यशाला में छेनी, रेखा, प्लममेट और आरी सभी का उपयोग होता है।

20) और फिर यह सीढ़ी अपने त्रिमूर्ति कदमों, विश्वास, आशा और प्रेम के साथ; उस पर हम जीवन में पवित्रता के गुंबद पर चढ़ जाते हैं।

21) और बारह-सीढ़ी पर हम तब तक चढ़ते हैं जब तक हम उस शिखर तक नहीं पहुँच जाते जिसे बनाने में जीवन व्यतीत होता है - सिद्ध मनुष्य का मंदिर।

भाग 1/अनुभाग VI

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड VI
VAU

भारत में यीशु का जीवन और कार्य
(अध्याय 21 - 35)

अध्याय 21

रावण यीशु को मंदिर में देखता है और मोहित हो जाता है। हिलेल उसे लड़के के बारे में बताता है। रावण यीशु को नासरत में पाता है और उसके सम्मान में दावत देता है। रावण यीशु का संरक्षक बन जाता है और उसे ब्राह्मण धर्म का अध्ययन करने के लिए भारत ले जाता है।

भारत के एक शाही राजकुमार, दक्षिण में उड़ीसा के रावण, यहूदी भोज में थे।

2) रावण धनी व्यक्ति था; और वह न्यायी था, और ब्राह्मण पुजारियों के एक दल के साथ, पश्चिम में ज्ञान की तलाश में था।

3) जब यीशु यहूदी याजकों के बीच खड़ा हुआ और पढ़ने-बोलने लगा, तो रावण ने सुना और चकित रह गया।

4) और जब उस ने पूछा कि यीशु कौन है, कहां से आया है और क्या है, तब मुख्य हिल्लेल ने कहा,

5) हम इस बालक को ऊपर से दिन का तारा कहते हैं, क्योंकि वह मनुष्यों के लिए एक ज्योति, जीवन की ज्योति लाने आया है; ताकि मनुष्य का मार्ग हल्का किया जाए, और उसकी प्रजा इस्राएल को छुड़ाया जाए।

6) और हिल्लेल ने रावण को बच्चे के बारे में सब कुछ बता दिया; उसके बारे में भविष्यवाणियों के बारे में; उस रात के अजूबों के बारे में जब वह पैदा हुआ था; जादूगर पुजारियों की यात्रा के बारे में;

7) दुष्टों के प्रकोप से किस प्रकार उसकी रक्षा की गई; मिस्र-देश के लिए अपनी उड़ान के बारे में, और उस समय वह अपने पिता के साथ नासरत में बढ़ई के रूप में कैसे सेवा कर रहा था।

8) रावण ने प्रवेश किया, और नासरत का मार्ग जानने के लिए कहा, कि वह जाकर परमेश्वर के पुत्र के रूप में ऐसे व्यक्ति का सम्मान कर सके।

9) और अपनी भव्य रेलगाड़ी के द्वारा मार्ग में कूच करके गलील के नासरत में आया।

10) उसने पाया कि उसकी खोज का उद्देश्य पुरुषों के पुत्रों के लिए आवास बनाने में लगा हुआ है।

11) और जब उसने पहली बार यीशु को देखा, तो वह बारह-सीढ़ी पर चढ़ रहा था, और उसके हाथों में एक कम्पास, वर्ग और कुल्हाड़ी थी।

12) रावण ने कहा, सब जय हो, स्वर्ग के परम प्रिय पुत्र!

13) और सराय में रावण ने नगर के सब लोगोंके लिथे जेवनार की; और यीशु और उसके माता-पिता सम्मानित अतिथि थे।

14) कुछ दिनों के लिए रावण मार्मियन वे पर यूसुफ के घर में एक अतिथि था; उसने बेटे की बुद्धि का रहस्य जानने की कोशिश की; लेकिन यह सब उसके लिए बहुत अच्छा था।

15) और फिर उसने पूछा कि वह बच्चे का संरक्षक हो सकता है; वह उसे पूर्व में ले जा सकता है जहाँ वह ब्रहम का ज्ञान सीख सकता है।

16) और यीशु ने जाने की लालसा की कि वह सीखे; और बहुत दिनों के बाद उसके माता-पिता ने हामी भर दी।

17) फिर, गर्व से, रावण ने अपनी ट्रेन के साथ उगते सूरज की ओर यात्रा शुरू की; और बहुत दिनों के बाद वे सिन्ध को पार करके उड़ीसा के प्रान्त और हाकिम के महल में पहुंचे।

18) ब्राहमण पुजारी राजकुमार का घर में स्वागत करने में प्रसन्न थे; अनुग्रह के साथ उन्होंने यहूदी लड़के को प्राप्त किया।

19) और जीसस को जगन्नाथ मंदिर में शिष्य के रूप में स्वीकार किया गया था; और यहाँ वेदों और उन्मत्त नियमों को सीखा।

20) ब्राहमण स्वामी बच्चे की स्पष्ट धारणाओं पर आश्चर्य करते थे, और अक्सर आश्चर्यचकित होते थे जब उन्होंने उन्हें नियमों का अर्थ समझाया।

<u>अध्याय 22</u>

यीशु और लामाओं की मित्रता। यीशु लामास को सत्य, मनुष्य, शक्ति, समझ, ज्ञान, उद्धार और विश्वास का अर्थ समझाते हैं।

जगन्नाथ के पुजारियों में एक यहूदी लड़के से प्रेम करने वाला भी था। लामास ब्रमास वह नाम था जिससे पुजारी जाना जाता था।

2) एक दिन जब यीशु और लामा प्लाज़ा जगन्नाथ में अकेले चल रहे थे, लामास ने कहा, मेरे यहूदी स्वामी, सत्य क्या है?

3) और यीशु ने कहा, सत्य ही एक ऐसी चीज है जो नहीं बदलती।

4) सारी दुनिया में दो चीजें हैं; एक सत्य है; दूसरा झूठ है; और सत्य वह है जो है, और असत्य वह है जो प्रतीत होता है।

5) अब सत्य कुछ भी है, और इसका कोई कारण नहीं है, और फिर भी यह हर चीज का कारण है।

6) असत्य कुछ भी नहीं है, और फिर भी यह कुछ का प्रकट है।

7) जो कुछ बनाया गया है वह कच्चा होगा; जो शुरू होता है उसे खत्म होना चाहिए।

8) वे सभी चीज़ें जो मनुष्य की आँखों से देखी जा सकती हैं, कुछ का प्रकटीकरण हैं, कुछ भी नहीं हैं, और इसलिए उन्हें समाप्त होना चाहिए।

9) जो चीजें हम देखते हैं, वे सिर्फ दिखाई देने वाली प्रतिबिंब हैं, जबकि ईथर इसी तरह कंपन करते हैं, और जब स्थितियां बदलती हैं तो वे गायब हो जाती हैं।

10) पवित्र श्वास सत्य है; जो था, और है, और सदा रहेगा; यह बदल नहीं सकता और न ही गुजर सकता है।

11) लमास ने कहा, तुम अच्छा उत्तर देते हो; अब, आदमी क्या है?

12) और यीशु ने कहा, मनुष्य सत्य और असत्य में विचित्र रूप से मिश्रित है।

13) मनुष्य सांस का मांस है; इसलिए उसमें सत्य और असत्य दोनों जुड़े हुए हैं; और वे यत्न करते हैं, और कुछ नहीं मिटता, और मनुष्य सत्य की नाईं बना रहता है।

14) फिर लामास ने पूछा, तुम शक्ति के बारे में क्या कहते हो?

15) यीशु ने कहा, यह तो प्रगट है; बल का परिणाम है; यह लेकिन शून्य है; यह भ्रम है, और कुछ नहीं। बल नहीं बदलता है, लेकिन सत्ता बदलते ही ईथर बदल जाता है।

16) शक्ति ईश्वर की इच्छा है और सर्वशक्तिमान है, और शक्ति वह इच्छा है जो प्रकट होती है, श्वास द्वारा निर्देशित होती है।

17) हवाओं में शक्ति है, लहरों में शक्ति है, बिजली के झटके में शक्ति है, मानव हाथ में शक्ति है, आंख में शक्ति है।

18) ईथर इन शक्तियों का कारण बनते हैं, और एलोहीम के बारे में सोचा, स्वर्गदूत, मनुष्य, या अन्य सोच की बात, बल को निर्देशित करती है; जब उसने अपना काम कर लिया तो शक्ति नहीं रही।

19) लामास ने फिर पूछा, समझने के लिए कि तुम्हें क्या कहना है?

20) यीशु ने कहा, यह वह चट्टान है जिस पर मनुष्य अपने आप को बनाता है; यह कुछ और शून्य का, असत्य और सत्य का ज्ञान है।

21) यह निम्नतर स्व का ज्ञान है; स्वयं मनुष्य की शक्तियों का आभास।

22) फिर लामास ने पूछा, बुद्धि के विषय में तुम्हें क्या कहना है?

23) और यीशु ने कहा, यह चेतना है कि मनुष्य कुछ भी है; कि ईश्वर और मनुष्य एक हैं;

24) वह कुछ भी नहीं है; वह शक्ति केवल भ्रम है; कि स्वर्ग और पृथ्वी और नरक ऊपर, चारों ओर, नीचे नहीं, बल्कि अंदर हैं; जो कुछ के प्रकाश में शून्य हो जाता है, और परमेश्वर सब कुछ है।

25) लामाओं ने पूछा, प्रार्थना करो, विश्वास क्या है?

26) और यीशु ने कहा, विश्वास परमेश्वर और मनुष्य की सर्वशक्तिमानता की गारंटी है; यकीन है कि मनुष्य दिव्य जीवन तक पहुंच जाएगा।

27) मोक्ष मनुष्य के हृदय से परमेश्वर के हृदय तक पहुँचने की सीढ़ी है।

28) इसके तीन चरण हैं; विश्वास पहले है, और यही मनुष्य सोचता है, शायद सत्य है।

29) और विश्वास अगला है, और मनुष्य यही जानता है कि सत्य है।

30) फल अंतिम है, और यह स्वयं मनुष्य है, सत्य है।

31) विश्वास में विश्वास खो जाता है; और फल में खो गया है; और मनुष्य का उद्धार तब होता है जब वह पवित्र जीवन में पहुंच जाता है; जब वह और भगवान एक हैं।

अध्याय 23

शूद्रों और विसयों में यीशु और लामा। बनारस में, यीशु उदरक का शिष्य बन जाता है। उदरक का पाठ।

अब, यीशु अपने मित्र लामाओं के साथ उड़ीसा के सभी क्षेत्रों, और गंगा की घाटी से गुज़रे, शूद्रों और विशयों और आचार्यों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए।

2) गंगा का बनारस संस्कृति और विद्या में समृद्ध शहर था; यहाँ दो रब्बोनियों ने बहुत दिन बिताए।

3) और यीशु ने उपचार की हिंदू कला सीखने की कोशिश की, और उदरक के शिष्य बन गए, जो हिंदू चिकित्सकों में सबसे महान थे।

4) उदरक ने जल, पौधों और पृथ्वी के उपयोग की शिक्षा दी; गर्मी और ठंड से; धूप और छाया; प्रकाश और अंधेरे का।

5) उन्होंने कहा, प्रकृति के नियम स्वास्थ्य के नियम हैं, और जो इन नियमों के अनुसार रहता है वह कभी बीमार नहीं होता।

6) इन नियमों का उल्लंघन पाप है, और जो पाप करता है वह रोगी है।

7) वह जो नियमों का पालन करता है, अपने सभी भागों में संतुलन बनाए रखता है, और इस प्रकार सच्चा सामंजस्य सुनिश्चित करता है; और सद्भाव स्वास्थ्य है, जबकि कलह रोग है।

8) जो मनुष्य के सभी अंगों में सामंजस्य उत्पन्न करता है, वह औषधि है, स्वास्थ्य का बीमा करती है।

9) शरीर एक हार्पसीकोर्ड है, और जब इसके तार बहुत ढीले होते हैं, या बहुत तनावपूर्ण होते हैं, तो वाद्य यंत्र खराब हो जाता है, आदमी बीमार होता है।

10) अब, प्रकृति में सब कुछ मनुष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाया गया है; तो, सब कुछ मेडिकल आर्केन्स में पाया जाता है।

11) और जब मनुष्य का हार्पसीकोर्ड खराब हो जाता है तो प्रकृति के विशाल विस्तार को उपचार के लिए खोजा जा सकता है; मांस की हर बीमारी का इलाज है।

12) निश्चय ही मनुष्य की इच्छा सर्वोच्च है; और इच्छाशक्ति के जोरदार अभ्यास से, मनुष्य तनावग्रस्त एक राग बना देता है जो शिथिल हो जाता है, या जो बहुत तनावग्रस्त है उसे शिथिल कर सकता है, और इस प्रकार स्वयं को ठीक कर सकता है।

13) जब मनुष्य उस स्थान पर पहुँच जाता है जहाँ उसे ईश्वर, प्रकृति और स्वयं में विश्वास होता है, तो वह शक्ति के वचन को जानता है; उसका वचन हर घाव के लिए बाम है, जीवन की सभी बीमारियों का इलाज है।

14) चंगा करने वाला वह व्यक्ति है जो विश्वास को प्रेरित कर सकता है। जीभ मानव कानों से बात कर सकती है, लेकिन आत्माओं तक आत्माएं पहुंचती हैं जो आत्माओं से बात करती हैं।

15) वह एक शक्तिशाली व्यक्ति है जिसकी आत्मा बड़ी है, और जो आत्माओं में प्रवेश कर सकता है, उनमें आशा नहीं है, और उन लोगों में विश्वास है जो भगवान, प्रकृति में और न ही मनुष्य में विश्वास नहीं करते हैं।

16) सामान्य जीवन जीने वालों के लिए कोई सार्वभौमिक बाम नहीं है।

17) एक हजार चीजें मेल-मिलाप पैदा करती हैं और लोगों को बीमार करती हैं; एक हजार चीजें हार्पसीकोर्ड को धुन सकती हैं, और पुरुषों को चंगा कर सकती हैं।

18) जो एक के लिए दवा है, वह दूसरे के लिए जहर है; तो एक जो दूसरे को मार डालेगा उसके द्वारा चंगा हो जाता है।

19) एक जड़ी बूटी एक को ठीक कर सकती है; पानी का एक पेय दूसरे को बहाल कर सकता है; एक पहाड़ की हवा जीवन में ला सकती है जो सभी मदद से परे लगती है;

20) आग का कोयला, या मिट्टी का एक टुकड़ा, दूसरे को ठीक कर सकता है; और कोई किसी नाले वा कुण्डोंमें धोकर चंगा हो जाए।

21) हाथ या सांस से पुण्य एक हजार और चंगा कर सकता है; लेकिन प्यार रानी है। विचार, प्रेम से प्रबल हुआ, परमेश्वर का महान संप्रभु बाम है।

22) परन्तु जीवन की बहुत सी टूटी हुई रस्सियाँ, और मनमुटाव जो मन को ठेस पहुँचाती हैं, वे हवा की दुष्टात्माओं के कारण होते हैं जिन्हें मनुष्य नहीं देखते; जो मनुष्य को अज्ञान के माध्यम से प्रकृति और ईश्वर के नियमों को तोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

23) ये शक्तियाँ राक्षसों की तरह काम करती हैं, और वे बोलती हैं; वे आदमी को फाड़ देते हैं; वे उसे निराशा की ओर ले जाते हैं।

24) परन्तु जो चंगा करनेवाला, सच्चा, आत्मा का स्वामी है, और इच्छा के बल पर इन दुष्टों को वश में कर सकता है।

25) हवा की कुछ आत्माएं मास्टर स्पिरिट हैं और मजबूत हैं, अकेले मानव शक्ति के लिए बहुत मजबूत हैं; परन्तु मनुष्य के पास ऊंचे लोकों में सहायक हैं, जो बुलाए जा सकते हैं, और वे दुष्टात्माओं को निकालने में सहायता करेंगे।

26) इस महान वैद्य ने जो कहा, उसका योग यही है। और यीशु ने इस गुरु आत्मा की बुद्धि की पहचान में अपना सिर झुकाया और अपने रास्ते चला गया।

अध्याय 24

जातियों का ब्राह्मण सिद्धांत। यीशु इसे अस्वीकार करते हैं और मानवीय समानता की शिक्षा देते हैं। पुजारी नाराज हैं और उसे मंदिर से भगा देते हैं। वह शूद्रों के साथ रहता है और उन्हें शिक्षा देता है।

चार साल यहूदी लड़के ने जगन्नाथ मंदिर में निवास किया।

2) एक दिन वह याजकों के बीच बैठा और उन से कहा, प्रार्थना करो, मुझे जाति के बारे में अपने विचार बताओ; तुम क्यों कहते हो कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान नहीं हैं?

3) उनके नियमों के एक स्वामी ने खड़े होकर कहा, जिस पवित्र व्यक्ति को हम ब्रह्म कहते हैं, उसने पुरुषों को अपने अनुरूप बनाया है, और पुरुषों को शिकायत नहीं करनी चाहिए।

4) मानव जीवन के आरंभ के दिनों में ब्रह्म बोला, और उसके सामने चार आदमी खड़े थे।

5) अब, परब्रह्म के मुख से पहला व्यक्ति आया; और वह श्वेत था, स्वयं ब्रह्म के समान था; ब्राह्मण कहा जाता था।

6) और वह ऊंचा और ऊंचा था; सबसे बढ़कर वह चाहता है कि वह खड़ा रहे; उसे परिश्रम की कोई आवश्यकता नहीं थी।

7) और उन्हें ब्रह्म का पुजारी कहा जाता था, जो पृथ्वी के सभी मामलों में ब्रह्म के लिए कार्य करने वाले पवित्र व्यक्ति थे।

8) दूसरा मनुष्य लाल था, और वह परब्रह्म के हाथ से निकला; और उन्हें क्षत्रिय कहा जाता था।

9) और उसे राजा, शासक और योद्धा बनाया गया, जिसका सर्वोच्च कर्तव्य याजक की रक्षा करना था।

10) और परब्रह्म के भीतरी भागों से एक तीसरा व्यक्ति आया; और उसे विस्य कहा जाता था।

11) वह पीला मनुष्य था, और वह भूमि जोतता, और भेड़-बकरियोंऔर गाय-बैलों की रखवाली करता था।

12) और चौथा मनुष्य परब्रह्म के पांवों से निकला; और वह काला था; और उन्हें शूद्र कहा जाता था, जो निम्न संपत्ति में से एक था।

13) शूद्र पुरुषों की जाति का सेवक है; उसके पास कोई अधिकार नहीं है कि दूसरों को सम्मान की आवश्यकता हो; वह वेदों को पढ़ते हुए नहीं सुन सकता है, और इसका अर्थ है कि उसके लिए पुजारी, या राजा के चेहरे को देखने के लिए मृत्यु, और कुछ भी नहीं लेकिन मृत्यु उसे उसकी दासता की स्थिति से मुक्त कर सकती है।

14) और यीशु ने कहा, तब परब्रह्म न्याय और अधिकार का परमेश्वर नहीं है; क्योंकि उस ने अपके बलवन्त हाथ से एक को ऊंचा किया, और दूसरे को नीचा किया है।

15) यीशु ने उन से फिर कुछ न कहा, परन्तु स्वर्ग की ओर देखकर कहा,

16) मेरे पिता-परमेश्वर, जो थे, और हैं, और सदा रहेंगे; जो तेरे हाथों में न्याय और अधिकार की तराजू रखता है;

17) जिसने प्रेम की असीमता में सभी मनुष्यों को समान बना दिया है। सफेद, काले, पीले, और लाल आपके चेहरे पर देख सकते हैं और कह सकते हैं, हमारे पिता- भगवान।

18) हे मनुष्य जाति के पिता, मैं तेरे नाम की स्तुति करता हूं।

19) और सब याजक यीशु की बातों से क्रोधित हुए; वे उस पर लपके, और उसे पकड़कर उसकी हानि करते।

20) परन्तु तब लामास ने हाथ उठाकर कहा, हे ब्रह्म के याजकों, सावधान! आप नहीं जानते कि आप क्या करते हैं; तब तक प्रतीक्षा करें जब तक आप उस ईश्वर को नहीं जानते जिसे यह युवा प्यार करता है।

21) मैंने इस लड़के को प्रार्थना के समय देखा है जब सूर्य के प्रकाश के ऊपर प्रकाश ने उसे घेर लिया था। खबरदार! उसका भगवान ब्रह्म से अधिक शक्तिशाली हो सकता है।

22) यदि यीशु सच बोलता है, यदि वह सही है, तो आप उसे रुकने के लिए मजबूर नहीं कर सकते; यदि वह गलत है और तुम सही हो, तो उसके वचन व्यर्थ हो जाएंगे, क्योंकि अधिकार पराक्रम है, और अंत में वह प्रबल होगा।

23) और तब याजकोंने यीशु को हानि पहुँचाने से परहेज किया; लेकिन एक ने बात की और कहा,

24) इस पवित्र स्थान के भीतर क्या इस लापरवाह युवक ने परब्रह्म के साथ हिंसा नहीं की है? कानून सादा है; यह कहता है, जो ब्रह्म के नाम की निन्दा करता है, वह मर जाएगा।

25) लामाओं ने यीशु के जीवन के लिए प्रतिज्ञा की; तब याजकों ने रस्सियों का एक कोड़ा पकड़कर उस स्थान से निकाल दिया।

26) और यीशु अपने रास्ते चला गया और काले और पीले पुरुषों, सेवकों और मिट्टी के किसानों के साथ आश्रय पाया।

27) सबसे पहले उसने उन्हें समानता का सुसमाचार सुनाया; उसने उन्हें मनुष्य के ब्रदरहुड, परमेश्वर के पितृत्व के बारे में बताया।

28) सामान्य लोगों ने उसे प्रसन्नता से सुना, और प्रार्थना करना सीखा, हे हमारे पिता-परमेश्वर जो स्वर्ग में है।

अध्याय 25

यीशु शूद्रों और किसानों को शिक्षा देते हैं। एक रईस और उसके अन्यायी पुत्रों के दृष्टांत से संबंधित है। सभी पुरुषों की संभावनाओं को ज्ञात करता है।

जब यीशु ने शूद्रों और किसानों को उसकी बातें सुनने के लिए पास आते देखा, तो उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा; उन्होंने कहा:

एक रईस और उसके अन्यायी पुत्रों का दृष्टान्त

2) एक रईस के पास एक बड़ी संपत्ति थी; उसके चार बेटे थे, और वह उन सब को आगे खड़ा करके और उन सब प्रतिभाओं का उपयोग करके जो उनके पास हैं, उन्हें मजबूत करना चाहता था।

3) और इस प्रकार उसने प्रत्येक को अपनी महान संपत्ति में से एक हिस्सा दिया और उन्हें अपने रास्ते जाने के लिए कहा।

4) सबसे बड़ा बेटा खुद से भरा हुआ था; वह महत्वाकांक्षी, चतुर और विचार का तेज था।

5) उस ने मन ही मन कहा, मैं ज्येष्ठ पुत्र हूं, और हे मेरे भाई, ये मेरे पांवोंके दास होंगे।

6) फिर उसने अपने भाइयों को बुलाया; और एक को उस ने कठपुतली राजा बनाया; उसे एक तलवार दी और उसे पूरी संपत्ति की रक्षा करने का आरोप लगाया।

7) उस ने एक को भूमि, और बहते हुए कुएँ, और भेड़-बकरी और गाय-बैल दिया, और उसे भूमि की जोत दी, और भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को चराता, और उसके पास जो उत्तम लाभ था, वह उसके पास ले आता।

8) उस ने दूसरे से कहा, तू सबसे छोटा पुत्र है; व्यापक संपत्ति को सौंपा गया है; जो कुछ भी है उसमें तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है और न ही बहुत कुछ है।

9) और उस ने जंजीर ली, और अपके भाई को जंगल के मैदान में नंगी चट्टान से बांधकर उस से कहा,

10) आप गुलाम पैदा हुए हैं; आपके पास कोई अधिकार नहीं है, और आपको अपने हिस्से से संतुष्ट होना चाहिए, क्योंकि जब तक आप मर नहीं जाते और तब से चले जाते हैं, तब तक आपके लिए कोई मुक्ति नहीं है।

11) कुछ वर्षों के बाद हिसाब का दिन आया; रईस ने अपने पुत्रों को अपना लेखा देने के लिए बुलाया।

12) और जब वह जान गया कि उसके ज्येष्ठ पुत्र ने सारी संपत्ति पर अधिकार कर लिया है, और अपने भाइयों को दास बना लिया है,

13) उसने उसे पकड़ लिया, उसके याजकीय वस्त्र फाड़ दिए और उसे जेल की कोठरी में डाल दिया, जहाँ उसे तब तक रहने के लिए मजबूर किया गया जब तक कि उसने अपने सभी पापों का प्रायश्चित नहीं कर लिया।

14) और फिर, जैसे कि वे केवल खिलौने थे, उसने कठपुतली राजा के सिंहासन और कवच को हवा में फेंक दिया; उसने अपनी तलवार तोड़ दी और उसे कारागार में डाल दिया।

15) और फिर उसने अपने किसान पुत्र को बुलाया और उससे पूछा कि उसने अपने भाई को रेगिस्तान के मैदानों में अपने भाई की जंजीरों से क्यों नहीं छुड़ाया।

16) और जब पुत्र ने उत्तर न दिया, तब पिता ने भेड़-बकरी, गाय-बैल, और खेत और बहते हुए कुएं अपने पास ले लिए,

17) और अपने किसान पुत्र को रेगिस्तान की रेत पर रहने के लिए भेज दिया, जब तक कि वह अपने सभी पापों का प्रायश्चित न कर ले।

18) तब पिता ने जाकर अपने सबसे छोटे पुत्र को क्रूर जंजीरों में जकड़ा पाया; उसने अपने हाथों से जंजीरें तोड़ दीं और अपने बेटे को शांति से जाने के लिए कहा।

19) अब, जब पुत्रों ने अपना सब कर्ज चुका दिया, तो वे फिर से आए और अधिकार की सलाखों के सामने खड़े हो गए।

20) उन सभी ने अपने सबक सीखे थे, उन्हें अच्छी तरह सीखा था; और फिर पिता ने एक बार फिर संपत्ति का बंटवारा कर दिया।

21) उसने प्रत्येक को समान हिस्सा दिया और उन्हें समानता और अधिकार के कानून को पहचानने और शांति से रहने का आदेश दिया।

अंत - एक महान व्यक्ति और उसके अन्यायी पुत्रों का दृष्टांत

---

22) और एक, एक शूद्र, बोला और कहा, क्या हम जो दास हैं, जो याजकों की इच्छा को पूरा करने के लिए जानवरों की तरह काटे जाते हैं - क्या हम आशा कर सकते हैं कि कोई हमारी जंजीरों को तोड़ने और हमें आज़ाद करने के लिए आएगा?

23) यीशु ने कहा, पवित्र ने कहा है, कि उसकी सब सन्तान स्वतंत्र हो जाएगी; और हर आत्मा ईश्वर की संतान है।

24) शूद्र याजक के रूप में स्वतंत्र होंगे; किसान राजा के साथ हाथ में हाथ डाले चलेंगे; क्योंकि सारी दुनिया मनुष्य के भाईचारे का मालिक होगा।

25) हे पुरुषों, उठो! अपनी शक्तियों के प्रति सचेत रहो, क्योंकि जो चाहेगा, उसे दास बने रहने की आवश्यकता नहीं।

26) वैसे ही जीओ जैसे तुम अपने भाई को जीवित रखना चाहते हो; हर दिन फूल के रूप में प्रकट होता है; क्योंकि पृथ्वी तेरी है, और स्वर्ग तेरा है, और परमेश्वर तुझे अपके पास पहुंचाएगा।

27) और सब लोग चिल्ला उठे, कि हमें मार्ग दिखा कि हम फूल की नाईं खुल कर अपके अपके पास आ जाएं।

अध्याय 26

कटक में यीशु। जगन्नाथ की कार। यीशु ने लोगों को ब्राह्मण संस्कारों की शून्यता, और मनुष्य में ईश्वर को कैसे देखा जाए, के बारे में बताया। उन्हें बलिदान का दिव्य नियम सिखाता है।

उड़ीसा के सभी शहरों में यीशु ने पढ़ाया। कटक में, नदी के किनारे, उन्होंने पढ़ाया और हजारों लोगों ने उनका अनुसरण किया।

2) एक दिन जगन्नाथ की एक कार कई उन्मादी लोगों द्वारा खींची गई, और यीशु ने कहा,

3) देखो, बिना आत्मा के एक रूप गुजरता है; बिना आत्मा वाला शरीर; एक मंदिर जिसमें कोई वेदी नहीं है।

4) कृष्ण की यह कार एक खाली चीज है, क्योंकि कृष्ण नहीं हैं।

5) यह कार केवल उन लोगों की मूर्ति है जो शारीरिक चीजों की शराब के नशे में हैं।

6) ईश्वर जीभ के शोर में नहीं रहता है; किसी मूर्ति मंदिर से उसके पास कोई रास्ता नहीं है।

7) परमेश्वर का मनुष्य से मिलन स्थान हृदय में है, और वह शान्त स्वर में बोलता है; और जो सुनता है वह स्थिर है।

8) और सब लोगोंने कहा, हमें उस पवित्र को, जो मन में बोलता है, और छोटी सी आवाज के परमेश्वर को जानना सिखा।

9) और यीशु ने कहा, पवित्र श्वास को नश्वर आंखों से नहीं देखा जा सकता है; न मनुष्य पवित्र की आत्मा को देख सकते हैं;

10) परन्तु मनुष्य उन्हीं के स्वरूप में रचा गया, और जो मनुष्य के मुख पर दृष्टि करता है, वह उस परमेश्वर के स्वरूप को देखता है जो भीतर बोलता है।

11) और जब मनुष्य मनुष्य का आदर करता है, तो वह परमेश्वर का आदर करता है, और जो मनुष्य मनुष्य के लिए करता है, वह परमेश्वर के लिए करता है।

12) और आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि जब मनुष्य किसी अन्य व्यक्ति के विचार, या वचन या कर्म से हानि पहुँचाता है, तो वह परमेश्वर के साथ अन्याय करता है।

13) यदि तुम परमेश्वर की उपासना करना चाहते हो, जो मन की बातें करता है, तो अपके निकट सम्बन्धियों की, और जो कुटुम्बी नहीं हैं, अर्यात् अपके फाटकोंके परदेशी, और उस शत्रु की जो तुझे हानि पहुंचाना चाहता है, उपासना करना;

14) गरीबों की मदद करो, और कमजोरों की मदद करो; किसी की हानि न करना, और जो तेरी नहीं है उसका लालच न करना;

15) तब पवित्र जन तेरी जीभ से बोलेगा; और वह तेरे आँसुओं के पीछे मुस्कुराएगा, तेरे मुख को आनन्द से चमकाएगा, और तेरे हृदयों को शान्ति से भर देगा।

16) तब लोगों ने पूछा, हम किसके पास भेंट लाएंगे? हम कहाँ बलिदान चढ़ाएँ?

17) और यीशु ने कहा, हमारा पिता-परमेश्वर पौधे, अनाज, कबूतर, मेमने की व्यर्थ बर्बादी नहीं मांगता।

18) जिसे तुम किसी तीर्थ पर जलाते हो, फेंक देते हो। जो अग्नि से नष्ट होने के लिए भूखे मुंह से भोजन लेता है, उसका कोई आशीर्वाद नहीं ले सकता।

19) जब तुम हमारे परमेश्वर को बलि चढ़ाओगे, तो अपना अन्न या मांस का दान ले कर कंगालों की मेज पर रख दो।

20) उस में से स्वर्ग पर एक धूप उठेगी, जो आशीष के साथ तुम्हारे पास लौट आएगी।

21) अपनी मूरतों को ढा देना; वे तुम्हें नहीं सुन सकते हैं; अपनी सब बलि की वेदियों को आग की लपटों में बदल दो।

22) मनुष्यों के हृदयों को अपनी वेदी बनाओ और अपने बलिदानों को प्रेम की आग से जलाओ।

23) और सब लोग मोहित हो गए, और यीशु को परमेश्वर मानकर उसकी उपासना करते; लेकिन यीशु ने कहा,

24) मैं तुम्हारा भाई हूं, बस परमेश्वर को मार्ग दिखाने के लिए आओ; मनुष्य की उपासना न करना; परमेश्वर की स्तुति करो, पवित्र एक।

अध्याय 27

यीशु बिहार में एक भोज में शामिल हुए। मानवीय समानता पर क्रांतिकारी उपदेश देता है। टूटे हुए ब्लेड के दृष्टांत से संबंधित है।

एक शिक्षक के रूप में यीशु की प्रसिद्धि पूरे देश में फैल गई, और लोग दूर दूर से उसके सत्य के वचन सुनने के लिए आए।

2) बहर में, ब्रह्म की पवित्र नदी पर, उन्होंने कई दिनों तक पढ़ाया।

3) और बेहार के धनवान आक ने अपके अतिथि के लिथे जेवनार की, और सब को आने का न्यौता दिया।

4) और बहुत से आए; उनमें चोर, अन्धेर करनेवाले, और वेश्याएं भी हैं। और यीशु उनके साथ बैठकर उपदेश देने लगा; परन्तु जो उसके पीछे हो लिये, वे बहुत दुखी हुए, क्योंकि वह चोरों और वेश्याओं के संग बैठा था।

5) और उन्होंने उसे डांटा; उन्होंने कहा, हे रब्बोनी, बुद्धिमानोंके स्वामी, आज का दिन तेरे लिथे बुरा होगा।

6) यह समाचार फैलेगा कि तू वेश्याओं और चोरों से मेल-मिलाप करता है, और लोग सांप की नाईं तुझ से दूर भागेंगे।

7) यीशु ने उन्हें उत्तर दिया और कहा, स्वामी कभी भी प्रतिष्ठा या प्रसिद्धि के लिए अपने आप को परछाई नहीं देता।

8) ये तो दिन के निकम्मे बाउबल हैं; वे उठती और डूबती हैं, जैसे जलधारा पर खाली बोतलें; वे भ्रम हैं और गुजर जाएंगे;

9) वे विचारहीन सोच के सूचक हैं; वे शोर हैं जो लोग करते हैं; और छिछले लोग शोर से योग्यता का न्याय करते हैं।

10) परमेश्वर और सभी स्वामी मनुष्य का न्याय इस आधार पर करते हैं कि वे क्या हैं, न कि वे जो दिखते हैं उसके द्वारा; उनकी प्रतिष्ठा और उनकी प्रसिद्धि से नहीं।

11) ये वेश्या और चोर मेरे परमेश्वर पिता की सन्तान हैं; उनकी आत्माएं उनकी दृष्टि में उतनी ही कीमती हैं जितनी कि आपकी, या ब्राह्मण पुजारियों की।

12) और वे वही जीवन भर काम कर रहे हैं जो आप, जो अपने सम्मान और नैतिक मूल्य पर गर्व करते हैं, काम कर रहे हैं।

13) और उनमें से कितनों ने, जो तुम ने हल किया है, उससे कहीं अधिक कठिन हल किया है, हे मनुष्यो, जो उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

14) हाँ, वे पापी हैं, और जब तक तू दोषी है, तब तक अपना अपराध मान लेते हैं, परन्तु इतने चतुर हैं कि तेरे अपराध को ढांपने के लिये पॉलिश किया हुआ अंगरखा पा सकते हैं।

15) मान लीजिए कि आप लोग जो इन वेश्याओं, इन शराबी और इन चोरों का तिरस्कार करते हैं, जो जानते हैं कि आप दिल और जीवन में शुद्ध हैं, कि आप उनसे बेहतर हैं, खड़े हो जाओ ताकि लोग जान सकें कि आप कौन हैं।

16) पाप इच्छा में है, इच्छा में है, कर्म में नहीं।

17) तुम दूसरों के धन का लोभ करते हो; आप आकर्षक रूपों को देखते हैं, और अपने दिलों के भीतर आप उनके लिए लालसा करते हैं।

18) तुम प्रतिदिन छल करते हो, और अपने स्वार्थ के लिये सोना, आदर और यश की अभिलाषा करते हो।

19) जो लोभ करता है, वह चोर है, और जो अभिलाषा करती है, वह वेश्या है। आप जो इनमें से कोई नहीं हैं, बोलते हैं।

20) कोई नहीं बोला; आरोपियों ने शांति बनाए रखी।

21) यीशु ने कहा, आज के दिन सब का प्रमाण उन पर है, जिन पर दोष लगाया गया है।

22) शुद्ध मन के लोग दोष नहीं लगाते। जो हृदय से नीच हैं, वे अपने पापों को धर्मपरायणता के पवित्र धुएं से ढकना चाहते हैं, वे हमेशा शराबी, चोर और वेश्या से घृणा करते हैं।

23) यह घृणा और यह तिरस्कार उपहास है, क्योंकि यदि प्रतिष्ठा का टिनसेड कोट फाड़ा जा सकता है, तो जोर से प्रोफेसर अपनी वासना, छल और गुप्त पाप के कई रूपों में आनंदित पाया जाएगा।

24) जो व्यक्ति अपना समय दूसरों के मातम को खींचने में लगाता है, उसके पास खुद को खींचने का समय नहीं हो सकता है, और जीवन के सभी बेहतरीन फूल जल्द ही दम तोड़ देंगे और मर जाएंगे, और कुछ भी नहीं बचेगा, सिवाय डारनेल, थीस्ल, बर्स।

टूटे हुए ब्लेड का दृष्टांत

25) और यीशु ने एक दृष्टान्त कहा: देखो, एक किसान के पास पके हुए अनाज के बड़े खेत थे, और जब उसने देखा, तो उसने देखा कि गेहूँ के कई डंठल की पत्तियाँ मुड़ी हुई और टूट गई थीं।

26) और जब उसने अपके काटनेवालोंको भेजा, तब उस ने कहा, हम गेहूं के उन डंठलोंको न बचाएंगे, जिन की कलियां टूट गई हैं।

27) आगे बढ़ो और डंठलों को टूटे हुए ब्लेड से काट कर जला दो।

28) और बहुत दिनों के बाद वह अपना अनाज नापने को गया, परन्तु उसे एक गुठली न मिली।

29) तब उस ने काटने वालों को बुलाकर उन से कहा, मेरा अन्न कहां है?

30) उन्होंने उसे उत्तर दिया, और कहा, हम ने तेरे वचन के अनुसार किया; और हम ने इकट्ठे होकर डंडों को तोड़े हुए फालों से जला दिया, और खलिहान में ले जाने के लिथे एक भी डंठल न बचा।

31) और यीशु ने कहा, यदि परमेश्वर केवल उन्हीं को बचाता है, जिनके ब्लेड नहीं टूटे हैं, जो उसकी दृष्टि में सिद्ध हैं, तो कौन उद्धार पाएगा?

अंत - टूटे हुए ब्लेड का दृष्टांत

32) और दोष लगानेवालों ने लज्जित होकर सिर लटकाए; और यीशु अपने रास्ते चला गया।

अध्याय 28

उदरक यीशु के सम्मान में दावत देता है। यीशु परमेश्वर की एकता और जीवन के भाईचारे पर बोलते हैं। पुरोहित की आलोचना करता है। किसान का अतिथि बन जाता है।

बनारस ब्रहम का पवित्र शहर है, और बनारस में यीशु ने सिखाया; उदरक उनके मेजबान थे।

2) उदरक ने अपने अतिथि के सम्मान में एक भोज किया, और कई उच्च-वंश हिंदू पुजारी और शास्त्री थे।

3) यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से जीवन के विषय में, अर्थात जीवन के भाईचारे के विषय में, बड़े आनन्द से कहता हूं।

4) विश्वव्यापी ईश्वर एक है, फिर भी वह एक से अधिक है; सभी चीजें भगवान हैं; सभी चीजें एक हैं।

5) ईश्वर की मधुर सांसों से सारा जीवन एक में बंधा हुआ है; इसलिए, यदि आप किसी जीवित वस्तु के तंतु को छूते हैं तो आप जीवन के केंद्र से बाहरी सीमा तक एक रोमांच भेजते हैं।

6) और जब तू छोटे से छोटे कीड़े को अपने पांव तले कुचलता है, तब परमेश्वर के सिंहासन को हिलाता है, और उसकी म्यान में अधिकार की तलवार कांपता है।

7) चिड़िया अपना गीत मनुष्यों के लिए गाती है, और पुरुष एक स्वर में कंपन करते हैं कि वह उसे गाए।

8) चींटी अपना घर बनाती है, मधुमक्खी उसकी आश्रय वाली कंघी, मकड़ी अपना जाला बुनती है, और फूल उनकी मीठी सुगंध में एक आत्मा को सांस देते हैं जो उन्हें परिश्रम करने की शक्ति देता है।

9) अब, मनुष्य, क्या पक्षी, क्या पशु, और रेंगनेवाले जन्तु, सब गढ़े हुए देवता हैं; और पुरुषों की कुछ भी मारने की हिम्मत कैसे हुई?

10) 'तीस क्रूरता जो दुनिया को रुला देती है। जब लोगों ने यह जान लिया है कि जब वे किसी जीवित वस्तु को हानि पहुँचाते हैं तो वे स्वयं को हानि पहुँचाते हैं, वे निश्चय ही न तो मारेंगे और न ही किसी ऐसी वस्तु का कारण बनेंगे जिसे परमेश्वर ने कष्ट पहुँचाया है।

11) एक वकील ने कहा, हे यीशु, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि यह परमेश्वर कौन है, जिसके विषय में तू कहता है; उसके पुजारी, उसके मंदिर और उसके मंदिर कहाँ हैं?

12) यीशु ने कहा, जिस परमेश्वर की मैं चर्चा करता हूं वह सब जगह है; वह दीवारों से घिरा नहीं जा सकता, और न ही किसी प्रकार की सीमाओं से घिरा हुआ है।

13) सभी लोग ईश्वर की पूजा करते हैं, एक; परन्तु सब लोग उसे एक जैसे नहीं देखते।

14) यह सार्वभौमिक ईश्वर ज्ञान, इच्छा और प्रेम है।

15) सभी मनुष्य त्रिगुणात्मक ईश्वर को नहीं देखते हैं। कोई उसे पराक्रम के देवता के रूप में देखता है; दूसरा विचार के देवता के रूप में; एक और प्यार के भगवान के रूप में।

16) मनुष्य का आदर्श उसका ईश्वर है, और इसलिए, जैसे मनुष्य प्रकट होता है। मनुष्य का भगवान आज, कल भगवान नहीं है।

17) पृथ्वी के राष्ट्र ईश्वर को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखते हैं, और इसलिए वह सभी को एक जैसा नहीं लगता।

18) मनुष्य परमेश्वर के उस भाग का नाम रखता है जिसे वह देखता है, और उसके लिए यह सब परमेश्वर का है; और हर एक जाति परमेश्वर के अंश को देखती है, और हर एक जाति का परमेश्वर का एक नाम है।

19) तुम ब्राहमण उसे परब्रहम कहते हो; मिस्र में वह तोत है; और यूनान में उसका नाम ज्यूस है; यहोवा उसका इब्रानी नाम है; परन्तु हर जगह वही अकारण कारण है, वह जड़रहित जड़ है जिससे सब कुछ उत्पन्न हुआ है।

20) जब मनुष्य परमेश्वर से डरते हैं, और उसे बैरी समझते हैं, तो वे दूसरे मनुष्यों को सुन्दर वस्त्र पहिनाते और उन्हें याजक कहते हैं।

21) और उन्हें प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के क्रोध को रोकने के लिए आज्ञा देना; और जब वे अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा उसका अनुग्रह प्राप्त न करें, कि उसे पशु वा पक्षी की बलि देकर मोल ले लें,

22) जब मनुष्य परमेश्वर को अपने साथ एक, पिता-परमेश्वर के रूप में देखता है, तो उसे किसी बिचौलिए की आवश्यकता नहीं होती है, न ही किसी पुजारी को हस्तक्षेप करने की आवश्यकता होती है;

23) वह सीधे उसके पास जाता है और कहता है, हे मेरे पिता परमेश्वर! और वह अपना हाथ परमेश्वर के हाथ में रखता है, और सब कुछ ठीक है।

24) और यह भगवान है। तुम हो, हर एक, एक पुजारी, सिर्फ अपने लिए; और रक्त का बलिदान परमेश्वर नहीं चाहता।

25) बस अपना जीवन सभी जीवन के लिए बलिदान में दे दो, और भगवान प्रसन्न होते हैं।

26) जब यीशु ने यह कहा कि वह एक तरफ खड़ा हो गया; लोग चकित थे लेकिन आपस में संघर्ष करते रहे।

27) कुछ ने कहा, वह पवित्र ब्रह्म से प्रेरित है; और औरों ने कहा, वह तो पागल है; और औरों ने कहा, वह दीवाना है; वह बोलता है जैसे शैतान बोलते हैं।

28) लेकिन यीशु ने देर नहीं की। मेहमानों में से एक था, भूमि जोतने वाला, एक उदार आत्मा, सत्य का खोजी, जो उन शब्दों से प्यार करता था जो यीशु ने कहा था, और यीशु उसके साथ और उसके घर में चला गया।

<u>अध्याय 29</u>

लाहौर का एक पुजारी, अजैनिन, यीशु को देखने के लिए बनारस आता है, और मंदिर में रहता है। यीशु ने मंदिर जाने के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। अजैनिन रात में किसान के घर उससे मिलने जाता है और उसके दर्शन को स्वीकार करता है।

बनारस के मंदिर के पुजारी लाहौर के एक अतिथि अजैनिन थे।

2) व्यापारियों द्वारा अजैनिन ने यहूदी लड़के के बारे में, उसके ज्ञान के शब्दों के बारे में सुना, और वह खुद को कमर कस कर लाहौर से चला गया ताकि वह लड़के को देख सके और उसे बोलते हुए सुन सके।

3) ब्राहमण पुजारियों ने उस सच्चाई को स्वीकार नहीं किया जो यीशु लाया था, और वे उदरक पर्व में जो कुछ भी कहते थे, उससे वे बहुत नाराज थे।

4) परन्तु उन्होंने उस लड़के को कभी नहीं देखा था, और वे उसे बोलते हुए सुनना चाहते थे, और उन्होंने उसे मंदिर के अतिथि के रूप में आमंत्रित किया।

5) यीशु ने उन से कहा, ज्योति तो बहुत है, और वह सब के लिये चमकती है; यदि आप प्रकाश को प्रकाश में आते देखेंगे।

6) यदि तुम उस सन्देश को सुनो जो पवित्र ने मुझे मनुष्यों को देने को दिया है, तो मेरे पास आओ।

7) अब, जब याजकों को बताया गया कि यीशु ने क्या कहा, तो वे क्रोधित हो गए।

8) अजैनीन ने उनके क्रोध में भाग नहीं लिया, और उसने किसान के घर पर एक और दूत को कीमती उपहारों के साथ यीशु के पास भेजा; उसने उपहारों के साथ यह संदेश भेजा:

9) हे स्वामी, मैं तुझ से बिनती करता हूं, मेरी बातें सुन; ब्राहमण कानून मना करता है कि कोई भी पुजारी किसी भी निम्न संपत्ति के घर में प्रवेश करेगा; लेकिन तुम हमारे पास आ सकते हो;

10) और मुझे विश्वास है कि ये याजक आपकी बात को सहर्ष सुनेंगे। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप इस दिन हमारे साथ आएं और भोजन करें।

11) यीशु ने कहा, पवित्र सब मनुष्यों को एक समान मानता है; मेरे सेनापति का निवास मनुष्यों की किसी भी परिषद के लिए काफी अच्छा है।

12) यदि जाति का अभिमान आपको दूर रखता है, तो आप प्रकाश के योग्य नहीं हैं। मेरे पिता-भगवान मनुष्य के नियमों का सम्मान नहीं करते हैं।

13) आपके उपहार मैं लौटाता हूँ; तुम यहोवा के ज्ञान को सोने, या कीमती उपहारों से नहीं खरीद सकते।

14) यीशु की इन बातों से और भी याजक क्रोधित हो उठे, और वे साज़िश रचने लगे कि वे उसे देश से कैसे निकालेंगे।

15) अजैनिन उनके साथ साजिश और योजना में शामिल नहीं हुआ; वह रात को मन्दिर से निकला, और उस घर को ढूंढ़ा जहां यीशु रहता था।

16) यीशु ने कहा, ऐसी कोई रात नहीं, जहां सूर्य चमकता हो; मेरे पास देने के लिए कोई गुप्त संदेश नहीं है; प्रकाश में सारे रहस्य खुल जाते हैं।

17) अजैनिन ने कहा, मैं दूर लाहौर से आया हूं, कि मैं इस प्राचीन ज्ञान, और पवित्र के इस राज्य के बारे में जानूं, जिसके बारे में आप बोलते हैं।

18) राज्य कहाँ है? राजा कहाँ? विषय कौन हैं? इसके कानून क्या हैं?

19) यीशु ने कहा, यह राज्य दूर नहीं, वरन नश्वर आंखों वाला मनुष्य इसे नहीं देख सकता; यह हृदय के भीतर है।

20) न तो राजा को पृथ्वी पर, न समुद्र में, और न आकाश में ढूंढ़ना चाहिए; वह वहां नहीं है, और फिर भी हर जगह है। वह परमेश्वर का मसीह है; सार्वभौमिक प्रेम है।

21) इस राज्य का द्वार ऊंचा नहीं है, और जो कोई उसमें प्रवेश करे वह अपने घुटनों के बल गिरे। यह चौड़ा नहीं है, और कोई भी शारीरिक बंडलों के माध्यम से नहीं ले जा सकता है।

22) निचले स्व को आत्मा-स्व में परिवर्तित किया जाना चाहिए; शरीर को पवित्रता की जीवित धाराओं में धोना चाहिए।

23) अजैनिन ने पूछा, क्या मैं इस राजा की प्रजा बन सकता हूँ?

24) यीशु ने कहा, तू तो राजा है, और फाटक से प्रवेश करके राजाओं के राजा की प्रजा हो सकता है।

25) परन्तु अपके याजक के वस्त्र को अलग रखना; सोने के लिए पवित्र की सेवा करना बंद कर देना चाहिए; अपना प्राण और अपना सब कुछ मनुष्यों की सेवा में देना चाहिए।

26) और यीशु ने और नहीं कहा; अजैनिन अपने रास्ते चला गया; और जब तक वह उस सच्चाई को नहीं समझ सका जो यीशु ने कहा था, उसने वह देखा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

27) विश्वास का वह क्षेत्र जिसे उसने कभी नहीं खोजा था; लेकिन उनके दिल में विश्वास और सार्वभौमिक भाईचारे के बीज अच्छी जमीन मिल गई थी।

28) और जब वह अपने घर को जा रहा था, तो उसे लगा कि वह सो रहा है, अन्धकारमय रात में से गुजर रहा है, और जब उसने जगाया तो धर्म का सूर्य उदय हुआ था; उसे राजा मिल गया था।

29) अब, बनारस में यीशु ने बहुत दिन बिताए और शिक्षा दी।

अध्याय 30

यीशु को अपने पिता की मृत्यु की खबर मिलती है। वह अपनी माँ को एक पत्र लिखता है। अक्षर। वह इसे एक व्यापारी द्वारा रास्ते में भेजता है।

एक दिन जब यीशु अपने काम में व्यस्त गंगा के किनारे खड़े थे, एक कारवां, पश्चिम से लौट रहा था, निकट आ गया।

2) और एक ने यीशु के पास आकर कहा, हम तो तेरे देश से ठीक तेरे पास आते हैं, और अप्रिय समाचार लाते हैं।

3) तेरा पिता पृथ्वी पर नहीं रहा; तुम्हारी माँ दुखी है; और कोई उसे दिलासा नहीं दे सकता। वह सोचती है कि आप अभी भी जीवित हैं या नहीं; वह आपको एक बार फिर से देखने के लिए तरस रही है।

4) और यीशु ने चुपचाप अपना सिर झुकाया; और फिर उन्होंने लिखा। उसने जो लिखा है उसका योग है:

5) मेरी माँ, नारी जाति की सबसे महान; मेरी जन्मभूमि के एक मनुष्य ने मुझे यह वचन दिया है, कि पिता अब मांस में नहीं रहा, और तू शोकित, और व्याकुल है।

6) मेरी माँ, सब ठीक है; पिता के लिए अच्छा है और आपके लिए अच्छा है।

7) इस धरती के चक्कर में उसका काम हो गया है, और यह बहुत अच्छा किया गया है।

8) जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुष उस पर छल, बेईमानी या गलत इरादे का आरोप नहीं लगा सकते।

9) यहाँ इस चक्कर में उसने कई भारी काम पूरे किए, और वह वहाँ से चला गया है और आत्मा के दौर की समस्याओं को हल करने के लिए तैयार है।

10) जैसा वह यहां उसके साथ था, वैसा ही हमारा पिता परमेश्वर भी उसके साथ है; और वहां उसका दूत उसके पदचिन्होंकी रखवाली करता है, कहीं ऐसा न हो कि वह भटक जाए।

11) आपको क्यों रोना चाहिए? आंसू दुख को जीत नहीं सकते। टूटे हुए दिल को जोड़ने के लिए दु:ख में कोई शक्ति नहीं है।

12) दु: ख का विमान आलस्य है; व्यस्त आत्मा कभी शोक नहीं कर सकती; उसके पास दुख का समय नहीं है।

13) जब दुःख दिल से उतरे, तो बस अपने आप को खो दो; प्रेम की सेवकाई में गहरी डुबकी लगाओ, और दु: ख नहीं है।

14) तुम्हारी प्रेम की सेवकाई है, और सारा संसार प्रेम को पुकार रहा है।

15) तब अतीत को अतीत के साथ जाने दो; शारीरिक चीजों की परवाह से उठो और जीने वालों के लिए अपना जीवन दो।

16) और यदि आप जीवन की सेवा में अपना जीवन खो देते हैं, तो आप निश्चित रूप से उसमें सुबह का सूरज, शाम की ओस, पक्षियों के गीत, फूलों और रात के सितारों में पाएंगे।

17) कुछ ही देर में आपकी इस धरती की समस्या का समाधान हो जाएगा; और जब आपकी सारी राशि समाप्त हो जाएगी, तो आपके लिए उपयोगिता के व्यापक क्षेत्रों में प्रवेश करना, आत्मा की अधिक से अधिक समस्याओं को हल करने के लिए, आपके लिए शुद्ध आनंद होगा।

18) सो सन्तुष्ट होने का प्रयत्न करो, और किसी दिन मैं तुम्हारे पास आऊंगा, और तुम्हारे लिये सोने वा मणि से बढ़कर भेंट लाऊंगा।

19) मुझे यकीन है कि जॉन आपकी सभी जरूरतों को पूरा करते हुए आपकी देखभाल करेगा; और हे यहोशू, मैं पूरे मार्ग तेरे संग रहूंगा।

20) और एक व्यापारी के हाथ से, जो यरूशलेम को जा रहा था, उसने यह पत्र भेजा।

अध्याय 31

यीशु की शिक्षा और उसे भारत से भगाने के संकल्प के कारण ब्राहमण पुजारी क्रोधित हैं। लामा उसके लिए याचना करते हैं। पुजारी उसे मारने के लिए एक हत्यारे को नियुक्त करते हैं। लामास ने उसे चेतावनी दी और वह नेपाल भाग गया।

यीशु के वचनों और कार्यों से सारे देश में अशांति फैल गई।

2) आम लोग उसके दोस्त थे, उस पर विश्वास करते थे और हवाई जहाज़ों में उसका अनुसरण करते थे।

3) याजक और हाकिम उस से डरते थे, उसी के नाम से उनके मन में भय छा गया।

4) उन्होंने जीवन के भाईचारे, समान अधिकारों की धार्मिकता का उपदेश दिया, और पुजारियों की व्यर्थता, और बलिदान की शिक्षा दी।

5) उसने उसी रेत को हिलाया जिस पर ब्राहमण प्रणाली खड़ी थी; उन्होंने ब्राहमी मूर्तियों को इतना छोटा और पाप से भरा बलिदान इतना बना दिया कि मंदिर और प्रार्थना के पहिये सब भूल गए।

6) याजकों ने घोषणा की कि यदि यह यहूदी लड़का भूमि में अधिक समय तक रहता है तो एक क्रांति हो जाएगी; आम लोग उठ खड़े होंगे और पुजारियों को मार डालेंगे और मंदिरों को तोड़ देंगे।

7) तब उन्होंने विदेश में बुलवा भेजा, और सब प्रान्तों से याजक आए। बनारस में ब्राह्मण उत्साह से आग लगी हुई थी।

8) जगन्नाथ मंदिर के लामा, जो यीशु के आंतरिक जीवन को अच्छी तरह से जानते थे, उनके बीच में थे, और उन्होंने याजकों की चीखें सुनीं,

9) और उस ने खड़े होकर कहा, हे मेरे भाई याजकों, चौकस रहो, जो कुछ तुम करते हो उसकी चौकसी करना; यह एक रिकॉर्ड बनाने वाला दिन है।

10) दुनिया देख रही है; ब्राह्मण विचार का जीवन ही अब परीक्षण पर है।

11) यदि हम तर्कहीन हैं; यदि पूर्वाग्रह आज राजा हो; यदि हम पशु बल का सहारा लें, और अपने हाथों को खून से रंग दें, जो ब्रह्म की दृष्टि में निर्दोष और शुद्ध हो सकता है,

12) उसका प्रतिशोध हम पर गिर सकता है; जिस चट्टान पर हम खड़े हैं, वही हमारे पांवों तले से फट जाए; और हमारा प्रिय पौरोहित्य, और हमारे नियम और धार्मिक स्थल नष्ट हो जाएंगे।

13) लेकिन उन्होंने उसे और कुछ नहीं बोलने दिया। क्रोधित याजकों ने दौड़कर उसे पीटा, उस पर थूका, उसे देशद्रोही कहा, खून से लथपथ उसे सड़क पर फेंक दिया।

14) और फिर भ्रम की स्थिति बनी; याजक भीड़ बन गए; मानव रक्त की दृष्टि ने पैशाचिक कृत्यों को जन्म दिया और अधिक की मांग की।

15) युद्ध के डर से हाकिमों ने यीशु की खोज की, और उन्होंने उसे बाजार में शांति से उपदेश देते हुए पाया।

16) उन्होंने उसे विदा करने का आग्रह किया, कि वह अपना जीवन बचा सके; लेकिन उसने जाने से इनकार कर दिया।

17) और फिर याजकों ने उसकी गिरफ्तारी का कारण खोजा; लेकिन उसने कोई अपराध नहीं किया था।

18) और फिर झूठे आरोप लगाए गए; परन्तु जब सिपाही उसे न्याय-भवन में ले जाने को गए, तो वे डर गए, क्योंकि लोग उसके बचाव में खड़े थे।

19) याजक चकित हुए, और उन्होंने चुपके से उसके प्राण लेने का निश्चय किया।

20) उन्होंने एक आदमी को पाया जो व्यापार से हत्यारा था और रात में उसे बाहर भेज दिया ताकि उनके क्रोध की वस्तु को मार डाला जा सके।

21) लामा ने उनकी साजिश और उनकी योजनाओं के बारे में सुना और अपने मित्र को चेतावनी देने के लिए एक दूत भेजा; और यीशु ने जाने के लिथे फुर्ती की।

22) रात को वह बनारस से निकला, और फुर्ती से उत्तर की ओर चल दिया; और हर जगह, किसानों, व्यापारियों और शूद्रों ने रास्ते में उसकी मदद की।

23) और बहुत दिनों के बाद वह शक्तिशाली हिमालय पर पहुंचा, और कपिवस्तु नगर में वह निवास किया।

24) बुद्ध के पुजारियों ने उनके लिए अपने मंदिर के दरवाजे खोल दिए।

अध्याय 32

यीशु और बरता। दोनों ने मिलकर पवित्र पुस्तकें पढ़ीं। यीशु विकासवाद के बौद्ध सिद्धांत का अपवाद लेते हैं और मनुष्य की वास्तविक उत्पत्ति को प्रकट करते हैं। विद्यापति से मिलता है, जो उसका सह-मजदूर बन जाता है।

बौद्ध पुजारियों में वह था जिसने यीशु द्वारा बोले गए शब्दों में एक उच्च ज्ञान देखा। यह बरता अरबो था।

2) यीशु और बाराता ने एक साथ यहूदी स्तोत्र और भविष्यवक्ताओं को पढ़ा; वेद, अवेस्ता और गौतम के ज्ञान को पढ़ें।

3) और जब उन्होंने पढ़ा और मनुष्य की संभावनाओं के बारे में बात की, तो बरता ने कहा,

4) मनुष्य ब्रह्मांड का चमत्कार है। वह हर चीज का हिस्सा है क्योंकि वह जीवन के हर स्तर पर एक जीवित चीज रहा है।

5) वह समय था जब मनुष्य नहीं था; और वह समय के सांचे में थोड़ा सा निराकार पदार्थ था; और फिर एक प्रोटोप्लास्ट।

6) सार्वभौम नियम के अनुसार सभी वस्तुएँ पूर्णता की स्थिति में ऊपर की ओर प्रवृत्त होती हैं। प्रोटोप्लास्ट विकसित हुआ, कीड़ा बन गया, फिर सरीसृप, पक्षी और जानवर, और फिर अंत में यह मनुष्य के रूप में पहुंचा।

7) अब, मनुष्य स्वयं मन है, और मन यहाँ अनुभव द्वारा पूर्णता प्राप्त करने के लिए है; और मन अक्सर मांसल रूप में प्रकट होता है, और इसके विकास के लिए सबसे उपयुक्त रूप में। तो, मन कीड़ा, या पक्षी, या जानवर, या मनुष्य के रूप में प्रकट हो सकता है।

8) वह समय आएगा जब जीवन की प्रत्येक वस्तु पूर्ण मनुष्य की अवस्था में विकसित हो जाएगी।

9) और मनुष्य के पूर्णता में मनुष्य होने के बाद, वह जीवन के उच्चतर रूपों में विकसित होगा।

10) और यीशु ने कहा, बरता अरेबो, जिसने तुम्हें यह सिखाया है, कि मन, जो मनुष्य है, पशु, या पक्षी, या रेंगने वाले जानवर के मांस में प्रकट हो सकता है?

11) बाराता ने कहा, जब से मनुष्य हमारे याजकों को स्मरण नहीं रखता, तब से हम ने ऐसा ही कहा है, और हम जानते हैं।

12) और यीशु ने कहा, प्रबुद्ध अरबो, क्या तुम एक मास्टर माइंड हो और यह नहीं जानते कि मनुष्य कुछ भी नहीं जानता है?

13) मनुष्य दूसरों की बातों पर विश्वास कर सकता है; लेकिन इस प्रकार वह कभी नहीं जानता। यदि मनुष्य जानता है, तो वह स्वयं वही होना चाहिए जो वह जानता है।

14) क्या आपको याद है, अरेबो, जब आप वानर थे, या पक्षी, या कीड़ा?

15) अब, यदि याजकों ने तुम से जो कहा है, उस से बढ़कर यदि तुम्हारे पास अपनी बिनती का और कोई प्रमाण न हो, तो तुम नहीं जानते; आप बस अनुमान लगाते हैं।

16) तो जो कुछ किसी ने कहा है, उस पर ध्यान न देना; आओ, हम शरीर को भूल जाएं, और मन से मांसहीन देश में जाएं; मन कभी नहीं भूलता।

17) और युगों से पिछड़ा हुआ मास्टर दिमाग खुद का पता लगा सकता है; और इस प्रकार वे जानते हैं।

18) समय कभी नहीं था जब मनुष्य नहीं था।

19) जो शुरू होता है उसका अंत होता है। यदि मनुष्य नहीं था, तो वह समय आएगा जब उसका अस्तित्व नहीं होगा।

20) परमेश्वर की अपनी रिकॉर्ड बुक से हम पढ़ते हैं: त्रिएक परमेश्वर ने सांस ली, और सात आत्माएं उसके चेहरे के सामने खड़ी थीं। (इब्री इन सात आत्माओं को एलोहीम कहते हैं।)

21) और ये वे हैं, जिन्होंने अपनी असीम शक्ति से, जो कुछ है, या था, उसे बनाया।

22) त्रिएक परमेश्वर की ये आत्माएं असीम स्थान के मुख पर चलती थीं और सात ईथर थे, और प्रत्येक ईथर का जीवन का रूप था।

23) जीवन के ये रूप केवल ईश्वर के विचार थे, जो उनके ईथर विमानों के सार में पहने हुए थे।

24) (मनुष्य इन ईथर विमानों को प्रोटोप्लास्ट, पृथ्वी, पौधे, पशु, मनुष्य, स्वर्गदूत और करूबों के विमान कहते हैं।)

25) परमेश्वर के बारे में उनके सभी विचारों के साथ ये विमान, मांस में मनुष्य की आंखों से कभी नहीं देखे जाते हैं; वे ऐसे पदार्थ से बने हैं जो शारीरिक आंखों से देखने के लिए बहुत महीन हैं, और फिर भी वे चीजों की आत्मा का गठन करते हैं;

26) और सब प्राणी प्राण की आंखों से इन आकाशीय विमानों और जीवन के सब रूपों को देखते हैं।

27) क्योंकि हर स्तर पर जीवन के सभी रूप ईश्वर के विचार हैं, सभी प्राणी सोचते हैं, और प्रत्येक प्राणी में इच्छा होती है, और, इसके माप में, चुनने की शक्ति होती है,

28) और अपने मूल विमानों में सभी प्राणियों को उनके विमानों के पंखों से पोषण मिलता है।

29) और जब तक इच्छा एक सुस्त इच्छा नहीं बन जाती, तब तक हर जीवित प्राणी के साथ ऐसा ही होता रहा, और तब जीव-जंतु, पृथ्वी, पौधे, पशु, मनुष्य, के ईथर बहुत धीमी गति से कंपन करने लगे।

30) सब पंख और भी घने हो गए, और इन विमानों के सब प्राणी मोटे वस्त्रों अर्थात् मांस के वस्त्र पहिने हुए थे, जिन्हें मनुष्य देख सकते हैं; और इस प्रकार यह मोटा प्रकट हुआ, जिसे पुरुष भौतिक कहते हैं, प्रकट हुआ।

31) और इसे मनुष्य का पतन कहा जाता है; परन्तु मनुष्य अकेला नहीं गिरा, क्योंकि पतझड़ में प्रोटोप्लास्ट, और पृथ्वी, और पौधे और पशु सब सम्मिलित थे।

32) स्वर्गदूत और करूब न गिरे; उनकी इच्छाएँ सदा प्रबल थीं, और इसलिए उन्होंने अपने विमानों के पंखों को परमेश्वर के सामंजस्य में रखा।

33) अब, जब ईथर वायुमंडल की गति तक पहुँच गए, और इन विमानों के सभी प्राणियों को अपना भोजन वातावरण से प्राप्त करना चाहिए, तो संघर्ष आया; और फिर वह जिसे सीमित व्यक्ति ने सर्वश्रेष्ठ का अस्तित्व कहा है, एक कानून बन गया,

34) बलवान ने दुर्बलों के शरीरों को खा लिया; और यहीं पर विकास के शारीरिक नियम का उदय हुआ।

35) और अब मनुष्य, अपनी बेशर्मी में, जानवरों को मारता है और खाता है, जानवर पौधे को खा जाता है, पौधा पृथ्वी पर पनपता है, पृथ्वी प्रोटोप्लास्ट को अवशोषित करती है।

36) आत्मा के राज्य में यह शारीरिक विकास ज्ञात नहीं है, और मास्टर माइंड्स का महान कार्य मनुष्य की विरासत को पुनर्स्थापित करना है, उसे उसकी संपत्ति में वापस लाना है जिसे उसने खो दिया है, जब वह फिर से ईथर पर जीवित रहेगा अपने मूल विमान से।

37) परमेश्वर के विचार नहीं बदलते; प्रत्येक तल पर जीवन की अभिव्यक्तियाँ अपनी तरह की पूर्णता में प्रकट होती हैं; और जैसा कि परमेश्वर के विचार कभी नहीं मर सकते, त्रिएक परमेश्वर की सात आत्माओं के सात ईथरों में से किसी की भी मृत्यु नहीं है।

38) और इसलिए पृथ्वी कभी पौधा नहीं होती; एक जानवर, या पक्षी, या रेंगने वाला प्राणी कभी भी मनुष्य नहीं होता है, और मनुष्य पशु, या पक्षी, या रेंगने वाली वस्तु नहीं है, और न ही हो सकता है।

39) वह समय आएगा जब ये सभी सात प्रकट हो जाएंगे, और मनुष्य, और पशु, और पौधे, और पृथ्वी और मूलतत्व को छुड़ा लिया जाएगा।

40) बरता चकित था; यहूदी ऋषि का ज्ञान उनके लिए एक रहस्योद्घाटन था।

41) अब, विद्यापति, भारतीय ऋषियों में सबसे बुद्धिमान, मंदिर के प्रमुख कपिवस्तु, ने बाराता को मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में यीशु से बात करते हुए सुना, और हिब्रू नबी का जवाब सुना, और उन्होंने कहा,

42) आप कपिवस्तु के पुजारी, मेरी बात सुनते हैं: हम आज एक शिखर पर खड़े हैं। छह बार पहले एक गुरु आत्मा का जन्म हुआ था जिसने मनुष्य को महिमा का प्रकाश दिया था, और अब एक गुरु ऋषि यहां कपिवस्तु मंदिर में खड़ा है।

43) यह इब्रानी भविष्यद्वक्ता ज्ञान का उभरता हुआ तारा है, देवता है। वह हमारे लिए परमेश्वर की गुप्त बातों का ज्ञान लाता है; और सारे जगत के लोग उसकी बातें सुनेंगे, और उसकी बातें मानेंगे, और उसके नाम की बड़ाई करेंगे।

44) तुम कपिवस्तु मंदिर के पुजारी, रहो! शांत रहो और जब वह बोलता है तब सुनो; वह ईश्वर का जीवित ओरेकल है।

45) और सभी पुजारियों ने धन्यवाद दिया और ज्ञान के बुद्ध की प्रशंसा की।

अध्याय 33

वसंत ऋतु में यीशु आम लोगों को शिक्षा देते हैं। उन्हें बताता है कि खुशी कैसे प्राप्त करें। चट्टानी क्षेत्र और छिपे हुए खजाने के दृष्टांत से संबंधित है।

मौन ध्यान में यीशु बहते झरने के पास बैठे थे। यह एक पवित्र दिन था, और नौकर जाति के बहुत से लोग जगह के पास थे।

2) और यीशु ने हर माथे पर, हर हाथ में कड़ी मेहनत की लकीरें देखीं। किसी के भी चेहरे पर खुशी का ठिकाना नहीं था। सभी समूह में से कोई भी परिश्रम के अलावा कुछ भी नहीं सोच सकता था।

3) यीशु ने एक से कहा, तुम सब इतने उदास क्यों हो? क्या आपके जीवन में कोई खुशी नहीं है?

4) उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, हम शायद ही उस शब्द का अर्थ जानते हैं। हम जीने के लिए परिश्रम करते हैं, और परिश्रम के अलावा किसी और चीज की आशा नहीं करते हैं, और उस दिन को आशीर्वाद देते हैं जब हम अपने परिश्रम को समाप्त कर सकते हैं और हमें बुद्ध के मृतकों के शहर में आराम करने के लिए लेटा सकते हैं।

5) और इन दीन मेहनतकशों पर तरस और प्रेम से यीशु का मन भर उठा, और उस ने कहा,

6) परिश्रम से व्यक्ति दुखी नहीं होना चाहिए; पुरुषों को सबसे ज्यादा खुश होना चाहिए जब वे मेहनत करते हैं। जब आशा और प्रेम परिश्रम से वापस आ जाते हैं, तब सारा जीवन आनंद और शांति से भर जाता है, और यही स्वर्ग है। क्या तुम नहीं जानते कि ऐसा स्वर्ग तुम्हारे लिए है?

7) उस मनुष्य ने उत्तर दिया, कि हम ने स्वर्ग के विषय में सुना है; लेकिन फिर यह बहुत दूर है, और उस स्थान तक पहुँचने से पहले हमें इतने सारे जीवन जीने होंगे!

8) यीशु ने कहा, हे मेरे भाई, हे मनुष्य, तेरे विचार गलत हैं; तुम्हारा स्वर्ग दूर नहीं है; और यह पर्वतों और सीमाओं का स्थान नहीं है, यह कोई देश नहीं है जहां पहुंचा जा सकता है; यह एक मानसिक अवस्था है।

9) परमेश्वर ने मनुष्य के लिए कभी स्वर्ग नहीं बनाया; उसने कभी नरक नहीं बनाया; हम निर्माता हैं, और हम अपना बनाते हैं।

10) अब, आकाश में स्वर्ग की खोज करना बंद करो; बस अपने दिलों की खिड़कियाँ खोलो, और, प्रकाश की बाढ़ की तरह, एक स्वर्ग आएगा और एक असीम आनंद लाएगा; तो परिश्रम कोई क्रूर कार्य नहीं होगा।

11) लोग चकित हुए और इस अजीब युवा स्वामी को बोलते हुए सुनने के लिए एकत्र हो गए।

12) उससे विनती करना कि वह उन्हें पिता-परमेश्वर के बारे में और बताए; उस स्वर्ग के विषय में जिसे मनुष्य पृथ्वी पर बना सकते हैं; असीम आनंद के बारे में।

रॉकी फील्ड और छिपे हुए खजाने का दृष्टांत

13) और यीशु ने एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, एक मनुष्य के पास खेत है; मिट्टी सख्त और खराब थी।

14) निरंतर परिश्रम से वह अपने परिवार को अभाव से बचाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं दे पाता था।

15) एक दिन एक खनिक जो मिट्टी के नीचे देख सकता था, रास्ते से गुजरते हुए, उसने इस गरीब आदमी और उसके बेकार खेत को देखा।

16) उस ने थके हुए मेहनतकश को बुलाकर कहा, हे मेरे भाई, क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारे बंजर खेत की सतह के नीचे बहुत धन छिपा है?

17) तू हल जोतता, बोता, और बहुत कम काटता है, और प्रति दिन सोने और मणि की खदान को रौंदता है।

18) यह धन जमीन की सतह पर नहीं है; परन्तु यदि तू पथरीली भूमि को खोदकर पृथ्वी में गहिरा खोदे, तो फिर मिट्टी को व्यर्थ न रहने देना।

19) आदमी ने विश्वास किया। खनिक निश्चित रूप से जानता है; उस ने कहा, और मैं अपके खेत में छिपा हुआ धन ढूंढूंगा।

20) तब उस ने चट्टानी भूमि को खोदा, और भूमि की गहराई में उसे सोने की एक खदान मिली।

21) यीशु ने कहा, मनुष्य के सन्तान जंगल के मैदानों, और जलती बालू और पथरीली भूमि में परिश्रम करते हैं; वे वही कर रहे हैं जो उनके पिता ने किया था, यह सपने में नहीं कि वे और कुछ कर सकते हैं।

22) देखो, एक स्वामी आकर छिपा हुआ धन उन से कहता है; कि शारीरिक वस्तुओं की पथरीली भूमि के नीचे ऐसे खज़ाने हैं जिन्हें कोई गिन नहीं सकता;

23) कि हृदय में सबसे धनी रत्न बहुतायत में हों; कि जो चाहे वह द्वार खोलकर उन सब को पा ले।

अंत - द पेरेबल ऑफ द रॉकी फील्ड एंड द हिडन ट्रेजर

24) तब लोगोंने कहा, हमें वह मार्ग बता, जो हमारे मन में बसा हुआ है।

25) और यीशु ने मार्ग खोला; मेहनतकशों ने जीवन का दूसरा पहलू देखा, और परिश्रम एक आनन्द बन गया।

अध्याय 34

कपिवस्तु में जयंती। यीशु प्लाजा में पढ़ाते हैं और लोग चकित होते हैं। वह अप्रयुक्त दाख की बारी और दाख की बारी के दृष्टान्त का वर्णन करता है। उसकी बातों से पुजारी नाराज हो गए।

यह पवित्र कपिवस्तु में एक पर्व दिवस था; जयंती मनाने के लिए बौद्ध उपासकों की भीड़ जुटी थी।

2) और भारत के सभी भागों के पुजारी और स्वामी वहां थे; उन्होंने सिखाया; परन्तु उन्होंने छोटे सत्य को बहुत से शब्दों से अलंकृत किया।

3) और यीशु ने एक प्राचीन चौक में जाकर उपदेश दिया; उन्होंने पिता-माता-भगवान की बात की; उन्होंने जीवन के भाईचारे के बारे में बताया।

4) पुजारी और सभी लोग उसकी बातों से चकित हो गए और कहा, क्या यह बुद्ध फिर से मांस में नहीं आए हैं? इतनी सरलता और शक्ति के साथ कोई दूसरा नहीं बोल सकता था।

अनकप्टेड वाइनयार्ड और वाइन ड्रेसर का दृष्टांत

5) और यीशु ने एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, एक दाख की बारी थी, जो पूरी तरह से कच्ची थी; लताएँ ऊँची थीं, पत्तियाँ और शाखाएँ बड़ी थीं।

6) पत्तियाँ चौड़ी थीं और दाखलताओं से सूर्य के प्रकाश को बंद कर देती थीं; अंगूर खट्टे थे, और थोड़े, और छोटे।

7) प्रूनर आया; उसने अपनी धारदार छुरी से सब डाल को काट डाला, और एक पत्ता भी न बचा; बस जड़ और डंठल, और कुछ नहीं।

8) व्यस्त पड़ोसी एक मन से आकर चकित हुए, और काटने वाले से कहने लगे, हे मूर्ख मनुष्य! दाख की बारी नष्ट हो गई है।

9) ऐसा उजाड़! कोई सुंदरता नहीं बची है, और जब कटनी का समय आएगा तो बटोरने वालों को कोई फल नहीं मिलेगा।

10) काटने वाले ने कहा, जो कुछ तुम सोचते हो उसी में सन्तोष करो, और कटनी के समय फिर आकर देखो।

11) और जब कटनी का समय आया तो व्यस्त पड़ोसी फिर आ गए; वे विस्मित थे।

12) नंगे डंठल से डाली और पत्तियाँ निकली थीं, और स्वादिष्ट अंगूरों के भारी गुच्छे हर एक डाली को तौलते थे।

13) बटोरनेवाले आनन्दित हुए, क्योंकि वे दिन-ब-दिन धनी फलों को छापेखाने तक ले जाते थे।

14) यहोवा की दाख की बारी को निहारना! पृथ्वी मानव दाखलताओं से फैली हुई है।

15) मनुष्यों के सुन्दर रूप और संस्कार शाखाएं हैं, और उनके वचन पत्ते हैं; और ये इतने बड़े हो गए हैं कि सूरज की रोशनी अब दिल तक नहीं पहुंच सकती; कोई फल नहीं है।

16) देखो, काटने वाला आता है, और वह दोधारी छुरी से डालियों और वचन के पत्तों को काट डालता है,

17) और मानव जीवन के डंठल को छोड़ कुछ भी नहीं बचा है।

18) याजकों और घमण्डियों ने छांटने वाले को डाँटा, और उसे उसके काम में लगा दिया।

19) वे मानव जीवन के डंठल में कोई सुंदरता नहीं देखते हैं: फल का कोई वादा नहीं।

20) कटनी का समय आएगा, और जिन लोगों ने कांटों का तिरस्कार किया है, वे फिर से देखेंगे और चकित होंगे, क्योंकि वे उन मानव डंठलों को देखेंगे जो इतने निर्जीव थे, और बहुमूल्य फलों के साथ झुके हुए थे।

21) और वे फसल काटने वालों को आनन्दित होते सुनेंगे, क्योंकि कटनी बहुत बड़ी है।

अंत - अनकप्टेड वाइनयार्ड और वाइन ड्रेसर का दृष्टांत

22) याजक यीशु की बातों से खुश नहीं थे; परन्तु उन्होंने उसे डांटा नहीं; वे भीड़ से डरते थे।

अध्याय 35

यीशु और विद्यापति दुनिया के आने वाले युग की जरूरतों पर विचार करते हैं।

भारतीय संत और यीशु अक्सर राष्ट्रों और मनुष्यों की जरूरतों के बारे में मिलते और बात करते थे; आने वाले युग के लिए सबसे उपयुक्त पवित्र सिद्धांतों, रूपों और संस्कारों के बारे में।

2) एक दिन वे एक पहाड़ी दर्रे पर एक साथ बैठे, और यीशु ने कहा, आने वाले युग में निश्चित रूप से याजकों, और मंदिरों और जीवन के बलिदान की आवश्यकता नहीं होगी।

3) पवित्र जीवन के लिए मनुष्य की सहायता करने के लिए पशु, या पक्षी के बलिदान में कोई शक्ति नहीं है।

4) और विद्यापति ने कहा, सभी रूप और संस्कार उन चीजों के प्रतीक हैं जो पुरुषों को आत्मा के मंदिर में करनी चाहिए।

5) पवित्र व्यक्ति को मनुष्य के लिए स्वेच्छा से बलिदान देने के लिए मनुष्य की आवश्यकता होती है, और वेदियों और मंदिरों पर सभी तथाकथित प्रसाद जो समय से शुरू हुए हैं, मनुष्य को यह सिखाने के लिए बनाए गए थे कि अपने भाई को बचाने के लिए खुद को कैसे दिया जाए आदमी; क्योंकि मनुष्य अपने आप को तब तक नहीं बचा सकता जब तक कि वह दूसरों को बचाने में अपनी जान गंवा देता है।

6) पूर्ण आयु के लिए रूपों और संस्कारों और शारीरिक बलिदान की आवश्यकता नहीं होगी। आने वाला युग सही उम्र नहीं है, और पुरुष वस्तु पाठ और प्रतीकात्मक संस्कारों का आह्वान करेंगे।

7) और महान धर्म में तुम मनुष्यों से परिचय कराओगे, कुछ साधारण धुलाई और स्मरण के संस्कारों की आवश्यकता होगी; परन्तु पशुओं और पक्षियों के क्रूर बलिदान की देवताओं को आवश्यकता नहीं है।

8) यीशु ने कहा, हमारे परमेश्वर को याजकों और याजकों के चमचमाते शोभा से घृणा करनी चाहिए।

9) जब लोग यह दर्शाने के लिए कि वे देवताओं के दास हैं, दिखावटी वस्त्र धारण करते हैं, और धर्मपरायणता या किसी अन्य चीज के कारण पुरुषों द्वारा प्रशंसा के लिए भड़कीले पक्षियों की तरह घूमते हैं, तो पवित्र व्यक्ति को निश्चित रूप से घृणा से दूर होना चाहिए।

10) सभी लोग हमारे पिता-परमेश्वर के सेवकों के समान हैं, राजा और याजक हैं।

11) क्या आने वाला युग पुरोहित जाति के साथ-साथ हर दूसरी जाति के पूर्ण विनाश और पुरुषों के पुत्रों के बीच असमानता की मांग नहीं करेगा?

12) और विद्यापति ने कहा, आने वाला युग आत्मिक जीवन का युग नहीं है और पुरुष खुद को संत के रूप में प्रचारित करने के लिए पुरोहितों के वस्त्र पहनने और पवित्र मंत्रों का जाप करने में गर्व करेंगे।

13) आप जिन साधारण संस्कारों का परिचय देंगे, उनका आपके अनुसरण करने वालों द्वारा प्रशंसा की जाएगी, जब तक कि युग की पवित्र सेवा भव्यता में ब्राह्मण युग की पुरोहित सेवा से दूर नहीं हो जाती।

14) यह एक ऐसी समस्या है जिसे पुरुषों को हल करना चाहिए।

15) सिद्ध युग आएगा जब हर एक आदमी याजक होगा और लोग अपने धर्मपरायणता का प्रचार करने के लिए विशेष वेश में खुद को तैयार नहीं करेंगे।

भाग 1/धारा VII

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड VII
ZAIN

तिब्बत और पश्चिमी भारत में यीशु का जीवन और कार्य
(अध्याय 36-37)

अध्याय 36

लस्सा में यीशु। वह मेंग-त्से से मिलता है जो उसे प्राचीन पांडुलिपियों को पढ़ने में सहायता करता है। वह लद्दाख जाता है। एक बच्चे को ठीक करता है। राजा के पुत्र के दृष्टान्त से संबंधित है।

तिब्बत के लस्सा में एक गुरु का मंदिर था, जो प्राचीन विद्या की पांडुलिपियों से समृद्ध था।

2) भारतीय ऋषि ने इन पांडुलिपियों को पढ़ा था, और उन्होंने यीशु को उनमें से कई गुप्त पाठों का खुलासा किया; परन्तु यीशु उन्हें अपने लिए पढ़ना चाहता था।

3) अब, मेंग-त्से, सभी सुदूर पूर्व के महानतम संत, तिब्बत के इस मंदिर में थे।

4) एमोडस हाइट्स के पार का रास्ता कठिन था; लेकिन जीसस अपने रास्ते पर चल पड़े, और विद्यापति ने उनके साथ एक विश्वसनीय मार्गदर्शक भेजा।

5) और विद्यापति ने मेंग-त्से को एक संदेश भेजा, जिसमें उन्होंने हिब्रू ऋषि के बारे में बताया, और मंदिर के पुजारियों द्वारा उनके स्वागत की बात कही।

6) अब, बहुत दिनों के बाद, और बड़े संकटों के बाद, मार्गदर्शक और यीशु तिब्बत के लस्सा मंदिर पहुंचे।

7) और मेंग-त्से ने मंदिर के द्वार खोल दिए, और सभी याजकों और गुरुओं ने इब्रानी ऋषि का स्वागत किया।

8) और यीशु के पास सभी पवित्र पांडुलिपियों तक पहुंच थी, और मेंग-त्से की सहायता से, उन सभी को पढ़ा।

9) और मेंग-त्से अक्सर आने वाले युग के यीशु के साथ बात करते थे, और उस पवित्र सेवा के बारे में जो उस युग के लोगों के लिए सर्वोत्तम रूप से अनुकूलित थी।

10) लस्सा में यीशु ने शिक्षा नहीं दी। जब उन्होंने मंदिर के स्कूलों में अपनी सारी पढ़ाई पूरी की तो उन्होंने पश्चिम की ओर यात्रा की। कई गांवों में उन्होंने एक समय के लिए रुके और पढ़ाया।

11) अंत में वह दर्रे पर पहुंचा, और लद्दाख शहर, लेह में, भिक्षुओं, व्यापारियों और निम्न संपत्ति के लोगों द्वारा उसका स्वागत किया गया।

12) और वह मठ में रहा, और उपदेश दिया; और फिर उन्होंने व्यापार के बाजार में आम लोगों की तलाश की; और वहाँ उन्होंने पढ़ाया।

13) दूर एक स्त्री रहती थी, जिसका शिशु पुत्र मृत्यु के निकट बीमार था। डॉक्टरों ने घोषित किया था, कोई उम्मीद नहीं है; बच्चे को मरना चाहिए।

14) उस स्त्री ने सुना कि यीशु परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक शिक्षक है, और वह मानती है कि उसके पास उसके बेटे को चंगा करने की शक्ति है।

15) सो उसने मरते हुए शिशु को गोद में लिया और फुर्ती से दौड़ी और परमेश्वर के भक्त को देखने को कहा।

16) यीशु ने उसका विश्वास देखकर स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर कहा,

17) मेरे पिता-भगवान, शक्ति को मुझ पर हावी होने दो, और पवित्र सांस को इस बच्चे को भरने दो कि वह जीवित रहे।

18) और भीड़ के साम्हने उस ने बालक पर हाथ रखकर कहा,

19) अच्छी औरत तुम धन्य हो; तेरे विश्वास ने तेरे पुत्र को बचा लिया है। तब जाकर बच्चा ठीक हो गया।

20) लोगों ने चकित होकर कहा, यह निश्चय ही मांस का बनाया हुआ पवित्र है, क्योंकि केवल मनुष्य ही इस प्रकार ज्वर को डांट नहीं सकता, और न बालक को मृत्यु से बचा सकता है।

21) तब बहुत से लोग अपने बीमारों को ले आए, और यीशु ने वचन सुनाया, और वे चंगे हो गए।

22) लद्दाख के बीच यीशु ने कई दिन बिताए; उसने उन्हें चंगा करना सिखाया; पाप कैसे मिटाए जाते हैं, और कैसे पृथ्वी पर आनन्द का स्वर्ग बनाया जाता है।

23) लोग उसके वचनों और कामों के कारण उससे प्रेम करते थे, और जब वह विदा होता था, तो वे ऐसे शोकित होते थे, जैसे माता के चले जाने पर बालक विलाप करते हैं।

24) और भोर को जब वह मार्ग पर चला, तब भीड़ उसका हाथ दबाने के लिथे वहां थी।

धर्मी राजा और उसके इकलौते पुत्र का दृष्टान्त

25) उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, किसी राजा ने अपके देश के लोगोंसे ऐसा प्रेम रखा, कि अपके एकलौतेपुत्र को सब के लिथे बहुमूल्य भेंट देकर भेज दिया।

26) पुत्र ने इधर-उधर जाकर उपहारों को भव्य हाथ से बिखेरा।

27) परन्तु ऐसे याजक थे जो पराए देवताओं के मन्दिरों में सेवा टहल करते थे, जो इस कारण प्रसन्न नहीं होते थे कि राजा ने उनके द्वारा भेंट नहीं दी।

28) और इसलिए उन्होंने लोगों को बेटे से नफरत करने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की। उन्हों ने कहा, ये भेंट किसी कीमत की नहीं; वे लेकिन नकली हैं।

29) तब लोगों ने कीमती रत्न, और सोना-चांदी सड़कों पर फेंक दिए। उन्होंने बेटे को पकड़कर पीटा, उस पर थूका, और उसे अपने बीच से खदेड़ दिया।

30) बेटे ने उनके अपमान और उनकी क्रूरताओं पर नाराजगी नहीं जताई; परन्तु उस ने इस प्रकार बिनती की, हे मेरे परमेश्वर पिता, अपने हाथ के इन प्राणियोंको क्षमा कर; वे केवल गुलाम हैं; वे नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।

31) और जब वे उसे मार ही रहे थे, तब उस ने उन्हें भोजन कराया, और अपार प्रेम की आशीष दी।

32) कुछ नगरों में पुत्र का आनन्द से स्वागत किया जाता था, और वह आनन्द से घरों को आशीर्वाद देता रहता था; परन्तु वह ठहर न सका, क्योंकि वह राजा के सारे राज्य के सब लोगोंके लिथे भेंट ले जाएगा।

<u>अंत - धर्मी राजा और उसके इकलौते पुत्र का दृष्टान्त</u>

---

33) और यीशु ने कहा, मेरा पिता-परमेश्वर सारी मानव जाति का राजा है, और उसने मुझे अपने अतुलनीय प्रेम और असीम धन के सभी उपहारों के साथ भेजा है।

34) सभी देशों के लोगों के लिए, देखो, मुझे ये उपहार देना चाहिए - यह पानी और यह जीवन की रोटी।

35) मैं अपने रास्ते जाता हूं, लेकिन हम फिर मिलेंगे; क्योंकि मेरी जन्मभूमि में सब के लिये जगह है; मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँगा।

36) और यीशु ने मौन आशीर्वाद में अपना हाथ उठाया; फिर वह अपने रास्ते चला गया।

<u>अध्याय 37</u>

यीशु को एक ऊंट के साथ प्रस्तुत किया गया है। वह लाहौर जाता है जहां वह अजैनिन के साथ रहता है, जिसे वह पढ़ाता है। भटकते संगीतकारों का सबक। यीशु ने अपनी यात्रा फिर से शुरू की।

व्यापारियों का एक कारवां कश्मीर घाटी से यात्रा कर रहा था क्योंकि यीशु उस रास्ते से गुजर रहा था, और वे लाहौर जा रहे थे, हाथ का एक शहर, पांच-धारा भूमि।

2) व्यापारियों ने भविष्यवक्ता को बोलते हुए सुना था, लेह में उसके शक्तिशाली कार्यों को देखा था, और वे उसे एक बार फिर देखकर प्रसन्न हुए थे।

3) और जब वे जान गए कि वह लाहौर जा रहा है, और फिर सिंध पार, फारस और दूर पश्चिम में, और उसके पास सवारी करने के लिए कोई जानवर नहीं है,

4) उन्होंने स्वतंत्र रूप से उसे एक महान बैक्ट्रियन जानवर दिया, जो अच्छी तरह से काठी और सुसज्जित था, और यीशु ने कारवां के साथ यात्रा की।

5) और जब वह लाहौर पहुंचा, तो अजैनीन और कुछ अन्य ब्राह्मण पुजारियों ने उसे प्रसन्नतापूर्वक प्राप्त किया।

6) अजैनिन वह पुजारी था जो कई महीने पहले बनारस में रात में यीशु के पास आया था, और उसके सत्य के वचनों को सुना था।

7) और जीसस अजैनिन के अतिथि थे; उन्होंने अजैनिन को बहुत सी बातें सिखाईं; उसे उपचार कला के रहस्यों का पता चला।

8) उसने उसे सिखाया कि वह हवा, आग, पानी और पृथ्वी की आत्माओं को कैसे नियंत्रित कर सकता है; और उस ने उस को क्षमा की गुप्त शिक्षा, और पापोंके नाश करने की बात समझाई।

9) एक दिन अजैनिन यीशु के साथ मन्दिर के बरामदे में बैठे थे; आवारा गायकों और संगीतकारों का एक दल गायन और वादन के लिए दरबार के सामने रुका।

10) उनका संगीत सबसे समृद्ध और नाजुक था, और यीशु ने कहा, देश के उच्च जाति के लोगों के बीच हम कोई मीठा संगीत नहीं सुनते हैं जो जंगल के ये मुंहफट बच्चे हमारे पास लाते हैं।

11) यह प्रतिभा और यह शक्ति कहाँ से? एक छोटे से जीवन में वे निश्चित रूप से वाणी की ऐसी कृपा, सद्भाव और स्वर के नियमों का ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं कर सके।

12) पुरुष उन्हें कौतुक कहते हैं। कोई महापुरुष नहीं हैं। सभी चीजें प्राकृतिक नियम से उत्पन्न होती हैं।

13) ये लोग युवा नहीं हैं। एक हजार साल उन्हें इतनी दिव्य अभिव्यक्ति, और आवाज और स्पर्श की इतनी पवित्रता देने के लिए पर्याप्त नहीं होंगे।

14) दस हजार साल पहले इन लोगों ने सद्भाव में महारत हासिल की थी। पुराने दिनों में वे जीवन के व्यस्त रास्तों पर चलते थे, और पक्षियों की धुन को पकड़ते थे, और उत्तम रूप की वीणा बजाते थे।

15) और वे फिर से मैनिफेस्ट के विभिन्न नोटों से अन्य सबक सीखने आए हैं।

16) ये भटकते हुए लोग स्वर्ग के ऑर्केस्ट्रा का एक हिस्सा हैं, और सिद्ध चीजों की भूमि में स्वर्गदूत उन्हें खेलते और गाते हुए सुनकर प्रसन्न होंगे।

17) और यीशु ने लाहौर के आम लोगों को सिखाया; उसने उनके बीमारों को चंगा किया और उन्हें सहायता के द्वारा बेहतर चीजों के लिए उठने का मार्ग दिखाया।

18) उस ने कहा, जो कुछ हम पाते और रखते हैं, उसमें हम धनी नहीं होते; हम केवल वही रखते हैं जो हम देते हैं।

19) यदि आप सिद्ध जीवन जीना चाहते हैं, तो अपना जीवन अपनी तरह की सेवा में, और जीवन के उन रूपों के लिए दें जिन्हें लोग जीवन के निम्न रूपों का सम्मान करते हैं।

20) लेकिन यीशु लाहौर में अधिक समय तक नहीं रुक सके; उसने याजकों और अन्य मित्रों को विदा किया; तब वह अपना ऊंट लेकर सिंध की ओर चला।

भाग 1/धारा VIII

नासरत का यीशु

(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड VIII

CHET

फारस में यीशु का जीवन और कार्य

(अध्याय 38 - 41)

अध्याय 38

यीशु ने फारस को पार किया। कई जगहों पर पढ़ाता और चंगा करता है। पर्सेपोलिस के पास तीन जादूगर पुजारी उससे मिलते हैं। कास्पर और दो अन्य फ़ारसी गुरु उनसे पर्सेपोलिस में मिलते हैं। सात गुरु सात दिन मौन में बैठते हैं।

चार-बीस वर्ष की आयु में यीशु था जब वह अपने गृहमार्ग पर फारस में प्रवेश किया।

2) कई गांवों, कस्बों और मोहल्लों में वह कुछ देर रुका और पढ़ाया और चंगा किया।

3) याजकों और शासक वर्गों ने उसका स्वागत नहीं किया, क्योंकि उसने उन्हें नीच संपत्ति के लोगों के प्रति क्रूरता के लिए निंदा की थी।

4) आम लोग उसके पीछे बड़ी संख्या में आते थे।

5) कभी-कभी प्रमुखों ने उसे रोकने की कोशिश करने का साहस किया, उसे बीमारों को सिखाने या चंगा करने से मना किया। लेकिन उसने उनकी गुस्से वाली धमकियों पर ध्यान नहीं दिया; उसने बीमारों को पढ़ाया और चंगा किया।

6) कुछ समय बाद वह पर्सेपोलिस पहुँचा, वह नगर जहाँ फारस के राजाओं की कब्र थी; ज्ञानियों का नगर, होर, और लून, और मेर, तीन ज्ञानी पुरूष।

7) जिसने, चौबीस साल पहले, वादे के तारे को यरूशलेम से ऊपर उठते देखा था, और जिसने नवजात राजा को खोजने के लिए पश्चिम की यात्रा की थी;

8) और यीशु को युग के स्वामी के रूप में सम्मानित करने वाले पहले व्यक्ति थे, और उन्हें सोना, गोंद-इस प्रकार और गन्धरस का उपहार दिया।

9) ये जादूगर उस तरीके से जानते थे, जिस तरह से स्वामी हमेशा जानते हैं, जब यीशु पर्सेपोलिस के निकट था; तब वे कमर बान्धकर मार्ग में उस से भेंट करने को गए।

10) और जब वे मिले, तो दिन के उजाले से कहीं अधिक तेज एक प्रकाश ने उन्हें घेर लिया, और जिन लोगों ने चारों को रास्ते में खड़ा देखा, उन्होंने घोषित किया कि वे बदल गए थे; पुरुषों की तुलना में अधिक देवताओं की तरह लग रहा है।

11) अब, होर और लून वृद्ध पुरुष थे, और यीशु ने उन्हें पर्सेपोलिस में सवारी करने के लिए अपने जानवर पर रखा; जबकि वह और मेर रास्ते में नेतृत्व कर रहे थे।

12) और जब वे जादूगर के घर पहुंचे तो वे सब आनन्दित हुए। और यीशु ने अपने जीवन की रोमांचक कहानी सुनाई, और होर और लून और मेर ने बात नहीं की; उन्होंने केवल स्वर्ग की ओर देखा, और अपने मन में परमेश्वर की स्तुति की।

13) उत्तर से तीन बुद्धिमान व्यक्ति पर्सेपोलिस में थे; और वे थे कास्पर, ज़ारा और मेलज़ोन; और कास्पर मगियन भूमि का सबसे बुद्धिमान स्वामी था। जब यीशु आया तो ये तीनों होर और लून और मेर के घर में थे।

14) वे सात दिन तक सात दिन तक न बोले; वे साइलेंट ब्रदरहुड के साथ निकट संवाद में काउंसिल हॉल में मौन बैठे थे।

15) उन्होंने प्रकाश, रहस्योद्घाटन और शक्ति की तलाश की। आने वाले युग के नियमों और उपदेशों को दुनिया के स्वामी के सभी ज्ञान की आवश्यकता थी।

<u>अध्याय 39</u>

यीशु पर्सेपोलिस में एक भोज में शामिल होता है। जादूगर दर्शन की समीक्षा करते हुए लोगों से बात करता है। बुराई की उत्पत्ति की व्याख्या करता है। प्रार्थना में रात बिताता है।

जादूगर भगवान के सम्मान में एक पर्व आयोजित किया जा रहा था, और बहुत से लोग पर्सेपोलिस में एकत्र हुए थे।

2) और पर्व के बड़े दिन पर शासक जादूगर ने कहा, इन पवित्र दीवारों के भीतर स्वतंत्रता है; जो बोलना चाहे बोल सकता है।

3) यीशु ने सब लोगों के बीच में खड़े होकर कहा, हे मेरे भाइयों, बहनों, हमारे पिता परमेश्वर की सन्तान:

4) आज तुम मनुष्यों के सन्तानों में सबसे धन्य हो, क्योंकि तुम्हारे पास पवित्र और मनुष्य के बारे में ऐसी ही न्यायपूर्ण धारणाएँ हैं।

5) पूजा और जीवन में आपकी पवित्रता ईश्वर को भाती है; और तुम्हारे गुरु जरथुस्त्र की स्तुति होनी है।

6) तुम सब से कहना, एक ही परमेश्वर है, जिसके बड़े होने से वे सात आत्माएँ निकलीं, जिन्होंने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की; और ये महान आत्माएं सूर्य, और चान्द, और तारे में मनुष्यों पर प्रगट होती हैं।

7) परन्तु आपकी पवित्र पुस्तकों में हमने पढ़ा है कि इन सात में से दो श्रेष्ठ शक्ति वाले हैं; कि इनमें से एक ने सब अच्छा बनाया; दूसरे ने वह सब बनाया जो बुराई है।

8) मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, सम्मानित स्वामी, मुझे बताएं कि वह बुराई कैसे पैदा हो सकती है जो सब अच्छा है?

9) एक जादूगर ने उठकर कहा, यदि तुम मुझे उत्तर दोगे तो तुम्हारी समस्या का समाधान हो जाएगा।

10) हम सभी इस तथ्य को पहचानते हैं कि बुराई है। जो कुछ भी है, एक कारण होना चाहिए, अगर भगवान ने इस बुराई को नहीं बनाया है, तो भगवान कहां है जिसने किया?

11) और यीशु ने कहा, परमेश्वर ने जो कुछ बनाया है वह अच्छा है, और महान पहले कारण की तरह, सात आत्माएं सभी अच्छी हैं, और जो कुछ उनके रचनात्मक हाथों से आता है वह अच्छा है।

12) अब, सभी सृजित वस्तुओं के अपने रंग, स्वर और रूप होते हैं; लेकिन कुछ स्वर, हालांकि स्वयं अच्छे और शुद्ध होते हैं, मिश्रित होने पर, असंगति, असंगत स्वर उत्पन्न करते हैं।

13) और कुछ वस्तुएँ भले और शुद्ध होते हुए भी मिश्रित होने पर अप्रिय वस्तुएँ उत्पन्न करती हैं, हाँ, ज़हरीली चीज़ें, जिन्हें मनुष्य बुरी बातें कहते हैं।

14) तो बुराई रंग, स्वर, या अच्छाई के रूपों का असंगत सम्मिश्रण है।

15) अब, मनुष्य बुद्धिमान नहीं है, और फिर भी उसकी अपनी इच्छा है। उसके पास सामर्थ है, और वह इसका उपयोग करता है, परमेश्वर की अच्छी बातों को कई तरीकों से मिलाने के लिए, और वह हर दिन अप्रिय और बुरी बातें करता है।

16) और हर स्वर और रूप, चाहे वह अच्छा हो या बीमार, एक जीवित प्राणी, एक दानव, प्रेत, या एक अच्छे या दुष्ट प्रकार की आत्मा बन जाता है।

17) मनुष्य अपनी बुराई इस प्रकार करता है; तब उस से डरकर भाग जाता है; उसका शैतान हिम्मत बँधाता है, उसका पीछा करता है और उसे यातना देनेवाली आग में डाल देता है।

18) शैतान और धधकती आग दोनों ही मनुष्य के काम हैं, और कोई उस आग को बुझाकर भस्म नहीं कर सकता, केवल मनुष्य जिसने उन दोनों को बनाया है।

19) तब यीशु एक तरफ खड़ा हो गया, और किसी जादूगर ने उसे उत्तर नहीं दिया।

20) और वह भीड़ से विदा हो गया, और प्रार्थना करने के लिए एक गुप्त स्थान में चला गया।

<u>अध्याय 40</u>

यीशु जादूगरों को सिखाता है। मौन की व्याख्या करता है और इसे कैसे दर्ज करें। कास्पर ने यीशु की बुद्धि का गुणगान किया। यीशु कुस्रू के उपवनों में शिक्षा देते हैं।

अब, भोर को यीशु फिर से सिखाने और चंगा करने के लिए आया। एक प्रकाश जो समझ में नहीं आया, उसके बारे में दिखाया गया, जैसे कि किसी शक्तिशाली आत्मा ने उसे देख लिया हो।

2) एक जादूगर ने इस पर ध्यान दिया और उससे अकेले में यह बताने को कहा कि उसकी बुद्धि कहाँ से आई और प्रकाश का क्या अर्थ है।

3) और यीशु ने कहा, वहाँ एक सन्नाटा है जहाँ आत्मा अपने ईश्वर से मिल सकती है, और वहाँ ज्ञान का स्रोत है, और जो प्रवेश करते हैं वे सभी प्रकाश में डूबे हुए हैं, और ज्ञान, प्रेम और शक्ति से भरे हुए हैं।

4) जादूगर ने कहा, मुझे इस मौन और इस प्रकाश के बारे में बताओ, कि मैं जा सकता हूं और वहां रह सकता हूं।

5) और यीशु ने कहा, मौन की सीमा नहीं है; वह स्थान न तो दीवार से बंधा है, और न चट्टानी सीढ़ियां, और न मनुष्य की तलवार से पहरा है।

6) पुरुष हर समय अपने साथ एक गुप्त स्थान रखते हैं जहाँ वे अपने ईश्वर से मिल सकते हैं।

7) यह मायने नहीं रखता कि पुरुष कहाँ रहते हैं, पहाड़ की चोटी पर, सबसे गहरी घाटी में, व्यापार के बाजारों में, या शांत घर में; वे एक ही बार में, किसी भी समय, द्वार खोलकर भाग सकते हैं, और मौन पा सकते हैं, परमेश्वर के घर को पा सकते हैं; यह आत्मा के भीतर है।

8) कोई व्यक्ति व्यापार के शोर से, और पुरुषों के शब्दों और विचारों से इतना परेशान नहीं हो सकता है यदि वह अकेले घाटी या पहाड़ी दर्रे में जाता है।

9) और जब जीवन का भारी बोझ जोर से दबा रहा हो, तो बेहतर है कि बाहर जाकर प्रार्थना करने और ध्यान करने के लिए एक शांत जगह की तलाश करें।

10) मौन आत्मा का राज्य है, जो मानव आंखों से नहीं देखा जाता है।

11) जब मौन में, प्रेत मन के सामने मैट फ्लिट बनाता है; परन्तु वे सब इच्छा के अधीन हैं; मास्टर आत्मा बोल सकती है और वे चले गए हैं।

12) यदि आपको आत्मा की यह नीरवता मिल जाए तो आपको स्वयं मार्ग तैयार करना होगा। शुद्ध हृदय के सिवा कोई यहां प्रवेश नहीं कर सकता।

13) और तुम्हें मन की सारी टेंशन, सारे काम-काज की परवाह, सारे डर, सारे संशय और परेशान करनेवाले ख्यालों को अलग रखना होगा।

14) आपकी मानव इच्छा को परमात्मा द्वारा अवशोषित किया जाना चाहिए; तब तुम पवित्रता की चेतना में आ जाओगे।

15) तुम पवित्र स्थान में हो, और तुम जीवित मन्दिर में यहोवा के जलते हुए दीपक को देखोगे।

16) और जब तुम उसे वहाँ जलते हुए देखो, तो अपने मस्तिष्क के मंदिर में गहराई से देखो, और तुम उसे सब चमकते हुए देखोगे।

17) सिर से लेकर पांव तक हर हिस्से में मोमबत्तियां हैं, बस प्यार की जलती मशाल से जलने का इंतजार है।

18) और जब तुम मोमबत्तियों को जलते हुए देखो, तो देखो, और तुम आत्मा की आंखों से देखोगे, कि बुद्धि के झरने का पानी बहता है; और तुम पी सकते हो, और वहीं रहना।

19) और फिर पर्दे अलग हो जाते हैं, और तुम सबसे पवित्र में हो, जहां परमेश्वर का सन्दूक रहता है, जिसका आवरण दया आसन है।

20) पवित्र बोर्ड को न उठाने से डरो; व्यवस्था के पटल छिपे हुए सन्दूक में हैं।

21) उन्हें ले कर अच्छी तरह पढ़ लेना; क्योंकि उनमें वे सब उपदेश और आज्ञाएं हैं जिनकी मनुष्य को कभी आवश्यकता होगी।

22) और सन्दूक में भविष्यद्वाणी की जादू की छड़ी तेरे हाथ की बाट जोह रही है; यह वर्तमान, भविष्य, अतीत के सभी छिपे हुए अर्थों की कुंजी है।

23) और फिर, वहाँ मन्ना, जीवन की छिपी हुई रोटी देखो; और जो खाता है वह कभी न मरेगा।

24) करूबों ने इस खजाने की पेटी को हर एक जीव के लिए सुरक्षित रखा है, और जो कोई उसमें प्रवेश करके अपने को पा सकता है।

25) कास्पर ने इब्रानी स्वामी को बोलते हुए सुना, और वह कहने लगा, देख, देवताओं की बुद्धि मनुष्यों में आ गई है!

26) और यीशु अपना मार्ग चला, और कुस्रू के पवित्र अखाड़ों में, जहां भीड़ मिलती थी, उस ने उपदेश दिया और बीमारों को चंगा किया।

<u>अध्याय 41</u>

यीशु चंगाई के फव्वारे के पास खड़ा है। इस तथ्य को प्रकट करता है कि विश्वास चंगाई में शक्तिशाली कारक है, और बहुत से लोग विश्वास से चंगे होते हैं। एक छोटा बच्चा विश्वास का बहुत बड़ा पाठ पढ़ाता है।

एक बहता हुआ झरना जिसे लोग हीलिंग फाउंटेन कहते हैं, पर्सेपोलिस के पास था।

2) और सभी लोगों ने सोचा कि वर्ष के एक निश्चित समय में उनके देवता नीचे आएंगे और उन्होंने फव्वारे के पानी को एक गुण दिया है, और जो बीमार तब फव्वारे में डुबकी लगाएंगे और धोएंगे, वह चंगा हो जाएगा।

3) फव्वारे के पास बहुत से लोग उस पवित्र के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो उस सोते के जल को प्रबल करे।

4) अंधे, लंगड़े, बहरे, गूंगे और जुनूनी वहाँ थे।

5) यीशु ने उनके बीच में खड़े होकर कहा, जीवन के झरने को देखो! ये जल जो विफल हो जाएंगे, उन्हें आपके परमेश्वर के विशेष आशीर्वाद के रूप में सम्मानित किया जाता है।

6) उपचार के गुण कहाँ से आते हैं? तेरा परमेश्वर अपने उपहारों के प्रति इतना पक्षपाती क्यों है? वह आज इस वसंत को आशीर्वाद क्यों देता है, और फिर कल उसका आशीर्वाद ले लेता है?

7) शक्ति का देवता प्रतिदिन इन जल को उपचार गुणों से भर सकता है।

8) हे रोगी, मेरी बात सुनो: इस झरने का गुण ईश्वर का विशेष उपहार नहीं है।

9) विश्वास इस झरने के सभी जल की हर बूंद की उपचार शक्ति है।

10) जो कोई पूरे मन से विश्वास करता है कि वह इस सोते में धोने से चंगा हो जाएगा, वह धोकर चंगा हो जाएगा; और वह कभी भी धो सकता है।

11) जो कोई ईश्वर पर और अपने आप में यह विश्वास रखता है, वह अब इन जल में डुबकी लगाए और धोए।

12) और बहुत से लोग क्रिस्टल के फव्वारे में कूद पड़े; और वे चंगे हो गए।

13) और फिर एक भीड़ थी, क्योंकि सभी लोग विश्वास से प्रेरित थे, और हर एक ने सबसे पहले धोने का प्रयास किया, ऐसा न हो कि सभी पुण्य अवशोषित हो जाएं।

14) और यीशु ने एक छोटे बच्चे को देखा, कमजोर, बेहोश और असहाय, बढ़ती भीड़ से परे अकेला बैठा; और उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं था।

15) यीशु ने कहा, हे मेरे बालक, तू क्यों बैठकर प्रतीक्षा करता है? क्यों न उठकर कुंड की ओर फुर्ती से धोकर चंगा हो जाए?

16) बालक ने उत्तर दिया, मुझे शीघ्रता करने की आवश्यकता नहीं है; मेरे पिता की आशीष आकाश में मापी जाती है, छोटे प्यालों में नहीं; वे कभी असफल नहीं होते; उनके गुण सदा के लिए समान हैं।

17) जिन लोगों का विश्वास कमजोर है और उन्हें डर के मारे स्नान करने की जल्दबाजी करनी होगी, उनका विश्वास विफल हो जाएगा, वे सब ठीक हो गए हैं, ये जल मेरे लिए उतना ही शक्तिशाली होगा।

18) तब मैं जा सकता हूं और एक लंबे, लंबे समय तक वसंत के धन्य जल के भीतर रह सकता हूं।

19) और यीशु ने कहा, देखो एक स्वामी आत्मा! वह मनुष्यों को विश्वास की शक्ति सिखाने के लिए पृथ्वी पर आई थी।

20) तब उस ने बालक को उठाकर कहा, किसी बात का इन्तजार क्योंकर? हम जिस हवा में सांस लेते हैं, वह जीवन के बाम से भरी होती है। विश्वास में जीवन के इस बाम में सांस लें और संपूर्ण बनें।

21) उस बालक ने विश्वास के साथ जीवन की बाम सांस ली, और वह स्वस्थ हो गई।

22) लोगों ने जो कुछ सुना और देखा, उससे बहुत चकित हुए; उन्होंने कहा, यह मनुष्य निश्चय ही मांस गढ़े हुए स्वास्थ्य का देवता होगा।

23) यीशु ने कहा, जीवन का सोता कोई छोटा कुण्ड नहीं है; यह उतना ही चौड़ा है जितना कि आकाश के स्थान।

24) सोते का जल प्रेम है; शक्ति विश्वास है, और वह जो जीवित सोतों में गहरे डुबकी लगाता है, जीवित विश्वास में, वह अपने अपराध को धो सकता है और चंगा हो सकता है, और पाप से मुक्त हो सकता है।

भाग 1/धारा IX

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड IX
TETH

असीरिया में यीशु का जीवन और कार्य
(अध्याय 42 - 43)

अध्याय 42

यीशु ने जादूगरों को विदाई दी। असीरिया जाता है। कसदिया के ऊर में लोगों को शिक्षा देता है। अशबीना से मिलता है, जिसके साथ वह कई कस्बों और शहरों का दौरा करता है, बीमारों को पढ़ाता और चंगा करता है।

फारस में यीशु का काम हो गया और उसने अपनी जन्मभूमि की ओर अपनी यात्रा फिर से शुरू कर दी।

2) फारस का ऋषि उसके साथ परात को गया; तब इस बात की प्रतिज्ञा करके कि वे मिस्र देश में फिर मिलेंगे, स्वामी ने कहा, विदा।

3) और कास्पर कैस्पियन सागर के किनारे अपके घर को चला गया; और यीशु शीघ्र ही कसदिया में था, जो इस्राएल का पालना देश था।

4) ऊर में, जहां इब्राहीम पैदा हुआ था, वह कुछ समय के लिए रुका था; और जब उस ने लोगोंको बताया, कि वह कौन है, और क्योंआया है, तो वे दूर दूर से उस से बातें करने को आए।

5) उस ने उन से कहा, हम सब कुटुम्बी हैं। दो हजार साल और उससे अधिक पहले, हमारे पिता अब्राहम यहां ऊर में रहते थे, और फिर उन्होंने एक ईश्वर की पूजा की, और लोगों को इन पवित्र उपवनों में पढ़ाया।

6) और वह बहुत धन्य हुआ; इस्राएल के शक्तिशाली सेनाओं का पिता बनना।

7) हालाँकि इब्राहीम और सारा को इन मार्गों पर चलते हुए इतने साल बीत चुके हैं, फिर भी उनके रिश्तेदारों का एक अवशेष ऊर में रहता है।

8) और वहां अब भी इब्राहीम के परमेश्वर की पूजा की जाती है, और विश्वास और न्याय वे चट्टानें हैं जिन पर वे निर्माण करते हैं।

9) इस भूमि को निहारना! अब वह फलदायी देश नहीं रहा, जिससे इब्राहीम इतना प्रेम रखता था; बारिश पहले की तरह नहीं आती; दाखलता अब फलती नहीं, और अंजीर सूख गए हैं।

10) लेकिन यह हमेशा के लिए नहीं रहेगा; वह समय आएगा जब तेरे सब जंगल आनन्द करेंगे; जब फूल खिलेंगे; जब तेरी सब दाखलताओं के सिर सुहावने फल से फूलेंगे; तेरे चरवाहे फिर आनन्दित होंगे।

11) और यीशु ने उन्हें सद्भावना, और पृथ्वी पर शांति का सुसमाचार सुनाया। उसने उन्हें जीवन के भाईचारे, और मनुष्य की जन्मजात शक्तियों, और आत्मा के राज्य के बारे में बताया।

12) जब वह बोल रहा था, तो अश्शूर का महान् मुनि अश्बीना उसके सम्मुख खड़ा हुआ।

13) लोग ऋषि को जानते थे, क्योंकि वह उन्हें अक्सर उनके पवित्र हॉल और उपवनों में पढ़ाते थे, और वे उसका चेहरा देखकर आनन्दित होते थे।

14) अशबीना ने कहा, मेरे कसदियोंके सन्तान, सुन! देख, आज तू बहुत धन्य है, क्योंकि जीवते परमेश्वर का एक भविष्यद्वक्ता तेरे पास आया है।

15) यह स्वामी जो कुछ कहता है, उस पर ध्यान दे, क्योंकि जो वचन परमेश्वर ने उसे दिए हैं, वह वही बताता है।

16) और यीशु और ऋषि कसदिया के नगरोंऔर नगरोंऔर दजला और परात नदी के बीच के देशोंमें से होकर गए;

17) और यीशु ने बीमारों की भीड़ को चंगा किया।

अध्याय 43

यीशु और अशबीना बाबुल जाते हैं और उसके उजाड़ होने की बात कहते हैं। दोनों स्वामी सात दिनों तक संग में रहते हैं; फिर यीशु ने अपनी स्वदेश यात्रा फिर से शुरू की। नासरत पहुंचे। उसकी माँ उसके सम्मान में दावत देती है। उनके भाई नाराज हैं। यीशु अपनी माँ और चाची को अपनी यात्रा की कहानी सुनाते हैं।

तबाह हुआ बाबुल निकट था, और यीशु और ऋषि उसके फाटकों से होकर उसके गिरे हुए महलों के बीच चले।

2) वे उन सड़कों पर रौंदते थे जहाँ कभी इस्राएल को बेस बन्धुवाई में रखा गया था।

3) उन्होंने देखा कि यहूदा के पुत्रों और पुत्रियों ने विलो पर वीणा फूंकी, और गाने से इन्कार कर दिया।

4) उन्होंने देखा कि दानिय्येल और इब्री बच्चे विश्वास के जीवित गवाह के रूप में कहाँ खड़े हैं।

5) यीशु ने हाथ उठाकर कहा, मनुष्य के कामों की महिमा देख!

6) बाबुल के राजा ने पुराने यरूशलेम में यहोवा के भवन को नाश किया; उस ने पवित्र नगर को फूंक दिया, और मेरी प्रजा और मेरे कुटुम्बियोंको जंजीरोंमें बन्धा हुआ, और दासोंके लिथे यहां ले आया।

7) लेकिन प्रतिशोध आता है; क्योंकि जो कुछ मनुष्य दूसरे मनुष्यों से करेंगे, वही धर्मी न्यायी उन से करेगा।

8) बाबुल का सूर्य अस्त हो गया है; उसकी दीवारों के भीतर फिर आनंद के गीत नहीं सुने जाएंगे।

9) और सब प्रकार के रेंगनेवाले जन्तु और अशुद्ध पक्षी इन खण्डहरोंमें अपना घर पाएंगे।

10) और मंदिर में बेलुस, यीशु और अशबीना मौन विचार में खड़े थे।

11) तब यीशु ने कहा, यह मूढ़ता और लज्जा का स्मारक देखो।

12) मनुष्य ने परमेश्वर के सिंहासन को हिलाने की कोशिश की, और उसने स्वर्ग तक पहुंचने के लिए एक मीनार बनाने की कोशिश की, जब, देखो, उसका भाषण ही छीन लिया गया था, क्योंकि उसने ऊंचे शब्दों में अपनी शक्ति का दावा किया था।

13) और इन ऊँचाइयों पर विधर्मी बाल खड़ा था - मनुष्य के हाथों से गढ़ा गया देवता।

14) वेदी पर, क्या पक्षी, क्या पशु, क्या मनुष्य, बाल के लिथे भयानक बलि करके बालकोंको जला दिया गया है।

15) परन्तु अब गोरी याजक मर चुके हैं; चट्टानें कांपकर गिर पड़ी हैं; जगह सुनसान है।

16) अब, शिनार के मैदानों में, यीशु सात दिनों के लिए अभी तक रुके हुए थे, और अशबीना के साथ, लोगों की जरूरतों पर लंबे समय तक ध्यान दिया, और कैसे ऋषि आने वाले युग की सबसे अच्छी सेवा कर सकते हैं।

17) तब यीशु अपना मार्ग चला, और बहुत दिनों के बाद यरदन को पार करके अपने देश को चला गया। उसने फौरन नासरत में अपना घर ढूंढ़ लिया।

18) उसकी माता का हृदय आनन्द से भर गया; उसने उसके लिये भोज किया, और अपने सब कुटुम्बियों और मित्रों को न्यौता दिया।

19) लेकिन यीशु के भाई इस बात से खुश नहीं थे कि किसी ऐसे व्यक्ति पर ध्यान दिया जाए जिसे वे एक साहसी साहसी समझते थे, और वे दावत में नहीं गए।

20) वे अपने भाई के तिरस्कार के दावों पर हँसे; उन्होंने उसे अकर्मण्य, महत्वाकांक्षी, व्यर्थ कहा; एक बेकार भाग्य शिकारी; प्रसिद्धि के लिए दुनिया के खोजकर्ता, जो कई वर्षों के बाद न तो सोना और न ही कोई अन्य धन लेकर माता के घर लौटते हैं।

21) और यीशु ने अपनी माता और उसकी बहन, मरियम को अलग बुलाया, और उन्हें पूर्व की ओर अपनी यात्रा के बारे में बताया।

22) उसने उन्हें जो सबक सीखा था, और जो काम उसने किए थे, उसके बारे में बताया। दूसरों को उसने अपने जीवन की कहानी नहीं बताई।

भाग 1/अनुभाग X

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड X
JOD

ग्रीस में यीशु का जीवन और कार्य
(अध्याय 44 - 46)

अध्याय 44

यीशु यूनान का दौरा करते हैं और एथेनियाई लोगों द्वारा उनका स्वागत किया जाता है। अपोलो से मिलता है। एम्फीथिएटर में ग्रीसियन मास्टर्स को संबोधित करते हैं। पता।

यूनानी तत्वज्ञान तीखे सत्य से भरा हुआ था, और यीशु यूनान के विद्यालयों में आचार्यों के साथ अध्ययन करने के लिए तरसता था।

2) तब वह नासरत में अपने घर को छोड़कर कर्मेल पहाड़ियों को पार कर गया, और बंदरगाह पर जहाज ले गया, और जल्द ही ग्रीस की राजधानी में था।

3) अब, एथेनियाई लोगों ने उसके बारे में एक शिक्षक और दार्शनिक के रूप में सुना था, और वे उसके पास आकर प्रसन्न हुए ताकि वे उसके सत्य के वचन सुन सकें।

4) यूनानियों के गुरुओं में से एक था, अपोलो, जिसे ओरेकल का रक्षक कहा जाता था, और कई देशों में ग्रीसियन ऋषि के रूप में पहचाना जाता था।

5) अपोलो ने यीशु के लिए ग्रीसियन विद्या के सभी दरवाजे खोल दिए, और अरियुपगस में उसने सबसे बुद्धिमान स्वामी को बोलते सुना।

6) परन्तु यीशु ने उनके पास एक ऐसी बुद्धि दी, जो उनसे कहीं बड़ी थी; और इसलिए उन्होंने पढ़ाया।

7) एक बार वह एम्फीथिएटर में खड़ा हुआ, और जब अपोलो ने उसे बोलने के लिए कहा, तो उसने कहा,

8) एथेनियन मास्टर्स, सुनो! सदियों पहले, प्रकृति के नियमों में बुद्धिमान लोगों ने तलाश की और उस स्थान को खोज लिया जिस पर आपका शहर खड़ा है।

9) आप अच्छी तरह से जानते हैं कि पृथ्वी के कुछ हिस्से ऐसे हैं जहां इसका बड़ा धड़कता हुआ दिल ऊपर से आकाशीय तरंगों को फेंकता है जो ऊपर से ईथर से मिलती हैं:

10) जहां आत्मा-प्रकाश और समझ रात के तारों की तरह चमकती है।

11) पृथ्वी के सभी हिस्सों में एथेंस की तुलना में अधिक संवेदनशील, अधिक सही मायने में आध्यात्मिक कोई जगह नहीं है।

12) हाँ, सारा ग्रीस ब्लेस्ट है। आपकी प्रसिद्धि के स्क्रॉल की कृपा के रूप में विचार के ऐसे शक्तिशाली पुरुषों की मातृभूमि कोई अन्य भूमि नहीं रही है।

13) दर्शनशास्त्र, कविता, विज्ञान और कला के कई मजबूत दिग्गज ग्रीस की धरती पर पैदा हुए थे, और आपके शुद्ध विचार के पालने में मर्दानगी के लिए हिल गए थे।

14) मैं यहाँ विज्ञान, दर्शन या कला की बात करने नहीं आया हूँ; इनमें से अब आप दुनिया के सबसे अच्छे उस्ताद हैं।

15) लेकिन आपकी सभी उच्च उपलब्धियाँ ज्ञान के दायरे से परे दुनिया की ओर कदम बढ़ा रही हैं; समय की दीवारों पर बह रही मायावी छायाएं हैं।

16) लेकिन मैं तुम्हें एक जीवन से परे, भीतर के बारे में बताऊंगा; एक वास्तविक जीवन जो गुजर नहीं सकता।

17) विज्ञान और दर्शन में इतनी शक्तिशाली शक्ति नहीं है कि आत्मा स्वयं को पहचान सके, या ईश्वर के साथ संवाद कर सके।

18) मैं तुम्हारे विचार की महान धाराओं के प्रवाह को नहीं रोकूंगा; लेकिन मैं उन्हें आत्मा के चैनलों में बदल दूंगा।

19) आत्मा-श्वास की सहायता के बिना, बुद्धि का कार्य उन चीज़ों की समस्याओं को हल करने की ओर प्रवृत्त होता है जिन्हें हम देखते हैं, और इससे अधिक कुछ नहीं।

20) इन्द्रियों को मन में बस जाने वाली चीजों की तस्वीरें लाने के लिए नियुक्त किया गया था; वे वास्तविक चीजों के साथ व्यवहार नहीं करते हैं; वे शाश्वत कानून को नहीं समझते हैं।

21) लेकिन मनुष्य के मन में कुछ है, कुछ ऐसा जो परदे को फाड़ देगा कि वह वास्तविक चीजों की दुनिया को देख सके।

22) हम इसे कुछ कहते हैं, आत्मिक चेतना; यह हर आत्मा में सोता है, और तब तक नहीं जगाया जा सकता जब तक कि पवित्र श्वास एक स्वागत योग्य अतिथि न बन जाए।

23) यह पवित्र श्वास प्रत्येक आत्मा के द्वार पर दस्तक देती है, लेकिन तब तक प्रवेश नहीं कर सकती जब तक मनुष्य की इच्छा द्वार को चौड़ा नहीं कर देती।

24) बुद्धि में चाबी घुमाने की शक्ति नहीं है; परदे के पीछे की एक झलक पाने के लिए दर्शन और विज्ञान दोनों ने कड़ी मेहनत की है; लेकिन वे विफल रहे हैं।

25) आत्मा के द्वार को खोलने वाला गुप्त वसंत जीवन में पवित्रता, प्रार्थना और पवित्र विचार के अलावा और कुछ नहीं छूता है।

26) लौट आओ, ग्रीक विचार की रहस्यवादी धारा, और अपने निर्मल जल को आत्मा-जीवन की बाढ़ के साथ मिला दो; और तब आत्मिक चेतना फिर नहीं सोएगी, और मनुष्य जानेगा, और परमेश्वर आशीष देगा।

27) जब यीशु ने ऐसा कहा तो वह एक तरफ हट गया। यूनानी स्वामी उसके शब्दों की बुद्धिमत्ता से चकित थे; उन्होंने उत्तर नहीं दिया।

अध्याय 45

यीशु यूनानी आचार्यों को शिक्षा देते हैं। अपोलो के साथ डेल्फी जाता है और ओरेकल की बात सुनता है। यह उसके लिए गवाही देता है। वह अपोलो के साथ रहता है और उसे ईश्वर के जीवित ओरेकल के रूप में पहचाना जाता है। अपोलो को अलौकिक भाषण की घटना के बारे में बताते हैं।

कई दिनों तक ग्रीस के आचार्यों ने यीशु द्वारा बोले गए स्पष्ट तीक्ष्ण शब्दों को सुना, और जब वे उसकी कही गई बातों को पूरी तरह से समझ नहीं पाए, तो वे प्रसन्न हुए और उसके दर्शन को स्वीकार कर लिया।

2) एक दिन जब यीशु और अपोलो समुद्र के किनारे चल रहे थे, एक डेल्फ़िक कूरियर जल्दबाजी में आया और कहा, अपोलो, मास्टर, आओ; Oracle आपसे बात करेगा।

3) अपोलो ने जीसस से कहा, श्रीमान, यदि आप डेल्फ़िक ऑरेकल को देखेंगे, और इसे बोलते हुए सुनेंगे, तो आप मेरे साथ जा सकते हैं। और यीशु उसके साथ गया।

4) स्वामी जल्दबाजी में चले गए; और जब वे डेल्फी आए, तो बड़ा उत्साह राज्य करने लगा।

5) और जब अपोलो ओरेकल के सामने खड़ा हुआ तो उसने बात की और कहा:

6) अपोलो, ग्रीस के ऋषि, घंटी बजती है बारह; युगों की आधी रात अब आ गई है।

7) प्रकृति के गर्भ में युगों की कल्पना की जाती है; वे गर्भ धारण करते हैं और उगते सूरज के साथ महिमा में पैदा होते हैं, और जब उग्र सूर्य अस्त हो जाता है तो युग बिखर जाता है और मर जाता है।

8) डेल्फ़िक युग गौरव और यश का युग रहा है; देवताओं ने मनुष्य के पुत्रों से लकड़ी, और सोने, और कीमती पत्थर के तांडव के माध्यम से बात की है।

9) डेल्फ़िक सूरज अस्त हो गया है; Oracle गिरावट में जाएगा; वह समय निकट है जब लोग उसकी आवाज नहीं सुनेंगे।

10) देवता मनुष्य द्वारा मनुष्य से बातें करेंगे। जीवित ओरेकल अब इन पवित्र उपवनों के भीतर खड़ा है; ऊपर से लोगो आ गया है।

11) अब से मेरी बुद्धि और मेरी शक्ति घटती जाएगी; अब से, इम्मानुएल, उसकी बुद्धि और शक्ति में वृद्धि करेगा।

12) सब स्वामी बने रहें; हे इम्मानुएल, सब प्राणी सुनें और उसका आदर करें।

13) तब दैवज्ञ ने चालीस दिन तक फिर बात नहीं की, और याजक और लोग चकित हुए। वे दूर दूर से जीवित ओरेकल को देवताओं के ज्ञान की बात सुनने के लिए आए थे।

14) और यीशु और ग्रीसी ऋषि लौट आए, और अपोलो के घर में जीवित ओरेकल ने चालीस दिनों तक बात की।

15) एक दिन अपोलो ने यीशु से अकेले बैठे हुए कहा, इस पवित्र डेल्फ़िक ऑरेकल ने यूनान के लिए कई उपयोगी शब्द बोले हैं।

16) प्रार्थना मुझे बताओ कि यह क्या बोलता है। क्या यह एक देवदूत है, मनुष्य है, या जीवित ईश्वर है?

17) यीशु ने कहा, न तो स्वर्गदूत बोलता है, न मनुष्य, और न परमेश्वर। यह ग्रीस के मास्टर माइंड्स की अतुलनीय बुद्धि है, जो मास्टर माइंड में एकजुट है।

18) इस विशाल मन ने आत्मा के पदार्थों को अपने पास ले लिया है, और सोचता है, और सुनता है, और बोलता है।

19) यह एक जीवित आत्मा रहेगी जबकि मास्टर माइंड इसे विचार, ज्ञान और विश्वास और आशा के साथ खिलाते हैं।

20) लेकिन जब यूनान के मास्टर माइंड देश से नष्ट हो जाएंगे, तो यह विशाल मास्टर माइंड नहीं रहेगा, और तब डेल्फ़िक ऑरेकल कोई और बात नहीं करेगा।

अध्याय 46

समुद्र पर एक तूफान। यीशु ने कई डूबते हुए आदमियों को बचाया। एथेनियाई लोग मूर्तियों से प्रार्थना करते हैं। यीशु उनकी मूर्तिपूजा को फटकार लगाते हैं और बताते हैं कि परमेश्वर कैसे मदद करता है। यूनानियों के साथ उनकी आखिरी मुलाकात। मंगल जहाज पर पाल।

यह एक पवित्र दिन था और यीशु एथेंस समुद्र तट पर चले।

2) एक तूफान चल रहा था और जहाजों को समुद्र की गोद में खिलौनों की तरह उछाला जा रहा था।

3) नाविक और मछुआरे पानी वाली कब्रों पर जा रहे थे; किनारे मृतकों के शवों से पट गए थे।

4) और यीशु रुका नहीं, परन्तु एक शक्तिशाली शक्ति के साथ उसने बहुतों को असहाय लोगों को बचाया, प्रतीयमान मृत को जीवित करने के लिए।

5) अब, इन तटों पर समुद्र पर शासन करने वाले देवताओं के लिए पवित्र वेदियां थीं।

6) और पुरुष और स्त्रियाँ, डूबते हुए पुरुषों की पुकार की परवाह किए बिना, इन सभी वेदियों के पास अपने देवताओं को पुकारने के लिए भीड़ लगा रहे थे।

7) अंत में तूफान आ गया, और सारा समुद्र शांत हो गया, और लोग फिर से सोच सकते थे; और यीशु ने कहा,

8) हे लकड़ी के देवताओं के उपासकों, तुम्हारी उन्मत्त प्रार्थनाओं से इस तूफान का प्रकोप कैसे कम हुआ है?

9) चित्रित तलवारों और मुकुटों वाले इन गरीब, मौसम से पीड़ित देवताओं की ताकत कहाँ है?

10) एक देवता जो इतने छोटे से घर में निवास कर सकता है, वह शायद ही एक उन्मत्त मक्खी को पकड़ सकता है, और कौन उम्मीद कर सकता है कि वह हवाओं और लहरों के भगवान को रोक सकता है?

11) अदृश्य संसार की शक्तिशाली शक्तियाँ तब तक अपनी सहायता नहीं देतीं जब तक कि मनुष्य अपना भरसक प्रयास न कर लें; वे तभी मदद करते हैं जब पुरुष और कुछ नहीं कर सकते।

12) और तू ने इन तीर्थोंके चारोंओर तड़प उठकर प्रार्थना की है, और जो मनुष्य तेरी सहायता से उद्धार पाते, वे मृत्यु के लिथे डूबने पाए।

13) उद्धार करने वाला परमेश्वर तुम्हारे प्राणों में वास करता है, और तुम्हारे ही पैरों, और पैरों, और भुजाओं, और हाथों का उपयोग करके प्रकट होता है।

14) आलस्य से शक्ति कभी नहीं आती; न ही किसी दूसरे की प्रतीक्षा के द्वारा कि वह तुम्हारा भार उठाए, या वह काम करो जिसे करने के लिए तुम्हें बुलाया गया है।

15) परन्तु जब तुम अपना भार वहन करने का भरसक प्रयत्न करते हो, और अपना काम करते हो, तब तुम परमेश्वर को एक ऐसा बलिदान चढ़ाते हो जो उसकी दृष्टि में अच्छा हो।

16) और तब पवित्र व्यक्ति आपके जलते हुए अंगारों पर गहरी सांस लेता है, और उन्हें आपके प्राणों को प्रकाश, और शक्ति और सहायकता से भरने के लिए दीप्तिमान करता है।

17) सबसे प्रभावशाली प्रार्थना जो मनुष्य किसी भी प्रकार के देवता को अर्पित कर सकता है, वह है उन लोगों की सहायता करना जिन्हें सहायता की आवश्यकता है; क्योंकि जो कुछ तुम दूसरे मनुष्यों के लिये करते हो वह पवित्र परमेश्वर तुम्हारे लिये करेगा।

18) और इस प्रकार भगवान मदद करता है।

19) यूनान में उसका काम हो गया था, और यीशु को दक्षिण में मिस्र जाने के लिए जाना होगा। अपोलो, भूमि के सर्वोच्च स्वामी और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के कई लोगों के साथ, हिब्रू ऋषि को विदा होते देखने के लिए किनारे पर खड़ा था; और यीशु ने कहा,

20) मनुष्य का पुत्र बहुत देशों में रहा है; बहुत से परदेशी देवताओं के मन्दिरों में खड़ा हुआ है; बहुत से लोगों, कुलों और भाषाओं को पृथ्वी पर अच्छी इच्छा और शांति के सुसमाचार का प्रचार किया है;

21) अनेक घरों में अनुग्रह प्राप्त हुआ है; लेकिन ग्रीस, उन सभी में, शाही मेजबान है।

22) ग्रीसियन विचार की चौड़ाई; उसके दर्शन की गहराई; उनकी निःस्वार्थ आकांक्षाओं की ऊंचाई ने उन्हें मानव स्वतंत्रता और अधिकार के कारण के चैंपियन के रूप में अच्छी तरह से फिट किया है।

23) युद्ध के भाग्य ने ग्रीस को अपने अधीन कर लिया है क्योंकि वह मांस, और हड्डी और बुद्धि की ताकत पर भरोसा करती है, आत्मा-जीवन को भूल जाती है जो एक राष्ट्र को उसकी शक्ति के स्रोत से बांधती है।

24) लेकिन ग्रीस हमेशा के लिए छाया भूमि के अंधेरे में एक विदेशी राजा के जागीरदार के रूप में नहीं बैठेगा।

25) हे यूनान के लोगों, अपने सिर उठाओ; वह समय आएगा जब ग्रीस पवित्र श्वास के पंखों में सांस लेगा, और पृथ्वी की आध्यात्मिक शक्ति का मुख्य स्रोत होगा।

26) परन्तु परमेश्वर तेरी ढाल, तेरा कवच, और तेरा बल का गुम्मट हो।

27) और फिर उसने कहा, अलविदा। अपोलो ने मौन आशीर्वाद में अपना हाथ उठाया और लोग रो पड़े।

28) क्रेटन पोत, मंगल पर, हिब्रू ऋषि ग्रीसियन बंदरगाह से रवाना हुए।

भाग 1/अनुभाग XI

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड XI
CAPH

मिस्र में यीशु का जीवन और कार्य
(अध्याय 47 - 55)

अध्याय 47

मिस्र में एलीहू और सैलोम के साथ यीशु। अपने सफर की कहानी सुनाता है। एलीहू और सलोमी परमेश्वर की स्तुति करते हैं। यीशु हेलियोपोलिस के मंदिर में जाते हैं और एक शिष्य के रूप में उनका स्वागत किया जाता है।

और यीशु मिस्र देश में आया, और सब कुशल से है। वह तट पर नहीं रुका; वह तुरन्त एलीहू और सलोमी के घर सोअन को गया, जिस ने पच्चीस वर्ष पहिले उसकी माता को उनके पवित्र विद्यालय में शिक्षा दी थी।

2) और इन तीनों से मिलने पर खुशी हुई। जब मरियम के पुत्र ने इन पवित्र उपवनों को देखा, तब वह बालक था;

3) और अब एक मनुष्य सब प्रकार की टहनियोंके द्वारा बलवन्त होता गया; एक शिक्षक जिसने कई देशों में भीड़ को उकसाया था।

4) और यीशु ने वृद्ध शिक्षकों को अपने जीवन के बारे में बताया; विदेश में उनकी यात्राओं के बारे में; आकाओं के साथ बैठकों के बारे में और भीड़ द्वारा उनके तरह के स्वागत के बारे में।

5) एलीहू और सलोमी ने प्रसन्नता से उसकी कहानी सुनी; उन्होंने अपनी आँखें स्वर्ग की ओर उठायीं और कहा,

6) हे हमारे परमेश्वर पिता, अब तेरे दास कुशल से चले जाएं, क्योंकि हम ने यहोवा का तेज देखा है;

7) और हम ने उस से, जो प्रेम का दूत, और पृथ्वी पर शान्ति की वाचा, मनुष्योंके लिथे भलाई की बात की है।

8) उसके द्वारा पृथ्वी की सारी जातियां आशीष पाएं; उसके माध्यम से, इमैनुएल।

9) और यीशु सोअन में बहुत दिन रहा; और फिर सूर्य के नगर में गए, कि लोग हेलीओपोलिस कहते हैं, और पवित्र भाईचारे के मंदिर में प्रवेश की मांग करते हैं।

10) भाईचारे की परिषद बुलाई गई, और यीशु डाकू के सामने खड़ा हुआ; उन्होंने उन सभी प्रश्नों का उत्तर दिया जो स्पष्ट और शक्ति के साथ पूछे गए थे।

11) रंगकर्मी ने कहा, खरगोश के रब्बोनी, तुम यहाँ क्यों आए हो? तेरा ज्ञान देवताओं का ज्ञान है; पुरुषों के हॉल में ज्ञान की तलाश क्यों करें?

12) यीशु ने कहा, मैं पृथ्वी के सब मार्गों पर चलूंगा; सीखने के हर हॉल में मैं बैठूंगा; जो ऊंचाइयां किसी मनुष्य ने पाई हैं, वही मैं प्राप्त करूंगा;

13) जो कुछ किसी ने सहा है, मैं उसे पूरा करूंगा, कि मैं अपने भाई के दुखों, निराशाओं और कठिन परीक्षाओं को जान सकूं; ताकि मैं यह जान सकूं कि जरूरतमंदों की सहायता कैसे की जाती है।

14) हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि मुझे तुम्हारी दयनीय तहखानों में जाने दे; और मैं आपकी सबसे कठिन परीक्षा पास करूंगा।

15) स्वामी ने कहा, तो गुप्त भाईचारे की मन्नत मान लो। और यीशु ने गुप्त भाईचारे की शपथ ली।

16) स्वामी फिर बोला; उन्होंने कहा, सबसे बड़ी ऊंचाई उन्हें मिलती है जो सबसे बड़ी गहराई तक पहुंचते हैं; और तुम सबसे बड़ी गहराई तक पहुंचोगे।

17) तब अगुवे ने मार्ग का नेतृत्व किया और यीशु ने सोते हुए सोते में स्नान किया; और जब वह उचित वस्त्र पहिने हुए, तब वह रंगकर्मी के साम्हने फिर खड़ा हो गया।

अध्याय 48

यीशु को हिरोफेंट से उसका रहस्यवादी नाम और संख्या प्राप्त होती है। भाईचारे की पहली परीक्षा पास करता है, और अपनी पहली डिग्री, SINCERYITY प्राप्त करता है।

गुरु ने दीवार पर से एक खर्रा उतारा जिस पर हर गुण और चरित्र की संख्या और नाम लिखा हुआ था। उसने बोला,

2) वृत्त सिद्ध पुरुष का प्रतीक है, और सात पूर्ण मनुष्य की संख्या है;

3) लोगो एकदम सही शब्द है; जो बनाता है; जो नष्ट करता है, और जो बचाता है।

4) यह हिब्रू गुरु पवित्र एक का लोगो, मानव जाति का चक्र, सात समय का प्रतीक है।

5) और अभिलेख पुस्तक में मुंशी ने लिखा, द लोगोस-सर्कल-सेवन; और इस प्रकार यीशु को जाना जाता था।

6) गुरु ने कहा, मैं जो कहता हूं, उस पर लोग ध्यान देंगे: कोई भी व्यक्ति प्रकाश में तब तक प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं को न पा ले। आगे बढ़ो और तब तक खोजो जब तक कि तुम अपनी आत्मा को न पा लो और फिर लौट आओ।

7) मार्गदर्शक यीशु को एक ऐसे कमरे में ले गया, जहाँ भोर के उजाले की तरह प्रकाश मंद और मधुर था।

8) कक्ष की दीवारों को रहस्यमय संकेतों, चित्रलिपि और पवित्र ग्रंथों के साथ चिह्नित किया गया था; और इस कक्ष में यीशु ने अपने आप को अकेला पाया, जहां वह बहुत दिनों तक रहा।

9) उसने पवित्र ग्रंथ पढ़े; चित्रलिपि के अर्थ के बारे में सोचा और खुद को खोजने के लिए मास्टर के आरोप के आयात की मांग की।

10) एक रहस्योद्घाटन आया; वह अपनी आत्मा से परिचित हो गया; उसने खुद को पाया; तब वह अकेला नहीं था।

11) एक रात वह सो गया, और आधी रात को एक ऐसा द्वार खुला, जिस पर उस ने ध्यान न दिया या, और एक याजक ने वेश में आकर कहा,

12) हे मेरे भाई, मुझे इस अनुचित घड़ी में आने के लिए क्षमा कर; परन्तु मैं तुम्हारी जान बचाने आया हूँ।

13) आप एक क्रूर साजिश के शिकार हैं। हेलियोपोलिस के पुजारी आपकी प्रसिद्धि से ईर्ष्या करते हैं, और उन्होंने कहा है कि आप इन उदास क्रिप्ट को कभी जीवित नहीं छोड़ेंगे।

14) महायाजक संसार को उपदेश देने के लिए नहीं जाते हैं, और आप मंदिर की दासता के लिए अभिशप्त हैं।

15) अब, यदि तुम स्वतंत्र हो, तो तुम्हें इन याजकों को धोखा देना चाहिए; उन्हें बताना होगा कि आप यहां जीवन भर रहने के लिए हैं;

16) और फिर जब तू वह सब पा ले, जो तू पाना चाहता है, तो मैं लौट आऊंगा, और गुप्त मार्ग से तुझे ले चलूंगा, कि कुशल से चला जा।

17) और यीशु ने कहा, हे मेरे भाई, क्या तू यहां छल की शिक्षा देने आएगा? क्या मैं इन पवित्र दीवारों के भीतर पाखंड की चाल सीखने के लिए हूं?

18) नहीं, मेरे पिता छल से घृणा करते हैं, और मैं यहां उसकी इच्छा पूरी करने के लिए हूं।

19) इन याजकों को धोखा दो! जबकि सूरज चमकेगा नहीं। मैंने जो कहा है, वह मैंने कहा है; मैं उनके प्रति, परमेश्वर के प्रति, और स्वयं के प्रति सच्चा रहूंगा।

20) और तब परीक्षार्थी चला गया, और यीशु फिर अकेला था; परन्तु कुछ ही देर में एक श्वेत वस्त्रधारी याजक प्रकट हुआ और बोला,

21) अच्छा किया! लोगो की जीत हुई है। यह पाखंड का परीक्षण कक्ष है। तब वह मार्ग की अगुवाई करने लगा, और यीशु न्याय आसन के साम्हने खड़ा हुआ।

22) और सब भाई खड़े रहे; रंगकर्मी ने निकलकर यीशु के सिर पर हाथ रखा, और उसके हाथों में एक पुस्तक रखी, जिस पर केवल एक ही शब्द लिखा था, ईमानदारी; और एक शब्द नहीं कहा गया था,

23) मार्गदर्शक फिर से प्रकट हुआ, और मार्ग का नेतृत्व किया, और एक विशाल कमरे में एक छात्र की हर चीज से भरा हुआ था, जिसे यीशु आराम करने और प्रतीक्षा करने के लिए कहता था।

अध्याय 49

यीशु भाईचारे की दूसरी परीक्षा पास करता है, और दूसरी डिग्री, न्याय प्राप्त करता है।

लोगो ने आराम करने की परवाह नहीं की; उसने कहा, इस आलीशान कमरे में क्यों प्रतीक्षा करें? मुझे आराम नहीं चाहिए; मेरे पिता का काम मुझ पर भारी पड़ता है।

2) मैं आगे बढ़ूंगा और अपने सभी सबक सीखूंगा। यदि परीक्षाएँ हों, तो उन्हें आने दें, क्योंकि स्वयं पर प्रत्येक विजय अतिरिक्त शक्ति प्रदान करती है।

3) और फिर मार्गदर्शक आगे बढ़ गया, और एक कक्ष में, रात के रूप में अंधेरा, यीशु को रखा गया और अकेला छोड़ दिया गया; और इस गहरे एकांत में दिन बिताए।

4) और यीशु सो गया, और रात के सन्नाटे में एक गुप्त द्वार खोला गया, और याजक का पहिरावा पहिने हुए दो मनुष्य भीतर आए; प्रत्येक ने अपने हाथ में एक छोटा सा टिमटिमाता हुआ दीपक लिए हुए थे।

5) एक ने यीशु के पास आकर कहा, हे जवानो, इन भयानक मांदों में जो कुछ तुम लोग सहते हो, उसके कारण हमारा मन उदास है, और हम मित्र बनकर तुम्हें प्रकाश देने और स्वतंत्रता का मार्ग दिखाने आए हैं।

6) हम एक बार, आप की तरह, इन गुफाओं में बंद थे, और सोचा था कि इन अजीब, अलौकिक तरीकों से हम आशीर्वाद और शक्ति प्राप्त कर सकते हैं;

7) लेकिन एक भाग्यशाली क्षण में हम धोखा खा गए, और अपनी सारी शक्ति का उपयोग करते हुए, हमने अपनी जंजीरें तोड़ दीं, और तब हमें पता चला कि यह सब सेवा भेष में भ्रष्टाचार है। ये पुजारी अभी-अभी छिपे हुए अपराधी हैं।

8) वे बलि के कार्यों में घमण्ड करते हैं; वे अपके देवताओं को बलि चढ़ाते हैं, और कंगाल पक्षियों, और पशुओं को जीवित करके जला देते हैं; हाँ, बच्चों, महिलाओं, पुरुषों।

9) और अब वे तुम्हें यहां रखते हैं, और एक निश्चित समय पर, तुम्हें बलि चढ़ा सकते हैं।

10) हम आपसे प्रार्थना करते हैं, भाई, अपनी जंजीरों को तोड़ दो; आओ, हमारे साथ जाओ; जब तक आप कर सकते हैं स्वतंत्रता स्वीकार करें।

11) और यीशु ने कहा, आपके छोटे-छोटे टेपर आपके द्वारा लाए गए प्रकाश को दिखाते हैं। प्रार्थना करो, तुम कौन हो? मनुष्य के शब्दों का मूल्य स्वयं मनुष्य से अधिक नहीं है।

12) ये मंदिर की दीवारें मजबूत और ऊंची हैं; आपको इस जगह में प्रवेश कैसे मिला?

13) उन आदमियों ने उत्तर दिया, इन शहरपनाहों के नीचे बहुत से गुप्त मार्ग हैं, और हम जो याजक रहे हैं, और इन गड्ढों में महीने और वर्ष रहे हैं, वे सब जानते हैं।

14) तब तुम देशद्रोही हो, यीशु ने कहा, देशद्रोही पैशाचिक है; वह जो दूसरे आदमी को धोखा देता है वह कभी भी भरोसा करने वाला आदमी नहीं होता।

15) यदि कोई केवल विश्वासघात के स्तर पर पहुँच गया है, तो वह छल का प्रेमी है, और अपने स्वार्थ की सेवा के लिए मित्र को धोखा देगा।

16) देख, हे मनुष्य, चाहे कुछ भी हो, तेरे वचन मेरे कानों पर हल्के पड़ते हैं,

17) क्या मैं इन सौ याजकों के बारे में निर्णय कर सकता हूं, अपने और उनके लिए विश्वासघाती हो सकता हूं, क्योंकि जब आप अपने विश्वासघात को स्वीकार करते हैं तो आप क्या कहते हैं?

18) कोई मेरा न्याय नहीं कर सकता; और यदि मैं गवाही तक न्याय करूं, तो सब कुछ भीतर है, मैं न्याय न करूंगा।

19) नहीं, पुरुषों; तुम जिस भी रास्ते से आए, लौट आओ। मेरी आत्मा कब्र के अंधेरे को तरजीह देती है, जैसे कि तुम लाते हो।

20) मेरा विवेक नियम; ये क्या हैं, मेरे भाइयों, मुझे क्या कहना है, मैं सुनूंगा, और जब गवाही होगी तो मैं तय करूंगा। तुम मेरे लिए न्याय नहीं कर सकते, न ही मैं तुम्हारे लिए,

21) चले जाओ, तुम चले जाओ, और मुझे इस आकर्षक प्रकाश में छोड़ दो; क्योंकि जब तक सूर्य नहीं चमकता, तब तक मेरे प्राण के भीतर सूर्य या चन्द्रमा से भी बड़ा प्रकाश है।

22) फिर, इस क्रोधित धमकी के साथ कि वे उसे नुकसान पहुंचाएंगे, चालाक परीक्षार्थी चले गए, और यीशु फिर से अकेला था।

23) फिर श्वेत वस्त्र पहने याजक प्रकट हुआ, और मार्ग का नेतृत्व किया, और यीशु फिर से डाकू के साम्हने खड़ा हो गया;

24) और एक शब्द भी नहीं कहा गया, परन्तु स्वामी ने अपने हाथों में एक पुस्तक रखी, जिस पर विचारोत्तेजक शब्द, न्याय लिखा हुआ था।

25) और यीशु पूर्वाग्रह और विश्वासघात के प्रेत रूपों का स्वामी था।

<u>अध्याय 50</u>

यीशु भाईचारे की तीसरी परीक्षा पास करता है, और तीसरी डिग्री, विश्वास प्राप्त करता है।

लोगो ने सात दिनों तक प्रतीक्षा की, और फिर उन्हें हॉल ऑफ फेम में ले जाया गया, जो साज-सज्जा से भरपूर एक कक्ष था, और सोने और चांदी के दीयों से रोशन किया गया था।

2) इसकी छतों, साज-सज्जा, साज-सज्जा और दीवारों का रंग नीला और सोना था।

3) इसकी अलमारियां मास्टर माइंड की किताबों से भरी हुई थीं; चित्र और मूर्तियाँ सर्वोच्च कला की कृतियाँ थीं।

4) और यीशु इस सारी भव्यता और विचारों की इन अभिव्यक्तियों से मोहित हो गए थे। उन्होंने पवित्र पुस्तकों को पढ़ा और प्रतीकों और चित्रलिपि के अर्थ मांगे।

5) और जब वह गहरे विचार में डूबा, तो एक याजक ने पास आकर कहा,

6) इस स्थान की महिमा निहारना! मेरे भाई, आप बहुत धन्य हैं। पृथ्वी के कुछ लोग, इतने युवा, प्रसिद्धि की इतनी ऊँचाइयों तक पहुँचे हैं।

7) अब, यदि आप छिपी हुई चीजों की तलाश में अपना जीवन बर्बाद नहीं करते हैं जो लोग कभी नहीं समझ सकते हैं, तो आप एक विचारधारा के संस्थापक हो सकते हैं जो आपको अंतहीन प्रसिद्धि का बीमा करेगा;

8) क्योंकि आपका दर्शन प्लेटो के दर्शन से कहीं अधिक गहरा है, और आपकी शिक्षाएं सुकरात की तुलना में आम लोगों को अधिक प्रसन्न करती हैं।

9) इन प्राचीन गुफाओं के भीतर रहस्यवादी प्रकाश की तलाश क्यों करें? निकल कर मनुष्यों के संग चल, और मनुष्यों के साथ सोच, तो वे तेरा आदर करेंगे।

10) और, आखिरकार, ये अजीबोगरीब दीक्षाएं मिथक हो सकती हैं, और आपका मसीहा आशा करता है लेकिन समय के आधार भ्रम।

11) मैं आपको सलाह दूंगा कि आप अनिश्चित चीजों का त्याग करें और उस मार्ग को चुनें जो निश्चित प्रसिद्धि की ओर ले जाए।

12) और इस प्रकार याजक ने, जो भेष में एक राक्षस था, अविश्वास के मोहिनी गीत गाए; और जो कुछ उसने कहा उस पर यीशु ने बहुत देर तक मनन किया,

13) संघर्ष एक कड़वा था, क्योंकि राजा महत्वाकांक्षा लड़ने के लिए एक मजबूत दुश्मन है।

14) चालीस दिनों तक उच्च ने निचले स्व के साथ कुश्ती की, और फिर लड़ाई जीत ली गई।

15) विश्वास विजयी हुआ; अविश्वास नहीं था। अभिलाषा ने अपना मुँह ढाँप लिया और भाग गया, और यीशु ने कहा,

16) पृथ्वी की दौलत, शान और कीर्ति एक घण्टे की दौलत मात्र है।

17) जब पृथ्वी की यह छोटी सी अवधि पूरी हो जाएगी, तब मनुष्य के फूटते हुए बौनों को उसकी हड्डियों के साथ मिट्टी दी जाएगी।

18) हाँ, एक आदमी जो अपने स्वार्थ के लिए करता है, वह जीवन के क्रेडिट पक्ष पर कोई निशान नहीं छोड़ेगा।

19) जो भलाई मनुष्य दूसरे लोगों के लिए करेगा वह एक मजबूत सीढ़ी बन जाती है जिस पर आत्मा धन पर चढ़ सकती है, और भगवान की अपनी तरह की शक्ति और प्रसिद्धि, जो दूर नहीं हो सकती।

20) मुझे पुरुषों की दरिद्रता, प्रेम में किए गए कर्तव्य की चेतना, मेरे भगवान की स्वीकृति, और मैं संतुष्ट रहूंगा।

21) तब उस ने आकाश की ओर आंखें उठाकर कहा,

22) मेरे पिता-परमेश्वर, मैं इस घड़ी के लिए आपका धन्यवाद करता हूं। मैं अपनी महिमा नहीं माँगता; मैं तेरे मन्दिर के फाटकों का रक्षक बनूंगा और अपने भाई की सेवा करूंगा।

23) यीशु को फिर से नायक के सामने खड़े होने के लिए बुलाया गया; फिर कुछ न कहा गया, परन्तु स्वामी ने अपने हाथ में एक खर्रा रखा जिस पर लिखा था, कि विश्वास।

24) और यीशु ने नम्रता से अपना सिर झुकाया; फिर अपने रास्ते चला गया।

<u>अध्याय 51</u>

यीशु भाईचारे की चौथी परीक्षा पास करता है, और चौथी डिग्री परोपकार को प्राप्त करता है।

जब अन्य निश्चित दिन बीत गए, तो मार्गदर्शक यीशु को हॉल ऑफ मिर्थ में ले गया, एक हॉल जो सबसे समृद्ध रूप से सुसज्जित था, और वह सब कुछ से भरा हुआ था जो एक कामुक दिल चाहता था।

2) बोर्ड पर सबसे अच्छी वाइन और सबसे स्वादिष्ट वाइन थी; और दासियां, समलैंगिक पोशाक में, कृपा और हर्षोल्लास के साथ सभी की सेवा करती थीं।

3) और वहां पुरूष और स्त्रियां, जो धनी वस्त्र पहिने थे, वहां थे; और वे आनन्द से जंगली थे; वे खुशी के हर प्याले से चुगते थे।

4) और यीशु ने कुछ समय के लिए मौन में खुश भीड़ को देखा, और फिर एक ऋषि के वेश में एक आदमी आया और कहा, सबसे खुश वह आदमी है जो मधुमक्खी की तरह हर फूल से मिठाई इकट्ठा कर सकता है।

5) बुद्धिमान वह है जो आनंद की तलाश करता है और उसे हर जगह पा सकता है।

6) सबसे अच्छा, पृथ्वी पर मनुष्य का जीवन काल छोटा है, और फिर वह मर जाता है और चला जाता है, वह नहीं जानता कि कहाँ है।

7) तब हम खाएँ, पीए, और नाचें, और गाएँ, और जीवन का आनन्द प्राप्त करें, क्योंकि मृत्यु शीघ्र आती है।

8) दूसरे पुरुषों के लिए जीवन व्यतीत करना मूर्खता है। निहारना, सब मर जाते हैं और कब्र में एक साथ झूठ बोलते हैं, जहां कोई नहीं जान सकता है और कोई भी आभार प्रकट नहीं कर सकता है।

9) परन्तु यीशु ने उत्तर नहीं दिया; अपने सभी चक्करों में टिन वाले मेहमानों पर वह मौन विचार में देखता था।

10) और फिर मेहमानों के बीच उसने एक आदमी को देखा, जिसके कपड़े मोटे थे; जिन्होंने चेहरे और हाथों में मेहनत और चाहत की लकीरें दिखाईं।

11) गदगद भीड़ ने उसे गाली देने में आनंद पाया; उन्होंने उसे शहरपनाह से मारा, और उसकी बेचैनी पर हँसे।

12) तब एक कंगाल, दुर्बल औरत आई, जिस ने अपना मुख ओढ़े हुए पाप और लज्जा के चिन्ह बनाए; और बिना किसी दया के उस पर थूका गया, और ठट्ठों में उड़ाया गया, और हॉल से निकाल दिया गया।

13) और फिर एक छोटा बच्चा, डरपोक चालों और भूखे मियां के साथ, अंदर आया और अपने भोजन का एक टुकड़ा मांगा।

14) परन्तु वह बिना किसी परवाह के और बिना प्रेम के निकाल दी गई; और फिर भी मीरा नृत्य चलता रहा।

15) और जब सुख चाहने वालों ने यीशु को उनके आनन्द में उनके साथ मिलाने का आग्रह किया, तो उसने कहा,

16) मैं अपने लिए सुख की तलाश कैसे कर सकता हूँ जबकि अन्य अभाव में हैं? आप यह कैसे सोच सकते हैं कि जब बच्चे रोटी के लिए रोते हैं, जबकि पाप के शिकार लोग सहानुभूति और प्रेम के लिए पुकारते हैं, कि मैं अपने आप को जीवन की अच्छी चीजों से भर सकता हूं?

17) मैं तुमसे कहता हूं, नहीं; हम सभी परिजन हैं, हर एक महान मानव हृदय का एक हिस्सा है।

18) मैं अपने आप को उस दरिद्र व्यक्ति से अलग नहीं देख सकता, जिसे तू ने इतना तिरस्कृत किया, और शहरपनाह पर भीड़ लगा दी;

19) और न ही उस स्त्री के वेश में जो बुराई के शिकार से सहानुभूति और प्रेम मांगने के लिए आई थी, जिसे आपके द्वारा इतनी बेरहमी से पाप की मांद में धकेल दिया गया था;

20) न ही उस नन्हे बालक से जिसे तूने अपने बीच से निकाल कर रात की ठंडी, धुँधली हवाओं में पीड़ित किया।

21) हे मनुष्यो, मैं तुम से कहता हूं, कि हे मेरे कुटुम्ब, तू ने मुझ से जो किया है, वह किया है।

22) तू ने अपने ही घर में मेरा अपमान किया है; मैं नहीं रुक सकता। मैं निकलकर उस बालक, उस स्त्री और उस पुरूष को ढूंढूंगा, और तब तक उनकी सहायता करूंगा, जब तक कि मेरे जीवन का सारा लोहू न उतर जाए।

23) जब मैं असहायों की मदद करता हूं, भूखे को खाना खिलाता हूं, नग्नों को कपड़े पहनाता हूं, बीमारों को चंगा करता हूं, और उन लोगों के लिए खुशी की बात करता हूं जो निराश, निराश और निराश हैं।

24) और जिसे तुम उल्लास कहते हो वह रात का प्रेत मात्र है; लेकिन जोश की आग की लपटें, समय की दीवारों पर चित्र उकेरती हैं।

25) जब लोगो के यह कहने लगे, कि गोरे वस्त्र पहिने हुए याजक ने भीतर आकर उस से कहा, सभा तेरी बाट जोहती है।

26) तब यीशु फिर से बार के सामने खड़ा हो गया; फिर से कोई शब्द नहीं कहा गया; चित्रलिपि ने अपने हाथों में एक स्क्रॉल रखा, जिस पर लिखा था, परोपकार।

27) और यीशु स्वार्थी आत्म पर विजयी थे।

अध्याय 52

यीशु चालीस दिन मंदिर के उपवनों में बिताते हैं। पांचवीं भाईचारे की परीक्षा पास करता है और पांचवीं डिग्री, वीरता प्राप्त करता है।

पवित्र मंदिर के उपवन मूर्तियों, स्मारकों और मंदिरों में समृद्ध थे; यहाँ यीशु को चलना और ध्यान करना पसंद था।

2) और अपने आप पर विजय प्राप्त करने के बाद उसने चालीस दिनों तक इन उपवनों में प्रकृति से बातें कीं।

3) तब अगुवे ने जंजीरें लीं, और उसके हाथ पांव बांधे; और फिर उसे भूखे पशुओं, और अशुद्ध पक्षियों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मांद में डाल दिया।

4) मांद रात के समान अँधेरी थी; जंगली जानवर गरजते थे; रोष में पक्षी चिल्लाया; सरीसृप फुसफुसाए।

5) यीशु ने कहा, वह कौन था जिसने मुझे इस प्रकार बाँधा? मैं क्यों नम्रता से जंजीरों से बंधा हुआ बैठा था?

6) मैं तुमसे कहता हूँ; मनुष्य की आत्मा को बांधने की शक्ति किसी में नहीं है। बेड़ियाँ किससे बनती हैं?

7) और अपनी शक्ति में वह उठा, और जो उसने सोचा था कि जंजीरें केवल बेकार रस्सियां थीं जो उसके स्पर्श से अलग हो गईं।

8) तब वह हंसा, और कहने लगा, जो जंजीरें मनुष्योंको पृथ्वी की लोथोंसे बांधती हैं, वे फैंसी दूकान में जाली हैं; हवा से बने होते हैं, और भ्रम की आग में वेल्डेड होते हैं।

9) यदि मनुष्य सीधा खड़ा हो, और इच्छा शक्ति का उपयोग करे, तो उसकी जंजीरें बेकार लत्ता की तरह गिर जाएंगी; क्योंकि इच्छा और विश्वास उन सब से अधिक मजबूत हैं, जो मनुष्य ने कभी बनाई हैं।

10) और यीशु भूखे पशुओं और पक्षियों के बीच खड़ा हुआ, और कहने लगा, यह कैसा अन्धकार है जो मुझे घेरे हुए है?

11) "तीस लेकिन प्रकाश की अनुपस्थिति। और प्रकाश क्या है? 'तीस लेकिन तेजी से विचार की लय में कंपन भगवान की सांस।

12) तब उस ने कहा, उजियाला हो; और उस ने अपनी प्रबल इच्छा से पंखों को उभारा, और उनके स्पंदन प्रकाश के स्तर तक पहुंच गए; और प्रकाश था।

13) उस रात की मांद का अँधेरा नवजात दिन की चमक बन गया।

14) और फिर उसने पशुओं, और पक्षियों, और रेंगनेवाले जन्तुओं को देखा; लो, वे नहीं थे।

15) यीशु ने कहा, जीव किस बात से डरते हैं? भय वह रथ है जिस पर मनुष्य सवार होकर मृत्यु को प्राप्त होता है;

16) और जब वह अपने आप को मरे हुओं की कोठरी में पाता है, तो उसे पता चलता है कि उसे धोखा दिया गया है; उसका रथ एक मिथक था, और मृत्यु एक फैंसी बच्चा था।

17) परन्तु किसी दिन मनुष्य का सब कुछ सीखा जाएगा, और वह अशुद्ध पशुओं, और पक्षियों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मांद से ज्योति में चलने को उठेगा।

18) और यीशु ने सोने की बनी एक सीढ़ी देखी, जिस पर वह चढ़ गया, और शीर्ष पर सफेदपोश याजक उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

19) वह फिर महासभा के सामने खड़ा हुआ; फिर से कोई शब्द नहीं कहा गया; फिर नायक आशीर्वाद देने के लिए हाथ आगे बढ़ा।

20) उसने यीशु के हाथ में एक और स्क्रॉल रखा, और उस पर लिखा हुआ था, वीरता।

21) लोगो को डर और उसके सभी प्रेत यजमान का सामना करना पड़ा था, और संघर्ष में उन्होंने जीत हासिल की।

अध्याय 53

यीशु भाईचारे की छठी परीक्षा पास करता है और छठी डिग्री, लव डिवाइन प्राप्त करता है।

पूरे देश में सूर्य मंदिर के ब्यूटी पार्लर से बढ़कर भव्य साज-सज्जा का कोई स्थान नहीं था।

2) इन समृद्ध कमरों में कभी कुछ छात्र प्रवेश करते हैं; याजकों ने उन्हें विस्मय से देखा और उन्हें हॉल ऑफ मिस्ट्री कहा।

3) जब यीशु ने भय पर विजय प्राप्त कर ली थी, तो उसे यहाँ प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो गया था।

4) गाइड रास्ते में ले गया, और कई समृद्ध सुसज्जित कमरों से गुजरने के बाद वे हॉल ऑफ हार्मनी में पहुँचे; और यहाँ यीशु अकेला रह गया था।

5) संगीत के वाद्ययंत्रों के बीच एक हार्पसीकोर्ड था, और यीशु सोच-समझकर बैठे थे और उसका निरीक्षण कर रहे थे, जब चुपचाप, आकर्षक सुंदरता की एक युवती हॉल में आई।

6) ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि जब वह बैठा और ध्यान कर रहा था, उसके विचारों में व्यस्त था, तो उसने यीशु को नोटिस नहीं किया।

7) उसने हार्पसीकोर्ड के पास अपना स्थान पाया; और वह बहुत ही कोमलता से रस्सियों को छूती थी, और वह इस्राएल के गीत गाती थी।

8) और यीशु का प्रवेश हुआ; ऐसी सुंदरता उसने कभी नहीं देखी थी; ऐसा संगीत उसने कभी नहीं सुना था।

9) युवती ने अपने गीत गाए; वह नहीं जानती थी कि कोई निकट है; वह अपने रास्ते चली गई।

10) और यीशु ने आपस में बातें करते हुए कहा, इस घटना का क्या अर्थ है? मुझे नहीं पता था कि पुरुषों के पुत्रों में इतनी मोहक सुंदरता और ऐसी रानी जैसी सुंदरता कभी पाई जाती है।

11) मुझे नहीं पता था कि देवदूत की आवाज कभी मानव रूप धारण करती है, या वह संगीतमय संगीत कभी मानव होंठों से आता है।

12) वह बहुत दिनों तक बैठा बैठा रहा; उनके विचारों का प्रवाह बदल गया था; उसने गायक और उसके गीतों के अलावा कुछ नहीं सोचा।

13) वह उसे एक बार फिर देखना चाहता था; और कुछ दिनों के बाद वह आई; वह बोली और उसके सिर पर हाथ रखा।

14) उसके स्पर्श ने उसकी सारी आत्मा को रोमांचित कर दिया, और समय के लिए, वह काम भूल गया जिसे करने के लिए उसे भेजा गया था।

15) युवती द्वारा कहे गए कुछ ही शब्द थे; वह अपने रास्ते चली गई; लेकिन तब यीशु का दिल छू गया था।

16) उसकी आत्मा में प्रेम की ज्वाला जल उठी थी, और उसे अपने जीवन की सबसे कठिन परीक्षा का सामना करना पड़ा।

17) वह न सो सकता था और न ही खा सकता था। युवती के विचार आए; वे नहीं जाते। उसके कामुक स्वभाव ने उसके साहचर्य के लिए जोर से पुकारा।

18) फिर उस ने कहा, देख, मैं ने जितने शत्रुओं से मिले हैं उन पर विजय पा ली है, और क्या अब मैं इस शारीरिक प्रेम से जीतूंगा?

19) मेरे पिता ने मुझे दिव्य प्रेम की शक्ति दिखाने के लिए यहां भेजा है, वह प्रेम जो हर जीवित वस्तु तक पहुंचता है।

20) क्या यह शुद्ध, सार्वभौमिक प्रेम, सभी शारीरिक प्रेम में समा जाएगा? क्या मैं अन्य सभी प्राणियों को भूल जाऊं, और इस सुंदरी में अपना जीवन खो दूं, हालांकि वह उच्चतम प्रकार की सुंदरता, पवित्रता और प्रेम है?

21) उसकी गहराई में उसकी आत्मा को हिलाया गया था, और लंबे समय तक वह अपने दिल की इस देवदूत-मूर्ति से मल्लयुद्ध करता रहा।

22) लेकिन जब दिन लगभग ढल गया, तो उसका उच्च अहंकार शक्ति में बढ़ गया; उसने अपने आप को फिर पाया, और फिर उसने कहा,

23) हालांकि मेरा दिल टूट जाएगा, मैं अपने सबसे कठिन काम में असफल नहीं होगा; मैं शारीरिक प्रेम पर विजयी होऊंगा।

24) और जब उस युवती ने फिर आकर अपना हाथ और मन उस को दिया, तब उस ने कहा,

25) भली, तेरी उपस्थिति ही मुझे आनन्द से भर देती है; तेरी वाणी मेरी आत्मा के लिए वरदान है; मेरा मानव स्व तुम्हारे साथ उड़ जाएगा, और तुम्हारे प्रेम में संतुष्ट होगा;

26) परन्तु सारा संसार उस प्रेम के लिए तरस रहा है जिसे मैं प्रकट करने आया हूं।

27) तो मुझे आज्ञा देनी चाहिए कि तुम जाओ; लेकिन हम फिर मिलेंगे; पृथ्वी पर हमारे रास्ते अलग नहीं किए जाएंगे।

28) मैं तुम्हें प्रेम के सेवक के रूप में पृथ्वी की भीड़ में देखता हूँ; मैं गीत में आपकी आवाज सुनता हूं, जो बेहतर चीजों के लिए पुरुषों का दिल जीत लेता है।

29) तब वह दु:ख और आंसू बहाते हुए चली गई, और यीशु फिर अकेला हो गया।

30) और तुरन्त ही मन्दिर की बड़ी घंटियाँ बजी; गायकों ने एक नया, नया गीत गाया; कुटी प्रकाश से जगमगा उठा।

31) काई ने आप ही दर्शन देकर कहा, सब जय हो! विजयी लोगो, जय हो! कामुक प्रेम का विजेता ऊंचाइयों पर खड़ा है।

32) और फिर उस ने यीशु के हाथ में एक खर्रा रखा जिस पर लिखा था, कि परमेश्वर से प्रेम करो।

33) वे एक साथ सुंदर के कुटी से गुजरे, और भोज हॉल में एक दावत दी गई, और यीशु सम्मानित अतिथि थे।

अध्याय 54

यीशु चित्रलिपि का एक निजी शिष्य बन जाता है और उसे मिस्र के रहस्य सिखाए जाते हैं। सातवीं परीक्षा पास करने में, वह चैंबर ऑफ द डेड में काम करता है।

अध्ययन का वरिष्ठ पाठ्यक्रम अब खुल गया था और यीशु ने प्रवेश किया और चित्रलिपि का शिष्य बन गया।

2) उसने मिस्र की भूमि के रहस्यवादी विद्या के रहस्यों को सीखा; जीवन और मृत्यु के रहस्य और सूर्य के घेरे से परे दुनिया के रहस्य।

3) जब उसने वरिष्ठ पाठ्यक्रम के सभी अध्ययन समाप्त कर लिए, तो वह मृतकों के कक्ष में गया, ताकि वह मृतकों के शरीर को क्षय से बचाने के प्राचीन तरीकों को सीख सके; और यहाँ उसने गढ़ा।

4) और वाहक एक विधवा के इकलौते पुत्र के शव को सुगन्धित करने के लिए ले आए; रोती हुई माँ उसके पीछे-पीछे चली; उसका दुख महान था।

5) यीशु ने कहा, हे भली स्त्री, अपने आंसू पोछ लो; तुम पीछा करते हो लेकिन एक खाली घर; आपका बेटा इसमें नहीं है।

6) तुम रोते हो क्योंकि तुम्हारा पुत्र मर गया है। मौत एक क्रूर शब्द है; तुम्हारा बेटा कभी नहीं मर सकता।

7) उसे मांस के वेश में करने के लिए एक कार्य सौंपा गया था; वह अ; उस ने अपना काम किया, और फिर शरीर को अलग रख दिया; उसे इसकी अधिक आवश्यकता नहीं थी।

8) आपकी मानवीय दृष्टि से परे उसे एक और काम करना है, और वह इसे अच्छी तरह से करेगा, और फिर अन्य कार्यों को करेगा, और धीरे-धीरे, वह सिद्ध जीवन का ताज प्राप्त करेगा।

9) और जो कुछ तेरे पुत्र ने किया है, और जो उसे अब तक करना है, वह हम सब को करना है।

10) अब, यदि तुम शोक को धारण करते हो, और अपने दुखों को प्रकट करते हो, तो वे दिन-ब-दिन बड़े होते जाएंगे। वे आपके जीवन को तब तक अवशोषित करेंगे जब तक कि आप कुछ भी नहीं होंगे लेकिन दुःख, कड़वे आँसुओं से भीगे हुए होंगे।

11) तुम उसकी सहायता करने के स्थान पर अपने पुत्र को अपने घोर शोक से शोकित करते हो। वह अब भी तेरी तसल्ली चाहता है जैसा उसने कभी किया है; जब आप खुश होते हैं तो खुश होते हैं; दुखी होता है जब तुम शोक करते हो।

12) जाओ अपने दुखों को गहरे में दबाओ, और दुःख में मुस्कुराओ, और दूसरों के आँसू सुखाने में मदद करने में खुद को खो दो।

13) कर्तव्य निभाने से खुशी और आनंद आता है; और जो बीत गए हैं उनके मन में हर्ष हर्षित होता है।

14) रोती हुई औरत मुड़ी और मदद में खुशी खोजने के लिए अपने रास्ते चली गई; खुशी के मंत्रालय में उसके दुखों को गहरा करने के लिए।

15) तब अन्य वाहक आए और एक मां के शव को मृतकों के कक्ष में ले आए; और उसके पीछे केवल एक मातम मनाने वाला आया; वह निविदा वर्षों की एक लड़की है।

16) और जैसे ही गाड़ी दरवाजे के पास पहुँची, बच्चे ने एक घायल पक्षी को गंभीर संकट में देखा, एक क्रूर शिकारी की डार्ट ने उसकी छाती को छेद दिया था।

17) और वह मरे हुओं का पीछा छोड़कर जीवित पक्षी की सहायता करने चली गई।

18) उसने कोमलता और प्रेम से घायल पक्षी को अपनी छाती से लगा लिया, और अपने स्थान की ओर चल पड़ी।

19) यीशु ने उस से कहा, तू ने घायल पक्षी को बचाने के लिथे अपके मुर्दे को क्यों छोड़ दिया?

20) युवती ने कहा, इस निर्जीव शरीर को मेरी ओर से किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं है; लेकिन मैं तब तक मदद कर सकता हूं जब तक जीवन है; मेरी माँ ने मुझे यह सिखाया।

21) मेरी माँ ने सिखाया कि दु: ख और स्वार्थी प्रेम, और आशाएँ और भय केवल निचले आत्म से प्रतिबिंब हैं;

22) कि हम जो महसूस करते हैं वह जीवन के लुढ़कते बिलों पर छोटी लहरें हैं।

23) ये सब मिट जाएंगे; वे असत्य हैं।

24) मांस के हृदयों से आँसू बहते हैं; आत्मा कभी नहीं रोती; और मैं उस दिन की लालसा करता हूं, जब मैं ज्योति में चलूंगा, जहां आंसू पोंछे जाएंगे।

25) मेरी माँ ने सिखाया कि सभी भावनाएँ मानव प्रेम, और आशाओं, और भय से उठने वाली फुहार हैं; वह पूर्ण आनंद तब तक हमारा नहीं हो सकता जब तक हम इन पर विजय प्राप्त नहीं कर लेते।

26) और उस बालक के साम्हने यीशु ने श्रद्धा से सिर झुकाया। उसने बोला,

27) दिनों, महीनों और वर्षों से मैंने इस सर्वोच्च सत्य को जानने की कोशिश की है जिसे मनुष्य पृथ्वी पर सीख सकता है, और यहाँ एक बच्चे ने, जो पृथ्वी पर ताजा लाया गया है, उसने एक ही छोटी सांस में यह सब बता दिया है।

28) कोई आश्चर्य नहीं कि दाऊद ने कहा, हे हमारे प्रभु, हे यहोवा, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर क्या ही उत्कृष्ट है!

29) तू ने बालकों और दूध पिलानेवालोंके मुंह से बल ठहराया है।

30) और फिर उसने युवती के सिर पर हाथ रखा, और कहा, मुझे यकीन है कि मेरे पिता-परमेश्वर की आशीषें तुम पर सदा बनी रहेंगी।

अध्याय 55

भाईचारे की सातवीं परीक्षा पास करने के बाद, यीशु ने सातवीं और सर्वोच्च डिग्री, द क्राइस्ट प्राप्त की। वह मंदिर को एक विजेता छोड़ देता है।

मृतकों के कक्ष में यीशु का काम किया गया था, और मंदिर में बैंगनी कमरे में वह हिरोपेंट के सामने खड़ा था,

2) और वह बैंजनी वस्त्र पहिने हुए था; और सब भाई खड़े रहे। हिरोफेंट ने उठकर कहा,

3) यह इस्राएल के सभी सेनाओं के लिए एक शाही दिन है। उनके चुने हुए पुत्र के सम्मान में हम महान फसह पर्व मनाते हैं।

4) और उस ने यीशु से कहा, हे भाई, हे मनुष्य, मनुष्योंमें सबसे उत्तम, मन्दिर की सब परीक्षाओंमें तू ने जीत ली है।

5) अधिकार की पट्टी से पहले छह बार आपका न्याय किया गया है; छह बार आपने सर्वोच्च सम्मान प्राप्त किया है जो मनुष्य दे सकता है; और अब आप अंतिम डिग्री लेने के लिए तैयार हैं।

6) मैं आपके माथे पर यह मुकुट रखता हूं, और आकाश और पृथ्वी के महान लॉज में आप मसीह हैं।

7) यह आपका फसह का संस्कार है। आप अब नवजात नहीं हैं; लेकिन अब मास्टर माइंड

8) अब, मनुष्य और कुछ नहीं कर सकता; परन्तु परमेश्वर आप ही बोलेगा, और तेरे पद और पद को स्थिर करेगा।

9) अपने मार्ग पर चलो, क्योंकि तुम्हें मनुष्यों को भलाई का सुसमाचार, और पृथ्वी पर शान्ति का सुसमाचार सुनाना अवश्य है; बन्दीगृह के द्वार खोल देने चाहिए और बन्दियों को मुक्त करना चाहिए।

10) और जब वह मन्दिर की घंटियां बोल ही रहा था, तब घंटियों की घंटियां बज उठीं; एक शुद्ध सफेद कबूतर ऊपर से उतरा और यीशु के सिर पर बैठ गया।

11) तब एक शब्द जिसने मन्दिर को हिला दिया, उसने कहा, यह मसीह है; और हर एक प्राणी ने कहा, आमीन।

12) मन्दिर के बड़े दरवाजे अजर झूम उठे; लोगो ने एक विजेता के रास्ते पर यात्रा की।

भाग 1/धारा XII

नासरत का यीशु
(जन्म से 30 वर्ष तक)

खंड XII
LAMED

विश्व के सात संतों की परिषद
(अध्याय 56 - 60)

अध्याय 56

अलेक्जेंड्रिया में दुनिया के सात संत मिलते हैं। बैठक के उद्देश्य। उद्घाटन पते।

प्रत्येक युग में आदिकाल से सात ऋषि रहते आए हैं।

2) प्रत्येक युग के पहले ये ऋषि राष्ट्रों, लोगों, जनजातियों और भाषाओं के पाठ्यक्रम को नोट करने के लिए मिलते हैं;

3) यह ध्यान देने के लिए कि दौड़ न्याय, प्रेम और धार्मिकता की ओर कितनी दूर चली गई है;

4) आने वाले युग के लिए सबसे उपयुक्त कानूनों, धार्मिक मान्यताओं और शासन की योजनाओं की संहिता तैयार करना।

5) एक युग बीत चुका था, और देखो, एक और युग आ गया था; संतों को बुलाना चाहिए।

6) अब, अलेक्जेंड्रिया दुनिया के सबसे अच्छे विचारों का केंद्र था, और यहाँ फिलो के घर में ऋषि मिले।

7) चीन से मेंग-त्से आया; भारत से विद्यापति आए; फारस से कास्पर आया; और अश्शूर से अश्बीना आया; ग्रीस से अपोलो आया था; मैथेनो मिस्र के ऋषि थे, और फिलो हिब्रू विचारों के प्रमुख थे।

8) समय देय था; परिषद की बैठक हुई और सात दिन तक मौन में बैठी रही।

9) तब मेंगत्से ने उठकर कहा, समय का पहिया फिर घूम गया; दौड़ विचार के उच्च स्तर पर है।

10) जो वस्त्र हमारे पुरखाओं ने बान्धे थे, उन्हें बाँट दिया है; करूबों ने एक आकाशीय वस्त्र बुना है; उसे हमारे हाथ में रखा है, और हमें मनुष्यों के लिये नये वस्त्र बनाने चाहिये।

11) पुरुषों के पुत्र अधिक से अधिक प्रकाश की ओर देख रहे हैं। वे अब लकड़ी से तराशे गए या मिट्टी के बने देवताओं की परवाह नहीं करते। वे हाथ से नहीं बने भगवान की तलाश करते हैं।

12) वे आने वाले दिनों की किरणों को देखते हैं, फिर भी वे उन्हें नहीं समझते हैं।

13) समय आ गया है, और हमें दौड़ के लिए इन वस्त्रों को अच्छी तरह से बनाना चाहिए।

14) और हम मनुष्योंके लिथे न्याय, दया, और धर्म और प्रेम के नए वस्त्र बनवाएं, कि आनेवाले दिन के उजियाले में वे अपना नंगापन छिपाएं।

15) विद्यापति ने कहा, हमारे याजक पागल हो गए हैं; उन्होंने जंगल में एक दुष्टात्मा को देखा, और उस पर अपनी मशालें डालीं, और वे टूट गए, और मनुष्यों के लिए कोई प्रकाश की किरण नहीं है।

16) रात अंधेरी है; भारत का हृदय प्रकाश मांगता है।

17) पौरोहित्य को सुधारा नहीं जा सकता; यह पहले ही मर चुका है; इसकी सबसे बड़ी जरूरत कब्रें और अंतिम संस्कार मंत्र हैं।

18) नया युग स्वतंत्रता की मांग करता है; जो हर एक मनुष्य को याजक ठहराता है, और उसे अकेले जाने, और अपक्की भेंट परमेश्वर के भवन पर रखने की आज्ञा देता है।

19) कास्पर ने कहा, फारस में लोग डर के मारे चलते हैं; वे गलत करने के डर से अच्छा करते हैं।

20) शैतान हमारे देश में सबसे बड़ी शक्ति है, और एक मिथक होने के बावजूद, वह अपने घुटने पर युवा और उम्र दोनों में रहता है।

21) हमारा देश अन्धकारमय है, और अन्धकार में बुराई फलती-फूलती है।

22) हर गुजरती हवा पर डर सवार हो जाता है और जीवन के हर रूप में दुबक जाता है।

23) बुराई का डर एक मिथक है, एक भ्रम और एक फंदा है; परन्तु वह तब तक जीवित रहेगा जब तक कि कोई शक्तिशाली शक्ति आकाश को प्रकाश के स्तर तक उठाने के लिए न आ जाए।

24) जब ऐसा होगा तो जादूगर भूमि प्रकाश में गौरवान्वित होगी। फारस की आत्मा प्रकाश की मांग करती है।

अध्याय 57

साधु-संतों का मिलन जारी रहा। उद्घाटन के पते। यीशु आता है। सात दिन का मौन।

अश्बीना ने कहा, अश्शूर सन्देह का देश है; मेरे लोगों का रथ, जिसमें वे ज्यादातर सवारी करते हैं, संदेह का लेबल है।

2) एक बार विश्वास बाबुल में चला गया; और वह उज्ज्वल और गोरी थी; परन्तु वह ऐसे श्वेत वस्त्र पहिने हुए थी, कि लोग उससे डरते थे।

3) और सब पहिए फिरने लगे, और सन्देह ने उस से युद्ध किया, और उसे देश से निकाल दिया; और वह फिर नहीं लौटी।

4) रूप में पुरुष भगवान की पूजा करते हैं, एक; दिल में उन्हें यकीन नहीं होता कि भगवान मौजूद हैं।

5) आस्था किसी के मंदिर में पूजा नहीं करती है; लेकिन संदेह उसे भगवान देखना चाहिए।

6) सभी असीरिया की सबसे बड़ी जरूरत विश्वास है - एक विश्वास जो हर चीज को निश्चितता के साथ मौसम देता है।

7) और फिर अपोलो ने कहा, ग्रीस की सबसे बड़ी जरूरत ईश्वर की सच्ची अवधारणाएं हैं।

8) ग्रीस में थियोगोनी पतवार रहित है, क्योंकि हर विचार एक देवता हो सकता है, और एक देवता के रूप में पूजा जाता है।

9) विचार का दायरा चौड़ा है, और तीखे विरोधियों से भरा है; और इस प्रकार देवताओं का घेरा शत्रुता और युद्धों और धूर्त षडयंत्रों से भरा हुआ है।

10) ग्रीस को देवताओं के ऊपर खड़े होने के लिए एक मास्टर माइंड की आवश्यकता है; मनुष्यों के विचारों को बहुत से देवताओं से दूर एक परमेश्वर के पास ले जाना।

11) हम जानते हैं कि प्रकाश पहाड़ियों पर आ रहा है। भगवान प्रकाश को गति दें।

12) मथेनो ने कहा, इस रहस्य की भूमि को निहारना! मृतकों का यह मिस्र!

13) हमारे मंदिर लंबे समय से समय की सभी छिपी चीजों की कब्रें रहे हैं; हमारे मंदिर, तहखाना और गुफाएं अँधेरी हैं।

14) प्रकाश में कोई गुप्त वस्तु नहीं होती। सूर्य सभी छिपे हुए सत्य को प्रकट करता है। भगवान में कोई रहस्य नहीं हैं।

15) उगते सूरज को निहारना! उसकी किरणें हर द्वार में प्रवेश कर रही हैं; हाँ, मिज़्राइम के रहस्यवादी तहखानों की हर दरार।

16) हम प्रकाश की जय हो! सारा मिस्र प्रकाश को तरसता है।

17) और फिलो ने कहा, इब्रानी विचार और जीवन की आवश्यकता स्वतंत्रता है।

18) इब्रानी भविष्यद्वक्ता, द्रष्टा, और व्यवस्था देनेवाले, सामर्थी, पवित्र विचार वाले व्यक्ति थे, और उन्होंने हमें एक आदर्श दर्शन की प्रणाली दी थी; एक पर्याप्त मजबूत और हमारे लोगों को पूर्णता के लक्ष्य तक ले जाने के लिए पर्याप्त है।

19) लेकिन शारीरिक दिमागों ने पवित्रता को अस्वीकार कर दिया; स्वार्थ से भरा पौरोहित्य उत्पन्न हुआ, और हृदय में पवित्रता एक मिथक बन गई; लोगों को गुलाम बनाया गया।

20) याजकपद इस्राएल का श्राप है; परन्तु जब वह आएगा, जो आने वाला है, तो दासोंके लिथे छुटकारे का प्रचार करेगा; मेरे लोग स्वतंत्र होंगे।

21) देखो, क्योंकि परमेश्वर ने देहधारी ज्ञान, प्रेम और ज्योति को बनाया है, जिसे उसने इम्मानुएल कहा है।

22) उसे भोर को खोलने की कुंजियाँ दी गई हैं; और यहाँ वह मनुष्य की नाईं हमारे संग चलता है।

23) और फिर परिषद कक्ष का दरवाजा खोला गया और लोगो दुनिया के संतों के बीच खड़े हो गए।

24) फिर से ऋषि सात दिन मौन बैठे रहे।

अध्याय 58

साधु-संतों का मिलन जारी रहा। सात सार्वभौमिक अभिधारणाओं की प्रस्तुति।

अब, जब ऋषि तरोताजा हो गए तो उन्होंने जीवन की पुस्तक खोली और पढ़ा।

2) वे मनुष्य के जीवन की कहानी पढ़ते हैं; उसके सभी संघर्षों, हानियों, लाभों का; और पिछली घटनाओं और जरूरतों के आलोक में, उन्होंने देखा कि आने वाले वर्षों में उसके लिए सबसे अच्छा क्या होगा।

3) वे जानते थे कि उसकी संपत्ति के लिए किस तरह के कानून और नियम सबसे उपयुक्त हैं; उन्होंने सर्वोच्च ईश्वर-आदर्श देखा जिसे जाति समझ सकती थी।

4) इन सात सिद्धांतों पर इन ऋषियों को निर्माण करना था, जीवन के महान दर्शन और आने वाले युग की पूजा को आराम करना चाहिए।

5) अब मैंग-त्से सबसे पुराने ऋषि थे; उसने मुखिया की कुर्सी संभाली, और कहा,

6) मनुष्य विश्वास से जीने के लिए इतना उन्नत नहीं है; वह उन चीजों को नहीं समझ सकता जो उसकी आंखें नहीं देखतीं।

7) वह अभी भी बच्चा है, और आने वाले सभी युगों में उसे चित्रों, प्रतीकों, संस्कारों और रूपों द्वारा सिखाया जाना चाहिए।

8) उसका परमेश्वर एक मानव परमेश्वर होना चाहिए; वह विश्वास से किसी परमेश्वर को नहीं देख सकता।

9) और तब वह स्वयं पर शासन नहीं कर सकता; राजा को शासन करना चाहिए; आदमी को सेवा करनी चाहिए।

10) इसके बाद का युग मनुष्य का युग होगा, विश्वास का युग।

11) उस आनंदमय युग में मानव जाति शारीरिक आंखों की सहायता के बिना देखेगी; ध्वनिहीन ध्वनि सुनेंगे; आत्मा-ईश्वर को जानेंगे।

12) हम जिस उम्र में प्रवेश करते हैं वह तैयारी का युग है, और सभी स्कूलों और सरकारों और पूजा संस्कारों को सरल तरीके से तैयार किया जाना चाहिए ताकि लोग समझ सकें।

13) और मनुष्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती; वह उन प्रतिमानों के अनुसार बनाता है जिन्हें वह देखता है; इसलिए इस परिषद में हमें आने वाले युग के लिए पैटर्न तैयार करना चाहिए।

14) और हमें आत्मा के साम्राज्य की सूक्ति तैयार करनी चाहिए, जो सात अभिधारणाओं पर टिकी हुई है।

15) प्रत्येक ऋषि बारी-बारी से एक अभिधारणा बनाएगा; और जब तक सिद्ध युग न आ जाए, तब तक यह मनुष्यों के विश्वास-कथन का आधार होगा।

16) तब मेंग-त्से ने पहला लिखा:

17) सब कुछ सोचा जाता है; सारा जीवन विचार गतिविधि है। प्राणियों की भीड़ केवल एक महान विचार के प्रकट होने के चरण हैं। लो, ईश्वर विचार है, और विचार ईश्वर है।

18) तब विद्यापति ने दूसरी अभिधारणा लिखी:

19) शाश्वत विचार एक है; संक्षेप में यह दो है - बुद्धि और बल; और जब वे सांस लेते हैं तो एक बच्चा पैदा होता है; यह बच्चा प्यार है।

20) और इस प्रकार त्रिएक परमेश्वर खड़ा है, जिसे लोग पिता-माता-बालक कहते हैं।

21) यह त्रिएक परमेश्वर एक है; परन्तु ज्योति के समान वह सारत: सात है।

22) और जब त्रिएक परमेश्वर श्वास लेता है, तो देखो, उसके सम्मुख सात आत्माएं खड़ी होती हैं; ये रचनात्मक गुण हैं।

23) मनुष्य उन्हें छोटे देवता कहते हैं, और उन्होंने अपने स्वरूप के अनुसार मनुष्य को बनाया है।

24) और कास्पर ने तीसरा लिखा:

25) मनुष्य ईश्वर का एक विचार था, जो सेप्टोनेट की छवि में बना था, जो आत्मा के पदार्थों में लिपटा हुआ था।

26) और उसकी अभिलाषा प्रबल थी; उसने जीवन के हर तल पर प्रकट होने की कोशिश की, और अपने लिए उसने सांसारिक रूपों के ईथरों का एक शरीर बनाया, और इस तरह पृथ्वी के तल पर उतरा।

27) इस वंश में उसने अपना जन्मसिद्ध अधिकार खो दिया; परमेश्वर के साथ अपना सामंजस्य खो दिया, और जीवन के सभी नोटों को कलहपूर्ण बना दिया।

28) सद्भाव और बुराई एक ही हैं; मनुष्य की करतूत इतनी बुरी है।

29) अशबीना ने चौथा लिखा:

30) बीज प्रकाश में अंकुरित नहीं होते हैं; वे तब तक नहीं बढ़ते जब तक उन्हें मिट्टी नहीं मिल जाती, और वे प्रकाश से दूर छिप जाते हैं।

31) मनुष्य को अनन्त जीवन का बीज विकसित किया गया था; लेकिन त्रिएक परमेश्वर के पंखों में बीज उगने के लिए प्रकाश बहुत अधिक था;

32) और इसलिए मनुष्य ने सांसारिक जीवन की भूमि की खोज की, और पृथ्वी के अन्धकार में उसे एक स्थान मिला जहाँ वह अंकुरित और विकसित हो सकता था।

33) बीज ने जड़ पकड़ ली है और अच्छी तरह से विकसित हो गया है।

34) मानव जीवन का वृक्ष मिट्टी की मिट्टी से उग रहा है, और, प्राकृतिक कानून के तहत, पूर्ण रूप तक पहुंच रहा है।

35) मनुष्य को शारीरिक जीवन से आत्मिक आशीष की ओर उठाने के लिए परमेश्वर के कोई अलौकिक कार्य नहीं हैं; वह जैसे-जैसे पौधा बढ़ता है वैसे-वैसे बढ़ता है, और समय आने पर वह सिद्ध हो जाता है।

36) आत्मा का वह गुण जो मनुष्य के लिए आध्यात्मिक जीवन की ओर बढ़ना संभव बनाता है, वह है पवित्रता।

अध्याय 59

साधु-संतों का मिलन जारी रहा। शेष बतलाते हैं। ऋषि यीशु को आशीर्वाद देते हैं। सात दिन का मौन।

अपोलो ने पांचवां लिखा:

2) चार सफेद घोड़ों द्वारा आत्मा को पूर्ण प्रकाश की ओर खींचा जाता है, और ये हैं इच्छा, और विश्वास, और सहायकता और प्रेम।

3) वह जो करना चाहता है, उसके पास करने की शक्ति है।

4) उस शक्ति का ज्ञान ही विश्वास है; और जब आस्था चलती है, आत्मा अपनी उड़ान शुरू करती है।

5) एक स्वार्थी विश्वास प्रकाश की ओर नहीं ले जाता। प्रकाश के रास्ते में कोई अकेला तीर्थयात्री नहीं है। पुरुष केवल दूसरों को ऊंचाई हासिल करने में मदद करके ही ऊंचाइयां हासिल करते हैं।

6) आत्मिक जीवन की ओर ले जाने वाला घोड़ा प्रेम है; शुद्ध निःस्वार्थ प्रेम है।

7) मैथेनो ने छठा लिखा:

8) जिस सार्वभौमिक प्रेम के बारे में अपोलो बोलता है, वह ज्ञान और इच्छा परमात्मा की संतान है, और ईश्वर ने पृथ्वी पर भेजा है, जिसे मनुष्य जान सकता है।

9) ऋषि जिस सार्वभौमिक प्रेम की बात करते हैं, वह मसीह है।

10) सभी समयों का सबसे बड़ा रहस्य इस बात में निहित है कि मसीह हृदय में कैसे रहता है।

11) मसीह शारीरिक चीजों की चिपचिपी मांद में नहीं रह सकता। सात लड़ाइयाँ अवश्य लड़ी जानी चाहिए, शारीरिक चीजों से पहले जीती गई सात जीतें, जैसे भय, और स्वयं, भावनाएँ और इच्छाएँ, दूर हो जाती हैं।

12) जब ऐसा किया जाएगा तो मसीह आत्मा पर अधिकार कर लेगा; काम हो गया है, और मनुष्य और परमेश्वर एक हैं।

13) और फिलो ने सातवां लिखा:

14) एक सिद्ध पुरुष! त्रिगुणात्मक ईश्वर के सामने एक ऐसा प्राणी लाने के लिए जिसे प्रकृति ने बनाया था।

15) यह पराकाष्ठा जीवन के रहस्य का सर्वोच्च रहस्योद्घाटन है।

16) जब शारीरिक चीजों के सभी सार आत्मा में परिवर्तित हो जाते हैं, और आत्मा के सभी सार पवित्र श्वास में वापस आ जाते हैं, और मनुष्य को एक पूर्ण ईश्वर बना दिया जाता है, तो सृष्टि का नाटक समाप्त हो जाएगा। और यह सब है।

17) और सब मुनियोंने कहा, आमीन।

18) तब मेंग-त्से ने कहा, पवित्र ने हमारे पास एक मनुष्य को भेजा है, जो अनगिनत वर्षों के परिश्रम से प्रकाशित हुआ है, कि मनुष्यों के विचारों की अगुवाई करे।

19) यह मनुष्य, स्वर्ग और पृथ्वी के सभी मास्टर दिमागों द्वारा अनुमोदित, यह गलील का आदमी, यह यीशु, दुनिया के सभी ऋषियों का प्रमुख, हम खुशी से पहचानते हैं।

20) इस ज्ञान की पहचान के लिए जो वह मनुष्यों के लिए लाता है, हम उसे कमल का माल्यार्पण करते हैं।

21) हम उसे दुनिया के सातों संतों के सभी आशीर्वाद के साथ भेजते हैं।

22) तब सब मुनियों ने यीशु के सिर पर हाथ रखकर एक मन से कहा, परमेश्वर की स्तुति करो!

23) क्योंकि हे मसीह, बुद्धि, आदर, महिमा, सामर्थ, धन, आशीष, बल, सदा तेरे हैं।

24) और हर एक प्राणी ने कहा, आमीन।

25 तब ऋषि सात दिन तक चुपचाप बैठे रहे।

अध्याय 60

यीशु ने सात ऋषियों को संबोधित किया। पता। यीशु गलील जाता है।

सात दिन का मौन बीत गया और यीशु ने ऋषियों के साथ बैठकर कहा:

2) इन अमर अभिधारणाओं में जीवन का इतिहास अच्छी तरह से संघनित है। ये वे सात पहाड़ियाँ हैं जिन पर पवित्र नगर बनाया जाएगा।

3) ये सात निश्चित नींव के पत्थर हैं जिन पर यूनिवर्सल चर्च खड़ा होगा।

4) मुझे जो काम सौंपा गया है उसे करने में मैं रास्ते के खतरों से पूरी तरह वाकिफ हूं; प्याला पीने के लिए कड़वा होगा और मानव स्वभाव अच्छी तरह से सिकुड़ सकता है।

5) लेकिन मैंने पवित्र श्वास में अपनी इच्छा खो दी है, और इसलिए मैं बोलने और कार्य करने के लिए अपने तरीके से जाता हूं क्योंकि मैं पवित्र श्वास से बोलने और कार्य करने के लिए प्रेरित होता हूं।

6) जो शब्द मैं बोलता हूं वे मेरे अपने नहीं हैं; वे उसी के वचन हैं जिसकी मैं इच्छा करूंगा।

7) मनुष्य पवित्र विचार में इतना आगे नहीं है कि विश्व कलीसिया को समझ सके, और इसलिए परमेश्वर ने मुझे जो कार्य करने के लिए दिया है, वह उस गिरजाघर का निर्माण नहीं है।

8) मैं एक मॉडल निर्माता हूं, जिसे चर्च का एक नमूना बनाने के लिए भेजा गया है - एक ऐसा पैटर्न जिसे युग समझ सकता है।

9) आदर्श निर्माता के रूप में मेरा कार्य मेरी जन्मभूमि के भीतर है, और वहाँ, इस धारणा पर कि प्रेम ईश्वर का पुत्र है, कि मैं यह प्रकट करने आया हूँ कि प्रेम, आदर्श चर्च खड़ा होगा।

10) और मैं नीच लोगों में से बारह लोगों को चुनूंगा, जो बारह अमर विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं; और ये मॉडल चर्च होंगे।

11) यहूदा का घराना, जो शरीर में मेरा अपना परिवार है, दुनिया के लिए मेरे मिशन के बारे में बहुत कम समझेगा।

12) और वे मुझे ठुकराएंगे, मेरे काम का तिरस्कार करेंगे, मुझ पर झूठा आरोप लगाएंगे, मुझे बांधेंगे, मुझे शारीरिक पुरुषों के न्याय आसन पर ले जाएंगे जो मुझे दोषी ठहराएंगे और क्रूस पर मार देंगे।

13) लेकिन मनुष्य सत्य को कभी नहीं मार सकते; भले ही निर्वासित कर दिया गया हो, यह फिर से अधिक शक्ति में आ जाएगा; क्योंकि सत्य संसार को अपने वश में कर लेगा।

14) आदर्श चर्च जीवित रहेगा। यद्यपि शारीरिक मनुष्य स्वार्थ के लिए अपने पवित्र नियमों, प्रतीकात्मक संस्कारों और रूपों का वेश्यावृत्ति करेगा, और इसे केवल एक बाहरी दिखावा बना देगा, कुछ लोग इसके माध्यम से आत्मा का राज्य पाएंगे।

15) और जब बेहतर युग आएगा तो यूनिवर्सल चर्च सात पदों पर खड़ा होगा और दिए गए पैटर्न के अनुसार बनाया जाएगा।

16) समय आ गया है; मैं यरूशलेम को जाता हूं, और जीवित विश्वास की शक्ति से, और उस शक्ति से जो तू ने दी है।

17) और परमेश्वर, हमारे पिता-परमेश्वर के नाम पर, आत्मा का राज्य सात पहाड़ियों पर स्थापित किया जाएगा।

18) और पृथ्वी के सब लोग, कुल, और भाषाएं उस में प्रवेश करेंगी।

19) शांति का राजकुमार सत्ता के सिंहासन पर अपना आसन ग्रहण करेगा; त्रिएक परमेश्वर तब सब में होगा।

20) और सब ऋषियोंने कहा, आमीन।

21) और यीशु अपना मार्ग चला, और बहुत दिनोंके बाद यरूशलेम को पहुंचा; और फिर उसने गलील में अपना घर ढूंढ़ लिया।

भाग 1 का अंत

भाग 2

भाग 2/धारा XIII

ईसा मसीह

नासरत के ईसा मसीह की 3 साल की सेवकाई

(**उम्र** 30 **से** 33)

खंड XIII

MEM

जॉन द हरबिंगर मंत्रालय

(**अध्याय** 61-64)

अध्याय 61

जॉन, अग्रदूत, हेब्रोन लौटता है। जंगलों में एक साधु के रूप में रहता है। यरूशलेम का दौरा किया और लोगों से बात की।

यह तब हुआ जब जकर्याह और एलिजाबेथ के बेटे जॉन ने मिस्र के स्कूलों में अपनी सारी पढ़ाई पूरी कर ली थी, कि वह हेब्रोन लौट आए, जहां वह कुछ दिनों के लिए रहे।

2) और फिर उसने जंगल की खोज की और दाऊद की गुफा में अपना घर बना लिया, जहां कई साल पहले, उसे मिस्र के ऋषि ने निर्देश दिया था।

3) कुछ लोग उसे एंगेडी का हर्मिट कहते थे; और औरों ने कहा, वह पहाड़ियों का जंगली मनुष्य है।

4) उसने अपने आप को पशुओं की खाल पहिनाया; उसका भोजन कैरब, शहद, मेवा और फल थे।

5) जब यूहन्ना तीस वर्ष का हुआ, तब वह यरूशलेम को गया, और सात दिन तक बाजार में चुपचाप बैठा रहा।

6) आम लोग, और याजक, शास्त्री और फरीसी, पहाड़ों के मूक सन्यासी को देखने के लिए बहुत भीड़ में निकल आए; लेकिन कोई भी इतना साहसी नहीं था कि उससे पूछ सके कि वह कौन था।

7) परन्तु जब उसका मौन उपवास किया गया तो वह सबके बीच में खड़ा हो गया और कहा:

8) देखो राजा आ गया है; भविष्यद्वक्ताओं ने उसके विषय में कहा; ज्ञानियों ने लंबे समय से उसकी तलाश की है।

9) हे इस्राएल, अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

10) और वह बस इतना ही कहा, और फिर वह गायब हो गया, और कोई नहीं जानता था कि वह कहाँ गया था।

11) और सारे यरूशलेम में भारी अशांति फैल गई। शासकों ने पहाड़ियों के सन्यासी की कहानी सुनी।

12) और उन्होंने उससे बात करने के लिथे दूत भेजे, कि वे आनेवाले राजा के विषय में जान लें; लेकिन वे उसे नहीं ढूंढ सके।

13) कुछ दिनों के बाद वह फिर बाजार में आया, और सारा नगर उस की बातें सुनने को आया; उन्होंने कहा:

14) हे राज्य के हाकिमों, परेशान न हो; आने वाला राजा कोई विरोधी नहीं है; वह किसी पार्थिव सिंहासन पर कोई स्थान नहीं चाहता।

15) वह शांति के राजकुमार, धार्मिकता और प्रेम के राजा के पास आता है; उसका राज्य आत्मा के भीतर है।

16) मनुष्य की आंखें उसे नहीं देख पाएंगी, और शुद्ध मन को छोड़ कोई उसमें प्रवेश नहीं कर सकता।

17) हे इस्राएल, अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

18) फिर से, साधु गायब हो गया; लोगों ने उसके पीछे चलने का यत्न किया, परन्तु उस ने अपके रूप पर परदा डाल रखा था, और मनुष्य उसे न देख सके।

19) एक यहूदी पर्व का दिन आया; यरूशलेम फिलिस्तीन के हर हिस्से से यहूदियों और मतधारकों से भर गया था, और यूहन्ना ने मंदिर के आंगन में खड़े होकर कहा,

20) हे इस्राएल, अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

21) देखो, तुम पाप में जी चुके हो; दरिद्र तेरी गलियों में दोहाई देते हैं, और तू उन पर ध्यान नहीं देता।

22) आपके पड़ोसी, वे कौन हैं? आपने मित्र और शत्रु को समान रूप से धोखा दिया है।

23) तुम बोल और होठ से परमेश्वर की आराधना करते हो; तुम्हारे दिल दूर हैं और सोने पर सेट हैं।

24) तेरे याजकों ने प्रजा पर बहुत भारी बोझ ढोया है; वे गरीबों की मेहनत की कमाई पर आराम से रहते हैं।

25) आपके वकील, डॉक्टर, शास्त्री जमीन के बेकार बोझ हैं; वे राज्य के शरीर पर ट्यूमर हैं;

26) वे न परिश्रम करते हैं और न कताई करते हैं, तौभी वे तुम्हारे व्यापार के मंडियों के लाभ का उपभोग करते हैं।

27) तेरे हाकिम व्यभिचारी, अन्धेर करनेवाले और चोर हैं, और किसी मनुष्य के अधिकार के विषय में नहीं;

28) और लुटेरे अपनी बुलाहट पवित्र भवन में करते हैं; पवित्र मन्दिर जिसे तू ने चोरों को बेच दिया है; उनकी मांद प्रार्थना के लिए अलग किए गए पवित्र स्थानों में हैं।

29) सुनो! सुनो! तुम यरूशलेम के लोगों! सुधार: अपने बुरे मार्गों से फिरो, नहीं तो परमेश्वर तुम से फिरेगा, और अन्यजातियां दूर से आएंगी, और जो कुछ तुम्हारे सम्मान और प्रसिद्धि से बचा है, वह एक घंटे में बीत जाएगा।

30) हे यरूशलेम, अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

31) उसने और नहीं कहा; वह दरबार से चला गया, और किसी ने उसे जाते नहीं देखा।

32) याजक, चिकित्सक और शास्त्री सब क्रोध में थे। उन्होंने जॉन को नुकसान पहुंचाने के इरादे से मांग की। उन्होंने उसे नहीं पाया।

33) आम लोग उसके बचाव में खड़े रहे; उन्होंने कहा, सन्यासी सच बोलता है।

34) तब याजक, चिकित्सक और शास्त्री बहुत डर गए; उन्होंने और नहीं कहा; उन्होंने खुद को छुपा लिया।

अध्याय 62

जॉन, अग्रदूत, फिर से यरूशलेम का दौरा करता है। लोगों से बात करता है। सात दिनों में गिलगाल में उनसे मिलने का वादा किया। बेथानी जाता है और एक भोज में भाग लेता है।

अगले दिन यूहन्ना फिर मन्दिर के आंगन में गया और कहा,

2) हे इस्राएल, अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

3) महायाजक और शास्त्री उसके शब्दों का अर्थ जानेंगे; उन्होंने कहा,

4) निडर, इस संदेश का क्या मतलब है जो आप इस्राएल के लिए लाते हैं? यदि आप द्रष्टा और नबी हैं, तो हमें स्पष्ट रूप से बताएं कि आपको यहां किसने भेजा है?

5) यूहन्ना ने उत्तर दिया, मैं उस का शब्द हूं जो जंगल में दोहाई देता है, मार्ग तैयार कर, मार्ग सीधा कर, क्योंकि देख, शान्ति का राजकुमार प्रेम से राज्य करने आएगा।

6) आपके भविष्यवक्ता मलाकी ने परमेश्वर के वचनों को लिखा:

7) और प्रतिशोध के दिन के आने से पहिले मैं एलिय्याह को तुम्हारे पास भेजूंगा, कि मनुष्योंके मन परमेश्वर की ओर फिरें, और यदि वे न फिरें, तो देख, मैं उन्हें शाप देकर मारूंगा।

8) हे इस्राएल के लोगों; तुम अपने पापों को जानते हो। जब मैं आगे बढ़ रहा था, तो मैं ने तेरी गलियों में एक घायल पक्षी को देखा, और हर वर्ग के लोग उसे डंडों से पीट रहे थे; और फिर मैंने देखा कि उसका नाम न्याय है।

9) मैं ने फिर देखा और देखा कि उसका साथी मारा गया है; धार्मिकता के शुद्ध सफेद पंखों को धूल में रौंदा गया।

10) मैं तुम लोगों से कहता हूं; तुम्हारे अपराधबोध की भयावहता ने अधर्म का कुंड बना दिया है जो स्वर्ग में एक भयानक बदबू भेजता है।

11) सुधार, हे इस्राएल, सुधार; अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

12) तब यूहन्ना मुड़ा और जाते-जाते उसने कहा,

13) सात दिन के बाद मैं गिलगाल में यरदन के तट के पास खड़ा रहूंगा, जहां इस्राएल ने पहिले प्रतिज्ञा की हुई भूमि को पार किया था।

14) और फिर वह मन्दिर के प्रांगण से निकलकर उस में फिर न जाने के लिये निकला; परन्तु बहुत से लोग उसके पीछे पीछे बैतनिय्याह तक गए, और वहां वह अपके कुटुम्बी लाजर के घर में ठहरा रहा।।

15) चिन्तित लोग घर के चारों ओर इकट्ठे हो गए, और न जाने लगे; तब यूहन्ना ने आकर कहा,

16) सुधार, हे इस्राएल, सुधार; अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

17) इस्राएल के सब पाप याजक और शास्त्री के द्वार पर नहीं रहते। क्या तुम नहीं सोचते, कि यहूदिया के सब पापी हाकिमों और धनवानों में पाए जाते हैं।

18) यह कोई संकेत नहीं है कि मनुष्य अच्छा और शुद्ध है क्योंकि वह अभाव में रहता है।

19) पृथ्वी के बेकाबू, बेकाबू आवारा लोग ज्यादातर गरीब हैं और उन्हें रोटी के लिए भीख मांगनी पड़ती है।

20) मैं ने उन पुरूषों को देखा जो जयजयकार करते थे, क्योंकि मैं ने याजकों और शास्त्रियों से कहा था, कि मनुष्य के साथ अन्याय करो, पथराव करो और बेचारे न्यायी को सड़कों पर मारो।

21) मैं ने उन्हें धर्म के दीन मरे हुए पक्षी को रौंदते देखा;

22) और तुम जो मेरे पीछे हो लेते हो, हे सामान्य लोगों, अपराध करने वाले शास्त्रियों और याजकों से एक भी पीछे नहीं हैं।

23) हे इस्राएल के लोगों, सुधार करो; राजा आया है; अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

24) जॉन लाजर और उसकी बहनों के साथ कुछ दिनों तक रहा।

25) नासरी के सम्मान में एक दावत रखी गई, और सब लोग तख़्त के चारों ओर खड़े हो गए।

26) और जब नगर के प्रधानोंने चमचमाती दाखमधु उंडेलकर यूहन्ना को एक कटोरा दिया, तब उस ने उसे लेकर हवा में ऊंचा रखा, और कहा,

27) दाखरस शारीरिक मन को प्रसन्न करता है, और मनुष्य के मन को उदास करता है; वह गहरी कड़वाहट में डूब जाता है और मनुष्य की मृत्युहीन आत्मा को पीटा जाता है।

28) मैं ने नज़र की मन्नत तब मानी, जब वह बालक था, और मेरे होठों से एक बूंद भी न छूटी।

29) और यदि तुम आनेवाले राजा को प्रसन्न करना चाहते हो, तो प्याले से ऐसे दूर रहना जैसे तुम किसी घातक वस्तु से दूर रहना चाहते हो।

30) और फिर उसने जगमगाती दाख-मदिरा को सड़क पर फेंक दिया।

अध्याय 63

जॉन, अग्रदूत, जेरिको का दौरा करता है। गिलगाल में लोगों से मिले। अपने मिशन की घोषणा करता है। बपतिस्मा के संस्कार का परिचय देता है। कई लोगों को बपतिस्मा देता है। बेथानी लौटता है और सिखाता है। जॉर्डन को लौटें।

और यूहन्ना यरीहो को गया; वहाँ वह अल्फियस के साथ रहा।

2) और जब लोगों ने सुना कि वह वहां है, तो वे उसकी बातें सुनने के लिए भीड़ में आ गए।

3) उसने किसी से बात नहीं की; परन्तु समय आने पर वह यरदन के घाट पर गया, और भीड़ से उस ने कहा,

4) सुधार करो और पवित्रता के फव्वारे में अपने सभी पापों को धो लो; राज्य हाथ में है।

5) मेरे पास आओ और इस धारा के जल में धोओ, आत्मा की आंतरिक शुद्धि का प्रतीक।

6) और देखो, भीड़ उतर आई, और यरदन में वे धोए गए, और सब ने अपके अपके अपके पाप मान लिये।

7) यूहन्ना ने चारों ओर के सब क्षेत्रों में बहुत महीनों तक पवित्रता और धार्मिकता की याचना की, और बहुत दिनों के बाद वह फिर बैतनिय्याह चला गया; और वहाँ उन्होंने पढ़ाया।

8) पहले तो कुछ ईमानदार साधक आए; लेकिन, धीरे-धीरे, स्वार्थी और शातिर बिना पछतावे के आए; आया क्योंकि बहुत आए थे।

9) और जब यूहन्ना ने अपश्चातापी फरीसियों और सदूकियों को अपने पास आते देखा, तो उस ने कहा,

10) हे सांपों के बच्चों, ठहरो; क्या आप क्रोध आने की खबर से परेशान हैं?

11) जाओ, और उन कामों को करो जो पश्चाताप को वास्तविक साबित करते हैं।

12) क्या आपके लिए यह कहना काफी है कि आप इब्राहीम के वारिस हैं? मैं आपको बताता हूं, नहीं।

13) इब्राहीम के वारिस परमेश्वर की दृष्टि में उतने ही दुष्ट हैं जितने कि वे किसी अन्यजाति के समान पाप करते हैं।

14) कुल्हाड़ी को निहारना! और हर एक पेड़ जो हितकर फल नहीं लाता, वह जड़ से काटा और आग में झोंक दिया जाता है।

15) तब लोगों ने पूछा, हम क्या करें?

16) और यूहन्ना ने उत्तर दिया, सब मनुष्यों की सहायता की सेवकाई को स्वीकार करो; जो कुछ तुम्हारे पास है उसे अपने स्वार्थ पर खर्च न करो।

17) जिसके पास दो कुरते हों, वह उसे दे, जिसके पास कुरता न हो; अपने सभी भोजन का हिस्सा जरूरतमंदों को दें।

18) और चुंगी लेने वालों ने आकर पूछा, हम क्या करें? यूहन्ना ने उन्हें उत्तर दिया,

19) अपने काम में ईमानदार रहो; अपने द्वारा एकत्रित की जाने वाली श्रद्धांजलि को स्वार्थी लाभ के लिए मत बढ़ाओ; अपने राजा की मांग से अधिक कुछ न लें।

20) और जब सिपाहियोंने आकर पूछा, हम क्या करें? अग्रदूत ने उत्तर दिया,

21) किसी के साथ हिंसा न करें; कोई गलत बात न करें और आपको मिलने वाली मजदूरी से संतुष्ट रहें।

22) यहूदियों में बहुत से ऐसे थे जो मसीह के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे, और वे यूहन्ना को मसीह मानते थे।

23) परन्तु यूहन्ना ने उनके प्रश्नों के उत्तर में कहा, मैं जल से शुद्ध करता हूं, जो आत्मा के शुद्ध होने का प्रतीक है; परन्तु जब वह आएगा जो आने वाला है, तो वह पवित्र श्वास में शुद्ध करेगा, और आग में शुद्ध करेगा।

24) उसका पंखा उसके हाथ में है, और वह गेहूँ और भूसी को अलग करेगा; भूसी फेंक देंगे, लेकिन गेहूं के एक-एक दाने को इकट्ठा करेंगे। हे मसीह।

25) देखो वह आता है! और वह तुम्हारे संग चलेगा, और तुम उसे नहीं जानोगे।

26) वह राजा है; मैं उसके जूतों की कुंडी खोलने के योग्य नहीं हूँ।

27) और यूहन्ना बैतनिय्याह को छोड़कर यरदन के घाट पर फिर चला गया।

अध्याय 64

यीशु गलील आता है और यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया जाता है। पवित्र श्वास उसके मसीहा होने की पुष्टि करता है।

यह समाचार गलील तक पहुँचा, और यीशु भीड़ के साथ उस स्थान पर गया, जहां अग्रदूत घाट पर प्रचार कर रहा था।

2) यीशु ने अग्रदूत को देखकर कहा, देख, परमेश्वर का जन! सबसे महान द्रष्टाओं को निहारना! देखो, एलिय्याह लौट आया है!

3) उस दूत को देखो जिसे परमेश्वर ने मार्ग खोलने के लिए भेजा है! राज्य हाथ में है।

4) जब यूहन्ना ने यीशु को भीड़ के साथ खड़ा देखा तो उसने कहा, देख राजा जो परमेश्वर के नाम से आता है!

5) और यीशु ने यूहन्ना से कहा, मैं आत्मा की शुद्धि के प्रतीक के रूप में पानी में धोऊंगा।

6) यूहन्ना ने उत्तर दिया, तुझे धोने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि तू मन, वचन और कर्म में पवित्र है। और अगर आपको धोने की जरूरत है तो मैं संस्कार करने के योग्य नहीं हूं।

7) यीशु ने कहा, मैं मनुष्योंके लिथे आदर्श होकर आया हूं, और जो कुछ मैं उन से कहता हूं, वही करता हूं; और सब मनुष्यों को धोया जाना चाहिए, जो आत्मा के शुद्ध होने का प्रतीक है।

8) इस धुलाई को हम एक संस्कार के रूप में स्थापित करते हैं - बपतिस्मा संस्कार जिसे हम अभी कहते हैं, और इसलिए इसे कहा जाएगा।

9) तुम्हारा काम, भविष्यसूचक अग्रदूत, मार्ग तैयार करना और छिपी हुई बातों को प्रकट करना है।

10) जनसमूह जीवन के वचनों के लिए तैयार है, और मैं तुम्हारे द्वारा सारे जगत पर प्रगट होने के लिए आया हूं, जो त्रिएक परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के रूप में, और लोगों के लिए मसीह को प्रकट करने के लिए चुने हुए व्यक्ति के रूप में है।

11) तब यूहन्ना यीशु को नदी के किनारे नदी में ले गया और उसने उसे पवित्र नाम से बपतिस्मा दिया, जिसने उसे लोगों के सामने मसीह को प्रकट करने के लिए भेजा था।

12) और जैसे ही वे धारा से बाहर आए, पवित्र श्वास, कबूतर के रूप में, नीचे आया और यीशु के सिर पर बैठ गया।

13) स्वर्ग से यह शब्द निकला, यह परमेश्वर का प्रिय पुत्र, मसीह है, परमेश्वर का प्रेम प्रगट हुआ है।

14) जॉन ने आवाज सुनी और आवाज के संदेश को समझ लिया।

15) अब यीशु अपने रास्ते चला गया, और यूहन्ना ने भीड़ को प्रचार किया।

16) जितनों ने अपने पापों को मान लिया, और बुरे मार्गों से हटकर धर्म के मार्ग पर चले गए, तो अग्रदूत ने बपतिस्मा दिया, जो धार्मिकता से पापों को मिटाने का प्रतीक है।

भाग 2/धारा XIV

ईसा मसीह

(**उम्र** 30 **से** 33)

नासरत के ईसा मसीह की 3 साल की सेवकाई

खंड XIV

NUN

यीशु की क्रिस्टीन मंत्रालय - परिचयात्मक युग

(**अध्याय** 65 - 71)

अध्याय 65

यीशु आत्म-परीक्षा के लिए जंगल में जाता है, जहाँ वह चालीस दिन तक रहता है। तीन प्रलोभनों के अधीन है। वह मात देता है। जॉन के शिविरों में लौटता है और पढ़ाना शुरू करता है।

अग्रदूत ने मार्ग प्रशस्त किया था; लोगो को प्रेम के प्रकट होने के रूप में लोगों से मिलवाया गया था, और उसे अब अपनी क्रिस्टीन सेवकाई शुरू करनी चाहिए।

2) और वह परमेश्वर के साथ अकेले रहने के लिए जंगल में चला गया ताकि वह अपने भीतर के दिल में देख सके और उसकी ताकत और योग्यता को देख सके।

3) और वह आपस में बातें करता था; उसने कहा, मेरा निचला आत्म बलवान है; कई बंधनों से मैं शारीरिक जीवन से बंधा हुआ हूं।

4) क्या मुझमें पुरुषों के लिए स्वेच्छा से बलिदान देने और अपना जीवन देने की शक्ति है?

5) जब मैं मनुष्यों के साम्हने खड़ा होऊंगा, और वे मेरे मसीहा होने का प्रमाण मांगें, तब मैं क्या कहूं?

6) तब परीक्षा देनेवाले ने आकर कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इन पत्थरों को आज्ञा दे, कि वे रोटी बन जाएं।

7) यीशु ने कहा, कौन है जो परीक्षा चाहता है? यह कोई संकेत नहीं है कि कोई ईश्वर का पुत्र है क्योंकि वह चमत्कार करता है; शैतान शक्तिशाली काम कर सकते हैं।

8) क्या फिरौन के साम्हने काले जादूगरों ने बड़े बड़े काम नहीं किए थे?

9) मेरे वचन और कर्म जीवन के सभी क्षेत्रों में मेरे मसीहा होने का प्रमाण होंगे।

10) तब परीक्षा करने वाले ने कहा, यदि तू यरूशलेम में जाए, और मन्दिर के शिखर से उतरकर पृथ्वी पर गिरे, तो लोग विश्वास करेंगे कि तू ही परमेश्वर का भेजा हुआ मसीह है।

11) यह आप निश्चित रूप से कर सकते हैं; क्योंकि दाऊद ने यह नहीं कहा, कि वह अपके स्वर्गदूतोंको तेरे विषय में आज्ञा देता है, और वे अपके हाथ से सम्हाले रहेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तू गिर पड़े?

12) और यीशु ने कहा, मैं अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा नहीं कर सकता।

13) तब परीक्षा देनेवाले ने कहा, जगत पर दृष्टि कर; इसके सम्मान और इसकी प्रसिद्धि को निहारना! उसके सुखों और उसके धन को देखो!

14) यदि तू इनके लिए अपना प्राण देगा, तो वे तेरे हो जाएंगे।

15) परन्तु यीशु ने कहा, सब लुभावने विचार मुझ से दूर रहें। मेरा दिल स्थिर है; मैं इस दैहिक आत्मा को उसकी सारी व्यर्थ महत्वाकांक्षाओं और उसके अभिमान से ठुकराता हूँ।

16) यीशु ने चालीस दिनों तक अपने शरीर के साथ कुश्ती की; उसका उच्च स्व प्रबल हुआ। तब वह भूखा था, परन्तु उसके मित्रों ने उसे ढूंढ़ लिया और वे उसकी सेवा करने लगे।

17) तब यीशु ने जंगल छोड़ दिया और पवित्र सांस की चेतना में, वह जॉन के शिविरों में आया और सिखाया।

अध्याय 66

जॉन के छह शिष्य यीशु का अनुसरण करते हैं और उनके शिष्य बन जाते हैं। वह उन्हें पढ़ाता है। वे मौन में बैठते हैं।

यूहन्ना के अनुयायियों में गलील के बहुत से पुरुष थे। सबसे अधिक भक्त थे अन्द्रियास, शमौन, याकूब और यूहन्ना, फिलिप्पुस और उसके भाई बेथसैदा के साथ।

2) एक दिन जब अन्द्रियास, फिलिप्पुस और जब्दी का एक पुत्र, अग्रदूत के साथ बात कर रहे थे, लोगो आया, और यूहन्ना ने कहा, देखो मसीह!

3) तब तीनों चेले यीशु के पीछे हो लिए, और उस ने पूछा, तुम क्या ढूंढ़ते हो?

4) और चेलों ने पूछा, तुम कहाँ रहते हो? और यीशु ने उत्तर दिया, आओ और देखो।

5) अन्द्रियास ने अपने भाई शमौन को बुलाकर कहा, मेरे साथ आओ, क्योंकि मैं ने मसीह को पा लिया है।

6) यीशु ने शमौन के चेहरे पर दृष्टि करके कहा, देखो, एक चट्टान है! और पतरस तेरा नाम है।

7) और फिलिप्पुस ने नतनएल को वृक्ष के पास बैठा पाया, और कहा, हे मेरे भाई, मेरे संग चल, क्योंकि मैं ने मसीह को पा लिया है! नासरत में वह रहता है।

8) नतनएल ने कहा, क्या नासरत से कुछ भला हो सकता है? और फिलिप्पुस ने उत्तर दिया, आओ और देखो।

9) यीशु ने नतनएल को आते देखकर कहा, देखो, एक इस्राएली सचमुच में कपट नहीं है!

10) नतनएल ने कहा, तुम मेरे विषय में ऐसा कैसे कह सकते हो?

11) यीशु ने कहा, मैं ने तुझे उस अंजीर के पेड़ के नीचे बैठे देखा, जो तेरे भाई के बुलाने से पहिले था।

12) नतनएल ने हाथ उठाकर कहा, यह निश्चय ही राजा मसीह है, जिसके लिए अग्रदूत ने बार-बार गवाही दी है।

13) और यूहन्ना ने जाकर अपने भाई याकूब को पाया और उसे मसीह के पास ले आया।

14) छह शिष्य यीशु के साथ उस स्थान पर गए जहाँ वह रहता था।

15) पतरस ने कहा, हम बहुत दिनों से मसीह को खोज रहे हैं। हम गलील से यूहन्ना के पास आए; हमने सोचा कि वह मसीह है, परन्तु उसने हमारे सामने अंगीकार किया कि वह नहीं था;

16) कि वह मार्ग को ठीक करने और आनेवाले राजा के लिए मार्ग को सुगम बनाने के लिए भेजा गया था; और जब तुम आए तो उस ने कहा, देख, मसीह!

17) और हम खुशी-खुशी उसका अनुसरण करेंगे जहाँ आप जाते हैं। हे प्रभु, बताओ क्या करना है।

18) यीशु ने कहा, पृथ्वी की लोमडिय़ोंके घर, चिड़ियोंके बसेरे हैं; मेरे पास सिर रखने की जगह नहीं है।

19) जो मेरा अनुसरण करेगा, वह स्वयं की सभी लालसाओं को त्याग देगा और जीवन को बचाने में अपना जीवन खो देगा।

20) मैं खोए हुओं का उद्धार करने आता हूं, और मनुष्य तब बच जाता है जब वह अपके हाथ से छुड़ाया जाता है। लेकिन लोग मसीह के इस सिद्धांत को समझने में धीमे हैं।

21) पतरस ने कहा, मैं किसी और की ओर से कुछ नहीं कह सकता, परन्तु अपनी ओर से कहता हूं: मैं सब कुछ छोड़कर जहां तुम ले जाओगे उसके पीछे हो लूंगा।

22) तब औरोंने कहा, तुम्हारे पास सत्य की बातें हैं; तुम परमेश्वर की ओर से आए हो, और यदि हम तुम्हारे पदचिन्हों पर चलें, तो हम मार्ग से नहीं चूक सकते।

23) तब यीशु और छह शिष्य एक लंबे, लंबे समय तक मौन विचार में बैठे रहे।

<u>अध्याय 67</u>

यीशु जॉर्डन में जॉन से मिलने जाते हैं। लोगों को अपना पहला क्रिस्टीन संबोधन देता है। पता। वह अपने शिष्यों के साथ बैतनिय्याह जाता है।

अब, कल को यीशु फिर आया और यूहन्ना के साथ घाट के पास खड़ा हो गया; और यूहन्ना बोलने को उस पर प्रबल हुआ, और खड़े होकर कहा,

2) हे इस्राएल के लोगों, सुनो! राज्य हाथ में है।

3) देखो, युग का महान कुंजी-रक्षक तुम्हारे बीच में खड़ा है; और वह एलिय्याह की आत्मा के साथ आया है।

4) देखो, उस ने चाभी फेर दी है; शक्तिशाली फाटक चौड़े हो जाते हैं, और जितने लोग राजा को नमस्कार करना चाहते हैं, वे सब उड़ जाते हैं।

5) इन महिलाओं, बच्चों, पुरुषों की भीड़ को निहारना! वे मार्ग में भीड़ लगाते हैं, वे बाहरी आंगनों पर भीड़ लगाते हैं; ऐसा लगता है कि प्रत्येक राजा से सबसे पहले मिलने का इरादा रखता है।

6) निहारना, सेंसर आता है और बुलाता है, जो कोई भी आ सकता है; परन्तु जो कोई आए वह अपने आप को हर प्रकार के बुरे विचार से दूर कर लेगा;

7) निम्न आत्म को संतुष्ट करने की इच्छा को दूर करना चाहिए; खोए हुए को बचाने के लिए अपनी जान देनी चाहिए।

8) तुम राज्य के फाटक के जितने निकट आते हो, वह कमरा उतना ही चौड़ा होता है; बहुसंख्यक चले गए हैं।

9) यदि मनुष्य अपने शारीरिक विचारों, अपनी वासनाओं और अभिलाषाओं के साथ राज्य में आ सकते हैं, तो सभी के लिए शायद ही कोई स्थान होगा।

10) परन्तु जब वे इन्हें सँकरे फाटक से नहीं ले जा सकते, तो वे मुँह मोड़ लेते हैं; कुछ लोग भीतर जाकर राजा को देखने के लिए तैयार हैं।

11) देखो, यूहन्ना एक शक्तिशाली मछुआरा है, जो मनुष्यों के प्राणों के लिए मछली पकड़ता है। वह अपना बड़ा जाल मानव जीवन के समुद्र में फेंक देता है; वह उसे खींचता है, और वह भर जाता है।

12) लेकिन क्या मेडली कैच! केकड़ों, और झींगा मछलियों, शार्क और रेंगने वाली चीजों की एक पकड़, कभी-कभी बेहतर प्रकार की मछली के साथ।

13) देखो, हजारों लोग पहाड़ियों के जंगली आदमी को सुनने के लिए आते हैं; वे भीड़ में आते हैं, कि वह उन्हें धुल में धोए, और वे अपने होठोंसे अपके पापोंको मान लें।

14) परन्तु जब दूसरे दिन आते हैं, तो हम उन्हें फिर से दुष्टता के गढ़ में पाते हैं, यूहन्ना की निन्दा करते हैं, और परमेश्वर को कोसते हैं, और राजा की निन्दा करते हैं।

15) परन्तु धन्य हैं वे जो मन के शुद्ध हैं, क्योंकि वे राजा को देखेंगे।

16) और धन्य हैं वे जो मन के बलवान हैं, क्योंकि वे हर आँधी चलने से न फटेंगे;

17) परन्तु जब चंचल और निर्बुद्धि लोग अपनी भूख मिटाने के लिए गाल और मांसल जड़ी-बूटियाँ लेने मिस्र देश को लौट गए हैं, तब शुद्ध मनवालों ने राजा को पाया है।

18) परन्तु जिनका विश्वास निर्बल है, और जो कुछ भी नहीं हैं, केवल शारीरिक प्रकट होते हैं, वे भी किसी दिन फिर आएंगे, और राजा को देखने के लिए आनन्द के साथ प्रवेश करेंगे।

19) हे इस्राएल के लोगों, इस भविष्यद्वक्ता को क्या कहना है, इस पर ध्यान दे! मन मजबूत हो; दिल से पवित्र हो; मदद में सतर्क रहें; राज्य हाथ में है।

20) यह कहकर यीशु चला गया, और अपने छः चेलों समेत बैतनिय्याह को आया; और वे बहुत दिन तक लाजर के साथ रहे।

अध्याय 68

यीशु बैतनिय्याह में लोगों से बात करता है। उन्हें बताता है कि दिल से पवित्र कैसे बनें। यरूशलेम जाता है और मंदिर में भविष्यवाणी की किताब से पढ़ता है। नासरत को जाता है।

यह समाचार शीघ्र ही विदेश में फैल गया कि इस्राएल का राजा यीशु बैतनिय्याह आया है, और नगर के सब लोग राजा को नमस्कार करने के लिए निकल आए हैं।

2) और यीशु, उनके बीच में खड़ा होकर कहा, निहारना, राजा तो आ गया है, लेकिन यीशु राजा नहीं है।

3) राज्य वास्तव में हाथ में है; परन्तु मनुष्य इसे शारीरिक आंखों से नहीं देख सकते; वे राजा को सिंहासन पर विराजमान नहीं देख सकते।

4) यह है आत्मा का राज्य; उसका सिंहासन कोई पार्थिव सिंहासन नहीं है; इसका राजा एक आदमी नहीं है।

5) जब मानव राजाओं को यहां राज्य मिलते हैं, तो वे अन्य राजाओं को हथियारों के बल पर जीत लेते हैं; एक राज्य दूसरे के खंडहरों पर उगता है।

6) लेकिन जब हमारा पिता-परमेश्वर आत्मा के राज्य को स्थापित करता है, तो वह पृथ्वी के राजाओं के सिंहासनों पर, जो धार्मिकता से शासन करते हैं, वर्षा की तरह अपनी आशीषें बरसाते हैं।

7) यह नियम नहीं है कि परमेश्वर उखाड़ फेंकेगा; उसकी तलवार अन्याय, अकर्मण्यता और अपराध के विरुद्ध उठती है।

8) अब, जबकि रोम के राजा न्याय करते हैं, और दया से प्रेम करते हैं और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलते हैं, उन सभी पर त्रिगुणात्मक परमेश्वर का आशीर्वाद रहेगा।

9) उन्हें उस दूत से डरने की ज़रूरत नहीं है जिसे परमेश्वर पृथ्वी पर भेजता है।

10) मुझे सिंहासन पर बैठने के लिए नहीं भेजा गया है कि मैं कैसर के नियमों के अनुसार शासन करूं; और तू यहूदियों के हाकिम से कह सकता है, कि मैं उसके सिंहासन का दावेदार नहीं हूं।

11) लोग मुझे मसीह कहते हैं, और परमेश्वर ने नाम को पहचान लिया है; लेकिन मसीह एक आदमी नहीं है। मसीह सार्वभौमिक प्रेम है, और प्रेम राजा है।

12) यह यीशु केवल वह मनुष्य है जो प्रलोभनों के द्वारा पराजित किया गया है, कई परीक्षणों से, वह मंदिर है जिसके माध्यम से मसीह मनुष्यों के लिए प्रकट हो सकता है।

13) हे इस्राएल के लोगों, सुनो, सुनो! मांस पर मत देखो; यह राजा नहीं है। भीतर के मसीह को देखो, जो तुम में से हर एक में, जैसा वह मुझ में रचा जाएगा, वैसा ही बनेगा।

14) जब तू विश्वास से अपने हृदयों को शुद्ध कर लेगा, तब राजा भीतर प्रवेश करेगा, और तू उसका मुख देखने पाएगा।

15) तब लोगोंने पूछा, हम क्या करें, कि अपके शरीरोंको राजा के लिथे रहने योग्य बनाएं?

16) और यीशु ने कहा, जो कुछ भी मन, और वचन और कर्म में पवित्रता की ओर प्रवृत्त होता है, वह शरीर के मंदिर को शुद्ध करेगा।

17) ऐसे कोई नियम नहीं हैं जो सभी पर लागू हो सकते हैं, क्योंकि पुरुष पाप के विशेषज्ञ हैं; प्रत्येक का अपना-अपना घोर पाप है,

18) और प्रत्येक को स्वयं अध्ययन करना चाहिए कि वह किस प्रकार बुरी बातों की ओर अपनी प्रवृत्ति को धार्मिकता और प्रेम की प्रवृत्ति में सर्वोत्तम रूप से परिवर्तित कर सकता है।

19) जब तक मनुष्य उच्च स्तर पर नहीं पहुंच जाता, और स्वार्थ से दूर नहीं हो जाता, तब तक यह नियम सर्वोत्तम परिणाम देगा:

20) दूसरे मनुष्यों के साथ वैसा ही करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें।

21) और बहुत से लोगोंने कहा, हम जानते हैं, कि आने वाला राजा यीशु ही मसीह है, और उसका नाम धन्य है।

22) अब, यीशु और उसके छः चेलों ने अपना मुंह यरूशलेम की ओर किया, और बहुत से लोग उनके पीछे हो लिए।

23) परन्तु अल्फियस का पुत्र मत्ती आगे दौड़ा, और यरूशलेम को पहुंचकर कहा, देख, क्रिस्टीन आ रहे हैं! राजा को देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी।

24) परन्तु यीशु ने किसी से तब तक कुछ न कहा, जब तक वह मन्दिर के आंगन में न पहुंचा, और फिर एक पुस्तक खोलकर पढ़ने लगा:

25) देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग प्रशस्त करेगा, और मसीह, जिसकी तुम बाट जोहते हो, अपके मन्दिर में अघोषित रूप से आएगा। देख, क्योंकि वह आएगा, सेनाओं के यहोवा परमेश्वर की यही वाणी है।

26) और फिर उसने किताब बंद कर दी; उसने और नहीं कहा; वह मन्दिर के हॉलों से निकल गया, और अपने छः चेलों के साथ नासरत को चला,

27) और वे यीशु की माता मरियम और उसकी बहिन मरियम के साथ रहे।

अध्याय 69

यीशु और नासरत के आराधनालय के शासक। यीशु सार्वजनिक रूप से नहीं सिखाता, और लोग चकित होते हैं।

अगले दिन जब पतरस नासरत में घूम रहा था, तो वह आराधनालय के हाकिम से मिला जिसने पूछा, यह यीशु कौन है जो हाल ही में नासरत आया है?

2) पतरस ने कहा, यह यीशु ही वह मसीह है जिसके विषय में हमारे भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है; वह इस्राएल का राजा है। उनकी मां, मैरी, मार्मियन वे पर रहती हैं।

3) हाकिम ने कहा, उसे आराधनालय में आने को कह, क्योंकि मैं उसकी बिनती सुनूंगा।

4) और पतरस दौड़ा और यीशु को बताया कि हाकिम ने क्या कहा; परन्तु यीशु ने उत्तर नहीं दिया; वह आराधनालय में नहीं गया।

5) तब शाम के समय हाकिम मार्मियन वे पर आया, और मरियम के घर में उसने यीशु और उसकी माँ को अकेला पाया।

6) और जब हाकिम ने अपने मसीहा होने का प्रमाण मांगा, और जब वह आराधनालय में गया, तो यीशु ने कहा,

7) मैं किसी का दास नहीं हूँ; मुझे इस मंत्रालय के लिए पुजारी द्वारा नहीं बुलाया गया है। जब पुरुष बुलाते हैं तो उत्तर देना मेरा नहीं है। मैं परमेश्वर का मसीह आता हूं; मैं अकेले भगवान को जवाब देता हूं।

8) आपको मेरे मसीहा होने का प्रमाण मांगने का अधिकार किसने दिया? मेरा प्रमाण मेरे शब्दों और कार्यों में निहित है, और इसलिए यदि आप मेरे पीछे चलेंगे तो आपको प्रमाण की कमी नहीं होगी।

9) तब हाकिम चला गया; उस ने अपने आप से पूछा, यह कैसा मनुष्य है, जो आराधनालय के सरदार की उपेक्षा करता है?

10) नगर के लोग मसीह को देखने, और उसकी बातें सुनने के लिए भीड़ की भीड़ से निकल आए; लेकिन यीशु ने कहा,

11) एक नबी का अपने पैतृक शहर में, उसके रिश्तेदारों के बीच कोई सम्मान नहीं है।

12) मैं नासरत में तब तक न बोलूंगा, जब तक कि जो बातें मैं न कहूं, और जो काम मैं दूसरे नगरों में करता हूं, उन पर मनुष्यों का विश्वास न हो जाए।

13) जब तक लोग यह न जान लें कि ईश्वर ने मुझे शाश्वत प्रेम प्रकट करने के लिए नामित किया है।

14) हे मेरे कुटुम्ब, तुझ पर कृपा करें; मैं आपको असीम प्रेम का आशीर्वाद देता हूं, और मैं आपके लिए प्रचुर आनंद और खुशी की कामना करता हूं।

15) उस ने फिर कुछ न कहा, और सब लोग अचम्भा करने लगे, क्योंकि वह नासरत में न बोलना चाहता था।

अध्याय 70

काना में एक विवाह भोज में यीशु और उसके चेले। यीशु शादी पर बोलते हैं। वह पानी को शराब में बदल देता है। लोग चकित हैं।

काना, गलील में, एक विवाह भोज था, और मरियम और उसकी बहन मरियम, और यीशु और उसके छह शिष्य मेहमानों में से थे।

2) पर्व के शासक ने सुना था कि यीशु परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक स्वामी है, और उसने उससे बोलने का अनुरोध किया।

3) और यीशु ने कहा, विवाह के बंधन से अधिक पवित्र कोई बंधन नहीं है।

4) दो आत्माओं को प्यार में बाँधने वाली जंजीर स्वर्ग में बनती है, और मनुष्य इसे कभी भी दो में नहीं तोड़ सकता।

5) जब तेल और पानी मिलते हैं, तो दोनों के निचले जुनून, दोनों के मिलन का कारण बन सकते हैं।

6) और तब एक याजक जंजीर बनाकर उन दोनों को बाँध सकता है। यह वास्तविक विवाह नहीं है; यह एक नकली है।

7) दोनों व्यभिचार के दोषी हैं; पुजारी अपराध के पक्षकार है। और यही सब यीशु ने कहा था।

8) जब यीशु चुप हो कर खड़ा हुआ, तो उस की माता ने आकर उस से कहा, दाखमधु निष्फल हो गया; हम क्या करेंगे?

9) और यीशु ने कहा, प्रार्थना करो कि दाखरस क्या है? यह अंगूर के स्वाद के साथ पानी है।

10) और अंगूर क्या हैं? वे केवल कुछ प्रकार के विचार प्रकट किए गए हैं, और मैं उस विचार को प्रकट कर सकता हूं, और पानी शराब होगा।

11) तब उस ने दासोंको बुलाकर उन से कहा, हे मेरे चेलोंके लिथे पत्यर के छ: घड़े, और इन में से प्रत्येक के लिथे एक-एक घड़ा ले आओ, और उन्हें किनारों तक जल से भर दो।

12) सेवकों ने पानी के घड़े लाये और उन्हें भर दिया।

13) और यीशु ने शक्तिशाली विचार के साथ पंखों को तब तक हिलाया जब तक कि वे प्रकट तक नहीं पहुंच गए, और देखो, पानी लाल हो गया, और शराब में बदल गया।

14) तब दासोंने दाखमधु लेकर पर्व के प्रधान को दिया, जिस ने दूल्हे को भीतर बुलाकर उस से कहा,

15) यह दाखरस सबसे उत्तम है; ज्यादातर लोग जब दावत देते हैं तो सबसे पहले सबसे अच्छी शराब लाते हैं; लेकिन, देखो, आपने आखिरी तक सर्वश्रेष्ठ आरक्षित रखा है।

16) और जब हाकिम और मेहमानों को बताया गया कि यीशु ने अपने विचार की शक्ति से पानी को दाखमधु में बदल दिया है, तो वे चकित हुए;

17) उन्होंने कहा, यह मनुष्य से बढ़कर है; निश्चय ही वही मसीह है जिसके बारे में पुराने समय के भविष्यद्वक्ताओं ने घोषित किया था कि वह आएगा।

18) और बहुत से मेहमानों ने उस पर विश्वास किया, और खुशी-खुशी उसके पीछे हो लिया।

अध्याय 71

यीशु, उसके छः शिष्य और उसकी माता कफरनहूम जाते हैं। यीशु लोगों को सिखाते हैं, पृथ्वी के राजाओं और स्वर्ग के राजाओं के बीच के अंतर को प्रकट करते हैं।

कफरनहूम नगर गलील के समुद्र के किनारे था, और पतरस का घर वहीं था। अन्द्रियास, यूहन्ना और याकूब के घर निकट थे,

2) ये लोग मछुआरे थे, और अपने जालों की रखवाली करने के लिए लौटेंगे, और वे यीशु और उसकी माँ पर प्रबल हुए, और वे शीघ्र ही फिलिप्पुस और नतनएल के साथ पतरस के घर में समुद्र के किनारे विश्राम कर रहे थे।

3) यह समाचार यहूदा के राजा के आने के कारण नगर और तट पर फैल गया, और भीड़ उसका हाथ दबाने के लिए उसके पास आ गई।

4) यीशु ने कहा, मैं राजा को तब तक नहीं दिखा सकता जब तक कि तुम प्राण की आंखों से न देख लो, क्योंकि राजा का राज्य आत्मा में है।

5) और हर आत्मा एक राज्य है। हर आदमी के लिए एक राजा होता है।

6) यह राजा प्रेम है, और जब यह प्रेम जीवन की सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है, तो वह मसीह है; तो मसीह राजा है।

7) और जैसा मसीह मेरे प्राण में वास करता है, वैसे ही यह मसीह भी अपने प्राण में वास करे।

8) शरीर राजा का मंदिर है, और लोग पवित्र व्यक्ति को राजा कह सकते हैं।

9) जो अपने नश्वर रूप को शुद्ध करेगा और उसे इतना शुद्ध करेगा कि प्रेम और धार्मिकता उसकी शहरपनाह के भीतर एक-दूसरे के साथ-साथ वास करे, वही राजा है।

10) पृथ्वी के राजा राजसी वस्त्र पहिने हुए हैं, और इस दशा में बैठे हैं कि मनुष्य उनका भय देखकर खड़े हो सकें।

11) स्वर्ग का राजा मछुआरे का वेश धारण कर सकता है; व्यापार के मार्ट में बैठ सकते हैं; वह भूमि जोत सकता है, वा खेत में अधिक उपजा सकता है; नश्वर जंजीरों में गुलाम हो सकता है;

12) पुरुषों द्वारा अपराधी घोषित किया जा सकता है; जेल की कोठरी में बंद हो सकता है; क्रूस पर मर सकता है।

13) पुरुष शायद ही कभी देखते हैं कि दूसरे वास्तव में क्या हैं। मानव इंद्रियों को समझ में आता है कि क्या प्रतीत होता है, और जो प्रतीत होता है और जो है, वह हर तरह से विविध हो सकता है।

14) शारीरिक मनुष्य बाहरी मनुष्य को देखता है, जो राजा का मंदिर है, और उसके मंदिर में पूजा करता है।

15) परमेश्वर का जन मन में शुद्ध है; वह राजा को देखता है; वह आत्मा की आँखों से देखता है:

16) और जब वह क्रिस्टीन चेतना के स्तर पर उठता है, तो वह जानता है कि वह स्वयं राजा है, प्रेम है, मसीह है, और ऐसा ही परमेश्वर का पुत्र है।

17) हे गलील के लोगों, अपने राजा से मिलने की तैयारी करो।

18) और यीशु ने समुद्र के किनारे उनके साथ चलते हुए लोगों को बहुत कुछ सिखाया।

भाग 2/धारा XV

ईसा मसीह

(**उम्र** 30 **से** 33)

नासरत के ईसा मसीह की 3 साल की सेवकाई

खंड XV

SAMECH

यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का पहला वार्षिक युग

(**अध्याय** 72-90)

अध्याय 72

यरूशलेम में यीशु। व्यापारियों को मंदिर से भगा दिया। याजक नाराज हो गए, और वह एक वफादार यहूदी के दृष्टिकोण से अपना बचाव करता है। वह लोगों से बात करते हैं।

यहूदी पास्का पर्व का समय आ गया और यीशु अपनी माता को कफरनहूम में छोड़कर यरूशलेम की ओर चल पड़ा।

2) और वह एक सदूकी के साथ रहा, जिसका नाम यहूदा था।

3) और जब वह मन्दिर के आंगन में पहुंचा, तो उस भविष्यद्वक्ता को देखने के लिए भीड़ थी, जिसे लोगों ने सोचा था कि वह रोम के जुए को तोड़ने, यहूदियों के राज्य को फिर से स्थापित करने और दाऊद के सिंहासन पर शासन करने के लिए आया था।

4) और लोगों ने उसे आते देखकर कहा, सब जय हो! राजा निहारना!

5) परन्तु यीशु ने उत्तर नहीं दिया; उसने परमेश्वर के भवन में पैसे बदलने वालों को देखा, और वह दुखी हुआ।

6) आंगनों को व्यापार के बाजारों में बदल दिया गया था, और लोग बलिदान के रूप में भेड़ के बच्चे और कबूतर बेच रहे थे।

7) यीशु ने याजकों को बुलाकर कहा, सुन, तू ने यहोवा के भवन को तुच्छ लाभ के लिथे बेच दिया है।

8) प्रार्थना के लिए ठहराया गया यह घर अब चोरों का अड्डा है। क्या ईश्वर के दरबार में अच्छाई और बुराई एक साथ वास कर सकती है? मैं आपको बताता हूं, नहीं।

9) तब उस ने रस्सियोंका कोड़ा बनाया, और व्यापारियोंको निकाल दिया; उसने उनके बोर्ड उलट दिए और उनके पैसे फर्श पर फेंक दिए।

10) उसने बन्दी पक्षियों के पिंजरों को खोल दिया, और मेमनों को बाँधने वाली रस्सियों को काट डाला, और उन्हें आज़ाद कर दिया।

11) और याजक और शास्त्री दौड़कर दौड़े चले आते, और उसे हानि पहुँचाते, परन्तु वे पीछे हट जाते थे; उनके बचाव में आम लोग खड़े रहे।

12) तब हाकिमोंने कहा, यह यीशु कौन है जिसे तुम राजा कहते हो?

13) लोगों ने कहा, यह वही मसीह है जिसके विषय में हमारे भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा है; वह राजा है जो इस्राएल को छुड़ाएगा।

14) हाकिमों ने यीशु से कहा, हे मनुष्य, यदि तू राजा वा मसीह है, तो हमें चिन्ह दिखा। आपको इन व्यापारियों को बाहर निकालने का अधिकार किसने दिया?

15) और यीशु ने कहा, कोई वफादार यहूदी नहीं है जो इस मंदिर को अपमान से बचाने के लिए अपने प्राण न दे; इस में मैं ने केवल एक वफादार यहूदी के रूप में काम किया, और आप आप स्वयं मुझे इस सच्चाई की गवाही देंगे।

16) मेरे मसीहा होने के चिन्ह शब्दों और कर्मों में मेरे पीछे होंगे।

17) और तुम मन्दिर को ढा देना (और उसे ढा देना) और तीन दिन में वह पहिले से अधिक महिमामय होकर फिर बनाया जाएगा।

18) अब यीशु का मतलब था कि वे उसकी जान ले सकते हैं; उसके शरीर, पवित्र श्वास के मंदिर को फाड़ दो, और वह फिर से जी उठेगा।

19) यहूदी उसके शब्दों का अर्थ नहीं जानते थे; वे तिरस्कार करने के उसके दावों पर हँसे। उन्होंने कहा,

20) इस घर को बनाने में छियालीस साल के लोगों की भीड़ थी, और इस युवा अजनबी का दावा है कि वह इसे तीन घंटे में बना देगा; उसके वचन बेकार हैं, और उसके दावे निष्फल हैं।

21) तब वे उस विपत्ति को ले लेते, जिससे वह व्यापारियों को निकालता था, और उसे दूर भगाते; परन्तु फिलो, जो मिस्र से पर्व में सम्मिलित होने को आया था, खड़ा हुआ, और कहने लगा,

22) हे इस्राएल के लोगों, सुनो! यह आदमी मनुष्य से बढ़कर है; आप जो करते हैं उस पर ध्यान दें। मैंने स्वयं, यीशु को बोलते हुए सुना है, और सभी हवाएं शांत थीं।

23) और मैं ने उसे बीमारोंको छूते देखा है, और वे चंगे हो गए। वह दुनिया के ऋषियों से ऊपर एक ऋषि खड़ा है;

24) और तुम उसका तारा उदय होते देखोगे, और वह तब तक बढ़ता रहेगा जब तक कि वह धर्म का सूर्य न हो जाए।

25) पुरुषों, जल्दी मत करो; बस प्रतीक्षा करें और आपके पास उसके मसीहा होने के प्रमाण होंगे।

26) तब याजकोंने मरी डाल दी, और यीशु ने कहा,

27) हे इस्राएल, अपने राजा से मिलने की तैयारी करो! लेकिन जब आप पाप को इतनी कीमती मूर्ति के रूप में अपने दिलों में दबाते हैं तो आप राजा को कभी नहीं देख सकते।

28) राजा भगवान है; शुद्ध हृदय वाला ही परमेश्वर का मुख देख सकता है और जीवित रह सकता है।

29) तब याजकोंने पुकार कर कहा, यह मनुष्य परमेश्वर होने का दावा करता है। क्या यह अधर्म नहीं है! उसके साथ दूर!

30) परन्तु यीशु ने कहा, किसी ने कभी मुझे यह कहते सुना नहीं, कि मैं राजा हूं। हमारे पिता-भगवान राजा हैं। मैं हर वफादार यहूदी के साथ भगवान की पूजा करता हूं।

31) मैं यहोवा का दीपक मार्ग को उजियाला करने के लिथे प्रज्वलित करता हूं; और जब तुम प्रकाश में हो तो प्रकाश में चलो।

अध्याय 73

यीशु फिर से मंदिर जाते हैं और लोगों द्वारा उनका स्वागत किया जाता है। एक राजा और उसके विशाल डोमेन का दृष्टांत बताता है। मसीहा को परिभाषित करता है।

अगले दिन मंदिर के दरबारों में भीड़ उमड़ रही थी, यीशु की बात सुनने के इरादे से।

2) और जब वह आया तो लोगों ने कहा, सब जय हो! राजा निहारना!

एक राजा और उसके विशाल डोमेन का दृष्टांत

3) और यीशु ने एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, एक राजा के पास बहुत बड़े राज्य थे; उसके सभी लोग आपस में रिश्तेदार थे और शांति से रहते थे।

4) अब बहुत वर्ष के बाद राजा ने अपक्की प्रजा से कहा, ये देश और मेरा सब कुछ ले लो; उनके मूल्यों में वृद्धि; अपने आप पर शासन करो, और शांति से रहो।

5) और तब लोगों ने अपने राज्य बनाए; चुने हुए राज्यपाल और छोटे राजा।

6) लेकिन अभिमान, महत्वाकांक्षा, स्वार्थी लालच और आधार कृतघ्नता तेजी से बढ़ी और राजाओं ने युद्ध करना शुरू कर दिया।

7) उन्होंने अपनी सब विधियों की पुस्तकों में लिखा, जो ठीक है; और तब बलवानों ने निर्बलों को नाश किया, और सारे विशाल क्षेत्र में अराजकता फैल गई।

8) एक लंबा समय बीत गया, और फिर राजा ने अपने क्षेत्र की ओर देखा। उसने अपने लोगों को उनके क्रूर युद्धों में देखा; उसने उन्हें बीमार और बहुत परेशान देखा; उसने बलवान गुलाम को कमज़ोर देखा,

9) तब उस ने कहा, मैं क्या करूं? क्या मैं एक अभिशाप भेजूं? क्या मैं अपके सब लोगोंको नाश कर दूं?

10) तब उसके मन में तरस आया, और उस ने कहा, मैं कोड़े न भेजूंगा; मैं अपने एकलौते पुत्र को, जो सिंहासन का वारिस है, प्रजा को प्रेम, मेल, और धर्म की शिक्षा देने के लिथे भेजूंगा।

11) उसने अपने पुत्र को भेजा; लोगों ने उसका तिरस्कार किया, और उसके साथ दुर्व्यवहार किया और उसे सूली पर ठोंक दिया।

12) उसे दफनाया गया था; परन्तु मृत्यु इतनी दुर्बल थी कि राजकुमार को पकड़ न सके, और वह जी उठा।

13) उसने एक ऐसा रूप धारण किया जिसे मनुष्य मार नहीं सकता; और फिर वह लोगों को प्रेम, और मेल, और धर्म की शिक्षा देने को फिर गया।

14) और इस प्रकार परमेश्वर मनुष्यों के साथ व्यवहार करता है।

अंत: एक राजा का दृष्टांत और उसका विशाल क्षेत्र

---

15) एक वकील ने आकर पूछा, मसीहा का क्या अर्थ है? और मनुष्य का मसीहा बनाने का अधिकार किसे है?

16) और यीशु ने कहा, मसीह वह है जिसे परमेश्वर की ओर से खोए हुओं को ढूंढ़ने और बचाने के लिए भेजा गया है। मसीहा पुरुषों द्वारा नहीं बनाए जाते हैं।

17) हर युग में सबसे पहले मसीहा का मार्ग प्रकाश में आता है; टूटे हुए दिलों को ठीक करने के लिए; कैदियों को मुक्त करने के लिए। मसीहा और मसीह एक हैं।

18) क्योंकि कोई व्यक्ति मसीह होने का दावा करता है, यह इस बात का संकेत नहीं है कि वह मसीह है।

19) एक आदमी चटपटी चट्टानों से धाराएँ बहने का कारण बन सकता है; वसीयत में तूफान ला सकता है; तूफानी हवाएँ रह सकती हैं; बीमारों को चंगा करे, और मरे हुओं को जिलाए, और परमेश्वर की ओर से न भेजा जाए।

20) सारी प्रकृति मनुष्य की इच्छा के अधीन है, और बुरे लोगों के साथ-साथ अच्छे लोगों के पास मन की सभी शक्तियां हैं, और वे तत्वों को नियंत्रित कर सकते हैं।

21) सिर सच्चे मसीहा होने का प्रमाण नहीं देता, क्योंकि मनुष्य बुद्धि के द्वारा कभी भी ईश्वर को नहीं जान सकता, न ही स्वयं को प्रकाश में ला सकता है।

22) मसीह सिर में नहीं, बल्कि हृदय में, दया और प्रेम के स्थान पर रहता है।

23) मसीहा कभी भी स्वार्थी लाभ के लिए काम नहीं करता है; वह शारीरिक स्व के ऊपर खड़ा है; उसके वचन और कर्म सार्वभौमिक भलाई के लिए हैं।

24) मसीहा कभी भी राजा बनने की कोशिश नहीं करता, ताज पहनने और सांसारिक सिंहासन पर बैठने की कोशिश नहीं करता।

25) राजा पृथ्वी का, पृथ्वी का है; मसीहा स्वर्ग का आदमी है।

26) और फिर वकील ने पूछा, तुम राजा के रूप में क्यों पेश आते हो?

27) यीशु ने कहा, किसी ने कभी मुझे यह कहते नहीं सुना कि मैं राजा हूं। मैं कैसर के स्थान पर बैठ कर मसीह नहीं बन सका।

28) कैसर को वह दे जो उसका है; अपने हृदय का खजाना परमेश्वर को दो।

अध्याय 74

यीशु सब्त के दिन चंगा करता है और फरीसियों द्वारा उसकी निंदा की जाती है। एक डूबे हुए बच्चे को पुनर्स्थापित करता है। एक घायल कुत्ते को बचाता है। एक बेघर बच्चे की देखभाल करता है। दया के नियम पर बोलता है।

यह सब्त का दिन था, और यीशु मंदिर के आंगनों और पवित्र हॉल में लोगों की बढ़ती भीड़ के बीच खड़ा था।

2) अंधे, बहरे, गूंगे और मोहग्रस्त लोग वहां थे, और यीशु ने वचन सुनाया, और वे चंगे हो गए।

3) कितनों पर उस ने हाथ रखे, और वे चंगे हो गए; दूसरों को उसने अभी-अभी वचन सुनाया, और वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए; परन्तु औरों को कुछ तालों में जाकर नहाना पड़ता था; और औरों का उस ने पवित्र तेल से अभिषेक किया।

4) एक डॉक्टर ने उससे पूछा कि वह विभिन्न तरीकों से क्यों चंगा करता है, और उसने उत्तर दिया,

5) रोग मानव रूप में कलह है, और कलह कई तरह से उत्पन्न होते हैं।

6) शरीर एक हार्पसीकोर्ड है; कभी-कभी तार बहुत अधिक शिथिल होते हैं, और फिर असंगति के परिणाम होते हैं।

7) कभी-कभी हम स्ट्रिंग्स को बहुत अधिक तनावपूर्ण पाते हैं, और फिर कलह का एक और रूप प्रेरित होता है।

8) रोग कई प्रकार का होता है, और रहस्यवादी हार्पसीकोर्ड को नए सिरे से धुनने के लिए इलाज के कई तरीके हैं।

9) जब फरीसियों को बताया गया कि यीशु ने सब्त के दिन लोगों को चंगा किया है, तो वे क्रोधित हो गए, और उन्होंने उसे उस स्थान से बाहर जाने की आज्ञा दी।

10) लेकिन यीशु ने कहा, क्या मनुष्य को सब्त के अनुकूल बनाया गया था, या सब्त के दिन को मनुष्य के अनुकूल बनाया गया था?

11) यदि तुम गड़हे में गिरे होते, और देखो, सब्त का दिन आ गया होता, और मैं तुम्हारे मार्ग से होकर जाता, तो क्या तुम दोहाई देते।

12) मुझे अकेला छोड़ दो; सब्त के दिन मेरी सहायता करना पाप है; मैं इस गंदगी में एक और दिन तक डूब जाऊँगा?

13) हे फरीसियों, हे कपटी! तुम जानते हो कि तुम सब्त के दिन या किसी अन्य दिन मेरी सहायता पाकर प्रसन्न होगे।

14) ये सब लोग गड़हे में गिरे पड़े हैं, और वे मेरी सहायता करने के लिथे ऊँचे स्वर से पुकार रहे हैं, और यदि मैं चलकर उनकी बात न मानूँ तो मनुष्य और परमेश्वर मुझे शाप देंगे।

15) और फिर फरीसी अपनी प्रार्थना करने और परमेश्वर के जन को शाप देने के लिए लौट आए क्योंकि उसने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

16) अब सांझ को यीशु तालाब के पास खड़ा हुआ; एक चंचल बच्चा अंदर गिर गया था, और वह डूब गया था, और दोस्त उसे उठा रहे थे।

17) लेकिन यीशु ने वाहकों को रुकने के लिए बुलाया; और फिर उसने अपने आप को निर्जीव रूप पर बढ़ाया और उसके मुंह में जीवन की सांस फूंकी।

18) और फिर उस ने उस आत्मा को जो बाहर गई थी, पुकारा, और वह लौट गई; बच्चा पुनर्जीवित हुआ और जीवित रहा।

19) और यीशु ने एक घायल कुत्ते को देखा; यह हिल नहीं सकता था; वह मार्ग के किनारे पड़ा रहा और पीड़ा से कराह उठा। उसने उसे अपनी बाँहों में लिया और उस घर में ले गया जहाँ वह रहता था।

20) उस ने घावों पर मरहम लगाने वाला तेल उँडेल दिया; वह उसकी देखभाल ऐसे करता था मानो वह एक बच्चा हो जब तक वह मजबूत और स्वस्थ था।

21) और यीशु ने एक छोटे लड़के को देखा, जिसका कोई घर नहीं था, और वह भूखा था; जब उस ने रोटी मांगी तो लोग दूर हो गए।

22) और यीशु ने बालक को लेकर रोटी दी; और उस ने उसको अपने गरम कुरते में लपेटा, और उसके लिये घर ढूंढ़ लिया।

23) उसके पीछे चलनेवालों से स्वामी ने कहा, यदि मनुष्य अपनी खोई हुई संपत्ति फिर से प्राप्त करे, तो उसे जीवन के भाईचारे का सम्मान करना चाहिए।

24) जो मनुष्य, पशु, पक्षी और रेंगनेवाले जन्तुओं पर हर प्रकार के जीवन के प्रति दयालु नहीं है, वह पवित्र के आशीर्वाद की अपेक्षा नहीं कर सकता; क्योंकि जैसा हम देते हैं, वैसा ही परमेश्वर हमें देगा।

अध्याय 75

नीकुदेमुस रात में यीशु से मिलने जाता है। यीशु ने उसे नए जन्म और स्वर्ग के राज्य का अर्थ बताया।

नीकुदेमुस यहूदियों का शासक था, और वह गंभीर, विद्वान और धर्मपरायण था।

2) उसने बात करते हुए यीशु के चेहरे पर गुरु का चिन्ह देखा, लेकिन उसमें इतना साहस नहीं था कि वह सार्वजनिक रूप से उस पर अपने विश्वास को स्वीकार कर सके;

3) सो रात को वह यहूदा के घर यीशु से बातें करने गया।

4) यीशु ने उसे आते देखकर कहा, धन्य हैं वे, जो मन के शुद्ध हैं;

5) दोगुने धन्य हैं निडर, हृदय के शुद्ध;

6) तीन बार धन्य हैं वे निडर, शुद्ध हृदय वाले जो उच्चतम न्यायालयों के समक्ष अपने विश्वास को स्वीकार करने का साहस करते हैं।

7) और नीकुदेमुस ने कहा, हे स्वामी, जय हो! मैं जानता हूँ कि तुम परमेश्वर की ओर से आए हुए शिक्षक हो, क्योंकि जैसा तुमने सिखाया है वैसा मनुष्य अकेला कभी नहीं सिखा सकता; जो काम तुमने किए हैं, वे कभी नहीं कर सकते।

8) यीशु ने कहा, जब तक मनुष्य नया जन्म न ले, तब तक वह राजा को नहीं देख सकता; वह मेरे द्वारा बोले गए शब्दों को नहीं समझ सकता।

9) नीकुदेमुस ने कहा, मनुष्य का नया जन्म कैसे हो सकता है? क्या वह वापस गर्भ में जा सकता है और फिर से जीवन में आ सकता है?

10) यीशु ने कहा, जिस जन्म की बात मैं कह रहा हूं, वह मांस का जन्म नहीं है।

11) जब तक कोई आदमी पानी और पवित्र श्वास से पैदा न हो, वह पवित्र के राज्य में नहीं आ सकता।

12) जो मांस से पैदा होता है वह मनुष्य की सन्तान है; जो पवित्र श्वास से पैदा हुआ है वह ईश्वर की संतान है।

13) हवाएँ जहाँ चाहें चलती हैं; पुरुष अपनी आवाज सुनते हैं और परिणाम नोट कर सकते हैं; परन्तु वे नहीं जानते कि वे कहां से आते हैं, और किधर को जाते हैं; और ऐसा ही हर एक है जो पवित्र सांस से पैदा हुआ है।

14) हाकिम ने कहा, मैं नहीं समझता; प्रार्थना मुझे स्पष्ट रूप से बताएं कि आपका क्या मतलब है।

15) यीशु ने कहा, पवित्र का राज्य आत्मा में है; पुरुष इसे अपनी शारीरिक आंखों से नहीं देख सकते हैं; अपनी सारी तर्कशक्ति के साथ वे इसे नहीं समझते हैं।

16) यह एक ऐसा जीवन है जो परमेश्वर में गहराई तक छिपा है; इसकी पहचान आंतरिक चेतना का कार्य है।

17) संसार के राज्य दृष्टि के राज्य हैं; पवित्र का राज्य विश्वास का है; इसका राजा प्रेम है।

18) मनुष्य परमेश्वर के प्रेम को अव्यक्त नहीं देख सकते हैं, और इसलिए हमारे पिता-परमेश्वर ने इस प्रेम को मनुष्य के पुत्र के मांस-मांस से पहिनाया है।

19) और जगत देखे और इस प्रगट प्रेम को जाने, मनुष्य के पुत्र को ऊंचा उठाने की आवश्यकता है।

20) जैसे मूसा ने मांस के उपचार के लिए जंगल में सर्प को उठाया, मनुष्य के पुत्र को भी जीवित किया जाना चाहिए।

21) कि धूल के सांप, इस शारीरिक जीवन के सर्प द्वारा काटे गए सभी लोग जीवित रहें।

22) जो उस पर विश्वास करेगा, अनन्त जीवन उसका होगा।

23) क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को जीवित करने के लिए भेजा, ताकि मनुष्य परमेश्वर के प्रेम को देख सकें।

24) परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत का न्याय करने के लिये नहीं भेजा; उसने उसे दुनिया को बचाने के लिए भेजा; पुरुषों को प्रकाश में लाने के लिए।

25) परन्तु मनुष्य ज्योति से प्रीति नहीं रखते, क्योंकि ज्योति उनकी दुष्टता को प्रगट करती है; पुरुषों को अंधेरा पसंद है।

26) अब, जो कोई सत्य से प्रेम रखता है, वह प्रकाश में आता है; वह अपने कार्यों के प्रकट होने से नहीं डरता।

27) ज्योति आ गई, और नीकुदेमुस अपना मार्ग चला गया; वह पवित्र श्वास के जन्म का अर्थ जानता था; उसने अपनी आत्मा में आत्मा की उपस्थिति को महसूस किया।

28) और यीशु बहुत दिन तक यरूशलेम में रहा, और बीमारोंको उपदेश दिया और चंगा किया।

29) आम लोगों ने खुशी-खुशी उसकी बातें सुनीं, और बहुतों ने अपनी सारी शारीरिक चीजें छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

<u>अध्याय 76</u>

बेथलहम में यीशु। चरवाहों को शांति के साम्राज्य की व्याख्या करता है। एक असामान्य प्रकाश दिखाई देता है। चरवाहे यीशु को मसीह के रूप में पहचानते हैं।

लोगो बेतलेहेम गया, और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए।

2) उसने चरवाहे के घर को पाया जहां वह एक बच्चे के पालने में था; यहाँ वह रहता था।

3) वह उन पहाड़ियों पर गया, जहां तीस वर्ष से अधिक समय तक चरवाहों ने अपनी भेड़-बकरियों को देखा, और शांति के दूत को यह कहते सुना:

4) आधी रात को बेथलहम की एक गुफा में शांति के राजकुमार का जन्म होता है।

5) और चरवाहे अभी भी वहां थे, और भेड़ें अभी भी पहाड़ियों पर चरती थीं।

6) और तराई में पास में बर्फ-सफेद कबूतरों के बड़े-बड़े झुण्ड इधर-उधर उड़ रहे थे।

7) और जब चरवाहों ने जान लिया कि यीशु, जिसे लोग राजा कहते हैं, आया है, तो वे दूर दूर से उस से बातें करने आए।

8) यीशु ने उन से कहा, देखो निर्दोष और शान्ति का जीवन!

9) सफेद गुणी और पवित्र का प्रतीक है! मासूमियत का मेमना; शांति का कबूतर;

10) और यह मिलना तय था कि ऐसे दृश्यों के बीच प्रेम मानवीय रूप में आना चाहिए।

11) हमारा पिता इब्राहीम इन घाटियों से होकर चला, और इन्हीं पहाड़ियों पर वह अपके भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को देखता रहा।

12) और यहीं वह था, जो सलीम का राजा, शांति का राजकुमार आया; मानव रूप में मसीह; वह इब्राहीम से कहीं बड़ा था।

13) और यहीं इब्राहीम ने सलीम के इस राजा को अपना सब कुछ दशमांश दिया।

14) शांति का यह राजकुमार हर जगह युद्ध में निकल गया। उसके पास तलवार नहीं थी; रक्षा का कोई कवच नहीं; अपराध का कोई हथियार नहीं;

15) तौभी उसने मनुष्यों को जीत लिया, और जातियां उसके पांवों से कांपने लगीं।

16) मिस्र की सेनाएँ अधिकार के इस मजबूत राजा के सामने झुक गईं; मिस्र के राजाओं ने उसके सिर पर अपने मुकुट रखे,

17) और मिस्र के सारे देश का राजदण्ड उसके हाथ में दे दिया, और न लोहू की एक बूंद भी बहाई गई, और न किसी बन्धुए को जंजीरों में बांधा गया;

18) परन्तु हर जगह विजेता ने बन्दीगृह के द्वारों को चौड़ा कर दिया और बन्दियों को मुक्त कर दिया।

19) और, एक बार फिर, शांति का राजकुमार आया है, और इन धन्य पहाड़ियों से वह फिर से लड़ने के लिए चला गया है।

20) और वह श्वेत वस्त्र पहिने हुए है; उसकी तलवार सत्य है, उसकी ढाल विश्वास है; उसका हेलमेट मासूमियत है; उसकी सांस प्यार है; उसका प्रहरी शांति।

21) लेकिन यह शारीरिक युद्ध नहीं है; यह मनुष्य के साथ युद्ध में मनुष्य नहीं है; लेकिन यह गलत के खिलाफ सही है।

22) और प्रेम कप्तान है, प्रेम योद्धा है, प्रेम कवच है, प्रेम ही सब कुछ है, और प्रेम की जीत होगी।

23) तब बेतलेहेम के पहाड़ फिर से ज्योति से ओत-प्रोत हो गए, और दूत ने फिर कहा,

24) शांति, पृथ्वी पर शांति, मनुष्यों के लिए सद्भावना।

25) और यीशु ने लोगों को सिखाया; बीमारों को चंगा किया; पवित्र के राज्य के रहस्यों को प्रकट किया।

26) और बहुतों ने कहा, वह मसीह है; जो राजा आने वाला था वह आ गया; जय भगवन।

अध्याय 77

हेब्रोन में यीशु। बेथानी जाता है। रूत को कुछ पारिवारिक परेशानियों के बारे में सलाह देता है।

यीशु तीन चेलों के साथ हेब्रोन गया, जहाँ वह सात दिन तक रहा और उपदेश दिया।

2) और फिर वह बैतनिय्याह को गया और लाजर के घर में उपदेश दिया।

3) शाम आ गई; भीड़ चली गई, और यीशु, लाजर, और उसकी बहनें, मार्था, रूत और मरियम, अकेली थीं।

4) और रूत बहुत व्यथित थी। उसका घर यरीहो में गिरा था; उसका पति एक सराय का रखवाला था; उसका नाम आशेर-बेन था।

5) अब, आशेर सबसे सख्त मीन और विचार का फरीसी था, और वह यीशु को तिरस्कार से देखता था।

6) और जब उसकी पत्नी ने मसीह में अपना विश्वास कबूल किया, तो उसने उसे अपने घर से निकाल दिया।

7) लेकिन रूत ने विरोध नहीं किया; उसने कहा, यदि यीशु ही मसीह है, तो वह मार्ग जानता है, और मैं निश्चय जानता हूं, कि वही मसीह है।

8) मेरे पति क्रोधित हो सकते हैं और मेरे मानव रूप का वध कर सकते हैं; वह आत्मा को नहीं मार सकता, और मेरी जन्मभूमि के कई मकानों में मेरा निवास स्थान है।

9) और रूत ने यीशु को सब बताया; और उस ने कहा, मैं क्या करूँ?

10) यीशु ने कहा, तेरे पति का कोई दोष नहीं है; वह भक्त है; वह भगवान, हमारे पिता-भगवान से प्रार्थना करता है।

11) अपने धर्म के प्रति उनका उत्साह तीव्र है; इसमें वह ईमानदार है; परन्तु इसने उसे पागल कर दिया है, और वह अपने घर को मसीह के विधर्म से निष्कलंक रखना सही मानता है।

12) वह आश्वस्त महसूस करता है कि उसने आपको दूर भगाने में ईश्वर की इच्छा पूरी की है।

13) असहिष्णुता परिपक्व अज्ञान है।

14) किसी दिन उसके पास उजियाला आएगा, और तब वह तुम्हारे सब दुखों, शोकों और आंसुओं का बदला चुकाएगा।

15) और रूत, तुम यह न समझना कि तुम दोष से मुक्त हो।

16) यदि तुम बुद्धि के मार्ग पर चले होते, और अपनी शांति को बनाए रखने के लिए संतुष्ट होते, तो यह शोक तुम्हारे पास नहीं आता।

17) पूर्वाग्रह के खोल में प्रकाश को टूटने में एक लंबा, लंबा समय लगता है, और धैर्य वह सबक है जिसे आपको सीखने की जरूरत है।

18) पानी के लगातार गिरने से कठोरतम पत्थर नष्ट हो जाता है।

19) ईश्वरीय जीवन की मीठी और पवित्र धूप, सबसे तेज लौ, या सबसे कठिन प्रहार की तुलना में बहुत तेजी से असहिष्णुता को पिघलाएगी।

20) बस थोडा समय रुको, और फिर सहानुभूति और प्रेम के साथ घर जाओ। न तो मसीह की बात करो, न पवित्र के राज्य की।

21) बस एक ईश्वरीय जीवन जिएं; अपनी वाणी में कठोरता न रखना, तब तू अपके पति को ज्योति की ओर ले जाएगी।

22) और ऐसा ही था।

अध्याय 78

जेरिको में यीशु। आशेर के दास को चंगा करता है। यरदन के पास जाता है और लोगों से बात करता है। बपतिस्मा को शिष्यत्व की प्रतिज्ञा के रूप में स्थापित करता है। छह शिष्यों को बपतिस्मा देता है, जो बदले में कई लोगों को बपतिस्मा देते हैं।

और यीशु यरीहो को गया, और आशेर के सराय में निवास किया।

2) सराय में एक नौकर बीमार था, मौत के करीब; चिकित्सक इलाज नहीं कर सके।

3) और यीशु ने आकर उस मरती हुई लड़की को छूकर कहा, हे मालोन, उठ! और एक पल में दर्द चला गया था; बुखार बंद हो गया; नौकरानी ठीक थी।

4) तब वे लोग अपके बीमारोंको ले आए, और वे चंगे हो गए।

5) परन्तु यीशु यरीहो में अधिक देर तक नहीं रुका; वह यरदन के घाट पर गया, जहां यूहन्ना उपदेश देने वाला नहीं था।

6) वहाँ भीड़ थी, और यीशु ने उन से कहा, देखो, समय आ गया है; राज्य हाथ में है।

7) शुद्ध मन के सिवा और कोई पवित्र के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता; परन्तु मानवजाति के सब पुत्र-पुत्रियों से बिनती की जाती है, कि वे बुराई से फिरें, और मन के शुद्ध हों।

8) क्रिस्टीन गेट के माध्यम से पवित्र के राज्य में प्रवेश करने और प्रवेश करने का संकल्प शिष्यत्व का गठन करेगा, और सभी को उसके शिष्यत्व की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

9) यूहन्ना ने राजा के आने की तैयारी में, पवित्र के राज्य में क्रिस्टीन के द्वार के खुलने की तैयारी में, आपके शरीर को धारा में धोया, आत्मा की शुद्धि का प्रतीक।

10) यूहन्ना ने एक महान कार्य किया; परन्तु अब क्रिस्टीन का फाटक खोल दिया गया है, और धोना तुम्हारे चेले होने की बन्धन ठहर गया है।

11) जब तक यह युग समाप्त न हो जाए, तब तक यह प्रतिज्ञा एक संस्कार होगी, और इसे बपतिस्मा संस्कार कहा जाएगा; और वह मनुष्योंके लिथे चिन्ह ठहरे, और परमेश्वर के लिथे मनुष्योंके चेले होने की मुहर ठहरे।

12) हे सब जातियों के लोगों, सुनो! मेरे पास आओ; क्रिस्टीन गेट खोल दिया गया है; अपने पापों से फिरो और बपतिस्मा लो, और तुम फाटक से प्रवेश करके राजा को देखोगे।

13) जो छः चेले यीशु के पीछे हो लिए थे, वे पास खड़े हो गए, और यीशु उन्हें आगे ले गया, और यरदन में उस ने उन्हें मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया; और फिर उस ने उन से कहा,

14) मेरे दोस्तों, आप सबसे पहले क्रिस्टीन गेट के माध्यम से पवित्र के राज्य में प्रवेश कर रहे हैं।

15) जैसे मैंने तुम्हें मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया, वैसे ही तुम उन सभी पुरुषों और महिलाओं को भी उस पवित्र नाम से बपतिस्मा देना, जो मसीह में अपने विश्वास को स्वीकार करेंगे, और अपने पापों को त्याग देंगे।

16) और, देखो, भीड़ नीचे आई, अपने पापों को त्यागा, मसीह में अपने विश्वास को अंगीकार किया, और बपतिस्मा लिया।

<u>अध्याय 79</u>

जॉन, अग्रदूत, सलीम में। एक वकील यीशु के बारे में पूछता है। यूहन्ना भीड़ को यीशु के मिशन के बारे में समझाता है।

अब, जॉन अग्रदूत, सलीम स्प्रिंग्स में था जहां पानी प्रचुर मात्रा में था, और उन लोगों के शरीर को धोया जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार किया था।

2) एक यहूदी वकील ने यूहन्ना के पास जाकर कहा, क्या गलील का यह मनुष्य, जिसे तू ने धोकर मसीह कहा, क्या तेरा बैरी न हो गया?

3) वे कहते हैं कि वह यरदन के घाट पर है; कि वह एक कलीसिया, या कुछ और बना रहा है, और यह कि वह लोगों को वैसे ही धोता है जैसे तुमने किया है।

4) और यूहन्ना ने उत्तर दिया, यह यीशु वास्तव में वह मसीह है जिसका मार्ग प्रशस्त करने आया हूं। वह मेरा दुश्मन नहीं है।

5) दूल्हे के पास दुल्हन है; उसके मित्र निकट हैं, और जब वे उसका शब्द सुनते हैं, तो वे सब आनन्दित होते हैं।

6) पवित्र का राज्य दुल्हन है, और मसीह दूल्हा है; और मैं, अग्रदूत, आनन्द से भरा हूं क्योंकि वे बहुत समृद्ध हैं।

7) जो काम करने के लिए मुझे भेजा गया था, वह मैंने पूरा कर लिया है; यीशु का कार्य अभी शुरू होता है।

8) तब उस ने भीड़ की ओर फिरकर कहा, मसीह धर्म का राजा है; मसीह परमेश्वर का प्रेम है; हाँ, वह परमेश्वर है; त्रिगुणात्मक परमेश्वर के पवित्र व्यक्तियों में से एक।

9) मसीह पवित्रता के हर दिल में रहता है।

10) अब, यीशु जो यरदन के तट पर प्रचार कर रहा है, मानव जीवन की सबसे कठिन परीक्षाओं के अधीन किया गया है, और उसने शारीरिक मनुष्य की सभी भूखों और वासनाओं पर विजय प्राप्त की है,

11) और स्वर्ग के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा, इतनी श्रेष्ठ पवित्रता और पवित्रता का व्यक्ति घोषित किया गया है कि वह पृथ्वी पर मसीह की उपस्थिति का प्रदर्शन कर सके।

12) देखो, ईश्वर से प्रेम करो, जो कि मसीह है, उसमें रहता है, और वह दौड़ के लिए आदर्श है।

13) और प्रत्येक मनुष्य उसमें देख सकता है कि जब वह अपने स्वार्थ की सारी वासनाओं पर विजय प्राप्त कर लेगा, तब प्रत्येक मनुष्य का क्या होगा।

14) जो लोग पाप से फिर गए हैं, उनके शरीरों को मैं ने जल से धोया है, जो आत्मा के शुद्ध होने का प्रतीक है;

15) लेकिन यीशु हमेशा के लिए पवित्र सांस के जीवित जल में स्नान करते हैं।

16) और यीशु संसार के उद्धारकर्ता को मनुष्यों के पास लाने के लिए आता है; प्रेम संसार का रक्षक है।

17) और वे सब जो मसीह पर भरोसा रखते हैं, और यीशु को आदर्श और मार्गदर्शक मानकर उसके पीछे चलते हैं, अनन्त जीवन पाते हैं।

18) परन्तु जो मसीह पर भरोसा नहीं करते हैं और अपने हृदयों को शुद्ध नहीं करेंगे, ताकि मसीह उनके भीतर निवास कर सके, वे कभी भी जीवन में प्रवेश नहीं कर सकते।

अध्याय 80

लामा भारत से यीशु को देखने आते हैं। वह सलीम में जॉन की शिक्षाओं को सुनता है। जॉन उसे यीशु के दिव्य मिशन के बारे में बताता है। लामा यीशु को यरदन में पाते हैं। गुरु एक दूसरे को पहचानते हैं।

ब्रह्म के पुजारी LAMAAS, जो जगन्नाथ के मंदिर में यीशु के मित्र थे, उन्होंने कई देशों में यीशु और उनके शक्तिशाली कार्यों के बारे में सुना था; और वह अपके घर से निकलकर उसकी खोज में फिलस्तीन आ गया था।

2) और जब वह यरूशलेम की ओर कूच कर रहा था, तो उसने यूहन्ना, अग्रदूत के बारे में सुना, जो जीवित परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता था।

3) लामाओं को सलीम स्प्रिंग्स में अग्रदूत मिला; कई दिनों तक वह अपने द्वारा सिखाई गई तीखी सच्चाइयों का एक मूक श्रोता रहा।

4) और जब फरीसी ने यूहन्ना को यीशु और उसके पराक्रम के कामों के बारे में बताया तो वह उपस्थित था।

5) उसने अग्रदूत का उत्तर सुना; उसे यीशु के नाम को आशीर्वाद देते सुना; जिसे उसने मसीह कहा।

6) और फिर उसने यूहन्ना से बात की; उस ने कहा, इस यीशु के विषय में जिसे तुम मसीह कहते हो, मुझे और अधिक बता देने की प्रार्थना करो।

7) और यूहन्ना ने उत्तर दिया, यह यीशु परमेश्वर का प्रेम है जो प्रगट हुआ है।

8) देखो, लोग निचले स्तर पर रह रहे हैं - लालच और स्वार्थ के विमान; वे स्वयं के लिए लड़ते हैं; वे तलवार से जीतते हैं।

9) हर देश में मजबूत दास और कमजोरों को मार डालते हैं। सभी राज्य हथियारों के बल से उठते हैं; बल के लिए राजा है।

10) यह यीशु शक्ति के इस लोहे के शासन को उखाड़ फेंकने के लिए आता है, और प्रेम को शक्ति के सिंहासन पर बैठाता है।

11) और यीशु किसी से नहीं डरते। वह राजाओं के दरबार में और हर जगह साहसपूर्वक प्रचार करता है कि हथियारों के बल पर जीतना अपराध है;

12) जिस प्रकार शांति के राजकुमार, मेल्कीसेदेक, परमेश्वर के याजक, ने रक्त की एक बूंद बहाए बिना युद्ध में वीरतापूर्वक विजय प्राप्त की, उसी प्रकार नम्रता और प्रेम से हर योग्य लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

13) आप पूछते हैं कि मसीह के मंदिर कहाँ हैं? वह हाथ से नहीं बने तीर्थों में सेवकाई करता है; उसके मंदिर पवित्र पुरुषों के दिल हैं जो राजा को देखने के लिए तैयार हैं।

14) प्रकृति के उपवन उसके आराधनालय हैं; उसका मंच दुनिया है।

15) उसके पास कठपुतली शैली में तैयार कोई पुजारी नहीं है जो पुरुषों द्वारा प्रशंसा की जाए; क्योंकि मनुष्य का प्रत्येक पुत्र प्रेम का याजक है।

16) जब मनुष्य ने अपने हृदय को विश्वास से शुद्ध कर लिया है, तो उसे किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं है।

17) वह परमेश्वर के साथ मैत्रीपूर्ण शर्तों पर है; वह उस से नहीं डरता, और वह अपनी देह को यहोवा की वेदी पर रखने के योग्य और हियावदार है।

18) इस प्रकार प्रत्येक मनुष्य याजक है, और स्वयं एक जीवित बलिदान है।

19) आपको मसीह की तलाश करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि जब आपका हृदय शुद्ध हो जाएगा, तो मसीह आएगा और हमेशा के लिए आपके साथ रहेगा।

20) और फिर लमास आगे बढ़ा; वह यीशु के पास आया जब उसने फोर्ड के पास पढ़ाया।

21) और यीशु ने कहा, भारत के तारे को निहारना!

22) लामास ने कहा, धर्म के सूर्य को देखो! और उसने मसीह में अपने विश्वास को अंगीकार किया और उसके पीछे हो लिया।

अध्याय 81

क्रिस्टीन गलील की ओर यात्रा करते हैं। वे कुछ समय के लिए याकूब के कुएँ में ठहरे हुए हैं और यीशु सामरिया की एक स्त्री को शिक्षा देते हैं।

पवित्र के राज्य में क्रिस्टीन का द्वार खोल दिया गया था, और यीशु और छह शिष्यों और लामाओं ने यरदन को छोड़ दिया और अपना मुंह गलील की ओर कर लिया।

2) उनका मार्ग शोमरोन से होकर जाता था, और चलते-चलते वे सूखार को पहुँचे, जो उस भूमि के निकट था, जिसे याकूब ने युवावस्था में यूसुफ को दिया था।

3) वहाँ याकूब का कुआँ था, और यीशु चुपचाप कुएँ के पास बैठ गया, और उसके चेले रोटी मोल लेने नगर में गए।

4) नगर की एक स्त्री अपने घड़े में से अपना घड़ा भरने को निकली; और यीशु को प्यास लगी, और जब उस ने उस स्त्री से पानी मांगा तो उस ने कहा,

5) मैं शोमरोन की स्त्री हूं, और तुम यहूदी हो; क्या तुम नहीं जानते कि सामरियों और यहूदियों के बीच बैर है? वे यातायात नहीं; फिर मुझसे एक पेय का एहसान क्यों पूछें?

6) यीशु ने कहा, सामरी और यहूदी सब एक ही परमेश्वर, हमारे पिता परमेश्वर की सन्तान हैं, और वे कुटुम्बी हैं।

7) इस शत्रुता और घृणा को जन्म देने वाले दैहिक मन से केवल पूर्वाग्रह ही पैदा होता है।

8) जबकि मैं एक यहूदी पैदा हुआ था, मैं जीवन के भाईचारे को पहचानता हूँ। सामरी लोग मुझे उतने ही प्रिय हैं जितने यहूदी या यूनानी।

9) और फिर, यदि आप जानते थे कि हमारे पिता-परमेश्वर ने मेरे द्वारा मनुष्यों को क्या आशीर्वाद भेजा है, तो आप मुझसे पानी मांगते।

10) और मैं खुशी-खुशी तुम्हें जीवन के स्रोत से एक प्याला पानी देता, और तुम फिर कभी प्यासे नहीं होते।

11) स्त्री ने कहा, यह कुआं गहरा है, और तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है जिससे तुम खींच सको; आप जिस पानी के बारे में बात कर रहे हैं उसे आप कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

12) यीशु ने कहा, जिस जल की मैं चर्चा कर रहा हूं, वह याकूब के कुएं से नहीं आता; यह उन झरनों से बहती है जो कभी विफल नहीं होते।

13) देखो, जो कोई याकूब के कुएं में से पीएगा, वह फिर प्यासा होगा; परन्तु जो वह जल जो मैं देता हूं, पीते हैं, वे फिर कभी प्यासे न होंगे;

14) क्योंकि वे स्वयं ही कुएं बन जाते हैं, और उनके भीतरी भागों से चमचमाता हुआ जल अनन्त जीवन में उगलता है।

15) उस स्त्री ने कहा, हे प्रभु, मैं जीवन के उस धनी कुएं से पीऊंगी। मुझे पीने के लिए दे दो, कि मुझे और प्यास न लगे।

16) यीशु ने कहा, अपने पति को नगर से बुला ले, कि वह इस जीवित प्याले को तुम्हारे साथ बांटे।

17) स्त्री ने कहा, मेरा कोई पति नहीं है, श्रीमान।

18) यीशु ने उसे उत्तर दिया, और कहा, पति का क्या अर्थ होता है, यह शायद ही तुम जानती हो; आप एक सोने का पानी चढ़ा हुआ तितली प्रतीत होते हैं जो फूल से फूल की ओर उड़ता है।

19) आपके लिए विवाह संबंधों में कोई पवित्रता नहीं है, और आप किसी भी पुरुष के साथ संबंध रखते हैं।

20) और तुम उनमें से पांच के साथ रह चुकी हो, जिन्हें तुम्हारे मित्र पति मानते थे।

21) स्त्री ने कहा, क्या मैं भविष्यद्वक्ता और दर्शी से बातें नहीं करती? क्या आप मुझे बताने के लिए कृपालु नहीं होंगे कि आप कौन हैं?

22) यीशु ने कहा, मुझे तुम्हें यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि मैं कौन हूं, क्योंकि तुम ने व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजनों को पढ़ा है जो मेरे बारे में बताते हैं।

23) मैं वह हूं जो उस शहरपनाह को तोड़ने आया हूं जो मनुष्यों को अलग करती है। पवित्र श्वास में कोई यूनानी, कोई यहूदी और कोई सामरी नहीं है; न बंधन, न मुक्त; क्योंकि सब एक हैं।

24) स्त्री ने पूछा, तुम क्यों कहते हो, कि केवल यरूशलेम में पुरूष ही प्रार्थना करे, और हमारे पवित्र पर्वत पर दण्डवत् न करे?

25) यीशु ने कहा, जो कुछ तू ने कहा है, वह मैं नहीं कहता। एक स्थान उतना ही पवित्र है जितना कि दूसरा स्थान।

26) वह समय आ गया है, जब मनुष्य मन के मन्दिर में परमेश्वर की उपासना करें; क्योंकि परमेश्वर न तो यरूशलेम के भीतर है, और न तेरे पवित्र पर्वत में किसी रीति से ऐसा है कि वह हर एक के मन में नहीं है।

27) हमारा परमेश्वर आत्मा है; जो उसकी उपासना करें, वे उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई से करें।

28) उस स्त्री ने कहा, हम जानते हैं, कि जब मसीहा आएगा, तो वह सत्य के मार्ग पर हमारी अगुवाई करेगा।

29) यीशु ने कहा, देख, मसीह आ गया है; मसीहा आपसे बात करता है।

<u>अध्याय 82</u>

जब यीशु उपदेश दे रहा है, उसके चेले आते हैं और आश्चर्य करते हैं क्योंकि वह एक सामरी के साथ बात करता है। सीकर से बहुत से लोग यीशु को देखने आते हैं। वह उनसे बात करता है। वह अपने शिष्यों के साथ सीचर जाता है और कुछ दिनों तक रहता है।

जब यीशु कुएँ पर उस स्त्री से बातें कर ही रहा था, कि छह चेले सूखार से भोजन लेकर आए।

2) और जब उन्होंने उसे शोमरोन की एक स्त्री से बातें करते हुए देखा, और एक को वे वेश्या समझती थीं, तो वे चकित हुए; फिर भी किसी ने उससे नहीं पूछा कि उसने उससे बात क्यों की।

3) वह स्त्री विचारों में इतनी खोई हुई थी और स्वामी की कही हुई बात पर इतनी तल्लीन थी कि वह कुएँ के बारे में अपना काम भूल गई थी; वह अपना घड़ा छोड़कर नगर की ओर तेजी से दौड़ी।

4) उस ने लोगों को उस भविष्यद्वक्ता के विषय में सब कुछ बता दिया, जिससे वह याकूब के कुएं पर मिली थी; उसने कहा, उसने मुझे वह सब कुछ बताया जो मैंने कभी किया।

5) और जब लोग उस पुरूष के विषय में और जानेंगे, तो उस स्त्री ने कहा, निकलकर देख। और भीड़ याकूब के कुएं के पास निकली।

6) यीशु ने उन्हें आते देखकर अपने पीछे चलनेवालों से कहा, तुम्हें यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि कटनी के चार महीने हो गए हैं;

7) देखो, अब कटनी का समय हो गया है। आँख उठाकर देखो; खेत पके हुए अनाज के साथ सुनहरे हैं।

8) देखो, जीवन के बीज बोने के लिए बहुत से बोने वाले निकले हैं; बीज बढ़ गया है; गर्मी की धूप में पौधे मजबूत हुए हैं; अनाज पक गया है, और स्वामी मनुष्यों को काटने के लिए बुलाता है।

9) और तुम खेतों में जाकर जो कुछ औरों ने बोया है, काटोगे; परन्तु जब हिसाब का दिन आएगा, तो बोने वाले और काटने वाले सब मिलकर आनन्द करेंगे।

10 तब फिलिप्पुस ने यीशु से कहा, थोड़ा ठहरकर इस जलपाई के नीचे बैठ, और इस भोजन में से कुछ खा; तुम मूर्छित होगे, क्योंकि तुम ने पहिले ही से कुछ न खाया है।

11) परन्तु यीशु ने कहा, मैं मूर्छित नहीं हूं, क्योंकि मेरे पास खाने को है, जिसके विषय में तुम नहीं जानते।

12) तब चेलोंने आपस में कहा, कौन उसे कुछ खाने को ला सकता था?

13) वे नहीं जानते थे कि उसके पास पंखों को रोटी में बदलने की शक्ति है।

14) यीशु ने कहा, कटनी का स्वामी अपने काटने वालों को न तो भेजता और न कुछ खिलाता है।

15) मेरे पिता, जिन्होंने मुझे मानव जीवन के कटनी के खेत में भेजा है, मेरी कभी कमी नहीं होने देंगे; और जब वह तुझे सेवा करने को बुलाएगा, तब वह तुझे भोजन देगा, और पहिनाएगा, और शरण देगा।

16) तब उस ने शोमरोन के लोगों की ओर फिरकर कहा, यह अजीब न समझो कि मैं एक यहूदी होकर तुझ से बातें करूं, क्योंकि मैं तेरे संग एक हूं।

17) विश्वव्यापी मसीह जो था और है, और सदा रहेगा, मुझ में प्रकट है; परन्तु मसीह प्रत्येक मनुष्य का है।

18) परमेश्वर अपनी आशीषों को भव्य हाथ से तितर-बितर करता है, और वह अपने हाथ के सभी प्राणियों में से एक से अधिक दयालु नहीं है।

19) मैं अभी यहूदा के पहाडिय़ों से निकला, और परमेश्वर का वही सूर्य चमक रहा था, और उसके फूल खिले हुए थे, और रात को उसके तारे यहां के समान चमकीले थे।

20) भगवान एक बच्चे को दूर नहीं कर सकते; उसकी दृष्टि में यहूदी, यूनानी और सामरी एक समान हैं।

21) और पुरुषों और महिलाओं को अपने नाटकों में बच्चों की तरह क्यों झल्लाहट और झगड़ा करना चाहिए?

22) मनुष्य के पुत्रों को अलग करने वाली रेखाएँ पुआल से बनी होती हैं, और प्रेम की एक सांस ही उन सभी को उड़ा देती है।

23) उस परदेशी ने जो कहा, उस से लोग चकित हुए, और बहुतोंने कहा, कि जो मसीह आने वाला था, वह निश्चय आ गया है।

24) और यीशु उनके साथ नगर में गया और कुछ दिनों तक रहा।

अध्याय 83

यीशु सीकर के लोगों को शिक्षा देते हैं। एक जुनूनी से एक दुष्ट आत्मा को निकालता है। आत्मा को उसके स्थान पर भेजता है। कई लोगों को ठीक करता है। पुजारी जीसस की सीचर में उपस्थिति से परेशान हैं, लेकिन वह उनसे बात करता है और उनका पक्ष जीतता है।

सीचर में यीशु ने लोगों को बाज़ार में शिक्षा दी।

2) एक जुनूनी आदमी को उसके पास लाया गया। जिस दुष्ट आत्मा में मनुष्य था, वह हिंसा और वासना से भरी थी, और अक्सर अपने शिकार को जमीन पर फेंक देती थी।

3) और यीशु ने ऊंचे शब्द से कहा, हे आत्मा को आधार, इस मनुष्य के प्राणों पर अपना अधिकार कर, और अपक्की ओर लौट जा।

4) और फिर आत्मा ने विनती की कि वह एक कुत्ते के शरीर में जा सकता है जो पास में खड़ा था।

5) लेकिन यीशु ने कहा, असहाय कुत्ते को क्यों नुकसान पहुँचाओ? इसका जीवन उतना ही प्रिय है जितना मुझे मेरा।

6) अपने पाप का बोझ किसी भी जीवित वस्तु पर डालना तुम्हारा नहीं है।

7) अपने ही कर्मों और बुरे विचारों से तुम इन सब संकटों को अपने ऊपर ले आए हो। आपको हल करने के लिए कठिन समस्याएं हैं; लेकिन आपको उन्हें अपने लिए हल करना होगा।

8) इस प्रकार मनुष्य पर आसक्त होकर तुम अपनी दशाओं को दुगना दु:खित कर देते हो। अपने स्वयं के डोमेन में वापस जाएं; किसी भी चीज को नुकसान पहुंचाने से बचना चाहिए, और धीरे-धीरे आप खुद ही मुक्त हो जाएंगे।

9) दुष्ट आत्मा उस मनुष्य को छोड़कर अपनों के पास चली गई। उस आदमी ने कृतज्ञता से देखा और कहा, भगवान की स्तुति करो।

10) और बहुत से लोग अपके रोगियोंको ले आए, और यीशु ने वचन सुनाया, और वे चंगे हो गए।

11) आराधनालय के शासक और सभी याजकों को जब यह बताया गया कि यरूशलेम से यीशु नगर में प्रचार कर रहे हैं, तो वे बहुत परेशान हुए।

12) उन्होंने सोचा कि वह धर्मांतरण करने और सामरियों के बीच झगड़ा भड़काने आया है।

13) तब उन्होंने एक हाकिम को भेजा, कि उसे आराधनालय में ले आए, कि वह नगर में अपक्की उपस्थिति का कारण बताए।

14) परन्तु यीशु ने अपने आने वाले से कहा, लौट जा, और आराधनालय के याजकों और हाकिम से कह, कि मैं अपराध में लिप्त नहीं हूं।

15) मैं टूटे हुए दिलों को बांधने, बीमारों को चंगा करने, और बुरी आत्माओं को जुनूनी लोगों में से निकालने के लिए आया हूं।

16) उन से कहो कि उनके भविष्यवक्ताओं ने मेरे विषय में कहा है; कि मैं किसी नियम को तोड़ने नहीं, वरन सर्वोच्च नियम को पूरा करने आया हूं।

17) उस व्यक्ति ने लौट कर आराधनालय के याजकों और हाकिम को यीशु की कही बात बता दी।

18) तब हाकिम चकित हुआ, और याजकों के साथ उस बाजार को गया जहां यीशु था।

19) यीशु ने उन्हें देखकर कहा, देख, सारे सामरिया के प्रतिष्ठित पुरूष! पुरुषों ने लोगों को सही रास्ते पर ले जाने के लिए ठहराया।

20) और मैं उनकी सहायता करने आया हूं, न कि उनके काम में बाधा डालने के लिए।

21) पुरुषों के पुत्रों के दो वर्ग हैं; वे जो न्याय, सत्य, समानता और अधिकार की पक्की नींव पर मानव जाति का निर्माण करेंगे,

22) और वे जो पवित्र मन्दिर को, जहां आत्मा का वास है, नाश कर डालेंगे, और अपके साथियों को भीख मांगने और अपराध करने के लिथे ले आएंगे।

23) अधिकार के पवित्र भाईचारे को समय के हलचल भरे संघर्षों में एकजुट होना चाहिए।

24) चाहे वे यहूदी हों, सामरी हों, अश्शूर हों, या यूनानी हों, उन्हें अपने पैरों तले सब कलह, सब कलह, ईर्ष्या और घृणा को रौंदना होगा, और मनुष्य के भाईचारे का प्रदर्शन करना होगा।

25) तब उस ने आराधनालय के सरदार से कहा, उस ने कहा, हम धर्म के लिये एक हो गए हैं; विभाजित हम गिरेंगे।

26) और फिर उसने हाकिम का हाथ पकड़ लिया; एक प्रेम प्रकाश ने उनकी आत्मा को भर दिया; और सब लोग चकित हुए।

अध्याय 84

क्रिस्टीन ने अपनी यात्रा फिर से शुरू की। वे शोमरोन नगर में कुछ समय के लिए ठहरे हुए हैं। यीशु आराधनालय में बोलते हैं। एक महिला को मानसिक शक्ति से ठीक करता है। वह गायब हो जाता है, लेकिन बाद में अपने शिष्यों से जुड़ जाता है क्योंकि वे नासरत की ओर जाते हैं।

मसीहियों ने गलील देश की ओर मुंह फेर लिया; परन्तु जब वे शोमरोन के नगर में पहुंचे, तब लोगों की भीड़ ने उन पर भारी दबाव डाला;

2) तब वे आराधनालय में गए, और यीशु ने मूसा की पुस्तक खोली, और उस ने पढ़ा:

3) तुझ में और तेरे वंश में पृथ्वी की सारी जातियां आशीष पाएंगी।

4) तब उस ने पुस्तक बन्द करके कहा, ये बातें सेनाओं के यहोवा ने हमारे पिता इब्राहीम से कही हैं, और इस्राएल सारे जगत पर आशीषित हुआ है।

5) हम उसके वंश हैं; परन्तु जिस बड़े काम के लिये हम बुलाए गए थे उसका एक भी दशमांश अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

6) सेनाओं के यहोवा ने इस्राएलियों को परमेश्वर और मनुष्य की एकता की शिक्षा देने के लिये अलग किया है; लेकिन वह कभी नहीं सिखा सकता जो वह जीवन में प्रदर्शित नहीं करता है।

7) हमारा परमेश्वर आत्मा है, और उसमें सारी बुद्धि, प्रेम और शक्ति बनी रहती है।

8) प्रत्येक मनुष्य में ये पवित्र गुण उभर रहे हैं, और नियत समय में वे प्रकट होंगे; प्रदर्शन पूरा हो जाएगा, और मनुष्य एकता के तथ्य को समझ जाएगा।

9) और तुम, आराधनालय के सरदार, और तुम, ये याजक, सेनाओं के यहोवा के प्रतिष्ठित सेवक हो।

10) सब मनुष्य जीवन के मार्ग में मार्गदर्शन के लिथे तेरी ओर देखते हैं; उदाहरण पुजारी का दूसरा नाम है; तो आप क्या होंगे जो लोग होंगे, कि आपको होना चाहिए।

11) एक साधारण ईश्वरीय जीवन दस हजार आत्माओं को पवित्रता और अधिकार के लिए जीत सकता है।

12) और सब लोगोंने कहा, आमीन।

13) तब यीशु आराधनालय से निकल गया, और सांफ की प्रार्थना के समय पवित्र अहाते में गया, और सब लोगोंने अपके पवित्र पर्वत की ओर मुंह करके प्रार्थना की।

14) और यीशु ने प्रार्थना की।

15) और जब वह मौन भाव में बैठा था, तो आत्मा की एक आवाज ने उसकी आत्मा से मदद की गुहार लगाई।

16) और यीशु ने एक स्त्री को खाट पर घोर संकट में देखा; क्योंकि वह मृत्यु पर्यंत रोगी थी।

17) वह बोल नहीं सकती थी, परन्तु सुन चुकी थी कि यीशु परमेश्वर का जन है, और अपने मन में उसने सहायता के लिए उस से प्रार्थना की।

18) और यीशु ने मदद की; वह नहीं बोला; परन्तु प्रकाश की एक चमक की तरह, उसकी आत्मा से एक शक्तिशाली गुण ने मरने वाले के शरीर को भर दिया, और वह उठी, और प्रार्थना करते समय अपने रिश्तेदारों में शामिल हो गई।

19) उसके कुटुम्बी चकित हुए, और उन्होंने उस से कहा, तू कैसे चंगी हो गई? और उसने जवाब दिया,

20) मैं नहीं जानता; मैंने केवल विचार में परमेश्वर के भक्त से उपचार शक्ति के लिए कहा, और एक क्षण में मैं ठीक हो गया।

21) लोगों ने कहा, देवता निश्चय पृथ्वी पर आए हैं; क्योंकि मनुष्य के पास विचार से चंगा करने की शक्ति नहीं है।

22) लेकिन यीशु ने कहा, स्वर्ग और पृथ्वी में सबसे बड़ी शक्ति विचार है।

23) ईश्वर ने ब्रह्मांड को विचार से बनाया है; वह लिली और गुलाब को विचार से रंगता है।

24) यह अजीब क्यों लगता है कि मैं एक उपचार विचार भेजूं और बीमारी और मृत्यु के पंखों को स्वास्थ्य और जीवन में बदल दूं?

25) देखो, तुम इससे कहीं बड़ी बातें देखोगे, क्योंकि पवित्र विचार की शक्ति से मेरा शरीर देहधारी मांस से आत्मा के रूप में बदल जाएगा; और आपका भी होगा।

26) जब यीशु ने यह कहा कि वह गायब हो गया, और किसी ने उसे जाते नहीं देखा।

27) उनके अपने शिष्यों ने परिवर्तन को नहीं समझा; वे नहीं जानते थे कि उनका स्वामी कहां गया, और वे अपने मार्ग पर चले गए।

28) परन्तु जब वे चलकर उस विचित्र घटना के विषय में बातें कर रहे थे, तो देखो, यीशु आया, और उनके साथ गलील के नासरत को चला।

अध्याय 85

जॉन, अग्रदूत, हेरोदेस को उसकी दुष्टता के लिए निंदा करता है। हेरोदेस ने उसे माकेरूस के कारागार में भेज दिया। यीशु बताता है कि परमेश्वर ने यूहन्ना को कैद करने की अनुमति क्यों दी।

हेरोड एंटिपास, पाराका और गलील के चतुर्भुज, तिरस्कृत, स्वार्थी और अत्याचारी थे।

2) उसने अपनी पत्नी को घर से निकाल दिया ताकि वह हेरोदियास को पत्नी के रूप में ले सके, एक की पत्नी, एक करीबी रिश्तेदार, एक महिला, खुद की तरह, अनैतिक और अन्यायी।

3) गलील के तट पर तिबेरियस शहर हेरोदेस का घर था।

4) अब अग्रदूत यूहन्ना, गलील के समुद्र के किनारे लोगों को उपदेश देने के लिए सलीम सोतों से निकल गया था; और उस ने दुष्ट हाकिम और उसकी चुराई हुई पत्नी को उनके सब पापोंके लिथे डांटा।

5) हेरोदियास क्रोधित हो गया क्योंकि उपदेशक ने उस पर और उसके पति पर उनके अपराधों का आरोप लगाने का साहस किया;

6) और वह हेरोदेस पर प्रबल हुई, कि वह अग्रदूत को पकड़ ले, और उसे कड़वे समुद्र के किनारे माखरे के गढ़ में एक कालकोठरी में डाल दिया।

7) और हेरोदेस ने अपनी आवश्यकता के अनुसार किया; तब वह अपके सब पापोंमें शान्ति से रहती या, क्योंकि उस में फिर किसी की निन्दा करने का साहस न हुआ।

8) यूहन्ना के अनुयायियों को चेतावनी दी गई थी कि वे यूहन्ना के मुकदमे और कारावास के बारे में न बोलें।

9) अदालत के आदेश से, उन्हें सार्वजनिक हॉल में पढ़ाने से रोक दिया गया था।

10) वे इस बेहतर जीवन के बारे में बात नहीं कर सकते थे जिसे हेरोदेस जॉन के पाषंड कहते थे।

11) जब यह ज्ञात हुआ कि यूहन्ना को टेट्रार्क दरबार ने कैद कर लिया है, तो यीशु के मित्रों ने अच्छा समझा कि वह गलील में न रहे।

12) यीशु ने कहा, मुझे डरने की कोई आवश्यकता नहीं; मेरा समय अभी नहीं आया है; जब तक मेरा काम नहीं हो जाता तब तक कोई आदमी मेरे पास नहीं रह सकता।

13) और जब उन्होंने पूछा कि परमेश्वर ने हेरोदेस को यूहन्ना को कैद करने की अनुमति क्यों दी, तो उसने कहा,

14) गेहूँ के डंठल को देखो! जब वह अन्न को सिद्ध कर देता है, तो उसका कोई मूल्य नहीं रहता; वह गिर जाता है, और फिर उसी पृथ्वी का भाग बन जाता है, जहां से वह आया था।

15) यूहन्ना सोने के गेहूँ का एक डंठल है; वह सारी पृथ्वी के सबसे धनी अन्न को प्रौढ़ता तक ले आया; उसका काम हो गया है।

16) यदि उसने एक और शब्द कहा होता तो यह उस समरूपता को नष्ट कर देता जो अब एक महान जीवन है।

17) और जब मेरा काम हो जाएगा, तो हाकिम मेरे साथ वही करेंगे जो उन्होंने यूहन्ना के साथ किया है, और इससे भी अधिक।

18) ये सभी घटनाएँ ईश्वर की अपनी योजना का हिस्सा हैं। जब तक दुष्ट सत्ता में होंगे तब तक निर्दोष पीड़ित होंगे; धिक्कार है उन पर जो निर्दोषों की पीड़ा का कारण बनते हैं।

अध्याय 86

क्रिस्टीन नासरत में हैं। यीशु आराधनालय में बोलते हैं। वह लोगों को नाराज करता है, और वे उसे मारने का प्रयास करते हैं। वह रहस्यमय तरीके से गायब हो जाता है और आराधनालय में लौट आता है।

क्रिस्टीन नासरत में थे। सब्त का दिन था, और यीशु आराधनालय में गया।

2) पुस्तकों के रखवाले ने यीशु को एक दिया और उसने उसे खोलकर पढ़ा:

3) यहोवा के आत्मा ने मुझ पर छाया किया है; उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है; बंदियों को मुक्त करने के लिए; दृष्टिहीन आँखें खोलने के लिए;

4) दीन और कुचले हुओं को राहत देने के लिए, और घोषणा करने के लिए, जुबली का वर्ष आ गया है।

5) इन वचनों को पढ़कर उस ने पुस्तक बन्द करके कहा, यह वचन आज के दिन तेरी आंखों के साम्हने पूरा हुआ है। जुबली का वर्ष आ गया है; वह समय जब इस्राएल जगत को आशीष देगा।

6) फिर उस ने उन्हें उस पवित्र के राज्य के विषय में बहुत सी बातें कहीं; जीवन के छिपे हुए तरीके के बारे में; पापों की क्षमा के बारे में।

7) अब, बहुत से लोग नहीं जानते थे कि वक्ता कौन था: और दूसरों ने कहा, क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है? क्या उसकी माँ मार्मियन मार्ग पर नहीं रहती?

8) और किसी ने बोल कर कहा, यह वही मनुष्य है, जिस ने काना, कफरनहूम और यरूशलेम में ऐसे बड़े बड़े काम किए।

9) तब लोगोंने कहा, वैद्य अपने आप को चंगा कर। जो बड़े बड़े काम तू ने दूसरे नगरों में किए हैं, वे सब अपने कुटुम्बियों के बीच यहीं करो।

10) यीशु ने कहा, कोई भविष्यद्वक्ता अपने देश के लोगोंके द्वारा आदर से ग्रहण नहीं किया जाता; और नबी हर एक के पास नहीं भेजे जाते।

11) एलिय्याह परमेश्वर का भक्त था; उसके पास शक्ति थी, और उसने स्वर्ग के फाटकों को बंद कर दिया, और चालीस महीने तक बारिश नहीं हुई; और जब उस ने वचन सुनाया, तो मेंह बरसा, और पृथ्वी फिर उत्पन्न हो गई।

12) और उस देश में बहुत सी विधवाएं थीं; परन्तु यह एलिय्याह सारपत को छोड़ किसी के पास नहीं गया, और वह धन्य हुई।

13) और जब एलीशा जीवित रहा, तो देखो, इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, परन्तु एक को छोड़ और कोई शुद्ध न हुआ, अर्थात वह अरामी जो विश्वासी था।

14) तुम्हारा कोई विश्वास नहीं है; आप अपनी जिज्ञासु सनक को संतुष्ट करने के लिए संकेतों की तलाश करते हैं; परन्तु जब तक तू विश्वास की आंखें न खोलेगा, तब तक न देख सकेगा।

15) और तब लोग क्रोधित हुए; और वे उस पर लपके, और उसे रस्सियोंसे बान्धे, और दूर एक खाई में ले गए, कि उसे मार डाला जाए;

16) परन्तु जब उन्होंने सोचा कि वे उसे पकड़ रहे हैं, तो वह गायब हो गया; अनदेखे, वह क्रोधित लोगों के बीच से गुजरा, और चला गया।

17) लोग चकित हुए और कहने लगे, यह कैसा मनुष्य है?

18) और जब वे फिर नासरत में आए, तो उन्होंने उसे आराधनालय में उपदेश देते हुए पाया।

19) उन्होंने उसे फिर कभी परेशान नहीं किया, क्योंकि वे बहुत डरे हुए थे।

<u>अध्याय 87</u>

क्रिस्टीन काना जाते हैं। यीशु एक रईस के बच्चे को चंगा करता है। क्रिस्टीन कफरनहूम जाते हैं। यीशु अपनी माँ के लिए एक विशाल घर प्रदान करता है। उसने बारह प्रेरितों को चुनने के अपने इरादे की घोषणा की।

नासरत में यीशु ने और नहीं सिखाया; वह अपने चेलों के साथ काना को गया, जहां उसने एक बार शादी के भोज में पानी को दाखमधु में बदल दिया।

2) और यहाँ उसकी भेंट एक कुलीन व्यक्ति से हुई, जिसका घर कफरनहूम में था, जिसका पुत्र बीमार था।

3) उस व्यक्ति को यीशु की चंगा करने की शक्ति में विश्वास था, और जब उसे पता चला कि वह गलील आ गया है, तो वह रास्ते में उससे मिलने के लिए जल्दबाजी में गया।

4) वह व्यक्ति सातवें घंटे पर यीशु से मिला, और उस ने उस से बिनती की, कि अपके पुत्र को बचाने के लिथे फुर्ती से कफरनहूम चला जाए।

5) परन्तु यीशु नहीं गया; वह कुछ देर तक चुपचाप एक ओर खड़ा रहा, और कहा, तेरे विश्वास ने चंगाई का मरहम सिद्ध किया है; तुम्हारा बेटा ठीक है।

6) उस मनुष्य ने विश्वास किया और कफरनहूम की ओर चल दिया, और जाते ही अपके घर के एक दास से मिला, जिस ने कहा,

7) मेरे प्रभु, आपको जल्दबाजी करने की आवश्यकता नहीं है; तुम्हारा बेटा ठीक है।

8) पिता ने पूछा, मेरे बेटे ने कब सुधार करना शुरू किया?

9) उस दास ने कहा, कल के लगभग सातवें पहर को ज्वर उतर गया।

10) और तब पिता को पता चला कि यह वही चंगाई वाला बाम है जिसे यीशु ने भेजा था जिसने उसके पुत्र को बचाया।

11) काना में यीशु ने देर नहीं की; वह अपने चेलों के साथ कफरनहूम को गया, जहां उसने एक बड़ा घर बनवाया, जहां वह अपनी मां के साथ रह सके, जहां उसके चेले वचन सुनने के लिए मरम्मत कर सकें।

12) उसने उन लोगों को, जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, उसके घर में मिलने के लिए बुलाया, जिसे उसके शिष्यों ने मसीह का स्कूल कहा था; और जब वे आए तो उस ने उन से कहा,

13) मसीह का यह सुसमाचार सारे संसार में अवश्य सुनाया जाना चाहिए।

14) यह क्रिस्टीन की बेल एक शक्तिशाली दाखलता होगी जिसकी शाखाओं में सारी पृथ्वी के लोग, गोत्र और भाषाएं शामिल होंगी।

15) मैं दाखलता हूं; काठ की डालियां बारह पुरूष हों, और वे चारों ओर डालियां फैलाएं;

16) और उन लोगों में से जो मेरे पीछे हो लिए हैं, पवित्र श्वास बारहों को बुलाएगा।

17) अब जा, और जैसा तू ने अपना काम किया वैसा ही अपना काम कर; लेकिन कॉल के लिए सुनो।

18) तब चेले अपके नित्य काम करने को चले, और जैसा उन्होंने किया था वैसा ही अपना काम किया, और यीशु अकेले हम्मोत की पहाड़ियोंपर प्रार्थना करने को गया।

19) साइलेंट ब्रदरहुड के साथ संवाद करने में उन्होंने तीन दिन और रात बिताई; तब वह पवित्र श्वांस की शक्ति से बारहों को बुलाने आया।

अध्याय 88

यीशु समुद्र के किनारे चलता है। मछली पकड़ने वाली नाव में खड़े होकर लोगों से बात करते हैं। उनके निर्देशन में मछुआरे बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ते हैं। वह अपने बारह प्रेरितों को चुनता और बुलाता है।

गलील के समुद्र के पास, क्रिस्टीन मास्टर चला गया, और लोगों की भीड़ उसके पीछे हो ली।

2) मछुआरे की नावें अभी-अभी आई थीं, और पतरस और उसका भाई अपनी नावों पर बैठे रहे; उनके सहायक तट पर टूटे हुए जालों की मरम्मत कर रहे थे।

3) और यीशु एक नाव पर चढ़ गया और पतरस ने उसे किनारे से कुछ दूर धकेल दिया; और यीशु नाव पर खड़े होकर भीड़ से बातें करने लगे। उसने बोला,

4) सेनाओं के यहोवा के भविष्यद्वक्ता यशायाह ने आगे देखा, और उस ने आज का दिन देखा; उसने लोगों को समुद्र के किनारे खड़े देखा, और वह चिल्लाया,

5) जबूलोन और नप्ताली का देश, यरदन के पार और समुद्र के पार का देश, अन्यजाति गलील,

6) वे लोग अन्धियारे में थे, और मार्ग न जानते थे; परन्तु, देखो, उन्होंने दिन के तारे को उदय होते देखा; एक प्रकाश प्रवाहित हुआ; उन्होंने जीवन का मार्ग देखा; वे उसमें चले।

7) और तुम आज पृथ्वी के सभी लोगों से अधिक धन्य हो, क्योंकि तुम पहले प्रकाश को देख सकते हो और ज्योति के पुत्र बन सकते हो।

8) तब यीशु ने पतरस से कहा, अपने जालोंको नाव पर ला, और गहिरे में डाल दे।

9) और पतरस ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने उसे करने को कहा; परन्तु उस ने अविश्वासी रीति से कहा, यह तो व्यर्थ यात्रा है; आज गलील के इस तट पर मछलियां नहीं हैं; अन्द्रियास के साथ मैं ने सारी रात परिश्रम किया, और कुछ भी नहीं लिया।

10) परन्तु यीशु ने समुद्र की सतह के नीचे देखा; उसने बहुत सी मछलियाँ देखीं। उसने पतरस से कहा,

11) अपना जाल नाव के दाहिनी ओर फेंक दो।

12) और पतरस ने यीशु के कहने के अनुसार किया, और देखो, जाल भर गया; वह इतनी ताकतवर थी कि बहुत सी मछलियाँ पकड़ न सके।

13) और पतरस ने यूहन्ना और याकूब को, जो पास में थे, सहायता के लिये पुकारा; और जब नाव पर जाल डाला गया, तब दोनों नावें मछलियों से भरी हुई थीं।

14) जब पतरस ने भारी कैच देखा, तो वह अपनी बातों से लज्जित हुआ; लज्जित हुआ, क्योंकि उस ने विश्वास न किया, और यीशु के पांवों पर गिरकर कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं!

15) और यीशु ने कहा, देखो पकड़! अब से तुम मछली के लिथे फिर मछली न पकड़ना;

16) क्रिस्टीन का जाल मानव जीवन के समुद्र में, नाव के दाहिनी ओर फेंकना; तुम लोगों को पवित्रता और मेल के जाल में फँसाओगे।

17) अब जब वे किनारे पर पहुँचे तो क्रिस्टीन स्वामी ने पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना को बुलाकर कहा,

18) हे गलील के मछुआरे, हमारे स्वामी हमारे लिये एक बड़ा काम करते हैं; मैं जाता हूँ, और तुम मेरे पीछे हो सकते हो। और वे सब छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

19) और यीशु तट पर चला, और फिलिप्पुस और नतनएल को तट पर चलते देखकर उन से कहा,

20) बेथसैदा के हे शिक्षकों, जिन्होंने लंबे समय से लोगों को यूनानी दर्शन पढ़ाया है, आपके और मेरे लिए स्वामी के पास एक उच्च कार्य है; मैं जाता हूँ और तुम मेरे पीछे हो सकते हो; और फिर उन्होंने उसका पीछा किया।

21) थोड़ी दूर पर एक रोमी श्रद्धांजलि भवन खड़ा था, और यीशु ने अधिकारी को देखा; उसका नाम मत्ती था, जो कभी यरीहो में रहता था;

22) वह युवक जो एक बार यहोवा के साम्हने दौड़कर यरूशलेम को गया, और कहा, देख, क्रिस्टीन आ रहे हैं।

23) और मत्ती धनवान व्यक्ति था, और यहूदियों, अरामियों और यूनानियों के ज्ञान में सीखा था।

24) यीशु ने उस से कहा, हे मत्ती, कैसर के विश्वासपात्र दास, जय हो! स्वामी हमें आत्माओं के श्रद्धांजलि घर में बुलाते हैं; मैं जाता हूँ और तुम मेरा अनुसरण कर सकते हो। और मत्ती ने उसका पीछा किया।

25) इस्करियोती और उसका पुत्र, जिसका नाम यहूदा था, मत्ती द्वारा नियुक्त किया गया था और श्रद्धांजलि गृह में थे।

26) यीशु ने यहूदा से कहा, अपके काम पर लगा रह; स्वामी हमें आत्माओं के बचत बैंक में कर्तव्य के लिए बुलाते हैं; मैं जाता हूँ और तुम मेरा अनुसरण कर सकते हो। और यहूदा उसके पीछे हो लिया।

27) और यीशु ने एक वकील से मुलाकात की, जिसने क्रिस्टीन मास्टर के बारे में सुना और अंताकिया से मसीह के स्कूल में पढ़ने के लिए आया था।

28) यह व्यक्ति थॉमस था, जो संदेह का व्यक्ति था, और फिर भी संस्कृति और शक्ति का यूनानी दार्शनिक था।

29) परन्तु यीशु ने उस में विश्वास की लकीरें देखीं, और उस से कहा, स्वामियों को ऐसे मनुष्यों की आवश्यकता है जो व्यवस्था की व्याख्या कर सकें; मैं जाता हूँ, और तुम मेरे पीछे हो सकते हो। और थॉमस ने उसका पीछा किया।

30) और जब सांझ हुई, और यीशु घर पर था, तो देखो, उसके कुटुम्ब, याकूब और यहूदा, जो अल्फियस और मरियम के पुत्र थे, आ गए।

31) और ये विश्वासी थे, और ये नासरत के बढ़ई थे।

32) यीशु ने उन से कहा, देखो, तुम ने मेरे और मेरे पिता यूसुफ के संग मनुष्यों के घरोंके लिथे घर बनाकर परिश्रम किया है। आत्माओं के लिए घर बनाने में सहायता करने के लिए स्वामी अभी हमें बुलाते हैं; हथौड़े, कुल्हाड़ी या आरी की आवाज के बिना बने घर;

33) मैं जाता हूं, और तुम मेरे पीछे हो सकते हो। और याकूब और यहूदा ने कहा, हे प्रभु, हम तेरे पीछे पीछे चलेंगे।

34) और अगले दिन यीशु ने शमौन के पास एक संदेश भेजा, जो उत्साही लोगों के नेता, यहूदी कानून के सख्त प्रतिपादक थे।

35) और सन्देश में यीशु ने कहा, स्वामी इब्राहीम के विश्वास को प्रदर्शित करने के लिए मनुष्यों को बुलाते हैं; मैं जाता हूँ, और तुम मेरे पीछे हो सकते हो। और शमौन उसके पीछे हो लिया।

अध्याय 89

बारह प्रेरित यीशु के घर पर हैं और अपने काम के लिए समर्पित हैं। यीशु उन्हें निर्देश देते हैं। वह सब्त के दिन आराधनालय में जाता है और सिखाता है। वह एक जुनूनी व्यक्ति में से एक अशुद्ध आत्मा को निकालता है। वह पतरस की सास को चंगा करता है।

अब, सब्त के दिन से एक दिन पहले, जिन बारह चेलों को बुलावा मिला था, वे एक मन से यीशु के घर में मिले।

2) यीशु ने उन से कहा, यह दिन परमेश्वर के काम के लिये अपने आप को समर्पित करने का है; तो आइए प्रार्थना करें।

3) बाहरी से आंतरिक स्व की ओर मुड़ें; कर्म के सभी दरवाजे बंद करो और प्रतीक्षा करो।

4) पवित्र श्वास इस स्थान को भर देगा, और आप पवित्र श्वास में बपतिस्मा लेंगे।

5) और फिर उन्होंने प्रार्थना की; दोपहर के सूरज से भी तेज रोशनी ने सारे कमरे को भर दिया, और हर सिर से ज्वाला की जीभ हवा में ऊंची उठी।

6) गलील का वातावरण अस्त-व्यस्त था; कफरनहूम के ऊपर दूर की गड़गड़ाहट का शब्द सुनाई दिया, और लोगों ने गीत सुने, मानो दस हजार स्वर्गदूत एक साथ मिल गए हों।

7) और फिर बारह चेलों ने एक शान्त, छोटी सी आवाज सुनी, और केवल एक ही शब्द कहा गया, एक ऐसा शब्द जिसे बोलने का उनका साहस नहीं था; यह परमेश्वर का पवित्र नाम था।

8) यीशु ने उन से कहा, इस सर्वव्यापी वचन के द्वारा तुम तत्वों और वायु की सारी शक्तियों को वश में कर सकते हो।

9) और जब तुम अपने मन में यह वचन बोलते हो, तो तुम्हारे पास जीवन और मृत्यु की कुंजियां हैं; जो चीजें हैं; जो चीजें थीं; जो चीजें होनी हैं।

10) देखो, क्रिस्टीन की दाखलता की बारह बड़ी डालियां तुम हो; बारह नींव के पत्थर; मसीह के बारह प्रेरित।

11) मैं तुम्हें भेड़ के बच्चे की नाईं जंगली पशुओं के बीच भेजता हूं; परन्तु सर्वशक्तिमान वचन तेरा कवच और ढाल होगा।

12) और फिर वायु गीत से भर गई, और सब प्राणी कहने लगे, परमेश्वर की स्तुति करो! तथास्तु!

13) अगला दिन सब्त का दिन था; और यीशु अपके चेलोंके संग आराधनालय को गया, और वहां उस ने उपदेश दिया।

14) लोगों ने कहा, वह शास्त्रियों और फरीसियों की नाईं उपदेश नहीं देता; लेकिन एक आदमी के रूप में जो जानता है और बोलने का अधिकार रखता है।

15) यीशु के बोलते ही, एक जुनूनी आदमी अंदर आया; बुरी आत्माएं जिन्होंने मनुष्य को भ्रमित किया, वे नीच किस्म की थीं; वे अक्सर अपने शिकार को जमीन पर या आग में फेंक देते थे।

16) और जब आत्माओं ने आराधनालय में क्रिस्टीन स्वामी को देखा, तो उन्होंने उसे पहचान लिया, और कहा,

17) हे परमेश्वर के पुत्र, तुम यहाँ क्यों हो? क्या तुम हमारे समय से पहले वचन के द्वारा हमें नष्ट करोगे? हमारा तुमसे कोई लेना-देना नहीं होता; हमें अकेला कर दो।

18) परन्तु यीशु ने उन से कहा, मैं उस सर्वशक्तिमान वचन के द्वारा कहता हूं; बाहर आओ; इस आदमी को और न सताओ; अपने स्थान पर जाओ।

19) तब अशुद्ध आत्माओं ने उस व्यक्ति को फर्श पर पटक दिया, और वे भयंकर पुकार के साथ चले गए।

20) और यीशु ने उस मनुष्य को उठाकर कहा, यदि तू अपना मन भलाई में लगा रहेगा, तो दुष्टात्माओं को रहने का ठिकाना नहीं मिलेगा;

21) वे केवल खाली दिमाग और दिलों में आते हैं। अपने रास्ते पर जाओ और पाप मत करो।

22) यीशु ने जो बातें कही, और जो काम उसने किया, उससे लोग चकित रह गए। उन्होंने आपस में पूछा,

23) यह आदमी कौन है? यह सारी शक्ति कहाँ से आती है, जिससे अशुद्ध आत्माएँ भी डरती हैं, और भाग जाती हैं?

24) क्रिस्टीन मास्टर ने आराधनालय छोड़ दिया; पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना के साथ, वह पतरस के घर गया, जहां उसका एक निकट संबंधी रोगी था।

25) और पतरस की पत्नी भीतर आई; यह उसकी माँ थी जो बीमार थी।

26) और यीशु ने उस स्त्री को उसके खाट पर लेटे हुए छुआ; उसने वचन बोला; ज्वर उतर गया, और वह उठकर उनकी सेवा टहल करने लगी।

27) पड़ोसियों ने सुना कि क्या हुआ था, और तब वे अपने बीमारों और मोहग्रस्तों को ले आए, और यीशु ने उन पर हाथ रखा, और वे चंगे हो गए।

<u>अध्याय 90</u>

यीशु अकेले पहाड़ पर प्रार्थना करने जाता है। उनके शिष्य उन्हें ढूंढते हैं। वह बारहों को बुलाता है और वे गलील में शिक्षा और उपचार करते हैं। तिबेरियस में यीशु ने एक कोढ़ी को चंगा किया। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए। अपने घर में यीशु एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा करते हैं और चंगाई के दर्शन और पापों की क्षमा के बारे में बताते हैं।

क्रिस्टीन मास्टर गायब हो गया; किसी ने उसे जाते नहीं देखा, और पतरस, याकूब और यूहन्ना उसकी खोज में निकल पड़े; उन्होंने उसे हम्मोत पहाड़ियों पर उसके परीक्षण-स्थान पर पाया।

2) पतरस ने कहा, कफरनहूम का नगर जंगली है; लोग सड़कों पर भीड़ लगाते हैं और हर सार्वजनिक स्थान भर जाता है।

3) हर जगह पुरुष, महिलाएं और बच्चे उस आदमी को मांग रहे हैं जो इच्छा से चंगा करता है।

4) तेरा घर और हमारे घर बीमारों से भरे पड़े हैं; वे यीशु को पुकारते हैं जो मसीह कहलाता है। हम उन्हें क्या कहेंगे?

5) यीशु ने कहा, और नगर बहुत बुलाते हैं, और हमें जीवन की रोटी उनके पास पहुंचानी है। जाओ अन्य आदमियों को बुलाओ और हमें जाने दो।

6) और यीशु और बारह बेतसैदा को गए, जहां फिलिप्पुस और नतनएल रहते थे; और वहाँ उन्होंने पढ़ाया।

7) भीड़ ने मसीह पर विश्वास किया, अपने पापों को स्वीकार किया और बपतिस्मा लिया, और पवित्र के राज्य में प्रवेश किया।

8) क्रिस्टीन का स्वामी और बारह गलील के सब नगरों में चारों ओर घूमकर उपदेश देते थे, और उन सब को जो विश्वास में आए और अपने पापों को मान लेते थे, बपतिस्मा देते थे।

9) उन्होंने अंधी आंखें खोल दीं, और बहरे कानों को बंद कर दिया, दुष्टों को उन लोगों में से निकाल दिया, और हर तरह की बीमारी को ठीक कर दिया था।

10) और वे समुद्र के किनारे तिबेरियस में थे, और जब वे एक कोढ़ी को उपदेश दे रहे थे, तब पास आकर कहने लगे, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं, और यदि तू केवल वचन ही कहेगा, तो मैं शुद्ध हो जाऊंगा।

11) यीशु ने उस से कहा, मैं करूंगा; साफ रहें। और शीघ्र ही कोढ़ चला गया; आदमी साफ था।

12) और यीशु ने उस मनुष्य को आज्ञा दी, कि किसी से कुछ न कहना, परन्तु जाकर अपने आप को याजकोंको दिखा, और अपके शुद्ध होनेके लिथे जो व्यवस्था की मांग है, चढ़ाओ।

13) वह मनुष्य आनन्द से भर गया; परन्तु याजकों के पास नहीं, परन्तु व्यापरियोंके पास गया, और जो कुछ हुआ था, वह सब जगह बता दिया।

14) तब बीमारों ने चंगा करने वाले और बारहों पर भारी दबाव डाला, कि वे चंगे हो जाएं।

15) और वे इतने धूर्त थे कि कुछ किया ही नहीं जा सकता था, और इसलिए क्रिस्टीन भीड़-भाड़ वाले रास्तों को छोड़कर निर्जन स्थानों में चले गए, जहां उन्होंने अपने पीछे आने वाली भीड़ को उपदेश दिया।

16) अब, बहुत दिनों के बाद क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए। जब चारों ओर शोर हुआ कि यीशु घर में है, तो लोग आ गए; उन्होंने घर को तब तक भर दिया जब तक कि और कोई जगह न रह गई, यहां तक कि दरवाजे पर भी नहीं।

17) और गलील के चारोंओर से और यरूशलेम से शास्त्री, फरीसी, और व्यवस्या के चिकित्सक उपस्थित थे, और यीशु ने उनके लिये जीवन का मार्ग खोल दिया।

18) चार मनुष्य एक लकवे के रोगी को खाट पर ले आए, और जब वे द्वार से न जा सके, तो उस रोगी को छत पर ले गए, और मार्ग खोल दिया, और उसे चंगा करनेवाले के साम्हने उतार दिया।

19) जब यीशु ने उनका विश्वास देखा, तो उस लकवे के मारे हुए से कहा, हे मेरे पुत्र, प्रसन्न हो; तुम्हारे पाप सब क्षमा हुए हैं।

20) और जब शास्त्रियों और फरीसियों ने उसकी यह बात सुनी, तो उन्होंने कहा, यह मनुष्य ऐसा क्यों कहता है? मनुष्यों के पापों को परमेश्वर के सिवा कौन क्षमा कर सकता है?

21) और यीशु ने उनके विचार को पकड़ लिया; वह जानता था कि वे आपस में इस प्रकार प्रश्न करते हैं; उसने उनसे कहा,

22) आपस में ऐसा तर्क क्यों करें? क्या बात है यदि मैं कहूं, कि तेरे पाप मिटा दिए गए हैं; या कहो, उठ, अपक्की खाट उठा और चल?

23) परन्तु यह सिद्ध करने के लिये कि मनुष्य यहां मनुष्यों के पाप क्षमा करें, मैं कहता हूं, (तब उस ने लकवे के मारे हुए से बातें कीं)

24) उठ, अपना बिछौना उठा, और अपने मार्ग पर चला जा।

25) और उन सब के साम्हने वह सब उठकर अपनी खाट उठा, और चला गया।

26) जो बातें उन्होंने सुनी और देखीं, वे लोग समझ न सके। वे आपस में कहने लगे, यह ऐसा दिन है जिसे हम कभी नहीं भूल सकते; हमने आज अद्भुत चीजें देखी हैं।

27) और जब भीड़ चली गई, तब बारह रह गए, और यीशु ने उन से कहा,

28) यहूदी पर्व निकट आ रहा है; अगले सप्ताह हम यरूशलेम को जाएंगे, कि हम दूर से अपने भाइयों से मिलें, और उनके लिये ऐसा मार्ग खोल दें, कि वे राजा को देखें।

29) क्रिस्टीन ने अपने घरों में शांति की तलाश की, जहां वे कुछ दिनों के लिए प्रार्थना में रहे।

भाग 2/धारा XVI

ईसा मसीह

(**उम्र** 30 **से** 33)

नासरत के ईसा मसीह की 3 साल की सेवकाई

खंड XVI

AIN

यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का दूसरा वार्षिक युग

(**अध्याय** 91-123)

अध्याय 91

यरूशलेम में दावत में यीशु। एक नपुंसक आदमी को ठीक करता है। उपचार में एक व्यावहारिक सबक देता है। पुष्टि करता है कि सभी पुरुष भगवान के पुत्र हैं।

पर्व का समय आया और यीशु और बारह यरूशलेम को गए।

2) सब्त के दिन से एक दिन पहले वे जैतून पहाड़ पर पहुँचे और उत्तर दिशा में जैतून पहाड़ के सामने एक सराय में ठहरे।

3) और सब्त के दिन की भोर को वे भेड़ोंके फाटक से होकर यरूशलेम को गए।

4) बेथेस्डा का उपचार करने वाला फव्वारा, फाटक के पास, बीमार लोगों से भरा हुआ था;

5) क्योंकि उनका विश्वास था कि एक निश्चित समय पर एक स्वर्गदूत आकर कुण्ड में चंगा करनेवाला गुण उंडेलेगा, और जो पहिले प्रवेश करके स्नान करेंगे, वे चंगे हो जाएंगे।

6) और यीशु और बारह ताल के पास खड़े थे।

7) और यीशु ने पास में एक मनुष्य को देखा, जो साढ़े आठ वर्ष से पीड़ित था; मदद के लिए एक हाथ के बिना वह हिल नहीं सकता था।

8) यीशु ने उस से कहा, हे मेरे भाई, हे मनुष्य, क्या तू चंगा होगा?

9) उस मनुष्य ने उत्तर दिया, मैं चंगा होने की लालसा करता हूं; परन्तु मैं तो लाचार हूं, और जब स्वर्गदूत आकर चंगाई के गुण कुण्ड में उंडेल देता है,

10) एक और जो चल सकता है, पहले फव्वारे में कदम रखता है और मैं अस्वस्थ रह जाता हूं।

11) यीशु ने कहा, इस कुण्ड को चंद इष्ट लोगों के लिये शक्तिशाली बनाने के लिये यहां कौन दूत भेजता है?

12) मैं जानता हूं कि वह ईश्वर नहीं है, क्योंकि वह सबके साथ एक जैसा व्यवहार करता है।

13) स्वर्ग के उपचार के फव्वारे में किसी के पास दूसरे से बेहतर मौका नहीं है।

14) स्वास्थ्य का स्रोत आपकी आत्मा में है; इसमें एक दरवाजा तेजी से बंद है; कुंजी विश्वास है;

15) और हर एक के पास यह चाबी हो सकती है और वह दरवाजा खोल सकता है और चंगाई के फव्वारे में उतर सकता है और चंगा हो सकता है।

16) तब उस मनुष्य ने आशा भरी दृष्टि से आंखें उठाकर कहा, विश्वास की यह कुंजी मुझे दे।

17) यीशु ने कहा, क्या तुम मेरी बातों पर विश्वास करते हो? आपके विश्वास के अनुसार यह किया जाएगा। उठो, अपना बिस्तर उठाओ और चलो।

18) वह पुरूष तुरन्त उठा और चला गया; उसने केवल इतना कहा, परमेश्वर की स्तुति करो।

19) और जब लोगोंने पूछा, तुझे चंगा किसने किया? उस आदमी ने उत्तर दिया, मैं नहीं जानता। पूल में एक अजनबी ने सिर्फ एक शब्द बोला और मैं ठीक था।

20) बहुतों ने यह नहीं देखा कि यीशु ने उस व्यक्ति को कब चंगा किया, और वह बारहों के साथ मन्दिर के आंगन में गया।

21) और मन्दिर में यीशु ने उस पुरूष को देखकर उस से कहा, देख, तू चंगा हो गया है; अब से अपके प्राण की रक्षा करना;

22) अपने मार्ग पर चल, और फिर पाप न करना, नहीं तो कोई और बड़ी बात तुझ पर पड़ सकती है।

23) और अब वह मनुष्य जान गया कि वह कौन है जिसने उसे चंगा किया।

24) उसने याजकों को कहानी सुनाई और वे बहुत क्रोधित हुए; उन्होंने कहा, व्यवस्था मनुष्य को सब्त के दिन चंगा करने से मना करती है।

25) परन्तु यीशु ने कहा, मेरा पिता सब्त के दिन काम करता है, और क्या मैं नहीं कर सकता?

26) वह अपनी वर्षा, अपनी धूप और अपनी ओस भेजता है; वह अपनी घास उगाता, और अपने फूल खिलता है; वह सब्त के दिनों की तरह ही फसल को तेज करता है।

27) यदि सब्त के दिन घास और फूल खिलना उचित है, तो निश्चय ही पीड़ित लोगों की सहायता करना गलत नहीं है।

28) और तब याजक अधिक से अधिक क्रोधित हुए क्योंकि उसने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था।

29) एक प्रमुख याजक, अबीहू ने कहा, यह व्यक्ति हमारी जाति और हमारी व्यवस्था के लिए खतरा है; वह अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाता है; यह मिलना नहीं है कि उसे जीना चाहिए।

30) परन्तु यीशु ने कहा, अबीहू, श्रीमान, तू विद्वान है; तुम निश्चय ही जीवन के नियम को जानते हो। प्रार्थना बताओ कि परमेश्वर के पुत्र कौन थे जिनके बारे में हम उत्पत्ति में पढ़ते हैं, जिन्होंने पुरुषों के पुत्रों की बेटियों को ब्याह लिया?

31) हमारे पिता आदम; वह कौन था? वह कहाँ से आया? क्या उसके पिता थे? या वह एक तारे के रूप में स्वर्ग से गिर गया?

32) हम पढ़ते हैं कि मूसा ने कहा, वह परमेश्वर की ओर से आया है। यदि आदम परमेश्वर से प्रार्थना करके आया, तो क्या वह सन्तान था, क्या वह पुत्र था?

33) हम परमेश्वर के इस पुत्र की सन्तान हैं; तो मुझे बताओ, विद्वान पुजारी, हम कौन हैं यदि परमेश्वर के पुत्र नहीं हैं?

34) याजक को अति आवश्यक काम था और वह चला गया।

35) यीशु ने कहा, सब मनुष्य परमेश्वर की सन्तान हैं, और यदि वे पवित्र जीवन जीते हैं, तो वे सदा परमेश्वर के घर में रहते हैं।

36) वे परमेश्वर के कार्यों को देखते और समझते हैं, और उसके पवित्र नाम में वे इन कार्यों को कर सकते हैं।

37) बिजली और तूफान भगवान के दूत हैं, साथ ही धूप, बारिश और ओस भी।

38) स्वर्ग के गुण ईश्वर के हाथ में हैं, और हर वफादार पुत्र इन गुणों और इन शक्तियों का उपयोग कर सकता है।

39) मनुष्य पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी करने के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधि है, और मनुष्य बीमारों को चंगा कर सकता है, हवा की आत्माओं को नियंत्रित कर सकता है, और मृतकों को जीवित कर सकता है।

40) क्योंकि मेरे पास इन चीजों को करने की शक्ति है, यह कोई अजीब बात नहीं है। सभी मनुष्य इन कामों को करने की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं; लेकिन उन्हें निम्न आत्मा के सभी जुनून पर विजय प्राप्त करनी होगी; और यदि वे चाहें तो जीत सकते हैं।

41) सो मनुष्य पृथ्वी पर परमेश्वर है, और जो परमेश्वर का आदर करे, वह मनुष्य का आदर करे; क्योंकि परमेश्वर और मनुष्य एक हैं, जैसे पिता और बच्चा एक हैं।

42) देख, मैं कहता हूं, वह घड़ी आ पहुंची; मरे हुए मनुष्य का शब्द सुनकर जीवित रहेंगे, क्योंकि मनुष्य का पुत्र परमेश्वर का पुत्र है।

43) हे इस्राएल के लोगों, सुनो! तुम मृत्यु में जीते हो; तुम कब्र के भीतर बंद हो।

44) (अज्ञानता और अविश्वास से गहरी कोई मृत्यु नहीं है।)

45) परन्तु किसी न किसी दिन सब लोग परमेश्वर का वह शब्द सुनेंगे, जो मनुष्य के शब्द से स्पष्ट हुआ है, और जीवित रहेंगे। तुम सब जानोगे कि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, और पवित्र वचन के द्वारा परमेश्वर के कार्य कर सकते हो।

46) जब तुम जीवित हो गए हो, अर्थात्, यह जान गए हो कि तुम ईश्वर के पुत्र हो, तो तुम जिन्होंने धर्म का जीवन जिया है, जीवन के क्षेत्रों पर अपनी आँखें खोलेंगे।

47) परन्तु तुम जो पाप के मार्गों से प्रीति रखते हो, इस पुनरूत्थान में दण्ड के साम्हने खड़े हो जाओगे, और उन कर्ज़ों को चुकाने के लिए दण्डित हो जाओगे जो तुम लोगों और अपने आप पर थे।

48) क्योंकि जो कुछ तुमने गलत किया है, वह फिर से किया जाना चाहिए, और फिर भी, जब तक कि तुम सिद्ध मनुष्य के कद तक नहीं पहुंच जाते।

49) लेकिन नियत समय में प्रकाश में चलने के लिए निम्नतम और उच्चतम उठेंगे।

50) क्या मैं तुम पर परमेश्वर का दोष लगाऊं? नहीं, क्योंकि तेरे भविष्यद्वक्ता मूसा ने ऐसा किया है; और यदि तुम मूसा की बातें न सुनोगे, तो मेरी न मानोगे, क्योंकि मूसा ने मेरे विषय में लिखा है।

अध्याय 92

लाजर के घर में दावत में क्रिस्टीन। कस्बे में भीषण आग। यीशु ने एक बच्चे को आग की लपटों से बचाया और वचन के द्वारा आग पर काबू पाया। वह एक शराबी आदमी को छुड़ाने का एक व्यावहारिक सबक देता है।

अब लाजर पर्व में था, और यीशु और बारह उसके साथ बैतनिय्याह में अपके घर को गए।

2) और लाजर और उसकी बहनों ने यीशु और उन बारहों के लिए जेवनार की; और रूत और आशेर यरीहो से आए; क्योंकि आशेर अब से मसीह का विरोधी न रहा।

3) और जब मेहमान बोर्ड पर बैठे तो एक रोना निहारना, गाँव में आग है! और सब सड़कों पर दौड़ पड़े, और देखो, बहुत से पड़ोसियों के घर धू-धू कर जल उठे।

4) और ऊपर के कमरे में एक बच्चा सो रहा था, और कोई भी लपटों को बचाने के लिए पास नहीं कर सकता था। माँ, दु:ख से व्याकुल, अपने बच्चे को बचाने के लिए पुरुषों को पुकार रही थी।

5) फिर, आग की आत्माओं को पीला और कांपने वाले शब्द के साथ, यीशु ने कहा, शांति, शांति, शांत रहो!

6) फिर वह धुएँ और ज्वाला में से चला, और गिरती हुई सीढ़ी पर चढ़ गया, और क्षण भर में फिर आया, और अपनी गोद में बालक को ले आया। और उस पर, उसके वस्त्र, वा बालक पर एक भी आग न लगी।

7) तब यीशु ने अपना हाथ उठाया, आग की आत्माओं को डांटा, और उन्हें उनके भयानक काम को बंद करने और आराम करने की आज्ञा दी।

8) और फिर, मानो समुद्र का जल एक ही बार में आग की लपटों पर डाल दिया गया हो, आग जलना बंद हो गई।

9) और जब आग की जलजलाहट समाप्त हो गई, तब लोगों की भीड़ उस मनुष्य को देखने के लिए जो आग पर नियंत्रण कर सकता था, देखने के लिए जंगली हो गए, और यीशु ने कहा,

10) मनुष्य आग के लिए नहीं बना है, बल्कि आग मनुष्य के लिए बनाई गई है।

11) जब मनुष्य स्वयं के पास आता है और इस तथ्य को समझता है कि वह ईश्वर का पुत्र है और जानता है कि ईश्वर की सभी शक्तियां स्वयं में निहित हैं, तो वह एक मास्टर माइंड है और सभी तत्व उसकी आवाज सुनेंगे और खुशी से उसकी इच्छा पूरी करेंगे।

12) दो मजबूत गदहे मनुष्य की इच्छा को बांधते हैं; उनके नाम भय और अविश्वास हैं। जब ये पकड़े जाते हैं और अलग हो जाते हैं, तो मनुष्य की इच्छा की कोई सीमा नहीं होगी; तब मनुष्य के पास बोलने के अलावा और हो जाता है।

13) और फिर मेहमान लौट आए और बोर्ड के बारे में बैठ गए। एक छोटा बच्चा आया और यीशु के पास खड़ा हो गया।

14) उसने यीशु की बांह पर हाथ रखा और कहा, हे प्रभु यीशु, सुन! मेरे पिता एक शराबी आदमी हैं; मेरी माँ सुबह से रात तक मेहनत करती है और जब वह अपनी मजदूरी घर लाती है तो मेरे पिता उन्हें छीन लेते हैं और पीने के लिए एक-एक प्रतिशत खर्च करते हैं, और माँ और हम बच्चे रात भर भूखे रहते हैं।

15) प्रभु यीशु, कृपया मेरे साथ आइए और मेरे पिता के हृदय को स्पर्श करें। वह कितना अच्छा और दयालु है जब वह सिर्फ खुद है; मुझे पता है कि यह शराब है जो उसे एक और आदमी बनाती है।

16) और यीशु बालक को लेकर बाहर चला गया; उसने मनहूस घर पाया; और उस ने उस ने माता और बालबच्चोंसे प्रीति की या, और उस ने पियक्कड़ को पलंग के पलंग पर पाया।

17) उस ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया, और कहा, हे मेरे भाई, हे मनुष्य, जो हमारे पिता परमेश्वर के स्वरूप में रचा गया है, क्या तुम उठकर मेरे साथ चलोगे?

18) तुम्हारे पड़ोसी संकट में हैं; उन्होंने इस भीषण आग में अपना सब कुछ खो दिया है, और लोगों को अपना घर फिर से बनाना होगा और आपको और मुझे मार्ग का नेतृत्व करना होगा।

19) और फिर वह आदमी उठा; मलबे को देखने के लिए दोनों हाथ में हाथ डाले गए।

20) उन्होंने सड़कों पर माताओं और बच्चों को रोते हुए सुना; उनकी दुर्दशा देखी।

21) यीशु ने कहा, हे मेरे मित्र, यह काम तुझ से करने वाला है। केवल सहायकता के मार्ग का नेतृत्व करें; मुझे यकीन है कि बेथानी के लोग आपको साधन और मदद देंगे।

22) आशा की वह चिंगारी जो इतने समय से उस आदमी में सुलग रही थी, आग की लपटों में बदल गई। उसने अपना फटा हुआ कोट एक तरफ फेंक दिया; वह खुद फिर से था।

23) और फिर उसने मदद के लिए पुकारा; अपने लिए नहीं, बल्कि बेघरों के लिए; और सभी ने मदद की। उजड़े हुए घर फिर से बन गए।

24) और फिर उसने अपनी गरीब मांद को देखा; उसका हृदय उसकी गहराइयों में आ गया।

25) मर्दानगी के घमंड ने उसकी आत्मा को भर दिया; उस ने कहा, यह मनहूस गड़हा घर होगा। उसने वैसे काम किया जैसे उसने पहले कभी नहीं किया था, और सभी ने मदद की।

26) और थोड़ी ही देर में वह गड्ढा सचमुच घर बन गया; हर तरफ प्यार के फूल खिले हैं।

27) माता और बच्चे आनन्द से भर गए; पिता ने फिर कभी नहीं पिया।

28) एक आदमी बचा लिया गया था, और किसी ने कभी उपेक्षा या नशे के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, न ही उसे सुधारने के लिए आग्रह किया।

अध्याय 93

क्रिस्टीन पके गेहूँ के खेत से होकर गुज़रते हैं, और चेले उस गेहूँ में से खाते हैं जिसे यीशु उन्हें बरी करता है। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए। यीशु सब्त के दिन सूखे हाथ को चंगा करते हैं और अपने काम की रक्षा करते हैं।

एक और सब्त का दिन आ गया था और यीशु और बारह पके हुए गेहूं के एक खेत में से गुजरे।

2) और वे भूखे थे, और उन्होंने गेहूं की बालियां लीं, और अपने हाथों से अनाज को तोड़कर खाया।

3) जो उनके पीछे हो लिए थे, उनमें सबसे कठोर पंथ के फरीसी थे, और जब उन्होंने बारह थ्रेसहोल्ड को गेहूँ में से खाते हुए देखा, तो उन्होंने यीशु से कहा,

4) श्रीमान, बारह लोग ऐसा क्यों करते हैं जो सब्त के दिन उचित नहीं है?

5) यीशु ने कहा, क्या तुम ने नहीं सुना कि दाऊद ने क्या किया, जब उसे और उसके पीछे चलनेवालों को भोजन की आवश्यकता पड़ी?

6) वह परमेश्वर के भवन में कैसे गया, और पवित्र स्थान की मेज पर से रोटी लेकर उसके पीछे चलनेवालोंको दिया?

7) मैं तुमसे कहता हूं, पुरुषों, मनुष्य की आवश्यकताएं संस्कार के नियम से अधिक हैं।

8) और हमारी पवित्र पुस्तकों में हम पढ़ते हैं कि कैसे याजक पवित्र स्थान में सेवा करते हुए सब्त के दिन को कई तरह से अपवित्र करते हैं, और अभी भी अपराध से मुक्त हैं।

9) सब्त का दिन मनुष्य के लिए बनाया गया था; मनुष्य को सब्त के दिन के योग्य नहीं बनाया गया था।

10) मनुष्य ईश्वर का पुत्र है और अधिकार के शाश्वत कानून के तहत, जो सर्वोच्च कानून है, वह क़ानून के कानूनों को रद्द कर सकता है।

11) बलिदान की व्यवस्था मनुष्य की व्यवस्था है, और हमारी व्यवस्था में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर पहले दया चाहता है; और दया सभी क़ानूनी कानूनों से ऊपर है।

12) मनुष्य का पुत्र हर व्यवस्था का स्वामी है। क्या भविष्यद्वक्ता ने उस व्यक्ति के कर्तव्यों का योग नहीं किया जब उसने पुस्तक में लिखा: दया में न्याय का पालन करो और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चलो?

13) तब यीशु और बारह गलील लौट आए, और सब्त के दिन के एक दिन पहले वे कफरनहूम में यीशु के घर पहुंचे।

14) और सब्त के दिन वे आराधनालय में गए। भीड़ वहाँ थी और यीशु ने सिखाया।

15) उपासकों में एक व्यक्ति था, जिसका हाथ सूख गया था। शास्त्रियों और फरीसियों ने देखा, कि यीशु ने उस मनुष्य को देखा, और उन्होंने कहा,

16) वह क्या करेगा? क्या वह सब्त के दिन चंगा करने का प्रयास करेगा?

17) यीशु ने उनके विचार जान लिए, और सूखे हाथ वाले को बुलाकर कहा, उठ, इन मनुष्योंके साम्हने खड़ा हो।

18) और यीशु ने कहा, हे शास्त्रियों और फरीसियों, बोलो और मुझे उत्तर दो: क्या सब्त के दिन एक जीवन को बचाना अपराध है?

19) यदि आपके पास भेड़ें हों और उनमें से एक सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए, तो क्या आप उसे निकालना गलत करेंगे?

20) या क्या यह आपके ईश्वर को प्रसन्न करेगा कि वह एक और दिन तक कीचड़ में पीड़ित रहे?

21) परन्तु उसके दोषियों ने शांति बनाए रखी।

22) तब उस ने उन से कहा, क्या भेड़ें मनुष्य से बड़ी हैं?

23) परमेश्वर की व्यवस्था अधिकार की चट्टान पर लिखी हुई है; और न्याय ने व्यवस्था लिखी, और दया ही कलम थी।

24) फिर उस ने कहा, हे मनुष्य, अपना हाथ उठाकर आगे बढ़ा। उसने हाथ उठाया; इसे बहाल कर दिया गया।

25) फरीसी क्रोध से भर गए। उन्होंने गुप्त परिषद में हेरोदियंस को बुलाया, और वे साजिश और योजना बनाने लगे कि वे उसकी मृत्यु कैसे ला सकते हैं।

26) वे सार्वजनिक रूप से दोष लगाने से डरते थे क्योंकि भीड़ उसके बचाव में खड़ी थी।

27) और यीशु और बारह नीचे गए और समुद्र के किनारे चले, और बहुत से लोग उनके पीछे हो लिए।

पहाड़ी उपदेश (अध्याय 94-101)

अध्याय 94

पर्वत पर उपदेश। यीशु ने बारहों को प्रार्थना का रहस्य बताया। आदर्श प्रार्थना। क्षमा का नियम। पवित्र व्रत। धोखे की बुराई। भिक्षा देना।

अगली सुबह, जब सूरज जी उठा था, यीशु और बारह प्रार्थना करने के लिए समुद्र के पास एक पहाड़ पर गए; और यीशु ने बारह चेलों को प्रार्थना करना सिखाया। उसने बोला,

2) प्रार्थना ईश्वर के साथ आत्मा का गहरा मिलन है;

3) सो जब तुम प्रार्थना करो, तो उन कपटियों की नाईं धोखा न खाओ, जो सड़कों पर और आराधनालयों में खड़े होना पसंद करते हैं, और मनुष्यों के कानों को प्रसन्न करने के लिए बहुत सी बातें कहते हैं।

4) और वे अपने आप को पवित्र वायु से सुशोभित करते हैं कि वे मनुष्यों की प्रशंसा प्राप्त कर सकें। वे पुरुषों की प्रशंसा चाहते हैं और उनका प्रतिफल निश्चित है।

5) परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपक्की आत्मा की कोठरी में जा; सभी दरवाजे बंद करो, और पवित्र मौन में प्रार्थना करो।

6) आपको बहुत से शब्दों को बोलने की ज़रूरत नहीं है, और न ही उन शब्दों को बार-बार दोहराएं, जैसे कि अन्यजातियों को करते हैं। सिर्फ कहे,

7) **हमारे पिता-भगवान जो स्वर्ग में कला करते हैं;**

पवित्र तेरा नाम है।

तुम्हारा राज्य आओ;

थय हो जायेगा

पृथ्वी पर जैसा स्वर्ग में किया जाता है।

8) **आज के दिन हमें हमारी आवश्यक रोटी दो;**

9) **हमें उन ऋणों को भूलने में मदद करें जो अन्य लोगों ने हमारे ऊपर दिए हैं, कि हमारे सभी ऋणों का निर्वहन किया जा सके।**

10) **और हमें परीक्षा देनेवाले के उन फन्दों से बचा ले, जो हम सह नहीं सकते;**

11) **और जब वे आएं, तो हमें विजयी होने की शक्ति दें।**

12) यदि आप उन सभी ऋणों से मुक्त हो जाते हैं जो आप पर ईश्वर और मनुष्य के लिए हैं, जो ऋण आपने जानबूझकर कानून का उल्लंघन करके किए हैं,

13) तुम को हर एक मनुष्य के ऋण से गुजरना होगा; क्योंकि जैसा तुम अन्य मनुष्यों के साथ व्यवहार करते हो, वैसे ही तुम्हारा परमेश्वर भी तुम्हारे साथ व्यवहार करेगा।

14) और जब आप उपवास करते हैं तो आप विलेख का विज्ञापन नहीं कर सकते।

15) जब वे उपवास करते हैं तो पाखंडी अपना चेहरा रंगते हैं, अशुद्ध दिखते हैं, एक पवित्र मुद्रा ग्रहण करते हैं, कि वे पुरुषों को उपवास करने के लिए लग सकते हैं।

16) उपवास आत्मा का कार्य है, और प्रार्थना की तरह, यह आत्मा की चुप्पी का कार्य है।

17) ईश्वर कभी भी बिना ध्यान दिए किसी प्रार्थना या उपवास से नहीं गुजरता। वह मौन के भीतर चलता है, और उसकी कृपा आत्मा के हर प्रयास पर टिकी होती है।

18) छल कपट है, और जो तुम नहीं हो उसे तुम न समझना।

19) आप अपने धर्मपरायणता का प्रचार करने के लिए विशेष वेश धारण नहीं कर सकते हैं, और न ही उस स्वर को ग्रहण कर सकते हैं जिसे लोग पवित्र आवाज मानते हैं।

20) और जब तुम दरिद्रों की सहायता के लिथे दान दो, तो अपनी भेंट का प्रचार करने के लिथे मार्ग में तुरही या आराधनालय न फूंकना।

21) जो मनुष्य की स्तुति के लिए भिक्षा करता है, उसे मनुष्यों से उसका प्रतिफल मिलता है; लेकिन भगवान नहीं मानते।

22) भिक्षा देने में दाहिने हाथ को बाएं हाथ का रहस्य न जानने दें।

अध्याय 95

पर्वत पर उपदेश, जारी रहा। यीशु ने आठ धन्य वचनों और आठ विपत्तियों का उच्चारण किया। प्रोत्साहन के शब्द बोलते हैं। प्रेरितिक कार्य के उच्च चरित्र पर बल देता है।

और यीशु और बारह पहाड़ की चोटी पर गए, और यीशु ने कहा,

2) कलीसिया के बारह खम्भे, मसीह के प्रेरित; जीवन के सूर्य के प्रकाश-वाहक और मनुष्यों के लिए परमेश्वर के सेवक:

3) थोड़े ही समय में तुम अकेले निकलो, और राजा के सुसमाचार का प्रचार करो, पहले यहूदियों को और फिर सारे जगत को।

4) और तुम कूच करने के लिथे रस्सियोंके कोड़े के साथ न जाना; तुम लोगों को राजा के पास नहीं ले जा सकते;

5) लेकिन तुम प्रेम और सहायता में जाओगे और सही और प्रकाश के मार्ग पर चलोगे।

6) आगे बढ़ो और कहो, राज्य हाथ में है।

7) योग्य आत्मा में बलवान हैं; उनका राज्य है।

8) नम्र लोग योग्य हैं; वे भूमि के अधिकारी होंगे।

9) जो हक़ के भूखे और प्यासे हैं, वे योग्य हैं; वे संतुष्ट होंगे।

10) दयालु हैं योग्य; और उन पर दया की जाएगी।

11) वे योग्य हैं जो स्वयं की महारत हासिल करते हैं; उनके पास सत्ता की चाबी है।

12) योग्य हैं हृदय के शुद्ध; और वे राजा को देखेंगे।

13) वे योग्य हैं जो बदनाम और अन्याय करते हैं क्योंकि वे सही करते हैं; उनके सताने वालों को वे आशीर्वाद देंगे।

14) विश्वास का विश्वास योग्य सन्तान योग्य है; वह सत्ता के सिंहासन पर विराजमान होगा।

15) जब संसार आपको सताएगा और शापित कहेगा, तब निराश न होना; बल्कि बहुत खुश हो।

16) भविष्यद्वक्ता और दर्शी, और पृथ्वी की सारी भलाई, बदनाम की गई है।

17) यदि तुम जीवन के मुकुट के योग्य हो, तो पृथ्वी पर तुम्हारी निन्दा, निन्दा और शाप दिया जाएगा।

18) आनन्दित रहो, जब बुरे लोग तुम्हें अपने मार्ग से भगा देंगे, और तुम्हारे नाम को गली में फुसफुसाएंगे।

19) मैं कहता हूं, आनन्द करो; परन्तु अधर्म करने वालों के साथ दया करो; वे अपने खेल में बच्चे हैं; वे नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।

20) गिरे हुए शत्रुओं पर आनन्दित न हों। जैसे आप लोगों को पाप की गहराई से ऊपर उठने में मदद करते हैं, वैसे ही भगवान आपको और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने में मदद करेंगे।

21) सोना और भूमि धनवानों के लिथे हाय; उनके पास प्रलोभन बहुरूप हैं।

22) धिक्कार है उन आदमियों पर जो खुशी के रास्तों पर अपनी मर्जी से चलते हैं; उनके मार्ग जालों और खतरनाक गड्ढों से भरे हुए हैं।

23) अभिमान के लिए हाय; वे एक चट्टान पर खड़े हैं; विनाश उनका इंतजार कर रहा है।

24) लोभ के आदमी पर हाय; क्योंकि जो उसके पास है वह उसका नहीं है; और लो, दूसरा आता है; उसकी दौलत चली गई है।

25) पाखंडी पर हाय; उसका रूप देखने में उचित है; उसका हृदय लोथों और मरे हुओं की हड्डियों से भर गया है।

26) धिक्कार है क्रूर और अथक मनुष्य पर; वह स्वयं अपने कर्मों का शिकार है।

27) वह दूसरों के साथ जो बुराई करेगा, वही पलटा देगा; अभिशाप द्रोही है।

28) धिक्कार है उस स्वतंत्रतावादी पर जो दुर्बलों के गुणों का शिकार करता है। वह समय आता है जब वह कमजोर होगा, अधिक शक्ति की स्वतंत्रता का शिकार होगा।

29) धिक्कार है तुम पर, जब सारा संसार तुम्हारी स्तुति करेगा। संसार उन पुरुषों की प्रशंसा में नहीं बोलता जो पवित्र श्वास के भीतर रहते हैं; यह नबियों की झूठी प्रशंसा करता है, और भ्रम के आधार पर।

30) तुम जो पवित्र श्वास में चलते हो, वे नमक हैं, पृथ्वी के नमक; लेकिन यदि आप अपना पुण्य खो देते हैं तो आप केवल नाम के नमक हैं, धूल से ज्यादा कुछ भी मूल्यवान नहीं है।

31) और तुम प्रकाश हो; दुनिया को रोशन करने के लिए कहा जाता है।

32) पहाड़ी पर बसा कोई नगर छिप नहीं सकता; उसकी रोशनी दूर दिखाई देती है; और जब तुम जीवन की पहाड़ियों पर खड़े होते हो, तब लोग तुम्हारा प्रकाश देखते हैं, और तुम्हारे कामों का अनुकरण करते हैं और परमेश्वर का सम्मान करते हैं।

33) मनुष्य दीया जलाकर पीपे में नहीं छिपाते; उन्होंने उसे डंडे पर रखा, कि वह घर को उजियाला करे।

34) तुम परमेश्वर के दीपक हो; पृथ्वी के भ्रम की छाया में नहीं खड़ा होना चाहिए, लेकिन खुले में, स्टैंड पर ऊंचा होना चाहिए।

35) मैं न तो व्यवस्या को रद्द करने आया हूं और न ही नष्ट करने आया हूं; लेकिन पूरा करने के लिए।

36) कानून, भविष्यद्वक्ता और भजन पवित्र सांस के ज्ञान में लिखे गए थे और विफल नहीं हो सकते।

37) जो आकाश और पृथ्वी हैं, वे बदल जाएंगे और टल जाएंगे; परमेश्वर का वचन पक्का है; यह तब तक पारित नहीं हो सकता जब तक यह पूरा नहीं कर लेता कि इसे कहाँ-कहाँ भेजा गया है।

38) जो कोई परमेश्वर की व्यवस्था की अवहेलना करता है और मनुष्यों को भी ऐसा करना सिखाता है, वह परमेश्वर का ऋणी हो जाता है और जब तक वह वापस नहीं आ जाता और जीवन के बलिदान के द्वारा अपना कर्ज चुका नहीं देता, तब तक उसका चेहरा नहीं देख सकता।

39) परन्तु जो परमेश्वर की सुनता है, और उसकी व्यवस्था पर चलता है, और पृथ्वी पर उसकी इच्छा पर चलता है, वह मसीह के साथ राज्य करेगा।

40) शास्त्री और फरीसी व्यवस्था के पत्र को मानते हैं; वे व्यवस्था की आत्मा को नहीं समझ सकते;

41) और यदि तुम्हारा धर्म शास्त्री और फरीसी की धार्मिकता से अधिक नहीं है, तो तुम आत्मा के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

42) मनुष्य जो कुछ करता है, वह उसे फाटकों से प्रवेश करने का अधिकार नहीं देता; उसका पासवर्ड उसका चरित्र है, और उसकी इच्छा उसका चरित्र है।

43) कानून का पत्र मनुष्य के कार्यों से संबंधित है; कानून की आत्मा उसकी इच्छाओं पर ध्यान देती है।

अध्याय 96

पर्वत पर उपदेश, जारी रहा। यीशु दस आज्ञाओं पर विचार करता है। मसीह का दर्शन। आज्ञाओं की आत्मा। यीशु पहले चार आज्ञाओं के आध्यात्मिक पहलुओं को प्रकट करता है।

परमेश्वर ने मनुष्यों को दस आज्ञाएं दीं; पर्वत पर मूसा ने परमेश्वर के वचनों को देखा; उसने मी को ठोस चट्टान पर लिखा; उन्हें नष्ट नहीं किया जा सकता।

2) ये दस आज्ञाएँ परमेश्वर के न्याय पक्ष को दर्शाती हैं; परन्तु अब प्रकट हुआ परमेश्वर का प्रेम पवित्र श्वास के पंखों पर दया लाता है।

3) भगवान की एकता पर कानून बनाया गया था। सारे संसार में एक ही शक्ति है। यहोवा सर्वशक्तिमान परमेश्वर है।

4) यहोवा ने आकाश पर लिखा और मूसा ने पढ़ा,

5) मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर हूँ और मेरे सिवा तुम्हारा कोई परमेश्वर नहीं होगा।

6) एक बल है, लेकिन उस बल के कई चरण हैं; इन चरणों को पुरुष शक्ति कहते हैं।

7) सारी शक्तियाँ ईश्वर की हैं; और वे परमेश्वर के प्रकट हैं; वे परमेश्वर की आत्मा हैं।

8) यदि पुरुषों को ऐसा प्रतीत होता है कि वे किसी अन्य शक्ति को ढूंढ़ सकते हैं और इसके मंदिर में पूजा कर सकते हैं, तो वे केवल भ्रम, व्यर्थ,

9) यहोवा, परमेश्वर, और छाया की उपासना करनेवालोंकी छाया तो शहरपन की परछाई है; पुरुषों के लिए वे अदालत हैं।

10) और परमेश्वर चाहता था कि सब मनुष्य मूल हों, और उस ने दया करके आज्ञा दी, कि तू मेरे सिवा किसी परमेश्वर की खोज न करना।

11) और सीमित लोग कभी भी अनंत चीजों को नहीं समझ सकते हैं। मनुष्य शक्ति में अनंत की छवि नहीं बना सकता।

12) और जब लोग पत्थर या लकड़ी या मिट्टी से भगवान बनाते हैं, तो वे छाया की एक छवि बनाते हैं; और वे जो छाया के मंदिर में पूजा करते हैं, वे रंग हैं।

13) तब परमेश्वर ने दया करके कहा, तू लकड़ी, या मिट्टी, या पत्थर की मूरतें न गढ़ना।

14) ऐसी मूर्तियाँ आदर्श, हीन आदर्श हैं, और मनुष्य अपने आदर्शों से ऊँचा कोई स्थान प्राप्त नहीं कर सकता।

15) ईश्वर आत्मा है, और यदि वे ईश्वर की चेतना प्राप्त करना चाहते हैं तो लोगों को आत्मा में पूजा करनी चाहिए।

16) लेकिन मनुष्य कभी भी पवित्र श्वास का चित्र या चित्र नहीं बना सकता।

17) परमेश्वर का नाम मनुष्य होठों से नहीं बोल सकता; केवल पवित्र श्वास से ही मनुष्य नाम का उच्चारण कर सकता है।

18) व्यर्थ में मनुष्य सोचते हैं कि वे परमेश्वर का नाम जानते हैं; वे इसे हल्के ढंग से और अपरिवर्तनीय रूप से बोलते हैं, और इस प्रकार वे शापित हैं।

19) यदि लोग पवित्र नाम को जानते और उसे अपवित्र होंठों से बोलते, तो वे इसे एक बार फिर बोलने के लिए जीवित नहीं रहते।

20) परन्तु परमेश्वर ने दया करके अभी तक अपना नाम उन लोगों के लिए प्रकट नहीं किया है जो पवित्र श्वास के साथ बात नहीं कर सकते।

21) परन्तु जो बदले की बात करते हैं, वे परमेश्वर की दृष्टि में दोषी ठहरते हैं, जिस ने कहा,

22) तुम व्यर्थ में परमेश्वर का नाम नहीं लेना।

23) पवित्र श्वास की संख्या सात है, और भगवान अपने हाथों में सात समय धारण करते हैं।

24) जगत बनाने में उसने सातवें दिन विश्राम किया, और प्रत्येक सातवें दिन को मनुष्यों के लिए विश्रामदिन के रूप में ठहराया जाता है। भगवान ने कहा,

25) सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा का विश्रामदिन है; इसे याद रखना और पवित्रता के कामों के लिए इसे पूरी तरह से अलग रखना; अर्थात्, स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि सार्वभौमिक स्वयं के लिए कार्यों के लिए।

26) पुरुष सप्ताह के छह दिनों में स्वयं के लिए काम कर सकते हैं; परन्तु यहोवा के सब्त के दिन वे अपने लिये कुछ न करें।

27) यह दिन परमेश्वर को समर्पित है; परन्तु मनुष्य मनुष्य की सेवा करके परमेश्वर की सेवा करता है।

अध्याय 97

पर्वत पर उपदेश, जारी रहा। यीशु ने पाँचवीं और छठी आज्ञाओं के बारह आध्यात्मिक पहलुओं को प्रकट किया।

प्रभु अकेले बल नहीं हैं; क्योंकि बुद्धि उसका समकक्ष है।

2) जब करूबों ने मनुष्य को बुद्धि की शिक्षा दी, तो उन्होंने कहा कि बुद्धि जाति की जननी है, क्योंकि बल जाति का पिता है।

3) जो मनुष्य सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ परमेश्वर का सम्मान करता है, वह धन्य है, और व्यवस्था की तालिकाओं में हम पढ़ते हैं,

4) अपने पिता और जाति की माता को प्रणाम करो, कि जिस देश को उन्होंने तुम्हें दिया है उस पर तुम्हारे दिन लंबे हों।

5) कानून का पत्र आदेश देता है; तुम नहीं मारोगे; और जो मार डाले वह न्याय आसन के साम्हने खड़ा हो।

6) एक व्यक्ति को मारने की इच्छा हो सकती है, फिर भी अगर वह नहीं मारता है तो उसे कानून द्वारा न्याय नहीं किया जाता है।

7) कानून की भावना का विरोध करता है कि जो कोई हत्या करना चाहता है, या बदला लेना चाहता है, बिना पर्याप्त कारण के किसी व्यक्ति से नाराज है, उसे न्यायाधीश को जवाब देना चाहिए;

8) और जो अपके भाई को निष्प्राण आवारा बुलाए, वह धर्मी की सभा को उत्तर दे;

9) और जो अपने भाई को पतित, कुत्ता कहता है, वह अपने भीतर नर्क की धधकती आग को जीवन देता है।

10) अब, उच्च व्यवस्था में हम पढ़ते हैं कि यदि तेरा भाई अपने किसी काम से दुखी है, तो परमेश्वर को अपनी भेंट चढ़ाने से पहले, जाकर अपने भाई को ढूंढ़ो और उस से मेल मिलाप कर लो।

11) अपने क्रोध पर सूर्य को अस्त होने देना ठीक नहीं है।

12) जब तू ने सब स्वार्थी दलीलें छोड़ दीं, और सब स्वार्थी अधिकार त्याग दिए, तब भी यदि उसका मेल न होगा, तो परमेश्वर की दृष्टि में तू निर्दोष ठहरेगा; तब जाकर अपनी भेंट परमेश्वर को चढ़ा।

13) यदि आप पर किसी का कुछ बकाया है और आप भुगतान नहीं कर सकते हैं; या यदि कोई व्यक्ति अपने देय राशि से अधिक राशि का दावा करता है, तो यह ठीक नहीं है कि आप उसके दावों पर विवाद करते हैं।

14) प्रतिरोध क्रोध का सर है; क्रोधी मनुष्य में न दया है और न कारण।

15) मैं तुमसे कहता हूं कि कानून के पास जाने या सही और गलत का न्याय करने के लिए लोगों की अदालतों को बुलाने की तुलना में नुकसान उठाना बेहतर है।

16) शारीरिक मनुष्य की व्यवस्था कहती थी, आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत; अपने अधिकारों पर अतिक्रमण का विरोध करें।

17) परन्तु यह परमेश्वर की व्यवस्था नहीं है। पवित्र श्वास कहेगा, उसका विरोध मत करो जो तुम्हें तुम्हारे माल से वंचित करेगा।

18) जो तेरा अंगरखा बल से ले लेगा, वह अब भी भाई है और तुझे उसका हृदय प्राप्त करना चाहिए, जो प्रतिरोध से नहीं किया जा सकता है;

19) उसे अपना अंगरखा दो और उसे अधिक से अधिक चढ़ाओ; समय आने पर मनुष्य पशु से ऊपर उठेगा; तू ने उसे अपके से बचाया होगा।

20) जो मदद मांगे उसे मना न करें और जो मांगे उसे कुछ भी उधार न दें।

21) और यदि कोई पुरुष तुम पर क्रोधित या क्रोधित ढंग से प्रहार करे, तो बदले में उसे मारना अच्छा नहीं।

22) पुरुष उसे कायर कहते हैं जो युद्ध नहीं करेगा और इस प्रकार अपने अधिकारों की रक्षा करेगा; परन्तु वह बहुत बड़ा मनुष्य है जिस पर घात किया जाता है, वह मारा जाता है, और नहीं मारता;

23) जो मारने वाले को मारता और निन्दा करता है, उसके सिवा जो निन्दा करता और उत्तर नहीं देता।

24) प्राचीन काल में कहा गया है कि मनुष्य अपने मित्र से प्रेम रखेगा और अपने शत्रु से घृणा करेगा; लेकिन, लो, मैं कहता हूँ,

25) अपने शत्रुओं पर दया करो; जो तेरी निन्दा करते हैं उन्हें आशीष दे; उन लोगों का भला करें जो आपको नुकसान पहुंचाते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं जो आपके अधिकारों को रौंदते हैं।

26) स्मरण रहे, तुम परमेश्वर की सन्तान हो, जो भले और बुरे दोनों पर अपना सूर्य समान रूप से उदय करता है, और अन्यायी और धर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है।

27) यदि तुम दूसरे मनुष्यों के साथ वैसा ही करो जैसा वे तुम्हारे साथ करते हैं, तो तुम केवल दास ही हो, परन्तु मृत्यु के मार्ग में उसके अनुयायी हो।

28) परन्तु तू ज्योति की सन्तान होने के कारण मार्ग की अगुवाई करना।

29) दूसरों के साथ वैसा ही करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें।

30) जब तू उन लोगों का भला करता है, जिन्होंने तेरा भला किया है, तो औरों से बढ़कर कुछ नहीं करते; जनता ऐसा करती है।

31) यदि आप अपने मित्रों को प्रणाम करते हैं, शत्रुओं को नहीं, तो आप अन्य मनुष्यों के समान हैं; जनता ने गति निर्धारित की है।

32) स्वर्ग में अपने पिता-परमेश्वर के समान सिद्ध बनो।

अध्याय 98

पर्वत पर उपदेश, जारी रहा। यीशु ने बारहों को सातवीं, आठवीं और दसवीं आज्ञाओं के आध्यात्मिक पहलुओं का खुलासा किया।

कानून व्यभिचार की मनाही करता है; लेकिन कानून की नजर में व्यभिचार एक खुला कार्य है, विवाह बंधन के बाहर कामुक आत्म की संतुष्टि।

2) अब, कानून की दृष्टि में विवाह पुरुष और स्त्री द्वारा किया गया एक वादा है, एक पुजारी की मंजूरी से, सद्भाव और प्रेम के साथ जीने के लिए।

3) दो आत्माओं को प्रेम में बाँधने की ईश्वर की ओर से किसी पुजारी या अधिकारी को शक्ति नहीं है।

4) शादी का बंधन क्या है? क्या इसमें शामिल है जो एक पुजारी या अधिकारी कह सकता है?

5) क्या यह वह पुस्तक है जिस पर अधिकारी या पुजारी ने दोनों को विवाह बंधन में रहने की अनुमति लिखी है?

6) क्या यह दोनों का वादा है कि मरते दम तक एक-दूसरे से प्यार करेंगे?

7) क्या प्रेम एक जुनून है जो मनुष्य की इच्छा के अधीन है?

8) क्या मनुष्य अपने प्रेम को वैसे ही उठा सकता है, जैसे वह बहुमूल्य रत्नों को उठाकर रख देता है, या किसी को दे देता है?

9) क्या भेड़ों की तरह प्यार खरीदा और बेचा जा सकता है?

10) प्रेम ईश्वर की शक्ति है जो दो आत्माओं को बांधता है और उन्हें एक बनाता है; पृथ्वी पर ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो बंधन को भंग कर सके।

11) मनुष्य द्वारा शरीरों को अलग किया जा सकता है या थोड़े समय के लिए मृत्यु; लेकिन वे फिर मिलेंगे।

12) अब, परमेश्वर के इस बंधन में हम विवाह बंधन पाते हैं; और सब मिलन तो तिनके के ही बन्धन हैं, और जो उन में रहते हैं, वे व्यभिचार करते हैं।

13) ठीक वैसे ही जैसे वे जो किसी अधिकारी या पुजारी की अनुमति के बिना अपनी वासना को संतुष्ट करते हैं।

14) लेकिन इससे भी ज्यादा; वह पुरुष या स्त्री जो वासनापूर्ण विचारों में लिप्त होता है, व्यभिचार करता है।

15) जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, मनुष्य उसे अलग नहीं कर सकता; जिसे मनुष्य ने आपस में जोड़ा है वह पाप में रहता है।

16) व्यवस्था की मेज पर महान व्यवस्था देनेवाले ने लिखा, कि चोरी न करना।

17) जो मनुष्य चोरी करे, वह व्यवस्था की आंखों के साम्हने वह वस्तु ले ले जो मांस की आंखों से देखी जा सकती है, और वह उस वस्तु की जानकारी या सम्मति के बिना ले ले।

18) परन्तु, देखो, मैं कहता हूं कि जो कोई अपने मन में उस वस्तु का अधिकारी होना चाहता है जो उसका नहीं है, और वह उस वस्तु के स्वामी को उसकी जानकारी या सहमति के बिना वंचित करेगा, वह परमेश्वर की दृष्टि में चोर है।

19) जिन वस्तुओं को मनुष्य मांस की आंखों से नहीं देखता, वे उन वस्तुओं से अधिक मूल्यवान हैं जिन्हें मनुष्य देख सकता है।

20) मनुष्य का अच्छा नाम सोने की एक हजार खानों के बराबर होता है, और वह जो एक शब्द कहता है या ऐसा काम करता है जो उस नाम को चोट पहुंचाता है या बदनाम करता है, उसने वह ले लिया है जो उसका नहीं है और चोर है।

21) व्यवस्था की मेज पर हम यह भी पढ़ते हैं: तू किसी वस्तु का लालच न करना।

22) लालच करना एक ऐसी इच्छा है जिसे पाना किसी के लिए सही नहीं है।

23) और ऐसी इच्छा, कानून की भावना के भीतर, चोरी है।

अध्याय 99

पर्वत पर उपदेश, जारी रहा। यीशु ने बारहवीं आज्ञा के आध्यात्मिक पहलुओं को प्रकट किया।

व्यवस्था ने कहा है: तू झूठ नहीं बोलना; परन्तु व्यवस्था की दृष्टि में झूठ बोलनेवाले को अपक्की बातोंको सच्चाई से कह देना चाहिए।

2) अब, आत्मिक कानून के आलोक में, किसी भी रूप में छल करना झूठ के अलावा और कुछ नहीं है।

3) एक आदमी दिखने या कार्य करने से झूठ बोल सकता है; हाँ, उसकी चुप्पी से भी धोखा हो सकता है, और इस प्रकार पवित्र श्वास की दृष्टि में दोषी हो सकता है ।

4) पुराने समय में कहा गया है: तू अपने जीवन की शपथ नहीं लेना।

5) परन्तु, मैं कहता हूं, कि शपथ मत खा; न सिर से, न हृदय से, न आंख से, न हाथ से; न सूर्य से, न चन्द्रमा से, न तारों से;

6) न तो ईश्वर के नाम से, न किसी आत्मा के नाम से, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

7) किसी बात की शपथ न खाना; क्योंकि शपथ खाने से कुछ लाभ नहीं।

8) जिस मनुष्य का वचन किसी प्रकार की शपथ के द्वारा आगे बढ़ाया जाना चाहिए, वह परमेश्वर या मनुष्य की दृष्टि में भरोसेमंद नहीं है।

9) तू शपथ खाकर पत्ता नहीं गिरा सकता, और न बाल का रंग बदल सकता है।

10) योग्य व्यक्ति केवल बोलता है और मनुष्य जानता है कि वह सच बोलता है।

11) वह आदमी जो लोगों को यह सोचने के लिए कि वह सच बोलता है, कई शब्द उंडेल देता है, वह केवल झूठ को छिपाने के लिए धुंआ बना रहा है।

12) और ऐसे बहुत से पुरुष हैं, जिनका मन दुगना लगता है; पुरुष जो एक समय में दो स्वामी की सेवा करेंगे - दो स्वामी काफी प्रतिकूल।

13) पुरुष सब्त के दिन परमेश्वर की आराधना करने का दिखावा करते हैं और फिर हर दूसरे दिन बेलज़ेबूब को दरबार देते हैं।

14) कोई भी व्यक्ति एक समय में दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, वह एक समय में दो गधों की सवारी कर सकता है जो अलग-अलग तरीकों से चलते हैं।

15) वह व्यक्ति जो परमेश्वर और बील्ज़ेबूब की पूजा करने का नाटक करता है, परमेश्वर का शत्रु है, एक पवित्र शैतान और मनुष्यों का अभिशाप है।

16) और मनुष्य स्वर्ग और पृथ्वी पर एक ही बार में धन जमा नहीं कर सकते।

17) तब मैं कहता हूं, आंखें उठाकर आकाश के तिजोरियोंको देख, और वहां सब मणि जमा कर दे।

18) जहां कीड़ा और काई भ्रष्ट नहीं कर सकते; जहां चोर सेंध लगाकर चोरी नहीं कर सकते।

19) पृथ्वी पर कोई सुरक्षा वाल्ट नहीं हैं; कीड़ा, और काई, और चोरोंसे कोई स्थान सुरक्षित नहीं।

20) पृथ्वी के खजाने केवल मायावी चीजें हैं जो बीत जाती हैं।

21) धोखा न खाओ; तेरा खज़ाना आत्मा का लंगर है, और जहाँ तेरा ख़ज़ाना है वहाँ तेरा दिल रहेगा।

22) अपना मन पृथ्वी की वस्तुओं पर न लगाना; खाने, पीने या पहनने की चीजों के बारे में चिंतित न हों।

23) परमेश्वर उन लोगों की परवाह करता है जो उस पर भरोसा करते हैं और दौड़ की सेवा करते हैं।

24) पक्षियों को निहारना! वे अपने गीतों में परमेश्वर की स्तुति करते हैं; उनकी आनन्द की सेवकाई के द्वारा पृय्वी और भी महिमामयी हुई है; भगवान उन्हें अपने हाथ के खोखले में रखता है,

25) और एक भी गौरैया बिना उसकी परवाह के भूमि पर नहीं गिरती; और जो कोई गिरेगा, वह फिर जी उठेगा।

26) पृथ्वी के फूलों को निहारना! वे परमेश्वर पर भरोसा करते हैं और बढ़ते हैं; वे अपनी शोभा और सुगन्ध से पृय्वी को सुहावना बनाते हैं।

27) पवित्र प्रेम के दूत मैदान के सोसन को देखो। मनुष्य का कोई पुत्र, यहाँ तक कि सुलैमान भी अपनी सारी श्रेष्ठता में इन में से किसी एक के समान नहीं पहिनाया गया था।

28) और फिर भी वे केवल परमेश्वर पर भरोसा करते हैं; वे उसके हाथ से खाते हैं; वे उसके सीने पर सिर टिकाये हुए हैं।

29) यदि परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार फूलों और पक्षियों को कपड़े पहनाता और खिलाता है, तो क्या वह अपने बच्चों को उस पर भरोसा नहीं करेगा, जब वे उस पर भरोसा करेंगे?

30) पहिले आत्मा के राज्य, परमेश्वर की धार्मिकता, और मनुष्योंकी भलाई की खोज करो, और बड़बड़ाओ मत; परमेश्वर रक्षा करेगा, और खिलाएगा, और वस्त्र देगा।

<u>अध्याय 100</u>

पर्वत पर उपदेश, जारी रहा। यीशु ने बारहों को आध्यात्मिक नैतिकता का एक व्यावहारिक कोड तैयार किया और प्रस्तुत किया।

एक नियम है जिसे शारीरिक मनुष्य ने बनाया है, और जिसका वह सख्ती से पालन करता है:

2) दूसरे मनुष्यों के साथ वैसा ही करो जैसा वे तुम्हारे साथ करते हैं। जैसा कि दूसरे न्याय करते हैं, वे न्याय करते हैं; जैसे दूसरे देते हैं, वैसे ही देते हैं।

3) अब जब तुम मनुष्यों की नाईं मनुष्यों के संग चलते रहो, तो न्याय न करो, और न तुम पर दोष लगाया जाएगा।

4) क्योंकि जैसा तू न्याय करेगा, वैसा ही तेरा न्याय किया जाएगा, और जैसा तू देगा वैसा ही तुझे दिया जाएगा। यदि आप निंदा करते हैं, तो आपकी निंदा की जाती है।

5) जब आप दया करते हैं, तो लोग आप पर दया करते हैं, और यदि आप इस तरह से प्यार करते हैं कि शारीरिक आदमी आपके प्यार को समझ सके, तो आप बहुत प्यारे होंगे।

6) और इसी प्रकार इस संसार का बुद्धिमान अन्य मनुष्यों के साथ वैसा ही करता है जैसा वह उनसे चाहता है।

7) शारीरिक व्यक्ति स्वार्थी लाभ के लिए अन्य पुरुषों का भला करता है, क्योंकि वह अपेक्षा करता है कि उसकी आशीषें कई गुना बढ़ जाएँ और फिर वापस आ जाएँ; वह अंत नोट करने के लिए रुकता नहीं है।

8) मनुष्य स्वयं मैदान है; उसके कर्म बीज हैं, और जो वह दूसरों के साथ करता है वह तेजी से बढ़ता है; फसल का समय निश्चित है।

9) उपज को निहारना! यदि उसने हवा बोई है, तो वह हवा काटता है; अगर उसने घोटाले, चोरी और नफरत के हानिकारक बीज बोए हैं; कामुकता और अपराध की,

10) कटनी पक्की है, और जो बोया है वही काटेगा; हाँ, अधिक; बीज सौ गुना उत्पादन करते हैं।

11) धार्मिकता और शांति और प्रेम और आनंद का फल कभी भी हानिकारक बीजों से नहीं उग सकता; फल बीज के समान है।

12) और जब तुम बोओ, तो अधिकार के बीज बोओ, क्योंकि यह सही है, न कि व्यापार के रास्ते में, समृद्ध प्रतिफल की उम्मीद करते हुए।

13) शारीरिक मनुष्य आत्मिक व्यवस्था से घृणा करता है, क्योंकि वह पाप में जीने की उसकी स्वतंत्रता को छीन लेता है; इसके प्रकाश के नीचे वह अपने जुनून और इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता।

14) जो पवित्र श्वास में चलता है, उससे उसकी शत्रुता है। शारीरिक मनुष्य ने प्राचीन काल के पवित्र लोगों, भविष्यद्वक्ताओं और द्रष्टाओं को मार डाला है।

15) और वह तुझे मारेगा; तुम पर झूठा आरोप लगाएगा, तुम्हें कोड़े मारेगा और तुम्हें कैद करेगा, और यह समझेगा कि वह तुम्हें सड़कों पर मार डालने के लिए परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है।

16) लेकिन जो आपके साथ गलत करता है, उसके बारे में न तो आप पहले से सोच सकते हैं और न ही उसकी निंदा कर सकते हैं।

17) हर एक के पास हल करने के लिए समस्याएँ हैं, और उन्हें उन्हें अपने लिए हल करना चाहिए।

18) जो मनुष्य तुझे कोड़े लगे, उस पर पाप का भार हो सकता है; लेकिन अपने बारे में कैसे?

19) पवित्र श्वास में चलने वाले में थोड़ा सा पाप भगवान की दृष्टि में राक्षस पापों से बड़ा होता है, जो कभी रास्ता नहीं जानते थे।

20) आप अपने भाई की आंख में छींटे कैसे देख सकते हैं, जबकि आपके पास खुद के टुकड़े हैं?

21) पहिले अपनी आंख के टुकड़े निकाल लेना, तब तू अपके भाई की आंख के टुकड़े को देख, और उसको निकालने में उसकी सहायता कर,

22) और जब तक तेरी आंखें परदेशी वस्तुओं से भरी हैं, तब तक तू मार्ग नहीं देख सकता, क्योंकि तू अन्धा है,

23) और जब अंधा अंधे को आगे ले जाता है, तो दोनों रास्ता भटक जाते हैं और ढलान में गिर जाते हैं।

24) यदि आप परमेश्वर के मार्ग का नेतृत्व करना चाहते हैं, तो आपको देखने में स्पष्ट और हृदय में शुद्ध होना चाहिए।

अध्याय 101

पहाड़ी उपदेश का समापन हुआ। आचार संहिता का अंतिम भाग। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए।

जीवन के वृक्ष के फल शारीरिक मन को खिलाने के लिए बहुत अच्छे हैं।

2) यदि आप भूखे कुत्ते को हीरा फेंकते हैं, तो वह दूर हो जाएगा, या फिर क्रोध में आप पर हमला करेगा।

3) जो धूप परमेश्वर को मीठी लगती है, वह बील्ज़ेबूब को बहुत अप्रिय लगती है; स्वर्ग की रोटी उन लोगों के लिए भूसी है जो आत्मिक जीवन को नहीं समझ सकते।

4) गुरु को बुद्धिमान होना चाहिए और आत्मा को वही खिलाना चाहिए जो वह पचा सके।

5) यदि तुम्हारे पास एक एक मनुष्य के लिये भोजन न हो, तो मांगो तो तुम्हें मिलेगा; गंभीरता से खोजो और तुम पाओगे।

6) केवल वचन बोलें और दस्तक दें; दरवाजा अजर उड़ जाएगा।

7) किसी ने कभी विश्वास से नहीं मांगा और न कभी लिया; किसी ने कभी व्यर्थ नहीं मांगा; कोई भी व्यक्ति जिसने कभी दाहिनी ओर दस्तक दी, उसे खुला दरवाजा नहीं मिला।

8) जब मनुष्य तुझ से स्वर्ग की रोटी मांगे, तब न मुड़ना, और न उन्हें मांस के वृक्षों के फल देना।

9) यदि कोई पुत्र, आपसे एक रोटी मांगे, तो क्या आप उसे एक पत्थर देंगे? यदि वह आपसे मछली मांगे, तो क्या आप उसे धूल का एक सर्प देंगे?

10) जो कुछ तू चाहता है कि तेरा परमेश्वर तुझे दे, वह मनुष्यों को दे। आपके मूल्य का माप पुरुषों की आपकी सेवा में निहित है।

11) एक मार्ग है जो सिद्ध जीवन की ओर ले जाता है; कुछ इसे एक बार में पाते हैं।

12) यह एक संकरा रास्ता है; यह शारीरिक जीवन की चट्टानों और गड्ढों के बीच स्थित है; परन्तु मार्ग में न तो कोई गड्ढा और न चट्टानें हैं।

13) एक रास्ता है जो बदहाली और अभाव की ओर ले जाता है। यह एक बड़ा रास्ता है और इसमें कई लोग चलते हैं। यह शारीरिक जीवन के आनंद उपवनों में स्थित है।

14) सावधान रहें, क्योंकि कई लोग जीवन के मार्ग पर चलने का दावा करते हैं जो मृत्यु के मार्ग पर चलते हैं।

15) परन्तु वे वचन और काम में झूठे हैं; झूठे भविष्यद्वक्ता वे। वे भेड़ों की खाल पहिनते हैं, जबकि वे शातिर भेड़िये हैं।

16) वे लंबे समय तक खुद को छुपा नहीं सकते; मनुष्य उन्हें उनके फलों से जानते हैं;

17) तू न तो कांटों से दाख बटोर सकता है, न थीस्सियों से, अंजीर से।

18) फल वृक्ष की बेटी है, और माता-पिता के समान बच्चा है; और हर एक पेड़ जो हितकर फल नहीं लाता, वह जड़ से उखाड़कर फेंक दिया जाता है,

19) क्योंकि एक आदमी लंबी और जोर से प्रार्थना करता है, यह इस बात का संकेत नहीं है कि वह संत है। प्रार्थना करने वाले सभी आत्मा के राज्य में नहीं हैं।

20) जो मनुष्य पवित्र जीवन जीता है, जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह आत्मा के राज्य में रहता है।

21) भले मनुष्य अपने हृदय के भण्डार से सारे जगत में आशीष और शान्ति भेजता है।

22) दुष्ट मनुष्य ऐसे विचार भेजता है जो शोक और आशा और आनन्द को फीका कर देते हैं और संसार को विपत्ति और शोक से भर देते हैं।

23) मनुष्य अपने हृदय की प्रचुरता से सोचते, कार्य करते और बोलते हैं।

24) और जब न्याय का समय आएगा, तो बहुत से लोग अपने लिए याचना करने लगेंगे और शब्दों के साथ न्यायाधीश के पक्ष को खरीदने के बारे में सोचेंगे।

25) और वे कहेंगे, देखो, हम ने सर्वव्यापक नाम से बहुत से काम किए हैं,

26) क्या हमने भविष्यवाणी नहीं की है? क्या हमने हर तरह की बीमारी का इलाज नहीं किया है? क्या हमने उन लोगों में से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला है जो पागल हैं?

27) तब न्यायी कहेगा, मैं तुम्हें नहीं जानता। जब आप अपने दिल में बालज़ेबूब की पूजा करते थे, तो आपने शब्दों में भगवान की सेवा की।

28) दुष्ट जीवन की शक्तियों का उपयोग कर सकता है और बहुत से शक्तिशाली कार्य कर सकता है। हे अधर्म के कार्यकर्ताओं, मेरे पास से चले जाओ।

29) जो मनुष्य जीवन की बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता, वह उस मनुष्य के समान है, जो अपना घर बालू पर बनाता है, जिस में जल-प्रलय आने पर सब धुल जाता है, और सब कुछ नष्ट हो जाता है।

30) परन्तु जो जीवन के वचनों को सच्चे और सच्चे मन से सुनता है, वह उन्हें ग्रहण करता है, और उन्हें संजोकर रखता है, और पवित्र जीवन जीता है।

31) वह उस मनुष्य के समान है, जो चट्टान पर घर बनाता है; बाढ़ आ सकती है, हवाएँ चल सकती हैं, आँधी उसके घर पर आ सकती है; इसे स्थानांतरित नहीं किया जाता है।

32) बाहर जाकर अपने जीवन को सत्य की ठोस चट्टान पर बना लो, और दुष्ट की सारी शक्तियाँ उसे न हिलाएँगी।

33) और यीशु ने पहाड़ पर अपनी सारी बातें पूरी की, और फिर वह बारहों के साथ कफरनहूम को लौट गया।

अंत: पर्वत पर उपदेश

अध्याय 102

यीशु के घर पर क्रिस्टीन। यीशु ने उन्हें गुप्त सिद्धांत के बारे में बताया। वे सारे गलील में जाकर शिक्षा देते और चंगा करते हैं। यीशु ने नैन में एक विधवा के बेटे को ज़िंदा किया। वे कफरनहूम लौट जाते हैं।

बारह प्रेरित यीशु के साथ उसके घर गए, और कुछ दिनों तक वहीं रहे।

2) और यीशु ने उन्हें आंतरिक जीवन के बारे में बहुत सी बातें बताईं जो शायद अब किसी पुस्तक में नहीं लिखी गई हैं।

3) कफरनहूम में एक धनवान मनुष्य रहता था, और रोमी सेनापति एक सौ पुरूषों का प्रधान था, जो यहूदियों से प्रेम रखता था, और जिस ने उनके लिये आराधनालय बनवाया था।

4) इस व्यक्ति का एक सेवक लकवा मार गया था, और वह मृत्यु पर्यंत बीमार था।

5) कप्तान यीशु के बारे में जानता था और उसने सुना था कि पवित्र वचन के द्वारा उसने बीमारों को चंगा किया, और उसे उस पर विश्वास था।

6) उसने यहूदियों के पुरनियों द्वारा यीशु के पास एक सन्देश भेजा, और उसने सहायता की याचना की।

7) और यीशु ने कप्तान के विश्वास को पहचान लिया और बीमारों को ठीक करने के लिए तुरंत चला गया; कप्तान ने रास्ते में उससे मुलाकात की और उससे कहा,

8) देख, हे प्रभु, तेरा मेरे घर आना अच्छा नहीं; मैं परमेश्वर के एक आदमी की उपस्थिति के योग्य नहीं हूँ।

9) मैं युद्ध का आदमी हूं, मेरा जीवन उनके साथ व्यतीत होता है जो अक्सर साथी पुरुषों की जान लेते हैं।

10) और यदि वह मेरी छत के नीचे आ जाए, तो निश्चय ही वह जो बचाने को आएगा, उसका अपमान होगा।

11) यदि तुम वचन कहोगे तो मैं जानता हूं कि मेरा दास अच्छा होगा।

12) यीशु ने मुड़कर अपने पीछे चलनेवालों से कहा,

13) कप्तान का विश्वास निहारना; मैंने ऐसा विश्वास नहीं देखा, नहीं, इस्राएल में नहीं।

14) देखो, तुम्हारे लिये पर्ब्ब पक्की है; परन्तु जब तक तुम सन्देह करके प्रतीक्षा करते हो, तब परदेशी विश्वास में आकर जीवन की रोटी ले लेता है।

15) फिर उस ने उस पुरूष की ओर फिरकर कहा, चला जा; तेरे विश्वास के अनुसार ऐसा ही होगा; तुम्हारा नौकर रहता है।

16) ऐसा हुआ कि जिस समय यीशु ने वचन सुनाया, वह लकवाग्रस्त व्यक्ति उठा, और वह ठीक हो गया।

17) और फिर क्रिस्टीन सिखाने के लिए विदेश चले गए। और जब वे हेर्मोन के मार्ग के एक नगर नैन में आए, तो उन्होंने फाटकों के चारों ओर भीड़ देखी।

18) यह एक अंतिम संस्कार ट्रेन थी; एक विधवा का पुत्र मर गया था, और मित्र शव को कब्र तक ले जा रहे थे।

19) वह विधवा का इकलौता पुत्र था, और वह शोक से व्याकुल थी। यीशु ने उस से कहा, मत रो, जीवन मैं हूं; तेरा पुत्र जीवित रहेगा।

20) और यीशु ने अपना हाथ उठाया; मृतकों के वाहक स्थिर खड़े रहे।

21) यीशु ने अर्थी को छूकर कहा, हे जवान, लौट आ।

22) आत्मा लौट आई; मरे हुओं का शरीर जीवन से भर गया था; वह आदमी बैठ गया और बोला।

23) लोग उस दृश्य से चकित हुए, और सब लोग चिल्ला उठे, परमेश्वर की स्तुति करो।

24) एक यहूदी याजक खड़ा हुआ, और कहने लगा, एक शक्तिशाली भविष्यद्वक्ता प्रकट हुआ है; और सब लोगोंने कहा, आमीन।

25) क्रिस्टीन ने यात्रा की; और उन्होंने गलील के बहुत नगरोंमें उपदेश दिया, और बीमारोंको चंगा किया, और फिर कफरनहूम को आए।

अध्याय 103

यीशु के घर में क्रिस्टीन। यीशु हर सुबह बारह और विदेशी गुरुओं को पढ़ाते हैं। यीशु अग्रदूत, यूहन्ना से दूतों को प्राप्त करता है, और उसे प्रोत्साहन के शब्द भेजता है। वह जॉन के चरित्र की प्रशंसा करता है।

यीशु का घर एक स्कूल था जहाँ सुबह के समय बारह प्रेरितों और विदेशी याजकों को परमेश्वर की गुप्त बातें सिखाई जाती थीं।

2) और चीन, भारत और बाबुल से याजक उपस्थित थे; फारस, मिस्र और यूनान से,

3) जो यीशु के चरणों में बैठने के लिए आए थे ताकि वह उस ज्ञान को सीख सकें जो वह मनुष्यों के लिए लाया था, कि वे अपने लोगों को पवित्र जीवन जीने का तरीका सिखा सकें।

4) और यीशु ने उन्हें सिखाया कि कैसे पढ़ाना है; उस ने उन्हें मार्ग की परीक्षाओं के विषय में बताया, और इन परीक्षाओं को किस प्रकार दौड़ के काम में लाया जाए।

5) उसने उन्हें पवित्र जीवन जीना सिखाया कि वे मृत्यु पर विजय प्राप्त करें;

6) उसने उन्हें सिखाया कि नश्वर जीवन का अंत क्या होगा, जब मनुष्य इस चेतना में पहुँच जाता है कि वह और ईश्वर एक हैं।

7) दोपहर के बाद के घंटे उन लोगों को दिए गए जो जीवन का मार्ग सीखने और चंगे होने के लिए आए थे; और बहुतों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया।

8) अब, कड़वे समुद्र के किनारे अपनी जेल में अग्रदूत ने उन सभी शक्तिशाली कार्यों के बारे में सुना था जो यीशु ने किए थे।

9) उसका कैदी जीवन कठिन था, और वह बहुत परेशान था, और वह संदेह करने लगा।

10) और अपने आप से कहा, मुझे आश्चर्य है कि क्या यह यीशु ही वह मसीह है जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने लिखा है!

11) क्या मुझसे अपने काम में गलती हुई थी? क्या मैं सचमुच परमेश्वर की ओर से भेजा गया था, कि हमारे लोगों, इस्राएल को छुड़ाने वाले के लिए मार्ग प्रशस्त करे?

12) और फिर उसने अपने कुछ मित्रों को, जो उसके कारागार में उससे मिलने आए थे, कफरनहूम को भेज दिया, कि वे इस व्यक्ति के बारे में जानें और उसे वचन दें।

13) उन लोगोंने यीशु को उसके घर में पाया, और कहा, देख, उस अग्रदूत ने हमें यह पूछने को भेजा, कि क्या तू मसीह है? या वह अभी आना बाकी है?

14) लेकिन यीशु ने उत्तर नहीं दिया; उसने बस आदमियों से कहा कि वे कुछ दिन रुकें, ताकि वे देख और सुन सकें।

15) उन्होंने देखा कि वह बीमारों को चंगा करता है, और लंगड़ों को चलता फिरता है, और बहरों को सुनने के लिए, अंधे को देखने के लिए;

16) उन्होंने उसे दुष्टात्माओं को मोहग्रस्तों में से निकालते देखा; उन्होंने उसे मरे हुओं को उठाते देखा।

17) उन्होंने उसे गरीबों को सुसमाचार सुनाते सुना।

18) तब यीशु ने उन से कहा, अपने मार्ग पर चलो; यूहन्ना के पास लौट आओ और जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, वह सब उस से कहो; तब उसे पता चलेगा। वे अपने रास्ते चले गए।

19) वहां भीड़ थी, और यीशु ने उन से कहा, एक बार तुम यरदन के घाटों पर भीड़ लगा रहे थे; तुमने जंगल भर दिया।

20) आप क्या देखने गए थे? यहूदा के वृक्ष और हेत के फूल? या तुम राजा के वेश में एक आदमी को देखने गए थे? या तुम किसी नबी और द्रष्टा को देखने गए थे?

21) हे मनुष्यों, मैं तुम से कहता हूं, तुम नहीं जानते कि तुम ने किसको देखा। एक नबी? हाँ, और भी बहुत कुछ; एक दूत जिसे परमेश्वर ने भेजा था कि जो कुछ तुम आज देखते और सुनते हो उसका मार्ग प्रशस्त करो।

22) पृथ्वी के मनुष्यों में यूहन्ना से बड़ा मनुष्य कभी नहीं रहा।

23) देख, मैं कहता हूं, हेरोदेस जिसे जंजीरों में बांधकर बंदीगृह में डाल दिया गया है, वह परमेश्वर का एलिय्याह है, जो फिर से पृथ्वी पर आया है।

24) एलिय्याह, जो मृत्यु के द्वार से नहीं गया था, जिसका शरीर बदल गया था, और वह स्वर्ग में जाग गया।

25) जब यूहन्ना ने आगे आकर आत्मा की शुद्धि के लिए पश्चाताप के सुसमाचार का प्रचार किया, तो आम लोगों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया।

26) वकीलों और फरीसियों ने इस आदमी की शिक्षाओं को स्वीकार नहीं किया; बपतिस्मा नहीं लिया था।

27) देखो, उपेक्षित अवसर फिर कभी नहीं आएंगे।

28) देखो, लोग समुद्र के जल के समान अस्थिर हैं; वे धार्मिकता से छुटकारा पाना चाहते हैं।

29) यूहन्ना ने आकर न तो रोटी खाई और न दाखरस पीया। उन्होंने पुरुषों के अलावा सबसे सरल जीवन जिया, और लोगों ने कहा, वह जुनूनी हैं।

30) एक और आता है जो खाता-पीता है और घरों में रहता है, और लोग कहते हैं, वह पेटू है, नशे में है, चुंगी लेने वालों और पाप करने वालों का मित्र है।

31) गलील की तराई के नगरों, तुम पर हाय, जहां परमेश्वर के सब पराक्रम के काम किए जाते हैं! धिक्कार है खुरज़ान और बेतसैदा पर!

32) यदि आप में किए गए आधे शक्तिशाली काम सूर और सैदा में किए गए होते तो वे बहुत पहले अपने पापों का पश्चाताप करते और सही मार्ग की तलाश करते।

33) और जब न्याय का दिन आएगा, तो देखो, सूर और सैदा तुम से अधिक योग्य कहलाएंगे।

34) क्योंकि उन्होंने अपने उपहारों को कम नहीं किया, जबकि आपने सबसे बड़ी कीमत के मोती को फेंक दिया है।

35) तुम पर हाय कफरनहूम! देख, अब तो तू महान है, परन्तु तू गिराया जाएगा;

36) क्योंकि यदि वे शक्तिशाली काम जो तुम में किए गए थे, सदोम और सबोइम के अराबा के नगरोंमें किए गए होते, तो वे सुनते और परमेश्वर की ओर फिरते; नष्ट नहीं होता।

37) वे अपनी अज्ञानता में नष्ट हो गए; उनके पास कोई प्रकाश नहीं था; लेकिन तुमने सुना है; आपके पास सबूत हैं।

38) जीवन का उजियाला तेरे पहाडिय़ोंके ऊपर दिखाई दिया है, और गलील के सब किनारे उजियाले से जल उठे हैं;

39) हर गली, और आराधनालय, और घर में यहोवा का तेज प्रगट हुआ है; परन्तु तू ने ज्योति को ठुकरा दिया है।

40) और, देखो, मैं कहता हूं, न्याय का दिन आ जाएगा, और परमेश्वर मैदानों के नगरों पर उस से भी अधिक दया करेगा जितना वह तुम्हारे साथ करेगा।

अध्याय 104

यीशु भीड़ को सिखाता है। साइमन के घर में एक दावत में भाग लेता है। एक धनी गणिका बहुमूल्य बाम से उसका अभिषेक करती है। शमौन उसे डांटता है और वह झूठे सम्मान पर एक धर्मोपदेश का प्रचार करता है।

और यीशु ने उन भीड़ की ओर देखा जो स्वार्थ के लिए भटकती रहती थीं।

2) ज्ञान और धन के, प्रतिष्ठा और शक्ति के लोग, वहाँ थे; परन्तु वे मसीह को नहीं जानते थे।

3) उनकी आंखें अपने स्वार्थ की चमकीली चमक से अंधी हो गई थीं; वे राजा को नहीं देख सके।

4) और यद्यपि वे उजियाले के भीतर चले, तौभी वे अन्धकार में टटोलते रहे - मृत्यु की रात के समान अँधेरा।

5) यीशु ने स्वर्ग की ओर आंखें डालकर कहा,

6) मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, स्वर्ग और पृथ्वी के पवित्र, कि जब तक प्रकाश बुद्धिमान और महान से छिपा हुआ है, वह बच्चों पर प्रकट होता है।

7) फिर उस ने भीड़ की ओर फिरकर कहा, मैं न तो मनुष्य के नाम से तेरे पास आता हूं, और न अपने बल से;

8) जो बुद्धि और सद्गुण मैं तुम्हारे पास लाता हूं, वे ऊपर से हैं; वे परमेश्वर की बुद्धि और गुण हैं, जिनकी हम पूजा करते हैं।

9) जो शब्द मैं बोलता हूं वे मेरे शब्द नहीं हैं; मुझे जो मिलता है मैं तुम्हें देता हूं।

10) तुम सब परिश्रम करनेवालों और भारी बोझ उठानेवालों के सब मेरे पास आओ, और मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।

11) मेरे साथ मसीह का जूआ ओढ़ लो; यह झंझट नहीं करता है; यह एक आसान योक है।

12) हम सब मिलकर जीवन का भार आसानी से खींच लेंगे; और इसलिए आनन्दित हों।

13) एक फरीसी, जिसका नाम शमौन था, ने एक भोज किया और यीशु सम्मानित अतिथि थे।

14) और जब वे तख़्त पर बैठे थे, तो एक वेश्या, जो यीशु की सेवकाई में प्राप्त हुई और देखी गई बातों से पाप करने की अपनी इच्छा से ठीक हो गई थी, बिन बुलाए दावत में आई।

15) वह कीमती बाम का एक अलबास्टर बॉक्स ले आई, और मेहमानों के आराम करने के बाद, वह खुशी से यीशु के पास आई, क्योंकि वह पाप से मुक्त हो गई थी।

16) उसके आंसू फूट पड़े, और उस ने उसके पांव चूमकर अपके बालोंसे सुखाए, और उस ने उन पर बाम लगाया।

17) शमौन ने सोचा, वह ऊंचे शब्द से नहीं बोलता, यह पुरूष नबी नहीं है, वा वह उस स्त्री को जानता होगा जो उसके पास आती है और उसे दूर भगा देती है।

18) पर यीशु ने उसके मन की बातें जान ली, और उस से कहा, हे मेरे सेनापति, मुझे तुझ से एक बात कहनी है।

19) शमौन ने कहा, कहो।

20) यीशु ने कहा, पाप अधर्म का राक्षस है; यह छोटा हो सकता है; यह बड़ा हो सकता है; यह कुछ पूर्ववत छोड़ा गया हो सकता है।

21) देखो, एक व्यक्ति पाप का जीवन जीता है और अन्त में छुटकारा पाया जाता है; दूसरा, लापरवाह मूड में, वह काम करना भूल जाता है जो उसे करना चाहिए लेकिन वह सुधार करता है और उसे माफ कर दिया जाता है। अब, इनमें से किसने उच्च प्रशंसा के पात्र हैं?

22) शमौन ने कहा, वह जिसने जीवन की भूलों पर विजय पाई है।

23) यीशु ने कहा, तुम सच बोलते हो।

24) इस स्त्री को देखो, जिसने मेरे पांवों को आँसुओं से नहाया है और अपने बालों से सुखाया है, और बाम से ढांपा है!

25) वह वर्षों तक पापमय जीवन व्यतीत करती रही, परन्तु जीवन के वचन सुनकर क्षमा मांगी और पाई।

26) परन्तु जब मैं तेरे घर में अतिथि के रूप में आया, तब तू ने मुझे एक कटोरा भी पानी नहीं दिया, कि मैं अपने हाथ पांव धोऊं, जिसे हर एक वफादार यहूदी दावत से पहले करता है।

27) अब, मुझे बताओ, शमौन, इन में से कौन सबसे प्रशंसा के योग्य है, यह महिला या आप?

28) परन्तु शमौन ने उत्तर नहीं दिया।

29) तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, तेरे पाप सब क्षमा हुए; तेरे विश्वास ने तुझे बचाया है; शांति से जाओ।

30) तब जो मण्डली के चारोंओर बैठे थे, वे मन ही मन कहने लगे, यह कैसा मनुष्य है, जो कहता है, कि तेरे सब पाप क्षमा हुए?

अध्याय 105

कई धनी महिलाओं के संरक्षण में, क्रिस्टीन एक भव्य मिशनरी यात्रा करती हैं। अपने शिक्षण में, यीशु ने ईमानदारी की प्रशंसा की और पाखंड को फटकार लगाई। वह पवित्र सांस के खिलाफ पाप के बारे में बोलता है।

अब, बहुत सी स्त्रियाँ, जिनके पास बहुत धन था, और वे गलील के दूसरे नगरों में रहती थीं, याचना करती थीं, कि यीशु और बारह, परदेश के स्वामी समेत, वहां जाकर प्रचार करें, और चंगा करें।

2) इन चिंतित लोगों में मरियम मगदलीनी थीं, जो हवा की सात बेघर आत्माओं से ग्रस्त थीं, जिन्हें यीशु द्वारा बोले गए सर्वव्यापी वचन द्वारा बाहर निकाल दिया गया था;

3) सुज़ाना, जिसके पास कैसरिया-फिलिप्पी में विशाल सम्पदा थी;

4) योहाना, हेरोदेस के दरबार में से एक, चुज़ा की पत्नी;

5) और सूर के सिवाने से राहेल;

6) और अन्य यरदन के पार और गलील के समुद्र के पार से।

7) और उन्होंने पर्याप्त साधन उपलब्ध कराए, और तीन गुणा सात पुरुष निकले।

8) उन्होंने मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया और उन लोगों को बपतिस्मा दिया जिन्होंने अपने विश्वास का अंगीकार किया था; उन्होंने बीमारों को चंगा किया और मुर्दों को जिलाया।

9) और यीशु ने भोर से लेकर दिन ढलने तक गढ़ा और उपदेश दिया, और फिर रात को उसने खाना बंद नहीं किया।

10) उसके मित्र भयभीत हो गए, कहीं ऐसा न हो कि वह शक्ति की हानि से असफल हो जाए, और उन्होंने उसे पकड़ लिया और बलपूर्वक उसे विश्राम के स्थान पर ले गए।

11) परन्तु उसने उन्हें डांटा नहीं; उस ने कहा, क्या तू ने नहीं पढ़ा, कि परमेश्वर अपके दूतोंको मेरे विषय में आज्ञा देगा?

12) कि वे मुझे थामे रहें और मुझे दुख न दें कि मुझे कमी नहीं करनी चाहिए?

13) हे मनुष्यो, मैं तुम से कहता हूं, कि जब मैं इन व्याकुल, प्रतीक्षारत भीड़ को अपना बल देता हूं, तो मैं परमेश्वर की गोद में अपने आप को विश्राम पाता हूं।

14) जिनके धन्य दूत मेरे पास जीवन की रोटी लाते हैं।

15) मानव जीवन में सिर्फ एक बार ज्वार आता है।

16) ये लोग अब सत्य को ग्रहण करने के लिए तैयार हैं; उनका अवसर अब है; हमारा अवसर अब है,

17) और यदि हम उन्हें जब तक न सिखाएं, तब तक ज्वार-भाटा उतर जाएगा;

18) हो सकता है कि वे फिर से सच सुनने की परवाह न करें; तब मुझ से कह, कि अपराध का भार कौन उठाएगा?

19) और इसलिए उसने सिखाया और चंगा किया।

20) भीड़ में हर प्रकार के विचार के लोग थे। यीशु ने जो कुछ कहा, उसके विषय में वे अपने विचारों में विभाजित थे।

21) कितनों ने उस में परमेश्वर को देखा और उसे दण्डवत किया; और औरों ने उस में नीचे के जगत का दुष्टात्मा देखा, और उसे गड़हे में डाल दिया होता।

22) और कुछ दोहरी जिंदगी जीने की कोशिश कर रहे थे; भूमि के नन्हे सिंहों के समान जो जिस वस्तु पर टिके रहते हैं उसका रंग अपने ऊपर ले लेते हैं।

23) किसी भी प्रकार के लंगर के बिना ये लोग दोस्त या दुश्मन हैं, जैसा कि उन्हें सबसे अच्छा लगता था।

24) यीशु ने कहा, कोई मनुष्य एक समय में दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। कोई भी आदमी एक साथ दोस्त और दुश्मन नहीं हो सकता।

25) सब मनुष्य उठ रहे हैं, या डूब रहे हैं; निर्माण कर रहे हैं, या तोड़ रहे हैं।

26) यदि आप कीमती अनाज नहीं इकट्ठा कर रहे हैं, तो आप इसे फेंक रहे हैं।

27) वह एक कायर है जो दूसरे आदमी को खुश करने के लिए दोस्त या दुश्मन होने का नाटक करेगा।

28) हे मनुष्यो, अपने आप को विचार में धोखा मत दो; तुम्हारे दिल जाने जाते हैं;

29) पाखंड एक आत्मा को निश्चित रूप से बील्ज़ेबूब की सांस के रूप में झुलसा देगा। एक ईमानदार दुष्ट व्यक्ति को एक बेईमान धर्मपरायण व्यक्ति की तुलना में आत्मा के संरक्षक द्वारा अधिक सम्मानित किया जाता है।

30) यदि आप मनुष्य के पुत्र को शाप देना चाहते हैं, तो उसे जोर से शाप दें।

31) शाप भीतर के मनुष्य के लिये विष है, और यदि तुम किसी श्राप को पकड़कर निगल जाओ, तो वह कभी पचता नहीं; देखो, यह तुम्हारी आत्मा के हर परमाणु में जहर घोल देगा।

32) और यदि तुम मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध पाप करते हो, तो तुम क्षमा पाओगे और दया और प्रेम के कामों से तुम्हारा अपराध शुद्ध हो जाएगा;

33) लेकिन यदि आप पवित्र सांस के खिलाफ पाप करते हैं, तो उसकी अवहेलना करते हुए, जब वह आपके लिए जीवन के द्वार खोलेगी;

34) जब वह तुम्हारे हृदयों में प्रेम की ज्योति उण्डेलेगी, और उन्हें परमेश्वर की आग से शुद्ध करेगी, तब आत्मा की खिड़कियों को बंद कर देगी;

35) न तो इस में तेरा दोष मिटाया जाएगा, और न आनेवाले जीवन में।

36) एक अवसर फिर नहीं आया, और तुम्हें युगों के फिर से लुढ़कने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।

37) तब पवित्र श्वास फिर से आपके जीवन की आग पर सांस लेगा, और उन्हें एक जीवित लौ में उड़ा देगा।

38) तब वह फिर द्वार खोलेगी, और तू उसे सदा अपके साथ भोजन करने के लिथे भीतर रहने दे, वा तू उसे बार-बार तुच्छ जाना, और फिर बार-बार।

39) हे इस्राएल के लोगों, अब तुम्हारा अवसर है।

40) तेरा जीवन का वृक्ष एक मायावी वृक्ष है; इसमें पत्तियों की एक उदार फसल है; इसकी टहनियाँ फलों के साथ नीचे लटकती हैं।

41) देख, तेरे वचन पत्ते हैं; आपके कर्मों का फल।

42) देखो, तुम्हारे जीवन के वृक्ष के सेबों को मनुष्यों ने तोड़ा है, और उन्हें कड़वाहट से भरा हुआ पाया है; और कीड़ों ने खा लिया है।

43) रास्ते में उस अंजीर के पेड़ को देखो जो पत्तों और निकम्मे फलों से भरा हुआ है!

44) तब यीशु ने एक ऐसा शब्द कहा जिसे प्रकृति की आत्माएं जानती हैं, और देखो, अंजीर का पेड़ सूखे पत्तों का एक समूह खड़ा था।

45) फिर उस ने फिर कहा, देख, क्योंकि परमेश्वर वचन सुनाएगा, और तू डूबते सूर्य में एक मुरझाया हुआ अंजीर का पेड़ खड़ा होगा।

46) हे गलील के लोगों, भेजो, और बहुत देर होने से पहिले छांटने वाले को बुलाओ, और वह तुम्हारी निकम्मी डालियों और मायावी पत्तों को काट डाले, और धूप आने दे।

47) सूर्य ही जीवन है, और यह आपकी व्यर्थता को मूल्य में बदल सकता है।

48) तेरा जीवन का वृक्ष अच्छा है; लेकिन तुमने इसे इतनी देर तक अपने आप की ओस, और शारीरिक चीजों की धुंध से पाला है कि तुमने धूप को बंद कर दिया है।

49) हे मनुष्यो, मैं तुम से कहता हूं, कि तुम जो फालतू की बातें करते हो, और जो बुरा काम करते हो, उसका लेखा परमेश्वर को देना।

अध्याय 106

क्रिस्टीन मगडाला में हैं। यीशु एक ऐसे व्यक्ति को चंगा करता है जो अंधा, गूंगा और जुनूनी था। वह लोगों को पढ़ाते हैं। जब वह बोलता है, उसकी माता, भाई और मरियम उसके पास आते हैं। वह पारिवारिक संबंधों पर सबक सिखाता है। वह मरियम को लोगों से मिलवाता है, और वह अपनी जीत के गीत गाती है।

मगदला समुद्र के किनारे है, और यहाँ शिक्षक पढ़ाते हैं।

2) एक मनुष्य मोहग्रस्त, और अन्धा और गूंगा लाया गया, और यीशु ने वचन सुनाया, और देखो, दुष्टात्माएं चली गईं; वह आदमी बोला, और उसकी आंखें खुल गईं, और उस ने देखा।

3) यह सबसे बड़ा काम था जिसे पुरुषों ने स्वामी को करते देखा था, और वे सभी चकित थे।

4) फरीसी वहां थे, और वे जलन से भरे हुए थे; उन्होंने एक ऐसा कारण खोजा जिससे वे निंदा कर सकें।

5) उन्होंने कहा, हां, यह सच है कि यीशु बहुत सामर्थ के काम करता है; परन्तु पुरुषों को पता होना चाहिए कि वह बील्ज़ेबूब के साथ जुड़ा हुआ है।

6) वह एक जादूगर है, साइमन सेरस प्रकार का एक काला जादूगर; वह जेनेस के रूप में काम करता है और जैसा कि यम्ब्रेस ने मूसा के दिनों में किया था।

7) क्योंकि शैतान, दुष्टात्माओं का प्रधान है, वह दिन-रात ठहरता है, और शैतान के नाम से दुष्टात्माओं को निकालता है, और अपने नाम से बीमारों को चंगा करता है, और मरे हुओं को जिलाता है।

8) लेकिन यीशु उनके विचारों को जानता था; उस ने उन से कहा, तुम स्वामी हो, और व्यवस्था को जानते हो; जो कुछ उसके विरुद्ध तैयार किया गया है वह गिरना चाहिए; विभाजित घर खड़ा नहीं हो सकता;

9) अपने आप से युद्ध करने वाला राज्य शून्य हो जाता है।

10) यदि शैतान शैतान को बाहर निकाल देता है, तो उसका राज्य कैसे टिकेगा?

11) यदि मैं बील्ज़ेबूब के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम किसके द्वारा दुष्टात्माओं को निकालते हो?

12) परन्तु यदि मैं परमेश्वर के पवित्र नाम से दुष्टात्माओं को निकालूं, और लंगड़ों को चलने के लिए, और बहरों को सुनने के लिए, अंधों को देखने के लिए, गूंगे को बोलने के लिए, तो क्या परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास नहीं आया?

13) फरीसी गूंगे थे; उन्होंने उत्तर नहीं दिया।

14) जब यीशु यह कह रहा था कि एक दूत उसके पास पहुंचा, और उस से कहा, तेरी माता और तेरे भाई तुझ से बातें करना चाहते हैं।

15) यीशु ने कहा, मेरी माता कौन है? और मेरे भाइयों, वे कौन हैं?

16) और फिर उसने परदेशी स्वामियों और बारहों से अलग एक बात कही; उन्होंने कहा,

17) देखो, मनुष्य अपनी माता, पिता, बहनों, भाइयों को यहां मांस में पहिचानते हैं; परन्तु जब परदा फट जाता है, और मनुष्य आत्मा के लोक में चलते हैं,

18) प्रेम की कोमल रेखाएँ जो परिवारों में शारीरिक नातेदारों के समूहों को बाँधती हैं, मिट जाएँगी।

19) ऐसा नहीं है कि किसी के लिए प्यार कम होगा; लेकिन पुरुष सभी मातृत्व, पितृत्व, बहिनत्व, मनुष्य के भाईचारे में देखेंगे।

20) पृथ्वी के परिवार समूह सभी सार्वभौमिक प्रेम और दिव्य संगति में खो जाएंगे।

21) तब उस ने भीड़ से कहा, जो कोई जीवन जीता है और परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह परमेश्वर की सन्तान है, और वह मेरा माता, पिता, बहन, मित्र है।

22) और फिर वह अपनी माँ और अपने अन्य शारीरिक सम्बन्धियों से बात करने के लिए अलग चला गया।

23) परन्तु उसने इन से अधिक देखा। वह युवती जिसने कभी अपनी आत्मा को प्रेम से रोमांचित किया था; किसी भी शारीरिक नातेदार के प्यार से परे एक प्यार;

24) नील नदी के पास हेलियोपोलिस मंदिर में सबसे गंभीर मंदिर कौन था, जिसने उसके लिए पवित्र गीत गाए थे।

25) पहचान सगे-संबंधियों की थी, और यीशु ने कहा,

26) देखो, क्योंकि परमेश्वर हमारे लिए एक ऐसी शक्ति लाया है जिसे लोग समझ नहीं सकते, पवित्रता और प्रेम की शक्ति;

27) समय के बोझ को और अधिक हल्का करना, घायलों के लिए बाम बनना;

28) पवित्र गीत और पवित्र जीवन के द्वारा भीड़ को बेहतर तरीके से जीतने के लिए।

29) देखो, क्योंकि मरियम जो समुद्र के किनारे खड़ी थी, और जब मूसा ने मार्ग दिखाया, तब जय का गीत गाया, वह फिर गाएगी।

30) और आकाश के सब गायक मंडली एक होकर जयजयकार करेंगे;

31) शांति, पृथ्वी पर शांति; पुरुषों के लिए अच्छी इच्छा!

32) और मरियम घातियोंके साम्हने खड़ी हुई, और फिर जयजयकार करने लगी, और सब लोगोंने कहा, आमीन।

अध्याय 107

एक फरीसी यीशु से उसके मसीहा होने के चिन्हों की माँग करता है। यीशु उसे डांटते हैं क्योंकि वह उन चिन्हों को नहीं पहचानता जो लगातार दिए जा रहे हैं। यीशु लोगों को प्रकाश प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं ताकि वे प्रकाश बन सकें।

एक फरीसी जो अपने आप में आनन्दित हुआ, भीड़ के बीच में खड़ा हुआ और यीशु से कहा,

2) महोदय, हम आपका प्रदर्शन करेंगे। यदि आप वास्तव में आने वाले मसीह हैं, तो आप निश्चित रूप से वह कर सकते हैं जो काले जादूगर नहीं कर सकते।

3) देखो, वे बातें कर सकते हैं, और लोगों को सामर्थ के वचनों से थामे रह सकते हैं; और वे बीमारों को चंगा कर सकते हैं और दुष्टात्माओं को उनमें से निकाल सकते हैं;

4) वे तूफानों को नियंत्रित कर सकते हैं; और जब वे बोलेंगे तब आग, और पृथ्वी और वायु सुनेंगे और उत्तर देंगे।

5) अब, यदि आप चढ़ेंगे और उस मीनार से समुद्र के पार उड़ेंगे, तो हम विश्वास करेंगे कि आप ईश्वर की ओर से भेजे गए हैं।

6) और यीशु ने कहा, कोई काला जादूगर कभी पवित्र जीवन नहीं जीता; आपके पास हर दिन मसीह-जीवन का प्रदर्शन होता है।

7) परन्तु देखो, हे दुष्ट और व्यभिचारी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम आत्मा का चिन्ह नहीं देख सकते, क्योंकि तुम्हारी आत्मा की आंखें शारीरिक आत्म से भरी हुई हैं।

8) आप अपनी जिज्ञासा को प्रसन्न करने के लिए एक चिन्ह की तलाश करते हैं। आप शारीरिक जीवन के सबसे निचले स्तर पर चलते हैं और रोते हैं, फेनोमेना! हमें एक संकेत दिखाओ और फिर हम विश्वास करेंगे।

9) मुझे विश्वास के मोल लेने के लिये पृथ्वी पर नहीं भेजा गया, जैसे लोग सड़कों पर मछली, फल और कूड़ा-करकट मोल लेते हैं।

10) जब लोग मुझ पर और पवित्र मसीह में अपने विश्वास को स्वीकार करते हैं, तो उन्हें लगता है कि यह मुझ पर काफ़ी उपकार है।

11) मनुष्य के रूप में मेरे लिए क्या मायने रखता है यदि तुम विश्वास करते हो या अविश्वास करते हो?

12) विश्वास कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे आप सिक्के से खरीद सकते हैं; यह ऐसा कुछ नहीं है जिसे आप सोने के लिए बेच सकते हैं।

13) एक बार एक भिखारी मार्ट मेरे पीछे हो लिया और चिल्लाया, मुझे चांदी का एक टुकड़ा दो; तब मैं तुम पर विश्वास करूंगा।

14) और तुम इस भिखारी के समान हो; आप संकेतों के लिए अपने विश्वास का आदान-प्रदान करने की पेशकश करते हैं।

15) परन्तु मैं सारे जगत को एक चिन्ह निश्चित रूप से दूँगा कि मसीह मेरे साथ रहता है।

16) तुम सब ने योना और मछली का दृष्टान्त पढ़ा, जिसमें लिखा है कि भविष्यद्वक्ता ने शक्तिशाली मछली के पेट में तीन दिन और रात बिताई, और फिर वह निकला।

17) मनुष्य का पुत्र तीन दिन और रात पृथ्वी के बीच में बिताएगा, और फिर निकलेगा, और लोग देखेंगे और जानेंगे।

18) देखो, प्रकाश इतना तेज हो सकता है कि मनुष्य कुछ भी नहीं देख सकते।

19) आत्मा का प्रकाश गलील पर इतना तेज दिखाई दिया है कि तुम जो अब मुझे सुनते हो, अंधे हैं।

20) आपने अजराइल नबी के शब्दों को पढ़ा होगा; उस ने कहा, ज्योति रात के अन्धकार में तेज चमकेगी, और मनुष्य उसे न समझेंगे।

21) वह समय आ गया है; प्रकाश चमकता है; आप इसे नहीं देखते हैं।

22) शीबा की रानी अंधेरी रात में बैठी थी और फिर भी वह उजाले के लिए तरस रही थी।

23) वह सुलैमान के मुंह से ज्ञान की बातें सुनकर आई, और उस ने विश्वास किया;

24) और वह एक जीवित मशाल बन गई, और जब वह अपने घर पहुंची, तो देखो, सारा अरब प्रकाश से भर गया।

25) यहाँ सुलैमान से भी बड़ी दूर है; मसीह यहाँ है; दिन का तारा उदय हुआ है, और तू प्रकाश को अस्वीकार करता है।

26) और तुम अश्शूर के दुष्ट नगर नीनवे को याद करते हो, जिसे परमेश्वर ने झोंका और आग से नष्ट करने के लिए चिन्हित किया था, जब तक कि लोग मुड़कर सही मार्ग पर नहीं चले।

27) योना ने ऊँचे स्वर में कहा, चालीस दिन में नीनवे ढा दिया जाएगा, और उसका धन नष्ट हो जाएगा।

28) लोगों ने सुना और उन्होंने विश्वास किया; और वे सुधर गए, और धर्म के मार्ग पर चले गए, और क्या देखा, कि उनका नगर न ढाया गया; नष्ट नहीं किया गया था।

29) हे गलील के लोगों, मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन अरब और नीनवे तुम्हारे विरुद्ध गवाही देंगे।

30) देख, जिस से मैं बोलता हूं, उस में परमेश्वर की सारी आग है; लेकिन वे मरे पड़े हैं।

31) इच्छा शरीर की अभिलाषाओं पर लगाम लगाई जाती है, और यह आग के पंखों को प्रकाश में नहीं लाती।

32) सो अपने मन की ओर ध्यान से देख, क्या तेरे भीतर का उजियाला रात के समान अन्धेरा नहीं है?

33) कोई सांस नहीं बल्कि पवित्र सांस है जो आपके जीवन की आग को एक जीवित लौ में बदल सकती है और उन्हें हल्का कर सकती है।

34) और पवित्र सांस आग के पंखों को किसी और में नहीं बल्कि पवित्रता और प्रेम के दिलों में रोशन कर सकती है।

35) तब, हे गलील के लोगों, सुनो, अपने मन को शुद्ध करो, पवित्र श्वास को स्वीकार करो, और तब तुम्हारे शरीर प्रकाश से भर जाएंगे।

36) और पहाड़ी पर बसे नगर के समान तेरा प्रकाश दूर तक चमकेगा, और इस प्रकार तेरा प्रकाश दूसरे मनुष्योंके मार्ग को प्रकाशित करेगा।

अध्याय 108

यीशु ने लोगों को स्वार्थ के लिए फटकार लगाई। क्रिस्टीन एक दावत में शामिल होते हैं, और फरीसी द्वारा यीशु की निंदा की जाती है क्योंकि वह खाने से पहले नहीं धोता था। यीशु शासक वर्गों के पाखंड का पर्दाफाश करते हैं और उन पर अनेक विपत्तियां सुनाते हैं।

भीड़ स्वार्थी सोच के साथ जंगली थी; किसी ने भी किसी दूसरे के अधिकारों और जरूरतों को मान्यता नहीं दी।

2) बलवानों ने कमजोरों को एक तरफ धकेल दिया और जल्दबाजी में उन पर रौंद डाला ताकि वे सबसे पहले खुद के लिए आशीर्वाद प्राप्त कर सकें।

3) यीशु ने कहा, निहत्थे पशुओं का पिंजरा देखो; स्वार्थी लाभ के अपने पैशाचिक लालच से पागल, डंक मारने वाले सांपों की मांद!

4) मैं तुम से कहता हूं, कि भोर के उजाले में जो लोग अपने से आगे कुछ नहीं देखते, उन्हें जो लाभ मिलते हैं, वे हैं;

5) वे असत्य हैं; वे गुजर जाते हैं। स्वार्थी आत्मा को आज खिलाया जाता है; भोजन आत्मसात नहीं करता है; आत्मा नहीं बढ़ती है, और फिर उसे फिर से खिलाया जाना चाहिए, और फिर।

6) निहारना, एक स्वार्थी आदमी हवा की सिर्फ एक आत्मा से ग्रस्त है; सर्वव्यापी वचन के द्वारा आत्मा निकाल दी जाती है;

7) यह सूखी जगहों में भटकता रहता है, आराम की तलाश में रहता है और कोई नहीं पाता है।

8) और फिर वह आता है; स्वार्थी आदमी दरवाजा बंद करने और बंद करने में असफल रहा है;

9) अशुद्ध आत्मा घर को पूरी तरह से साफ-सुथरा पाती है; वह भीतर प्रवेश करती है और अपने साथ सात अन्य आत्माओं को भी ले जाती है जो स्वयं से अधिक अशुद्ध हैं; और वहीं रहते हैं।

10) मनुष्य की अंतिम अवस्था पहली अवस्था से सात गुना अधिक दयनीय होती है।

11) और इसी प्रकार अन्य मनुष्यों की आशीषों को भी आप ही से छीन लेते हैं।

12) जब यीशु पास खड़ी एक स्त्री से बात कर रहे थे, तो वे चिल्ला उठे, परमेश्वर के इस जन की माता धन्य है!

13) यीशु ने कहा, हां, वह धन्य है; परन्तु दोगुने धन्य हैं वे जो परमेश्वर के वचन को सुनते, ग्रहण करते और जीते हैं।

14) धन के एक फरीसी ने एक भोज तैयार किया, और यीशु और बारह, दूर के स्वामी के साथ, अतिथि थे।

15) और यीशु ने खाने से पहले फरीसी के सख्त नियमों के अनुसार अपने हाथ नहीं धोए; जब फरीसी ने यह देखा तो उस ने बहुत आश्चर्य किया।

16) यीशु ने कहा, हे मेरे सेनापति, तू क्यों अचम्भा करता है कि मैं ने अपने हाथ नहीं धोए?

17) फरीसी अपने हाथ-पैर अच्छी तरह धोते हैं; वे प्रतिदिन शरीर को शुद्ध करते हैं, जब देखो, भीतर सब प्रकार की गन्दगी है।

18) उनके हृदय दुष्टता, जबरन वसूली और छल से भरे हुए हैं।

19) क्या शरीर को बाहर से बनाने वाले परमेश्वर ने भीतर को भी नहीं बनाया?

20) फिर उस ने कहा, हे फरीसियों, तुम पर हाय! क्योंकि तू पुदीना और रूई, और सब जड़ी-बूटी का दशमांश, और न्याय और परमेश्वर के प्रेम के अनुसार चलता है।

21) धिक्कार है तुम पर, फरीसियों! आप आराधनालय और अदालतों में सबसे ऊंची सीटों से प्यार करते हैं, और बाजार में अभिवादन के लिए बोली लगाते हैं।

22) धिक्कार है तुम पर, तुमने देश के कुलीनों को रंग दिया! जो कुछ तू करता है, उसके द्वारा कोई तुझे सेनाओं के यहोवा का दास न समझेगा।

23) पास बैठे एक वकील ने कहा, हे रब्बोनी, तेरी बातें कठोर हैं, और फिर जो कुछ तू कहता है उस में तू हमारी निन्दा करता है; और क्यों?

24) यीशु ने कहा, हे व्यवस्था के स्वामी, तुम पर हाय! तुम मनुष्यों पर भारी बोझ डालते हो, हां, उनके लिए बहुत अधिक भार वहन करने के लिए, और तुम कभी भी अपने आप को एक पंख का भार सहन करने में सहायता नहीं करोगे ।

25) तुम पर हाय! तू भविष्यद्वक्ताओं और दर्शी की कब्रें बनाता है; वे जिन्हें तुम्हारे पुरखाओं ने मार डाला; और आप अपराधों के पक्षकार हैं।

26) और अब देखो, परमेश्वर ने तुम्हारे पास फिर से अपने पवित्र लोगों को भेजा है - प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, द्रष्टा; और तुम उन्हें सता रहे हो।

27) वह समय निकट है जब तुम उनके विरुद्ध न्यायालयों में याचना करोगे; उन्हें सड़कों पर फेंक देगा; उन्हें बन्दीगृह की कोठरी में डाल देगा, और दुष्टात्मा की प्रसन्नता से उन्हें मार डालेगा।

28) हे मनुष्यों, मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर के उन सब पवित्र जनों का लोहू जो धर्मी हाबिल से लेकर पवित्र यूहन्ना के पिता जकरयाह तक बहाए गए हैं।

29) जो पवित्र स्थान में वेदी के पास मारा गया;

30) इन सभी पवित्र लोगों के लहू ने इस अधर्मी पीढ़ी के हाथों को और अधिक लाल कर दिया है।

31) तुम पर धिक्कार है, कानून के स्वामी! तू मनुष्यों के हाथ से ज्ञान की कुंजियां छीन लेता है;

32) तुम दरवाजे बंद कर देते हो; तुम अपने आप में प्रवेश नहीं करते, और प्रवेश करने के इच्छुक लोगों को पीड़ित नहीं करते।

33) उसके वचनों ने फरीसियों, वकीलों और शास्त्रियों को क्रोधित किया, और वे उसका विरोध करने लगे, और गाली-गलौज की धारा उस पर उंडेल दी।

34) जो सत्य उसने कहा वह आकाश से वज्र के समान निकला; हाकिमों ने सम्मति दी, कि वे किस रीति से उसे उसके वचनों के द्वारा फँसाएँ; उन्होंने उसका खून बहाने के लिए कानूनी रास्ता खोजा।

अध्याय 109

क्रिस्टीन प्रार्थना करने के लिए अलग जगह पर जाते हैं। यीशु ने उन्हें फरीसियों के ख़मीर के विरुद्ध चेतावनी दी और इस तथ्य को प्रकट किया कि सभी विचार और कार्य परमेश्वर की स्मरण की पुस्तक में दर्ज हैं। मनुष्य की जिम्मेदारी और भगवान की देखभाल।

अब, जब पर्व समाप्त हो गया, तो यीशु, विदेशी स्वामी और बारहों के साथ, मरियम, मरियम और मसीह में विश्वास करने वाली वफादार महिलाओं के एक समूह के साथ प्रार्थना करने के लिए अलग जगह पर गए।

2) और जब उनका मौन समाप्त हो गया, तब यीशु ने कहा, सावधान रहो; फरीसियों का खमीर जीवन के भोजन में सब प्रकार से डाला जाता है।

3) यह एक जहर है जो जो कुछ भी छू सकता है उसे कलंकित कर देगा; और यह आत्मा को डायबोलोस के धुएं के रूप में निश्चित रूप से झुलसा देगा; यह पाखंड है।

4) फरीसी बोलने में तो साफ-सुथरे लगते हैं, लेकिन दिल से शैतानी करते हैं।

5) और फिर उन्हें लगता है कि विचार कुछ ऐसा है जिसे वे अपने भीतर बंद कर सकते हैं।

6) उन्हें ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि प्रत्येक विचार और इच्छा की तस्वीर खींची जाती है और फिर उसे जीवन की पुस्तक के भीतर संरक्षित किया जाता है जिसे स्वामी किसी भी समय प्रकट कर सकते हैं।

7) जो सोचा, या कामना की जाती है, या अंधेरी रात में की जाती है, वह सबसे उज्ज्वल दिन में घोषित किया जाएगा;

8) जो कोई गुप्त स्थान के भीतर कान में फुसफुसाए, वह सड़कों पर प्रगट हो जाए।

9) और न्याय के दिन जब सब पुस्तकें खोली जाएँगी, तब इन लोगोंका और हर एक मनुष्य का न्याय किया जाएगा, न कि जो कुछ उन्होंने कहा या किया है, उसके आधार पर।

10) परन्तु जिस रीति से उन्होंने परमेश्वर के विचारों का प्रयोग किया, और जिस रीति से अनन्त प्रेम के पंखों को सेवा के लिये बनाया गया;

11) क्योंकि मनुष्य इन ईथरों से शरीर की सेवा कर सकते हैं, या पवित्र आत्मा की सेवा कर सकते हैं।

12) देखो, ये लोग इस मांस के शरीर को मार डालेंगे; लेकिन उससे क्या? मांस एक क्षणभंगुर वस्तु है, और जल्द ही, प्राकृतिक नियम के अनुसार, बीत जाएगा;

13) इनके वध से प्रकृति के काम में थोड़ा ही समय लगता है।

14) और जब वे मांस को मारते हैं, तो वे अपनी शक्ति की सीमा तक पहुंच जाते हैं; वे आत्मा को नहीं मार सकते।

15) परन्तु प्रकृति शरीर की नाईं प्राण का रक्षक है, और कटनी के समय जीवन के सब वृझोंको न्यायी देखता है;

16) और जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह जड़ से उखाड़कर आग की लपटों में झोंक दिया जाता है।

17) तब आप किसका सम्मान करेंगे? वह नहीं जिसके पास मांस को मारने की शक्ति है, और कुछ नहीं।

18) उस पराक्रमी का सम्मान करें जो प्रकृति की अग्नि की ज्वाला में आत्मा और शरीर दोनों को घोलने की शक्ति रखता है।

19) लेकिन मनुष्य राजा है; वह अपने विचारों, अपने प्रेम, अपने जीवन को निर्देशित कर सकता है, और अनन्त जीवन का पुरस्कार प्राप्त कर सकता है।

20) और आप जीवन के मुकुट के लिए अपने संघर्ष में नहीं छूटे हैं। तेरा पिता जीवित है, और तू जीवित रहेगा।

21) ईश्वर को हर जीव की देखभाल है। वह तारे, और सूर्य, और चन्द्रमाओं को गिनता है;

22) वह स्वर्गदूतों, पुरुषों और नीचे की सभी चीज़ों को गिनता है; पक्षी, फूल, पेड़;

23) गुलाब की पंखुड़ियों को वह नाम से जानता है, और हर एक को उसके जीवन की पुस्तक में गिना जाता है;

24) और तुम्हारे सिर के बाल, और तुम्हारी रगों में खून की एक एक बूंद, वह गिनती और ताल से जानता है।

25) वह चिड़ियों की पुकार, क्रिकेट की चहक, चमकते कीड़ा का गीत सुनता है; और उसकी जानकारी और सम्मति के बिना एक भी गौरैया धरती पर नहीं गिरती।

26) गौरैया बहुत कम मूल्य की लगती है; हां, उन में से पांच की कीमत बाजार में दो किश्त के बराबर है, और फिर भी परमेश्वर उन में से प्रत्येक की परवाह करता है ।

27) क्या वह तुम्हारी और अधिक परवाह नहीं करेगा जो तुम्हारी आत्मा में अपनी छवि धारण करते हैं?

28) मनुष्यों के साम्हने मसीह का अंगीकार करने से मत डरो, और परमेश्वर स्वर्ग की सेना के साम्हने तुम्हें अपना पुत्र और पुत्रियां ठहराएगा।

29) यदि तुम मनुष्यों के साम्हने मसीह का इन्कार करोगे, तो परमेश्वर तुम्हें स्वर्ग की सेना के साम्हने अपने समान ग्रहण नहीं करेगा।

30) और मैं यह भी कहता हूं, कि डरो मत, जब लोग तुम्हें देश के हाकिमोंके साम्हने तुम्हारे विश्वास का उत्तर देने के लिथे ले आएं।

31) देखो, पवित्र श्वास तुम्हें तुम्हारी ज़रूरत की घड़ी में सिखाएगा कि तुम्हें क्या कहना चाहिए, और जो सबसे अच्छा है वह अनकहा रह जाता है।

32) और फिर क्रिस्टीन लोगों को उपदेश देने के लिए फिर गए।

अध्याय 110

मरियम जीत का गीत गाती है। गीत। यीशु ने मिस्र से कनान तक इस्राएल की यात्रा के प्रतीकात्मक चरित्र को प्रकट किया।

और मरियम बढ़ती हुई भीड़ के साम्हने खड़ी हो गई, और स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर जयजयकार का नया गीत गाया:

2) वीणा, वीणा और वीणा बजाओ; हे स्वर्ग के सभी गायक मंडलियों, सबसे ऊंचे स्वर वाली झांझ को आगे लाओ। गीत में शामिल हों, नया, नया गीत।

3) सेनाओं का यहोवा मनुष्यों की दोहाई सुनकर झुक गया है, और देखो, बालजेबूब का गढ़ वायु के आगे पत्ते की नाईं कांप रहा है।

4) गिदोन की तलवार फिर से खोल दी गई है।

5) यहोवा ने अपके ही हाथ से रात के परदोंको दूर खींच लिया है; सत्य का सूर्य स्वर्ग और पृथ्वी पर बाढ़ ला रहा है;

6) अज्ञान और मृत्यु के अंधेरे के राक्षस तेजी से भाग रहे हैं; सुबह के सूरज के नीचे ओस की तरह गायब हो रहे हैं।

7) भगवान हमारी ताकत और गीत है; हमारा उद्धार और हमारी आशा है, और हम उसके लिये नया भवन बनाएंगे;

8) हमारे हृदयों को शुद्ध करेगा, और सबकी कोठरियों को शुद्ध करेगा। हम पवित्र श्वास के मंदिर हैं।

9) अब हमें जंगल में तम्बू की कोई आवश्यकता नहीं है; अब हाथों से बना मंदिर नहीं।

10) हम न तो पवित्र भूमि की खोज करते हैं और न ही यरूशलेम की।

11) हम परमेश्वर के तम्बू हैं; हम उसके मन्दिर हैं जो बिना धार वाले औजारों की आवाज के बने हैं।

12) हम पवित्र भूमि हैं; हम नए यरूशलेम हैं; अल्लेलूयाह, यहोवा की स्तुति करो!

13) और जब गीत गाया गया, तब भीड़ ने जयजयकार की, परमेश्वर की स्तुति करो।

14) यीशु ने कहा, मार्ग देख!

15) मनुष्य के पुत्र मिस्र की रात के अन्धकार में युगों-युगों तक टटोलते रहे।

16) बुद्धि के फिरौन ने उन्हें अपनी जंजीरों से बांध रखा है।

17) लेकिन ईश्वर ने समय की धुंध में फुसफुसाया और उन्हें स्वतंत्रता और प्रेम की भूमि के बारे में बताया।

18) और मार्ग को रोशन करने के लिए उसने अपना लोगो भेजा है।

19) लाल सागर वादा किए गए देश और मिस्र की रेत के बीच लुढ़कता है।

20) लाल सागर शारीरिक मन है।

21) देखो, लोगो ने उसका हाथ बढ़ाया है; समुद्र विभाजित करता है; शारीरिक मन दो भागों में खुला है; मनुष्य के पुत्र सूखे शोड में से चलते हैं।

22) समझदार फिरौन उन्हें अपनी उड़ान में रोकेंगे; समुद्र का पानी लौट आता है; इंद्रियों के फिरौन खो गए हैं और पुरुष स्वतंत्र हैं।

23) क्योंकि थोड़ी ही देर में लोग सीन के जंगल में धावा बोल देते हैं; लोगो का नेतृत्व करता है;

24) और जब मनुष्य यरदन के तट पर खड़े होते हैं, तो ये जल ठहर जाता है, और मनुष्य अपके अपके भीतर निकल जाते हैं।

अध्याय 111

यीशु सिखाता है। एक आदमी उससे अनुरोध करता है कि वह अपने भाई को उचित व्यवहार करने के लिए मजबूर करे। यीशु ने ईश्वरीय नियम, सत्य की शक्ति और संपत्ति की सार्वभौमिकता को प्रकट किया। अमीर आदमी के दृष्टांत और उसकी भरपूर फसल से संबंधित है।

और यीशु ने लोगों को सिखाया; और जब वह बातें कर रहा था, तब एक मनुष्य खड़ा हुआ, और कहने लगा,

2) रब्बोनी, मेरी विनती सुनो: मेरे पिता मर गए और एक बड़ी संपत्ति छोड़ गए; मेरे भाई ने यह सब जब्त कर लिया, और अब मुझे मेरे हिस्से से मना कर दिया।

3) मैं प्रार्थना करता हूं कि आप उसे सही करने के लिए कहें और जो मेरा है उसे दे दें।

4) यीशु ने कहा, मैं ऐसे मामलों में न्याय करने नहीं आया हूं; मैं अदालत का कोई गुर्गा नहीं हूं।

5) भगवान ने मुझे एक आदमी को सही करने के लिए मजबूर नहीं करने के लिए भेजा है।

6) हर आदमी में अधिकार की भावना होती है; लेकिन कई पुरुष इसे नहीं मानते हैं।

7) स्वार्थ से उठने वाले धुएं ने उनके अधिकार की भावना के बारे में एक पपड़ी बना ली है जो उनके आंतरिक प्रकाश को ढक देती है, ताकि वे अन्य पुरुषों के अधिकारों को न तो समझ सकें और न ही पहचान सकें।

8) इस परदे को आप हथियारों के बल से नहीं फाड़ सकते, और ऐसा कुछ भी नहीं है जो इस परत को भंग कर सकता है लेकिन भगवान का ज्ञान और प्रेम है।

9) जब मनुष्य कीचड़ में होते हैं, तो आकाश बहुत दूर लगता है; जब पुरुष पहाड़ की चोटी पर होते हैं, तो आकाश निकट होता है, और वे लगभग सितारों को छू सकते हैं।

10) तब यीशु ने फिरकर उन बारहोंसे कहा, देखो, बहुत लोग हैं जो शारीरिक जीवन की कीचड़ में पड़े हैं!

11) सच्चाई का खमीर मिट्टी को ठोस चट्टान में बदल देगा, और लोग चल सकते हैं और वह रास्ता खोज सकते हैं जो पहाड़ की चोटी तक जाता है।

12) आप जल्दबाजी नहीं कर सकते; परन्तु तुम उदार हाथ से इस खमीर को बिखेर सकते हो।

13) जब मनुष्य उस सच्चाई को जान लेते हैं जो अधिकार की व्यवस्था को अपने सामने रखती है, तो वे हर एक को उसका हक देने के लिए उतावले होंगे।

14) तब यीशु ने लोगों से कहा, चौकस रहो, और लोभ न करो। मनुष्यों की संपत्ति में वह नहीं है जो उनके पास प्रतीत होता है - भूमि में, चांदी में और सोने में।

15) ये चीजें केवल उधार की दौलत हैं। कोई भी मनुष्य परमेश्वर के उपहारों को अपने पास नहीं रख सकता।

16) प्रकृति की चीजें ईश्वर की चीजें हैं, और जो ईश्वर का है वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान है।

17) प्राण का धन जीवन की पवित्रता में और उस ज्ञान में है जो स्वर्ग से उतरता है।

अमीर आदमी और उसकी प्रचुर फसल का दृष्टांत

18) देखो, एक धनवान की भूमि बहुतायत से उगाई गई है; उसके खलिहान इतने छोटे थे कि उसका अन्न पक नहीं सकता, और उस ने अपने आप से कहा,

19) मुझे क्या करना चाहिए? मैं अपना अन्न न दे; मुझे इसे व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए; और फिर उसने कहा,

20) मैं यह करूंगा; मैं इन छोटे खलिहानों को तोड़ डालूंगा और बड़े खलिहानों को बनाऊंगा; वहाँ मैं अपना अन्न जमा करके कहूँगा,

21) अब मेरी आत्मा आराम करो; आपके पास कई वर्षों के लिए पर्याप्त है; खाओ, पियो और अपने को भरो और सन्तुष्ट रहो।

22) परन्तु परमेश्वर ने नीचे दृष्टि करके उस मनुष्य को देखा; उसने अपने स्वार्थी हृदय को देखा और कहा,

23) हे मूर्ख मनुष्य, इस रात तेरा जीव मांस के घर से निकल जाएगा; तो तुम्हारा कमाया हुआ धन किसके पास होगा?

अंत: अमीर आदमी और उसकी प्रचुर फसल का दृष्टांत

24) हे गलील के लोगों, पृथ्वी की कोठरियों में धन मत रखना; संचित धन आपकी आत्मा को झुलसा देगा।

25) ईश्वर मनुष्यों को गुप्त कोठरियों में जमा करने के लिए धन नहीं देता है। मनुष्य केवल परमेश्वर के धन के भण्डारी हैं, और उन्हें इसका उपयोग सामान्य भलाई के लिए करना चाहिए।

26) हर एक भण्डारी से जो अपने आप में सच्चा है, और दूसरे लोगों से, जो कुछ है, यहोवा कहेगा, अच्छा हुआ।

अध्याय 112

मगदला की मैरी के घर में क्रिस्टीन। यीशु अपने शिष्यों को "छोटा झुंड" कहते हैं और उन्हें अपने प्रेम को ईश्वरीय चीजों पर रखने का आरोप लगाते हैं। वह उन्हें आंतरिक जीवन के बारे में सिखाता है।

और यीशु भीड़ को छोड़कर अपके चेलोंके संग मरियम के घर चला गया; और जब वे भोजन करने को तख़्त के पास बैठे, तो उस ने कहा,

2) मेरे छोटे झुंड, मत डरो; यह तुम्हारे पिता की इच्छा है कि तुम आत्मा के राज्य पर शासन करो।

3) परमेश्वर के भवन में एक शासक सेनाओं के यहोवा का दास होता है, और मनुष्य मनुष्यों की सेवा के बिना परमेश्वर की सेवा नहीं कर सकता।

4) भगवान के घर में एक दास धन के घर में दास नहीं हो सकता; न ही अर्थ के आराधनालय में।

5) यदि तुम भूमि, या बन्धन, या पृथ्वी के धन से बंधे हो, तो तुम्हारा हृदय पृथ्वी की वस्तुओं से जुड़ा हुआ है; क्योंकि जहां तेरा खजाना है, वहां तेरे मन हैं।

6) अपनी सारी संपत्ति को फेंक दो, गरीबों में बांट दो, और ईश्वर पर भरोसा रखो, और तुम्हारी और तुम्हारी कभी कमी नहीं होगी।

7) यह विश्वास की परीक्षा है, और ईश्वर अविश्वासियों की सेवा स्वीकार नहीं करेगा।

8) समय परिपक्व है; तेरा स्वामी बादलों पर आता है; पूर्वी आकाश अब उसकी उपस्थिति से चमक रहा है।

9) स्वागत वस्त्र पहनें; कमर कस लो; अपके दीपकोंको ट्रिम कर के उन में तेल भर देना, और अपके रब के साम्हने के लिथे तैयार रहना; जब तुम तैयार हो, वह आएगा।

10) तीन बार धन्य हैं वे दास जो अपने प्रभु को प्राप्त करने के लिए तैयार हैं।

11) देख, क्योंकि वह कमर बान्धेगा, और सब के लिथे भव्य जेवनार करेगा, और सेवा करेगा।

12) यह मायने नहीं रखता कि वह कब आएगा; यह दूसरी घड़ी में हो सकता है; यह तीसरे पर हो सकता है; परन्तु धन्य हैं वे दास जो ग्रहण करने को तैयार हैं।

13) आप अपने दरवाजे को छोड़ कर सो नहीं सकते, और क्षणभंगुर समय की आनंदमय अज्ञानता में प्रतीक्षा कर सकते हैं;

14) क्योंकि निश्चय ही चोर आकर तेरा माल ले लेंगे, और बाँधकर डाकुओं के गढ़ में ले जाएंगे।

15) और यदि तुम आगे नहीं बढ़ोगे, तो स्वामी जब वह आएगा, तो सोए हुए पहरेदार को मित्र नहीं, परन्तु शत्रु समझेगा।

16) हे प्रियों, ये ऐसे समय हैं जब प्रत्येक मनुष्य को जागते रहना चाहिए और अपने पद पर रहना चाहिए, क्योंकि कोई नहीं बता सकता कि वह समय और वह दिन कब प्रकट होगा।

17) पतरस ने कहा, हे प्रभु, यह दृष्टान्त हमारे लिये है, या भीड़ के लिये?

18) और यीशु, आपको पूछने की आवश्यकता क्यों है? भगवान कोई आदमी नहीं है कि वह एक के लिए सम्मान दिखाए और दूसरे को त्याग दे।

19) जो कोई आकर अपने कमर बान्धे, और अपना दीया तराश ले, और जीवन के गुम्मट में एक बुर्ज पाए, जहां वह देख सके, और यहोवा से भेंट करने को तैयार रहे।

20) परन्तु तुम ज्योति की सन्तान होकर आए हो, और आंगन की भाषा सीखी हो, और खड़े होकर मार्ग का नेतृत्व कर सको।

21) परन्तु तुम प्रतीक्षा करके यह सोच सकते हो कि तुम प्रभु को ग्रहण करने को तैयार हो, और वह नहीं आता।

22) और आप अधीर हो सकते हैं और फिर से शारीरिक तरीकों की लालसा करना शुरू कर सकते हैं, और अपने शासन का प्रयोग करना शुरू कर सकते हैं;

23) घर के सेवकों को पीटना, और अन्यथा गाली देना, और अपने आप को दाखमधु और मांस से भरना।

24) और जब यहोवा आएगा तब वह क्या कहेगा?

25) देख, वह अविश्वासी दास को अपके घर से निकाल देगा; और उसके शुद्ध होने और अपने प्रभु को ग्रहण करने के योग्य समझे जाने से पहले बहुत वर्ष आएंगे और जाएंगे।

26) वह सेवक जो प्रकाश में आया है, जो स्वामी की इच्छा को जानता है और नहीं करता है; विश्वसनीय पहरेदार जो जीवन के गुम्मट के बुर्ज के भीतर सोने के लिए जाता है,

27) वह न्याय के झटके को कई बार महसूस करेगा, जबकि वह जो अपने स्वामी की इच्छा को नहीं जानता और नहीं करता, उसे गंभीर सजा नहीं मिलेगी।

28) वह मनुष्य जो अवसर के खुले द्वार के साम्हने आकर खड़ा हो जाता है, और भीतर प्रवेश नहीं करता, वरन अपक्की चाल चलता है,

29) फिर आकर देखेंगे कि द्वार पक्का बना हुआ है, और जब वह पुकारेगा, तब द्वार न खुलेगा।

30) पहरेदार कहेगा, तुम्हारे पास एक बार पासवर्ड था, लेकिन तुमने उसे फेंक दिया और अब गुरु तुम्हें नहीं जानता; रवाना होना।

31) और मैं तुम से सच कहता हूं, जिसे बहुत दिया गया है, उसे बहुत कुछ चाहिए; जिसे थोड़ा दिया गया है, थोड़ा ही चाहिए।

अध्याय 113

लामाओं के एक प्रश्न के उत्तर में, यीशु शांति के शासन और विरोधों के माध्यम से इसे प्राप्त करने के मार्ग पर एक पाठ पढ़ाते हैं। समय के लक्षण। पवित्र सांस का मार्गदर्शन। क्रिस्टीन बेथसैदा जाते हैं।

अब, भोजन करने के बाद, मेहमान और यीशु सभी मरियम के घर में एक विशाल हॉल में थे।

2) और फिर लामास ने कहा, प्रार्थना करो, प्रभु हमें बताओ, क्या यह शांति की सुबह है?

3) क्या हम उस समय तक आ गए हैं जब लोग फिर युद्ध नहीं करेंगे?

4) क्या आप वाकई शांति के राजकुमार हैं, जिनके बारे में पवित्र लोगों ने कहा था कि वे आएंगे?

5) यीशु ने कहा, आज शान्ति का राज्य है; यह मृत्यु की शांति है।

6) एक स्थिर पूल शांति से रहता है। जब पानी हिलना बंद कर देता है तो वे जल्द ही मौत के बीज से लद जाते हैं; भ्रष्टाचार हर बूंद में बसता है।

7) जीवित जल हमेशा वसंत में मेमनों की तरह उछल-कूद करते और उछलते हैं।

8) राष्ट्र भ्रष्ट हैं; वे मौत की बाहों में सोते हैं और बहुत देर होने से पहले उन्हें जगाया जाना चाहिए।

9) जीवन में हम काम पर विरोधी पाते हैं। परमेश्वर ने मुझे जीवन के समुद्र के जल को उसकी गहराई तक हिलाने के लिए यहां भेजा है।

10) शांति संघर्ष का अनुसरण करती है; मैं इस मौत की शांति का वध करने आया हूं। शांति के राजकुमार को पहले संघर्ष का राजकुमार होना चाहिए।

11) सत्य का यह खमीर जो मैं मनुष्यों के पास लाया हूं, दुष्टात्माओं को उभारेगा, और जातियां, नगर, परिवार आपस में लड़ेंगे।

12) वे पांच जो मेल के घर में रहते आए हैं, अब विभाजित हो जाएंगे, और दो तीन के साथ युद्ध करेंगे;

13) पुत्र अपने प्रमुख के साम्हने खड़ा रहेगा; माँ और बेटी लड़ेंगे; हां, हर घर में कलह का राज्य होगा।

14) आत्मा, लोभ और सन्देह ज्वर की आग में भड़क उठेंगे, और तब मेरे कारण पृथ्वी मनुष्य के लहू में बपतिस्मा लेगी।

15) लेकिन सही है राजा; और जब धूआं दूर हो जाएगा, तब जातियां फिर युद्ध न सीखेंगी; शांति का राजकुमार राज्य करेगा।

16) देखो, जो कुछ मैं कहता हूं उसके चिन्ह आकाश में हैं; लेकिन पुरुष उन्हें नहीं देख सकते।

17) जब लोग पश्चिम में बादल को उठते हुए देखते हैं, तो वे कहते हैं, वर्षा होगी, और ऐसा ही होता है; और जब दक्खिन से आँधी चलती है, तब वे कहते हैं, कि मौसम सुहावना होगा; और ऐसा है।

18) देखो, मनुष्य पृथ्वी और आकाश के चिन्हों को तो पढ़ सकते हैं, परन्तु वे पवित्र श्वास के चिन्हों को नहीं समझ सकते; लेकिन तुम्हें पता होगा।

19) क्रोध का तूफान आता है; शारीरिक आदमी आपको अदालत में पेश करने और जेल की कोठरी में डालने के लिए एक कारण की तलाश करेगा।

20) और जब वे समय आएंगे, तब बुद्धि मार्गदर्शन करेगी; नाराजगी मत करो। क्रोध दुष्टों के क्रोध को और अधिक प्रबल बना देता है।

21) पृथ्वी के नीच लोगों में न्याय और दया की थोड़ी सी भावना है।

22) आप जो करते हैं और कहते हैं, उस पर ध्यान देकर और पवित्र श्वास के मार्गदर्शन में भरोसा करके, आप इस भावना को बढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

23) इस प्रकार तुम यहोवा की स्तुति करने के लिए मनुष्यों का क्रोध भड़का सकते हो।

24) क्रिस्टीन अपने रास्ते गए और बेतसैदा आए और उपदेश दिया।

<u>अध्याय 114</u>

समुद्र पर एक बड़ा तूफान कई जिंदगियां तबाह कर देता है। यीशु मदद के लिए याचना करता है, और लोग उदार हाथ से देते हैं। एक वकील के प्रश्न के उत्तर में यीशु आपदाओं का दर्शन देते हैं।

जैसे यीशु ने शिक्षा दी, एक मनुष्य ने खड़ा होकर कहा, हे रब्बोनी, क्या मैं बोलूं?

2) और यीशु ने कहा, कहो। और तब वह आदमी बोला और कहा,

3) बीती रात समुद्र में आए एक तूफान ने मछली पकड़ने वाली कई नौकाओं को तबाह कर दिया, और बहुत से लोग मारे गए, और देखो, उनकी पत्नियों और बच्चों की ज़रूरत है;

4) उनके घोर संकट में उनकी मदद करने के लिए क्या किया जा सकता है?

5) और यीशु ने कहा, एक योग्य याचना। हे गलील के लोगों, चौकस रहो। हो सकता है कि हम इन लोगों को फिर से जीवित न करें, लेकिन हम उन लोगों की मदद कर सकते हैं जिन्होंने उन्हें रोज़ाना रोटी के लिए देखा था।

6) हे परमेश्वर के धन के भण्डारी, एक अवसर आया है; अपनी तिजोरी खोलो; अपना जमा हुआ सोना लाओ; इसे एक भव्य हाथ से प्रदान करें।

7) यह धन इन दिनों के लिए अलग रखा गया था; जब इसकी आवश्यकता नहीं थी, देखो, यह तुम्हारा था पहरा देने के लिए;

8) लेकिन अब यह तुम्हारा नहीं है, क्योंकि यह उन लोगों का है जो गरीब हैं, और यदि आप इसे नहीं देते हैं तो आप अपने सिर पर भगवान का क्रोध ला सकते हैं।

9) जरूरतमंदों को देना दान नहीं है; यह लेकिन ईमानदारी है; यह केवल पुरुषों को अपना दे रहा है।

10) तब यीशु ने यहूदा की ओर फिरकर बारह में से एक, जो दल का खजांची था, कहा,

11) हमारे खजाने के बक्से को आगे लाओ; पैसा अब हमारा नहीं है; ऐसे संकट में पड़े लोगों की मदद के लिए हर संभव प्रयास करें।

12) अब, यहूदा सभी पैसे जरूरतमंदों को नहीं देना चाहता था, और इसलिए उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना से बात की।

13) उस ने कहा, सुन, मैं एक भाग को बचाकर शेष को दूंगा; निश्चय ही हमारे लिये काफी है, क्योंकि हम दरिद्रों के लिये परदेशी हैं; हम उनके नाम तक नहीं जानते।

14) परन्तु पतरस ने कहा, हे यहूदा, हे मनुष्य, तू क्योंकर अपने अधिकार के बल को तुच्छ समझने का साहस करता है?

15) यहोवा ने सच कहा है; इस संकट के सामने यह धन हमारा नहीं है, और देने से इंकार करना चोरी करना है।

16) आपको डरने की जरूरत नहीं है; हम चाहते नहीं आएंगे।

17) तब यहूदा ने खजाने की पेटी खोली और सारा पैसा दे दिया।

18) और शोकाकुलों के लिये सोना-चाँदी, भोजन, और वस्त्र बहुतायत में थे।

19) एक वकील ने कहा, हे रब्बोनी, यदि परमेश्वर संसार पर और जो कुछ उन में है वह सब पर शासन करता है, तो क्या वह इस तूफान को नहीं लाया? क्या उसने इन आदमियों को नहीं मारा?

20) क्या वह यहाँ इन लोगों पर यह घोर संकट नहीं लाया है? और क्या यह उन्हें अपराधों के लिए दंडित करने के लिए किया गया था?

21) और हमें अच्छी तरह याद है जब एक बार गलील से गंभीर यहूदियों का एक दल यरूशलेम में था, और एक दावत में था, और रोमी कानून के खिलाफ कल्पित अपराधों के लिए थे,

22) पोंटियस पिलातुस द्वारा मंदिर के प्रांगण में ही काट दिया गया; और उनका खून उनका बलिदान बन गया।

23) क्या परमेश्वर ने यह सब वध इसलिए किया क्योंकि ये दोगुने दुष्ट थे?

24) और फिर हम ध्यान में लाते हैं कि एक बार सिलोम नामक एक गुम्मट ने यरूशलेम की सुरक्षा पर कब्जा कर लिया, और, प्रतीत होता है, बिना किसी कारण के वह टूट गया और वह पृथ्वी पर गिर गया और अठारह लोग मारे गए।

25) क्या ये आदमी नीच थे? और क्या वे किसी बड़े अपराध की सजा के रूप में मारे गए थे?

26) और यीशु ने कहा, हम जीवन की एक भी अवधि और किसी भी चीज़ का न्याय नहीं कर सकते।

27) एक कानून है जिसे पुरुषों को अवश्य ही पहचानना चाहिए: परिणाम कारण पर निर्भर करता है।

28) मनुष्य एक छोटे से जीवन की हवा में तैरने और फिर शून्य में खो जाने के लिए प्रेरित नहीं हैं।

29) वे अनन्त पूरे के अविनाशी अंश हैं जो आते और जाते हैं, देखो, कई बार पृथ्वी की हवा में और उस महान पार के, केवल ईश्वर के समान स्वयं को प्रकट करने के लिए।

30) एक कारण एक संक्षिप्त जीवन का हिस्सा हो सकता है; परिणाम दूसरे जीवन तक नोट नहीं किया जा सकता है।

31) तुम्हारे परिणामों का कारण मेरे जीवन में नहीं पाया जा सकता है, और न ही मेरे परिणामों का कारण तुम्हारे भीतर पाया जा सकता है।

32) मैं काट नहीं सकता जब तक मैं बोऊं और जो बोऊं वही काटूंगा।

33) सभी अनंत काल के नियम को मास्टर माइंड के लिए जाना जाता है:

34) जो कुछ मनुष्य दूसरे मनुष्यों के साथ करेगा, वह न्यायी और जल्लाद उनके साथ करेगा।

35) हम मनुष्यों के बीच इस कानून के क्रियान्वयन पर ध्यान नहीं देते हैं।

36) हम उन कमजोरों पर ध्यान देते हैं जो अपमानित होते हैं, उन पर रौंदते हैं और मारे जाते हैं जिन्हें मैं मजबूत कहता हूं।

37) हम देखते हैं कि लकड़ी की तरह सिर वाले पुरुष राज्य की कुर्सियों पर बैठे हैं;

38) राजा और न्यायाधीश, सीनेटर और पुजारी हैं, जबकि विशाल बुद्धि वाले लोग सड़कों पर सफाई करने वाले हैं।

39) हम देखते हैं कि सामान्य ज्ञान वाली महिलाएं, न कि किसी अन्य प्रकार की श्वेत, को रानियों के रूप में चित्रित और तैयार किया जाता है,

40) कठपुतली राजाओं के दरबार की महिलाएँ बनना, क्योंकि उनके पास कुछ सुंदर का रूप है; जबकि भगवान की अपनी बेटियां उनकी दासी हैं या खेत में आम मजदूर के रूप में काम करती हैं।

41) न्याय की भावना जोर से रोती है: यह दाईं ओर एक उपहास है।

42) सो जब मनुष्य जीवन की एक छोटी सी अवधि से अधिक नहीं देखते हैं, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वे कहते हैं, कोई ईश्वर नहीं है, या यदि कोई ईश्वर है तो वह अत्याचारी है और उसे मरना चाहिए।

43) यदि आप मानव जीवन के अधिकार का न्याय करना चाहते हैं, तो आपको उठना चाहिए और समय के शिखर पर खड़े होना चाहिए और पुरुषों के विचारों और कार्यों को नोट करना चाहिए जैसा कि वे सदियों से सामने आए हैं;

44) क्योंकि हमें यह जान लेना चाहिए कि मनुष्य मिट्टी से बना प्राणी नहीं है कि फिर से मिट्टी में बदल जाए और गायब हो जाए।

45) वह शाश्वत संपूर्ण का एक हिस्सा है। ऐसा कोई समय नहीं था जब वह नहीं थे; वह समय कभी नहीं आएगा जब वह मौजूद नहीं होगा।

46) और अब हम देखते हैं; जो लोग अब दास हैं वे एक बार अत्याचारी थे; जो लोग अब अत्याचारी हैं वे गुलाम हो गए हैं।

47) जो लोग अब पीड़ित हैं वे एक बार ऊपर खड़े हो गए और एक पैशाचिक की खुशी के साथ चिल्लाया, जबकि अन्य उनके हाथों पीड़ित थे।

48) और लोग बीमार, और रुके, और लंगड़े, और अंधे हैं क्योंकि उन्होंने एक बार सिद्ध जीवन के नियमों का उल्लंघन किया था, और परमेश्वर के हर कानून को पूरा किया जाना चाहिए।

49) मनुष्य उस दंड से बच सकता है जो इस जीवन में अपने कुकर्मों के कारण लगता है; परन्तु हर एक काम, और वचन और विचार के अपने-अपने आयाम और सीमा होती है,

50) कारण है, और उसके अपने परिणाम हैं, और यदि कोई गलत किया जाता है, तो गलत करने वाले को उसे सही करना चाहिए।

51) और जब सभी गलतियाँ ठीक हो जाएँगी, तब क्या मनुष्य उठेगा और परमेश्वर के साथ एक हो जाएगा।

अध्याय 115

यीशु समुद्र के द्वारा शिक्षा देते हैं। वह बोने वाले का दृष्टान्त बताता है। बताता है कि वह दृष्टान्तों में क्यों सिखाता है। बोने वाले के दृष्टान्त की व्याख्या करता है। गेहूँ और तारे के दृष्टान्त से संबंधित है।

और यीशु समुद्र के किनारे खड़ा होकर उपदेश देने लगा; और भीड़ ने उस पर चढ़ाई की, और वह पास की नाव पर चढ़ गया, और किनारे से थोड़ा सा मार्ग ले गया, और वह दृष्टान्तोंमें बातें करने लगा; उन्होंने कहा,

बोने वाले का दृष्टान्त

2) देखो, एक बोने वाला अपना बीज लेकर अपने खेत में बोने को गया।

3) उस ने बड़े बड़े हाथ से बीज को फैलाया, और कुछ मनुष्य की बनाई हुई कठोर सड़कों पर गिर पड़े।

4) और शीघ्र ही अन्य लोगों के पैरों तले कुचले गए; और पक्षी नीचे उतर आए और सब बीजों को ले गए।

5) कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे जहाँ थोड़ी मिट्टी थी; वे बढ़े और जल्द ही ब्लेड दिखाई दिए और बहुत कुछ वादा किया;

6) लेकिन तब मिट्टी की गहराई नहीं थी, पोषण का कोई मौका नहीं था, और दोपहर की धूप में वे सूख गए और मर गए।

7) कुछ बीज वहीं गिरे जहाँ थीस्ल उगते थे, और उन्हें बढ़ने के लिए कोई भूमि नहीं मिली और वे खो गए;

8) परन्तु अन्य बीजों ने समृद्ध और कोमल भूमि में निवास पाया और तेजी से बढ़े, और फसल में यह पाया गया कि कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना।

अंत - बोने वाले का दृष्टान्त

9) जिनके सुनने के कान हैं वे सुन सकते हैं; जिनके पास समझने के लिए दिल हैं वे जान सकते हैं।

यीशु बताता है कि वह दृष्टान्तों में क्यों सिखाता है

10) अब उसके चेले नाव पर उसके पास थे, और थोमा ने पूछा, तू दृष्टान्तोंमें क्यों बोलता है?

11) और यीशु ने कहा, मेरे वचन, हर स्वामी के शब्दों की तरह, उनके अर्थ में दोहरे हैं।

12) आप जो आत्मा की भाषा जानते हैं, मेरे शब्दों के अर्थ इतने गहरे हैं कि दूसरे लोग नहीं समझ सकते।

13) मैं जो कुछ कहता हूं उसका दूसरा अर्थ यह है कि सारी भीड़ समझ सकती है; ये शब्द उनके लिए भोजन हैं; भीतर के विचार तुम्हारे लिए भोजन हैं।

14) हर कोई आगे बढ़े और वह भोजन ले जो वह प्राप्त करने के लिए तैयार है।

अंत - यीशु बताता है कि वह दृष्टान्तों में क्यों सिखाता है

यीशु बोने वाले के दृष्टान्त की व्याख्या करता है

15) और फिर वह बोला कि सब सुन सकें; उस ने कहा, दृष्टान्त का अर्थ सुनो:

16) मनुष्य मेरी बातें सुनते और समझते नहीं, और तब देहधारी बीज को शुद्ध कर लेता है, और आत्मिक जीवन का कोई चिन्ह प्रकट नहीं होता।

17) यह वह बीज है जो मनुष्यों के पीटे हुए पथों में गिरा।

18) और दूसरे जीवन की बातें सुनते हैं, और वे सब जोश के साथ ग्रहण करते हैं; वे सच्चाई को समझते हैं और अच्छी तरह से वादा करते हैं;

19) लेकिन मुसीबतें आती हैं; निराशा पैदा होती है; विचार की कोई गहराई नहीं है; उनके अच्छे इरादे मुरझा जाते हैं और मर जाते हैं।

20) ये वे बीज हैं जो पथरीली भूमि में गिरे थे।

21) और दूसरे लोग सत्य की बातें सुनते हैं और उनकी कीमत जानने लगते हैं; लेकिन सुख, प्रतिष्ठा, धन और प्रसिद्धि का प्यार सारी मिट्टी भर देता है; बीजों का पोषण नहीं होता और वे नष्ट हो जाते हैं।

22) ये वे बीज हैं जो कीड़ों और कांटों में गिरे थे।

23) परन्तु दूसरे लोग सत्य की बातें सुनते हैं और उन्हें अच्छी तरह समझते हैं; वे अपनी आत्मा में गहरे उतर जाते हैं; वे पवित्र जीवन जीते हैं और सारा संसार धन्य है।

24) ये वे बीज हैं जो उपजाऊ भूमि में गिरे थे, और वे बहुतायत से फल लाए।

25) हे गलील के लोगों, चौकस रहो, कि तुम किस रीति से सुनते हो, और अपने खेत कैसे जोतते हो; क्योंकि यदि तुम इस दिन के अर्पणों को थोड़ा भी छोटा करो, तो हो सकता है कि बोनेवाला इस में या आनेवाले युग में तुम्हारे पास फिर न आए।

अंत - यीशु बोने वाले के दृष्टान्त की व्याख्या करता है

गेहूँ और तारे का दृष्टान्त

26) तब यीशु ने एक और दृष्टान्त कहा; उन्होंने कहा:

27) मैं राज्य की तुलना उस खेत से कर सकता हूं जिसमें एक मनुष्य ने बहुमूल्य बीज बोया था;

28) परन्तु जब वह सो रहा था, तो एक दुष्ट ने निकलकर एक नाप में पुदीना के बीज बोए; फिर अपने रास्ते चला गया।

29) भूमि अच्छी थी, और इस प्रकार गेहूँ और डारनेल बढ़े; और जब सेवकों ने गेहूं के बीच में तारे देखे, तब उन्होंने खेत के स्वामी को पाया, और कहा,

30) तूने निश्चय ही अच्छा बीज बोया है; कहाँ से ये तारे?

31) स्वामी ने कहा, किसी दुष्ट ने तारे का बीज बोया है।

32) सेवकों ने कहा, क्या हम निकल कर जंगली पौधों को जड़ से उखाड़ कर आग में जला दें?

33) स्वामी ने कहा, नहीं, यह ठीक नहीं होगा। गेहूँ और तारे मिट्टी में एक साथ बढ़ते हैं, और जब आप टार को खींचते हैं तो आप गेहूं को नष्ट कर देते हैं।

34) इसलिए हम उन्हें कटनी के समय तक एक साथ बढ़ने देंगे। तब मैं काटने वालों से कहूंगा,

35) निकल जा कर जंगली पौधों को बटोर कर बान्धकर आग में जला देना, और सारा गेहूं मेरे खलिहान में इकट्ठा कर लेना।

अंत - गेहूँ और तारे का दृष्टान्त

36) यह कहकर वह नाव से उतर कर घर को गया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए।

अध्याय 116

क्रिस्टीन फिलिप के घर में हैं। यीशु गेहूँ और तारे के दृष्टान्त की व्याख्या करता है। वह दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या करता है: अच्छा बीज; पेड़ की वृद्धि; खमीर; छिपा हुआ खजाना। वह प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर जाता है।

क्रिस्टीन फिलिप्पुस के घर में थे और पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, क्या तू हमें उन दृष्टान्तों का अर्थ समझाएगा जो तू ने आज कहा? गेहूं और तारे के बारे में, विशेष रूप से?

आंतरिक और बाहरी साम्राज्य

2) और यीशु ने कहा, परमेश्वर का राज्य एक द्वैत है; इसका एक बाहरी और एक आंतरिक रूप है।

3) जैसा कि मनुष्य देखता है, यह उन लोगों से बना है जो मसीह के नाम का अंगीकार करते हैं।

4) विभिन्न कारणों से विभिन्न लोग हमारे परमेश्वर के इस बाहरी राज्य में भीड़ लगाते हैं।

5) आंतरिक राज्य आत्मा का राज्य है, हृदय में शुद्ध का राज्य है।

दृष्टान्त: बाहरी साम्राज्य

6) बाहरी राज्य को मैं दृष्टान्तों में अच्छी तरह समझा सकता हूँ। देख, क्योंकि मैं ने तुझे समुद्र में एक बड़ा जाल डालते देखा है,

7) और जब तुम उसे अंदर खींचते हो, तो देखो, वह सब प्रकार की मछलियों से भरी हुई थी, कोई अच्छी, कोई बुरी, कोई बड़ी, कोई छोटी; और मैं ने तुझे भले को बचाते और बुरे को फेंकते देखा है।

8) यह बाहरी राज्य जाल है, और सब प्रकार के मनुष्य पकड़े जाते हैं; परन्तु छँटाई के दिन में बुरे सब दूर फेंक दिए जाएंगे, अच्छा सुरक्षित रखा जाएगा।

यीशु गेहूँ और तारे का दृष्टान्त समझाते हैं: अच्छा बीज

9) तब गेहूँ और तारे के दृष्टान्त का अर्थ सुनिए:

10) बोनेवाला मनुष्य का पुत्र है; क्षेत्र, दुनिया; अच्छा बीज ज्योति की सन्तान हैं; तारे, अंधेरे के बच्चे; शत्रु, कामुक स्व; फसल का दिन, युग की समाप्ति; काटने वाले परमेश्वर के दूत हैं।

11) हर एक मनुष्य का हिसाब का दिन आएगा; तब जंगली दाने बटोर कर आग में झोंक दिए जाएंगे, और जला दिए जाएंगे।

12) तब आत्मा के राज्य में अच्छाई सूरज की तरह चमकेगी।

13) और फिलिप्पुस ने कहा, क्या पुरूषों और स्त्रियों को आग की लपटों में भुगतना होगा, क्योंकि उन्होंने जीवन का मार्ग नहीं पाया?

दृष्टांत: शुद्ध करने वाली आग

14) यीशु ने कहा, आग शुद्ध करती है। रसायनज्ञ उन अयस्कों को आग में फेंक देता है जिनमें सभी प्रकार का मैल होता है।

15) बेकार धातु की खपत लगती है; लेकिन सोने का एक दाना नहीं खोया।

16) ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसके पास ऐसा सोना न हो जो नष्ट न किया जा सके। मनुष्यों के सब बुरे काम आग में भस्म हो जाते हैं; सोना बच जाता है।

दृष्टांत: वृक्ष की वृद्धि

17) मैं दृष्टान्तों में आत्मा के आंतरिक राज्य की व्याख्या कर सकता हूँ:

18) मनुष्य का पुत्र निकलकर सत्य के बीज बिखेरता है; परमेश्वर मिट्टी को अच्छी तरह सींचता है; बीज जीवन दिखाते हैं और बढ़ते हैं; पहले ब्लेड, और फिर डंठल, और फिर कान, और फिर पूरा गेहूं कान में आता है।

19) कटनी आती है, और देखो, काटनेवाले पके हुए पूलों को यहोवा के पेटी में ले जाते हैं।

20) फिर, आत्मा का यह राज्य एक छोटे से बीज की तरह है जिसे मनुष्य उपजाऊ मिट्टी में लगा सकते हैं।

21) (इनमें से एक हजार बीज शायद ही एक शेकेल के वजन के होंगे।)

22) छोटा बीज बढ़ने लगता है; यह पृथ्वी के माध्यम से धक्का देता है, और विकास के वर्षों के बाद यह एक शक्तिशाली पेड़ है और पक्षी इसके पत्तेदार बोवरों में आराम करते हैं और लोग आश्रय पाते हैं 'धूप और तूफ़ान से इसकी आश्रय वाली शाखाओं के नीचे।

दृष्टान्त: खमीर

23) फिर, सच्चाई, आत्मा के राज्य की आत्मा, खमीर की एक गेंद की तरह है, जिसे एक महिला ने आटे में छिपा दिया, तीन, आटे में, और थोड़ी देर में सब कुछ खमीर हो गया।

दृष्टांत: छिपा खजाना

24) फिर से, आत्मा का राज्य एक खेत में छिपे हुए खजाने की तरह है जिसे किसी ने पाया है, और तुरंत अपना रास्ता जाता है और अपना सब कुछ बेच देता है और खेत को खरीद लेता है।

25) जब यीशु ने ऐसा कहा तो वह अकेले ही पास के एक पहाड़ी दर्रे में प्रार्थना करने गया।

अध्याय 117

माचेरस में एक शाही दावत का आयोजन किया जाता है। जॉन, अग्रदूत, का सिर कलम कर दिया जाता है। उसका शरीर हेब्रोन में दफनाया गया है। उनके शिष्य विलाप करते हैं। क्रिस्टीन रात में समुद्र पार करती हैं। यीशु एक प्रचंड तूफान को शान्त करता है।

कड़वे सागर के पूर्व में गढ़वाले माचेरस में टेट्रार्क के जन्मदिन के सम्मान में एक शाही दावत का आयोजन किया गया था।

2) चतुष्कोणीय, हेरोदेस, और उसकी पत्नी, हेरोदियास, सलोमी समेत वहां थे; और राज-दरबार के सब पुरूष और स्त्रियां वहां थे।

3) और जब पर्ब्ब हो गया, तो देखो, सब अतिथि और हाकिम दाखमधु के नशे में धुत थे; वे अपने खेल में बच्चों की तरह नाचते और उछलते थे।

4) हेरोदियास की बेटी सलोमी अंदर आई और राजा के सामने नृत्य करने लगी। उसके रूप की सुंदरता, उसकी कृपा और जीतने के तरीकों ने मूर्ख हेरोदेस को मंत्रमुग्ध कर दिया, फिर शराब के नशे में।

5) उस ने युवती को अपने पास बुला कर कहा, हे सलोमी, तू ने मेरा हृदय जीत लिया है, और तू मांग ले, और जो कुछ तू चाहे, मैं तुझे दूंगा।

6) युवती बचकानी उल्लास में दौड़ी और उसने अपनी माँ को वही बताया जो शासक ने कहा था।

7) उसकी माता ने कहा, लौटकर कह, कि यूहन्ना का सिर जो अग्रदूत है, मुझे दे।

8) युवती ने दौड़कर शासक को बताया कि वह क्या चाहती है।

9) तब हेरोदेस ने अपने विश्वासपात्र जल्लाद को बुलाकर उस से कहा, गुम्मट पर जा, और रखवाले से कह, कि तू मेरे अधिकार से यूहन्ना नाम के बन्धुए को मार डालने को आता है।

10) वह मनुष्य गया, और थोड़ी ही देर में लौट आया, और एक थाली में यूहन्ना का निर्जीव सिर उठा हुआ था, और हेरोदेस ने उसे अतिथियों के साम्हने युवती को चढ़ाया।

11) युवती अलग खड़ी रही; जब उसने खूनी उपहार देखा, तो उसकी मासूमियत क्रोधित हो गई, और वह उसे नहीं छूती थी।

12) उसकी माता अपराध में डूबी हुई और कठोर हो गई थी, और सिर उठाकर अतिथियों के साम्हने कहा,

13) हर उस व्यक्ति का भाग्य है जो शासन करने वाले के कार्यों का तिरस्कार, या आलोचना करने का साहस करता है।

14) नशे में धुत खरगोश ने उस भयानक दृश्य को पराये आनंद से देखा।

15) सिर को वापस मीनार पर ले जाया गया। शरीर पवित्र लोगों को दिया गया था जो यूहन्ना के मित्र थे; उन्होंने उसे एक कब्रगाह में रखा और ले गए।

16) वे उसे यरदन के पास ले गए, जिसे वे उस पार पार कर गए, जहां यूहन्ना ने पहिले वचन का प्रचार किया था;

17) और वे यहूदिया की पहाड़ियों के दर्रे से होते हुए उसे ले गए।

18) वे हेब्रोन के पास पवित्र भूमि में पहुंचे, जहां अग्रदूत के माता-पिता के शव उनकी कब्रों में रखे गए थे;

19) और वहां उन्होंने उसे मिट्टी दी; और फिर वे अपने रास्ते चले गए।

20) अब जब यह समाचार गलील में पहुँचा कि यूहन्ना मर गया है, तो लोग मृतकों के गीत गाने के लिए एकत्रित हुए।

21) और यीशु और परदेशी स्वामी और बारहोंने जहाज पर चढ़कर गलील के समुद्र को पार किया।

22) एक शास्त्री, जो यूहन्ना का विश्वासयोग्य मित्र था, समुद्र के किनारे खड़ा था; उस ने यीशु को पुकारा, और उस ने कहा, हे रब्बोनी, जहां तू जाता है वहां मुझे चलने दे।

23) और यीशु ने कहा, तुम बुरे लोगों से सुरक्षित वापसी चाहते हो। मेरे पास तुम्हारे जीवन की कोई सुरक्षा नहीं है;

24) क्योंकि दुष्ट लोग मेरे प्राण ले लेंगे जैसे उन्होंने यूहन्ना को ले लिया है।

25) पृथ्वी की लोमड़ियों के पास सुरक्षित ठिकाने हैं; छिपी हुई चट्टानों के बीच पक्षियों के बसेरे सुरक्षित हैं, परन्तु मेरे पास ऐसा कोई स्थान नहीं, जहां मैं सिर धरकर निश्चिंत रह सकूं।

26) तब एक प्रेरित ने कहा, हे प्रभु, मुझे यहां थोड़ी देर रहने की आज्ञा दे, कि मैं अपने पिता को, जो मर गया है, ले जाकर कब्र में रखूं।

27) परन्तु यीशु ने कहा, मरे हुए मरनेवालों की सुधि ले सकते हैं; जो जीवित हैं उनके लिए जीवित प्रतीक्षा करें; आओ मेरे पीछे चलो।

28) शाम आ गई; तीन नावों को समुद्र में उतारा गया, और यीशु ने सबसे आगे की नाव पर विश्राम किया; वह सो गया।

29) एक तूफान आया; नावों को खिलौनों की तरह समुद्र पर उछाला गया।

30) पानी डेक को बह गया; साहसी नाविक डरते थे कि कहीं सब खो न जाए।

31) और थोमा ने स्वामी को सोए हुए पाया; उसने पुकारा, और यीशु जाग उठा।

32) और थोमा ने कहा, तू आँधी देख! क्या तुम्हें हमारी कोई परवाह नहीं है? नावें नीचे जा रही हैं।

33) और यीशु खड़ा था; उसने हाथ उठाया; वह हवाओं और लहरों की आत्माओं से बात करता था जैसे लोग पुरुषों के साथ बात करते थे।

34) और, देखो, हवाएं नहीं चलीं; लहरें थरथरा उठीं और उसके पांवों को चूमा; समुद्र शांत था।

35) फिर उस ने कहा, हे विश्वासियों, तुम्हारा विश्वास कहां है? क्योंकि तू बोल सकता है, और वायु और लहरें सुनेंगी, और मानेंगी।

36) और चेले चकित हुए। उन्हों ने कहा, यह कौन मनुष्य है, जो आन्धी और लहरें भी उसकी बात मानती हैं?

अध्याय 118

गदरा में क्रिस्टीन हैं। यीशु ने एक मनुष्य में से अशुद्ध आत्माओं का एक जत्था निकाल दिया। आत्माएं शातिर जानवरों में चली जाती हैं जो समुद्र में दौड़ते हैं और डूब जाते हैं। लोग डर में हैं और यीशु से अपना तट छोड़ने का अनुरोध करते हैं। वह अपने शिष्यों के साथ कफरनहूम लौट जाता है।

सुबह आई; क्रिस्टीन गेराकेन्स के देश में उतरे।

2) वे पेराकानियों के मुख्य नगर गदारा को गए, और यहां कुछ दिनों तक रुके रहे और उपदेश देते रहे।

3) अब, किंवदंतियों का मानना है कि गदरा मृतकों के लिए पवित्र है, और सभी पहाड़ियों को पवित्र भूमि के रूप में जाना जाता है।

4) ये चारों ओर के सभी क्षेत्रों के कब्रिस्तान हैं; पहाड़ियाँ कब्रों से भरी हुई हैं; और गलील के बहुत से मरे हुओं की यहां कब्र बनाई गई है।

5) अब, हाल ही में मरे हुओं की आत्माएं, जो ऊंचे स्तरों पर नहीं उठ सकतीं, उन कब्रों के आसपास रहती हैं, जो उनके नश्वर घरों के मांस और हड्डियों को रखती हैं।

6) वे कभी-कभी जीवितों पर अधिकार कर लेते हैं, जिन्हें वे सौ तरीकों से प्रताड़ित करते हैं।

7) और पूरे गदरा में लोगों का जुनून सवार था, और कोई भी इतना मजबूत नहीं था कि राहत पहुंचा सके।

8) कि वे इन छिपे हुए शत्रुओं से मिलें और उन दुष्टों को निकालने का तरीका जानें, जिन्हें स्वामी ने विदेशी स्वामियों और बारहों को कब्रों में ले लिया था।

9) और जैसे ही वे फाटकों के पास पहुंचे, वे एक पागल आदमी से मिले। इस आदमी में अशुद्ध लोगों की एक सेना थी, और उन्होंने उसे मजबूत किया था;

10) और कोई उसे बांध नहीं सकता था, नहीं, जंजीरों से नहीं बांध सकता था; क्योंकि वह कठोर से कठोर जंजीर तोड़कर अपने मार्ग पर चल सकता था।

11) अब, अशुद्ध आत्माएं प्रकाश में नहीं रह सकतीं; वे अंधेरे में मजे करते हैं।

12) जब यीशु आया तो वह जीवन का प्रकाश लाया, और सभी बुरी आत्माएं परेशान हो गईं।

13) उस पुरूष में सेना के प्रधान ने पुकार कर कहा, हे यीशु, हे इम्मानुएल, हम बिनती करते हैं, कि तू हमें गहिरे स्थान तक न पहुंचाए। हमारे समय से पहले हमें पीड़ा न दें।

14) और यीशु ने कहा, तुम्हारा नंबर और तुम्हारा नाम क्या है?

15) दुष्टात्मा ने कहा, हमारा नाम सेना है, और हमारी गिनती पशु की गिनती है।

16) और यीशु बोला; और उस ने पहाड़ोंको थरथराने वाले शब्द से कहा, निकल आ; इस आदमी के पास और नहीं।

17) अब, सब पहाड़ियाँ अशुद्ध पशुओं से भर गई थीं, जो चराते और ले जाते थे और देश के लोगों में महामारी फैलाते थे।

18) और जब दुष्टात्माएं बिनती करने लगीं, कि उन्हें घर के बाहर न निकाला जाए, तब स्वामी ने कहा,

19) आगे बढ़कर अशुद्ध चौपाइयों को अपने अधिकार में कर लो।

20) और वे, और कब्रोंकी सब दुष्टात्माएं निकलकर मरी फैलानेवालोंके अधिकार में आ गईं,

21) जो जंगली, क्रोध से भरे हुए, सीढ़ियों से नीचे समुद्र में भाग गए, और सभी डूब गए।

22) और सारा देश रोग से मुक्त हो गया, और अशुद्ध आत्माएं फिर न आईं।

23) लेकिन जब लोगों ने यीशु के शक्तिशाली कामों को देखा तो वे डर गए। उन्होंने कहा,

24) यदि वह देश को प्लेग से मुक्त कर सकता है, और अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकाल सकता है, तो वह इतनी उत्कृष्ट शक्ति वाला व्यक्ति है कि वह हमारी भूमि को अपनी इच्छा से तबाह कर सकता है।

25) और फिर उन्होंने आकर प्रार्थना की कि वह गदरा में न रहे।

26) और यीशु वहाँ अधिक देर न रुका, और अन्य स्वामियों और बारहों के साथ नावों पर सवार होकर चला गया।

27) वह पुरूष जो अशुद्ध सेना से छुड़ाया गया था, किनारे पर खड़ा हुआ, और कहने लगा, हे प्रभु, मुझे तेरे संग जाने दे।

28) परन्तु यीशु ने कहा, यह ठीक नहीं है; अपके घर जाकर समाचार सुनाओ, कि मनुष्य जान लें कि जब मनुष्य परमेश्वर से मेल खाता है, तब वह क्या कर सकता है।

29) तब उस व्यक्ति ने सारे दिकापुलिस में जाकर यह समाचार सुनाया।

30) क्रिस्टीन जहाज से रवाना हुए, समुद्र को फिर से पार किया और कफरनहूम में फिर से आए।

अध्याय 119

कफरनहूम के लोग यीशु का स्वागत करते हैं। मैथ्यू एक दावत देता है। फरीसियों ने यीशु को पापियों के साथ खाने के लिए फटकार लगाई। वह उन्हें बताता है कि उसे पापियों को बचाने के लिए भेजा गया है। वह उपवास और अच्छे और बुरे के दर्शन पर सबक देता है।

जल्द ही यह खबर पूरे देश में फैल गई कि यीशु घर पर था और फिर लोग उसका स्वागत करने के लिए उमड़ पड़े।

2) और मैथ्यू, बारह में से एक, धनी व्यक्ति, जिसका घर कफरनहूम में था, ने एक शानदार दावत दी, और यीशु और विदेशी स्वामी और बारह, और सभी प्रकार के लोग, अतिथि थे।

3) और जब फरीसियों ने देखा, कि यीशु चुंगी लेनेवालों और बदनाम लोगों के साथ बैठकर खाता है, तो उन्होंने कहा,

4) शर्म के लिए! यह आदमी जो परमेश्वर का आदमी होने का दावा करता है, चुंगी लेने वालों और वेश्याओं के साथ और पुरुषों के आम झुंड के साथ मेल खाता है। शर्म की बात है!

5) यीशु ने उनके विचार जान कर कहा, जो चंगे हैं, वे चंगे नहीं हो सकते; शुद्ध को बचाने की जरूरत नहीं है।

6) वे जो स्वस्थ हैं वे संपूर्ण हैं; जो पवित्र हैं वे बच जाते हैं।

7) वे जो न्याय से प्रीति रखते हैं और सही काम करते हैं, उन्हें पश्चाताप करने की ज़रूरत नहीं है; मैं उनके पास नहीं आया, परन्तु पापी के पास आया हूं।

8) यूहन्ना के चेलों का एक दल, जिन्होंने यह सुना था कि यूहन्ना मर गया है, अपने मृतकों के लिए बिल्ला पहने हुए थे;

9) उपवास कर रहे थे और मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे, कि फरीसियों ने यह मानकर यीशु के पास आकर कहा,

10) यूहन्ना के अनुयायी और आपके शिष्य उपवास क्यों नहीं करते?

11) यीशु ने कहा, देखो, तुम व्यवस्था के स्वामी हो; तुम्हें जानना चाहिए; कदाचित तू इन मनुष्यों को अपना ज्ञान प्रगट करे।

12) व्रत से क्या लाभ होते हैं? फरीसी गूंगे थे; उन्होंने उत्तर नहीं दिया।

13) तब यीशु ने कहा, मनुष्य की शक्ति इस बात पर निर्भर करती है कि वे क्या खाते-पीते हैं।

14) जब प्राण शक्ति कमजोर होती है तो क्या आत्मिक जीवन अधिक शक्तिशाली होता है? क्या भूख से मरकर संतत्व प्राप्त होता है, आत्म-लगाया जाता है?

15) पेटू ईश्वर की दृष्टि में पापी है, और वह संत नहीं है जो ईश्वर की शक्ति के साधनों का उपयोग करने के लिए खुद को कमजोर और जीवन के भारी कार्यों के लिए अयोग्य बनाता है।

16) देखो, यूहन्ना मर चुका है, और उसके समर्पित अनुयायी उनके शोक में उपवास कर रहे हैं।

17) उसके लिए उनका प्यार उन्हें सम्मान दिखाने के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि उन्होंने सोचा है, और सिखाया गया है कि मृतकों की स्मृति को हल्के में लेना पाप है।

18) उनके लिए यह पाप है, और यह अच्छा है कि वे उपवास करें।

19) जब मनुष्य अपने विवेक की अवहेलना करते हैं और जो कुछ वे कहते हैं उसे नहीं सुनते हैं, तो मन दुखी होता है, और वे जीवन के कार्य के लिए अयोग्य हो जाते हैं; और इस प्रकार वे पाप करते हैं।

20) विवेक सिखाया जा सकता है। एक आदमी विवेक से वह कर सकता है जो दूसरा नहीं कर सकता।

21) जो मेरे लिए पाप है, वह तुम्हारे लिए पाप न हो। जिस स्थान पर आप जीवन के मार्ग पर कब्जा करते हैं वह निर्धारित करता है कि पाप क्या है।

22) अच्छाई का कोई अपरिवर्तनीय नियम नहीं है; क्योंकि भले और बुरे दोनों का अन्य बातों से न्याय किया जाता है।

23) एक आदमी उपवास कर सकता है और उसके दिल की गहरी ईमानदारी का आशीर्वाद है।

24) कोई दूसरा व्यक्ति उपवास कर सकता है और इस तरह के कार्य की बेवफाई में लगाया गया शापित है।

25) आप हर आदमी के रूप में फिट होने के लिए बिस्तर नहीं बना सकते। यदि आप अपने आप को फिट करने के लिए बिस्तर बना सकते हैं तो आपने अच्छा किया है।

26) मेरे पीछे चलनेवाले इन लोगों को उपवास का सहारा क्यों लेना चाहिए, या ऐसी किसी भी चीज़ का सहारा क्यों लेना चाहिए जिससे उनकी शक्ति क्षीण हो जाए? उन्हें दौड़ की सेवा के लिए यह सब चाहिए।

27) वह समय आएगा जब परमेश्वर तुम्हें अपना मार्ग देगा, और तुम मेरे साथ वही करोगे जो हेरोदेस ने यूहन्ना के साथ किया था;

28) और उस दुखद घड़ी की भयावहता में ये लोग उपवास करेंगे।

29) जिनके सुनने के कान हैं वे सुन सकते हैं; जिनके पास महसूस करने के लिए दिल हैं वे समझ सकते हैं।

अध्याय 120

नीकुदेमुस दावत में है। वह यीशु से पूछता है, क्या यहूदी सेवा में सुधार करके क्रिस्टीन धर्म को अधिक सफलतापूर्वक पेश नहीं किया जा सकता है? यीशु नकारात्मक में उत्तर देता है और अपने कारण बताता है। यीशु एक महिला को रक्तस्राव से चंगा करता है। याईर की बेटी को चंगा करता है। गायब हो जाता है जब लोग उसकी पूजा करेंगे।

अब, नीकुदेमुस, जो एक बार रात में यीशु के पास जीवन का मार्ग जानने के लिए आया था, मेहमानों में से एक था।

2) और आगे खड़े होकर उसने कहा, हे रब्बोनी, यह सच है कि यहूदी कानून और यहूदी प्रथाएं सहमत नहीं हैं।

3) पौरोहित्य में सुधार की आवश्यकता है; शासकों को अधिक दयालु और दयालु बनना चाहिए; वकीलों को अधिक न्यायपूर्ण बनना चाहिए; आम लोगों को इस तरह का बोझ नहीं उठाना चाहिए।

4) लेकिन क्या हम इन सुधारों को हासिल नहीं कर सकते थे और यहूदियों की सेवा को नष्ट नहीं कर सकते थे?

5) क्या आप अपने पराक्रम के काम को फरीसी और शास्त्री के काम के साथ नहीं मिला सकते थे? हो सकता है कि पौरोहित्य आपके दिव्य दर्शन के लिए लाभकारी न हो?

6) यीशु ने कहा, नया दाखरस प्राचीन मशकों में नहीं डाला जा सकता, क्योंकि जब वह शुद्ध होता है, तो वह फैलता है; प्राचीन बोतलें तनाव को सहन नहीं कर सकतीं; वे फट गए, और सारा दाखरस नष्ट हो गया।

7) पुरुष बिना पहने हुए कपड़े के एक टुकड़े के साथ एक घिसे-पिटे वस्त्र की मरम्मत नहीं करते हैं, जो कपड़े के अनुरूप नहीं हो सकता है, उम्र के साथ कमजोर है, और फिर एक बड़ा किराया दिखाई देता है।

8) पुरानी शराब को प्राचीन खाल में संरक्षित किया जा सकता है; लेकिन नई शराब नई बोतलों की मांग करती है।

9) यह आत्मा-सत्य मैं इस पीढ़ी के लिए नया लाया हूं, और यदि हम इसे यहूदी रूपों की प्राचीन खाल में डाल दें, तो यह सब खो जाएगा।

10) इसका विस्तार होना चाहिए; पुरानी बोतलें नहीं निकल सकतीं और वे फट जातीं।

11) मसीह के राज्य को निहारना! वह स्वयं परमेश्वर के समान पुराना है, और फिर भी वह भोर के सूर्य के समान नया है; इसमें केवल परमेश्वर का सत्य समाहित हो सकता है।

12) जब वह आराधनालय का सरदार कह रहा था, तो याईर नाम लेकर आया, और यीशु के पांवों को दण्डवत् करके कहा,

13) मेरे स्वामी, मेरी प्रार्थना सुन! मेरा बच्चा बहुत बीमार है, मुझे डर है कि वह मर जाएगी; परन्तु मैं यह जानता हूं, कि यदि तू आकर वचन कहे, तो मेरा बालक जीवित रहेगा।

14) (वह इकलौती संतान थी, बारह वर्ष की एक लड़की।)

15) और यीशु ने देर नहीं की; वह उस मनुष्य के संग निकला, और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिये।

16) और जब वे जाते थे, तो एक स्त्री, जो बहुत वर्षों से लहू से पीड़ित थी, दूर दूर तक वैद्यों की परीक्षा का विषय रही, और सब ने कहा, कि वह जीवित नहीं रह सकती, वह अपक्की खाट से उठी, और मार्ग में निकल गई, यीशु गुजरा।

17) उस ने मन ही मन कहा, यदि मैं उसके वस्त्र को छू लूं, तो मैं जानती हूं, कि मैं ठीक हो जाऊंगी।

18) उसने उसे छुआ, और उसका खून बहना बंद हो गया, और वह ठीक हो गई।

19) और यीशु ने महसूस किया कि उसके पास से चंगाई की शक्ति चली गई है, और उसने भीड़ से बात करते हुए कहा,

20) मेरे कोट को किसने छुआ था?

21) पतरस ने कहा, कोई नहीं बता सकता; भीड़ तुम पर दबाव डाल रही है; हो सकता है कि कई लोगों ने आपके कोट को छुआ हो।

22) परन्तु यीशु ने कहा, विश्वास में किसी ने चंगाई के विचार से मेरे वस्त्र को छुआ है, क्योंकि मुझ में से चंगाई के गुण निकले हैं।

23) और जब वह स्त्री जान गई कि जो कुछ वह करती है, वह सब जानता है, तो वह आई और यीशु के पांवों के पास घुटने टेककर सब बता दी।

24) यीशु ने कहा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है, कुशल से अपना मार्ग चला।

25) जब वह यह कह रहा था, कि याईर के घर से एक दास आया, और कहने लगा, हे मेरे स्वामी याईर, यहोवा के आने की चिन्ता न कर; आपका बच्चा मर चुका है।

26) परन्तु यीशु ने कहा, हे विश्वासी याईर, इस कठिन घड़ी में अपने विश्वास को डगमगाने न देना।

27) दास ने क्या कहा? बच्चा मर चुका है? लो, मृत्यु क्या है?

28) यह मांस के घर से आत्मा का जाना है।

29) मनुष्य आत्मा और उसके घर का स्वामी है। जब मनुष्य संशय और भय से उठ गया है, तो वह खाली घर को साफ कर सकता है और किरायेदार को फिर से वापस ला सकता है।

30) तब वह पतरस, याकूब और यूहन्ना, याईर और बालक की माता को साथ लेकर मरे हुओं की कोठरी में गया।

31) और जब भीड़ के साम्हने द्वार बन्द किए गए, तब उस ने एक ऐसी बात कही, जो जीव समझ सकते हैं, और उस ने युवती का हाथ पकड़कर कहा,

32) तलिथ कमी, बच्चे, उठो! युवती की आत्मा लौट आई और उसने उठकर भोजन मांगा।

33) और नगर के सब लोग चकित हुए, और बहुत से लोग यीशु को परमेश्वर के रूप में पूजते थे।

34) लेकिन, रात के प्रेत की तरह, वह गायब हो गया और अपने रास्ते चला गया।

अध्याय 121

क्रिस्टीन नासरत में हैं। मरियम स्तुति का एक क्रिस्टीन गीत गाती है। यीशु आराधनालय में पढ़ाते हैं। वह एक गूंगे आदमी को ठीक करता है जो जुनूनी है। लोग उस पर विश्वास नहीं करते हैं। फरीसी उसे बील्ज़ेबूब का औजार कहते हैं। क्रिस्टीन काना जाते हैं।

नासरत में आईटी एक पर्व दिवस था। वहाँ के लोग किसी महान आयोजन को मनाने के लिए एकमत होकर मिले थे।

2) और यीशु और परदेशी स्वामी और बारह, और प्रभु की माता मरियम और मरियम वहां थे।

3) और जब लोग नगर के बड़े हॉल में इकट्ठे हुए, तो सुंदर गायक, मरियम, खड़ी हुई और स्तुति का एक गीत गाया।

4) परन्तु सारी भीड़ में से कुछ ही लोग जानते थे कि गायक कौन है; लेकिन तुरंत ही उसने सबका दिल जीत लिया।

5) वह बहुत दिन तक इस्राएल के गीत गाती रही, और फिर चली गई।

6) सब्त का दिन आया और यीशु आराधनालय में गया। उसने भजन संहिता की पुस्तक ली और पढ़ी:

7) क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है, घमण्डियों का आदर नहीं करता और झूठ से मुंह नहीं मोड़ता।

8) हे मेरे परमेश्वर यहोवा, जो काम तू ने हमारे लिथे किए हैं वे अद्भुत हैं; और तेरे विचार हमारे लिये बहुत हैं; हम उन सभी की गिनती नहीं कर सकते,

9) तू न तो बलि, और न लोहू का चढ़ावा बुलाना; होमबलि और पापबलि और बलिदान तू नहीं चाहता;

10) और देख, मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूं, हे परमेश्वर, तेरी व्यवस्या मेरे मन में है,

11) और मैंने भीड़ की भीड़ को धार्मिकता और शांति का वचन सुनाया है; मैं ने अपने परमेश्वर की युक्ति को पूर्ण रूप से घोषित कर दिया है।

12) मैं ने तेरे धर्म को अपने हृदय में नहीं छिपाया; मैंने तेरी सच्चाई और अनुग्रह की घोषणा की है।

13) मैं ने तेरी करूणा और सच्चाई को मनुष्योंसे दूर नहीं रखा; मैंने उन्हें भीड़ के सामने घोषित किया है।

14) हे यहोवा, मेरे होठों को चौड़ा कर कि मैं तेरी स्तुति करूं; मैं न तो लोहू का बलिदान, और न पाप के लिथे होमबलि लाता हूं।

15) हे परमेश्वर, जो बलिदान मैं तेरे लिये लाऊंगा, वे जीवन में पवित्रता, पछताए हुए मन, विश्वास और प्रेम से परिपूर्ण आत्मा हैं, और ये तुझे प्राप्त होंगे।

16) इस प्रकार पढ़कर उस ने पुस्तक रखने वाले को वह पुस्तक लौटा दी, और कहा,

17) पृथ्वी के इन छोरों पर परमेश्वर के ये संदेश आए हैं।

18) हमारे लोगों ने बलिदानों को ऊंचा किया है और दया, न्याय और पुरुषों के अधिकारों की उपेक्षा की है।

19) हे फरीसियों, हे याजकों, हे शास्त्रियों, तुम्हारा परमेश्वर खून से लथपथ है; परमेश्वर तेरी प्रार्थना नहीं सुनता; तुम अपने जलते हुए पीड़ितों के सामने खड़े हो; लेकिन तुम व्यर्थ खड़े हो।

20) तुम व्यवस्था की चितौनियों की ओर फिरो; सुधार करो और परमेश्वर की ओर फिरो, और तुम जीवित रहोगे।

21) तेरी वेदियाँ फिर निर्दोषता के धुएँ से शापित न हों।

22) टूटे और पछताए हुए मन को बलिदान के रूप में परमेश्वर के पास ले आओ।

23) जो बोझ तू ने लगाया है, उसे अपके संगी मनुष्यों पर से उठा।

24) और यदि तू न माने, और अपके बुरे मार्गोंसे न फिरे, तो देख, परमेश्वर इस जाति को शाप देगा।

25) यह कहकर वह एक ओर खड़ा हो गया, और सब लोग चकित होकर कहने लगे,

26) इस आदमी को अपना सारा ज्ञान और उसकी शक्ति कहाँ से मिली? यह सब ज्ञान कहाँ से आया?

27) क्या यह मरियम का पुत्र नहीं है, जिसका घर मार्मियन वे पर है?

28) क्या उसके भाई, यहूदा और याकूब और शमौन, हमारे सम्मानित लोगों में नहीं जाने जाते हैं? क्या उसकी बहनें यहाँ हमारे साथ नहीं हैं?

29) लेकिन वे सब उसके द्वारा कही गई बातों से आहत थे।

30) यीशु ने कहा, भविष्यद्वक्ता का अपने देश में आदर नहीं होता; वह अपने रिश्तेदारों के बीच अच्छी तरह से प्राप्त नहीं होता है; उसके शत्रु उसके घर में हैं।

31) और यीशु ने नासरत में बहुत शक्तिशाली काम नहीं किए, क्योंकि लोगों को उस पर विश्वास नहीं था। उन्होंने ज्यादा देर नहीं की।

32) परन्तु जब वह वहां से चला तो दो अन्धे उसके पीछे हो लिये और चिल्लाने लगे, हे दाऊद की सन्तान, सुन! हे प्रभु, दया कर, और हमारी आंखें खोल कि हम देख सकें।

33) यीशु ने कहा, क्या तुम विश्वास करते हो कि मैं तुम्हारी आंखें खोलकर तुम्हें दिखा सकता हूं?

34) उन्होंने कहा, हां, प्रभु, हम जानते हैं कि यदि आप वचन बोलते हैं तो हम देख सकते हैं।

35) और यीशु ने उनकी आंखोंको छूकर वचन सुनाया; उस ने कहा, तेरे विश्वास के अनुसार ऐसा ही होगा।

36) और वे आशीष थे; उन्होंने आंखें खोलकर देखा।

37) यीशु ने कहा, यह बात किसी से न कहना।

38) परन्तु उन्होंने निकलकर सारे देश में समाचार सुनाया।

39) जब यीशु मार्ग में चल रहा था, तो एक मनुष्य जो पागल और गूंगा था, उसके पास लाया गया।

40) और यीशु ने वचन बोला; उस मनुष्य में से अशुद्ध आत्मा निकली; उसकी जीभ ढीली हो गई थी; उसने बोला; उसने कहा, परमेश्वर की स्तुति करो।

41) लोग चकित हुए; उन्होंने कहा, यह एक शक्तिशाली काम है; हमने ऐसा पहले कभी नहीं देखा।

42) फरीसी भी बहुत चकित हुए; परन्तु वे चिल्लाकर कहने लगे,

43) हे इस्राएल के लोगों, चौकस रहो; यह यीशु Beelzebub का एक उपकरण है; वह बीमारों को चंगा करता है, और शैतान के नाम से आत्माओं को निकालता है।

44) परन्तु यीशु ने उत्तर नहीं दिया; वह अपने रास्ते चला गया।

45) और परदेशी स्वामियोंऔर बारहोंके संग उस नगर को गया, जहां उस ने जल को दाखमधु बना दिया था, और कुछ दिन वहीं रहा।

अध्याय 122

क्रिस्टीन सात दिन प्रार्थना में बिताते हैं। यीशु ने बारहों को अपना कार्यभार दिया और उन्हें कफरनहूम में उनसे मिलने के निर्देश के साथ उनकी प्रेरितिक सेवकाई पर भेज दिया।

क्रिस्टीन ने सात दिन तक मौन में प्रार्थना की; तब यीशु ने बारहों को एक ओर बुलाकर कहा,

2) देखो, हमारे चारोंओर चारों ओर भीड़ उमड़ पड़ी है; लोग हैरान हैं; वे ऐसी भेड़ों की तरह इधर-उधर भटकते हैं, जिनकी कोई तह नहीं है।

3) उन्हें एक चरवाहे की देखभाल की आवश्यकता है; वे चाहते हैं कि एक प्रेमपूर्ण हाथ उन्हें प्रकाश की ओर ले जाए।

4) अनाज पका हुआ है; फसल भरपूर है, लेकिन हार्वेस्टर कम हैं।

5) समय आ गया है, और तुम गलील के सब गाँवों और नगरों में अकेले जाकर शिक्षा देना और चंगा करना।

6) और फिर उसने बारह पर सांस ली और कहा, पवित्र सांस ले लो।

7) तब उस ने उन में से प्रत्येक को सामर्थ का वचन दिया, और कहा, इस सर्वव्यापक वचन के द्वारा तुम आत्माओं को निकालोगे, और बीमारों को चंगा करोगे, और मरे हुओं को फिर से जीवित करोगे।

8) और न अश्शूरियोंके मार्ग में चलना, और न यूनानी का; शोमरोन में न जाना; केवल अपने बिखरे हुए गोत्रों के भाइयों के पास जाओ।

9) और जैसे ही तुम प्रचार करते हो, मसीह का राज्य आ गया है।

10) तू ने बहुतायत से प्राप्त किया है, और स्वतंत्र रूप से देना।

11) परन्तु तुम को विश्वास से जाना होगा; अपने आप को झुकने के लिए कोई बैसाखी प्रदान न करें।

12) अपना सारा सोना-चाँदी कंगालों को दे दो; दो कोट न लें, न ही अतिरिक्त जूते लें; बस अपनी छड़ी ले लो।

13) तुम परमेश्वर के पति हो, और वह तुम्हें कभी भी अभाव में नहीं सहेगा।

14) तुम सब स्थानों में जाकर विश्वासियों को ढूंढ़ते हो; जब तक तुम वहां से न चले जाओ, तब तक उनके संग रहे।

15) तुम मेरे लिए जाओ; तुम मेरे लिए अभिनय करो। वे जो आपका स्वागत और स्वागत करते हैं, वे मुझे प्राप्त करते हैं और स्वागत करते हैं;

16) और जो तेरे साम्हने अपने द्वार बन्द रखते हैं, वे मेरा स्वागत करने से इन्कार करते हैं।

17) यदि किसी नगर में तुम पर कृपा न हो, तो किसी बुरे विचार को न छोड़ना; विरोध मत करो।

18) किसी भी प्रकार का बुरा विचार तुम्हें हानि पहुँचाएगा; आपकी शक्ति को नष्ट कर देगा।

19) जब तुम पर अनुग्रह न हो, तो चले जाओ, क्योंकि ज्योति के चाहनेवालों की भीड़ बहुत है।

20) देख, मैं तुझे भेड़-बकरियोंके बीच भेड़-बकरियोंके बीच भेजता हूं; और तुम सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरोंकी नाईं निर्दोष ठहरना।

21) अपनी सारी भाषा में चौकस रहना, क्योंकि फरीसी और शास्त्री जो कुछ तुम कहते हो, उस में तुम्हें गिरफ्तार करने का कारण ढूंढ़ोगे।

22) और वे निश्चित रूप से आपको अदालत में लाने के लिए झूठे आरोपों से एक रास्ता खोज लेंगे।

23) और न्यायाधीश घोषित करेंगे कि आप किसी अपराध के दोषी हैं, और आपको कोड़े मारने और जेल की कोठरी में सजा देंगे।

24) परन्तु जब तुम न्यायी के साम्हने खड़े हो, तब मत डरो; कार्य करने के तरीके, बोलने के शब्दों के बारे में परेशान न हों।

25) उस घड़ी में पवित्र श्वास आपका मार्गदर्शन करेगा और जो वचन आप बोलेंगे, वह देगा।

26) इसमें से पूर्ण आश्वस्त रहें; बोलने वाले तुम नहीं हो; यह पवित्र सांस है जो शब्द देती है और होठों को हिलाती है।

27) जिस सुसमाचार का तुम प्रचार करते हो, वह शांति नहीं लाएगा, परन्तु यह लोगों को क्रोधित करेगा।

28) शारीरिक मनुष्य सत्य से घृणा करता है, और वह कटनी के समय से पहले कोमल पौधे को कुचलने के लिए अपनी जान दे देता।

29) और यह उन घरों में भ्रम पैदा करेगा जो स्थिर शांति के घर थे।

30) और भाई भाई को मार डालेगा; पिता खड़े होकर देखेगा कि लोग उसके बच्चे को मार डालते हैं; और बालक आंगनों में सर के विरुद्ध गवाही देगा, और अपक्की माता को मरते हुए आनन्द से देखेगा।

31) और केवल इसलिए कि तुम मसीह का नाम लेते हो, लोग तुमसे घृणा करेंगे।

32) तीन बार धन्य है वह मनुष्य जो इस आनेवाले क्रोध के दिन में विश्वासयोग्य रहेगा!

33) अब जाओ; जब तुम एक जगह सताए जाते हो, तो दूसरे स्थान की तलाश में जाओ।

34) और जब तेरा कोई बड़ा शत्रु तुझ से मिल जाए, तो देख, मनुष्य का पुत्र तेरे द्वार पर है, और वह बोल सकता है, और आकाश की सारी सेनाएं तेरे साम्हने खड़ी होंगी।

35) लेकिन अपने वर्तमान जीवन को बहुत सम्मान में न रखें।

36) वह समय आएगा जब मनुष्य मेरे प्राण ले लेंगे; आपको प्रतिरक्षा की आशा करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे आपको भगवान के नाम पर मार डालेंगे।

37) लोग मुझे बील्ज़ेबूब कहते हैं और वे तुम्हें इम्प्स कहेंगे।

38) लोग जो कहते और करते हैं, उससे मत डरो; आत्मा पर उनका कोई अधिकार नहीं है; वे दुर्व्यवहार कर सकते हैं और मांस के शरीर को नष्ट कर सकते हैं; लेकिन वह सब है।

39) वे उस ईश्वर को नहीं जानते जो आत्मा के मुद्दों को अपने हाथों में रखता है, जो आत्मा को नष्ट कर सकता है।

40) मसीह आज राजा है, और लोगों को उसकी शक्ति को पहचानना चाहिए।

41) वह जो मसीह से प्रेम नहीं करता, जो कि ईश्वर का प्रेम है, सबसे पहले, वह कभी भी आत्मिक चेतना का पुरस्कार प्राप्त नहीं कर सकता है।

42) और जो लोग अपने माता-पिता या अपने बच्चों को मसीह से अधिक प्यार करते हैं, वे कभी भी मसीह का नाम नहीं पहन सकते।

43) और जो अपने जीवन को मसीह से अधिक प्रेम करता है, वह परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता।

44) और जो जीवन से लगा रहेगा, वह अपना प्राण खोएगा, और जो मसीह के लिए अपना प्राण देगा, वह अपना प्राण बचाएगा।

45) यह कहकर यीशु ने बारहों को दो दो करके विदा किया और उन्हें कफरनहूम में मिलने को कहा।

46) और उन्होंने गलील के सब नगरोंमें जाकर शिक्षा दी, और आत्मा और सामर्थ से चंगा किया।

अध्याय 123

यीशु अपना अंतिम प्रभार विदेशी आकाओं को देते हैं और उन्हें प्रेरितों के रूप में दुनिया में भेजते हैं। वह अकेला सोर के पास जाता है और राहेल के घर में रहता है। एक जुनूनी बच्चे को ठीक करता है। सीदोन और फिर लबानोन के पहाड़ों को जाता है। माउंट हेर्मोन, कैसरिया-फिलिप्पी, डेकापोलिस, गदारा का दौरा किया और कफरनहूम लौट आया। बारह प्राप्त करते हैं, जो अपने काम का लेखा-जोखा देते हैं।

क्रिस्टीन गुरु ने प्रार्थना में कुछ समय बिताया, और फिर उसने विदेशी आकाओं को बुलाया, और उन्होंने उनसे कहा,

2) देखो, मैं ने बारह प्रेरितों को इस्राएल में भेजा, परन्तु तुम को सारे जगत में भेजा गया है।

3) हमारा परमेश्वर एक है, आत्मा है, और सत्य है, और हर एक मनुष्य उसे प्रिय है।

4) वह भारत के हर बच्चे का, और सुदूर पूर्व का परमेश्वर है; फारस की, और दूर उत्तर की; ग्रीस और रोम और सुदूर पश्चिम के; मिस्र और दक्षिण की ओर, और समुद्र के पार की शक्तिशाली भूमि, और समुद्र के द्वीपों की।

5) यदि ईश्वर जीवन की रोटी एक को भेजता है, न कि उन सभी को जो जीवन की चेतना के लिए उठे हैं और जीवन की रोटी प्राप्त कर सकते हैं, तो वह अन्यायी होगा और वह स्वर्ग के सिंहासन को हिला देगा।

6) इस प्रकार उसने तुम्हें संसार के सातों केंद्रों से बुलाया है, और उसने तुम्हारी आत्माओं में ज्ञान और शक्ति की सांस ली है, और अब वह तुम्हें जीवन के प्रकाश के वाहक, मानव जाति के प्रेरितों के रूप में भेजता है।

7) अपने मार्ग पर चलो, और जाते ही मसीह के सुसमाचार का प्रचार करो।

8) फिर उस ने स्वामियों पर फूंक मारी, और कहा, पवित्र श्वांस ग्रहण करो; और फिर उस ने हर एक को सामर्थ का वचन दिया।

9) और प्रत्येक अपने अपने मार्ग पर चला गया, और प्रत्येक देश में धन्य हो गया।

10) तब यीशु अकेला गलील की पहाड़ियों पर चला गया, और कुछ दिनों के बाद वह सूर के तट पर पहुंचा, और राहेल के घर में निवास किया।

11) उसने अपने आने का प्रचार नहीं किया क्योंकि वह उपदेश देने नहीं आया था; वह भगवान के साथ संवाद करेगा जहां वह शक्तिशाली समुद्र के पानी को देख सकता था।

12) राहेल ने यह समाचार सुनाया, और लोगों की भीड़ उसके घर यहोवा के दर्शन करने के लिए उमड़ पड़ी।

13) फीनेशिया की एक ग्रीसी स्त्री आई; उसकी बेटी दीवानी थी। उसने कहा,

14) हे प्रभु, मेरे घर पर दया करो! मेरी बेटी दीवानी है; परन्तु मैं यह जानता हूं, कि यदि तू वचन कहेगा, तो वह स्वतंत्र हो जाएगी। हे दाऊद के पुत्र, मेरी प्रार्थना सुन!

15) राहेल ने कहा, हे भली स्त्री, यहोवा को कष्ट न दे। वह चंगा करने के लिए सूर के पास नहीं आया; वह समुद्र के किनारे परमेश्वर से बात करने आया था।

16) यीशु ने कहा, सुन, मुझे न तो यूनानियों के पास भेजा गया, और न सिरोफेनीशियों के पास; मैं अपनी प्रजा इस्राएल के पास ही आता हूं।

17) तब वह स्त्री उसके पांवोंके पास गिरकर कहने लगी, हे प्रभु, हे यीशु, मैं बिनती करता हूं, कि तू मेरे बालक को बचा ले।

18) और यीशु ने कहा, तुम सामान्य कहावत को अच्छी तरह जानते हो: यह नहीं है कि कोई बच्चों की रोटी कुत्तों को दे।

19) तब उस स्त्री ने कहा, हां, यीशु, यह तो मैं जानती हूं, परन्तु कुते अपने स्वामी की तख्ती से गिरे हुए टुकड़ोंको खा सकते हैं।

20) यीशु ने कहा, ऐसा विश्वास मैं ने यहूदियोंमें नहीं देखा; वह सर्फ़ नहीं है, न ही कुत्ता।

21) तब उस ने उस से कहा, तेरे विश्वास के अनुसार ऐसा ही हो।

22) वह स्त्री चली गई, और जब वह अपके बच्चे के पास आई, तो देखो, वह चंगी हो गई।

23) और यीशु सूर में बहुत दिन रहा; तब वह चलकर सीदोन में समुद्र के किनारे रहने लगा।

24) और फिर उसने यात्रा की। लबानोन की पहाड़ियों और घाटियों में, और उसके उपवनों में वह मौन विचार से चलता था।

25) उसका सांसारिक मिशन उपवास समाप्त हो रहा था; उसने ताकत की तलाश की, और उसने जो खोजा वह उसने पाया।

26) हेर्मोन पर्वत परे खड़ा था, और यीशु बेहोश होकर उस पर्वत के पास घुटने टेक देगा जो इब्रानी गीत में प्रसिद्ध है।

27) और फिर वह हेर्मोन पर्वत की ऊंची चोटियों पर खड़ा हुआ और अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाकर परमेश्वर से बातें करने लगा।

28) और पुराने समय के स्वामी स्वयं को प्रकट करते थे और बहुत देर तक वे मसीह के राज्य के विषय में बातें करते रहे;

29) किए गए शक्तिशाली कार्यों के बारे में; क्रूस की आने वाली विजय के बारे में; मौत पर जीत के बारे में।

30) तब यीशु ने यात्रा की; वह कैसरिया-फिलिप्पी गया, और सुसन्ना के घर में वह कुछ दिनों तक रहा।

31) और फिर वह पूरे दिकापुलिस में घूमा, कि जो लोग उसे मसीह के रूप में जानते थे, उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए, और उन्हें कलवारी के दिन के लिए तैयार करने के लिए।

32) तब वह गदरा गया, और वहां उसके बहुत से मित्र थे, जो उसका स्वागत करने के लिथे थे।

33) और हेरोदेस अंतिपास के घराने का भण्डारी चुजास वहाँ था, और यीशु उसके साथ शाही जहाज पर चढ़ गया, और समुद्र को पार कर कफरनहूम को आया।

34) और जब लोगों को पता चला कि यीशु घर पर है, तो वे उसका स्वागत करने आए।

35) थोड़ी ही देर में बारह प्रेरित आए और गलील की अपनी यात्रा के बारे में गुरु को बताया।

36) उन्होंने कहा कि उन्होंने पवित्र वचन के द्वारा बहुत से शक्तिशाली कार्य किए हैं; और यीशु ने उन से कहा, अच्छा किया।

भाग 2/धारा XVII

ईसा मसीह

(**उम्र** 30 **से** 33)

नासरत के ईसा मसीह की 3 साल की सेवकाई

खंड XVII

PE

यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का तीसरा वार्षिक युग

(**अध्याय** 124 - 158)

अध्याय 124

क्रिस्टीन समुद्र पार करते हैं। यीशु ने अपने शिष्यों को गुप्त सिद्धांतों का पाठ पढ़ाया। लोगों को पढ़ाते हैं। पांच हजार खिलाता है। शिष्य समुद्र को फिर से पार करने लगते हैं। एक तूफान उठता है। यीशु, पानी पर चलते हुए, उनके पास आते हैं। पतरस के विश्वास का परीक्षण। वे गेनेसेरेट में उतरते हैं।

बारह प्रेरित अब आत्मिक चेतना के स्तर पर पहुँच चुके थे, और यीशु उन्हें दुनिया के लिए अपने मिशन के गहरे अर्थों को प्रकट कर सकते थे।

2) अगले सप्ताह यहूदियों का बड़ा पर्व मनाया जाएगा, और मत्ती ने कहा, क्या हम कमर बान्धकर यरूशलेम को न जाएं?

3) परन्तु यीशु ने कहा, हम पर्व में नहीं जाएंगे; समय कम है और मुझे तुम से बहुत सी बातें कहनी हैं; तुम एक सुनसान जगह में अलग आओ और कुछ देर आराम करो।

4) तब वे अपनी नावें लेकर समुद्र पार कर जूलियस बेतसैदा के पास एक निर्जन स्थान में आ गए।

5) लोगों ने उन्हें जाते देखा, और बड़ी भीड़ में उनके पीछे हो लिए।

6) और यीशु को चिन्तित भीड़ पर तरस आया, और वह खड़ा हुआ, और दिन भर उन्हें शिक्षा देता रहा, क्योंकि वे उजियाले की खोज में रहते थे, और वे उन भेड़ोंके समान थे जिनकी कोई भेड़ नहीं है।

7) और जब रात हुई, तो बारह लोग सन्देह कर रहे थे कि भीड़ क्या करेगी, और थोमा ने कहा,

8) हे प्रभु, हम एक निर्जन स्थान में हैं; लोगों के पास खाने को कुछ नहीं, और वे भोजन की कमी से मूर्छित हैं; हम क्या करेंगे?

9) यीशु ने कहा, जा, और भीड़ को चरा।

10) यहूदा ने कहा, क्या हम जाकर उनके खाने के लिथे दो सौ पैसे की रोटी मोल लें?

11) यीशु ने कहा, जा कर हमारी चरबी में जाकर देखो, कि हमारे पास कितनी रोटियां हैं।

12) अन्द्रियास ने कहा, हमारे पास रोटी नहीं, परन्तु एक बालक मिला है जिसके पास जव की पांच रोटियां और दो छोटी मछलियां हैं; लेकिन यह दस में से एक के लिए पर्याप्त भोजन नहीं होगा।

13) परन्तु यीशु ने कहा, इन सब को आज्ञा दे, कि बारह दल बनाकर घास पर बैठ जाएं; और वे सब बारह के दल में बैठ गए।

14) तब यीशु ने रोटियाँ और मछलियाँ लीं और स्वर्ग की ओर देखकर पवित्र वचन बोला।

15) तब उस ने रोटी तोड़ी और बारहोंको दी; और उस ने बारहोंको मछलियां भी दीं, और कहा, जा, और भीड़ को चरा।

16) और सब लोग खाकर तरोताजा हुए।

17) वहाँ कोई पाँच हज़ार पुरुष थे, छोटों की एक टोली, और स्त्रियाँ कुछ नहीं।

18) और जब सब लोग भर गए, तब स्वामी ने कहा,

19) एक टुकड़ा भी खो न जाए; जाओ और रोटी और मछली के टुकड़े दूसरों के लिए इकट्ठा करो जो शायद चाहते हैं।

20) उन्होंने टुकड़ों को बटोर लिया और बारह टोकरियाँ भर दीं।

21) सत्ता के इस चमत्कारिक कार्य से लोग हतप्रभ थे; उन्होंने कहा, और अब हम जानते हैं, कि यीशु ही वह भविष्यद्वक्ता है, जिसके विषय में हमारे भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था, वह आएगा; तब उन्होंने कहा, सब राजा की जय हो!

22) जब यीशु ने उन्हें यह कहते सुना, "राजा की जय हो! और उस ने बारहोंको बुलाकर कहा, कि वे अपक्की नावें ले कर उसके आगे उस पार चले जाएं;

23) और वह अकेला प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ी दर्रे पर गया।

24) वे बारह समुद्र पर थे और उन्हें कुछ ही समय में कफरनहूम पहुंचने की आशा थी, जब एक ही बार में एक भयानक तूफान उठा, और वे लहरों की दया पर थे।

25) और रात के चौथे पहर को हवा बवंडर बन गई, और वे भय से भर गए।

26) और उस अन्धकारमय आँधी में उन्होंने लहरों पर एक रूप को गति करते देखा; वह मनुष्य सा जान पड़ता था, और किसी ने चिल्लाकर कहा, यह तो प्रेत है, जो बुरी बातोंका चिन्ह है।

27) परन्तु यूहन्ना ने रूप को समझकर कहा, यह तो यहोवा है।

28) और हवा इतनी तेज नहीं चली, और पतरस बीच में खड़ा होकर चिल्लाया:

29) मेरे भगवान! मेरे नाथ! यदि यह वास्तव में तुम हो, तो मुझे लहरों पर तुम्हारे पास आने के लिए कहो।

30) रूप ने उसके हाथ को आगे बढ़ाया और कहा, चलो।

31) और पतरस ने लहरों पर कदम रखा, और वे चट्टान की नाईं दृढ़ थीं; वह लहरों पर चला।

32) वह तब तक चला जब तक कि उसने अपने भीतर सोचा, क्या होगा यदि लहरें मेरे पैरों के नीचे टूट जाएँ?

33) और फिर उसके पैरों के नीचे लहरें टूट गईं, और वह डूबने लगा, और आत्मा के भय में वह चिल्लाया, हे प्रभु, मुझे बचाओ, या मैं खो गया हूँ!

34) और यीशु ने उसका हाथ पकड़कर कहा, हे अल्प विश्वासियों! तुमने संदेह क्यों किया? और यीशु नाव तक ले गया।

35) तूफान ने अपनी ताकत खर्च कर दी थी; हवा चल रही थी, और वे किनारे के पास थे, और जब वे उतरे तो वे गेन्नेसरेत की घाटी में थे।

अध्याय 125

गेनेसेरेट में क्रिस्टीन का स्वागत किया जाता है। कई रोटियों और मछलियों के लिए यीशु का अनुसरण करते हैं। वह उन्हें जीवन की रोटी के बारे में बताता है। जीवन की रोटी और पानी के प्रतीक के रूप में अपने मांस और रक्त की बात करता है। लोग नाराज हैं और उनके कई शिष्य अब उनका अनुसरण नहीं करते हैं।

यह समाचार शीघ्र ही गेन्नेसरेत की सारी तराई में फैल गया कि यीशु और बारह लोग आए हैं, और बहुत से लोग देखने आए हैं।

2) उन्होंने अपने बीमारों को लाकर स्वामी के चरणों में रखा, और वह दिन भर उपदेश करता और चंगा करता रहा।

3) उस पार की भीड़, जो पहिले पहिले खिलाई गई थी, और बहुत सी भीड़, यहोवा के दर्शन के लिथे नीचे गई; परन्तु जब उन्होंने उसे न पाया, तो कफरनहूम में उसे ढूंढ़ने लगे।

4) और जब उन्होंने उसे घर पर न पाया, तो वे गेन्नेसरेत को गए। उन्होंने उसे वहां पाया और कहा, हे रब्बोनी, तुम गेन्नेसरेत में कब आए?

दृष्टान्त - रोटी और जीवन का जल: यीशु अपने मांस और रक्त का प्रतीक है

5) यीशु ने कहा, तुम समुद्र के पार क्यों आए हो? तू जीवन की रोटी के लिथे नहीं आया;

6) तुम अपने स्वार्थ को तृप्त करने आए हो; तुम सब को उस दिन समुद्र के पार खिलाया गया, और तुम रोटियों और मछलियों के अधिक शिकार हो।

7) जो भोजन तुमने खाया वह मांस के लिए पोषण था जो जल्द ही समाप्त हो जाएगा।

8) हे गलील के लोगों, नाश होने वाले भोजन की खोज मत करो, परन्तु उस भोजन की खोज करो जो आत्मा को खिलाए; और देखो, मैं तुम्हारे लिये स्वर्ग से भोजन लाता हूं।

9) तू ने मछली का मांस खाया, और तृप्त हुआ, और अब मैं मसीह का मांस तेरे लिथे खाने के लिथे लाता हूं, कि तू युगानुयुग जीवित रहे।

10) हमारे पुरखा जंगल में मन्ना खाते थे; तब उन्होंने बटेर का मांस खाया, और उस बहते सोते का जल जो मूसा ने चट्टान में से निकाला था, पिया; लेकिन वे सभी मर चुके हैं।

11) मन्ना और बटेर मसीह के शरीर के प्रतीक थे; चट्टान का पानी खून का प्रतीक था।

12) परन्तु, देखो, मसीह आ गया है; वह जीवन की वह रोटी है जो परमेश्वर ने जगत को दी है।

13) जो कोई मसीह का मांस खाए और उसका लहू पीए, वह कभी न मरेगा; और वह फिर कभी भूखा न रहेगा; और वह फिर प्यासा न होगा।

14) और जो लोग स्वर्ग की इस रोटी को खाते और इन जल को जीवन के सोते से पीते हैं, वे नष्ट नहीं हो सकते; ये आत्मा को खिलाते हैं, और जीवन को शुद्ध करते हैं।

15) देख, क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, जब मनुष्य अपने आप को शुद्ध कर लेगा, तब मैं उसे सामर्थ के सिंहासन पर बैठाऊंगा।

16) तब यीशु और बारह कफरनहूम को गए; और यीशु आराधनालय में जाकर उपदेश करने लगा।

17) और जिन यहूदियों ने गेन्नेसरेत में उसकी बात सुनी, वे आकर कहने लगे,

18) यह साथी खुद के पास है। हम ने उसे यह कहते सुना, कि जीवन की रोटी जो स्वर्ग से आती है मैं हूं; और हम सब जानते हैं, कि वह केवल मनुष्य का पुत्र है, जो नासरत से आया है; हम उसकी मां और उसके दूसरे परिजनों को जानते हैं।

19) और यीशु उनके विचारों को जानता था; उस ने उन से कहा, तुम क्यों कुड़कुड़ाते हो, और आपस में ऐसा तर्क करते हो?

20) मसीह अनन्त जीवन है; वह स्वर्ग से आया था; उसके पास स्वर्ग की कुंजियाँ हैं, और कोई स्वर्ग में प्रवेश नहीं करता, जब तक कि वह अपने आप को मसीह से भर न ले।

21) मैं शरीर रूप में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने आया हूं, और देखो, यह मांस और लोहू मसीह से भर गए हैं; और इस प्रकार जीवित रोटी जो स्वर्ग से आती है मैं हूं;

22) और जब तुम यह मांस खाओगे और यह लोहू पीओगे, तब तुम अनन्त जीवन पाओगे; और यदि तुम चाहो, तो तुम जीवन की रोटी बन सकते हो।

23) और बहुत से लोग क्रोधित हुए; उन्होंने कहा, यह मनुष्य अपना मांस खाने को, और अपना लोहू पीने को कैसे दे?

24) उसके ये बातें कहने के कारण उसके चेले दुखी हुए, और बहुतेरे मुड़ गए, और उसके पीछे फिर न चले।

25) उन्होंने कहा, उसके लिए यह कहना भयानक बात है, कि यदि तू मेरा मांस न खाए और मेरा लोहू न पीए, तो जीवन में प्रवेश नहीं कर सकता।

26) वे उस दृष्टान्त को नहीं समझ सके जो उसने कहा था।

27) यीशु ने कहा, तू ठोकर खाता है, और सत्य के साम्हने गिर पड़ता है; जब आप इस मांस और रक्त को उच्चतर रूप में बदलते देखेंगे तो आप क्या करेंगे?

28) जब तुम मनुष्य के पुत्र को आकाश के बादलों पर चढ़ते हुए देखोगे, तब तुम क्या कहोगे?

29) जब तुम मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के सिंहासन पर विराजमान देखोगे, तब तुम क्या कहोगे?

30) मांस शून्य है; आत्मा तेज करने वाली शक्ति है। जो शब्द मैं बोलता हूं वे आत्मा हैं; वे जीवन हैं।

31) जब यीशु ने उन बहुतों को देखा, जो उस पर विश्वास करने के अपने काम में इतने मुखर थे, तो लौटकर चले जाओ, उसने उन बारहों से कहा।

32) क्या तू इसी घड़ी मुझे छोड़ कर चला जाएगा?

33) पतरस ने कहा, हे प्रभु, हमारे पास और कोई स्थान नहीं है। अनन्त जीवन के वचन तेरे पास हैं; हम जानते हैं कि आप परमेश्वर की ओर से हमारे पास भेजे गए हैं।

अध्याय 126

शास्त्री और फरीसी यीशु के पास जाते हैं। वे उसे बिना हाथ धोए खाने के लिए निंदा करते हैं। वह अपने कृत्यों का बचाव करता है और पाखंड पर एक सबक सिखाता है। निजी तौर पर बारह को उनकी सार्वजनिक शिक्षाओं के बारे में बताते हैं।

शास्त्रियों और फरीसियों की एक कंपनी यरूशलेम से यह जानने के लिए आई थी कि यीशु की शक्ति कहाँ है।

2) परन्तु जब उन्होंने यह जान लिया कि उस ने और उसके चेलों ने भोजन करने से पहिले हाथ धोने की यहूदियों की रीति पर ध्यान नहीं दिया, तो वे चकित हुए।

3) यीशु ने कहा, तुम शास्त्रियों और फरीसियों में पाखंड रानी है। आप में से यशायाह ने लिखा:

4) यह लोग होठों से मेरा आदर करते हैं; उनके दिल दूर हैं। वे व्यर्थ ही मेरी उपासना करते हैं; उनके सिद्धांत मनुष्यों के हठधर्मिता और पंथ हैं।

5) तुम लोग जो परमेश्वर के आदमियों के रूप में ढोंग करते हैं, और अभी भी परमेश्वर के नियमों को अस्वीकार करते हैं और पुरुषों के नियमों को सिखाते हैं,

6) आगे खड़े होकर बताएं कि परमेश्वर ने पुरुषों को वे औपचारिक नियम कब दिए जिनका आप पालन करते हैं; और इन लोगोंको बताओ कि यदि कोई भोजन करने से पहले न धोए तो उसका आत्मिक जीवन कैसे दूषित हो जाता है।

7) उनके आलोचकों ने उत्तर नहीं दिया, और फिर उन्होंने कहा,

8) हे इस्राएल के लोगों, मेरी सुनो! अपवित्रता हृदय का प्राणी है। कामुक मन विचार को पकड़ लेता है और एक राक्षसी दुल्हन बनाता है; यह दुल्हन पाप है; पाप मन का प्राणी है।

9) जो मनुष्य को अशुद्ध करता है, वह वह भोजन नहीं है जो वह खाता है।

10) हम जो रोटी और मछली और अन्य चीजें खाते हैं, वे मानव घर के निर्माण के लिए मांस सामग्री की कोशिकाओं तक ले जाने के लिए केवल प्याले हैं, और जब उनका काम कचरा के रूप में किया जाता है तो उन्हें फेंक दिया जाता है।

11) पौधे और मांस का जीवन जो मानव घर बनाने के लिए जाता है, कभी भी आत्मा के लिए भोजन नहीं होता है। आत्मा जानवर, या पौधे के शवों को नहीं खाती है।

12) भगवान आत्मा को सीधे स्वर्ग से खिलाते हैं; जीवन की रोटी ऊपर से आती है।

13) हम जिस हवा में सांस लेते हैं, वह पवित्र सांस से चार्ज होती है, और वह जो चाहता है वह इस पवित्र सांस को ले सकता है।

14) आत्मा भेद करती है, और जो मसीह का जीवन चाहता है, वह उसमें सांस ले सकता है। अपने विश्वास के अनुसार ऐसा ही रहने दें।

15) मनुष्य अपने निवास स्थान का हिस्सा नहीं है; घर आदमी नहीं है।

16) निचला संसार मांस के घर को बनाता है और उसकी मरम्मत करता है; उच्चतर संसार आत्मिक जीवन की रोटी प्रदान करता है।

17) सबसे प्यारी गेंदे रुके हुए तालाबों और गंदी गंदगी से उगती हैं।

18) शरीर के नियम की माँग है कि शरीर को शुद्ध रखना चाहिए।

19) आत्मा का नियम मन और वचन और कर्म में पवित्रता का आहवान करता है।

20) जब सांझ हुई और वे घर में थे, तब उन बारहों के पास कहने को बहुत सी बातें थीं, और बहुत से प्रश्न करने को थे।

21) नतनएल ने पूछा, क्या तू ने मांस के घर के विषय में जो कहा वह दृष्टान्त है? यदि हां, तो इसका क्या अर्थ है?

22) यीशु ने कहा, क्या तुम अब तक भेद नहीं कर सकते? क्या तुम अब तक नहीं समझते, कि जो कुछ मनुष्य अपने मुंह में लेता है, वह उसे अशुद्ध नहीं करता?

23) उसका भोजन उसकी आत्मा में नहीं जाता; यह मांस और हड्डी और भूरे रंग के लिए सामग्री है।

24) आत्मा के लिए सब कुछ शुद्ध है।

25) जो मनुष्य को अशुद्ध करता है, वह शारीरिक विचारों से ऊपर उठ जाता है; और शारीरिक विचार हृदय से निकलते हैं और बहुत सी बुरी चीजें उत्पन्न करते हैं।

26) हत्या, चोरी और मूर्खता हृदय से निकलती है। सभी स्वार्थी कार्य और कामुक कर्म हृदय से निकलते हैं।

27) बिना हाथ धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता।

28) पतरस ने कहा, हे प्रभु, जो कुछ तू ने आज कहा, उस ने शास्त्री और फरीसी को बहुत ठेस पहुंचाई है।

29) यीशु ने कहा, ये शास्त्री और फरीसी जीवन के वृक्ष के वंशज नहीं हैं; वे परमेश्वर के पौधे नहीं हैं; वे मनुष्यों के पौधे हैं, और सब पराए पौधे तोड़े जाएंगे।

30) इन सब लोगों को अकेला छोड़ दो; वे अंधे मार्गदर्शक हैं; वे अंधे लोगों की भीड़ का नेतृत्व करते हैं।

31) अगुवे और अगुवे एक साथ चलते हैं; एक साथ वे जम्हाई के गड्ढों में गिरेंगे।

अध्याय 127

क्रिस्टीन समुद्र को पार करके डेकापोलिस तक जाती हैं। यीशु को एक सेवानिवृत्त स्थान मिलता है जहाँ वह बारह को निजी तौर पर सिखाता है। वे तीन दिन रहते हैं, फिर समुद्र के किनारे एक गाँव में चले जाते हैं।

अब यीशु उन बारहों को लेकर रात को उनके संग समुद्र पार करके दिकापुलिस की सीमा पर आया।

2) ताकि वह एक गुप्त स्थान खोज सके, जहां अकेले ही, वह आने वाली चीजों को उन पर प्रकट कर सके।

3) वे एक पहाड़ी दर्रे में गए और तीन दिन प्रार्थना में बिताए।

4) यीशु ने कहा, सुन, वह समय निकट है, कि मैं तेरे संग शरीर में फिर न चलूंगा।

5) देखो, मैंने सिखाया है कि जो अपने जीवन को इतना मूल्यवान मानता है कि वह अपने भाई को बचाने के लिए स्वेच्छा से बलिदान नहीं देगा, वह जीवन में प्रवेश करने के योग्य नहीं है।

6) देखो, मैं मनुष्यों के लिए आदर्श बनकर आया हूं, और मैं ने सहायता करने से कभी परहेज नहीं किया।

7) जब मैंने हेलियोपोलिस में सात परीक्षाएँ पास कीं, तो मैंने दुनिया को बचाने के लिए जीवन और जो कुछ मेरे पास था, उसे समर्पित कर दिया।

8) यहूदिया के जंगल में मैंने मनुष्यों के सबसे प्रबल शत्रुओं से युद्ध किया, और वहाँ मैंने अपने संगी मनुष्य की सेवा के लिए अपने अभिषेक की पुष्टि की।

9) संकटों और परीक्षाओं में मैं डगमगाया नहीं; जब झूठे आरोप लगाने वाले आए, तो मैंने उत्तर नहीं दिया।

10) परमेश्वर ने मुझे बचाने का वचन दिया है, और मैं ने बार-बार यह कहा है, और बीमारों को चंगा किया है, अशुद्ध आत्माओं को निकाला है, और मरे हुओं को जिलाया है।

11) और मैंने तुम्हें दिखाया है कि वचन कैसे बोलना है; और मैं ने तुझे वचन दिया है;

12) थोड़ी ही देर में हम यरूशलेम की ओर मुंह करके मुंह फेर लेंगे, और तुम में से जो अब मेरी सुनेगा, वह मुझे पकड़वाकर दुष्टों के हाथ में कर देगा।

13) शास्त्री और फरीसी झूठे आरोप लगाएंगे और मुझे अदालत में पेश करेंगे, और रोम की सहमति से मुझे सूली पर चढ़ाया जाएगा।

14) तब पतरस ने कहा, हे मेरे प्रभु, ऐसा नहीं होगा। हमारे प्रभु के पास पहुँचने से पहले रोमी सैनिक बारह मरे हुओं को रौंदेंगे।

15) परन्तु यीशु ने कहा, संसार का उद्धारकर्ता विरोध नहीं कर सकता।

16) मैं जगत का उद्धार करने आया हूं, और मैं ने तुम्हारे नाम स्वर्ग के ऊंचे आंगनों के साम्हने उठाए हैं, और तुम जगत के उद्धारकर्ता ठहराए गए हो।

17) और कोई नाम नहीं, सिवाय उसके जो विश्वासघात करेगा, उसका नाम कभी भी बदनाम नहीं होगा।

18) मैं अपने मार्ग पर चलता हूं, और चाहे मेरा शरीर गुजर जाए, तौभी मेरा प्राण मार्गदर्शन करने और आशीर्वाद देने के लिथे तुम्हारे पास खड़ा रहेगा।

19) और दुष्ट लोग तुम्हें सड़कों पर पकड़ लेंगे, और जैसे तुम प्रार्थना में घुटने टेकते हो; आप पर कुछ कानूनी अपराध का आरोप लगाएंगे, और सोचेंगे कि वे आपको मौत के घाट उतारकर अपने भगवान की सेवा करते हैं।

20) लेकिन लड़खड़ाना नहीं; बोझ भारी होगा, लेकिन कर्तव्य की चेतना के साथ, भगवान की शांति भार को उठा लेगी, दर्द को दूर कर देगी और रास्ता रोशन कर देगी।

21) और हम वहां मिलेंगे जहां शारीरिक जल्लाद नहीं आएंगे; वहाँ हम उन क्रूर आदमियों की सेवा करेंगे, जिन्होंने अपनी अज्ञानता में हमें मौत के घाट उतार दिया था।

22) क्या हम इस आक्रोश और अपने जीवन के इस वध को रोक सकते हैं? यदि हम नहीं हैं, लेकिन हम शारीरिक चीजों के उतार-चढ़ाव और प्रवाह के प्राणी हैं। यह जीवन का बलिदान नहीं होगा।

23) लेकिन हम समय की बातों के स्वामी हैं। देखो, हम बोल सकते हैं, और अग्नि, जल, पृथ्वी और वायु की सभी आत्माएं हमारे बचाव में खड़ी होंगी।

24) हम आज्ञा दे सकते हैं और स्वर्गदूतों की दुनिया के कई दिग्गज आएंगे और हमारे दुश्मनों को धरती पर मारेंगे।

25) लेकिन यह सबसे अच्छा है कि स्वर्ग या पृथ्वी की शक्ति हमारे राहत के लिए नहीं आए। और यह सबसे अच्छा है कि भगवान भी अपना चेहरा ढक लें और ऐसा लगता है कि हम नहीं सुनते हैं।

26) जैसे मैं तुम्हारे लिए आदर्श हूं, वैसे ही तुम मानव जाति के लिए आदर्श हो। हम अप्रतिरोध से दिखाते हैं कि हम मनुष्य के लिए स्वेच्छा से बलिदान देने में अपना जीवन देते हैं।

27) लेकिन मेरी मिसाल मौत के साथ खत्म नहीं होगी। मेरा शरीर एक कब्र के भीतर रखा जाएगा जिसमें कोई मांस नहीं पड़ा है, मृत्यु में जीवन की पवित्रता का प्रतीक है।

28) और कब्र में मैं तीन दिन तक मसीह के साथ, और अपने पिता-परमेश्वर और माता-परमेश्वर के साथ मधुर संगति में रहूंगा।

29) और फिर, उच्च जीवन के लिए आत्मा के आरोहण का प्रतीक, कब्र के भीतर मेरा मांस गायब हो जाएगा;

30) उच्च रूप में परिवर्तित हो जाएगा, और, आप सभी की उपस्थिति में, मैं भगवान के पास चढ़ूंगा।

31) तब यीशु और बारह समुद्र के किनारे एक गाँव को गए।

<u>अध्याय 128</u>

यीशु रात में एक पहाड़ पर प्रार्थना करने जाते हैं। उनके शिष्य और गांव वाले उन्हें ढूंढते हैं और वह उन्हें तीन दिनों तक पढ़ाते हैं। चार हजार लोगों को खाना खिलाते हैं। क्रिस्टीन कैसरिया-फिलिपी जाते हैं। वे मसीह के व्यक्तित्व पर विचार करते हैं। पतरस को प्रेरितिक नेता चुना गया है।

अब, रात को जब चेले सो रहे थे, देखो, यीशु जी उठा और अकेला छह मील दूर एक पहाड़ी दर्रे पर प्रार्थना करने को गया।

2) और भोर को जब बारह उठे, तो वे यहोवा को न पा सके, और गांव के सब लोगोंने ढूंढ़ा, और जब सूर्य अपनी चरम सीमा पर पहुंचा, तब उन्होंने उसे पहाड़ी दर्रे पर पाया।

3) और बहुत से लोग आकर अपने रोगियों को ले आए, और यीशु ने शिक्षा दी और चंगा किया।

4) और जब रात हुई तो लोग न जाने लगे; वे भूमि पर सो गए कि वे यहोवा के निकट हों।

5) तीन दिन और रात भीड़ बनी रही, और किसी के पास खाने को कुछ न था।

6) और यीशु को तरस आया, और उस ने कहा, यदि मैं भीड़ को विदा करूं, तो वे अपके घर न पहुंचें, क्योंकि वे मूर्छित हैं, क्योंकि कितनोंने बहुत दूर का सफर तय किया है।

7) और उसके चेलों ने कहा, हम उन सब को खिलाने के लिए पर्याप्त भोजन कहाँ से लाएँ? औरतों और छोटों को छोड़ चार हजार पुरूष हैं।

8) यीशु ने कहा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं?

9) उन्होंने उत्तर दिया, सात, और कुछ छोटी मछलियां।

10) यीशु ने कहा, जा, और उस दिन लोगोंको बिठा, जैसा तू ने उन्हें उस दिन बिठाया, जब उस दिन सब लोग भोजन कर रहे थे, अर्थात बारहोंके दल में।

11) और जब लोग बारह टुकड़ियों में बैठे थे, तब रोटियां और मछलियां लाई गईं।

12) और यीशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करके वचन कहा; फिर उस ने सात रोटियों को टुकड़े टुकड़े करके तोड़ दिया, और उसी प्रकार मछलियों को भी काटा।

13) और एक एक रोटी रोटी बन गई, और मछली का एक एक टुकड़ा मछली बन गया।

14) बारहोंने निकलकर सब को दिया; लोगों ने खाया और वे तृप्त हुए; और जितने टुकड़े रह गए, वे सब बटोर लिए गए, और सात टोकरियां भरी हुई थीं।

15) तब वे लोग चले गए, और बारह नावें लेकर समुद्र के किनारे दलमनाथ को आए।

16) यहां वे बहुत दिन तक रहे, और यीशु ने उन बारहोंको उस भीतरी ज्योति के विषय में बताया जो टल नहीं सकती;

17) आत्मा के भीतर मसीह के राज्य के बारे में; विश्वास की शक्ति के बारे में; मृतकों के पुनरुत्थान के रहस्य के बारे में; अमर जीवन के बारे में, और जीवित कैसे आगे बढ़कर मृतकों की सहायता कर सकते हैं।

18) तब वे अपक्की नावोंपर चढ़कर गलील के उत्तरी तट पर आए, और चोराजीन में जहां थोमा का परिजन रहता था, अपक्की नावोंको छोड़कर कूच किया।

19) वे मेरोम आए, जहां क्रिस्टल जल स्वर्ग की छवियों को पकड़ने और सेनाओं के यहोवा की महिमा को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रतीत होता है।

20) और यहाँ वे कुछ दिनों तक मौन विचार में रहे।

21) तब वे कूच करके कैसरिया-फिलिप्पी देश में आए।

22) जब वे चलकर आपस में बातें कर रहे थे, तब स्वामी ने कहा, लोग मनुष्य के पुत्र के विषय में क्या कहते हैं? वे मुझे कौन समझते हैं?

23) मत्ती ने कहा, कोई कहते हैं कि तुम दाऊद हो, फिर आओ; कुछ लोग कहते हैं कि तुम हनोक, सुलैमान, या शेत हो।

24) अन्द्रियास ने कहा, मैं ने आराधनालय के हाकिम को यह कहते सुना, कि यह तो यिर्मयाह है, क्योंकि यिर्मयाह ने जैसा लिखा है, वैसा ही वह बोलता है।

25) नथानिएल ने कहा, विदेशी स्वामी जो हमारे साथ कुछ समय के लिए थे, उन्होंने घोषणा की कि यीशु गौतम हैं, फिर से आओ।

26) याकूब ने कहा, मुझे लगता है कि अधिकांश स्वामी यहूदी मानते हैं कि आप पृथ्वी पर एलिय्याह की पुन: उपस्थिति हैं।

27) यूहन्ना ने यह कहकर कहा, जब हम यरूशलेम में थे, तब मैं ने एक दर्शी को यह कहते सुना, कि यह यीशु मेल्कीसेदेक, जो कोई दो हजार वर्ष पहिले जीवित रहा, और मेल्कीसेदेक है, और कहा, कि वह फिर आएगा।

28) और थोमा ने कहा, हेरोदेस टेट्रार्क सोचता है कि तू मरे हुओं में से जी उठा यूहन्ना है;

29) लेकिन तब उसका विवेक उसे परेशान करता है; मारे गए यूहन्ना की आत्मा उसके सपनों में उसके सामने घूमती है, और उसे रात के एक भूत के रूप में सताती है।

30) और यीशु ने पूछा, तुम क्या समझते हो कि मैं कौन हूं?

31) पतरस ने कहा, तुम मसीह हो, परमेश्वर का प्रेम जो मनुष्यों पर प्रगट हुआ है।

32) यीशु ने कहा, हे शमौन, योनास के पुत्र, तू तीन बार धन्य है। आपने एक सत्य घोषित किया है कि भगवान ने आपको दिया है।

33) तू चट्टान है, और तू सेनाओं के यहोवा के भवन का खम्भा ठहरेगा।

34) और तुम्हारा अंगीकार विश्वास की आधारशिला है, शक्ति की चट्टान है, और इस चट्टान पर मसीह का चर्च बनाया गया है।

35) इसके विरुद्ध अधोलोक और मृत्यु की सभी शक्तियाँ प्रबल नहीं हो सकतीं।

36) देख, मैं तुझे वह कुंजियां देता हूं, जो मनुष्योंके लिथे सुरक्षा के द्वार खोलती हैं।

37) पवित्र श्वांस तुम पर और दसोंपर उतरेगा, और यरूशलेम में तुम पृथ्वी की जातियोंके साम्हने खड़े होओगे, और वहां मनुष्योंके साथ परमेश्वर की वाचा का प्रचार करना।

38) और तुम पवित्र श्वास की बातें कहोगे, और जो कुछ परमेश्वर मनुष्यों से चाहता है, वह मसीह में सच्चे विश्वास के रूप में, तुम उसे प्रगट करना।

39) तब उस ने बारहोंकी ओर फिरकर कहा, जो कुछ तुम ने आज सुना है, उसे किसी से न कहना।

40) तब यीशु और बारह लोग ऊपर गए और बहुत दिनों तक सुसन्ना के अतिथि रहे।

अध्याय 129

यीशु लोगों को सिखाता है। वह पतरस, याकूब और यूहन्ना को लेकर एक ऊँचे पहाड़ पर जाता है और उनके सामने उसका रूपान्तर किया जाता है।

शीघ्र ही यह समाचार फैल गया कि यीशु और बारह आ गए हैं, और बहुत से लोग देखने आए हैं।

2) यीशु ने कहा, देख, तुम देखने आते हो, परन्तु उसका कोई अर्थ नहीं। यदि आपको मसीह का आशीर्वाद प्राप्त होता, तो अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो लें।

3) यदि आप स्वार्थ के लिए अपनी जान दे देंगे, तो आप अपना जीवन खो देंगे।

4) यदि आप अपने साथी पुरुषों की सेवा में अपना जीवन देंगे, तो आप अपने जीवन को बचाएंगे।

5) यह जीवन केवल एक कालखंड है, आज की एक चाल है। एक जीवन है जो गुजरता नहीं है।

6) यदि आप दुनिया को प्राप्त करते हैं और अपनी आत्मा को खो देते हैं तो आपका लाभ कहां है? आप अपनी आत्मा के लिए भुगतान में क्या लेंगे?

7) यदि आप ईश्वर में आत्मिक जीवन, मनुष्य का जीवन पाते हैं, तो आपको एक संकरे रास्ते से चलना चाहिए और एक संकरे द्वार से प्रवेश करना चाहिए।

8) मार्ग मसीह है, द्वार मसीह है, और तुम्हें मसीह के मार्ग से ऊपर आना अवश्य है। कोई मनुष्य परमेश्वर के पास नहीं आता केवल मसीह के द्वारा।

9) मसीह का राज्य आएगा; हां, तुम में से कुछ जो अब मेरी सुनते हैं, मृत्यु के फाटकों से तब तक न गुजरेंगे जब तक तुम राज्य को सत्ता में आते नहीं देखोगे ।

10) स्वामी और बारह सात दिन तक कैसरिया-फिलिप्पी में रहे।

11) तब यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को लेकर प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ की चोटी पर गया।

12) और जैसे ही उसने प्रार्थना की, एक तेज रोशनी दिखाई दी; उसका रूप एक कीमती पत्थर के रूप में उज्ज्वल हो गया;

13) उसका मुख सूर्य के समान चमक रहा था; उसके वस्त्र बर्फ की तरह सफेद लग रहे थे; मनुष्य का पुत्र परमेश्वर का पुत्र बन गया।

14) उसका रूपान्तर किया गया था ताकि पृथ्वी के लोग मनुष्य की संभावनाओं को देख सकें।

15) जब पहली बार महिमा आई तो तीनों चेले सो रहे थे; एक स्वामी ने उनकी आंखों को छूकर कहा, जागो और यहोवा की महिमा को देखो।

16) और वे जागे और यहोवा का तेज देखा; और इससे भी अधिक, उन्होंने स्वर्गीय जगत की महिमा देखी, क्योंकि उन्होंने वहां से दो मनुष्य यहोवा के पास खड़े हुए देखे।

17) और पतरस ने उस स्वामी से, जिसने उन्हें जगाया, पूछा, ये कौन लोग हैं जो यहोवा के पास खड़े हैं?

18) स्वामी ने कहा, ये मूसा और एलिय्याह हैं, जो इसलिये आए हैं, कि तुम जान लो कि आकाश और पृथ्वी एक हैं; जो वहां के मालिक हैं और यहां के मालिक एक हैं।

19) दुनिया को अलग करने वाला पर्दा सिर्फ एक ईथर का परदा है। जो लोग विश्वास से अपने दिलों को शुद्ध करते हैं, उनके लिए परदा हटा दिया जाता है, और वे देख और जान सकते हैं कि मृत्यु एक मायावी चीज है।

20) पतरस ने कहा, परमेश्वर की स्तुति करो! फिर उस ने यीशु को पुकारा, और कहा, हे मेरे स्वामी और मेरे प्रभु, यह स्वर्ग का द्वार है, और हमारा रहना भला ही है।

21) क्या हम नीचे जा कर तीन तम्बू लाएँ: तेरे लिए एक तम्बू, मूसा के लिए एक तम्बू, और एलिय्याह के लिए एक? लेकिन यीशु ने उत्तर नहीं दिया।

22) मूसा और एलिय्याह ने पर्वत पर यीशु से बातें कीं। उन्होंने यहोवा की आनेवाली परीक्षा के विषय में बातें कीं;

23) उसकी मृत्यु के बारे में, कब्र के भीतर उसका आराम; पुनरुत्थान की सुबह के चमत्कारों के बारे में; उसके शरीर का परिवर्तन, और प्रकाश के बादलों पर उसका स्वर्गारोहण;

24) और उस पथ के सभी प्रतीक जिस पर प्रत्येक मनुष्य को चलना चाहिए; जिस तरह से मनुष्य के पुत्र भगवान के पुत्र बनते हैं, उसका प्रतीक है।

25) तीनों शिष्य चकित रह गए, और एकाएक ईथर गीत से सराबोर हो गए, और हवा के रूप में प्रकाश के रूप में पर्वत की चोटी के चारों ओर घूम रहे थे।

26) तब ऊपर के जगत के तेज में से उन्होंने यह शब्द सुना, कि

27) यह मनुष्य का पुत्र है, जो मनुष्यों पर मसीह को प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ है। सारी पृथ्वी उसे सुन ले।

28) जब चेलों ने यह शब्द सुना तो वे डर गए; वे भूमि पर गिरे और प्रार्थना की।

29) और यीशु आया; उस ने उनको छूकर कहा, उठ, मत डर; लो, मैं यहाँ हूँ।

30) तब वे उठे, और उन्होंने चारों ओर दृष्टि करके किसी को न देखा; पुरुष गए थे। गुरु केवल उनके साथ खड़े थे।

31) जब यीशु और तीनों पहाड़ की चोटी से आए, तो उन्होंने उस दृश्य के अर्थ के बारे में बात की, और यीशु ने उन सभी को बताया; और फिर उसने कहा,

32) जब तक मैं मरे हुओं में से जी न उठाऊं, तब तक किसी से न कहना कि तुम ने क्या देखा है।

33) परन्तु जब तक मैं मरे हुओं में से जी न उठा, तब तक चेले इन बातों का अर्थ न समझ सके।

34) और यीशु ने उन्हें एक बार फिर अपनी मृत्यु और कब्र से उठने के बारे में बताया; आत्मा के राज्य के बारे में जो महिमा और शक्ति में आने वाला था।

35) पतरस ने कहा, शास्त्रियों ने सिखाया है कि जब राजा आएगा तो एलिय्याह अवश्य प्रकट होगा।

36) यीशु ने कहा, एलिय्याह आ चुका है; परन्तु शास्त्रियों और फरीसियों ने उसे ग्रहण नहीं किया;

37) और लोगों ने उसकी निन्दा की, उसे बान्धा, और बन्दीगृह में डाल दिया, और उसे मरते हुए देखने के लिये एक शैतान की जय-जयकार हुई।

38) मनुष्यों ने उसके साथ जो किया है, वही मेरे साथ करेगा।

39) तब चेले समझ गए कि यीशु ने यूहन्ना के बारे में बात की थी जिसे हेरोदेस ने मार डाला था।

अध्याय 130

यीशु और तीन शिष्य कैसरिया-फिलिप्पी लौट आए। नौ एक मिरगी के बच्चे को ठीक करने में विफल रहे थे। यीशु ने बच्चे को चंगा किया और अपने शिष्यों को परमेश्वर में विश्वास की कमी के लिए फटकार लगाई। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए।

जब यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना नगर के फाटकों पर आए, तो मार्ग में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।

2) वे नौ प्रेरित जो यीशु के साथ पर्वत पर नहीं गए थे, उन्होंने एक मिरगी से ग्रस्त बच्चे को चंगा करने का प्रयास किया था, और वे असफल हो गए थे; लोग यहोवा के आने की बाट जोह रहे थे।

3) जब यीशु आया तो बच्चे के पिता ने उसके सामने घुटने टेके और उससे मदद की गुहार लगाई।

4) उस ने कहा, हे मेरे स्वामी, मैं बिनती करता हूं, कि तू मेरे इकलौते पुत्र पर तरस खाएगा; वह एक मिर्गी का बच्चा है और गंभीर रूप से पीड़ित है।

5) कभी-कभी वह आग में गिर जाता है और जल जाता है; वह फिर पानी में गिर जाता है और डूबने जैसा है; और दिन में बहुत बार गिरकर दांत पीसता है, और उसके मुंह से झाग निकलता है।

6) मैं अपने बच्चे को आपके शिष्यों के पास ले गया, और वे राहत देने में असफल रहे।

7) और जब वह बातें कर रहा था, तब एक दास उस बालक को यहोवा के साम्हने ले आया, और वह तुरन्त भूमि पर गिर पड़ा, और फेन आने लगा, और वेदना से भर गया।

8) यीशु ने कहा, वह कब से इस प्रकार व्याकुल है?

9) पिता ने कहा, बचपन से ही; और हम ने बहुत देशों में सहायता मांगी, परन्तु नहीं पाई; लेकिन मुझे विश्वास है कि आप वचन बोल सकते हैं और मेरे बेटे को चंगा कर सकते हैं।

10) और यीशु ने कहा, विश्वास परमेश्वर की शक्ति है। उसके लिए सब कुछ संभव है जो उसके दिल में विश्वास करता है।

11) पिता ने रोते हुए रोया, हे प्रभु, मुझे विश्वास है; मेरे अविश्वास की सहायता करो।

12) और यीशु ने सामर्थ का वचन कहा; मिर्गी का बच्चा बेहोश हो गया; उस ने साँस न ली, और सब लोग कहने लगे, बालक मर गया।

13) परन्तु यीशु ने उसका हाथ पकड़ कर कहा, उठ; और वह उठा और बोला।

14) लोग चकित हुए, और बहुतों ने कहा, यह निश्चय ही परमेश्वर का जन है, क्योंकि मनुष्य को ऐसी कोई शक्ति कभी नहीं दी गई।

15) तब यीशु और बारह घर में गए, और भोजन करने और तरोताजा होने के बाद, नौ चेलों ने कहा,

16) हे प्रभु, हम इस बच्चे को चंगा क्यों नहीं कर सके? हमने वचन बोला; लेकिन वह भी शक्तिहीन था।

17) और यीशु ने कहा, तुम्हारे पिछले सभी कामों में तुम्हारी बड़ी सफलता ने तुम्हें लापरवाह बना दिया है, और तुम परमेश्वर की शक्ति को पहचानना भूल गए।

18) वचन की आत्मा के बिना, वचन एक बेकार कहानी की तरह है; और तुम प्रार्थना करना भूल गए।

19) विश्वास की प्रार्थना के बिना कोई विश्वास नहीं है। विश्वास प्रार्थना का पंख है; लेकिन पंख अकेले नहीं उड़ते।

20) प्रार्थना और विश्वास के द्वारा तुम पहाड़ों की चोटियों को गिरा सकते हो, और उन्हें समुद्र में फेंक सकते हो; तेरी आज्ञा से छोटी पहाड़ियां मेमनों की नाईं घूमेंगी।

21) यह विफलता आपके लिए अच्छी हो सकती है। जीवन में जो महान सबक सीखे जाते हैं, वे असफलताओं से आते हैं।

22) जब चेले सोच-समझकर ध्यान में बैठे थे, तो यीशु ने कहा, इन शब्दों को अपने दिलों में डूबने दो:

23) वह समय लगभग आ गया है जब आपको अपना भार अकेले उठाना होगा; अर्थात् देह में मेरी उपस्थिति के बिना।

24) क्योंकि मैं दुष्टों के हाथ में पड़ूंगा, और वे मुझे बेजेता शहरपनाह के पार एक पहाड़ पर मार डालेंगे।

25) और लोग मेरी देह को एक कब्र में रखेंगे, जहां पवित्र वचन के द्वारा तीन दिन तक उसकी रक्षा की जाएगी और उसकी रक्षा की जाएगी; तो मैं फिर उठूंगा।

26) बारह उदास थे; वे नहीं समझे, और तौभी उस से उसके वचन का अर्थ प्रकट करने के लिए कहने से डरते थे।

27) अगले दिन क्रिस्टीन गुरु और बारहों ने अपनी वापसी की यात्रा शुरू की, और जल्द ही कफरनहूम में थे।

अध्याय 131

यीशु और पतरस आधा शेकेल कर का भुगतान करते हैं। शिष्य सर्वोच्चता के लिए संघर्ष करते हैं। यीशु उन्हें डांटता है। उन्हें कई व्यावहारिक पाठ पढ़ाते हैं। अच्छे चरवाहे का दृष्टान्त।

जब यीशु और बारह घर में विश्राम कर रहे थे, तो चुंगी लेने वाला पतरस के पास आया और कहा, हे मनुष्य, क्या यीशु और आप आप ही यह आधा शेकेल कर चुकाते हैं?

2) और पतरस ने कहा, हम जो कुछ भी मूल्यांकित किया जाता है, हम भुगतान करते हैं।

3) और यीशु ने कहा, यह विशेष कर किस से वसूल करते हैं? अजनबियों से या देशी बेटों से?

4) पतरस ने कहा, यह कर केवल अजनबियों को ही देना है।

5) तब यीशु ने कहा, हम सब देशी पुत्र हैं, और स्वतन्त्र हैं; लेकिन ऐसा न हो कि हम विवाद करें, हम कर का भुगतान करेंगे; परन्तु न तो शेकेल के पास देने को था।

6) यीशु ने कहा, समुद्र पर जा; काँटे में डाल, और मछली पकड़, और उसके भीतरी भाग में एक शेकेल पाओगे, जो तुम्हारे और मेरे लिए कर उठाकर चुकाते हैं।

7) और पतरस ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने कहा था; उसने शेकेल को पाया और कर चुकाया।

8) अब यीशु ने आपस में बारह विवाद सुन लिए। उनके दिलों में शारीरिक आत्मा की आत्मा घूम रही थी, और वे आपस में सवाल कर रहे थे कि भगवान और मनुष्य की दृष्टि में सबसे बड़ा कौन है।

9) और यीशु ने कहा, हे मनुष्यो, लज्जा के लिए! सबसे बड़ा बाकियों का सेवक है। तब उस ने अपने पास एक बालक को बुलाया; उसने उसे अपनी बाहों में लिया और कहा,

10) सबसे बड़ा छोटा बच्चा है, और यदि आप महान बनना चाहते हैं, तो आपको इस बच्चे के रूप में मासूमियत में, सच में, जीवन में पवित्रता में बनना होगा।

11) महापुरुष पृथ्वी की छोटी-छोटी वस्तुओं से घृणा नहीं करते; जो ऐसे बालक का आदर और आदर करता है, वह मेरा आदर और आदर करता है, और जो बालक का तिरस्कार करता है, वह मेरा तिरस्कार करता है।

12) यदि आप राज्य के द्वार से प्रवेश करना चाहते हैं तो आपको इस छोटे बच्चे के रूप में विनम्र होना चाहिए।

13) हे मनुष्यो, मेरी सुन, इस बालक की नाईं सब बालकों में भी एक है जो परमेश्वर के सिंहासन के साम्हने अपना मुकद्दमा लड़े।

14) हे मनुष्यो, तुम अपने जोखिम पर उसका तिरस्कार करते हो, क्योंकि देखो, मैं कहता हूं, उसका समकक्ष हर पल, हर दिन परमेश्वर का मुख देखता है।

15) और एक बार फिर मेरी सुन, जो किसी बालक को ठोकर खिलाकर गिराएगा, वह अभिशप्त है, शापित है; और यदि वह स्वयं डूब जाता तो बहुत अच्छा होता।

16) निहारना, हर जगह अपराध! मनुष्य पाप करने और गिरने के अवसर ढूंढ़ते हैं, और जब वे गिरते हैं, तब उठकर वे बलवन्त होते हैं;

17) पर हाय उस पर जो औरों को ठोकर खिलाकर गिरा देता है।

18) हे परमेश्वर के लोगों, चौकस रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी दूसरे को गिरने से रोको; सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम पाप के मार्ग में पड़ जाओ।

19) अब, यदि तेरे हाथ तुझे पाप करवाते हैं, तो अच्छा होगा कि तू उन्हें काट दे; क्योंकि परमेश्वर और मनुष्यों की दृष्टि में हाथ न रखना, और दोषी न होना, अपने रूप में सिद्ध होने और अपने प्राण को खो देने से कहीं उत्तम है।

20) और यदि तेरे पांवोंके कारण बुरा लगे, तो अच्छा होगा कि तू उन्हें काट दे; क्योंकि शाप के नीचे गिरने से तेरे पांवों के बिना जीवन में प्रवेश करना कहीं बेहतर है।

21) और यदि तेरी आंखें या कान तुझे पाप करवाते हैं, तो अपने प्राण को खोने से अच्छा है कि तू उन सब को खो दे।

22) तुम्हारे विचार, वचन और कर्म सब अग्नि से परखे जाएंगे।

23) स्मरण रहे कि तू पृथ्वी का नमक है; परन्तु यदि आप नमक के गुणों को खो देते हैं, तो आप भगवान की दृष्टि में अस्वीकार कर देते हैं।

24) जीवन के नमक के गुणों को बनाए रखें और आपस में शांति से रहें।

25) संसार ऐसे मनुष्यों से भरा है जिनके पास जीवन का नमक नहीं है, और वे खो गए हैं। मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और बचाने आया हूं।

अच्छे चरवाहे और खोई हुई भेड का दृष्टान्त

26) आप कैसे सोचते हैं? यदि किसी चरवाहे की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक गई हो, तो क्या वह निन्यानवे को न छोड़ेगा,

27) और जो भटक गया है उसे खोजने के लिए जंगल के मार्गों और पहाड़ों की चोटियों में बाहर जाओ?

28) हाँ, यह आप जानते हैं; और यदि वह भटके हुए को पा जाए, तो वह आनन्दित होता है, और उन सब नब्बे नौ से कहीं अधिक आनन्दित होता है, जो पथभ्रष्ट न हुए थे।

29) और इस प्रकार स्वर्ग के आंगनों में आनन्द होता है जब मनुष्य जन्म में से एक जो पाप के मार्ग पर चला गया है, पाया जाता है और वापस तह में लाया जाता है;

30) हां, उन सभी धर्मी पुरुषों से अधिक आनंद, अधिक आनंद है, जो कभी भटके नहीं।

अंत - अच्छे चरवाहे और खोई हुई भेड का दृष्टांत

31) और यूहन्ना ने कहा, हे स्वामी, खोए हुओं को ढूंढ़कर कौन छुड़ा सकता है? और कौन बीमारों को चंगा करेगा, और दुष्टात्माओं को उन में से निकालेगा जो पागल हैं?

32) जब हम रास्ते में थे, तो हमने एक मनुष्य को देखा, जो हम में से नहीं था, जिसने दुष्टात्माओं को निकाला और बीमारों को चंगा किया।

33) उसने इसे पवित्र वचन और मसीह के नाम से किया? परन्तु हम ने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे संग न चला।

34) यीशु ने कहा, हे मनुष्यों के सन्तान, क्या तू कल्पना करता है कि परमेश्वर की सामर्थ तेरे पास है?

35) और क्या तुम सोचते हो कि परमेश्वर के कार्य करने के लिए सारे जगत् को तुम्हारी बाट जोहनी पड़ेगी?

36) ईश्वर मनुष्य नहीं है कि वह किसी व्यक्ति की विशेष देखभाल करे, और उसे विशेष उपहार दे।

37) किसी मनुष्य को परमेश्वर के काम करने से न मना करो।

38) कोई मनुष्य नहीं है जो पवित्र वचन का उच्चारण कर सकता है, और मसीह के नाम पर बीमारों को बहाल कर सकता है, और अशुद्ध आत्माओं को बाहर निकाल सकता है, जो परमेश्वर की संतान नहीं है।

39) जिस मनुष्य की तुम बात करते हो, वह हमारे साथ एक है। जो कोई स्वर्ग के दाने में बटोरता है, वह हमारे साथ एक है।

40) जो कोई मसीह के नाम पर एक प्याला पानी देता है, वह हमारे साथ एक है; तो परमेश्वर न्याय करेगा।

अध्याय 132

यीशु एक ऐसे व्यक्ति का बचाव करता है जिसे रोटी चुराने का दोषी ठहराया गया है। फैसला उलट जाता है। आदमी मुक्त हो जाता है, और लोग उसके भूखे परिवार की जरूरतों को पूरा करते हैं।

बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर उमड़ पड़े। अधिकारी रोटी चुराने के आरोपी एक व्यक्ति के साथ अदालत जा रहे थे।

2) और थोड़ी ही देर में उस व्यक्ति को दोष का उत्तर देने के लिये न्यायी के सामने लाया गया।

3) और यीशु और बारह वहां थे। उस आदमी ने अपने चेहरे और हाथों में परिश्रम और अभाव की कठोर खींची हुई रेखाएँ दिखाईं।

4) एक औरत जो बड़े कपड़े पहने हुए थी, जो उस पुरूष पर आरोप लगानेवाली थी, आगे खड़ी हुई, और कहा, मैं ने इस पुरूष को आप ही पकड़ लिया है: मैं उसे भली-भांति जानता हूं, क्योंकि कल वह रोटी मांगने आया था।

5) और जब मैं ने उसे अपके द्वार से खदेड़ दिया, तो वह जान लेता, कि मैं उसके तुल्य मनुष्य को शरण न दूंगा; और आज वह आकर रोटी ले गया।

6) वह चोर है और मैं मांग करता हूं कि उसे जेल भेजा जाए।

7) सेवकों ने भी उस आदमी के विरुद्ध गवाही दी; वह चोर ठहराया गया, और हाकिम उसे ले जा रहे थे।

8) परन्तु यीशु ने खड़े होकर कहा, हे हाकिमों और न्यायियों, इस मनुष्य को दूर ले जाने में जल्दबाजी न करो।

9) क्या यह न्याय और अधिकार की भूमि है? क्या आप लोगों पर आरोप लगा सकते हैं और उन्हें किसी अपराध के लिए सजा तब तक दे सकते हैं जब तक कि वे स्वयं गवाही न दें?

10) रोमन कानून इस तरह के उपहास की अनुमति नहीं देगा, और मैं मांग करता हूं कि आप इस आदमी को बोलने की अनुमति दें।

11) तब न्यायी ने उस व्यक्ति को स्मरण करके कहा, यदि तुझे कोई कहानी सुनानी हो, तो कह देना।

12) वह पुरूष आंसू बहाकर खड़ा हुआ, और कहने लगा, मेरी एक पत्नी और बाल बाल हैं, और वे रोटी के लिथे नाश हो रहे हैं, और मैं ने बार-बार अपनी कहानी सुनाई, और भीख मांगकर रोटी मांगी; लेकिन कोई नहीं सुनेगा।

13) आज सुबह जब मैं काम की तलाश में अपनी निडर झोपड़ी से निकला तो मेरे बच्चे रोटी के लिए रोए, और मैंने उन्हें खिलाने या मरने का फैसला किया।

14) मैं ने रोटी ली, और परमेश्वर से बिनती करता हूं, क्या यह अपराध था?

15) इस स्त्री ने रोटी छीनकर कुत्तों के आगे फेंक दी, और हाकिमों को बुलाया, और मैं यहां हूं।

16) अच्छे लोगों, जो कुछ तुम करना चाहते हो मेरे साथ करो, लेकिन मेरी पत्नी और बच्चों को मौत से बचाओ।

17) तब यीशु ने कहा, इस मामले में अपराधी कौन है?

18) मैं इस स्त्री को परमेश्वर की दृष्टि में अपराधी ठहराता हूं।

19) मैं इस न्यायाधीश को मानवाधिकारों की पट्टी के समक्ष अपराधी के रूप में आरोपित करता हूं।

20) मैं इन नौकरों और इन अधिकारियों को अपराध के पक्षकार के रूप में आरोपित करता हूं।

21) मैं कफरनहूम के लोगों पर क्रूरता और चोरी का आरोप लगाता हूं, क्योंकि उन्होंने दरिद्रता और अभाव की पुकार पर ध्यान नहीं दिया, और असहाय लोगों से जो उनका है उसे हर कानून के अनुसार रोक दिया है;

22) और मैं यहां इन लोगों से विनती करता हूं, और पूछता हूं, क्या मेरे आरोप धर्म और सच्चाई पर आधारित नहीं हैं?

23) और हर एक ने कहा, हां।

24) आरोपी महिला शर्म से शरमा गई; न्यायाधीश डर के मारे पीछे हट गया; सिपाहियों ने उस आदमी की बेड़ियां उतार दीं और भाग गए।

25) तब यीशु ने कहा, इस मनुष्य को वह दे, जिसकी उसे आवश्यकता है, और वह जाकर अपनी पत्नी और बाल-बच्चोंको खिलाए।

26) प्रजा ने बहुतायत से दिया; आदमी अपने रास्ते चला गया।

27) और यीशु ने कहा, अपराध का न्याय करने के लिए कोई मानक कानून नहीं है। तथ्यों को सभी को बताया जाना चाहिए क्योंकि किसी मामले में निर्णय दिया जा सकता है।

28) तुम दिलवाले हो; आगे जाकर यह मनुष्य कहां खड़ा हो गया, और मुझे उत्तर दे, कि तू क्या करेगा?

29) चोर हर दूसरे को चोर समझता है और उसी के अनुसार उसका न्याय करता है।

30) जो कठोर न्याय करता है वह वह व्यक्ति है जिसका हृदय अपराध से भरा है।

31) जो गणिका अपनी दुष्टता को, जिसे वह आदर कहती है, छिपाकर रखती है, उस ईमानदार वेश्या के लिए दया का शब्द नहीं है, जो अपने को ठीक होने का दावा करती है।

32) मैं तुमसे कहता हूं, पुरुषों, यदि आप पाप से मुक्त होने तक निंदा नहीं करेंगे, तो दुनिया जल्द ही शब्द का अर्थ भूल जाएगी, अभियुक्त।

अध्याय 133

बारह यरूशलेम में भोज में जाते हैं, लेकिन यीशु कफरनहूम में रहता है। वह सत्तर शिष्यों को चुनता है और उन्हें सिखाने और चंगा करने के लिए भेजता है। वह अकेले दावत में जाता है और रास्ते में दस कोढ़ियों को चंगा करता है। वह मंदिर में पढ़ाते हैं।

फसल की दावत निकट आ गई; वे बारह यरूशलेम को गए, परन्तु यीशु उनके संग न गया; वह कफरनहूम में ठहर गया।

2) उसके पीछे चलनेवाली भीड़ में बहुत से ऐसे थे जो पर्व में नहीं गए; वे यहूदी नहीं थे।

3) और यीशु ने इन चेलों में से तीन अंक और दस को अपने पास बुलाया और कहा, मसीह का राज्य केवल यहूदियों के लिए नहीं है; यह हर आदमी के लिए है।

4) देखो, मैं ने बारहों को चुना है कि पहिले यहूदियों को सुसमाचार सुनाएं; और वे यहूदी हैं।

5) यहूदियों की संख्या बारह और सब की संख्या सात है, जिसमें एक एक मनुष्य भी सम्मिलित है।

6) परमेश्वर दस, पवित्र जोद है।

7) जब ईश्वर और मनुष्य को गुणा किया जाता है तो हमारे पास तीन-अंक-दस, मनुष्य के भाईचारे की संख्या होती है।

8) और अब मैं तुम्हें दो-दो करके भेजता हूं; केवल यहूदियों के लिए नहीं, वरन स्वर्ग के नीचे की सब जातियों के लिथे; ग्रीक और असीरियन के लिए; सामरी को; समुद्र के पार वालों के लिए; हर आदमी को।

9) तुम्हें दूर जाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यहां और शोमरोन में हर देश के लोग हैं।

10) उठो और अपने मार्ग पर चलो; लेकिन विश्वास में जाओ; और न सोना चान्दी अपके बटुए में रखना; कोई अतिरिक्त कोट या जूते नहीं।

11) पवित्र नाम में जाओ; भगवान पर भरोसा रखें और आपको कभी कमी नहीं आएगी।

12) और सर्वत्र तेरा यही नमस्कार हो, सब को शान्ति मिले; सभी को अच्छी इच्छा।

13) और यदि मेल का पुत्र घर में हो, तो द्वार चौड़ा हो जाएगा, और तुम भीतर प्रवेश करोगे; तब उस घर में पवित्र शान्ति होगी।

14) सत्तर दो दो में निकले; वे शोमरोन को गए, और जाते-जाते कहने लगे, सब को कुशल से हो; सभी को अच्छी इच्छा!

15) मन फिराओ और पाप से फिरो, और अपने घर को व्यवस्थित करो, क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो मसीह का प्रतिरूप धारण करता है, आएगा, और तुम उसका मुख देखोगे।

16) वे शोमरोन के सब गाँवों में गए; उन्होंने सूर में और समुद्र के किनारे सैदा में प्रचार किया। कुछ क्रेते गए, और कुछ यूनान में, और कुछ लोग गिलियड गए और उपदेश दिया।

17) और यीशु अकेला ही पर्व में शोमरोन के मार्ग से गया; और जब वह सुखार से होते हुए मार्ग में गया, तब कोढ़ियोंने उसे और दूर से बुलाए गए दस लोगोंके जत्थे को देखकर कहा,

18) हे प्रभु यीशु, ठहरो और हमारे लिये वचन कहो, कि हम शुद्ध हो जाएं।

19) यीशु ने कहा, जा, और अपने आप को याजकोंको दिखा।

20) वे चले, और चलते-चलते उनका कोढ़ ठीक हो गया। दस में से एक, सामरिया का निवासी, स्वामी का धन्यवाद करने और यहोवा की स्तुति करने के लिए लौटा।

21) यीशु ने उस से कहा, सुन, दस शुद्ध हुए; नौ कहाँ हैं? उठो, और अपने मार्ग पर चलो; आपके विश्वास ने आपको संपूर्ण बना दिया है।

22) तू ने अपने हृदय को प्रगट किया है और दिखाया है कि तू शक्ति के योग्य है; निहारना, नौ फिर से अपने कोढ़ी हाथ और पैर पाएंगे।

23) और यीशु अपना मार्ग चला, और जब पर्ब्ब हो रहा था, तब वह यरूशलेम में आया, और मन्दिर के आंगन में गया।

24) और उसने शास्त्रियों और फरीसियों, याजकों और कानून के डॉक्टरों को उनके कपट और स्वार्थ के लिए फटकार लगाई।

25) आम लोग चकित थे; उन्होंने कहा, इस मनुष्य की बुद्धि कहां से आई है? वह एक ऋषि के रूप में बोलता है।

26) यीशु ने कहा, मैं ने उस पवित्र की बुद्धि को मनुष्योंकी शिक्षा में नहीं सीखा; मेरी शिक्षा मेरी नहीं है; जिस ने मुझे अपनी इच्छा पूरी करने के लिये यहां भेजा है, उसके वचन मैं कहता हूं।

27) यदि कोई जानता हो कि मैं कहां बोल रहा हूं, तो उसे परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी चाहिए। कोई भी मनुष्य नहीं जान सकता जब तक कि वह जीवन में प्रवेश न करे और परमेश्वर की इच्छा पूरी करे।

28) अब, मूसा ने व्यवस्था दी; परन्तु तुम में से किसी ने व्यवस्था का पालन नहीं किया; आप किसी भी आदमी की योग्यता का न्याय कैसे कर सकते हैं?

29) एक बार इन आंगनों में मैं ने सब्त के दिन एक मनुष्य को चंगा किया, और जलजलाहट में आकर तुम ने मेरे प्राण लेने की चेष्टा की; और अब क्योंकि मैं सच कहता हूं, तुम फिर से मेरा प्राण लेना चाहते हो।

30) एक शास्त्री ने कहा, हे मूढ़ मनुष्य, तू मोहग्रस्त है; कौन आपकी जान लेना चाहता है?

31) सामान्य लोगों ने कहा, क्या यह यीशु नहीं है जिसे शासकों ने लंबे समय से मारने की कोशिश की है? और अब वह आकर मन्दिर के आंगनों में उपदेश करता है।

32) यदि वह ऐसे जघन्य अपराधों का दोषी है, तो वे उसे जंजीरों में जकड़ कर क्यों नहीं ले जाते?

33) यीशु ने कहा, तुम सब मुझे जानते हो, और जानते हो कि मैं कहां से आया हूं; परन्तु तुम उस परमेश्वर को नहीं जानते जिस ने मुझे यहां भेजा है, जिसके वचन मैं कहता हूं।

34) भीड़ फिर से उसके बचाव में खड़ी हो गई; उन्होंने कहा, यदि यह वह मसीह नहीं है जिसे परमेश्वर ने मनुष्यों पर प्रकट करने की प्रतिज्ञा की है, तो क्या वह आने पर इस मनुष्य से भी बड़े काम करेगा?

35) फरीसी और शासक याजक क्रोधित हो गए और उन्होंने अपने अधिकारियों को उसे लेने के लिए भेजा, क्योंकि वह चला गया था। अधिकारी भय से भर गए; उन्होंने उसे नहीं पकड़ा।

36) यीशु ने कहा, देख, मैं तो थोड़े ही समय के लिए यहां हूं, और फिर जिस ने मुझे अपनी इच्छा पूरी करने को यहां भेजा है, उसके पास चला जाता हूं।

37) तुम मुझे अभी ढूंढ़ते हो, और तुम मुझे अभी पा सकते हो; वह समय आएगा जब तुम ढूंढ़ोगे और पाओगे, क्योंकि जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते।

38) लोगों ने कहा, वह कहां जाएगा, कि लोग उसे न पा सकें? क्या वह यूनान जाकर यूनानियों को शिक्षा देगा? या वह मिस्र या अश्शूर को उपदेश देने जाएगा?

39) परन्तु यीशु ने उत्तर नहीं दिया; भीड़ की ओर ध्यान न देकर वह मन्दिर के आंगनों को छोड़ कर चला गया।

अध्याय 134

यीशु मंदिर में शिक्षा देते हैं। उनकी बातों से शासकों में रोष है। नीकुदेमुस उसका बचाव करता है। वह जैतून पर्वत पर प्रार्थना में रात बिताता है। अगले दिन वह फिर से मंदिर में पढ़ाता है। एक व्यभिचारिणी को उसके सामने न्याय के लिए लाया जाता है।

अब पर्ब्ब के अन्तिम दिन जब बहुत लोग आंगन में थे, तब यीशु ने कहा,

2) जो कोई प्यासा हो वह मेरे पास आकर पी ले।

3) जो मुझ पर और उस मसीह पर, जिसे परमेश्वर ने भेजा है, विश्वास करता है, वह जीवन का प्याला पीएगा, और उसके भीतरी अंगों से जीवन के जल की धाराएं बहेंगी।

4) पवित्र सांस उस पर छा जाएगी, और वह सांस लेगा, और शब्द बोलेगा, और जीवन जिएगा।

5) लोग उसके विषय में अपने विचारों में विभाजित थे। कितनों ने कहा, यह मनुष्य जीवते परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता है।

6) औरों ने कहा, वह मसीहा है, जिसके बारे में हमारे भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था, वह आएगा।

7) औरों ने कहा, वह मसीह नहीं हो सकता, क्योंकि वह गलील से आया है; मसीह बेतलेहेम से आना चाहिए जहां दाऊद रहता था।

8) फिर याजकों और फरीसियों ने उसके प्राण देने के लिथे उसे आंगन में लाने के लिथे हाकिमोंको भेजा; परन्तु जब हाकिम लौटकर उसे न लाए,

9) हाकिमों ने क्रुद्ध होकर कहा, तू ने इस मनुष्य को पकड़कर न्यायालय में क्यों नहीं डाला?

10) सिपाहियों ने उत्तर दिया, हम ने कभी किसी मनुष्य को ऐसा बोलते नहीं सुना जैसा यह व्यक्ति बोलता है।

11) फरीसियों ने क्रोध में आकर खड़े होकर कहा, क्या तू पागल हो गया है? क्या आपको गुमराह किया गया है? क्या तुम इस आदमी के चेले हो?

12) क्या किसी शासक या फरीसियों ने उस पर विश्वास किया है? आम लोग! हाँ, वे विश्वास कर सकते हैं; वे शापित हैं; वे कुछ नहीं जानते।

13) परन्तु नीकुदेमुस हाकिमोंके साम्हने आकर कहने लगा, क्या यहूदी न्यायी किसी मनुष्य का न्याय करके उसको तब तक दण्ड दे सकते हैं जब तक कि वे उसकी बिनती न सुन लें? यीशु को इस बार के सामने खड़े होने दो और अपनी गवाही दो।

14) हाकिमोंने कहा, यह यीशु तो धूर्त है, और यदि हम उसको बोलने को कहें, तो वह हम को साम्हने डांटेगा, तब भीड़ हंसकर उसके बचाव में खड़ी होगी।

15) और तुम भी जानते हो, कि हम भी, कि भविष्यद्वक्ता गलील से नहीं आते।

16) हाकिमों और नीकुदेमुस ने जो कुछ कहा, उसका प्रभाव शासकों ने महसूस किया, और उन्होंने और कुछ नहीं कहा।

17) तब सब लोग अपके चले; परन्तु यीशु जैतून पहाड़ पर गया, जहां उसने प्रार्थना में रात बिताई।

18) परन्तु बिहान को जब सूरज नहीं निकला, तब यीशु फिर आया, और बहुत से लोग उसे मन्दिर के आंगन में देखने आए, और वह बैठकर लोगों को उपदेश देने लगा।

19) फरीसी और शास्त्री अभी भी एक कारण खोजने के लिए सतर्क थे जिससे वे उसके द्वारा कहे गए शब्दों के द्वारा उसे दोषी ठहरा सकें।

20) अधिकारियों ने अपराध के कृत्य में, एक वेश्या को लिया था। जैसा यीशु ने शिक्षा दी, वे इस स्त्री को ले आए और बीच में बिठाकर कहा,

21) रब्बोनी, इस नीच स्त्री को व्यभिचार में लिया गया है। मूसा की व्यवस्था कहती है कि जैसा वह मरेगी, वैसा ही पत्थरवाह किया जाएगा; आप क्या कहते हैं उसकी सजा क्या होनी चाहिए?

22) और यीशु ने झुककर भूमि पर एक आकृति बनाई, और उसमें एक प्राण का अंक रखा, और फिर वह चुपचाप बैठा रहा।

23) और जब याजकोंने मांग की कि वह बोलें, तो उस ने कहा, जो पापी न हो वह खड़ा हो, और पहिले उस पर पत्यर मारे।

24) और फिर उसने अपनी आंखें बंद कर लीं, और एक भी शब्द नहीं कहा गया। जब वह उठा, और उस स्त्री को बिलकुल अकेला देखा, तो उस ने कहा,

25) वे लोग कहाँ हैं जो तुम्हें यहाँ लाए हैं? वे जिन्होंने आरोप लगाया?

26) स्त्री ने कहा, वे सब चले गए; यहां कोई नहीं था जो निंदा कर सके।

27) यीशु ने कहा, और मैं तुझे दोषी नहीं ठहराता; कुशल से अपने मार्ग पर चलो, और फिर पाप न करना।

अध्याय 135

यीशु मंदिर में शिक्षा देते हैं। वह क्रिस्टीन मंत्रालय के कुछ गहरे अर्थों को प्रकट करता है। शासक बहुत क्रोधित होते हैं और उस पर पथराव करने का प्रयास करते हैं, लेकिन वह गायब हो जाता है।

दावत हो चुकी थी और यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना मंदिर के भण्डार में बैठे थे।

2) वे नौ लोग कफरनहूम वापस चले गए थे।

3) लोगों ने मन्दिर के प्रांगणों में भीड़ जमा कर दी और यीशु ने कहा,

4) मैं दीपक हूँ; मसीह जीवन का तेल है; पवित्र श्वास अग्नि। प्रकाश निहारना! और जो मेरे पीछे हो ले वह अन्धकार में न चले, परन्तु उसके पास जीवन की ज्योति होगी।

5) एक वकील ने कहा, तुम खुद गवाह हो, तुम्हारी गवाही सच नहीं है।

6) यीशु ने कहा, यदि मैं अपनी गवाही दूं, तो वही कहता हूं जो सच है, क्योंकि मैं जानता हूं, कि मैं कहां से आया हूं और कहां जाता हूं।

7) और शरीर में कोई और मेरी गवाही नहीं दे सकता, क्योंकि कोई नहीं जानता कि मैं कहां से आया, और किधर को जाता हूं।

8) मेरे काम मेरे द्वारा बोले गए सत्य की गवाही देते हैं। मनुष्य के रूप में मैं पवित्र श्वास के शब्द नहीं बोल सकता था; और तब मेरा पिता मेरी गवाही देता है।

9) वकील ने कहा, तुम्हारे पिता कहाँ रहते हैं?

10) यीशु ने कहा, तुम मुझे नहीं जानते, नहीं तो मेरे पिता को भी जान लेते, और यदि पिता को जानते तो पुत्र को भी जान लेते, क्योंकि पिता और पुत्र एक ही हैं।

11) मैं अपके मार्ग पर जाता हूं, और तुम मुझे न पाओगे; क्योंकि जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते, क्योंकि तुम मार्ग नहीं जानते।

12) तुम्हें रास्ता नहीं मिल सकता क्योंकि तुम्हारे दिल स्थूल हैं, तुम्हारे कान सुस्त हैं, तुम्हारी आंखें बंद हैं।

13) जीवन का प्रकाश उस धुंधले पर्दे से नहीं चमक सकता जो आपने अपने दिलों के बारे में खींचा है।

14) तुम मसीह को नहीं जानते और यदि मसीह हृदय में न हो तो प्रकाश नहीं होता।

15) मैं मनुष्यों पर मसीह को प्रगट करने आता हूं, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते, और जब तक तुम मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते, तब तक तुम अन्धकार में और कब्र की छाया में निवास करोगे।

16) परन्तु तू मनुष्य के पुत्र की निन्दा करेगा, और उसे उठाकर, और उसको मरता हुआ देखने के लिथे हंसेगा।

17) लेकिन तब थोड़ी रोशनी आएगी और तुम जान लोगे कि जो मैं हूं वह मैं हूं।

18) लोगों ने उसकी कही हुई बातों का अर्थ नहीं समझा।

19) फिर उस ने उन लोगों से जो उस पर विश्वास किया, कहा, यदि तुम मसीह में बने रहो, और मसीह तुम में बने रहो, और मेरे वचनों को अपने हृदय में रखो,

20) मार्ग तू ही है, मार्ग में तू चेला है, और तू जान लेगा कि सत्य क्या है, और सत्य तुझे स्वतंत्र करेगा।

21) फिर भी लोग न समझे; उन्हों ने कहा, हम तो इब्राहीम के वंश से हैं, और अब स्वतंत्र हैं; हम कभी किसी आदमी के गुलाम नहीं थे; तुम क्यों कहते हो, हम स्वतंत्र होंगे?

22) यीशु ने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है? पाप के बंधन में रहता है?

23) यदि आप पाप नहीं करते हैं तो आप स्वतंत्र हैं; परन्तु यदि तुम मन, वा वचन, वा कर्म से पाप करते हो, तो दास हो, और कुछ भी नहीं, परन्तु सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर सकता है; यदि आप मसीह के द्वारा स्वतंत्र हैं, तो आप वास्तव में स्वतंत्र हैं।

24) तुम इब्राहीम के वंश हो, और फिर भी तुम मुझे मार डालना चाहते हो, क्योंकि मैं इब्राहीम की सच्चाई कहता हूं।

25) तुम इब्राहीम के शरीर की सन्तान हो; परन्तु, देखो, मैं कहता हूं, एक आत्मिक इब्राहीम है, जिसे तुम नहीं जानते।

26) आत्मा में तुम अपने पिता की सन्तान हो, और तुम्हारा पिता दीबोलोस है; तुम उसके वचनों पर टिके रहो और उसकी इच्छा पूरी करो।

27) वह पहले से ही हत्यारा था; वह सच नहीं बोल सकता, और जब वह झूठ बोलता है तो अपनी बात बोलता है; वह आप ही झूठ है, और वह आप ही का पिता है।

28) यदि तुम मेरे परमेश्वर पिता की सन्तान होते, तो परमेश्वर के वचनों को सुन पाते; मैं परमेश्वर के वचन बोलता हूं, लेकिन तुम उन्हें नहीं सुन सकते।

29) एक फरीसी ने खड़े होकर कहा, यह हम में से नहीं है, यह शापित सामरी है और मोहग्रस्त है।

30) परन्तु यीशु ने फरीसी या शास्त्री की बातों पर ध्यान नहीं दिया; वह जानता था कि सभी लोग जानते हैं कि वह एक यहूदी है।

31) फिर उस ने कहा, जो कोई मेरी बातों पर चलेगा, वह कभी न मरेगा।

32) एक वकील ने कहा, और अब हम जानते हैं कि वह जुनूनी है। हमारा पिता इब्राहीम मर गया है; भविष्यद्वक्ता सब मर गए, तौभी यह मनुष्य कहता है, कि जो कोई मेरी बातों पर चलेगा, वह कभी न मरेगा।

33) क्या यह आदमी हमारे पिता इब्राहीम से बड़ा है? क्या वह नबियों से ऊपर है? और वे सभी मर चुके हैं।

34) यीशु ने कहा, तेरा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखकर आनन्दित हुआ; उसने देखा और खुश हुआ।

35) वकील ने कहा, हे साधारण मनुष्य; आप पचास वर्ष के नहीं हैं; क्या तुमने अब्राहम को देखा है?

36) यीशु ने कहा, इब्राहीम के दिनों से पहिले मैं हूं।

37) फिर शास्त्री और फरीसी क्रोधित हो उठे; उन्होंने उसे मारने के लिथे पत्यर उठाए, परन्तु वह रात के प्रेत की नाईं ओझल हो गया; लोग नहीं जानते थे कि वह कहाँ गया था।

अध्याय 136

यीशु मंदिर में शिक्षा देते हैं। अच्छे सामरी के दृष्टान्त से संबंधित है। बेथानी जाता है। लाजर के घर में पढ़ाता है। इस जीवन की चीजों के बारे में चिंता के लिए मार्था को फटकार लगाता है।

और यीशु फिर मन्दिर के आंगन में खड़ा होकर उपदेश देने लगा।

2) कानून के एक मास्टर को उससे पूछताछ करने के लिए भेजा गया था ताकि वह उसे निंदा करने और अपराध का आरोप लगाने का कारण ढूंढ सके।

3) उस ने कहा, हे प्रभु, मुझे बता कि मैं क्या करूं, कि मैं अनन्त जीवन पाऊं?

4) यीशु ने कहा, तुम व्यवस्था को जानते हो; यह क्या कहता है?

5) वकील ने उत्तर दिया, तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन से, और अपनी सारी आत्मा से, अपनी सारी शक्ति से, और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।

6) यीशु ने कहा, सुन, तू ने अच्छा उत्तर दिया; यह करो और तुम जीवित रहोगे।

7) वकील ने कहा, मेरे पड़ोसी, वह कौन है?

अच्छे सामरी का दृष्टान्त

8) यीशु ने कहा, एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा या, और देखो, मार्ग में उसकी भेंट पथ में डाकुओं से हुई, जिन्होंने उसे पीटा, और उसका माल लूट लिया, और मार्ग में उसका लहू बहा दिया।

9) एक फरीसी उस ओर जा रहा था; उसने घायल आदमी को देखा; लेकिन तब उसके पास हारने का समय नहीं था; वह दूसरी तरफ से गुजरा।

10) एक लेवीय ने आकर उस पुरूष को देखा; परन्तु वह अपके पवित्र वस्त्रोंको मिट्टी से घिसने से घिन करता था, और वह वहां से होकर चला।

11) एक वकील ने यरीहो को जाते समय उस मरते हुए को देखा, और उस ने कहा, यदि मैं एक शेकेल बनाऊं तो उस मनुष्य की सहायता कर सकता हूं; परन्तु उसके पास देने को कुछ नहीं बचा, मेरे पास दान करने का समय नहीं; और वह चला गया।

12) तब शोमरोन से एक परदेशी आया; उसने घायल आदमी को देखा; उसके हृदय को तरस आया, और वह रुक गया, अपने घोड़े पर से उतर गया,

13) उस आदमी को जीवित किया और उसे अपने घोड़े पर बिठाया और उसे एक सराय में ले गया और सराय के रखवाले को उसे वापस ताकत देने के लिए कहा।

14) उस ने रखवाले को वह सारा रुपया दे दिया, जो उसके पास था, और कहा, तेरी फीस इससे अधिक हो सकती है, परन्तु इस अभागे की चिन्ता करना, और जब मैं फिर आऊंगा, तो सब कुछ दे दूंगा; और फिर वह अपने रास्ते चला गया।

15) अब, कानून के स्वामी, इन चारों में से कौन चोरों के बीच पड़ने वाले का पड़ोसी था?

16) वकील ने कहा, जिस ने उस पर दया की, उस ने कहा; वह जो उसकी देखभाल करता था।

17) यीशु ने कहा, चल, और वैसा ही कर, तब तू जीवित रहेगा।

अंत - अच्छे सामरी का दृष्टान्त

18) अब, यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना बेथानी को गए जहाँ लाजर रहता था।

19) और मरियम यीशु के चरणों में बैठ गई और उसे मार्था की सेवा के दौरान जीवन के वचन बोलते हुए सुना।

20) और मार्था ने पुकारा, परन्तु मरियम ने यहोवा को उसकी सेवा में सहायता करने के लिये नहीं छोड़ा।

21) मार्था ने यीशु से कहा, क्या तुझे इस बात की चिन्ता नहीं, कि मरियम मुझ पर दिन भर की सेवा का भार उठाती है? मैं विनती करता हूं कि आप उसकी मदद की बोली लगाएंगे।

22) यीशु ने कहा, हे मार्था, तू अपके अतिथियोंके लिथे बहुत चिन्तित है; आपको जीवन की चीजों के बारे में परेशान होने की आवश्यकता नहीं है।

23) आप छोटी-छोटी चीजों की देखभाल से थक जाते हैं और सबसे ज्यादा जरूरत एक चीज को कम कर देते हैं।

24) तुम्हारी बहन ने यहाँ सबसे अच्छा हिस्सा चुना है, एक ऐसा हिस्सा जिसे कोई नहीं छीन सकता।

अध्याय 137

यीशु और उनके शिष्य प्रार्थना करने के लिए एक सेवानिवृत्त स्थान पर जाते हैं। यीशु लाजर को प्रार्थना करना सिखाता है। आदर्श प्रार्थना। महत्वपूर्ण प्रार्थना का मूल्य। महत्वहीन गृहिणी का दृष्टान्त।

अब, शाम को यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना, लाजर के साथ, प्रार्थना करने के लिए गाँव के फाटकों से बाहर निकल गए। और लाजर ने कहा, मुझे प्रार्थना करना सिखा।

आदर्श प्रार्थना

2) यीशु ने कहा, जब हम गलील में थे, तब जो प्रार्थना मैं ने बारहोंको करना सिखाया, वह परमेश्वर को भाती है; और जब तुम प्रार्थना करो तो बस कहो,

3) **हमारे पिता-ईश्वर जो स्वर्ग में कला करते हैं;**

तेरा नाम पवित्र है;

तुम्हारा राज्य आओ;

तेरी इच्छा पृय्वी पर वैसी ही पूरी की जाएगी जैसी स्वर्ग में की जाती है;

4) **आज के दिन हमें हमारी आवश्यक रोटी दो;**

5) **हमें उन ऋणों को भूलने में मदद करें जो अन्य लोगों ने हमारे ऊपर दिए हैं, ताकि हमारे सभी ऋणों का निर्वहन किया जा सके;**

6) **और हम को परीक्षा करनेवाले के उन फन्दों से बचा ले, जो हम सह नहीं सकते;**

7) **और जब वे आएं, तो हमें विजयी होने की शक्ति दें।**

8) यीशु ने कहा, तेरी प्रार्थना का उत्तर थोड़े समय में पूरा न हो।

9) निराश न हों; बार-बार प्रार्थना करो, क्योंकि परमेश्वर सुनेगा।

महत्वपूर्ण गृहिणी का दृष्टान्त

10) और फिर उसने एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, रात को एक गृहिणी अकेली थी, और देखो, कितने अतिथि आए, और वे भूखे थे, और उनके पास दिन भर कुछ न रहा।

11) उस गृहिणी के पास रोटी न थी, सो आधी रात को वह निकलकर एक मित्र को बुलाकर कहने लगी, मुझे तीन रोटियां उधार दे, क्योंकि अतिथि आए हैं, और मेरे पास उनके खाने को कुछ नहीं है।

12) मित्र ने उत्तर दिया, तुम मुझे आधी रात को क्यों परेशान करते हो? मेरा दरवाजा बंद है; मेरे बच्चे बिस्तर पर मेरे साथ हैं; मैं तुम्हें रोटी देने के लिए नहीं उठ सकता; कल आपूर्ति की जा सकती है।

13) गृहिणी ने फिर पूछा, और फिर फिर, और फिर क्योंकि उसने प्रतिज्ञा की, और मना नहीं किया, तो मित्र ने उठकर उसे रोटी दी।

अंत - महत्वपूर्ण गृहिणी का दृष्टांत

14) देखो, मैं तुम से कहता हूं, दृढ़ता से मांगो तो तुम्हें मिलेगा; विश्वास से खोजो तो तुम पाओगे; जोर से दस्तक दो, दरवाजा खुल जाएगा।

15) सब कुछ तुम्हारा है, और जब तुम मांगोगे, तो भिखारी की नाईं नहीं, पर बालक की नाईं तृप्त हो जाओगे।

16) पुत्र अपने पिता से एक रोटी मांग सकता है; पिता उसे पत्थर न देगा;

17) या वह उससे मछली मांग सकता है; वह केकड़ा नहीं देगा; या वह उससे एक अंडा मांग सकता है; पिता नाले में से एक कंकड़ न देगा।

18) देखो, यदि मांस के लोग शरीर के बच्चों को बहुतायत से देना जानते हैं, तो क्या तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हें प्रार्थना के समय बहुतायत से नहीं देगा?

अध्याय 138

यरूशलेम में क्रिस्टीन। वे जन्म से अंधे व्यक्ति से मिलते हैं। यीशु रोग और विपत्तियों के कारणों पर एक पाठ पढ़ाते हैं। वह अंधे को चंगा करता है।

प्रभु पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ यरूशलेम में थे; सब्त का दिन था।

2) और मार्ग में चलते चलते उन्होंने एक मनुष्य को देखा जो देख नहीं सकता था; वह जन्म से अंधा था।

3) और पतरस ने कहा, हे प्रभु, यदि रोग और अपरिपूर्णता सब पाप के कारण हैं, तो इस मामले में पापी कौन था? माता-पिता या खुद आदमी?

4) और यीशु ने कहा, क्लेश सब कुछ कर्ज़, या कर्ज़, जो किए गए हैं, पर आंशिक भुगतान है।

5) प्रतिकर का एक नियम है जो कभी विफल नहीं होता है, और इसे जीवन के उस सच्चे नियम में संक्षेपित किया गया है:

6) जो कुछ मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य के साथ करेगा, वह कोई दूसरा मनुष्य उसके साथ करेगा।

7) इसमें हम यहूदी कानून का अर्थ पाते हैं, जिसे शब्दों में संक्षेप में व्यक्त किया गया है, टूथ फॉर ए टूथ; जीवन के लिए जीवन।

8) जो किसी को मन, वचन, या कर्म से हानि पहुँचाता है, वह व्यवस्था का ऋणी ठहराया जाता है, और उसी प्रकार कोई अन्य व्यक्ति भी उसे मन, वचन या कर्म से हानि पहुँचाता है।

9) और जो किसी मनुष्य का लोहू बहाएगा, वह उस समय आएगा, जब उसका लोहू मनुष्य द्वारा बहाया जाएगा।

10) क्लेश एक जेल की कोठरी है जिसमें एक आदमी को तब तक रहना चाहिए जब तक कि वह अपने कर्ज का भुगतान नहीं कर देता, जब तक कि कोई मालिक उसे मुक्त नहीं कर देता है कि उसके पास अपने कर्ज का भुगतान करने का बेहतर मौका हो।

11) क्लेश एक निश्चित संकेत है कि किसी के पास चुकाने के लिए कर्ज है।

12) इस आदमी को देखो! एक बार दूसरे जीवन में वह एक क्रूर आदमी था, और एक क्रूर तरीके से एक साथी आदमी की आंखों को नष्ट कर दिया।

13) इस आदमी के माता-पिता ने एक बार एक अंधे और असहाय आदमी से मुंह मोड़ लिया और उसे अपने दरवाजे से निकाल दिया।

14) तब पतरस ने पूछा, जब वचन के द्वारा उन्हें चंगा करते हैं, अशुद्ध आत्माओं को निकाल देते हैं, या उन्हें किसी प्रकार के संकट से बचाते हैं, तो क्या हम दूसरों का कर्ज चुकाते हैं?

15) यीशु ने कहा, हम तो किसी का कर्ज नहीं चुका सकते, परन्तु वचन के द्वारा मनुष्य को उसके क्लेश और संकट से छुड़ा सकते हैं।

16) और उसे स्वतन्त्र कर दे, कि वह अपना कर्ज़ चुका दे, और अपना प्राण स्वेच्छा से मनुष्योंके वा अन्य प्राणियोंके बलिदान में दे दे।

17) देखो, हम इस मनुष्य को स्वतंत्र कर सकते हैं, कि वह जाति की सेवा और कर्तव्य पूरा करे।

18) तब यीशु ने उस मनुष्य को बुलाकर कहा, क्या तू स्वतंत्र होगा? क्या आप अपनी दृष्टि प्राप्त करेंगे?

19) उस मनुष्य ने उत्तर दिया, कि जो कुछ मेरे पास है, यदि मैं देख सकता हूं, तो वह सब कुछ दे देता हूं।

20) और यीशु ने लार और थोड़ी सी मिट्टी लेकर एक नमक बनाया, और उस अंधे की आंखों पर रख दिया।

21) उस ने वचन सुनाया, और कहा, शीलोआम में जाकर धो, और धोते हुए कह, कि यहहेवा। ऐसा सात बार करें और आप देखेंगे।

22) वह व्यक्ति शीलोआम तक ले जाया गया; और उस ने आंखें धोकर वचन कहा, और तुरन्त उसकी आंखें खुल गईं, और उस ने देखा।

23) जिन लोगों ने उस व्यक्ति को कई वर्षों से रास्ते में बैठकर भीख मांगते देखा था, वे उसे देखकर बहुत चकित हुए।

24) उन्होंने कहा, क्या यह अय्यूब नहीं है जो अंधा पैदा हुआ था, जो मार्ग के किनारे बैठकर भीख माँगता था?

25) उसने उन्हें आपस में बातें करते सुना; उसने कहा, हां मैं वह हूं।

26) लोगों ने पूछा, तुम कैसे चंगे हो गए? तुम्हारी आँखें किसने खोली?

27) उस ने कहा, जिस मनुष्य को लोग यीशु कहते हैं, उस ने मिट्टी की लोई बनाकर मेरी आंखों पर लगाई, और मुझ से कहा, कि एक बात कहूं, और शीलोआम में सात बार धोऊं; जैसा उस ने मुझे आज्ञा दी, मैं ने वैसा ही किया, और अब मैं देखता हूं।

28) एक शास्त्री वहां से गुजर रहा था, और उस ने उस पुरूष को देखकर यह कहते सुना, कि यीशु ने वचन के द्वारा अपनी आंखें खोल दी हैं।

29) इसलिए वह उस व्यक्ति को आराधनालय में ले गया, और याजकों को कहानी सुनाई, जिन्होंने उस व्यक्ति से चमत्कार के बारे में पूछा।

30) उस ने उत्तर दिया, कि मैं ने उजियाला आज तक कभी नहीं देखा, क्योंकि मैं जन्म से अन्धा था।

31) आज सवेरे जब मैं शीलोआम के पास बैठा, तो उस मनुष्य ने जिसे मैं कभी नहीं जानता था, मेरी आंखों पर ऐसा लोटा लगाया, कि लोग कहते हैं कि वह मिट्टी का बना हुआ है; उस ने मुझ से एक बात कह कर सात बार मेरी आंखों को जल से स्नान कराने को कहा; उसकी आज्ञा के अनुसार मैं ने किया और मैं ने देखा।

32) एक वकील ने उस आदमी से पूछा, वह कौन था जिसने तुम्हारी आँखें खोल दीं?

33) उस ने उत्तर दिया, कितने लोग कहते हैं, कि उसका नाम यीशु है, और वह गलील से आया है; परन्तु दूसरे कहते हैं, वह परमेश्वर का पुत्र है।

34) एक फरीसी ने आकर कहा, यह सब्त का दिन है; जो मनुष्य सब्त के दिन के विषय में ऐसा काम करता है, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है।

35) कितनों याजकों ने बहुत चकित होकर कहा, दुष्ट मनुष्य ऐसा चमत्कार कभी नहीं कर सकता; उसके पास परमेश्वर की शक्ति होनी चाहिए। और इसलिए वे आपस में संघर्ष करते रहे।

36) उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा, गलील के इस व्यक्ति के बारे में आप क्या सोचते हैं?

37) उस ने कहा, वह परमेश्वर की ओर से भेजा गया भविष्यद्वक्ता है।

38) अब, बहुत से यहूदी यह नहीं मानते थे कि वह आदमी जन्म से अंधा था; उन्होंने कहा, जन्म से अंधे की आंखें खोलने की शक्ति नहीं है।

39) तब वे उस मनुष्य के माता-पिता को फरीसियों के साम्हने ले आए, कि वे गवाही दें।

40) उन्होंने कहा, यह हमारा पुत्र है जो अन्धा पैदा हुआ है; हम नहीं जानते कि उसकी दृष्टि कैसे हुई; वह उम्र का है और वह बता सकता है; उससे पूछो।

41) वे यह कहने से डरते थे कि वे क्या विश्वास करते हैं, कि यीशु ही वह मसीह है जो परमेश्वर की शक्ति को प्रकट करने के लिए आया था, ऐसा न हो कि वे याजकों को नाराज करें और आराधनालय से निकाल दिए जाएं।

42) हाकिमोंने फिर कहा, यह यीशु दुष्ट है। वह मनुष्य जो चंगा हो गया था, फिर खड़ा हुआ और कहा,

43) यह यीशु पापी हो सकता है या संत हो सकता है, मैं नहीं जानता; लेकिन यह एक बात मुझे पता है; मैं एक बार अंधा था, लेकिन अब मैं देखता हूं।

44) तब शास्त्रियोंऔर फरीसियोंने उस मनुष्य की निन्दा करके कहा, तू गलील के इस मनुष्य का अनुयायी है। हम मूसा का अनुसरण करते हैं, परन्तु यह मनुष्य, हम उसे नहीं जानते, और नहीं जानते कि वह कहाँ का है।

45) उस मनुष्य ने उत्तर दिया, यह आश्चर्य की बात है कि तुम नहीं जानते कि वह कहां का है, तौभी उस ने मेरी आंखें खोल दीं।

46) आप जानते हैं कि ईश्वर की शक्ति के अलावा कुछ भी ऐसा नहीं कर सकता।

47) परमेश्वर पापियों की प्रार्थना नहीं सुनता, और तुम्हें पता होना चाहिए कि वह एक दुष्ट व्यक्ति नहीं है जो परमेश्वर की शक्ति का उपयोग कर सकता है।

48) फरीसियों ने उत्तर दिया, हे अभागे! तुम पैदा हुए थे और पाप में पैदा हुए थे, और अब तुम हमें कानून सिखाने की कोशिश करते हो। तब उन्होंने उसे आराधनालय से निकाल दिया।

अध्याय 139

यीशु उस आदमी से मिलते हैं और निर्देश देते हैं जो अंधा था। राज्य के रहस्यों को उजागर करता है। भेड़शाला। खुद को चरवाहा घोषित करता है। मस्सालियन के घर जाता है, जहाँ वह कुछ दिनों तक रहता है।

जब यीशु ने सुना कि क्या हुआ है, और याजकों ने उस मनुष्य को जिसे उस ने चंगा किया था, किस रीति से निकाल दिया, तब उस ने उस को पाकर उस से कहा,

2) क्या आप ईश्वर और ईश्वर के पुत्र में विश्वास करते हैं?

3) उस मनुष्य ने उत्तर दिया, मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूं; परन्तु वह कौन है, जो परमेश्वर का पुत्र है, जिसके विषय में तुम बोलते हो?

4) यीशु ने कहा, परमेश्वर का पुत्र वह है जो तुझ से बातें करता है।

5) उस ने उस से पूछा, कि तू परमेश्वर का पुत्र क्यों कहता है? वहाँ है लेकिन एक?

6) यीशु ने कहा, सब मनुष्य जन्म से परमेश्वर के सन्तान हैं; परमेश्वर जाति का पिता है; परन्तु सब विश्वास से परमेश्वर के पुत्र नहीं हैं।

7) जो स्वयं पर विजय प्राप्त करता है, वह विश्वास के द्वारा परमेश्वर का पुत्र है, और जो तुझ से बातें करता है, वह जय प्राप्त करता है, और वह परमेश्वर का पुत्र कहलाता है, क्योंकि वह मनुष्यों के लिए आदर्श है।

8) जो विश्वास करता है और परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह विश्वास से परमेश्वर का पुत्र है।

9) वह पुरुष आनन्द से बोला, हे प्रभु, मैं परमेश्वर पर और परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता हूं।

10) यीशु ने कहा, मैं बन्दीगृह के द्वार खोलने आया हूं, कि अन्धोंको दिखाऊं; परन्तु देखो, फरीसी जन्म से अंधे हैं।

11) और जब मैं उन की आंखों पर सत्य का लोढ़ा रखूंगा, और उन्हें जाने और धोकर पवित्र वचन बोलने को कहूं, तब वे नहीं जाएंगे; वे अंधेरे से प्यार करते हैं।

12) लोगों की भीड़ ने यहोवा के विषय में दबाव डाला, और वह खड़ा हुआ, और कहने लगा,

यीशु चरवाहा और भेड़शाला

13) हे इस्त्राएलियों, मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का मण्डल बड़ा है; उसकी शहरपनाह दृढ़ है, उसका द्वार पूर्व की ओर है, और वह जो फाटक से तह में प्रवेश नहीं करता, वरन दूसरी ओर से तह में चढ़ जाता है, वह चोर है, और लूटने को आता है।

14) भेड़ों का चरवाहा फाटक के पास खड़ा रहता है; वह गुप्त संकेत देता है; वह दस्तक देता है; चौकीदार गेट खोलता है।

15) और फिर चरवाहा अपनी भेड़ों का नाम लेकर पुकारता है; वे उसका शब्द सुनते और उसके पीछे हो लेते हैं; वे फाटक से तह में प्रवेश करते हैं।

16) भेड़ें किसी अजनबी का शब्द नहीं जानतीं; वे उसका अनुसरण नहीं करेंगे; वे भाग जाते हैं।

17) लोगों ने उस दृष्टान्त को नहीं समझा जो यीशु ने कहा था; और फिर उसने कहा,

18) मसीह तह का द्वार है; मैं भेड़ों का चरवाहा हूं, और जो मसीह के द्वारा मेरे पीछे हो लेता है, वह उस झुंड में आएगा जहां जीवित जल बहता है, और जहां समृद्ध चरागाह हैं।

19) झूठे भविष्यद्वक्ता आते हैं और चले जाते हैं; वे भेड़ों के चरवाहे होने का दावा करते हैं; वे रास्ता जानने का दावा करते हैं; परन्तु वे सामर्थ का वचन नहीं जानते; चौकीदार फाटक नहीं खोलता; भेड़ों ने उनकी पुकार पर ध्यान नहीं दिया।

20) भेड़ों का चरवाहा भेड़ों को बचाने के लिए अपनी जान देगा।

21) जब भेड़िये भेड़िये पर हमला करते हैं तो एक भाड़े का व्यक्ति अपनी जान बचाने के लिए भाग जाता है; और तब कोमल मेम्ने छीन लिये जाते हैं, और भेड़ें इधर उधर तितर-बितर हो जाती हैं।

22) मैं भेड़ों का चरवाहा हूं; मैं परमेश्वर की भेड़ों को जानता हूं; वे मेरी आवाज को जानते हैं, जैसे भगवान मुझे जानता है और मैं उसे जानता हूं।

23) पिता मुझे अमर प्रेम से प्रेम करता है, क्योंकि मैं भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूं।

24) मैं जब चाहूं अपना प्राण देता हूं, परन्तु उसे फिर ले सकता हूं; क्योंकि परमेश्वर के प्रत्येक पुत्र को विश्वास के द्वारा अपके नश्वर मांस को अलग रख कर फिर उठाने का अधिकार है। ये वचन मुझे परमेश्वर से मिले हैं।

अंत - यीशु चरवाहा और भेड़शाला

25) लोग फिर आपस में झगड़ने लगे; वे मसीह के विषय में अपने विचारों में विभाजित थे। वे यीशु की कही हुई बातों को नहीं समझ सके।

26) कुछ ने फिर कहा, वह तो दीवाना है, वा पागल है; उसकी बातें क्यों सुनें?

27) और दूसरों ने कहा, उसके शब्द जुनूनी के शब्द नहीं हैं। क्या अशुद्ध आत्माएं जन्म से अंधे की आंखें खोल सकती हैं?

28) तब यीशु ने यरूशलेम को छोड़ दिया और मस्सालियन के साथ कुछ दिनों तक रुका।

अध्याय 140

यीशु और तीन चेले कफरनहूम लौट आए। यीशु को सत्तर की रिपोर्ट प्राप्त होती है। अपने शिष्यों के साथ वह विश्वासियों को प्रोत्साहित करते हुए सभी गलील में जाता है। वह एक महिला को ठीक करता है। छोटे बीज और महान वृक्ष के दृष्टांत से संबंधित है।

तीन अंक और दस की वापसी का समय आ गया था जिन्हें यीशु ने प्रचार करने के लिए विदेश भेजा था।

2) और यीशु, पतरस, याकूब और यूहन्ना ने वापस गलील की यात्रा शुरू की।

3) वे शोमरोन से होकर गए; वे बहुत गाँवों और नगरों में से होकर गुजरे, और उस सत्तर के विषय में कहनेवाले को देखने के लिये हर जगह लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी; और यीशु ने सिखाया और बीमारों को चंगा किया।

4) और जब वे कफरनहूम पहुँचे, तो सत्तर लोग थे; और वे आनन्द से भर गए; उन्होंने कहा,

5) सेनाओं के यहोवा का आत्मा मार्ग भर हमारे साथ रहा, और हम तृप्त हुए।

6) पवित्र वचन की शक्ति हम में प्रकट हुई थी; हमने बीमारों को चंगा किया; हम ने लंगड़ों को चलने, बहरों को सुनने, अंधों को देखने की आज्ञा दी।

7) जब हम वचन सुनाते थे, तो दुष्टात्माएं कांप उठती थीं, और वे हमारे अधीन हो जाती थीं।

8) यीशु ने कहा, जब तुम अपने मार्ग पर जा रहे थे, तो आकाश प्रकाश से उज्ज्वल था, पृथ्वी उज्ज्वल थी, वे मिलते थे और एक ही थे; और मैं ने क्या देखा, और शैतान बिजली की नाईं आकाश पर से गिर पड़ा।

9) देख, क्योंकि तुझे सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का अधिकार है, और ये मनुष्यों के शत्रुओं के प्रतीक हैं। आप सही तरीके से सुरक्षित हैं, और कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकता है।

10) और जब तुम जाते हो, तो मैं ने एक स्वामी को यह कहते सुना, कि बहुत अच्छा।

11) परन्तु तुम आनन्दित न हो, क्योंकि तुम्हारे पास वचन के द्वारा बीमारों को चंगा करने और दुष्टात्माओं को कांपने की शक्ति है; क्योंकि ऐसा आनन्द शारीरिक स्वयं से होता है।

12) आप आनन्दित हो सकते हैं क्योंकि पृथ्वी के राष्ट्रों के पास वचन सुनने के लिए कान हैं, और प्रभु की महिमा को देखने के लिए आंखें हैं, और पवित्र सांस की आंतरिक श्वास को महसूस करने के लिए हृदय हैं।

13) और तुम आनन्दित हो क्योंकि तुम्हारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए हैं।

14) तब यीशु ने स्वर्ग की ओर दृष्टि करके कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के स्वामी, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, क्योंकि तू ने अपने आप को बालकों पर प्रगट किया, और उन्हें मार्ग को प्रकाशमान करना और बुद्धिमानों को अपनी ओर ले जाना सिखाया।

15) जो कुछ तू ने मुझे दिया है, वह मैं ने उन्हें दिया है, और पवित्र वचन के द्वारा मैं ने उन्हें समझ का हृदय दिया है।

16) कि वे मसीह के द्वारा जो था, और है, और सदा रहेगा, उसे जानें और उसका आदर करें।

17) और फिर उस ने बहत्तर से कहा, तुम्हारी आंखें धन्य हैं, क्योंकि तुम जो कुछ देखते हो उसे देखते हो;

18) और तेरे कान धन्य हैं, क्योंकि वे जो बातें सुनते हैं उन्हें सुनते हैं;

19) और धन्य हैं तुम्हारे हृदय, क्योंकि तुम समझते हो।

20) उन युगों में जो पृथ्वी के ज्ञानी थे, भविष्यद्वक्ताओं, द्रष्टाओं और राजाओं ने चाहा, कि जो कुछ तू ने सुना, और देखा, और जाना है, वह सुनना, और देखना, और जानना; परन्तु उन्होंने प्राप्त नहीं किया था और सुन, देख और जान नहीं सकते थे।

21) यीशु ने फिर कहा, देख, मैं तेरे आगे बहुत से चन्द्रमा चला चुका हूं, और मैं ने तुझे स्वर्ग की रोटी और जीवन का कटोरा दिया है;

22) तेरा बंधन और तेरा प्रवास रहा है; परन्तु अब जब तू ने मार्ग सीख लिया है, और अकेले खड़े रहने का सामर्थ पा लिया है, तो देख, मैं अपना शरीर नीचे करके उसके पास जाता हूं, जो सर्वशक्तिमान है।

23) तब हम चालीस दिन के भीतर यरूशलेम की ओर मुंह फेर लेंगे, जहां मैं यहोवा की वेदी पाऊंगा, और अपके प्राण को मनुष्योंके लिथे बलिदान करके दे दूंगा।

24) आओ, हम उठकर गलील के सब देशों में घूमें, और विश्वास के द्वारा परमेश्वर के सब पुत्रों को नमस्कार करें।

25) और वे उठकर चले गए; वे तट के सब नगरों और गांवों में गए, और सब जगह कहने लगे, कि मसीह की आशीषें सदा तुम्हारे साथ बनी रहेंगी।

26) वे सब्त के दिन किसी नगर में आराधनालय में गए, और यीशु ने उपदेश दिया।

27) जब वह बोल ही रहा था, तब दो पुरूष एक खाट पर ले आए, जिस में एक स्त्री दुगने के पास झुकी हुई थी; वह अठारह साल से बिना किसी की मदद के अपने बिस्तर से नहीं उठी थी।

28) और यीशु ने उस स्त्री पर हाथ रखा, और कहा, उठ, अपनी दुर्बलता से मुक्त हो।

29) जब वह वचन सुना रहा था, तब उस स्त्री ने पाया कि वह सीधी और बलवती है, और उठकर चलने लगी, और कहने लगी, परमेश्वर की स्तुति करो।

30) आराधनालय का सरदार क्रोध से भर गया, क्योंकि चंगा करने वाला सब्त के दिन चंगा करता था।

31) उस ने आमने सामने यीशु की निन्दा नहीं की, परन्तु भीड़ की ओर फिरकर कहा,

32) हे गलील के लोगों, तुम परमेश्वर के नियमों को क्यों तोड़ते हो? हर हफ्ते में छह दिन होते हैं जब आप पीड़ितों को चंगा करने के लिए ला सकते हैं।

33) यह वह दिन है जिस पर परमेश्वर ने आशीष दी है, वह सब्त का दिन है जिसमें मनुष्य काम नहीं कर सकता।

34) और यीशु ने कहा, हे असंगत शास्त्रियों और फरीसियों! सब्त के दिन तुम अपने बोझ के पशुओं को उनके ठिकाने पर से ले जाना, और उन्हें खाने-पीने के लिये ले जाना; क्या यह काम नहीं है?

35) तुम्हारे पिता इब्राहीम की यह बेटी, जो अठारह वर्ष से बँधी हुई है, विश्वास में स्वतंत्र होने के लिए आई है।

36) अब, मुझे बताओ, पुरुषों, क्या उसके बंधनों को तोड़ना और सब्त के दिन उसे आज़ाद करना अपराध है?

37) शासक ने और नहीं कहा; सब लोग आनन्दित हुए और कहने लगे, कि मसीह को निहारना!

छोटे बीज और महान वृक्ष का दृष्टान्त

38) और यीशु ने एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, मसीह का राज्य उस छोटे बीज के समान है, जिसे कोई भूमि में डाल देता है;

39) वह बड़ा हुआ और बहुत वर्षों के बाद एक शक्तिशाली वृक्ष बन गया, और बहुत से लोगों ने उसकी छाया में विश्राम किया, और पक्षियों ने घोंसले बनाकर उसके पत्तेदार शाखाओं के बीच अपने बच्चों को पाला।

अध्याय 141

यीशु प्रोत्साहन के शब्द बोलते हैं। एक आधिकारिक फरीसी को डांटता है। शादी समारोह में शामिल होता है। एक ड्रॉप्सिकल आदमी को ठीक करता है। मुख्य सीटों की तलाश करने वाले मेहमानों को फटकार लगाते हैं। एक शादी की दावत के एक दृष्टांत से संबंधित है।

और यीशु तट के दूसरे नगर में गया, और अपने पीछे चलनेवालोंसे जयजयकार की बातें कहीं।

2) और एक ने खड़े होकर कहा, हे प्रभु, क्या जीवन में प्रवेश करने वाले थोड़े हैं?

3) यीशु ने कहा, वह मार्ग कठिन है जो जीवन की ओर ले जाता है; फाटक संकरा है और अच्छी तरह से पहरा है; परन्तु जो कोई विश्वास के खोजी है, वे मार्ग पाएंगे, और जो वचन को जानते हैं, वे भीतर प्रवेश कर सकते हैं।

4) परन्तु बहुत से लोग स्वार्थी लाभ का मार्ग खोजते हैं; वे जीवन के द्वार पर थपथपाते हैं; लेकिन यह तेज़ है।

5) बुर्ज का पहरूआ कहता है, मैं तुझे नहीं जानता; तेरी बोली अशदोद की है, और तेरे वस्त्र पाप के हैं; प्रस्थान करो और अपने रास्ते जाओ।

6) और वे रोते हुए और दांत पीसते हुए चले जाएंगे।

7) और जब वे अपने पिता इब्राहीम को इसहाक, याकूब और भविष्यद्वक्ताओं के साथ मसीह के राज्य में विश्राम करते हुए देखेंगे, तब उनका क्रोध भड़केगा, और वे आप ही रोके गए।

8) और, देखो, मैं कहता हूं कि मनुष्य दूर से, पूर्व से, पश्चिम से, उत्तर से, दक्षिण से आएंगे और जीवन की चेतना में मेरे साथ बैठेंगे।

9) देखो, मैं कहता हूं, कि जो अंतिम होगा वह पहिला होगा, जो पहिला होगा वह अंतिम होगा।

10) सभी मनुष्य मसीह के राज्य के लिए बुलाए गए हैं; परन्तु चुने हुए थोड़े ही हैं, क्योंकि शुद्ध मनवाले ही राजा को देख सकते हैं।

11) यह कहते हुए एक फरीसी ने आकर कहा, हे गलील के मनुष्य, यदि तू अपना प्राण बचाना चाहे तो यहां न रहना; तुरन्त भाग जाना, क्योंकि हेरोदेस शपय खाकर तेरे प्राण ले लेगा, और अब भी उसके हाकिम तुझे ढूंढ़ रहे हैं।

12) यीशु ने कहा, फरीसियों को मेरे प्राण की इतनी चिन्ता क्यों है? फिर उस ने बोलनेवाले से कहा,

13) निकलकर उस धूर्त लोमड़ी से कह, देख, मैं रोगियों को चंगा करता हूं, और अशुद्ध आत्माओं को आज, कल और आने वाले दिनों में निकाल देता हूं, तब मैं प्राप्त करूंगा।

14) उस से कहो, मुझे गलील में डरने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि मुझे यरूशलेम में मनुष्यों के क्रूर क्रोध का सामना करना पड़ेगा।

15) और जब वे उस स्थान में ठहरे, तो एक फरीसी ने यीशु को और उसके कुछ लोगों को, जो उसके साथ थे, सब्त के दिन उसके साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया, ताकि उसके बेटे की शादी का जश्न मनाया जा सके।

16) मेहमानों में एक ड्रॉप्सिकल रोग से पीड़ित था।

17) और यीशु ने उन लोगों से कहा जिन्हें भेजा गया था कि वे अपने होठों से कुछ शब्द प्राप्त करें, जिससे वे उस पर अपराध का आरोप लगा सकें,

18) हे अधिवक्ताओं और हे फरीसियों, सब्त के दिन चंगाई के अधर्म के विषय में तुम क्या कहते हो? यहाँ एक आदमी है, तुम्हारा अपना है, और वह बहुत व्यथित है।

19) क्या मैं परमेश्वर के बल से चंगाई का वचन कहूं और इस मनुष्य को चंगा करूं?

20) वकील और फरीसी गूंगे थे; उन्होंने उत्तर नहीं दिया।

21) तब यीशु ने चंगाई का वचन सुनाया और उस मनुष्य को चंगा किया, और वह आनन्दित होकर अपने मार्ग चला गया।

22) तब यीशु ने वकीलों और फरीसियों से फिर कहा, तुम में से ऐसा कौन है जिसके पास घोड़ा या गाय है, अगर वह सब्त के दिन गड्ढे में गिर जाए, तो उसे निकालने के लिए अपने दोस्तों को मदद करने के लिए नहीं बुलाएगा?

23) और कोई मनुष्य उत्तर न दे सका, कि मैं यहां हूं।

यीशु एक शादी की दावत में भाग लेते हैं

24) जब यीशु ने उन मेहमानों की ओर देखा, जिन्हें दावत में बुलाया गया था, और उन्हें सबसे ऊंचे आसनों के लिए भीड़ में देखा, तो उन्होंने उनसे कहा,

25) हे स्वार्थी पुरुष, जब आप आमंत्रित अतिथि होते हैं तो आप सर्वोच्च स्थान लेने का प्रयास क्यों करते हैं? आप हमारे मेजबान को जीवन के शिष्टाचार नहीं दिखाते हैं।

26) जब पुरुषों को शादी की दावत के लिए बुलाया जाता है, तो उन्हें निचली सीटों पर बैठना चाहिए, जब तक कि मेजबान उन्हें अपनी इच्छानुसार नहीं रख देता।

27) आप बिना किसी शर्त के सर्वोच्च पद ग्रहण कर सकते हैं; परन्तु तब कोई अधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति आ सकता है, और जब यजमान तुझ से उठकर नीचे की सीट पर बैठने को कहेगा, कि वह अपने अधिक योग्य अतिथि का सम्मान करे, तो आप अपनी नम्रता के कारण बहुत शर्म के मारे शरमा सकते हैं।

28) लेकिन यदि आप सबसे नीचे की सीट लेते हैं और फिर आपके मेजबान द्वारा सम्मानित किया जाता है और उच्च सीट लेने के लिए कहा जाता है, तो आप एक सम्मानित अतिथि हैं।

29) इस घटना में हम जीवन में एक सिद्धांत पर ध्यान देते हैं, कि जो अपने आप को बड़ा करेगा, वह छोटा होगा, और जो अपने आप को नीचा करेगा, वह मनुष्यों की दृष्टि में ऊंचा किया जाएगा।

30) तब यीशु ने सब मेहमानों से कहा; उस ने कहा, जब तुम में से कोई एक पर्ब्ब करे, तो वह मित्रों, वा कुटुम्बियों, वा धनवानोंके लिथे न हो;

31) क्योंकि वे ऐसे शिष्टाचार को उधार मानते हैं, और उन्हें लगता है कि वे आपके लिए एक बड़ी दावत बनाने के लिए बुलाए गए हैं, सिर्फ कर्ज चुकाने के लिए।

32) परन्तु जब तुम भोज करो, तो कंगालों, लंगड़ों, अंधों को बुलाओ; इसी में आशीष तेरी बाट जोहता है, क्योंकि तू जानता है, कि बदले में तुझे कुछ न मिलेगा; लेकिन जिन्हें जरूरत है उनकी मदद करने की चेतना में, आपको बदला दिया जाएगा।

धनी व्यक्ति का दृष्टान्त और उसका पर्व

---

33) और फिर उसने एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, किसी धनवान ने जेवनार तैयार की; उस ने अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके अपके दासोंको साय भेज ा कि अपके अपके अपके अपके लिथे अपके अपके लिथे आ; लेकिन वे नहीं जाना चाहते थे, और उन्होंने ऐसे बहाने बनाए जो उन्हें लगा कि मेजबान को संतुष्ट करेगा।

34) एक ने कहा, मैं ने अभी-अभी एक भूमि मोल ली है, और मुझे जाकर उस देश पर अपना अधिकार प्रमाणित करना होगा; क्षमा करने की प्रार्थना करता हूँ।

35) दूसरे ने कहा, मुझे उतरकर उन भेड़ों पर, जिन्हें मैं ने मोल लिया है, अपना स्वामी सिद्ध करना अवश्य है; क्षमा करने की प्रार्थना करता हूँ।

36) दूसरे ने कहा, मेरी ब्याही हुई है, परन्तु थोड़ा ही समय हुआ है, सो मैं नहीं जा सकता; मैं क्षमा चाहता हूँ।

37) जब सेवकों ने आकर उस व्यक्ति से, जिसने भोज तैयार किया था, कहा, कि जिन्हें उस ने निमंत्रित किया है, वे नहीं आएंगे।

38) वह व्यक्ति मन ही मन उदास था; और फिर उस ने अपके कर्मचारियोंको नगर के चौकोंऔर गलियोंमें भेज दिया, कि कंगालों, लंगड़ों, अंधोंको जेवनार में ले आएं।

39) दासों ने विदेश जाकर कंगालों, लंगड़ों, अन्धे को पाया, और उन्हें भीतर ले आए; लेकिन और अधिक के लिए जगह थी।

40) तब सेना ने अपने शस्त्रों को लोगों को बलपूर्वक अपनी दावत में लाने के लिए भेजा; और फिर घर भर गया।

41) और परमेश्वर ने मनुष्यों के लिए एक पर्व बनाया है। बहुत साल पहले उसने अपने सेवकों को मनुष्यों के इष्ट पुत्रों के पास भेजा। उन्होंने उसकी पुकार नहीं सुनी; वे पर्व में नहीं आए।

42) तब उसने अपने सेवकों को परदेशियों और भीड़ के पास भेजा; वे आए, लेकिन और भी जगह है।

43) देखो, क्योंकि वह नरसिंगे के बड़े झोंकों के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और लोग पर्व में आने को विवश होंगे।

अंत - अमीर आदमी का दृष्टांत और उसका पर्व

अध्याय 142

शिष्यत्व का मार्ग, उसकी कठिनाइयाँ। क्रॉस और उसका अर्थ। धन का खतरा। वह युवक जो मसीह से भी अधिक धन से प्रेम करता था। धनी व्यक्ति और लाजर का दृष्टान्त।

अब यीशु और बारह दूसरे नगर को गए, और उस में प्रवेश करके कहा, सब को शान्ति मिले; सभी को अच्छी इच्छा।

2) बहुत से लोग उसके पीछे हो लिये, और स्वामी ने उन से कहा, देख, तुम तो अपने स्वार्थ के लिये अनुयायी हो।

3) यदि आप प्रेम में मेरा अनुसरण करते हैं, और पवित्र श्वास के शिष्य बनते हैं, और अंत में जीवन का मुकुट प्राप्त करते हैं, तो आपको अपने पीछे शारीरिक जीवन का सब कुछ छोड़ देना चाहिए।

4) धोखा मत खाओ; रुको, आदमी, और लागत की गणना करो।

5) यदि कोई एक मीनार, या एक घर बनाता है, तो वह पहले बैठता है और यह सुनिश्चित करने के लिए लागत की गणना करता है कि उसके पास इसे पूरा करने के लिए पर्याप्त सोना है।

6) क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि यदि वह अपने उद्यम की विफलता करता है तो वह अपनी सारी संपत्ति खो सकता है, और उपहास का पात्र बन सकता है।

7) और यदि कोई राजा दूसरे राजा का राज्य लेना चाहता है, तो वह अपने विश्वासपात्रों को बुलाता है, और वे उनकी शक्ति को अच्छी तरह समझते हैं; वह अतुलनीय शक्ति के हथियारों को नहीं मापेगा।

8) मेरे पीछे चलने से पहले लागत को अच्छी तरह से गिनें; इसका अर्थ है जीवन का त्याग, और जो कुछ आपके पास है।

9) यदि आप पिता, माता, पत्नी या बच्चे से प्रेम करते हैं, तो मसीह से अधिक प्रेम करते हैं, तो आप मेरे पीछे नहीं चल सकते।

10) यदि आप मसीह से अधिक धन या सम्मान से प्यार करते हैं, तो आप मेरे पीछे नहीं चल सकते।

11) सांसारिक जीवन के मार्ग पहाड़ की ओर से ऊपर की ओर नहीं चलते; वे जीवन के पर्वत के चारों ओर दौड़ते हैं, और यदि आप सीधे चेतना के ऊपरी द्वार पर जाते हैं तो आप शारीरिक जीवन के पथ को पार कर जाते हैं; उनमें नहीं चलना।

12) और इस प्रकार मनुष्य क्रूस को उठाते हैं; कोई मनुष्य दूसरे का क्रूस सहन नहीं कर सकता।

13) अपना क्रूस उठाकर मसीह के द्वारा सच्चे शिष्यत्व के मार्ग पर मेरे पीछे हो ले; यही वह मार्ग है जो जीवन की ओर ले जाता है।

14) इस जीवन शैली को सबसे बड़ी कीमत का मोती कहा जाता है, और जो इसे पाता है उसे अपना सब कुछ अपने पैरों के नीचे रखना चाहिए।

15) देखो, एक मनुष्य ने किसी खेत में सोने की अद्भुत खान की उपज पाई, और जाकर अपना घर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल ले लिया; तब वह धन में आनन्दित हुआ।

16) अब वहाँ धन के शास्त्री और फरीसी उपस्थित थे, जो अपने धन, और अपने बंधनों और भूमि से प्यार करते थे, और वे यीशु की बात का तिरस्कार करने के लिए जोर से हंसते थे।

17) तब यीशु ने उन से बातें की, और कहा, तुम मनुष्य हो जो मनुष्योंके साम्हने धर्मी ठहराते हो; परमेश्वर तेरे हृदय की दुष्टता को जानता है;

18) और हे मनुष्यों, तुम जान लो, कि जो कुछ दैहिक मन से प्रतिष्ठित और महान है, वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है।

19) और यीशु अपना मार्ग चला, और चलते-चलते एक जवान दौड़ा, और उसके पांवोंके पास घुटने टेककर कहने लगा, हे स्वामी, मुझे क्या कर, कि मैं अनन्त जीवन पाऊं।

20) और यीशु ने कहा, तुम मुझे अच्छा क्यों कहते हो? कोई भी वास्तव में अच्छा नहीं है बल्कि स्वयं भगवान है।

21) और परमेश्वर ने कहा है, यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहे, तो व्यवस्था की आज्ञाओं को मान।

22) उस युवक ने पूछा, उसने किन आज्ञाओं का हवाला दिया?

23) यीशु ने कहा, मार न डालना; चोरी न करना; व्यभिचार न करना; तू झूठी गवाही न देना;

24) और अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से प्रेम रखना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।

25) उस मनुष्य ने उत्तर दिया, ये बातें मैं बचपन से देखता आया हूं; मुझमें अब तक क्या कमी है?

26) यीशु ने कहा, तुम में एक बात की घटी है; तेरा मन पृथ्वी की वस्तुओं पर लगा है; तुम स्वतंत्र नहीं हो।

27) बाहर जाकर अपना सब कुछ बेचकर कंगालों को दे दो, और मेरे पीछे हो लो, तो तुम अनन्त जीवन पाओगे।

28) स्वामी की बातों से वह व्यक्ति दुखी हुआ; क्योंकि वह धनी था; और अपना मुंह फेर लिया, और उदास होकर अपने मार्ग पर चला गया।

29) यीशु ने उस दु:खी व्यक्ति की ओर दृष्टि करके कहा, "जमाकर धन रखनेवालों का आत्मा के राज्य में द्वार से प्रवेश करना बहुत कठिन है।

30) और उसके चेले उसकी बातों से चकित हुए।

31) उस ने उनको उत्तर दिया, और कहा, हे मनुष्यो, मैं तुम से कहता हूं, कि जो धन पर भरोसा रखते हैं, वे परमेश्वर पर भरोसा नहीं रख सकते, और आत्मा के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।

32) हां, ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना, उस से अधिक आसान है कि धन के धनी मनुष्य जीवन का मार्ग खोज ले। और उसके चेलों ने कहा, फिर कौन मार्ग ढूंढ सकता है? किसे बचाया जा सकता है?

33) यीशु ने कहा, धनवान अपना सोना दे दे; ऊंचे लोग धूलि को चूम सकते हैं, और परमेश्वर उद्धार करेगा।

34) तब यीशु ने उनसे यह दृष्टान्त कहा:

<u>अमीर आदमी और लाजर का दृष्टांत</u>

35) एक अमीर आदमी शानदार स्थिति में रहता था; वह उत्तम वस्त्र धारण करता था जो मनुष्य बना सकते थे; उसके तख्ते देश के सबसे महँगे शीशों से लदे हुए थे।

36) एक भिखारी, अंधा और लंगड़ा, जिसका नाम लाजर था, इस घर के कचरे के फाटक के पास बैठने के लिए अभ्यस्त था, कि वह कुत्तों के साथ अमीर आदमी के बोर्ड से कचरा साझा कर सके।

37) ऐसा हुआ कि लाजर मर गया, और स्वर्गदूत उसे हमारे पिता इब्राहीम की गोद में ले गए ।

38) धनवान भी मर गया, और उसे एक महंगी कब्र में मिट्टी दी गई; परन्तु उस ने तृप्त होकर अपनी आंखें खोल दीं।

39) उस ने दृष्टि की, और भिखारी को अपके पिता इब्राहीम की गोद में चैन से विश्राम करते देखा, और अपके मन की कड़वाहट के कारण पुकारा,

40) हे मेरे पिता इब्राहीम, अपने पुत्र पर दया कर; मैं इन आग की लपटों में तड़प रहा हूँ।

41) लाजर को भेज दे, कि वह मेरी सूखी हुई जीभ को ठंडा करने के लिये मुझे एक घूंट भर पानी दे।

42) परन्तु इब्राहीम ने उत्तर दिया, हे मेरे पुत्र, नश्वर जीवन में, तेरे पास पृथ्वी की सब से अच्छी वस्तुएं और लाजर के पास निकृष्ट वस्तु थी, और तू ने उसे वहां एक प्याला पानी न दिया, परन्तु उसे अपने द्वार से खदेड़ दिया।

43) व्यवस्था अवश्य पूरी होनी चाहिए, और लाजर को अब शान्ति मिली है, और जो कुछ तुम्हारा बकाया है, वह तुम चुका रहे हो।

44) इसके अलावा, आपके क्षेत्र और हमारे बीच एक बड़ी खाई है, और यदि मैं चाहता तो मैं आपके पास लाजर को नहीं भेज सकता, और जब तक आप अपने कर्ज का भुगतान नहीं कर लेते, तब तक आप हमारे पास नहीं आ सकते।

45) उस व्यक्ति ने फिर कहा, हे पिता इब्राहीम, मैं प्रार्थना करता हूं, लाजर को पृथ्वी पर और मेरे पिता के घर में वापस भेज दो, कि वह मेरे भाइयों को जो अभी जीवित हैं, उन्हें बता सकता है, क्योंकि मेरे पास उनमें से पांच हैं, भयावहता के बारे में इस स्थान से, ऐसा न हो कि वे मेरे पास उतरें, न कि तुम्हारे पास।

46) इब्राहीम ने उत्तर दिया, मूसा और दर्शी की बातें उनके पास हैं, वे सुनें।

47) उस ने उत्तर दिया, कि वे उस की लिखी हुई बात को न मानेंगे; परन्तु यदि कोई मनुष्य कब्र में से ऊपर जाए, तो वे विश्वास करें।

48) परन्तु इब्राहीम ने उत्तर दिया, कि यदि वे मूसा और द्रष्टाओं की बातें न सुनें, तो भले ही उनके बीच मरे हुओं में से एक भी खड़ा हो, फिर भी वे न मानें।

अंत - अमीर आदमी और लाजर का दृष्टांत

49) पतरस ने कहा, हे प्रभु, हम ने अपके सब को तेरे पीछे चलने को छोड़ दिया है; और हमारा इनाम क्या है?

50) यीशु ने कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम जो सब को मेरे पीछे चलने के लिये छोड़ गए हो, उस जीवन का नयापन पाओगे जो मसीह के साथ परमेश्वर में गहरे छिपा है।

51) और तुम मेरे साथ शक्ति के सिंहासन पर विराजमान हो, और मेरे साथ इस्राएल के गोत्रों का न्याय करना।

52) और वह जो शारीरिक आत्म पर विजय प्राप्त करता है और मसीह के माध्यम से मेरा अनुसरण करता है, उसके पास एक सौ गुना होगा जो पृथ्वी पर जीवन का धन है, और आने वाले संसार में, अनन्त जीवन।

अध्याय 143

पुरस्कारों में धार्मिकता। यीशु ने किसान और मजदूरों के दृष्टान्त का वर्णन किया। तलाक के दैवीय नियम से अवगत कराता है। शादी का रहस्य।

यहोवा समुद्र के किनारे खड़ा था; भीड़ वहाँ थी और एक ने खड़े होकर कहा,

2) क्या परमेश्वर पुरस्कार प्रदान करता है जैसे पुरुष पुरस्कार देते हैं, जो किया जाता है उसके लिए?

3) और यीशु ने कहा, मनुष्य कभी नहीं जानते कि औरों ने क्या किया है, यह जीवन ऐसा प्रतीत होने वाला जीवन है।

4) ऐसा लग सकता है कि एक आदमी एक शक्तिशाली काम कर रहा है और पुरुषों द्वारा उसे एक महान इनाम के योग्य माना जा सकता है।

5) एक और आदमी जीवन के फसल के खेतों में असफल हो सकता है और पुरुषों के सामने अपमानित हो सकता है।

6) पुरुष मनुष्यों के हृदयों को नहीं जानते; परमेश्वर केवल मनुष्यों के हृदयों को जानता है, और जब दिन हो जाता है तो वह उस व्यक्ति को जीवन से पुरस्कृत कर सकता है जो दिन के बोझ के नीचे गिर गया, और उस व्यक्ति को दूर कर सकता है जो पुरुषों के दिलों की मूर्ति था।

पति और मजदूरों का दृष्टान्त

7) और फिर उसने एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, प्राण का राज्य उस मनुष्य के समान है, जिसके पास बहुत बड़ा भाग है।

8) और भोर को वह अपना अन्न बटोरने के लिथे पुरूषोंको ढूंढ़ने के लिथे बाजार को गया।

9) उसे तीन आदमी मिले, और वह हर एक को उसकी उस दिन की सेवा के लिए एक-एक रुपया देने को तैयार हुआ, और उन्हें अपने खेत में भेज दिया।

10) फिर वह दिन के तीसरे पहर फिर बाजार में गया, और उसे पांच पुरूष घात में बैठे हुए मिले, और कहा, मेरे खेत में जाकर सेवा कर, और जो ठीक है मैं तुझे दूंगा; और उन्होंने जाकर सेवा की।

11) वह फिर गया; यह दिन का छठा घंटा था, और सात पुरूष खम्भे पर खड़े थे; उसने उन्हें सेवा करने के लिए मैदान में भेजा।

12) और ग्यारहवें पहर को वह फिर चला गया; वहाँ बारह मनुष्य आलस्य के साये में खड़े रहे; उस ने उन से कहा, तुम यहां दिन भर आलस्य में क्यों खड़े रहते हो?

13) उन्होंने कहा, हम को कोई काम नहीं; किसी आदमी ने हमें काम पर नहीं रखा है।

14) और फिर उसने उन्हें सेवा करने के लिए अपने खेत में भेजा।

15) जब सांझ हुई तो उस ने अपके भण्डारी से कहा, खेत से मजदूरोंको बुला, और एक एक को उसके काम के बदले दे। और सभी को भुगतान किया गया, और प्रत्येक को अपने भाड़े के लिए एक पैसा मिला।

16) अब, जब ग्यारहवें घंटे के बाद से सेवा करने वाले बारहों को एक-एक पैसा अपने भाड़े पर मिला, तो वे तीनों बहुत दुखी हुए; उन्होंने कहा,

17) इन बारहों ने तो एक घण्टा ही सेवा की है, और अब उनका हमारे साथ बराबर का भाग है, जो दिन के तपते घण्टों में परिश्रम करते हैं; क्या हमारे पास अपने भाड़े के लिए कम से कम दो पैसे नहीं होने चाहिए?

18) उस ने उत्तर दिया, हे मेरे मित्रों, मैं ने तेरा कुछ बिगाड़ नहीं किया। जब आप काम पर गए तो क्या हमने जल्दी समझौता नहीं किया था? क्या मैंने पूरा भुगतान नहीं किया है?

19) अगर मैं इन आदमियों को छोटी या बड़ी रकम दे दूं तो तुम्हें क्या होगा? जो तेरा अपना है उसे ले लो और अपने मार्ग पर चलो, क्योंकि मैं बारह को वह दूंगा जो मैं तीन, पांच, सात को दूंगा।

20) उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और आप अपना सर्वश्रेष्ठ करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकते थे।

21) मनुष्य का किराया दिल की मंशा पर आधारित है।

22) यीशु के उपदेश के अनुसार, एक फरीसी ने आकर कहा, हे प्रभु, क्या यह उचित है कि पुरुष अपनी पत्नी को त्याग दे?

23) यीशु ने कहा, तुम्हें जानना चाहिए; कानून क्या कहता है

24) फरीसी ने उत्तर दिया, व्यवस्था यह है कि पुरुष तलाकशुदा हो सकता है, अपनी पत्नी को त्याग सकता है।

25) यीशु ने कहा, मनुष्य के मन की कठोरता ने व्यवस्था देनेवाले को इस प्रकार की व्यवस्था करने को उभारा; लेकिन पहले से ऐसा नहीं था।

26) परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष के लिए बनाया, और वे एक थे; और उसके बाद उस ने कहा, पुरूष अपके माता पिता को छोड़कर अपक्की पत्नी से मिला रहेगा; वे अब विभाजित नहीं हैं; वे एक, एक तन हैं।

27) जिसे भगवान ने जोड़ा है उसे कोई भी व्यक्ति अलग नहीं कर सकता।

28) अब, जब वे घर में गए, तो एक व्यक्ति ने इस तलाक के मामले के बारे में फिर से पूछने के लिए स्वतंत्र किया।

29) और यीशु ने फिर कहा कि उसने फरीसी से क्या कहा; और फिर उन्होंने वैवाहिक जीवन का उच्च नियम दिया:

30) जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचारिणी के सिवाय त्याग दे, और फिर दूसरी पत्नी को ब्याह ले, वह व्यभिचार करता है।

31) जो स्त्री किसी पुरुष को छोड़ देगी, जब तक कि वह स्वतंत्र और व्यभिचारी न हो, और फिर किसी अन्य पुरुष की पत्नी न हो जाए, व्यभिचार करती है।

32) और थोमा ने पूछा, व्यभिचार क्या है?

33) यीशु ने कहा, जो पुरूष अभिलाषा रखता है, और जो अपनी पत्नी नहीं किसी स्त्री का लालच करता है, वह व्यभिचारी है।

34) वह पत्नी जो वासनापूर्ण विचारों को आश्रय देती है और किसी ऐसे पुरुष की लालसा करती है जो उससे ब्याह नहीं है, वह उसका पति नहीं है, वह एक वेश्या है।

35) पुरुष दो दिलों को बांधने का कानून नहीं बना सकते।

36) जब दो प्यार में बंधे होते हैं तो उन्हें वासना का कोई विचार नहीं होता है। स्त्री पुरुष को नहीं छोड़ सकती; आदमी को अपनी पत्नी को विदा करने की कोई इच्छा नहीं है।

37) जब स्त्री और पुरुष वासनापूर्ण विचार रखते हैं, और किसी अन्य शरीर की लालसा करते हैं, तो वे एक नहीं हैं, परमेश्वर से जुड़े नहीं हैं।

38) और फिलिप्पुस ने कहा, हे प्रभु, क्या थोड़े हैं जिन्हें परमेश्वर ने पवित्र विवाह बंधन में बांधा है?

39) यीशु ने कहा, परमेश्वर शुद्ध मन वालों को जानता है; वासनापूर्ण पुरुष और महिलाएं केवल वासना के प्राणी हैं; वे एक में नहीं हो सकते; न ही वे परमेश्वर के साथ एक हो सकते हैं।

40) नथानिएल ने कहा, क्या यह ठीक नहीं कि सब पुरूष ब्याह की मन्नत पूरी करने से दूर रहें?

41) और यीशु ने कहा, पुरुष शुद्ध नहीं हैं क्योंकि वे अविवाहित पुरुष हैं। वासना करने वाला पुरुष व्यभिचारी होता है, चाहे उसकी पत्नी हो या न हो।

42) फिर उस ने सब से कहा, कुछ बातें मनुष्य बताकर जान जाते हैं, और कुछ बातें तब तक नहीं जानते जब तक कि उनके लिथे चेतना का द्वार न खुल जाए।

43) मैं एक रहस्य बोलता हूं जिसे अब तुम नहीं समझ सकते; लेकिन तुम किसी दिन समझ जाओगे।

44) नपुंसक वह व्यक्ति है जो वासना नहीं करता; कुछ पुरुष जन्म से नपुंसक होते हैं, कुछ पुरुषों की शक्ति से नपुंसक होते हैं, और कुछ पवित्र श्वास द्वारा नपुंसक होते हैं, जो उन्हें मसीह के माध्यम से परमेश्वर में मुक्त करते हैं।

45) जो मेरे द्वारा बोले गए सत्य को ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे।

अध्याय 144

तिबेरियस में क्रिस्टीन। यीशु आंतरिक जीवन पर बोलते हैं। उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त से संबंधित है। बड़े भाई की नाराजगी।

जब वे गलील देश के नगरों और नगरों से होकर चले, तब यहोवा अपने चेलों समेत तिबिरियुस को आया, और यहां उन में से कुछ ऐसे मिले, जो मसीह के नाम से प्रीति रखते थे।

2) और यीशु ने उन्हें आंतरिक जीवन के बारे में बहुत सी बातें बताईं; परन्तु जब भीड़ आई, तब उस ने एक दृष्टान्त कहा; उन्होंने कहा,

उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त

3) एक व्यक्ति जिसके पास बड़ी संपत्ति थी, उसके दो बेटे थे। सबसे छोटा बेटा घर के जीवन से ऊब गया और बोला,

4) मेरे पिता, प्रार्थना करें कि अपनी संपत्ति को विभाजित करें और जो मेरा है वह मुझे दे, और मैं अपने भाग्य को दूसरे देश में ढूंढूंगा।

5) पिता ने जैसा चाहा वैसा ही किया, और वह युवक अपके धन से पराए देश में चला गया।

6) वह एक फालतू था और जल्द ही उसने अपनी सारी संपत्ति पाप के रूप में बर्बाद कर दी थी।

7) जब उसके पास करने के लिए और कुछ नहीं बचा तो उसने सूअरों की देखभाल के लिए खेतों में रोजगार पाया।

8) वह भूखा था, और किसी ने उसे कुछ खाने को नहीं दिया, और वह कैरब की फली जो वह सूअरों को खिलाता था खा गया।

9) और बहुत दिनों के बाद उस ने अपने आप को पाया, और अपने आप से कहा, मेरा पिता धनी है; जब मैं, उसका पुत्र, सूअरों के बीच खेतों में भूखा मर रहा हूं, तो उसके पास बहुत से दास हैं, जो बहुतायत से खिलाए जाते हैं।

10) यह आशा नहीं कि मैं फिर से पुत्र के रूप में ग्रहण किया जाऊँगा, परन्तु मैं उठकर सीधे अपने पिता के घर को जाऊँगा, और अपक्की कुटिलता का अंगीकार करूंगा;

11) और मैं कहूंगा, हे मेरे पिता, मैं फिर आया हूं; मैं फालतू हूँ, और मैं ने अपना धन पाप के कारण गँवा दिया है; मैं तुम्हारा पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हूँ।

12) मैं फिर से पुत्र के रूप में प्राप्त होने के लिए नहीं कहता हूं, लेकिन मुझे अपने दासों के बीच एक जगह दें, जहां मुझे तूफानों से आश्रय मिल सके और खाने के लिए पर्याप्त हो।

13) और वह उठकर अपके पिता के घर की खोज में निकला, और जब वह आया, तो उसकी माता ने उसे बहुत दूर जाते समय देखा।

14) (एक भटकते बच्चे की पहली बेहोशी तड़प को एक माँ का दिल महसूस कर सकता है।)

15) पिता आया, और हाथ में हाथ डाले वे लड़के से मिलने के मार्ग पर चल पड़े, और आनन्द और बड़ा आनन्द हुआ।

16) लड़के ने दया और दास के स्थान की याचना करने की बहुत कोशिश की; लेकिन विनती सुनने के लिए प्यार बहुत बढ़िया था।

17) दरवाजा चौड़ा खुला था; उसने माँ के हृदय में और पिता के हृदय में स्वागत पाया।

18) पिता ने दासों को बुलवाकर कहा, कि उसके लिथे उत्तम वस्त्र ले आओ; उसके पैरों के लिए सबसे अच्छे सैंडल; उसके पहनने के लिए शुद्ध सोने की एक अंगूठी।

19) तब पिता ने कहा, हे मेरे दासों, जाकर पाले हुए बछड़े को मार डालो; भोज तैयार करो, क्योंकि हम आनन्दित हैं;

20) हमारा बेटा जिसे हमने मरा हुआ समझ लिया था, वह यहाँ ज़िंदा है; एक खजाना जो हमने सोचा था खो गया था मिल गया है।

21) जब ज्येष्ठ पुत्र दूर के खेत में सेवा कर रहा था और यह नहीं जानता था कि उसका भाई वापस आ गया है, तब भोज तैयार किया गया था और सभी आनन्दित थे।

22) और जब उसने सब आनन्द का कारण जान लिया, तो वह क्रोधित हुआ और घर में नहीं गया।

23) उसके पिता और उसकी माता दोनों ने अपने बेटे की मूर्खता और मूर्खता की अवहेलना करने के लिए उस से आंसू बहाए; लेकिन वह नहीं करेगा; उन्होंने कहा,

24) देख, इतने वर्ष से मैं घर में ही रहा, प्रतिदिन तेरी सेवा करता रहा, और तेरी कठोरतम आज्ञाओं का कभी उल्लंघन नहीं किया;

25) तौभी तूने मेरे लिथे न तो कोई बालक मारा, और न मेरे लिथे कोई साधारण भोज किया, कि मैं अपके मित्रोंके संग आनन्द मनाऊं;

26) परन्तु जब तेरा पुत्र, यह फालतू, जो निकलकर तेरा आधा धन पाप में उड़ा देता है, घर आता है, क्योंकि वह और कुछ नहीं कर सकता, तो तुम उसके लिए एक पले हुए बछड़े को मारते हो और एक अद्भुत दावत करते हो।

27) उसके पिता ने कहा, हे मेरे पुत्र, जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है, और तू हमारे आनन्द में सदा हमारे संग रहता है;

28) और जब तेरा भाई, जो हमारे निकट और प्रिय है, और जिसे हम मरा हुआ समझते थे, हमारे पास जीवित लौट आए, तो हमें प्रसन्न होना अच्छा है।

29) हो सकता है कि वह एक विपुल व्यक्ति रहा हो; समलैंगिक वेश्याओं और चोरों के साथ हो सकता है, फिर भी वह अभी भी आपका भाई और हमारा बेटा है।

30) तब यीशु ने कहा, ताकि सब सुन सकें; जिसके पास सुनने के लिए कान हैं, और जिसके पास समझने के लिए हृदय है, वह इस दृष्टान्त का अर्थ समझेगा।

अंत - उड़ाऊ पुत्र का दृष्टान्त

31) तब यीशु और बारह कफरनहूम में आए।

अध्याय 145

यीशु क्रिस्टीन राज्य की स्थापना और भविष्य में प्रभु के सत्ता में आने पर बोलते हैं। वफादारी का आह्वान करता है। अन्यायी न्यायाधीश का दृष्टान्त। फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टान्त।

फरीसियों का एक दल यीशु से बातें करने को आया, और उन्होंने कहा, हे रब्बोनी, हम ने तुझे यह कहते सुना है, कि राज्य निकट है।

2) हम दानिय्येल में पढ़ते हैं कि स्वर्ग का परमेश्वर एक राज्य बनाएगा, और हम पूछते हैं, क्या यह परमेश्वर का राज्य है जिसके बारे में आप बात करते हैं? अगर हां, तो कब आएगी?

3) यीशु ने कहा, भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर के इस राज्य के विषय में सब कुछ बता दिया है, और वह निकट है; लेकिन पुरुष इसे कभी आते नहीं देख सकते।

4) इसे कभी भी कामुक आँखों से नहीं देखा जा सकता है; यह भीतर है।

5) देखो, मैं ने कहा है, और अब फिर कहता हूं, मन के पवित्र को छोड़ और कोई राजा को नहीं देख सकता, और सब शुद्ध मन वाले राजा की प्रजा हैं।

6) सुधार करो, और पाप से दूर हो जाओ; तैयार करो, हे तैयार करो! राज्य हाथ में है।

7) फिर उस ने अपके चेलोंसे बातें की, और कहा, मनुष्य के पुत्र की ऋतुएं बीत चुकी हैं।

8) वह समय आएगा जब आप इन दिनों में से किसी एक को फिर से देखना चाहेंगे; लेकिन आप इसे नहीं देख सकते हैं।

9) और बहुत से लोग कहेंगे, देखो, मसीह यहां है; लो, वहाँ मसीह है। बहकावे में न आएं; उनके रास्ते में मत जाओ।

10) क्योंकि जब मनुष्य का पुत्र फिर आएगा, तब किसी को मार्ग दिखाने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि जैसे बिजली आकाश को रोशन करती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र आकाश और पृथ्वी को भी प्रकाशमान करेगा।

11) परन्तु, देखो, मैं कहता हूं, कि मनुष्य के पुत्र के सत्ता में आने से पहले बहुत सी पीढ़ियां आई और चली गईं; परन्तु जब वह आएगा तब कोई न कहेगा, कि देख, मसीह यहां है; लो, वहाँ।

12) परन्तु जैसा नूह के दिनों में जलप्रलय से पहिले था, वैसा ही होगा। लोगों ने खाया, पिया, आनन्द से भर गए, और आनन्द के गीत गाए,

13) और जब तक सन्दूक पूरा नहीं हुआ और नूह ने प्रवेश नहीं किया, तब तक उनके विनाश का पता नहीं चला; परन्तु तब जलप्रलय आया और उन सब को बहा ले गया।

14) इसी प्रकार, लूत के दिनों में भी; लोगों ने खाया पिया; उन्होंने मोल लिया, उन्होंने बेचा, लगाया, और काटा, वे पाप के मार्ग पर चले, और उनकी चिन्ता न की;

15) परन्तु जब धर्मी लूत अपके नगर के फाटकोंसे निकल गया, तब नगर के नीचे की पृथ्वी कांप उठी, और आकाश से गन्धक की आग गिरी;

16) पृथ्वी के जबड़ों ने उडकर उनके घर और धन को निगल लिया, और वे फिर उठने को नहीं उतरे।

17) ऐसा ही होगा जब मनुष्य का पुत्र सत्ता में आएगा।

18) मैं तुम लोगों को आज्ञा देता हूं, जैसा कि मैं पुरुषों को आज्ञा दूंगा, अपनी संपत्ति को बचाने के लिए मत खोजो, नहीं तो तुम अपने जीवन को खो दोगे। आगे बढ़ो और पाप की ढहती दीवारों को मत देखो। लूत की पत्नी को मत भूलना।

19) जो कोई अपनी जान बचाने की कोशिश करेगा, वह अपनी जान गंवाएगा; जो कोई जीवन की सेवा में अपने प्राणों की आहुति दे देगा, वह अपने प्राणों की रक्षा करेगा।

20) इसके बाद छानने का समय आता है। दो आदमी बिस्तर पर होंगे; एक को बुलाया जाएगा, दूसरे को छोड़ दिया जाएगा; दो महिलाएं कंधे से कंधा मिलाकर काम करेंगी; एक छीन लिया जाएगा, दूसरा छोड़ दिया जाएगा।

21) उसके चेलोंने कहा, यह दृष्टान्त हमें समझा; या यह एक दृष्टान्त नहीं है?

22) यीशु ने कहा, बुद्धिमान समझेगा, क्योंकि स्वर्ग की रोटी जहां है, वहां मन के शुद्ध पाएंगे; और जहां लोथ पड़ी है, वहां शिकार के सब पक्षी इकट्ठे होंगे।

23) परन्तु देखो, मैं यह कहता हूं, कि इन दिनों के आने से पहिले तुम में से कोई मनुष्य का पुत्र दुष्टों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वह तुम्हारे और सारे जगत के लिथे अपना प्राण दे देगा।

24) हाँ, अधिक; पवित्र श्वास शक्ति में आएगा और आपको धर्मी के ज्ञान से भर देगा।

25) और तुम यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी के दूर के देशों में चमत्कारिक कहानी सुनाओगे।

26) और फिर यह सिखाने के लिए कि मनुष्य प्रार्थना करें और कभी निराश न हों, उसने यह दृष्टान्त कहा:

अन्यायी न्यायाधीश का दृष्टान्त

27) एक न्यायी था जो न तो ईश्वर से डरता था और न ही मनुष्य का ध्यान रखता था।

28) एक विधवा थी जिसने न्यायी से अपनी गलतियों को सुधारने और अपने शत्रुओं का बदला लेने के लिए बार-बार विनती की।

29) पहिले तो न्यायी ने उसकी न सुनी, परन्तु बहुत दिन के बाद उस ने कहा,

30) न तो मैं परमेश्वर से डरता हूं, और न मनुष्य की सुधि लेता हूं, तौभी ऐसा न हो कि यह विधवा प्रतिदिन बिनती करके मुझे थका दे, मैं उस से उसके शत्रुओं से पलटा लूं।

अंत - अन्यायी न्यायाधीश का दृष्टान्त

31) जब शिष्यों ने इस दृष्टान्त का अर्थ पूछा, तो प्रभु ने उत्तर दिया, बुद्धिमान समझ सकते हैं; मूर्खों को जानने की जरूरत नहीं है।

32) और फिर अपने कुछ अनुयायियों को सबक सिखाने के लिए जो खुद पर भरोसा करते थे और सोचते थे कि वे अन्य पुरुषों की तुलना में पवित्र थे, उन्होंने यह दृष्टांत बताया:

फरीसी और जनता का दृष्टान्त

33) दो व्यक्ति आराधनालय में प्रार्थना करने गए; एक फरीसी था; दूसरा एक प्रचारक था।

34) फरीसी ने खड़े होकर अपने आप से इस प्रकार प्रार्थना की, हे भगवान, मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूं कि मैं अन्य लोगों की तरह नहीं हूं, जो अन्धेर करने वाले, अन्यायी, व्यभिचारी हैं;

35) इस प्रचारक की तरह भी नहीं। मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूं, और जो कुछ मुझे मिलता है उसका दशमांश देता हूं।

36) चुंगी लेने वाला पास नहीं आया; उस ने स्वर्ग की ओर आंखें न उठाईं, वरन अपनी छाती पर थपथपाकर कहा,

37) हे प्रभु, मुझ पर दया कर; मैं तेरी दृष्टि में पापी हूं; मैं पूर्ववत हूँ।

38) और अब, तुम लोगों, मैं तुमसे कहता हूं, चुंगी लेने वाला प्रार्थना करना जानता था, और वह धर्मी था।

39) फरीसी बात करना जानता था, लेकिन फिर भी वह निंदा करके चला गया।

40) देखो, जो कोई अपनी बड़ाई करेगा, वह छोटा होगा, और जो अपनी स्तुति नहीं करेगा, वह परमेश्वर की दृष्टि में ऊंचा किया जाएगा।

अंत - फरीसी और जनता का दृष्टान्त

अध्याय 146

गलील में अपने शिष्यों के साथ यीशु की अंतिम मुलाकात। मरियम स्तुति का गीत गाती है। गीत। क्रिस्टीन यरूशलेम के लिए अपनी यात्रा शुरू करते हैं। वे एनॉन स्प्रिंग्स में आराम करते हैं। जेम्स और जॉन की मां का स्वार्थी अनुरोध। क्रिस्टीन यरूशलेम पहुँचे।

गलील देश में यीशु का काम हो गया, और उस ने सन्देश भेजा, और बहुतेरे गलील के बहुत नगरोंसे आए; उनके हाथ से आशीर्वाद लेने आया था।

2) जो भीड़ आई थी, उनमें लूका, अन्ताकिया का एक अरामी, एक विद्वान वैद्य और एक धर्मी और सीधा आदमी था।

3) थियोफिलस, एक ग्रीसी सीनेटर, कैसर के दरबार का एक मंत्री भी था; और कई अन्य सम्मानित और प्रसिद्ध व्यक्ति।

4) और मरियम ने गाया:

सभी ऊपर से डे स्टार की जय हो!

5) सभी उस मसीह की जय हो जो कभी था और है और हमेशा रहेगा!

6) छायाभूमि के अंधकार की जय हो! सभी पृथ्वी पर शांति की सुबह की जय हो; पुरुषों के लिए अच्छी इच्छा!

7) सभी जय विजयी राजा, जो अत्याचारी मृत्यु से जूझते हैं, जो युद्ध में विजय प्राप्त करते हैं, और पुरुषों के लिए अमर जीवन को प्रकाश में लाते हैं!

8) टूटे हुए क्रॉस, कटे-फटे भाले की जय हो!

9) सभी आत्मा की विजय की जय हो! खाली कब्र की जय हो!

10) सब उसके लिये जयजयकार करते हैं, जो मनुष्यों के द्वारा तुच्छ माने जाते हैं, और लोगों ने उन्हें ठुकराया है; क्योंकि वह शक्ति के सिंहासन पर विराजमान है!

11) सभी जय हो! क्योंकि उस ने सब देश के पवित्र लोगोंको अपके साथ सामर्थ के सिंहासन पर बैठने के लिथे बुलाया है!

12) सभी ओलों, टूटते घूंघट! मनुष्यों के पुत्रों के लिए परमेश्वर के उच्चतम न्यायालयों का मार्ग खुला है!

13) हे पृथ्वी के मनुष्यों, आनन्द करो, आनन्द करो, और अति आनन्दित रहो!

14) वीणा बजाओ और उसके सबसे ऊंचे तार को छूओ; ल्यूट को आगे लाओ और इसके मधुर स्वरों को ध्वनि दो!

15) क्योंकि जो मनुष्य नीच किए गए थे, वे अब ऊंचे हैं, और जो अन्धकार में और मृत्यु की घाटी में चले, वे जी उठे हैं, और परमेश्वर और मनुष्य युगानुयुग एक हैं।

16) अल्लेलूयाह! सदा के लिए यहोवा की स्तुति करो। तथास्तु।

17) और यीशु ने स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर कहा,

18) हे मेरे पिता-परमेश्वर, अब तेरे प्रेम, तेरी करुणा और तेरी सच्चाई की कृपा इन मनुष्यों पर बनी रहे।

19) दीया उनके बीच में से उठा लिया जाता है, और यदि भीतर का उजियाला न जले, तो वे अन्धकार और मृत्यु के मार्ग पर चल पड़ेंगे।

20) फिर उस ने सब से कहा, विदा

21) तब यीशु और उसकी माता, और बारह, और मरियम और मरियम, दोनों चेलों की माता, याकूब और यूहन्ना,

22) और बहुत से अन्य निष्ठावान प्राणी जो मसीह से प्रेम रखते थे, यरूशलेम को गए, कि वे यहूदी पर्व मनाएं।

23) और मार्ग में चलते हुए वे सलीम के निकट एनोन सोतों में आए, जहां पर अग्रदूत पढ़ाता था।

24) जब वे सोते के पास विश्राम कर रहे थे, तब जब्दी की पत्नी मरियम और दोनों शिष्यों की माता, याकूब और यूहन्ना गुरु के पास आई, और उस ने कहा,

25) मेरे प्रभु, मैं जानता हूं कि राज्य आने वाला है, और मैं यह वरदान मांगूंगा: आज्ञा करो कि मेरे ये पुत्र तुम्हारे साथ सिंहासन पर बैठेंगे, एक दाईं ओर, दूसरा बाईं ओर।

26) यीशु ने उस से कहा, तू नहीं जानती कि तू क्या मांगती है।

27) तब वह याकूब और यूहन्ना की ओर फिरकर कहने लगा, क्या तू तैयार है, और जो प्याला मैं पीऊंगा उसे पीने के लिथे क्या तू इतना सामर्थी है?

28) उन्होंने कहा, हां, स्वामी, हम इतने मजबूत हैं कि आप जहां जाते हैं उसका अनुसरण कर सकते हैं।

29) तब यीशु ने कहा, तू सचमुच मेरा कटोरा पीएगा; परन्तु मैं इस बात का न्यायी नहीं हूं कि मेरे दाहिनी ओर या मेरे बाएं ओर कौन बैठेगा।

30) जो लोग जीवन जीते हैं और विश्वास रखते हैं, वे सत्ता के सिंहासन पर विराजमान होंगे।

31) जब प्रेरितों ने माता की उसके पुत्रों के लिथे बिनती सुनी, और जान लिया, कि याकूब और यूहन्ना यहोवा से विशेष अनुग्रह चाहते हैं, तो वे क्रुद्ध हुए, और कहने लगे,

32) हमने निश्चित रूप से सोचा था कि जेम्स और जॉन स्वार्थी आत्म से ऊपर उठ गए थे। हम पुरुषों के पुत्रों में से किस पर भरोसा कर सकते हैं?

33) यीशु ने दसों को अलग बुलाकर उन से कहा, मनुष्य के लिये आत्मा के राज्य के स्वरूप को समझना क्या ही कठिन है!

34) इन दो शिष्यों को यह पता नहीं लगता कि स्वर्ग में शासन पृथ्वी पर शासन करने के समान नहीं है।

35) संसार के सब राज्यों में जो शक्तिशाली हैं, वे अपने आप को ऊंचा करते हैं, अपना अधिकार दिखाते हैं, और लोहे के शासन के साथ शासन करते हैं;

36) लेकिन तुम्हें पता होना चाहिए कि जो प्रकाश के पुत्रों पर शासन करते हैं, वे वे हैं जो सांसारिक शक्ति की तलाश नहीं करते हैं, लेकिन पुरुषों के लिए स्वेच्छा से अपना जीवन देते हैं।

37) जो कोई महान होगा वह सभी का मंत्री होना चाहिए। स्वर्ग में सबसे ऊंचा आसन उसके चरणों में है जो पृथ्वी का सबसे निचला व्यक्ति है।

38) जगत के उत्पन्न होने से पहिले मेरे पिता परमेश्वर के पास मेरी महिमा थी, तौभी मैं मनुष्यों की जाति की सेवा करने आता हूं; पुरुषों के मंत्री होने के लिए; पुरुषों के लिए अपना जीवन देने के लिए।

39) तब क्रिस्टीन कूच करके यरूशलेम को आए।

अध्याय 147

यीशु मंदिर में लोगों से मसीहा के बारे में बात करते हैं। यहूदियों को विश्वासघात के लिए फटकार लगाता है। यहूदी उसे पथराव करने का प्रयास करते हैं लेकिन यूसुफ द्वारा रोका जाता है। क्रिस्टीन यरीहो जाते हैं, और बाद में बेथाबारा जाते हैं।

अब, गलील, यहूदिया और सामरिया के बहुत से यहूदी यरूशलेम में और पर्व में थे।

2) सुलैमान का ओसारे शास्त्रियों और फरीसियों और व्यवस्था के डॉक्टरों से भरा हुआ था, और यीशु उनके साथ चल रहा था।

3) यीशु के पास आने वाले एक शास्त्री ने कहा, हे रब्बोनी, तुम लोगों की प्रतीक्षा क्यों करते हो? यदि तू वह मसीह है, जिसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था, कि वह आएगा, तो क्या अब तू हमें नहीं बताएगा?

4) यीशु ने कहा, सुन, मैं तुम से बहुत बार कह चुका हूं, परन्तु तुम ने मेरी प्रतीति नहीं की।

5) जो काम मैं ने किया है वह कोई मनुष्य नहीं कर सकता और न ही मनुष्यों के सामने सत्य ला सकता है, जैसा कि मैं उस सत्य को लाया हूं जो परमेश्वर की ओर से नहीं आया था।

6) मैंने जो कुछ किया है और कहा है वह मेरे साक्षी है।

7) परमेश्वर बुलाता है, और जिनके कान स्वर्गीय शब्द सुनने से लगे हैं, उन्होंने उस पुकार को सुना और मुझ पर विश्वास किया है; क्योंकि परमेश्वर मेरी गवाही देता है।

8) तुम परमेश्वर की आवाज नहीं सुन सकते क्योंकि तुम्हारे कान बंद हैं। तुम परमेश्वर के कार्यों को नहीं समझ सकते क्योंकि तुम्हारे हृदय स्वयं से भरे हुए हैं।

9) और आप व्यस्त शरीर, शरारत करने वाले, पाखंडी हैं। तुम इन लोगों को, जिन्हें ईश्वर ने मुझे अपने ठिकाने में दिया है, ले लो और उन्हें धूर्तता और झूठ से जहर देने की कोशिश करो और सोचो कि तुम उन्हें भगवान की तह से छीन लोगे।

10) हे मनुष्यों, मैं तुम से कहता हूं, ये लोग परखे हुए हैं, और तुम इनमें से एक को भी छीन नहीं सकते।

11) मेरा पिता जिस ने उन्हें मुझे दिया है, वह तुम सब से बड़ा है, और वह और मैं एक हैं।

12) तब यहूदियोंने उस पर पत्यर मारने को कहा, और हम ने सुन लिया; उसके साथ दूर; उसे पत्थरवाह करने दो।

13) परन्तु यूसुफ, जो यहूदियों की महान महासभा का सदस्य था, ओसारे पर था, और निकलकर कहने लगा,

14) हे इस्राएल के लोगों, कुछ उतावला मत करो; उन पत्थरों को फेंक दो; ऐसे समय में आपका कारण जुनून से बेहतर मार्गदर्शक है।

15) तुम नहीं जानते कि तुम्हारे आरोप सत्य हैं, और यदि यह मनुष्य स्वयं को मसीह साबित करे, और तुम उसका प्राण ले लो, तो परमेश्वर का क्रोध तुम पर और भी अधिक छाया करेगा।

16) यीशु ने उन से कहा, देखो, मैं ने तुम्हारे रोगियोंको चंगा किया है, तुम्हारे अंधोंको देखा है, तुम्हारे बहरे सुने हैं, तुम्हारे लंगड़े चल रहे हैं, और तुम्हारे मित्रोंमें से अशुद्ध आत्माओं को निकाल दिया है;

17) इनमें से किस महान कार्य के लिए आप मेरा प्राण लेना चाहेंगे?

18) यहूदियों ने उत्तर दिया, हम तेरे अनुग्रह के कामों के कारण नहीं, परन्तु तेरी निन्दा और निन्दा के कारण तुझे पत्थरवाह करेंगे। तुम सिर्फ आदमी हो और फिर भी तुम कहते हो कि तुम भगवान हो।

19) यीशु ने कहा, तेरे ही भविष्यद्वक्ता ने मनुष्योंसे कहा, सुन, तू देवता है!

20) अब, हे मनुष्यो, यदि वह उन लोगों से कह सकता है जिन्होंने परमेश्वर का वचन सुना है, तो तुम क्यों सोचते हो कि मैं परमेश्वर के नाम की निन्दा करता हूं, क्योंकि मैं कहता हूं, मैं परमेश्वर का पुत्र हूं?

21) यदि तुम मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते, तो जो कुछ मैं करता हूं उस पर विश्वास रखना, और पिता को इन कामों में देखना, और जानना कि मैं पिता परमेश्वर में वास करता हूं, और पिता मुझ में वास करता है।

22) और तब यहूदी फिर से पत्यर लेते, और मन्दिर के आंगन में उसे पत्यरवाह करते; परन्तु वह दृष्टि से हट गया, और ओसारे और आंगन को छोड़कर चला गया;

23) और बारहोंके संग वह यरीहो को गया, और कुछ दिनोंके बाद वे यरदन पार गए, और बेतबारा में बहुत दिन तक रहे।

अध्याय 148

लाजर मर जाता है और यीशु और बारह बैतनिय्याह लौट जाते हैं। लाजर का पुनरुत्थान, जो यरूशलेम के शासकों को बहुत उत्साहित करता है। क्रिस्टीन एप्रैम की पहाड़ियों पर जाते हैं, और वहीं रहते हैं।

एक दिन जब यीशु और बारह अरब के एक घर में सन्नाटे में थे, तब एक दूत ने आकर कहा,

2) हे प्रभु, यीशु, सुन! बेथानी में तुम्हारा मित्र बीमार है, मृत्यु के निकट: उसकी बहनों ने आग्रह किया कि तुम उठो और फुर्ती से आओ।

3) तब स्वामी ने बारहों की ओर फिरकर कहा, सुन, लाजर सो गया है, और मुझे जाकर उसे जगाना अवश्य है।

4) उसके चेलों ने कहा, यदि वह सो गया है तो जाने की क्या आवश्यकता; वह धीरे-धीरे जागेगा?

5) तब यीशु ने कहा, यह मृत्यु की नींद है; क्योंकि लाजर मर चुका है।

6) लेकिन यीशु ने जाने की जल्दी नहीं की; वह दो दिन अरब में रहा; और उस ने कहा, वह घड़ी आ पहुंची है, और हमें बैतनिय्याह को जाना अवश्य है।

7) परन्तु उसके चेलों ने उस से न जाने का आग्रह किया; उन्होंने कहा, यहूदी तेरे लौटने की बाट जोहते हैं, कि वे तेरे प्राण ले लें।

8) यीशु ने कहा, जब तक मैं अपना प्राण उन्हें न सौंप दूं, तब तक मनुष्य मेरे प्राण नहीं ले सकते।

9) और जब समय आएगा तब मैं आप ही अपना प्राण दूँगा; वह समय निकट है, और परमेश्वर सर्वोत्तम जानता है; मुझे उठकर जाना चाहिए।

10) थोमा ने कहा, तब हम भी जाएंगे; हाँ, हम अपने प्राणों को बलिदान करेंगे और उसके साथ मरेंगे। और वे उठे और चले गए।

11) अब, मरियम, मार्था, रूत और बहुत से मित्र अपने घर में रो रहे थे, जब एक ने पास आकर कहा, प्रभु आ गया है; परन्तु मरियम ने शब्द नहीं सुने।

12) परन्तु रूत और मार्था ने सुना, और वे उठकर यहोवा से भेंट करने को गए; वह गांव के गेट पर इंतजार कर रहा था।

13 और जब वे स्वामी से मिले, तो मार्था ने कहा, तुम बहुत देर कर चुके हो, क्योंकि लाजर मर गया है; यदि तुम केवल हमारे साथ होते तो मैं जानता हूं कि वह नहीं मरता।

14) परन्तु अब भी मैं जानता हूं कि मृत्यु पर तेरा अधिकार है; कि पवित्र वचन के द्वारा तुम जीवन को मृत्यु में से जी उठो।

15) यीशु ने कहा, देख, लाजर फिर जीवित रहेगा।

16) मार्था ने कहा, मैं जानती हूं, कि जब सब मुर्दे जी उठेंगे, तब वह जी उठेगा और जीएगा।

17) यीशु ने कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं; जिस को मुझ पर विश्वास है, वह मरा हुआ तौभी जीवित रहेगा;

18) और जो जीवित है, और मुझ पर जीवित विश्वास रखता है, वह कभी न मरेगा। क्या आप विश्वास करते हैं कि मैंने क्या कहा है?

19) मार्था ने कहा, हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं कि तू परमेश्वर के मसीह को प्रगट करने आया है।

20) यीशु ने कहा, लौट जा, और अपनी बहिन, और मेरी माता और भविष्यद्वक्ता को बुलवाकर कह, कि मैं आया हूं; और मैं यहां फाटक के पास तब तक रहूंगा, जब तक वे मेरे पास न आ जाएं।

21) और रूत और मार्था ने वैसा ही किया जैसा यीशु ने उन्हें करने को कहा था, और कुछ ही देर में मरियम और भविष्यद्वक्ता प्रभु से मिले।

22) मरियम ने कहा, तू ने ऐसा क्यों किया? यदि तुम हमारे साथ होते तो हमारे भाई, प्रिये, मरते नहीं।

23) तब यीशु घर के पास गया, और सब के भारी दुःख को देखकर आप ही शोक से व्याकुल हो उठा, और कहा, वह कब्र कहां है जिसमें वह पड़ा है?

24) उन्होंने कहा, हे प्रभु, आकर देख। और यीशु रोया।

25) लोगों ने कहा, देख, यीशु इस मनुष्य से कैसा प्रेम रखता है!

26) औरों ने कहा, क्या यह प्रभु, जिसने जन्म से अंधे की आंखें खोली हैं, इस मनुष्य को मृत्यु से नहीं बचा सकता?

27) परन्तु शोक करनेवाले शीघ्र ही कब्र के पास खड़े हो गए; एक विशाल पत्थर ने दरवाजा बंद कर दिया।

28) यीशु ने कहा, तुम पत्थर ले जाओ।

29) मार्था ने कहा, हे प्रभु, क्या यह ठीक है? निहारना, हमारे भाई को मरे चार दिन हो गए हैं; शरीर क्षय में होना चाहिए, और क्या यह ठीक है कि हमें इसे अभी देखना चाहिए?

30) यहोवा ने उत्तर दिया, हे मार्था, क्या तुम भूल गए हो, जो मैं ने उस समय कहा था जब हम गांव के फाटक पर थे? क्या मैंने नहीं कहा था कि तुम यहोवा की महिमा को देखोगे?

31) तब उन्होंने पत्यर को लुढ़का दिया; मांस सड़ नहीं गया था; और यीशु ने स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर कहा,

32) हे मेरे परमेश्वर पिता, तू ने, जिस ने कभी मेरी प्रार्थना सुनी है, मैं अब तेरा धन्यवाद करता हूं, और ये भीड़ जान लें कि तू ने मुझे भेजा है, कि मैं तेरा हूं, और तू मेरा है, सामर्थ के वचन को दृढ़ कर।

33) तब उस ने वचन सुनाया, और उस शब्द में जिसे प्राण समझ सकें, उस ने कहा, हे लाजर, जाग!

34) और लाजर उठकर कब्र में से निकला। कब्र के कपड़े उसके चारों ओर तेजी से थे, और यीशु ने कहा,

35) उसे खोलकर जाने दो।

36) लोग चकित हुए और लोगों ने उस पर अपना विश्वास स्वीकार किया।

37) और कुछ ने यरूशलेम को जाकर फरीसियों को मरे हुओं के इस पुनरुत्थान के बारे में बताया।

38) प्रधान याजक चकित हुए, और उन्होंने कहा, हम क्या करें? यह आदमी बहुत शक्तिशाली काम कर रहा है, और अगर हम उसे उसके काम में नहीं रोकते हैं, तो सभी लोग उसे राजा के रूप में देखेंगे, और रोमियों के माध्यम से वह सिंहासन ले सकता है, और हम अपना स्थान और शक्ति खो देंगे।

39) तब महायाजकों और महासभा में फरीसियों ने मिलकर एक योजना की खोज की, जिसके द्वारा वे उसे मार डालें।

40) उस समय कैफा महायाजक था, और उसने निकलकर कहा, हे इस्राएल के लोगो, क्या तुम व्यवस्था को नहीं जानते?

41) क्या आप नहीं जानते कि ऐसे समय में हम अपने राष्ट्र और अपने कानूनों को बचाने के लिए एक जीवन का त्याग कर सकते हैं?

42) कैफा नहीं जानता था कि वह नबी था, जो सत्य की बातें कह रहा था।

43) वह नहीं जानता था कि वह समय आ गया है कि यीशु हर एक मनुष्य, यहूदी और यूनानी, और सारे जगत के लिये बलि चढ़ाए।

44) उस दिन के बाद से यहूदी हर दिन आपस में मिलते थे, और प्रभु को मार डालने की योजनाएँ परिपक्व करते थे।

45) अब, यीशु और बारह बैतनिय्याह में नहीं रहे; परन्तु एप्रैम के पहाड़ी देश में शोमरोन के सिवाने पर उन्हें एक घर मिला, और वे वहां बहुत दिन तक रहे।

अध्याय 149

यहूदी जेरूसलम में दावत में शामिल होने के लिए इकट्ठा होते हैं। क्रिस्टीन जेरिको जाते हैं। यीशु ने जक्कई के साथ भोजन किया। वह दस प्रतिभाओं के दृष्टांत से संबंधित है।

यहूदियों का महान फसह, वसंत का पर्व, प्रत्येक निष्ठावान यहूदी को यरूशलेम में बुला रहा था।

2) पर्व के दस दिन पहिले यहोवा और उसके चेले एप्रैम की पहाड़ियों को छोड़कर यरदन के मार्ग से यरीहो को गए।

3) और जब वे यरीहो में प्रवेश कर रहे थे, तब एक धनी चुंगी लेने वाला यहोवा के दर्शन के लिथे निकला; परन्तु वह कद में छोटा था और भीड़ बहुत बड़ी थी और वह उसे देख नहीं सकता था।

4) रास्ते में एक गूलर का पेड़ खड़ा था और वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उसकी डालियों के बीच में एक आसन पाया।

5) जब यीशु आया, तो उस पुरूष को देखकर कहा, हे जक्कई, फुर्ती से नीचे आ; मैं आज आपके साथ रहूंगा।

6) और जक्कई ने उतर कर आनन्द से यहोवा को ग्रहण किया; परन्तु बहुत से कठोर पंथ ने पुकार कर कहा,

7) शर्म के लिए! वह पापी और चुंगी लेनेवाले जक्कई के पास रहने को जाता है।

8) लेकिन यीशु ने उनकी बातों की परवाह नहीं की; वह जक्कई के संग चला, जो विश्वासी था, और जब वे आपस में बातें कर रहे थे, तब जक्कई ने कहा,

9) हे प्रभु, मैंने कभी भी सही करने की कोशिश की है; मैं अपना आधा माल गरीबों को देता हूं, और अगर किसी भी तरह से मैं एक आदमी को गलत करता हूं, तो मैं उसे चार गुना भुगतान करके गलत को सही करता हूं।

10) यीशु ने उस से कहा, तेरा जीवन और विश्वास परमेश्वर को मालूम है, और देखो, सेनाओं के यहोवा का आशीर्वाद तुम्हारे और तुम्हारे सारे घर में बना रहेगा।

दस प्रतिभाओं का दृष्टान्त

11) तब यीशु ने सब से एक दृष्टान्त कहा; उसने कहा, एक सम्राट के एक जागीरदार को राजा बनाया गया, और वह अपने अधिकारों का दावा करने और अपने राज्य को अपने पास लेने के लिए परदेश में गया।

12) जाने से पहले उसने दस भरोसेमंद सेवकों को बुलाया, और प्रत्येक को एक पाउंड दिया और कहा,

13) आगे बढ़ो और इन पाउंडों को अवसर के रूप में उपयोग करो, कि तुम मेरे लिए और अधिक धन प्राप्त कर सकते हो, और फिर वह अपने रास्ते चला गया।

14) और बहुत दिनों के बाद वह फिर आया, और दसों को बुलाकर समाचार मांगा।

15) पहिले ने आकर कहा, हे प्रभु, मैं ने नौ पौंड अर्जित किए हैं; तुमने मुझे एक दिया और यहाँ दस हैं।

16) राजा ने उत्तर दिया, धन्य है, हे विश्वासयोग्य मनुष्य; क्योंकि तुम छोटी बात में विश्वासयोग्य रहे हो, मैं न्याय करता हूं, कि तुम बड़ी बात में भी विश्वासयोग्य दास ठहरोगे;

17) देख, मैं तुझे अपने राज्य के नौ महत्वपूर्ण नगरों का अधिकारी बनाता हूं।

18) दूसरे ने आकर कहा, हे प्रभु, मैं ने तेरे लिथे चार पौंड कमाए हैं; तुमने मुझे एक दिया, और यहाँ पाँच हैं।

19) राजा ने उत्तर दिया, और तू ने अपनी सच्चाई को प्रमाणित किया है। देख, मैं तुझे अपने राज्य के चार महत्वपूर्ण नगरों का अधिकारी बनाता हूं।

20) दूसरे ने आकर कहा, हे प्रभु, जो कुछ तू ने मुझे दिया है, वह मैं ने दुगना कर दिया है। आपने मुझे एक पाउंड दिया और यहाँ दो हैं।

21) हाकिम ने कहा, और तू ने अपनी सच्चाई को प्रमाणित किया है; देख, मैं तुझे अपने राज्य के एक महत्वपूर्ण नगर का अधिकारी बनाता हूं।

22) दूसरे ने आकर कहा, हे प्रभु, जो तू ने मुझे दिया है वह यह है। मैं जानता था कि तू कठोर मनुष्य है, और जहां तू ने नहीं बोया वहां काटता रहा, और मैं बहुत डरता था, सो मैं ने वह पौंड ले लिया, जो तू ने मुझे दिया था, और उसे गुप्त स्थान में छिपा दिया; और यह यहाँ है।

23) राजा ने कहा, हे आलसी मनुष्य! तुम्हें पता था कि मुझे क्या चाहिए, कि मुझे उम्मीद है कि हर आदमी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेगा।

24) यदि आप डरपोक थे और व्यापार के बाजारों में अपने निर्णय पर भरोसा करने से डरते थे, तो क्यों नहीं जाते थे और मेरे पैसे को लाभ के लिए बाहर कर देते थे, कि मैं अपना खुद का ब्याज प्राप्त कर सकता था?

25) तब हाकिम ने अपके धन के भण्डारी की ओर फिरकर कहा, यह पौण्ड ले कर उसको दे, जिस ने परिश्रम से नौ कमाए।

अंत: दस प्रतिभाओं का दृष्टांत

---

26) क्योंकि देखो, मैं कहता हूं, कि जो कोई अपनी अपनी संपत्ति और लाभ का उपयोग करता है, उसके पास बहुतायत से होगा; परन्तु जो अपना तोड़ा पृथ्वी पर छिपा रखता है, वह अपना सब कुछ खो देगा।

अध्याय 150

यीशु अंधे बरतिमाईस को चंगा करता है। बारह के साथ वह बैतनिय्याह को जाता है। भीड़ उसका स्वागत करने और लाजर से बात करने के लिए आती है।

तब क्रिस्टीन बैतनिय्याह को चले, और चलते चलते यरीहो में जाते हुए मार्ग में बैठे एक भिखारी के पास से गए; और वह अंधा बरतिमाईस था।

2) और भिखारी ने भीड़ को पास से आते सुना, उस ने कहा, मैं क्या सुन रहा हूं?

3) लोगों ने उस से कहा, यीशु नासरत के पास से होकर जाता है।

4) और उस मनुष्य ने तुरन्त पुकार कर कहा, हे प्रभु यीशु, दाऊद के पुत्र, ठहर! गरीब अंधे बरतिमाईस पर दया करो!

5) लोगों ने उस से कहा, चुप रहो; अपनी शांति बनाए रखें।

6) परन्तु अन्धे बरतिमाई ने फिर पुकारा, हे दाऊद की सन्तान, सुन! गरीब अंधे बरतिमाईस पर दया करो!

7) यीशु रुका और बोला, उसे मेरे पास ले आओ।

8) तब लोग उस अन्धे को यहोवा के पास ले आए, और उसे उठाकर ले आए, और कहने लगे, हे बरतिमाई, आनन्दित हो, यहोवा तुझे बुला रहा है।

9) फिर वह अपना चोगा एक तरफ फेंक कर यीशु के पास दौड़ा और रास्ते में उसकी बाट जोह रहा था।

10) और यीशु ने कहा, बरतिमाई, तुम्हारे पास क्या होगा?

11) अन्धे ने कहा, हे रब्बोनी, मेरी आंखें खोल कि मैं देख सकूं।

12) यीशु ने कहा, हे बरतिमाई, ऊपर की ओर देख; अपनी दृष्टि प्राप्त करें; आपके विश्वास ने आपको संपूर्ण बना दिया है।

13) उस ने तुरन्त दृष्टि प्राप्त की, और अपने मन की परिपूर्णता से कहा, परमेश्वर की स्तुति करो।

14) और सब लोगोंने कहा, परमेश्वर की स्तुति करो।

15) तब यीशु और बारह बैतनिय्याह को गए। दावत के छह दिन पहले की बात है।

16) और जब लोगों ने जान लिया कि यीशु बैतनिय्याह में है, तो दूर दूर से उसे देखने और उसकी बातें सुनने के लिथे आए।

17) और वे सब लाजर से बात करने के लिए व्याकुल थे, जिसे यीशु ने मरे हुओं में से जगाया था।

18) अब यरूशलेम में याजक और फरीसी सब चौकस थे; उन्होंने कहा, यह यीशु पर्ब्ब में होगा, और हम को ऐसा न होने देना, कि वह फिर खिसक जाए।

19) और उन्होंने एक एक जन को सावधान रहने और यहोवा को पकड़ने में सहायता करने की आज्ञा दी, कि वे उसके प्राण ले लें।

अध्याय 151

यीशु आराधनालय में पढ़ाते हैं। यरूशलेम में अपना विजयी प्रवेश करता है। लोगों की भीड़, बच्चों के साथ, उसकी स्तुति गाती है, और कहती है, राजा को होस्ना! क्रिस्टीन बेथानी लौट आए।

यह सब्त के दिन से एक दिन पहले, यहूदी निसान महीने का आठवाँ दिन था, जब यीशु बेथानी आए।

2) और सब्त के दिन वह आराधनालय में गया और उपदेश देने लगा।

3) और सप्ताह के पहिले दिन के भोर को, अर्थात सप्ताह के रविवार को, उस ने अपके बारह प्रेरितोंको अपने पास बुलाकर कहा,

4) आज के दिन हम यरूशलेम को जाते हैं; डर नहीं होना; मेरा समय अभी नहीं आया है।

5) अब, तुम में से दो लोग बेतफगे के गाँव में जा सकते हैं, और तुम्हें एक पेड़ से बंधा हुआ एक गदहा मिलेगा, और तुम्हें पास में एक छोटा बच्चा दिखाई देगा।

6) गधे को खोलो और उसे यहाँ मेरे पास ले आओ। यदि कोई पूछे कि तुम गधे को क्यों उठाते हो, तो कहना, स्वामी को उसकी आवश्यकता है; तब स्वामी तुम्हारे साथ आएगा।

7) और जैसे यीशु ने उन्हें जाने की आज्ञा दी, वैसे ही चेले चले गए; उन्होंने गदहा और बछेड़ा एक खुले द्वार के पास पाया; और जब वे गदही को खोल देते, तब स्वामी ने कहा, तू उस गदहे को क्यों उठा लेगा?

8) शिष्यों ने कहा, स्वामी को उसकी आवश्यकता है, तब स्वामी ने कहा, 'ठीक है।

9) तब वे उस पशु को ले आए, और अपके अंगरखे उस पर पहिनाए, और यीशु गदही पर बैठकर यरूशलेम को गया।

10) और लोगों की भीड़ ने आकर मार्ग में भर दिया, और उसके चेलों ने यहोवा की स्तुति करके कहा,

12) और बहुतों ने अपने वस्त्र मार्ग में फैलाए, और कितने ने वृझों की डालियां फाड़कर मार्ग में डाल दीं।

13) और बहुत से बच्चों ने मीठे फूलों की माला लेकर आकर यहोवा पर लगाया, वा मार्ग में बिखेरा, और कहा, सब राजा की जय हो! जय हो राजा !

14) दाऊद का सिंहासन फिर से बनाया जाएगा। होसन्ना सेनाओं के यहोवा को!

15) उस भीड़ में फरीसी थे, जिन्होंने यीशु से जाते हुए कहा, इस शोरगुल वाले भीड़ को फटकार; उनके लिए गली में इस प्रकार रोना शर्म की बात है।

16) यहोवा ने उत्तर दिया, हे मनुष्यो, मैं तुम से कहता हूं, कि यदि ये चुप रहें, तो पत्यर ऊंचे स्वर से चिल्लाएंगे।

17) और तब फरीसी आपस में विचार-विमर्श करने लगे; उन्होंने कहा, हमारी धमकियां बेकार की बातें हैं। निहारना, क्योंकि सारी दुनिया उसके पीछे हो रही है।

18) जब यीशु यरूशलेम के निकट आया, तो वह रुका और रोया, और कहा, यरूशलेम, यरूशलेम, यहूदियों का पवित्र नगर! यहोवा की महिमा तेरी ही थी; परन्तु तू ने यहोवा को दूर फेंक दिया है।

19) तुम्हारी आंखें बंद हैं; तुम राजा को नहीं देख सकते; स्वर्ग और पृथ्वी के यहोवा का राज्य आ गया है; आप इसे नहीं समझते हैं।

20) देखो, वह दिन आएगा, जब दूर से सेनाएं तेरे मार्ग में एक किनारा डाल देंगी; तुझे घेर लेगा, और तुझे चारों ओर से घेर लेगा;

21) तुझे भूमि पर पटक देगा, और तुझे और तेरे बच्चों को सड़कों पर मार डालेगा।

22) और तेरे पवित्र मन्दिर, और तेरे महलोंऔर शहरपनाह के विषय में वे पत्यर पर पत्यर न रहने पाएंगे, क्योंकि आज तू ने स्वर्ग के परमेश्वर के चढ़ावे को ठुकराया है।

23) जब यीशु और भीड़ यरूशलेम में आए, तो उत्साह का राज्य हुआ, और लोगों ने पूछा, यह कौन है?

24) लोगों ने उत्तर दिया, यह परमेश्वर का राजा, भविष्यद्वक्ता, याजक है; यह गलील का मनुष्य है।

25) लेकिन यीशु ने देर नहीं की; वह सीधे मन्दिर के ओसारे में गया, और वह लोगों से भर गया था, जो राजा को देखने के लिये बहुत दबाव में थे।

26) बीमार, पड़ाव, लंगड़े, अंधे वहां थे, और यीशु रुका, और उन पर हाथ रखा और पवित्र वचन के द्वारा उन्हें चंगा किया।

27) मन्दिर और मन्दिर के प्रांगण परमेश्वर की स्तुति करने वाले बच्चों से भरे हुए थे। उन्होंने कहा, होशाना राजा को! दाऊद का पुत्र राजा है! राजा की जय हो! जय भगवन!

28) बच्चों को गाते हुए सुनकर फरीसी क्रोध से भर उठे। उन्होंने यीशु से कहा, सुन, बच्चे क्या कहते हैं?

29) यीशु ने कहा, मैं सुनता हूं, परन्तु क्या तुम ने हमारे अपने उस दल के शब्द कभी नहीं पढ़े, जिन्होंने कहा था,

30) तू ने बालकों और दूध पिलानेवालोंके मुंह से स्तुति सिद्ध की है!

31) साँझ होने पर प्रभु और उसके चेले फिर बैतनिय्याह को गए।

अध्याय 152

यीशु ने एक बंजर अंजीर के पेड़ को डांटा। व्यापारियों को मंदिर से भगा दिया। लोगों को पढ़ाते हैं। बेथानी को लौटें।

अगले दिन, सप्ताह के सोमवार, बारहों के साथ गुरु, यरूशलेम को गया।

2) और रास्ते में चलते हुए उन्होंने देखा कि अंजीर का एक पेड़ पत्तों से भरा हुआ है, जिसमें फल का कोई चिन्ह नहीं है।

3) और यीशु ने पेड़ से बात की; उस ने कहा, हे भूमि के फालतू घास काटने वाले; आप अंजीर के पेड़ को देखने के लिए मेला, लेकिन एक भ्रामक बात है।

4) तुम पृथ्वी से लो और उस भोजन को हवा दो जो फलदार वृक्षों के पास होना चाहिए।

5) पृथ्वी पर वापस जाओ और अन्य पेड़ों के खाने के लिए स्वयं भोजन बनो।

6) जब यीशु ने पेड़ से इस प्रकार बात की, तो वह चला गया।

7) और जब वह मन्दिर में पहुंचा, तो देखो, वे कोठरियां छोटे व्यापारियों से भर गई हैं, जो कबूतर, पशु, और अन्य वस्तुएं बलि के लिथे बेचती हैं; मंदिर व्यापार का एक मार्ट था।

8) यीशु ने यह देखकर क्रोधित होकर कहा, हे इस्राएल के लोगो, लज्जित हो! यह प्रार्थना का घर माना जाता है; लेकिन अब यह चोरों का अड्डा है। इस लूट को इस पवित्र स्थान से हटाओ।

9) व्यापारी केवल हँसते थे और कहते थे, हम अपने व्यापार में उन लोगों द्वारा सुरक्षित हैं जो शासन करते हैं; हम नहीं जाएंगे।

10) तब यीशु ने पहिले की नाईं रस्सियोंका कोड़ा बनाया, और व्यापारियोंके बीच दौड़कर उनका सारा रुपया भूमि पर फेंक दिया;

11) कबूतरों के पिंजरों को चौड़ा कर फेंक दो और उन डोरियों को काट दो जिनमें मेमनों का खून था और उन्हें आज़ाद कर दो।

12) फिर उसने व्यापारियों को उस स्थान से खदेड़ दिया, और एक नई नई झाड़ू से फर्श की सफाई की।

13) महायाजक और शास्त्री क्रोध से भर गए, परन्तु यहोवा को छूने या डांटने से डरते थे, क्योंकि सब लोग उसके बचाव में खड़े रहे।

14) और यीशु ने दिन भर लोगों को शिक्षा दी, और बहुत से रोगियों को चंगा किया,

15) और जब सांझ हुई तो वह फिर बैतनिय्याह चला गया।

अध्याय 153

क्रिस्टीन यरूशलेम जाते हैं। वे सूखे अंजीर के पेड़ पर ध्यान देते हैं; इसका प्रतीकात्मक अर्थ। यीशु मंदिर में शिक्षा देते हैं। पुजारियों द्वारा निंदा की जाती है। एक अमीर आदमी की दावत का दृष्टांत बताता है।

मंगलवार को, दिन की शुरुआत में, स्वामी और बारह यरूशलेम को गए।

2) और जाते-जाते बारहोंने उस वृक्ष को देखा जिस से एक दिन पहिले यहोवा ने बातें की थीं, और देखो, पत्ते ऐसे सूख गए, मानो आग से झुलस गए हों।

3) पतरस ने कहा, हे प्रभु, वृक्ष को देख! इसके पत्ते मुरझा जाते हैं, और पेड़ मृत प्रतीत होता है।

4) यीशु ने कहा, ऐसा ही उनके साथ होगा जो फल नहीं लाते। जब परमेश्वर उन्हें लेखा देने के लिये बुलाएगा, तो देखो, वह उन पर फूंक देगा, और उनके पत्ते, और उनकी खोखली बातें, मुरझाकर सड़ जाएंगी।

5) परमेश्वर जीवन के फलहीन वृक्षों को भूमि पर नहीं चढ़ने देगा, और वह उन्हें तोड़कर सब को फेंक देगा।

6) अब, आप परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं। परमेश्वर पर विश्वास रखो, और तुम पहाड़ों को विदा करने के लिए कह सकते हो, और वे तुम्हारे चरणों में गिर जाएंगे;

7) और तू पवन और लहर से बातें करना, और वे सुनेंगे, और तेरी आज्ञा को मानेंगे।

8) ईश्वर विश्वास की प्रार्थना सुनता है और जब तुम विश्वास से मांगोगे तो तुम्हें प्राप्त होगा।

9) आप गलत नहीं पूछ सकते; परमेश्वर किसी भी मनुष्य की प्रार्थना नहीं सुनेगा जो उसके पास दूसरे आदमियों का खून अपने हाथों पर लिए हुए आता है।

10) और जो ईर्ष्यालु विचारों को मन में रखता है, और अपने संगी मनुष्यों से प्रेम नहीं रखता, वह सदा परमेश्वर से प्रार्थना करे, और वह उसकी न सुनेगा।

11) परमेश्वर मनुष्यों के लिए इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता जितना वे अन्य पुरुषों के लिए करते हैं।

12) और यीशु फिर से मंदिर के आंगन में चला गया।

13) कैफा की परिषद और अन्य शक्तिशाली लोगों द्वारा याजकों और शास्त्रियों को बहुत उत्साहित किया गया था, और वे यीशु के पास आए और उन्होंने कहा,

14) जैसा तुमने किया है वैसा करने का अधिकार तुम्हें किसने दिया? आपने कल व्यापारियों को मंदिर से क्यों खदेड़ा?

15) यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, और कहा, यदि तुम मेरी बात का उत्तर दोगे, तो मैं तुम्हें उत्तर दूंगा; क्या जॉन, अग्रदूत, परमेश्वर का व्यक्ति था, या वह एक देशद्रोही व्यक्ति था?

16) शास्त्री और फरीसी उसे उत्तर देने से कतराते थे; उन्होंने आपस में इस प्रकार तर्क किया:

17) यदि हम कहें, यूहन्ना परमेश्वर की ओर से भेजा गया भविष्यद्वक्ता था, तो वह कहेगा,

18) यूहन्ना ने मेरे लिये गवाही दी, कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं, तुम उसकी बातों की प्रतीति क्यों नहीं करते?

19) यदि हम कहें, यूहन्ना एक साहसी, देशद्रोही व्यक्ति था, तो लोग क्रोधित होंगे, क्योंकि वे सोचते हैं कि वह जीवित परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता था।

20) उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, और कहा, हम नहीं जानते; हम नहीं बता सकते।

21) तब यीशु ने कहा, यदि तू मुझ से न कहेगा, तो मैं तुझ से न कहूंगा, कि मुझे डाकुओं को परमेश्वर के भवन से भगाने की शक्ति किस ने दी है।

एक अमीर आदमी की दावत का दृष्टांत

22) फिर उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, एक मनुष्य ने एक बार देश के सब धनी और प्रतिष्ठित लोगोंको न्यौता देकर जेवनार की।

23) परन्तु जब वे आए, तो उन्होंने पाया कि भोज-भवन का द्वार नीचा है, और वे प्रवेश नहीं कर सकते, जब तक वे सिर झुकाकर घुटनों के बल न गिरे।

24) ये लोग सिर झुकाकर घुटनों के बल न गिरे, और चले गए; वे भोज में नहीं गए।

25) और तब उस ने अपके दूतोंको भेजा, कि वे साधारण लोगोंऔर नीची जातियोंके लोगोंको कहें, कि आकर उसके साथ भोजन करें।

26) ये लोग खुशी-खुशी आए; और वे सिर झुकाकर घुटनों के बल गिरे, और भोज-भवन में आए, और वह भर गया, और सब आनन्दित हुए।

अंत: एक अमीर आदमी की दावत का दृष्टांत

27) तब स्वामी ने कहा, सुन, हे याजकों और शास्त्रियों, और फरीसियों! आकाश और पृथ्वी के यहोवा ने एक भव्य पर्ब्ब लगाया है, और सब से पहिले तुम को ठहराया गया है;

28) परन्तु तुम ने भोज-भवन का द्वार इतना नीचे पाया है, कि सिर झुकाकर प्रवेश करने के लिथे घुटनों के बल गिरना, और उस राजा का तिरस्कार करना, जिस ने जेवनार किया, और सिर झुकाकर उस पर गिर न पड़े। तुम्हारे घुटने, और तुम अपने रास्ते चले गए;

29) परन्तु अब परमेश्वर फिर बुलाता है; साधारण लोग और नीची जाति के लोग बड़ी संख्या में आए हैं, और पर्व में प्रवेश किया है और सब आनन्दित हुए हैं।

30) हे मनुष्यों, मैं तुम से कहता हूं, कि चुंगी लेनेवाले और भिखारी फाटकों से होकर स्वर्ग के परमेश्वर के राज्य में जाते हैं, और तुम बाहर रह जाते हो।

31) यूहन्ना धर्म के साथ तुम्हारे पास आया; वह सत्य लाया, परन्तु तू ने उस पर विश्वास नहीं किया।

32) परन्तु चुंगी लेनेवाले और तवायफों ने विश्वास किया और बपतिस्मा लिया और अब वे पर्व में प्रवेश कर चुके हैं।

33) अब मैं तुम से कहता हूं, जैसा मैं तुम से बहुत बार कह चुका हूं, बुलाए गए तो बहुत हैं, पर चुने हुए थोड़े हैं।

अध्याय 154

यीशु मंदिर के दरबार में शिक्षा देते हैं। गृहस्थ और दुष्ट किसानों का दृष्टान्त। शादी की दावत का दृष्टांत और बिना शादी के मेहमान।

भीड़ ने सुन लिया कि यीशु को क्या कहना है, और इसलिए उन्होंने मंदिर के आंगन में एक चबूतरा बनाया, और यीशु उस स्थान पर खड़े होकर उपदेश देने लगे। वह दृष्टान्तों में बोला; उन्होंने कहा,

गृहस्थ और दुष्ट पति का दृष्टान्त

2) एक आदमी के पास एक विशाल संपत्ति थी; उस ने दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ा लगाया, गुम्मट बनवाया, दाखमधु बनाने का कुण्ड लगाया।

3) उसने अपनी दाख की बारी किसानों के हाथ में रख दी और फिर दूर देश को चला गया।

4) अब, पुराने समय में उस आदमी ने दाखलताओं के फलों में से अपना हिस्सा लेने और उसके पास लाने के लिए एक नौकर को भेजा।

5) किसानों ने बाहर आकर उस आदमी को पीटा; और उसकी पीठ पर चालीस कोड़े मारे और उसे दाख की बारी के फाटक के बाहर फेंक दिया।

6) और फिर मालिक ने एक और आदमी को अपने पास लाने के लिए भेजा। किसानों ने उसे पकड़ लिया, और उसे बुरी तरह घायल कर दिया और उसे दाख की बारी से बाहर फेंक दिया, जिससे वह रास्ते में आधा मर गया।

7) स्वामी ने दूसरे व्यक्ति को अपने पास लाने के लिए भेजा। किसानों ने उसे पकड़ लिया, और भाले से उसके हृदय को छेद दिया; फिर उसे बाड़े के बाहर दफना दिया।

8) मालिक व्यथित था। उसने मन ही मन सोचा, मैं क्या करूं? तब उस ने कहा, मैं यह करूंगा। मेरा इकलौता बेटा यहाँ है, और मैं उसे किसानों के पास भेजूँगा,

9) वे निश्चय ही मेरे पुत्र का आदर करेंगे और जो कुछ मेरा है मुझे भेजेंगे।

10) उसने अपने पुत्र को भेजा; किसानों ने आपस में सम्मति ली; उन्होंने कहा, इस सारी संपत्ति का एकमात्र वारिस यही है, और यदि हम उसके प्राण ले लें, तो बड़ा भाग हमारा है।

11) उन्होंने उसकी जान ले ली और उसे दाख की बारी के बाड़े से बाहर निकाल दिया।

12) वह दिन आएगा; और उसका स्वामी किसानों से हिसाब लेने को लौटेगा, और वह उन में से एक एक को पकड़कर, और उन्हें आग में डाल देगा, जहां वे तब तक रहेंगे, जब तक कि वे अपना कर्ज चुका न दें।

13) और वह अपनी दाख की बारी को नेक लोगों की देखरेख में रखेगा।

अंत: गृहस्थ और दुष्ट पति का दृष्टान्त

---

14) तब उस ने याजकों और शास्त्रियों की ओर फिरकर कहा, क्या तेरे भविष्यद्वक्ताओं ने यह नहीं कहा,

15) जो पत्थर बिल्डरों ने फेंका, वह मेहराब का पत्थर बन गया?

16) हे पुरुषों, जो परमेश्वर के पुरुषों के रूप में, किसानों के रूप में, देखो, तुमने पत्थरवाह किया है और परमेश्वर के दूतों, उसके नबियों और उसके द्रष्टाओं को मार डाला है, और अब तुम उसके पुत्र को मारना चाहते हो।

17) मैं तुम लोगों से कहता हूं, कि राज्य तुम से छीन लिया जाएगा, और उन लोगों को दिया जाएगा जो अभी प्रजा नहीं हैं, और ऐसी जाति को जो अब एक जाति नहीं है।

18) और जिन लोगों की बातें तुम नहीं समझ सकते, वे जीवितों और मरे हुओं के बीच खड़े होंगे, और जीवन का मार्ग दिखाएंगे।

19) यह दृष्टान्त सुनकर महायाजक और फरीसी बहुत क्रोधित हुए, और यहोवा को पकड़कर उसकी हानि करते, परन्तु वे बहुत डर गए; वे भीड़ से डरते थे।

शादी की दावत का दृष्टांत और बिना शादी की पोशाक के मेहमान

---

20) और यीशु ने एक और दृष्टान्त कहा; उस ने कहा, राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपके पुत्र के ब्याह के लिथे जेवनार की।

21) उसने अपने सेवकों को उन लोगों को बुलाने के लिए भेजा जिन्हें दावत में आमंत्रित किया गया था।

22) सेवकों ने बुलाया; लेकिन तब लोग नहीं आएंगे।

23) तब राजा ने और दूतोंको यह कहने के लिथे विदेश भेज दिया, कि देख, मेरी मेजें अब फैल गई हैं; मेरे बैल और मेरे मोटे पशु तैयार किए गए हैं।

24) मेरे तख्तों पर उत्तम से उत्तम दाखरस और उत्तम दाखमधु हैं; शादी की दावत में आओ।

25) लोग हँसे और उसके बुलावे का तिरस्कार किया, और अपने रास्ते चले गए; एक अपने खेत को, दूसरा अपने माल के लिए;

26) और अन्य लोगों ने राजा के सेवकों को पकड़ लिया; उनके साथ शर्मनाक दुर्व्यवहार किया; और उनमें से कुछ को उन्होंने मार डाला।

27) तब राजा ने अपने सैनिकों को भेजा, जिन्होंने हत्यारों को मार डाला और उनके नगरों को जला दिया।

28) तब राजा ने और सेवकों को भेजा; उस ने उन से कहा, सड़कों के कोनों में, और मार्गों के अलग-अलग हिस्सों में, और व्यापार के बाजारों में जाकर कहो,

29) जो कोई ब्याह के भोज में आना चाहेगा।

30) सेवकोंने जा कर पुकारा; और देखो, भोज हॉल मेहमानों से भर गया था।

31) परन्तु जब राजा अतिथियों से भेंट करने के लिये भीतर आया, तो उसने एक मनुष्य को देखा, जिसका ब्याह का चोगा नहीं था; उसने उसे बुलाया और कहा,

32) दोस्त, तुम यहाँ बिना शादी के लबादे के क्यों हो? क्या तुम इस प्रकार मेरे पुत्र का अपमान करोगे?

33) वह आदमी गूंगा था; उसने उत्तर दिया नहीं।

34) तब राजा ने अपके सिपाहियोंसे कहा, इस मनुष्य को ले ले, और उसके हाथ पांव बान्धकर रात के अन्धकार में निकाल दे।

<u>अंत: विवाह पर्व का दृष्टान्त और बिना विवाह के चोगा वाला अतिथि</u>

35) बहुतों को बुलाया गया है, लेकिन किसी को भी मेहमान बनने के लिए नहीं चुना गया है जिन्होंने खुद को शादी की पोशाक में नहीं पहना है।

<u>अध्याय 155</u>

यीशु धर्मनिरपेक्ष करों का भुगतान करने के न्याय को पहचानता है। वह आगे के जीवन में पारिवारिक रिश्तों का पाठ पढ़ाते हैं। सबसे बड़ी आज्ञा प्रेम में समाहित है। वह अपने शिष्यों को शास्त्रियों और फरीसियों के पाखंड के खिलाफ चेतावनी देता है।

यीशु के बोलते ही फरीसी उससे पूछने आए; उन्होंने जो कुछ कहा, उसके द्वारा उसे दोषी ठहराने के बारे में सोचा,

2) एक कठोर हेरोदेसी बोला, और कहा, हे मेरे प्रभु, तू सत्यवादी है; तुम परमेश्वर को मार्ग दिखाते हो, और मनुष्यों के व्यक्तित्व पर ध्यान नहीं देते;

3) हमें बताएं, आप क्या सोचते हैं; क्या हम, जो इब्राहीम के वंश हैं, कैसर को कर देना चाहिए? या हमें नहीं करना चाहिए?

4) और यीशु ने अपने मन की दुष्टता को जान लिया और कहा, तुम मुझे इस प्रकार क्यों लुभाने आते हो? मुझे वह श्रद्धांजलि राशि दिखाओ जिसके बारे में आप बात करते हैं।

5) उस आदमी ने सिक्के का एक टुकड़ा निकाला जिस पर एक मूर्ति खुदी हुई थी।

6) यीशु ने कहा, इस सिक्के पर किसकी मूरत और किसका नाम है?

7) उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'तीस सीज़र की छवि और उसका नाम।

8) यीशु ने कहा, जो कैसर का है वह कैसर को दे; परन्तु परमेश्वर की वस्तुएं परमेश्वर को दो।

9) और सुनने वालों ने कहा, वह अच्छा उत्तर देता है।

10) फिर एक सदूकी, जो यह सोचता है कि मरे हुओं का पुनरुत्थान नहीं, ने आकर कहा, हे रब्बोनी, मूसा ने लिखा है, कि यदि कोई विवाहित पुरूष मर जाए, और उसके कोई सन्तान न हो, तो उसकी विधवा उसके भाई की पत्नी बनेगी।

11) अब, सात भाई थे और सबसे बड़े की एक पत्नी थी; वह मर गया और उसके कोई संतान नहीं थी; एक भाई ने अपक्की विधवा को ब्याह लिया, और वह मर गया;

12) और एक एक भाई की यह स्त्री अपक्की पत्नी के लिथे हुई; समय के साथ महिला की मृत्यु हो गई;

13) अब इस स्त्री को पुनरुत्थान के दिन किसके पास पत्नी होगी?

14) यीशु ने कहा, इस जीवन में मनुष्य केवल अपने स्वार्थ की तृप्ति के लिए, या दौड़ को बनाए रखने के लिए विवाह करते हैं; परन्तु आनेवाले जगत में, और पुनरुत्थान के दिन में, मनुष्य विवाह की मन्नतें पूरी नहीं करते।

15) परन्तु, स्वर्गदूतों और परमेश्वर के अन्य पुत्रों की तरह, वे स्वयं की खुशी के लिए संघ नहीं बनाते हैं, और न ही दौड़ को बनाए रखने के लिए।

16) मृत्यु का अर्थ जीवन का अंत नहीं है। कब्र मनुष्यों का लक्ष्य नहीं है, पृथ्वी बीज का लक्ष्य नहीं है।

17) जीवन मृत्यु का परिणाम है। बीज मरता हुआ प्रतीत हो सकता है, लेकिन उसकी कब्र से वृक्ष जीवन में उत्पन्न होता है।

18) तो मनुष्य भले ही मरता हुआ प्रतीत हो, परन्तु वह जीवित है, और कब्र में से वह जीवित हो उठता है।

19) यदि तुम उस वचन को समझ सकते जो मूसा ने जलती हुई झाड़ी के बारे में कहा था जो जलती थी और अभी भी नहीं जलती थी, तो आप जान सकते थे कि मृत्यु जीवन को नष्ट नहीं कर सकती।

20) और मूसा ने कहा कि परमेश्वर इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल का परमेश्वर है।

21) परमेश्वर मरे हुओं की हड्डियों का नहीं, बल्कि जीवित मनुष्य का परमेश्वर है।

22) हे मनुष्यों, मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य अधोलोक में जाता है, परन्तु वह जी उठकर जीवन को प्रगट करेगा;

23) क्योंकि हर एक जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा है, और मनुष्य जीवित रहेगा जब तक परमेश्वर जीवित रहेगा।

24) फरीसी और शास्त्री जिन्होंने यहोवा की बात सुनी, वे कहने लगे, वह सच बोलता है; और वे सदूकियों को निराश पाकर ख़ुश थे।

25) तब एक ईमानदार शास्त्री ने आकर यीशु से कहा, हे प्रभु, तू ऐसा बोलता है, जिसे परमेश्वर ने भेजा है, और मैं पूछूं,

26) कानून की सबसे बड़ी और पहली आज्ञा कौन सी है?

27) यीशु ने कहा, पहिला हे इस्राएल, सुन, हमारा परमेश्वर यहोवा एक है; और तू अपके परमेश्वर यहोवा से अपके सारे मन से, और अपक्की सारी बुद्धि से, और अपके सारे प्राण से, और अपक्की सारी शक्ति से प्रेम रखना;

28) और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।

29) ये दस में से सबसे बड़े हैं, और उन पर व्यवस्था, भविष्यद्वक्ता और स्तोत्र हैं।

30) शास्त्री ने उत्तर दिया, मेरा प्राण गवाही देता है, कि तू सच बोलता है, क्योंकि प्रेम व्यवस्था को पूरा करता है, और होमबलि और मेलबलि से बढ़कर है।

31) यीशु ने उस से कहा, सुन, तू ने एक भेद सुलझाया है; तुम राज्य के भीतर हो और राज्य तुम में है।

32) यीशु ने अपके चेलोंसे बातें की, और सब लोगोंने सुना; उस ने कहा, उन शास्त्रियों और फरीसियों से सावधान रहो, जो घमण्ड करके बड़े और बड़े सजे हुए वस्त्र पहिने हुए हैं।

33) और बाजार में नमस्कार करना, और दावतों में सबसे ऊंचे आसनों की तलाश करना, और गरीबों की मेहनत की कमाई को अपने आप को संतुष्ट करने के लिए लेना, और सार्वजनिक रूप से लंबे और जोर से प्रार्थना करना पसंद है।

34) ये भेड़िये हैं जो भेड़ों की तरह दिखने के लिए खुद को तैयार करते हैं।

35) तब उस ने सब से कहा, व्यवस्था के अनुसार शास्त्री और फरीसी मूसा के आसन पर बिठाए जाते हैं, और वे व्यवस्था के अनुसार व्यवस्या की व्याख्या करते हैं;

36) सो जो कुछ वे तुझ से कहें, वही करें; लेकिन उनके कामों का अनुकरण न करें।

37) वे वही कहते हैं जो मूसा ने सिखाया था; वे बील्ज़ेबूब की बातें करते हैं।

38) वे दया की बात करते हैं, फिर भी वे मानवीय कंधों पर भारी बोझ ढोते हैं।

39) वे मदद की बात करते हैं, और फिर भी वे अपने भाई के लिए थोड़ा सा भी मददगार प्रयास नहीं करते हैं।

40) वे काम करके दिखावा करते हैं, तौभी वे अपने भड़कीले वस्त्र, और बड़े ताने बाने के लिथे कुछ भी नहीं करते, और जब लोग उन्हें व्यवस्था के प्रतिष्ठित स्वामी कहते हैं, तब वे हंसते हैं।

41) जब लोग उन्हें पिता कहते हैं, तो वे इधर-उधर घूमते हैं और अपना अभिमान दिखाते हैं।

42) सुनो, अब, तुम लोग, यहाँ किसी को पिता मत कहो। स्वर्ग और पृथ्वी का परमेश्वर, और केवल वही, मनुष्यों की जाति का पिता है।

43) मसीह पुरुषों के पुत्रों का पदानुक्रम, उच्च, श्रेष्ठ स्वामी है।

44) यदि आप महान बनना चाहते हैं, तो गुरु के चरणों में बैठें और सेवा करें। वह सबसे महान व्यक्ति है जो सर्वोत्तम सेवा करता है।

अध्याय 156

शास्त्री और फरीसी क्रोधित हैं। यीशु ने उन्हें उनके पाखंड के लिए फटकार लगाई। वह यरूशलेम पर विलाप करता है। विधवा की टिकिया। यीशु मंदिर में लोगों को अपना विदाई भाषण देते हैं।

शास्त्री और फरीसी क्रोध से भर गए; और यीशु ने कहा,

2) हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम रास्ते में खड़े हो; तुम दरवाजा बंद करो; तुम राज्य में न जाने पाओगे, और शुद्ध मन वालों को जो प्रवेश करने पर हैं, दूर कर दोगे।

3) हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम समुद्र और भूमि के चारों ओर घूमते हो, कि एक मत मत बनो, और जब वह बनाया गया है, तो वह तुम्हारी तरह नरक का पुत्र है।

4) धिक्कार है तुम पर, जो अपने आप को मनुष्यों के पथ-प्रदर्शक कहते हैं! और तुम पथ-प्रदर्शक, अन्धे पथ-प्रदर्शक हो;

5) क्योंकि आप जीरा, पुदीना और सोआ का दशमांश देते हैं, और कानून के वजनदार मामलों को पूर्ववत छोड़ देते हैं; न्याय, न्याय, विश्वास का।

6) आप पीने से पहले मच्छरों को छान लें; परन्तु तब तुम ऊंटों और उसके समानों को निगल जाते हो।

7) हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! आप प्याले को बाहर से साफ और परिमार्जन करते हैं, जबकि यह गंदगी, जबरन वसूली और अधिकता से भरा है।

8) जाकर प्याले के अन्दर की सफाई करो, तब विषैला धुआँ प्याले के बाहर को अशुद्ध नहीं करेगा।

9) हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तुम अपने आप में सफेदी की हुई कब्रों के समान हो; तुम्हारे बाहरी वस्त्र तो सुन्दर हैं, परन्तु तुम मरे हुओं की हड्डियों से भरे हुए हो।

10) तुम मनुष्यों को दिव्य लगते हो; परन्तु अपने मनों में काम, कपट, और घटिया अधर्म के कामों को पालते हो।

11) हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय! तू प्राचीनकाल के पवित्र लोगों की कब्रों को बनाना और सजाना, और कहना,

12) यदि इन लोगों के जीवित रहते हम जीवित रहते, तो हम उनकी रक्षा करते, और हमारे पूर्वजों के समान व्यवहार नहीं करते, जब उन्होंने उनके साथ दुर्व्यवहार किया और उन्हें तलवार से मार डाला।

13) परन्तु तुम उनके पुत्र हो, जिन्होंने पवित्र लोगों को मार डाला, और तुम उन से अधिक सफेद नहीं हो।

14) आगे बढ़ो और अपने पुरखाओं का नाप भरो जो अपराध में डूबे हुए थे।

15) तुम सांपों की संतान हो, और धूल के सांपों के सिवा कैसे हो सकते हो?

16) अब परमेश्वर ने तुम्हारे पास अपने भविष्यद्वक्ताओं और द्रष्टाओं, पण्डितों और पवित्र लोगों को फिर भेजा है, और तुम उन्हें अपक्की सभाओं में कोड़े मारोगे, और सड़कों पर पथराव करोगे, और क्रूस पर कीलों से ठोंकोगे।

17) तुम पर हाय! क्योंकि जितने पवित्र जन पृथ्वी पर मारे गए हैं, उनका लोहू तेरे सिर पर पड़ेगा।

18) धर्मी हाबिल से लेकर बरकियाह के पुत्र जकरयाह तक, जो पवित्र स्थान में यहोवा की वेदी के साम्हने घात किया गया था।

19) देखो, मैं कहता हूं, कि ये सब बातें इस जाति पर और यरूशलेम के लोगों पर घटेंगी।

20) यीशु ने चारों ओर दृष्टि करके कहा, हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, हे क्रूर नगर, हे यरूशलेम, जो भविष्यद्वक्ताओं को सड़कों पर घात करता है, और उन पवित्र लोगों को घात करता है जिन्हें परमेश्वर ने तुम्हारे पास भेजा है!

21) देखो, मैं तुम्हें बालकों की नाईं परमेश्वर के गढ़ में इकट्ठा नहीं करता; लेकिन आप नहीं करेंगे।

22) तू ने परमेश्वर को ठुकरा दिया है, और अब तेरा घर उजड़ गया है, और जब तक तू न कह सके, तब तक मुझे फिर न देखना।

23) तीन बार धन्य है मनुष्य का पुत्र जो परमेश्वर के पुत्र के रूप में आता है।

24) तब यीशु जाकर भण्डार के पास बैठ गया और लोगों को दशमांश देते समय देखता रहा।

25) धनवानों ने आकर अपनी बहुतायत में से दिया; और फिर उस ने एक कंगाल परन्तु विश्वासयोग्य विधवा को आते देखा, और भण्डार के सन्दूक में कुछ रखा।

26) तब उस ने अपके चेलोंसे जो पास खड़े थे, कहा, देख, इस कंगाल विधवा ने जिस ने भण्डार में कुछ डाला है, उस ने उन सब से अधिक किया है;

27) क्योंकि उसने अपना सब कुछ दे दिया है; अमीरों ने उनके पास जो कुछ है उसका थोड़ा सा हिस्सा दिया है।

28) यूनान के यहूदियों का एक दल पर्व में था, और वे फिलिप्पुस से मिले, जो उन से बातें कर सकता था, और कहा, हे प्रभु, हम इस यीशु को, जो मसीह कहलाता है, प्रभु को देखेंगे।

29) और फिलिप्पुस ने मार्ग दिखाया और उन्हें मसीह के पास ले आया।

30) यीशु ने कहा, वह घड़ी आ पहुंची; मनुष्य का पुत्र महिमा पाने के लिए तैयार है, और यह अन्यथा नहीं हो सकता।

31) जब तक गेहूँ का एक दाना भूमि में गिरकर मर नहीं जाता, तब तक वह गेहूँ के दाने के सिवा कुछ नहीं हो सकता; परन्तु यदि वह मर जाए तो वह फिर जीवित रहता है, और उसकी कब्र में से गेहूं के सौ दाने उत्पन्न होते हैं।

32) अब मेरी आत्मा व्याकुल है; मैं क्या कहूँ? और फिर उसने स्वर्ग की ओर आंखें डालीं और कहा,

33) मेरे पिता-भगवान, मैं उन सभी बोझों से मुक्त होने के लिए नहीं कहूंगा जिन्हें मुझे उठाना चाहिए; मैं केवल अनुग्रह और शक्ति मांगता हूं कि वे जो भी बोझ हैं, वह कैसे भी हो,

34) यह वह समय है जिसके लिए मैं पृथ्वी पर आया था। हे पिता, अपने नाम की महिमा कर!

35) और फिर वह स्थान दोपहर के सूर्य से भी तेज प्रकाश से जगमगा उठा; लोग पीछे खड़े रहे; वे डरते थे।

36) और फिर एक आवाज जो स्वर्ग से आती हुई प्रतीत हुई, ने कहा,

37) मैं ने अपने और तेरे दोनों नाम की महिमा की है, और मैं उनका फिर से आदर करूंगा।

38) लोगों ने यह शब्द सुना, और कितने लोग चिल्ला उठे, सुन, दूर की गड़गड़ाहट है! औरों ने कहा, एक स्वर्गदूत ने उस से बातें कीं।

39) परन्तु यीशु ने कहा, यह शब्द मेरे लिथे नहीं था; यह तुम्हारे लिये था, कि तुम जान लो कि मैं परमेश्वर की ओर से आया हूं।

40) अब संसार का न्याय निकट है; अन्धकार का राजकुमार प्रगट होगा और अपके अपके पास जाएगा।

41) अब मनुष्य का पुत्र पृथ्वी पर से ऊंचा किया जाएगा, और वह सब मनुष्यों को अपनी ओर खींच लेगा।

42) लोगों ने कहा, व्यवस्था यह घोषणा करती है कि मसीह सर्वदा बना रहेगा। तुम कैसे कह सकते हो, कि मनुष्य का पुत्र अब ऊंचा किया जाएगा? मनुष्य का पुत्र कौन है?

43) यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब चमक रही है; प्रकाश में चलो जबकि तुम्हारे पास अभी भी प्रकाश है।

44) अंधेरा आता है; परन्तु जो अन्धकार में चलता है, उसे मार्ग नहीं मिलता।

45) मैं फिर कहता हूं, जब तक ज्योति तुम्हारे पास रहे, तब तक ज्योति में चलो, जिस से मनुष्य जाने कि तुम ज्योति के पुत्र हो।

46) और यीशु मन्दिर के ओसारे में खड़ा हुआ, और भीड़ से अपना अन्तिम निवेदन किया; उन्होंने कहा,

47) जो मुझ पर विश्वास करता है, वह उस परमेश्वर पर विश्वास करता है जिसने मुझे उसकी इच्छा पूरी करने के लिए भेजा है, और जो मुझे देखता है वह अब मेरे पिता-परमेश्वर को देखता है।

48) देखो, मैं जगत में ज्योति आया हूं; जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह जीवन की ज्योति, ज्योति में चलेगा।

49) हे मनुष्यो, जो अब मेरी सुनते हैं, यदि तुम मेरी प्रतीति नहीं करते, तो मैं तुम्हारा न्याय नहीं करता।

50) मैं संसार का न्याय करने नहीं आया हूं, परन्तु जगत का उद्धार करने आया हूं।

51) केवल परमेश्वर ही मनुष्यों का न्यायी है; परन्तु जो कुछ मैं कहूँगा, वह उस दिन तुम्हारे विरुद्ध ठहरेगा, जब परमेश्वर जगत का न्याय करेगा;

52) क्योंकि मैं अपनी ओर से कुछ नहीं बोलता; मैं वही बोलता हूँ जो परमेश्वर ने मुझे बोलने के लिए दिया है।

53) तब उस ने कहा, हे यरूशलेम, अपक्की सारी महिमा और अपके अपराधोंके साथ, विदा।

अध्याय 157

माउंट जैतून पर क्रिस्टीन। यीशु यरूशलेम के विनाश, और भयानक आपदाओं की भविष्यवाणी करते हैं जो युग के अंत को चिह्नित करेंगे। वह अपने शिष्यों को विश्वासयोग्यता के लिए प्रेरित करता है।

तब यीशु उन बारहों के साथ निकलकर जैतून पहाड़ पर बैठ गया, जो नगर के फाटक के पास था।

2) और उसके चेलों ने कहा, देखो यरूशलेम के अद्भुत नगर को देखो! इसके सभी घर बहुत सुंदर हैं! इसके मंदिर और इसके मंदिर ऐसी भव्यता से ओतप्रोत हैं!

3) यीशु ने कहा, हे इस्राएल, यह नगर मेरी प्रजा की महिमा है, परन्तु देखो, ऐसा समय आएगा, कि सब पत्यर गिराए जाएंगे, और पृथ्वी की जातियोंके लिथे फुफकार और उपहास होगा।

4) और चेलों ने पूछा, यह उजाड़ कब आएगा?

5) यीशु ने कहा, मनुष्य जीवन का यह चक्कर तब तक पूरा न होगा जब तक कि विजेता की सेनाएं उसके फाटकों पर गरज न दें, और वे भीतर प्रवेश न कर लें, और सड़कों पर जल की नाईं लोहू बहने लगे।

6) और मन्दिर, आंगन और महलों की सारी बहुमूल्य वस्तुएं नष्ट कर दी जाएंगी, या राजाओं के महलों और आंगनों की छत पर ले जाया जाएगा।

7) देखो, ये दिन निकट नहीं हैं। उनके आने से पहिले, देखो, शास्त्री और फरीसी, महायाजक और व्यवस्या के चिकित्सक तुझ से दुर्व्यवहार करेंगे।

8) बिना किसी कारण के आपको अदालतों में पेश किया जाएगा; तुम पत्थरवाह हो जाओगे; सभाओं में तुझे पीटा जाएगा; इस संसार के हाकिमों के साम्हने दोषी ठहराए जाएंगे, और हाकिम और राजा तुझे मृत्यु दंड देंगे।

9) परन्तु तू न डगमगाएगा, और सत्य और धर्म की गवाही देगा।

10) और इन घंटों में अपने भाषण के बारे में चिंता मत करो; आपको यह सोचने की ज़रूरत नहीं है कि क्या कहना है;

11) क्योंकि, देखो, पवित्र श्वास तुम पर छा जाएगा और तुम्हें कहने के लिए शब्द देगा।

12) लेकिन तब नरसंहार होता रहेगा, और लोग समझेंगे कि वे तुम्हें मारकर ईश्वर को प्रसन्न करते हैं, और दूर-दूर के राष्ट्र मसीह के लिए तुमसे घृणा करेंगे।

13) और लोग तुम्हारे कुटुम्बियोंमें बुरे विचार भड़काएंगे, और वे तुम से बैर रखेंगे, और तुम्हें मरने के लिथे मार डालेंगे।

14) और भाई भाइयोंके लिथे झूठे ठहरेंगे; पिता आगे खड़े होंगे और अपनों के खिलाफ गवाही देंगे, और बच्चे माता-पिता को अंतिम संस्कार के ढेर में ले जाएंगे।

15) जब तुम रोमी उकाब को हवा में चिल्लाते हुए सुनोगे, और उसकी सेना को मैदान में बहते हुए देखोगे, तो जान लो कि यरूशलेम का उजाड़ निकट है।

16) तब बुद्धिमान लोग प्रतीक्षा न करें, परन्तु भाग जाएं। जो अपके घर में हो वह अपके धन बटोरने के लिथे घर में प्रवेश न करने की बाट जोहता रहे, वरन भाग जाए।

17) और जो खेत में परिश्रम करे, वह न लौटकर अपके प्राण बचाने के लिथे अपना सब कुछ छोड़ दे।

18) और उस दिन उन माताओं पर हाय जो अपके बालकों समेत हों; कोई तलवार से नहीं बचेगा।

19) इन दिनों के क्लेश को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है, क्योंकि जब से परमेश्वर ने पृथ्वी पर मनुष्य को बनाया है तब से ऐसा कभी नहीं हुआ।

20) विजेता इब्राहीम के बहुत से पुत्रों को बंधुआई के रूप में परदेश में ले जाएगा, और वे जो इस्राएल के परमेश्वर को नहीं जानते, वे यरूशलेम के राजमार्गों को तब तक रौंदेंगे जब तक यहूदी-विरोधी समय पूरा नहीं हो जाता।

21) लेकिन जब लोगों को उनके अपराधों के लिए दंडित किया गया है, तो क्लेश के दिन समाप्त हो जाएंगे; परन्तु देखो, वह समय आएगा, जब सारा जगत ऐसा उठ खड़ा होगा, जैसे अँगूठी में ग्लेडियेटर्स, और खून बहाने के लिए लड़ेंगे।

22) और लोग तर्क नहीं करेंगे; वे न तो देखेंगे, और न ही नरसंहार, उजाड़, चोरी का कारण देखने की परवाह करेंगे; क्योंकि वे मित्र वा शत्रु से युद्ध करेंगे।

23) हवा ही मौत के धुएं से भरी हुई प्रतीत होगी; और मरी तलवार के निकट चलेगी।

24) और वे चिन्ह जो मनुष्यों ने कभी नहीं देखे, वे आकाश और पृथ्वी पर दिखाई देंगे; सूरज, और चाँद, और सितारों में।

25) समुद्र गरजेंगे, और आकाश से ऐसे शब्द आएंगे जिन्हें मनुष्य कभी नहीं समझ सकते हैं, और ये राष्ट्रों को व्याकुलता के साथ संकट में डाल देंगे।

26) पृथ्वी पर और अधिक भयानक चीजों के आने की प्रतीक्षा में, सबसे मजबूत लोगों के दिल डर से बेहोश हो जाएंगे।

27) लेकिन जब भूमि और समुद्र पर संघर्ष होता है, तो शांति का राजकुमार स्वर्ग के बादलों के ऊपर खड़ा होगा और फिर से कहेगा:

28) शांति, पृथ्वी पर शांति; पुरुषों के लिए अच्छी इच्छा; और सब अपनी तलवार फेंक देंगे, और जातियां फिर युद्ध न सीखेंगी।

29) तब घड़ा उठाने वाला स्वर्ग के एक चाप के पार चला जाएगा; मनुष्य के पुत्र का चिन्ह और चिन्ह पूर्वी आकाश में खड़ा होगा।

30) तब बुद्धिमान लोग सिर उठाकर जान लेंगे कि पृथ्वी का छुटकारा निकट है।

31) इन दिनों के आने से पहिले, देखो, बहुत से देशों में झूठे मसीह और कंगाल धोखेबाज भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे।

32) और वे चिन्ह दिखाएंगे और बहुत से पराक्रम के काम करेंगे; और वे बहुतों को बहकाएंगे जो बुद्धिमान नहीं हैं; और बहुत से बुद्धिमानों को धोखा दिया जाएगा।

33) और अब मैं तुम से एक बार फिर कहता हूं, कि जब लोग कहें, कि मसीह जंगल में है, तो तुम निकल मत जाना।

34) और यदि वे कहें, कि मसीह गुप्त स्थान में है, तो प्रतीति न करना; क्योंकि जब वह आएगा तब जगत जान लेगा कि वह आ गया है।

35) क्योंकि जैसे भोर का उजाला पूर्व से आता है और पश्चिम की ओर चमकता है; ऐसा ही युग और मनुष्य के पुत्र का आना होगा।

36) जब मनुष्य के पुत्र को शक्तिशाली होकर आकाश के बादलों पर उतरते देखेंगे, तब पृथ्वी के दुष्ट रोएंगे।

37) चौकस रहना, चौकस रहना, क्योंकि न तो मनुष्य का पुत्र आने का समय और न वह दिन जानता है।

38) न तो तुम्हारा मन कामुक बातों से, और न ही जीवन की चिन्ता से भर जाए, ऐसा न हो कि वह दिन आकर तुम को तैयार न पाओ।

39) साल के हर मौसम पर नजर रखना; और प्रार्थना करो कि तुम प्रभु से आनन्द के साथ मिलो, शोक के साथ नहीं।

40) इन दिनों के आने से पहले हमारा पिता-परमेश्वर अपने दूतों को विदेश भेजेगा, हां, पृथ्वी के कोने-कोने में, और वे कहेंगे।

41) तैयार करो, हे तैयार करो; शांति का राजकुमार आएगा, और अब स्वर्ग के बादलों पर आ रहा है।

42) जब यीशु ने यह कहा, तो वह अपने चेलों के साथ बैतनिय्याह को लौट गया।

अध्याय 158

ओलिवेट में प्रार्थना में यीशु और बारह। यीशु अपने शिष्यों को गुप्त सिद्धांतों के गहरे अर्थ बताते हैं। वह उन्हें बताता है कि लोगों को क्या सिखाना है। कई दृष्टांतों का संबंध है। वे बेथानी लौट जाते हैं।

और सप्ताह के बुधवार की भोर हुई, और यीशु उन बारहोंके संग ओलिवेट के पास प्रार्थना करने को निकला; और वे सात घंटे तक प्रार्थना में खोए रहे।

2) तब यीशु ने बारहोंको अपने पास बुलाकर कहा, आज के दिन परदा टूट जाएगा, और हम परदे के पार परमेश्वर के गुप्त आंगनोंमें प्रवेश करेंगे।

3) और यीशु ने उनके लिए छिपे हुए मार्ग का, और पवित्र श्वास का, और उस प्रकाश का अर्थ खोल दिया जो विफल नहीं हो सकता।

4) उसने उन सभी को जीवन की पुस्तक, द रोल्स ऑफ ग्रेफेल, ईश्वर के स्मरण की पुस्तक के बारे में बताया जहां मनुष्यों के सभी विचार और वचन लिखे गए हैं।

5) वह उन से ऊंचे शब्द से न बोला; उस ने आकाओं का भेद एक स्वर में सुनाया, और जब परमेश्वर का नाम लिया, तो आधे घण्टे के लिये स्वर्ग के आंगनों में सन्नाटा छा गया, क्योंकि स्वर्गदूतों ने सांस रोककर बातें कीं।

6) यीशु ने कहा, ये बातें कहीं ऊंचे शब्द से न कही जाएं; उन्हें कभी नहीं लिखा जा सकता है; वे साइलेंसलैंड के संदेश हैं; वे परमेश्वर के आंतरिक हृदय की श्वास हैं।

7) और फिर गुरु ने बारहों को वह पाठ पढ़ाया जो उन्हें अन्य पुरुषों को सिखाना चाहिए। वह कभी-कभी दृष्टान्तों में पढ़ाता था; उन्होंने कहा,

8) मनुष्य के पुत्र के आने के बारे में कल के शब्दों को आप याद करते हैं। अब जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, और जो तुम से कह रहा हूं, उसे तुम औरों को भी सिखाओगे;

9) उन्हें प्रार्थना करना और बेहोश न होना सिखाएं; और दिन के हर एक क्षण में तैयार रहना, क्योंकि जब वे उस की आशा ही न करें, तब यहोवा आएगा।

गृहस्थ और सेवकों का दृष्टान्त

10) एक मनुष्य दूर देश में चला गया, और अपना घर और अपनी सारी संपत्ति सेवकों की देखरेख में छोड़ दिया; पाँच अपके घर की रखवाली करने के लिथे, और पांच अपके खलिहानोंऔर गाय-बैलोंकी रखवाली करने के लिथे।

11) सेवकों ने उसके लौटने की बहुत प्रतीक्षा की, परन्तु वह नहीं आया, और वे अपने काम में लापरवाह हो गए; कितनों ने मौज-मस्ती और पियक्कड़पन में अपना समय बिताया, और कुछ अपने-अपने पदों पर सो गए।

12) और रात को ही लुटेरे आए, और घर और खलिहान से धन लूट कर ले गए, और अच्छे-अच्छे गाय-बैलों को उठा ले गए।

13) और जब वे जान गए, कि जितने धन की वे रक्षा करने के लिथे रह गए हैं, उनमें से बहुत कुछ शुद्ध कर लिया गया है, तब उन्होंने कहा,

14) हम दोषी नहीं हो सकते; यदि हम उस दिन और घड़ी को जानते, जब हमारा स्वामी फिर आएगा, तो हम उसके धन की रक्षा अच्छी रीति से करते, और चोरोंको उसे ले जाने से न सहते; वह निश्चित रूप से दोषी है क्योंकि उसने हमें नहीं बताया।

15) परन्तु बहुत दिनों के बाद प्रभु लौट आया, और जब उसने जान लिया, कि चोरों ने उसका धन लूट लिया है, तब उस ने अपके दासोंको बुलाकर उन से कहा,

16) क्योंकि जो कुछ तुम्हें करने के लिए दिया गया था, उसकी उपेक्षा करने के कारण, तुमने अपना समय मनोरंजन और सोने में बिताया है, देखो तुम सब मेरे कर्जदार हो।

17) तेरी उपेक्षा से जो मैंने खोया है, उसका ऋणी मुझ पर है। और फिर उस ने उन्हें भारी काम करने को दिया, और उन्हें उनके खम्भों में जंजीरों से बांध दिया, जहां वे तब तक बने रहे जब तक कि वे उन सभी वस्तुओं के लिए भुगतान नहीं कर देते थे जिन्हें उनके स्वामी ने उनकी उपेक्षा के कारण खो दिया था।

18) एक और व्यक्ति ने अपना धन बन्द कर दिया, और सो गया, और रात को डाकुओं ने आकर उसके द्वार खोल दिए, और जब उन्होंने कोई पहरेदार न देखा, तो उन्होंने भीतर प्रवेश किया और उसका धन ले गए।

19) और जब वह जाग उठा, और अपने द्वारों को घिसा हुआ पाया, और उसका सारा धन नष्ट हो गया, तो उसने कहा, यदि मुझे पता होता कि चोर कब आएंगे, तो मैं पहरा देता।

20) मेरे दोस्तों, खबरदार, सावधान! और हर घड़ी तैयार रहो, और यदि तुम्हारा रब आधी रात या भोर को आए, तो कोई बात नहीं, क्योंकि वह तुम्हें ग्रहण करने के लिए तैयार पाएगा।

अंत: गृहस्थ और सेवकों का दृष्टान्त

दस कुँवारियों का दृष्टान्त

21) और फिर, एक ब्याह की घोषणा की गई, और उनमें से दस कुमारियां, दूल्हे के आने पर उससे मिलने के लिए अलग रखी गईं।

22) कुँवारियों ने अपने आप को उचित वस्त्र पहिनाया, और अपनी मशालें लेकर पहर की बाट जोहने बैठी, कि देखो, दूल्हा आ रहा है!

23) अब, पाँच बुद्धिमान थे; उन्होंने अपके दीपकोंको तेल से भर दिया; और पांच मूर्ख थे, क्योंकि वे खाली दीपक लिये थे।

24) दूल्हा नियत समय पर नहीं आया; कुँवारियाँ अपनी घड़ी से थकी हुई थीं और सो गईं।

25) आधी रात को यह पुकार आई, कि देखो, दूल्हा आ रहा है!

26) कुँवारियाँ उठीं; बुद्धिमानों ने फुर्ती से अपने दीपकों की छंटनी की और दूल्हे को लेने के लिए तैयार हुए।

27) मूर्ख कुँवारियों ने कहा, हमारे पास तेल नहीं, हमारे दीपक नहीं जलते।

28) उन्होंने उन बुद्धिमानों से उधार लेना चाहा, जिन्होंने कहा, हमारे पास और तेल नहीं बचा; सौदागरों के पास जाओ और मोल लेकर अपनी दीये भर दो और फिर दूल्हे से मिलने के लिए आगे आओ।

29) जब वे तेल मोल लेने को गए, तो दूल्हा आ गया; वे कुँवारियाँ जो अपने-अपने दीपकों के साथ तैयार थीं, सब छंटे हुए थे, उसके साथ ब्याह के भोज में गईं।

30) और जब मूढ़ कुंवारियां आईं, तो द्वार बंद था, और खटखटाने और पुकारने पर भी द्वार न खुला।

31) पर्व के स्वामी ने कहा, मैं तुम्हें नहीं जानता! और कुँवारियाँ लज्जित होकर अपने मार्ग पर चली गईं।

अंत: दस कुँवारियों का दृष्टान्त

32) मैं तुम से फिर कहता हूं, और अपने पीछे चलनेवालोंसे कहना,

33) दिन और रात के हर पल तैयार रहो, क्योंकि जब तुम उसकी प्रतीक्षा नहीं करोगे, तब यहोवा आएगा।

34) देखो, जब वह प्रकाश के अपने सभी दूतों के साथ आएगा, तो जीवन की पुस्तक और अभिलेखों की पुस्तकें खोली जाएंगी - वे पुस्तकें जिनमें विचार, वचन और कर्म लिखे गए हैं।

35) और जो कुछ उस ने अपके लिथे लिखा है, वह सब पढ़ सकेगा, और न्यायी के बोलने से पहिले वह अपके कयामत को जान लेगा, और यह छनने का समय होगा।

36) उनके अभिलेखों के अनुसार पुरुष अपने को पाएंगे।

भेड और बकरियों का दृष्टान्त

37) न्यायी धर्म है, जो सारी पृथ्वी का राजा है, और वह भीड़ को वैसे ही अलग करेगा जैसे चरवाहे भेड़ों और बकरियों को अलग करते हैं।

38) भेड़ें दाहिनी ओर, और बकरियां बाईं ओर अपक्की जगह पाएंगी, और सब अपना स्थान जान लेंगे।

39) तब न्यायी दाहिनी ओर के लोगों से कहेगा, हे पिता परमेश्वर के धन्य, अपने निज भाग में आ, जो प्राचीनकाल से तुम्हारे लिये तैयार किया गया था।

40) तुम जाति के सेवक रहे हो; और मैं भूखा था, और तू ने मुझे रोटी दी; प्यासा था और तुमने मुझे पिलाया; नंगा था, और तू ने मुझे वस्त्र दिए;

41) बीमार था, तू ने मेरी सेवा की; और बन्दीगृह में था, और तुम जयजयकार करते हुए मेरे पास आए; मैं एक अजनबी था और तुम्हारे घरों में मुझे एक घर मिला।

42) तब क्या धर्मी कहेंगे, कि हम ने कब तुझे भूखा, प्यासा, बीमार, बन्दी या परदेशी को अपने फाटकों पर देखा और तेरी सेवा टहल की?

43) तब न्यायी कहेगा, कि तू ने मनुष्योंकी उपासना की, और जो कुछ तू ने उनके लिथे किया, वही मेरे लिथे किया।

44) न्यायी बाईं ओर के लोगों से कहेगा, मेरे पास से चला जा; तू ने मनुष्यों की सेवा नहीं की।

45) मैं भूखा था, और तुमने मुझे कुछ खाने को नहीं दिया; प्यासा था, और तुमने मुझे पीने को कुछ नहीं दिया; मैं परदेशी था, और तू ने मुझे अपके द्वार से खदेड़ दिया; मैं कैद था और बीमार था, तुमने मेरी सेवा नहीं की।

46) तब ये लोग कहेंगे, हम ने कब तेरी सुधि ली? हम ने कब तुझे भूखा, प्यासा, बीमार, परदेशी या बन्दीगृह में देखा और तेरी सेवा टहल नहीं की?

47) तब न्यायी कहेगा, कि तेरा जीवन तो बहुत ही भरा हुआ है; तू ने स्वयं की सेवा की, न कि अपने साथी की, और जब आपने इनमें से किसी एक को छोटा किया, तो आपने मुझे तुच्छ और उपेक्षित किया।

48) तब धर्मियों के पास राज्य और शक्ति होगी, और जो अधर्मी हैं वे अपना कर्ज चुकाने के लिए निकलेंगे, ताकि वह सब सह सकें जो पुरुषों ने उनके हाथों झेला है।

49) जिनके पास सुनने के लिए कान और समझने के लिए दिल हैं वे इन दृष्टान्तों को समझेंगे।

<u>अंत: भेड़ और बकरियों का दृष्टान्त</u>

---

50) जब वह इन सब दृष्टान्तों को पूरा कर चुका, तब उस ने कहा, तुम जानते हो, कि दो दिन में फसह का बड़ा पर्व आएगा, और देखो, मनुष्य का पुत्र दुष्टों के हाथ पकड़वाया जाएगा।

51) और वह क्रूस पर अपना प्राण देगा, और मनुष्य जानेंगे कि वह, मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर का पुत्र है।

52) तब यीशु और बारह बैतनिय्याह को लौट गए।

भाग 2 का अंत

भाग 3/धारा XVIII

परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उदगम/चर्च

33 साल की उम्र में यीशु

खंड XVIII
TZADDI

विश्वासघात और यीशु की गिरफ्तारी

(**अध्याय** 159 - 164)

अध्याय 159

साइमन के घर में एक दावत में क्रिस्टीन शामिल होते हैं। मरियम एक महँगे बाम से स्वामी का अभिषेक करती है, और यहूदा और अन्य लोग उसे लापरवाही के लिए डाँटते हैं। यीशु उसकी रक्षा करता है। यहूदियों के शासक यीशु को गिरफ्तार करने के लिए हनन्याह को नियुक्त करते हैं। हनन्याह यहूदा को उसकी सहायता करने के लिए रिश्वत देता है।

बार-साइमन, जो कभी एक कोढ़ी था और पवित्र वचन द्वारा यीशु द्वारा शुद्ध किया गया था, बेथानी में निवास करता था।

2) उसने क्रिस्टीन प्रभु के सम्मान में एक भोज दिया, और लाजर मेहमानों में से था, और रूत और मार्था ने सेवा की।

3) और जब मेहमान मेज के पास बैठ गए, तो मरियम ने सुगंधित इत्र का एक पात्र लिया और उसे यीशु के सिर और पैरों पर उंडेल दिया।

4) तब वह घुटने के बल बैठी और अपने बालों से उसके पांव पोंछी; समृद्ध इत्र की महक से सारा कमरा भर गया।

5) अब, यहूदा, हमेशा जीवन के स्वार्थी पक्ष को देखते हुए, चिल्लाया, शर्म के लिए! तुमने उस कीमती इत्र को इस तरह क्यों बर्बाद किया?

6) हम इसे तीन सौ पेंस में बेच सकते थे, और हमारे पास अपनी जरूरतों को पूरा करने और गरीबों को खिलाने के लिए पैसे थे।

7) (अब, यहूदा कोषाध्यक्ष था, और क्रिस्टीन बैंड के सारे पैसे ले गया।)

8) और औरों ने कहा, क्यों, मरियम, तू कैसी निकम्मी है! ऐसे धन को फेंकना नहीं चाहिए।

9) परन्तु यीशु ने कहा, हे मनुष्यो, चुप रहो; उसे अकेला रहने दो; आप नहीं जानते कि आप क्या कहते हैं।

10) गरीब लगातार आपके साथ हैं; किसी भी समय आप उन्हें प्रशासित कर सकते हैं; लेकिन मैं तुम्हारे साथ लंबे समय तक नहीं रहूंगा।

11) और मरियम आने वाले दिनों की उदासी को जानती है; उसने मेरे गाड़े जाने के लिये पहिले से मेरा अभिषेक किया है।

12) मसीह का सुसमाचार हर जगह प्रचार किया जाएगा, और जो मसीह की कहानी कहता है वह इस दिन के बारे में बताएगा; और मरियम ने जो कुछ इस समय किया है, वह उसके लिथे जहां कहीं मनुष्य रहें, उसका स्मरण सुमिरन होगा।

13) और जब पर्व समाप्त हुआ तो यीशु लाजर के साथ अपने घर चला गया।

14) अब यरूशलेम में याजक और फरीसी यहोवा को पकड़ने और उसके प्राण लेने की योजना में लगे हुए थे।

15) महायाजक ने सब ज्ञानियोंको सम्मति देकर कहा, यह काम गुप्त रीति से किया जाना चाहिए।

16) जब भीड़ न हो, तो उसे पकड़ लिया जाना चाहिए, नहीं तो हम युद्ध कर सकते हैं; आम लोग उसके बचाव में खड़े हो सकते हैं और इस तरह इस पवित्र स्थान को मानव रक्त से दूषित कर सकते हैं।

17) और जो हम करते हैं, वह पर्व के उस बड़े दिन से पहिले करना है।

18) हनन्याह ने कहा, मेरी एक योजना है जो सफल होगी। बारह यीशु के साथ प्रतिदिन अकेले प्रार्थना करने जाते हैं;

19) और हम उनके ठिकाने ढूंढ़ेंगे; तब हम उस मनुष्य को पकड़कर यहां ला सकते हैं, बिना भीड़ को जाने।

20) मैं बारह में से एक व्यक्ति को जानता हूं, जो धन की पूजा करता है, और एक राशि के लिए मुझे लगता है कि वह उस मार्ग का नेतृत्व करेगा जहां वह प्रार्थना करने के लिए अभ्यस्त है।

21) कैफा ने कहा, यदि तू मार्ग की अगुवाई करेगा, और जिस मनुष्य की चर्चा करता है, उस को घूस दे, कि वह यीशु को गुप्त स्थान में पकड़ने में सहायता करे, तो हम तेरे भाड़े के बदले चांदी के सौ सिक्के तुझे देंगे।

22) और हनन्याह ने कहा, 'ठीक है।

23) तब वह बैतनिय्याह को गया, और उन बारहोंको शमौन के घर में पाया, और यहूदा को पास बुलाकर कहा,

24) यदि आप अपने लिए कुछ पैसा कमाना चाहते हैं, तो मेरी बात सुनें:

25) यरूशलेम में महायाजक और अन्य शासक यीशु से अकेले में बात करना चाहेंगे, ताकि वे उसके दावों के बारे में जान सकें;

26) और यदि वह अपने आप को मसीह साबित कर दे, तो देखो, वे उसके पक्ष में खड़े होंगे।

27) अब, यदि तू कल रात को उस मार्ग से जाना चाहे, जहां तेरा स्वामी कल रात हो, कि वे उसके साथ बातें करने के लिथे एक याजक को भेज सकें, तो चान्दी के तीस टुकड़े मिले, जो याजक तुझे देंगे।

28) और यहूदा ने आपस में तर्क किया; उस ने कहा, अच्छा यह होगा कि यहोवा को एक अवसर दिया जाए कि वह याजकोंको अपके दावोंके विषय में बताए, जब वह बिलकुल अकेला हो।

29) और यदि याजक उसे हानि पहुँचाते हैं, तो उसे मिटने और अपनी चाल चलने का अधिकार है, जैसा वह पहले करता आया है; और तीस टुकड़े एक अच्छी राशि है।

30) तब उस ने हनन्याह से कहा, मैं मार्ग की अगुवाई करूंगा, और चुम्बन से प्रगट करूंगा कि यहोवा कौन है।

अध्याय 160

यीशु और बारह निकुदेमुस के घर में अकेले फसह खाते हैं। यीशु ने चेलों के पैर धोए। यहूदा मेज छोड़ देता है और प्रभु को धोखा देने के लिए आगे निकल जाता है। यीशु ग्यारह सिखाता है। वह प्रभु भोज की स्थापना करता है।

गुरुवार की भोर को यीशु ने बारह चेलों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, यह परमेश्वर के स्मरण का दिन है, और हम पास्का भोजन अकेले ही खाएंगे।

2) फिर उस ने पतरस, याकूब और यूहन्ना से कहा, अब यरूशलेम को जा, और वहां पास्का तैयार कर।

3) और चेलों ने कहा, तुम हम से कहां जाना चाहते थे कि वह स्थान ढूंढे जहां हम पर्ब्ब तैयार करें?

4) यीशु ने कहा, सोता फाटक के पास जा, तो तुझे एक मनुष्य दिखाई देगा, जिसके हाथ में घड़ा है। उस से कहो, यह अखमीरी रोटी का पहिला दिन है;

5) यहोवा चाहता है कि तुम अपने भोज-भवन को अलग करो, जहां वह बारहों के साथ अपना अंतिम फसह खा सके,

6) न बोलने का डर; जिस मनुष्य को तुम देखोगे वह नीकुदेमुस है, जो यहूदियों का शासक है, तौभी परमेश्वर का जन है।

7) और चेलोंने जाकर उस पुरूष को यीशु के कहने के अनुसार पाया, और नीकुदेमुस फुर्ती से अपके घर को गया; बैंक्वेट हॉल, एक ऊपरी कमरा, अलग रखा गया था, रात का खाना तैयार किया गया था।

8) अब दोपहर को प्रभु और उसके चेले यरूशलेम को गए और उन्होंने देखा कि पर्व तैयार है।

9) और जब पर्ब्ब खाने का समय आया, तब बारहोंने आपस में यत्न करना आरम्भ कर दिया;

10) और यीशु ने कहा, हे मेरे मित्रों, क्या तुम इस अन्धकार की रात के साये के समान अपने आप से वाद-विवाद करोगे?

11) स्वर्ग की दावत में उसके अलावा कोई सम्मानित आसन नहीं है जो विनम्रतापूर्वक सबसे नीचे का आसन ग्रहण करता है।

12) तब यहोवा ने उठकर जल से भरा कटोरा और एक तौलिया लिया, और दण्डवत करके उन बारहोंके पांव धोकर उस तौलिये से सुखाए।

13) उस ने उन पर फूंक मारी, और कहा, ये पाँव सदा के धर्म के मार्ग पर चलते रहें।

14) वह पतरस के पास आया, और अपने पांव धोने ही पर था, और पतरस ने कहा, हे प्रभु, क्या तू मेरे पांव धोएगा?

15) यीशु ने कहा, जो काम मैं करता हूं उसका अर्थ तुम नहीं समझते, परन्तु समझोगे।

16) पतरस ने कहा, हे मेरे स्वामी, नहीं, तू मेरे पांव धोने के लिथे न झुकना।

17) यीशु ने कहा, हे मेरे मित्र, यदि मैं तेरे पांव न धोऊं, तो मुझ में तेरा कोई भाग नहीं।

18) तब पतरस ने कहा, हे मेरे प्रभु, मेरे दोनों पांव, मेरे हाथ, मेरा सिर धो।

19) यीशु ने उस से कहा, जो पहिले स्नान कर चुका है, वह शुद्ध है, और उसे पांवों को छोड़ और धोने की कोई आवश्यकता नहीं।

20) पांव वास्तव में मनुष्य की समझ के प्रतीक हैं, और जो शुद्ध होना चाहता है, उसे जीवन की जीवित धारा में प्रतिदिन अपनी समझ को अच्छी तरह से धोना चाहिए।

21) तब यीशु अपने चेलों के साथ पर्व की मेज पर बैठा और कहा, उस समय का पाठ देखो:

22) तुम मुझे गुरु कहते हो; ऐसा मैं हूँ। तो यदि तुम्हारा रब और मालिक घुटने टेककर तुम्हारे पांव धोए, तो क्या तुम एक दूसरे के पांव न धोओ और इस प्रकार सेवा करने की इच्छा प्रकट न करो?

23) तू इन बातों को जानता है, और यदि तू उन पर चलता है, तो तू तीन गुणा धन्य है।

24) फिर उस ने कहा, यह वह घड़ी है, जब मैं सचमुच परमेश्वर के नाम की स्तुति कर सकता हूं, क्योंकि परदे के पार जाने से पहिले मैं ने यह पर्ब्ब तुम्हारे साथ खाने की बड़ी इच्छा की है;

25) क्योंकि जब तक मैं इसे अपने पिता परमेश्वर के राज्य में तुम्हारे साथ न खाऊं, तब तक मैं इसे फिर कभी न खाऊंगा।

26) और फिर उन्होंने स्तुति का इब्रानी गीत गाया, जिसे यहूदी पर्व से पहले गाने के लिए अभ्यस्त नहीं थे।

27) तब उन्होंने पास्का खाया, और खाते ही स्वामी ने कहा, देख, कि तुम में से कोई आज रात को मुंह मोड़कर मुझे दुष्टोंके हाथ पकड़वाएगा।

28) और जो कुछ उसने कहा, उस पर चेले चकित हुए; उन्होंने आश्चर्य से एक दूसरे के चेहरे को देखा; वे सब चिल्ला उठे, हे प्रभु, क्या मैं हूं?

29) पतरस ने यूहन्ना से, जो प्रभु के पास बैठा था, पूछा, वह किसकी ओर संकेत करता है?

30) और यूहन्ना ने हाथ बढ़ाकर स्वामी का हाथ छुआ, और कहा, हम में से ऐसा कौन है जो अपने रब को पकड़वाने के लिए इतना भ्रष्ट है?

31) और यहूदा ने कहा, हे प्रभु, क्या मैं हूं?

32) यीशु ने कहा, वह वही है, जिस ने अब थाली में मेरा हाथ लगाया है। उन्होंने देखा, और यहूदा का हाथ थाली में यीशु के हाथ के साथ था।

33) और यीशु ने कहा, भविष्यद्वक्ता असफल नहीं हो सकते; मनुष्य के पुत्र को पकड़वाया जाना अवश्य है, परन्तु उस पर हाय जो अपके रब को पकड़वाएगा।

34) और यहूदा मेज पर से तुरन्त उठा; उसका घंटा आ गया था।

35) यीशु ने उस से कहा, जो काम तुझे करना है वह फुर्ती से कर। और यहूदा अपने रास्ते चला गया।

36) और जब पास्का हो गया तब यहोवा उन ग्यारहों के साथ कुछ देर तक मौन में बैठा रहा।

37) तब यीशु ने एक रोटी ली जो टूटी नहीं थी, और कहा, यह रोटी मेरे शरीर का प्रतीक है, और रोटी जीवन की रोटी का प्रतीक है;

38) और जैसे मैं इस रोटी को तोड़ता हूं, वैसे ही मेरा मांस मनुष्यों के लिए एक नमूने के रूप में टूट जाएगा; क्योंकि मनुष्यों को अपके शरीर को परायोंके लिथे स्वेच्छा से बलि करना चाहिए।

39) और जैसे तुम इस रोटी को खाओगे, वैसे ही जीवन की रोटी खाओगे, और कभी नहीं मरोगे। फिर उस ने एक एक रोटी को खाने को दी।

40) तब उस ने दाखमधु का प्याला लेकर कहा, लोहू जीवन है, अंगूर का जीवन लोहू यह है; यह उसके जीवन का प्रतीक है जो पुरुषों के लिए अपना जीवन देता है।

41) और जब तुम यह दाखमधु पीते हो, तो विश्वास से पीते हो, तो मसीह का जीवन भी पीते हो।

42) तब उसने भोजन किया, और कटोरा पास किया, और चेलों ने भोजन किया; और यीशु ने कहा, यह जीवन का पर्व है, मनुष्य के पुत्र का महान फसह, यहोवा का भोज है, और तुम अक्सर रोटी खाओगे और दाखमधु पीओगे।

43) अब से यह रोटी स्मरण की रोटी कहलाएगी; यह दाखमधु स्मरण की दाखमधु होगी; और जब तुम यह रोटी खाओ और यह दाखमधु पीओ, तो मुझे स्मरण करना।

अध्याय 161

यीशु ग्यारह सिखाता है। उन से कहता है, कि वे सब उस से अलग हो जाएंगे, और पतरस भोर से पहिले तीन बार उसका इन्कार करेगा। वह प्रोत्साहन के अंतिम शब्द बोलता है। दिलासा देने वाला वादा करता है

अब जब यहूदा याजकों के दूतों से भेंट करने और अपने प्रभु को पकड़वाने को निकल गया,

2) स्वामी ने कहा, समय आ गया है, मनुष्य के पुत्र की अब महिमा होगी।

3) मेरे छोटे बच्चों, मैं अभी थोड़ी देर के लिए तुम्हारे साथ हूँ; शीघ्र ही तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे, क्योंकि जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते।

4) मैं तुझे एक नई आज्ञा देता हूं: जैसा मैं तुझ से प्रेम रखता हूं, और तेरे लिथे अपना प्राण देता हूं, वैसा ही तू भी जगत से प्रेम रखना, और जगत को बचाने के लिथे अपना प्राण देना।

5) जैसा आप अपने आप से प्रेम रखते हैं, वैसे ही एक दूसरे से प्रेम रखें, और तब संसार जानेगा कि तुम परमेश्वर के पुत्र हो, मनुष्य के पुत्र के चेले हो, जिसकी परमेश्वर ने महिमा की है।

6) पतरस ने कहा, हे प्रभु, जहां तू जाएगा वहां मैं जाऊंगा, क्योंकि मैं अपके प्रभु के लिथे अपना प्राण दूँगा।

7) यीशु ने कहा, हे मेरे मित्र, वीरता का घमण्ड न करो; तुम इतने मजबूत नहीं हो कि आज रात मेरा पीछा कर सको।

8) अब, पतरस, सुन! कल सुबह मुर्गे के बाँग देने से पहले तुम तीन बार मेरा इन्कार करोगे।

9) तब उस ने उन ग्यारह पर दृष्टि करके कहा, तुम सब आज रात को मुझ से अलग हो जाओगे।

10) नबी ने कहा, देख, वह भेड़ोंके चरवाहे को मार डालेगा; भेड़ें भागकर छिप जाएंगी।

11) परन्तु मेरे मरे हुओं में से जी उठने के बाद, देखो, तुम फिर आओगे, और मैं तुम्हारे आगे आगे चलकर गलील को जाऊंगा।

12) तब पतरस ने कहा, हे मेरे प्रभु, चाहे सब लोग तुझे छोड़ दें, मैं नहीं करूंगा।

13) यीशु ने कहा, हे शमौन पतरस, देख, तेरा जोश तेरे साहस से भी बड़ा है! देख, क्योंकि शैतान तुझे गेहूं की कड़ाही की नाईं छानने को आता है, परन्तु मैं ने बिनती की है, कि तेरे विश्वास के कारण तू निराश न हो; कि परीक्षा के बाद तुम बल की मीनार के रूप में स्थिर हो जाओ।

14) और सब चेले कहने लगे, पृथ्वी पर ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जो हमारे प्रभु का इन्कार कर दे, या हमें न छुए।

15) यीशु ने कहा, तेरा मन उदास न हो; आप सभी भगवान में विश्वास करते हैं; मुझ पर विश्वास करें।

16) देखो, मेरी जन्मभूमि में बहुत से भवन हैं। अगर नहीं होते तो मैं आपको ऐसा नहीं बताता।

17) मैं अपनी जन्मभूमि को जाऊंगा, और तुम्हारे लिए एक स्थान तैयार करूंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम रहो। परन्तु अब तुम मेरी जन्मभूमि का मार्ग नहीं जानते।

18) थोमा ने कहा, हम नहीं जानते कि तू किधर जाना चाहता है; हम रास्ता कैसे जान सकते हैं?

19) यीशु ने कहा, मार्ग और सत्य, जीवन मैं ही हूं; मैं परमेश्वर के मसीह को प्रकट करता हूँ। कोई भी व्यक्ति मेरी जन्मभूमि तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि वह मेरे साथ मसीह के माध्यम से न आए।

20) यदि आप मुझे जानते और समझते, तो आप मेरे पिता-परमेश्वर को जानते।

21) फिलिप्पुस ने कहा, पिता को हमें दिखा, तो हम तृप्त होंगे।

22) यीशु ने कहा, क्या मैं इतने वर्ष से तुम्हारे साथ हूं, और अब भी तुम मुझे नहीं जानते?

23) जिसने पुत्र को देखा है, उसने पिता को देखा है, क्योंकि पुत्र में पिता ने अपने आप को प्रकट किया है।

24) देखो, मैं ने तुम से कई बार कहा है कि जो कुछ मैं कहता हूं और जो कुछ करता हूं वह मनुष्य के वचन और काम नहीं हैं;

25) वे परमेश्वर के वचन हैं, जो मुझ में रहते हैं और मैं उनमें।

26) हे विश्वासयोग्य लोगों, मेरी सुनो: जो मुझ पर और मेरे पिता-परमेश्वर पर विश्वास करता है, वही कहेगा और वही करेगा जो मैंने कहा और किया है।

27) हां, वह मुझसे कहीं अधिक बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं उसके पास जाता हूं जिसके काम हम करते हैं, और तब मैं मदद के लिए अपना हाथ बढ़ा सकता हूं।

28) और मेरे नाम से, मसीह के द्वारा, तुम परमेश्वर से बिनती कर सकते हो, और वह तुम्हारी बिनती पूरी करेगा।

29) क्या तुम मेरी बातों पर विश्वास करते हो? हाँ, तुम विश्वास करते हो, और यदि तुम मसीह से प्रेम करते हो और मेरे पीछे हो लेते हो, तो तुम मेरे वचनों को मानोगे।

30) मैं दाखलता हूं; तुम दाखलता की डालियां हो; मेरे पिता पति हैं।

31) जो डालियां निकम्मी हैं, उन में पत्तों को छोड़ कुछ भी नहीं है, उन्हें किसान काट कर आग में झोंक देंगे, कि वे जलाए जाएं।

32) और वह उन डालियों को छांटेगा जिनमें फल लगते हैं, कि वे बहुतायत से उपजें।

33) बेल से अलग होने पर शाखा फल नहीं दे सकती; और तुम मुझ से अलग होकर फल नहीं ला सकते।

34) मुझ में बने रहो, और वे काम करो जो परमेश्वर ने मेरे द्वारा तुम्हें सिखाया है कि कैसे करना है, और तुम बहुत फल लाओगे, और परमेश्वर तुम्हारा सम्मान करेगा जैसे उसने मुझे सम्मानित किया है।

35) और अब मैं अपने मार्ग पर जाता हूं, परन्तु मैं अपने परमेश्वर पिता से प्रार्थना करूंगा, और वह तुम्हारे पास एक और सहायक भेजेगा, जो तुम्हारे साथ रहेगा।

36) देखो, परमेश्वर का यह सहायक, पवित्र श्वास, परमेश्वर के साथ एक है, लेकिन वह एक है जिसे दुनिया स्वीकार नहीं कर सकती क्योंकि वह उसे नहीं देखती है; यह उसे नहीं जानता।

37) परन्तु तुम उसे जानते हो, और उसे भी जानोगे, क्योंकि वह तुम्हारे प्राण में निवास करेगी।

38) मैं तुम्हें उजाड़ नहीं छोड़ूंगा, परन्तु मसीह में, जो परमेश्वर का प्रेम मनुष्यों पर प्रगट हुआ है, मैं जीवन भर तुम्हारे साथ रहूंगा।

अध्याय 162

यीशु ने पवित्र सांस के मिशन को पूरी तरह से प्रकट किया। अपने शिष्यों को स्पष्ट रूप से बताता है कि वह मरने वाला है, और वे दुखी हैं। वह उनके लिए और विश्वासियों की सारी दुनिया के लिए प्रार्थना करता है। वे बैंक्वेट हॉल से निकल जाते हैं।

अब, यूहन्ना बहुत उदास हुआ, क्योंकि स्वामी ने कहा, मैं जाता हूं, और जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते।

2) वह रोया और कहा, हे प्रभु, मैं हर परीक्षा और मृत्यु में तुम्हारे साथ चलूंगा।

3) यीशु ने कहा, और तुम परीक्षाओं और मृत्यु के द्वारा मेरे पीछे हो लेगे; परन्तु अब तुम वहाँ नहीं जा सकते जहाँ मैं जाऊँगा; लेकिन तुम आओगे।

4) यीशु ने उन ग्यारहों से फिर कहा, शोक मत करो क्योंकि मैं चला जाता हूं, क्योंकि यही उत्तम है कि मैं चला जाऊं। अगर मैं नहीं जाऊँगा तो दिलासा देने वाला तुम्हारे पास नहीं आएगा।

5) ये बातें मैं तुम्हारे साथ शरीर में होकर बोलता हूं, परन्तु जब पवित्र श्वास प्रबल होगा, तो देखो, वह तुम्हें अधिक से अधिक सिखाएगी, और उन सभी शब्दों को तुम्हारे स्मरण में लाएगी जो मैंने तुमसे कहे हैं।

6) अभी बहुत सी बातें कही जानी हैं; चीजें जो यह युग प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि यह समझ नहीं सकता है।

7) लेकिन, मैं कहता हूं, देखो, प्रभु के महान दिन के आने से पहले, पवित्र सांस सभी रहस्यों को उजागर कर देगी:

8) आत्मा, जीवन, मृत्यु, अमरता के रहस्य; एक आदमी की हर दूसरे आदमी के साथ और उसके भगवान के साथ एकता।

9) तब संसार सत्य की ओर ले जाया जाएगा, और मनुष्य सत्य होगा।

10) जब वह आ जाएगी, तो वह दिलासा देनेवाला, वह पाप की दुनिया को, और जो कुछ मैं कहता हूं उसकी सच्चाई, और धर्मी के न्याय के बारे में समझाएगा; और तब शारीरिक जीवन का प्रधान निकाल दिया जाएगा।

11) और जब दिलासा देनेवाला आएगा, तो मुझे तुम्हारे लिथे बिनती करने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि तू प्रसन्न ठहरेगा, और परमेश्वर तुझे वैसे ही जानेगा जैसे वह मुझे जानता है।

12) वह समय आ गया है जब तुम रोओगे; दुष्ट आनन्द करेंगे, क्योंकि मैं चला जाता हूं; परन्तु मैं फिर आऊंगा, और तेरे सब दु:ख आनन्द में बदल जाएंगे;

13) हां, वास्तव में, आप उस व्यक्ति के रूप में आनन्दित होंगे जो मरे हुओं में से एक भाई का स्वागत करता है।

14) तब चेलोंने कहा, हे हमारे प्रभु, नीतिवचन में फिर बातें न करना; हम से स्पष्ट बोलो; हम जानते हैं कि आप बुद्धिमान हैं और सब कुछ जानते हैं।

15) तेरी बातों का क्या अर्थ है, मैं चला जाता हूं, परन्तु फिर आऊंगा?

16) यीशु ने कहा, वह घड़ी आ पहुंची, कि तुम सब तित्तर बित्तर हो जाओगे, और सब लोग डर जाएंगे;

17) अपके प्राण बचाने के लिथे भागेगा, और मुझे अकेला छोड़ देगा; तौभी मैं अकेला नहीं रहूंगा; मेरे पिता-भगवान पूरे रास्ते मेरे साथ हैं।

18) और दुष्ट लोग मुझे दुष्टों के न्याय आसन पर ले जाएंगे, और मैं लोगों की भीड़ के साम्हने अपना प्राण त्याग दूंगा, जो मनुष्यों के लिए आदर्श है।

19) परन्तु मैं फिर उठकर तुम्हारे पास आऊंगा।

20) ये बातें मैं इसलिए कहता हूं कि जब वे घटित होंगी तब तुम विश्वास में दृढ़ हो जाओगे।

21) और तुम मनुष्योंके बन्धन को ढोना, और उस काँटेदार मार्ग पर चलना, जिस पर मैं चलता हूँ।

22) निराश न हों; आनन्द मनाओ, देखो, मैं ने जगत को जीत लिया है, और तुम जगत पर जय पाओगे।

23) तब यीशु ने स्वर्ग की ओर आंखें उठाकर कहा, हे मेरे परमेश्वर पिता, वह घड़ी आ पहुंची है;

24) मनुष्य का पुत्र अब पृथ्वी पर से उठा लिया जाए, और वह ऐसा न हो कि वह बलिदान की शक्ति को जाने;

25) क्योंकि जैसे मैं मनुष्यों के लिथे अपना प्राण देता हूं, वैसे ही मनुष्यों को भी दूसरे मनुष्यों के लिथे अपना प्राण देना चाहिए।

26) हे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूं, और पवित्र नाम से मसीह की महिमा हुई है, कि लोग मसीह को जीवन, ज्योति, प्रेम, और सच्चाई के रूप में देखें।

27) और मसीह के द्वारा आप स्वयं जीवन, ज्योति, प्रेम, सत्य बन जाते हैं।

28) जिन्हें तू ने मुझे दिया है, उनके कारण मैं तेरे नाम की स्तुति करता हूं, क्योंकि उन्होंने तेरा आदर किया है, और वे तेरा आदर करेंगे;

29) और उनमें से कोई खोया नहीं है, और कोई भी नहीं गया है, सिवाय शारीरिक जीवन के अंधे पुत्र के, जो अपने भगवान को बेचने के लिए निकला है।

30) हे भगवान, इस आदमी को क्षमा कर दो क्योंकि वह नहीं जानता कि वह क्या करता है।

31) और अब, हे परमेश्वर, मैं तेरे पास आता हूं, और नश्वर जीवन में नहीं रहूंगा; जिन लोगों पर मैं ने तेरी बुद्धि और तेरी करूणा प्रगट की है, उनकी रक्षा कर।

32) जैसे वे मुझ पर और मेरी बातों पर विश्वास करते हैं, वैसे ही सारा संसार उन पर और उनकी बातों पर विश्वास करे।

33) जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा है, वैसे ही मैं ने उन्हें भेजा है। मैं प्रार्थना करता हूं कि आप उनका सम्मान करें जैसे आपने मुझे सम्मानित किया है।

34) मैं यह बिनती नहीं करता कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु इसलिये कि वे जगत की बुराई से बचे रहें, और ऐसी परीक्षाओं में न पड़ें, जिन्हें सहना उनके लिये कठिन है।

35) वे कभी संसार के थे, परन्तु अब संसार के नहीं, जैसे मैं संसार का नहीं रहा।

36) हे परमेश्वर, तेरा वचन सत्य है, और वे तेरे वचन के द्वारा पवित्र किए जाएं।

37) हे परमेश्वर, मैं केवल इन्हीं के लिये प्रार्थना नहीं करता; मैं उन सभों के लिए भी प्रार्थना करता हूं जो मुझ पर विश्वास करेंगे और जो कुछ वे करते और कहते हैं, उसके कारण मसीह को स्वीकार करेंगे, कि वे सभी एक हों।

38) जैसे मैं तेरे संग एक हूं, और तू मेरे संग एक है, वैसे ही वे भी हम में एक रहें,

39) ताकि सारा जगत जान ले कि तू ने मुझे अपनी इच्छा पूरी करने के लिए भेजा है, और तू उन से वैसा ही प्रेम रखता है जैसा तू ने कभी मुझ से प्रेम रखा है।

40) जब यीशु ने यह कहा, तो उन्होंने यहूदी स्तुति का गीत गाया, और उठकर चल दिए।

अध्याय 163

यीशु पीलातुस से मिलने जाता है, जो उसे अपने जीवन को बचाने के लिए देश से भागने का आग्रह करता है। यीशु ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। वह मस्सालियन के बाग में अपने शिष्यों से मिलता है। गेथसमेन में दृश्य। यहूदा के नेतृत्व में यहूदी भीड़ निकट है।

जब यीशु और ग्यारह बाहर गए, तो एक रोमी पहरेदार ने आकर कहा, सब जय हो! क्या तुम में से कोई गलील का रहने वाला है?

2) पतरस ने कहा, हम सब गलील के मनुष्य हैं; तुम किसको खोजते हो?

3) पहरेदार ने उत्तर दिया, मैं यीशु को ढूंढ़ता हूं, जो मसीह कहलाता है।

4) यीशु ने उत्तर दिया, मैं यहां हूं।

5) पहरेदारों ने बोला, और कहा, मैं राज मार्ग से नहीं आता; मैं आपको राज्यपाल का एक संदेश देता हूं।

6) यरूशलेम सब बदला लेनेवाले यहूदियों के साथ जीवित है, जो शपथ खाकर तेरे प्राण लेने की शपथ खाते हैं, और पीलातुस तुझ से भेंट करेगा, और वह तुझे बिना देर किए उसके पास आने को कहेगा।

7) यीशु ने पतरस और औरोंसे कहा, तराई में जा, और किद्रोन के पास मेरी बाट जोहते रहे, और मैं अकेला जाकर राज्यपाल से मिलूंगा।

8) और यीशु पहरूओं के संग चढ़ गया, और जब वह महल में पहुंचा, तो पीलातुस ने उस से फाटक पर भेंट करके कहा,

9) युवक, मेरे पास कहने के लिए एक शब्द है जो आपके लिए अच्छा हो सकता है। मैं ने तेरे कामों और वचनों को तीन वर्ष या उससे अधिक समय तक देखा है;

10) और मैं अक्सर आपके बचाव में खड़ा हुआ हूं जब आपके अपने देशवासियों ने आपको एक अपराधी के रूप में पत्थरवाह किया होगा।

11) लेकिन अब याजकों, शास्त्रियों और फरीसियों ने आम लोगों को उन्मादी और क्रूरता की स्थिति में उभारा है, और वे तुम्हारे प्राण लेने का इरादा रखते हैं।

12) क्योंकि वे कहते हैं, कि तू ने उनके मन्दिर को ढा देने की शपथ खाई है; मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था को बदलने के लिए; फरीसी और याजक को बन्धुआई में करके सिंहासन पर विराजमान करना।

13) और वे मानते हैं कि आप रोम के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं।

14) इस समय सारे यरूशलेम की सड़कें पागलों की भीड़ से भरी हुई हैं, जो तुम्हारा खून बहाने के इरादे से आए हैं।

15) तुम्हारे लिए कोई सुरक्षा नहीं है लेकिन उड़ान में है; सुबह के सूरज तक प्रतीक्षा न करें। इस शापित भूमि की सीमा तक पहुँचने का रास्ता आप जानते हैं।

16) मेरे पास पहरेदारों का एक छोटा दल है, जो अच्छी तरह से घुड़सवार और सशस्त्र हैं, और वे तुम्हें नुकसान की पहुंच से बाहर ले जाएंगे।

17) हे जवानो, तुम यहां न रुकना, उठकर जाना।

18) यीशु ने कहा, पीलातुस पुन्तियुस में एक कुलीन राजकुमार का कैसर है, और व्यभिचारी की दृष्टि से तेरी बातें उस ज्ञानी के नमक से सजी हुई हैं; परन्तु मसीह की ओर से तेरी बातें मूर्खता हैं।

19) कायर खतरा आने पर भाग जाता है; परन्तु जो खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने को आए, वह उन लोगों के लिथे स्वेच्छा से अपना प्राण दे, जिन्हें वह ढूंढ़ने और बचाने को आता है।

20) इससे पहले कि पास्का भस्म हो जाए, देखो, यह सारी जाति निर्दोषता का लहू बहाकर शापित होगी; और अब भी कातिल द्वार पर हैं।

21) पीलातुस ने कहा, ऐसा नहीं होगा; रोम की तलवार तुम्हारे प्राण बचाने के लिथे खोली जाएगी।

22) यीशु ने कहा, नहीं, पीलातुस, नहीं; मेरे जीवन को बचाने के लिए पूरी दुनिया में इतनी बड़ी सेना नहीं है।

23) और यीशु ने राज्यपाल को विदा किया और चला गया; परन्तु पीलातुस ने अपने साथ दुहरे पहरेदारों को भेजा, कहीं ऐसा न हो कि वह उन लोगों के हाथ में पड़ जाए, जो उसके प्राण लेने को आतुर थे।

24) लेकिन एक पल में यीशु गायब हो गया; पहरूओं ने उसे फिर न देखा, और थोड़ी ही देर में वह किद्रोन के नाले पर पहुंचा, जहां ग्यारह थे।

25) अब, नाले के ठीक आगे एक बाग और एक घर था जहाँ एक, मासालियन, रहता था, जहाँ यीशु अक्सर रहा करता था।

26) मस्सालियन उसका मित्र था, और वह मानता था कि यीशु ही वह मसीह है जिसके बारे में यहूदी भविष्यवक्ताओं ने बहुत पहले कहा था कि वह आएगा।

27) अब, बाग में एक पवित्र टीला था; मासालियन ने उस स्थान को गेथसेमेन कहा।

28) रात तो अँधेरी थी, परन्तु बाग़ में दुगना अँधेरा था, और यीशु ने आठों चेलों को नाले के पास रहने को कहा।

29) जब वह पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ गतसमनी प्रार्थना करने गया।

30) वे जैतून के पेड़ के पास बैठे थे, और यीशु ने जीवन के रहस्यों को पतरस, याकूब और यूहन्ना के सामने खोल दिया। उसने बोला,

31) अनंत काल की आत्मा एक अव्यक्त है; और यह पिता परमेश्वर, माता परमेश्वर, परमेश्वर पुत्र एक में है।

32) प्रकट के जीवन में एक तीन हो गया, और परमेश्वर पिता शक्ति का परमेश्वर है; और माता परमेश्वर सर्वज्ञ परमेश्वर है, और पुत्र परमेश्वर प्रेम है।

33) और परमेश्वर पिता स्वर्ग और पृथ्वी की शक्ति है; और माता परमेश्वर पवित्र श्वास है, स्वर्ग और पृथ्वी का विचार है; और परमेश्वर पुत्र, इकलौता पुत्र, मसीह है, और मसीह प्रेम है।

34) मैं मनुष्य की नाईं मनुष्यों पर यह प्रेम प्रकट करने आया हूं,

35) मनुष्य के रूप में मैं मानव जाति की सभी परीक्षाओं और परीक्षाओं के अधीन रहा हूं; परन्तु मैं ने शरीर को, और उसकी सब वासनाओं और भूखों समेत, जय प्राप्त किया है।

36) जो मैंने किया है वह सभी पुरुष कर सकते हैं।

37) और अब मैं मनुष्य की मृत्यु पर विजय पाने की शक्ति का प्रदर्शन करने वाला हूं; क्योंकि हर एक मनुष्य परमेश्वर का मांस है।

38) मैं अपना प्राण दे दूंगा, और उसे फिर ले लूंगा, कि तुम जीवन, मृत्यु और मरे हुओं के जी उठने के भेदों को जान सको।

39) मैं मुझे मांस में लेटा देता हूं, लेकिन मैं अपने आप को प्रकट करने की शक्ति के साथ आत्मा के रूप में उठूंगा ताकि नश्वर आंखें देख सकें।

40) इसलिए मैं तीन दिनों में सभी जीवन, मृत्यु का पूरा अर्थ, मृतकों के पुनरुत्थान का अर्थ दिखाऊंगा।

41) और जो मैं करता हूं वह सब मनुष्य कर सकते हैं।

42) और तुम, मेरे तीनों, जो मसीह के चर्च के आंतरिक घेरे का गठन करते हैं, लोगों को सभी देवताओं के गुण दिखाएंगे।

43) और पतरस परमेश्वर की शक्ति को प्रगट करेगा; और याकूब परमेश्वर का विचार प्रगट करेगा; और यूहन्ना परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करेगा।

44) मनुष्यों से मत डरो, क्योंकि तुम परमेश्वर पिता, माता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर के पराक्रम के काम करने के लिए भेजे गए हो।

45) और जब तक आपका काम पूरा नहीं हो जाता, तब तक शारीरिक जीवन की सभी शक्तियां आपके जीवन को नष्ट नहीं कर सकती हैं।

46) अब मैं तुम्हें छोड़ देता हूं, और मैं अकेले ही अन्धकार में निकलूंगा और परमेश्वर से बातें करूंगा।

47) दुःख से मैं अभिभूत हूँ, मैं तुम्हें यहाँ अपने साथ देखने के लिए छोड़ता हूँ।

48) तब यीशु तीन सौ हाथ पूर्व की ओर चला, और मुंह के बल गिरकर प्रार्थना की; उन्होंने कहा,

49) हे भगवान! हे भगवान! क्या कोई रास्ता है जिससे मैं आने वाले घंटों की भयावहता से बच सकूं? मेरा मानव मांस वापस सिकुड़ जाता है; मेरी आत्मा दृढ़ है; सो मेरी नहीं, परन्तु हे परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी हो।

50) तड़प कर उसने प्रार्थना की; मानव रूप पर बहुत दबाव था; उसकी नसें फट गईं, और उसका माथा खून से लथपथ हो गया।

51) तब वह उन तीनों के पास गया, और उन सब को सोए हुए पाया; उन्होंने कहा,

52) हे शमौन, शमौन, क्या तुम सोते हो! क्या तुम मेरे साथ एक घंटा भी नहीं देख सकते थे? सतर्क रहें और देखें और प्रार्थना करें कि आपके प्रलोभन आपके लिए सहन करने के लिए बहुत अधिक न हों।

53) मैं जानता हूँ कि आत्मा सतर्क और इच्छुक है; लेकिन मांस कमजोर है।

54) और फिर वह फिर गया और प्रार्थना की, हे पिता, भगवान! यदि मैं इस कड़वे प्याले को पीऊं, तो मुझे आत्मा की शक्ति दे; क्योंकि मेरी नहीं, परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।

55) और फिर वह अपने चेलों के पास गया; देखो, उसने पाया कि वे अभी भी सो रहे हैं। उसने उन्हें जगाया और याकूब से कहा,

56) क्या आप सो रहे हैं जबकि आपका स्वामी पुरुषों के सबसे बड़े दुश्मन के साथ कुश्ती कर रहा है? क्या तुम मेरे साथ एक घंटा भी नहीं देख सकते थे?

57) और फिर उसने जाकर प्रार्थना की। हे परमेश्वर, मैं तेरे अधीन हूं; थय हो जायेगा।

58) और फिर वह उन तीनों के पास गया, और वे सो गए। उसने जॉन से कहा,

59) तुम्हारे पास मेरे लिए जो प्यार है, क्या तुम मेरे साथ एक घंटे भी नहीं देख सकते?

60) तब उस ने कहा, बहुत हो गया; वह घड़ी आ पहुंची, और मेरा पकड़वाने वाला निकट है; उठो और हमें जाने दो।

61) और जब वे फिर किद्रोन में आए, तो देखो, वे आठ चेले सो रहे थे, और यीशु ने कहा, हे जागो; देखो, मनुष्य के पुत्र का विश्वासघाती आ पहुंचा है।

अध्याय 164

यहूदा एक चुम्बन के द्वारा अपने प्रभु को धोखा देता है। भीड़ ने यीशु को पकड़ लिया और चेले अपनी जान बचाने के लिए भाग गए। यीशु को यरूशलेम ले जाया गया। पीटर और जॉन भीड़ का अनुसरण करते हैं।

यहोवा उन ग्यारहों के साथ मस्सालियन के बाग में था, और जब वे बातें कर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि लालटेन और तलवारें और लाठियां लिए हुए मनुष्यों का एक दल उनके पास आ रहा है।

2) यीशु ने कहा, उस दुष्ट के दूतों को देखो! और यहूदा मार्ग की अगुवाई करता है।

3) और चेलों ने कहा, हे प्रभु, हम अपके प्राण बचाने के लिथे भागें।

4) परन्तु यीशु ने कहा, जब भविष्यद्वक्ताओं और द्रष्टाओं के वचन पूरे हो रहे हैं, तो हम अपने प्राणों को बचाने के लिये क्यों भागे?

5) यीशु अकेला उन लोगों से मिलने गया; और जब वे आए तो उस ने कहा, हे मनुष्यो, तुम यहां क्यों हो? तुम किसको खोजते हो?

6) उन्होंने उत्तर दिया, हम गलील के मनुष्य को ढूंढ़ते हैं। हम यीशु को ढूँढ़ते हैं, जो स्वयं को मसीह कहता है।

7) यीशु ने उत्तर दिया, मैं यहां हूं।

8) और फिर उसने अपने हाथ उठाए और एक शक्तिशाली विचार के साथ वह पंखों को प्रकाश की स्थिति में लाया; और सारा बाग प्रकाश से जगमगा उठा।

9) उन्मादी लोगों को खदेड़ दिया गया और बहुत से लोग भाग गए और यरूशलेम पहुंचने तक नहीं रुके; और औरों के मुंह के बल भूमि पर गिर पड़े।

10) सबसे वीर पुरुष और वे कठोर मन वाले बने रहे, और जब प्रकाश फीका पड़ गया, तब यहोवा ने फिर पूछा, तुम किसको ढूंढ़ते हो?

11) हनन्याह ने कहा, हम गलील के मनुष्य को ढूंढ़ते हैं; हम यीशु को ढूंढ़ते हैं, वह जो अपने आप को मसीह कहता है।

12) यीशु ने उसे उत्तर दिया, और कहा, मैं ने तुम से पहिले एक बार कहा था; लेकिन अब मैं तुमसे एक बार फिर कहता हूं कि मैं वह हूं।

13) हनन्याह के पास, यहूदा खड़ा रहा; परन्तु पल भर में वह जाकर यहोवा के पीछे पीछे आकर कहने लगा, हे मेरे प्रभु; और फिर उस ने उसे चूमा, कि यह वही यीशु है जिसे वे ढूंढ़ रहे थे।

14) यीशु ने कहा, हे इस्करियोती, क्या तू आकर अपने स्वामी को चूमकर पकड़वाता है?

15) यह काम अवश्य करना चाहिए; परन्तु हाय उस पर जो अपके रब को पकड़वा दे।

16) तुम्हारे शारीरिक लोभ ने तुम्हारे विवेक को छिन्न-भिन्न कर दिया है और तुम नहीं जानते कि तुम क्या करते हो; परन्तु थोड़े समय में तुम्हारा विवेक दृढ़ हो जाएगा, और पछतावे में, देखो, तुम अपनी अवधि को बंद करोगे और अपनी जान ले लोगे।

17) तब ग्यारहोंने आकर यहूदा को पकड़ लिया, और उसे हानि पहुँचाते; लेकिन यीशु ने कहा,

18) तुम इस आदमी को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए; तुम्हें इस आदमी का न्याय करने का कोई अधिकार नहीं है; उसका विवेक उसका न्यायी है, वह उसे दण्ड देगा और वह अपने आप को फाँसी दे देगा।

19) और तब भीड़ ने कैफा के सेवक मलखुस के नेतृत्व में यीशु को पकड़ लिया, और उसे जंजीरों से बांध दिया।

20) यीशु ने कहा, तुम रात को क्यों तलवारों और लाठियों के साथ मुझे इस पवित्र स्थान में लेने के लिए आते हो?

21) क्या मैंने यरूशलेम के सार्वजनिक स्थानों में बात नहीं की है? क्या मैं ने तेरे बीमारोंको चंगा नहीं किया, और तेरी अन्धी आंखें न खोलीं, और तेरे लंगड़े को चलने के लिथे, और तेरे बहरे को सुनने के लिथे नहीं बनाया? तुम मुझे किसी भी दिन पा सकते थे।

22) और अब तुम मुझे जंजीरों से बांधने की कोशिश करते हो, ये जंजीरें क्या हैं लेकिन सरकंडों की कड़ी? और फिर उसने हाथ उठाया; जंजीरें टूट गईं और वे भूमि पर गिर पड़ीं।

23) और मलखुस ने सोचा कि यहोवा उसकी जान बचाने के लिए भाग जाएगा, और वह एक लाठी से उसके चेहरे पर वार करेगा।

24) परन्तु पतरस के पास तलवार थी, और उसने दौड़कर उस मनुष्य को मारा और घायल कर दिया।

25) परन्तु यीशु ने कहा, हे पतरस ठहरो; अपनी तलवार रखो; तुम्हें तलवारों और लाठियों से लड़ने के लिए नहीं बुलाया गया है। जो कोई तलवार चलाएगा वह तलवार से नाश होगा।

26) मुझे मनुष्यों की सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं इस क्षण को बुला सकता हूं और एक सेना, हां, परमेश्वर के दूतों की बारह सेनाएं आकर मेरे बचाव में खड़ी होंगी; लेकिन तब यह ठीक नहीं है।

27) तब उस ने मलखुस से कहा, हे मनुष्य, मैं तुझे हानि न पहुँचाता। और फिर उस ने पतरस के घाव पर हाथ रखा, और वह ठीक हो गया।

28) तब यीशु ने कहा, तू चिन्ता न करना, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुझ से दूर हो जाऊं और अपने प्राण बचाने के लिथे भाग जाऊं। मुझे अपनी जान बचाने की कोई इच्छा नहीं है; जैसा तुम चाहो मेरे साथ करो।

29) और फिर भीड़ उन ग्यारहों को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ी, ताकि वे अपने अपराधों में यीशु के सहायक के रूप में मुकदमे के लिए खड़े होने के लिए उन्हें वापस ले जा सकें।

30) परन्तु सब चेले यीशु को छोड़कर भाग गए, और अपनी जान बचाने को भागे।

31) अब, यूहन्ना भागने वाला अंतिम था; भीड़ ने उसे पकड़ लिया, और उसके वस्त्र फाड़कर फाड़ डाले; परन्तु वह नग्न अवस्था में भाग निकला।

32) मस्सालियन ने उस व्यक्ति को देखा और उसे अपने घर ले गया और अन्य वस्त्र दिए; और वह उनके पीछे हो लिया जो यहोवा को दूर ले गए।

33) और पतरस अपनी कमजोर कायरता के कारण लज्जित हुआ, और जब वह फिर से स्वयं हो गया, तो वह यूहन्ना के साथ हो गया और भीड़ के पीछे पीछे हो लिया और यरूशलेम में आ गया।

भाग 3/**धारा** XIX

परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उदगम/चर्च

खंड XIX

KOPH

यीशु का परीक्षण और निष्पादन

(**अध्याय** 165 - 171)

अध्याय 165

कैफा के सामने यीशु। पतरस ने अपने प्रभु का तीन बार इन्कार किया। सात सत्तारूढ़ यहूदियों द्वारा हस्ताक्षरित अभियोग। सौ झूठे गवाह आरोपों की सच्चाई की गवाही देते हैं।

कैफा यहूदियों का महायाजक था;

3) महल का दरवाजा रखने वाली नौकरानी जॉन को जानती थी और इस शिष्य ने उसे और पीटर को हॉल में भर्ती होने के लिए कहा।

4) दासी ने उन्हें भीतर जाने दिया, और यूहन्ना भीतर गया; परन्तु पतरस डर गया और बाहरी आंगन में रुक गया।

5) उस स्त्री ने पतरस से द्वार के पास खड़े होकर कहा, क्या तू गलील के इस पुरूष का अनुयायी है?

6) पतरस ने कहा, नहीं, मैं नहीं हूं।

7) वे लोग जो यीशु को हॉल में लाए थे, बाहरी आंगन में आग के पास बैठे थे, क्योंकि रात ठंडी थी, और पतरस उनके साथ बैठा था।

8) एक और दासी जो उस स्थान पर प्रतीक्षा कर रही थी, उसने पतरस को देखा, और उस से कहा, तू निश्चय गलील का है; तेरी वाणी गलील की है; तुम इस आदमी के अनुयायी हो।

9) पतरस ने कहा, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कहना चाहते हो; मैं इस आदमी को जानता तक नहीं।

10) तब कैफा के एक दास ने, जो यहोवा को पकड़कर आंगन में ले आए थे, उनमें से एक ने पतरस को देखा, और उस ने उस से कहा,

11) क्या मैंने तुम्हें इस देशद्रोही नासरी के साथ मासालियन के बाग में नहीं देखा? मुझे यकीन है कि मैंने किया, और आप उन लोगों में से एक हैं जिन्होंने उसका अनुसरण किया।

12) तब पतरस ने उठकर फर्श पर मुहर लगाई, और सब पवित्र वस्तुओं की शपथ खाकर कहा, कि वह अपराधी को नहीं जानता।

13) अब, यूहन्ना पास खड़ा था, और जब उसने ये बातें सुनीं और जान लिया कि पतरस ने अपने प्रभु का इन्कार कर दिया है, तो उसने बड़े आश्चर्य से उसकी ओर देखा।

14) तभी आंगन के नीचे एक मुर्गे का दल जोर से चिल्लाया, और पतरस ने उन बातों को स्मरण किया जो यहोवा ने कही थीं।

15) कल सवेरे मुर्गे के बाँग देने से पहले तुम तीन बार मेरा इन्कार करोगे।

16) और पतरस के विवेक ने उसे बहुत मारा, और वह रात को निकल कर रोने लगा।

17) कैफा राज्य में बैठे थे; उसके सामने गलील का आदमी खड़ा था।

18) कैफा ने कहा, हे यरूशलेम के लोगों, वह मनुष्य कौन है जिस पर तुम दोष लगाते हो?

19) उन्होंने उत्तर दिया: प्रत्येक वफादार यहूदी के नाम पर हम गलील के इस व्यक्ति, इस यीशु को, जो हमारा राजा मानते हैं, ईश्वर और मनुष्य के शत्रु के रूप में दोष लगाते हैं।

20) कैफा ने यीशु से कहा, हे मनुष्य, अब तुझे अपने उपदेशों और अपने दावों के बारे में बोलने और बताने की अनुमति है।

21) और यीशु ने कहा, हे शारीरिक मनुष्य के याजक, तुम मेरे वचनों और कार्यों के बारे में क्यों पूछते हो?

22) देखो, मैं ने लोगों को हर सार्वजनिक स्थान पर उपदेश दिया है; मैं ने तेरे रोगी को स्वस्थ कर दिया है; तेरे बहरों को सुनाया है, तेरे लंगड़े चलते हैं, और मैं ने तेरे मुर्दे को फिर जिलाया है।

23) मेरे काम गुप्त स्थान पर नहीं, बल्कि आपके सार्वजनिक हॉल और सड़कों पर किए गए हैं।

24) जाओ उन लोगों से, जिन्हें सोना या चमचमाती वादों के साथ नहीं खरीदा गया है, मेरे शब्दों और कार्यों के बारे में बताने के लिए।

25) जब यीशु ने यह कहा, कि एक यहूदी पहरेदार ने आकर उसके मुंह पर धावा बोला, और कहा, हे यहूदियों के महायाजक, तेरा उस से ऐसा कहने का साहस कैसे हुआ?

26) यीशु ने कहा, यदि मैं ने झूठ कहा है, तो जो मैं कहता हूं उस पर गवाही दे; अगर मैंने सच कहा है तो तुमने मुझे इस तरह क्यों मारा?

27) तब कैफा ने कहा, जो कुछ तू करता है, वह विधिसम्मत रूप से करता है, क्योंकि जो कुछ हम करते या कहते हैं, उसका उत्तर हमें ऊंचे न्यायालय को देना होगा।

28) इस आदमी पर आरोप लगाने वाले अपने आरोपों को कानूनी रूप में पेश करें।

29) तब कैफा के मुंशी ने खड़े होकर कहा, मेरे यहां आरोप कानूनी रूप में हैं; शास्त्रियों और याजकों और फरीसियों द्वारा लगाए गए और हस्ताक्षर किए गए आरोप।

30) कैफा ने कहा, हे सज्जनों, चुप रहो, और पढ़े हुए आरोपों को सुनो। मुंशी ने एक रोल लिया और पढ़ा:

31) यहूदियों की महासभा और कैफा महायाजक को, जो सबसे प्रतिष्ठित पुरुष थे:

32) मनुष्य अपने राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च कर्तव्य निभा सकता है और उसका अपना कर्तव्य है कि वह अपने शत्रुओं से उनकी रक्षा करे।

33) यरूशलेम के लोग जानते हैं कि उनके बीच एक शक्तिशाली शत्रु है।

34) यीशु नाम का एक व्यक्ति आगे आया है और दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी होने का दावा करता है।

35) एक धोखेबाज के रूप में वह दुश्मन है, और हर वफादार यहूदी के नाम पर हम यहां ये आरोप लगाते हैं जिन्हें हम साबित करने में सक्षम हैं:

36) सबसे पहले, वह परमेश्वर की निन्दा करता है; वह कहता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है; कि वह और परमेश्वर एक हैं;

37) और वह सब्त के दिनोंमें चंगा करके, और दूसरे काम करके हमारे पवित्र दिनोंको अपवित्र करता है;

38) और वह अपने आप को राजा, हमारे दाऊद और हमारे सुलैमान का उत्तराधिकारी घोषित करता है;

39) और वह घोषणा करता है, कि वह हमारे मन्दिर को ढा देगा, और तीन दिन में उसे और अधिक महिमामय रूप में फिर से बनाएगा;

40) और जिस प्रकार उसने व्यापारियों को मन्दिर के प्रांगण से निकाल दिया, उसी प्रकार वह लोगों को यरूशलेम से भी भगाने की घोषणा करता है; और हमारे पवित्र पहाड़ों पर मनुष्यों के एक गोत्र को ले आओ जो परमेश्वर को नहीं जानते;

41) और वह टालता है कि हर वैद्य, शास्त्री, फरीसी, और सदूकी, बंधुआई में जाएंगे, और फिर कभी न लौटेंगे;

42) और इन आरोपों के लिए हम अपने हाथ और मुहर लगाते हैं। अन्नास साइमन। अबीनादब। अन्नानियास। योआश। अज़ानिया। हिजकिय्याह।

43) जब शास्त्री ने आरोपों को पढ़ लिया, तब सब लोगों ने लोहू के लिये पुकारा; उन्होंने कहा, ऐसा मनहूस पत्यरवाह किया जाए; उसे सूली पर चढ़ा दिया जाए।

44) कैफा ने कहा, हे इस्त्राएलियों, क्या तू इन मनुष्यों के वश में रहता है?

45) घूस लिए गए सौ पुरूष गवाही देने को खड़े हुए; उन्होंने कसम खाई थी कि हर आरोप सच था।

46) कैफा ने यीशु से कहा, हे मनुष्य, क्या तुझे कुछ कहना है? क्या तुम परमेश्वर के पुत्र हो?

47) यीशु ने कहा, तू ने कहा है; और फिर उसने और नहीं कहा।

अध्याय 166

महासभा के सामने यीशु। नीकुदेमुस न्याय की याचना करता है; वह गवाहों की अक्षमता को दर्शाता है। परिषद यीशु को दोषी घोषित करने में विफल रहती है, लेकिन कैफा, पीठासीन न्यायाधीश, उसे दोषी घोषित करता है। भीड़ यीशु के साथ दुर्व्यवहार करती है। उसे पिलातुस के दरबार में ले जाया जाता है।

जब यीशु न बोले, तो कैफा यहूदियों की भीड़ के सामने खड़ा हुआ और कहा,

2) बन्दी को बाँधो, क्योंकि उसे अपने प्राण का उत्तर देने के लिए यहूदियों की बड़ी महासभा के सामने जाना होगा।

3) हम एक अपराधी को तब तक नहीं मार सकते जब तक कि हमारे निष्कर्षों को यहूदियों की सर्वोच्च परिषद द्वारा सत्यापित नहीं किया जाता है।

4) जैसे ही दिन हुआ, लोगों की सर्वोच्च परिषद की बैठक हुई; यहोवा और उस पर दोष लगानेवाले दंड के साम्हने खड़े रहे।

5) कैफा प्रमुख था; उस ने उठकर कहा, गलील के इस मनुष्य पर दोष लगानेवाले अपके दोष और साक्ष्य प्रगट करें।

6) कैफा का शास्त्री खड़ा हुआ और उसने उन पर आरोप और उन लोगों के नाम पढ़े, जिन्होंने गलील के उस व्यक्ति पर आरोप लगाया था।

7) और सब गवाहोंको यहूदियोंकी सभा के साम्हने खड़े होकर गवाही दी गई।

8) तब वकीलों ने साक्षियों को तौला, और नीकुदेमुस उन लोगों के बीच खड़ा हुआ जो याचना करते थे।

9) उस ने हाथ उठाकर कहा, अब न्याय किया जाए, यद्यपि सब शास्त्री, फरीसी, और याजक और सदूकी, वरन यीशु, जो अभियुक्त है, झूठा ठहराया जाए।

10) अगर हम इस यीशु को हमारे कानूनों और देश के दुश्मन और देशद्रोही साबित कर सकते हैं, तो उसे अपराधी माना जाए और उसके अपराधों के लिए पीड़ित किया जाए।

11) यदि यह प्रमाणित हो जाए कि जो साक्षी देते हैं, वे परमेश्वर और मनुष्य की दृष्टि में झूठे हैं, तो गलील का मनुष्य स्वतंत्र हो जाए।

12) और फिर वह गवाहों की चितौनियों को व्यवस्था के न्यायियों के साम्हने लाया; उनमें से कोई भी दो सहमत नहीं था। जुनून की गर्मी में, या लाभ के लिए, पुरुषों ने गवाही दी थी।

13) परिषद ने खुशी-खुशी फैसला किया होगा कि यीशु एक अपराधी था और उसे मौत की सजा दी गई थी; परन्तु सब प्रमाणों के साम्हने वे डरे हुए थे।

14) कैफा ने कहा, हे गलील के हे मनुष्य, जीवित परमेश्वर के साम्हने अब मैं आज्ञा देता हूं, कि तू मुझे उत्तर देना, कि क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है?

15) और यीशु ने कहा, यदि मैं उत्तर दूं, हां, तुम न सुनोगे, और न अब तक विश्वास करोगे,

16) यदि मैं उत्तर दूं, नहीं, तो मैं तेरे साक्षियोंके समान ठहरूंगा, और मनुष्य और परमेश्वर के साम्हने झूठा ठहरूंगा। पर मैं यही कहता हूँ,

17) वह समय आएगा जब तुम मनुष्य के पुत्र को सत्ता के सिंहासन पर विराजमान और आकाश के बादलों पर आते हुए देखोगे।

18) तब कैफा ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, क्या तुमने पर्याप्त नहीं सुना? क्या तुमने उसकी निन्दा की निन्दात्मक बातें नहीं सुनीं? हमें गवाहों की और क्या आवश्यकता है? हम उसके साथ क्या करें?

19) लोगों ने कहा, उसे मार डालो। और फिर भीड़ दौड़ी और उसके चेहरे पर थूका और उसे अपने हाथों से मारा।

20) तब उन्होंने उसकी आंखोंके चारोंओर एक कपड़ा बांधा, और उसके चेहरे पर ऐसा मारा, कि तू भविष्यद्वक्ता है; हमें बताओ कि वह कौन था जिसने तुम्हें चेहरे पर मारा था।

21) यीशु ने उत्तर नहीं दिया, और मेम्ने की नाईं अपके ऊन कतरनेवाले के साम्हने गलील के पुरूष ने विरोध नहीं किया।

22) कैफा ने कहा, जब तक रोमी शासक इस न्यायालय के दण्ड की पुष्टि न कर दे, तब तक हम एक मनुष्य को मार नहीं सकते;

23) तो इस अपराधी को दूर ले जाओ और पीलातुस हमारे द्वारा किए गए कार्यों का समर्थन करेगा।

24) और फिर यीशु को घसीटकर रोमी राज्यपाल के महल तक ले जाया गया।

<u>अध्याय 167</u>

पीलातुस के सामने यीशु। दोषी नहीं बताया गया है। हेरोदेस के सामने यीशु और अत्याचार किया गया और पीलातुस के पास लौट आया, जो उसे फिर से निर्दोष घोषित करता है। यहूदी उसकी मौत की मांग करते हैं। पीलातुस की पत्नी ने अपने पति से यीशु की सजा से कोई लेना-देना नहीं करने का आग्रह किया। पिलातुस रोता है।

यहूदियों ने रोमी राज्यपाल के महल में प्रवेश किया, ऐसा न हो कि वे अशुद्ध हो जाएं और भोज में शामिल होने के योग्य न हों; परन्तु वे यीशु को राजभवन के आंगन में ले गए, और पीलातुस वहां उन से मिला।

2) पीलातुस ने कहा, पहिले दिन में ऐसा क्यों हो रहा है? आपकी प्रार्थना क्या है?

3) यहूदियों ने उत्तर दिया, हम तुम्हारे आगे एक दुष्ट और देशद्रोही मनुष्य को लाते हैं।

4) उसे यहूदियों की सर्वोच्च परिषद के समक्ष पेश किया गया है और हमारे कानूनों, हमारे राज्य और रोम की सरकार के लिए गद्दार साबित हुआ है।

5) हम प्रार्थना करते हैं कि आप उसे क्रूस पर मौत की सजा देंगे।

6) पीलातुस ने कहा, तुम उसे मेरे पास क्यों लाते हो? उसके पास जाओ और तुम उसका न्याय करो।

7) आपके पास एक कानून है, और रोमन कानून की मंजूरी से, आपको न्याय करने का अधिकार है और निष्पादित करने का अधिकार है।

8) यहूदियों ने उत्तर दिया, हमें किसी व्यक्ति को सूली पर चढ़ाने का कोई अधिकार नहीं है, और चूंकि यह व्यक्ति तिबेरियस का गद्दार है, इसलिए हमारे सलाहकारों का मानना है कि उसे सबसे अपमानजनक मृत्यु - क्रूस पर मृत्यु से मिलना चाहिए।

9) परन्तु पीलातुस ने कहा, रोमी व्यवस्था के द्वारा किसी भी मनुष्य को अपराध का दोषी तब तक नहीं ठहराया जा सकता जब तक कि सारी गवाही न हो, और अभियुक्त को अपना बचाव करने की अनुमति न दी गई हो;

10) इसलिए मैं तुम्हारे आरोपों का बिल, तुम्हारे पास सबूत के साथ, और रोमन कानून के अनुसार न्याय करूंगा।

11) यहूदियों ने आरोपों की एक प्रति रोमन दरबार की भाषा में बनाई थी, और उन्होंने बिल में जोड़ा था:

12) हम आरोप लगाते हैं कि यीशु रोम का शत्रु है; कि वह मांग करता है कि लोग टिबेरियस को कोई कर न दें।

13) और पीलातुस ने बिल ले लिया; उसके पहरेदार यीशु को महल के हॉल में सीढ़ियों तक ले गए।

14) और यीशु रोमी राज्यपाल के साम्हने खड़ा हुआ, और पीलातुस ने उसे यहूदियों के दोष पढ़कर सुनाया, और कहा,

15) इस बिल पर आपका क्या जवाब है? ये आरोप सही हैं या झूठे?

16) यीशु ने कहा, मैं पार्थिव दरबार में क्यों याचना करूं? आरोपों की पुष्टि झूठे पुरुषों द्वारा की गई है; मुझे क्या कहना चाहिए?

17) हाँ, मैं राजा हूँ; परन्तु शारीरिक मनुष्य न तो राजा को देख सकते हैं, और न परमेश्वर के राज्य को देख सकते हैं; यह भीतर है।

18) यदि मैं राजा होता, जैसा कि शारीरिक मनुष्य राजा होता है, मेरे सेवक मेरे बचाव में खड़े होते, और मैं स्वेच्छा से यहूदी कानून के मंत्रियों के सामने आत्मसमर्पण नहीं करता।

19) मेरे पास मनुष्यों की ओर से कोई गवाही नहीं है। परमेश्वर मेरा साक्षी है, और मेरे वचन और कर्म सत्य की गवाही देते हैं;

20) और जो कोई सत्य को समझता है, वह मेरी बातें सुनेगा, और अपने प्राण में मेरी गवाही देगा।

21) पीलातुस ने कहा, सत्य क्या है?

22) और यीशु ने कहा, सत्य वह परमेश्वर है जो जानता है। वही अपरिवर्तनशील है। पवित्र श्वास सत्य है; वह नहीं बदलती है और न ही गुजर सकती है।

23) और पीलातुस फिर यहूदियों के पास गया, और कहा, यह मनुष्य किसी अपराध का दोषी नहीं है; मैं उसे मौत की सजा नहीं दे सकता।

24) और तब यहूदी उतावले हो उठे; वे ऊँचे स्वर से पुकारने लगे, और कहने लगे, हमारी परिषद निश्चय ही जानती है। पूरे देश के बुद्धिमान लोगों ने उसे कई अपराधों का दोषी पाया है।

25) वह यहूदियों के राष्ट्र को भ्रष्ट करेगा; रोमन शासन को उखाड़ फेंकेगा और खुद को राजा बना लेगा। वह गलील का अपराधी है; उसे सूली पर चढ़ाया जाना चाहिए।

26) पीलातुस ने कहा, यदि यीशु गलील का है, तो वह गलील के राज्यपाल की प्रजा है, जो न्यायी होगा।

27) अब, हेरोदेस गलील से आया था और उसका दल यरूशलेम में था।

28) और पीलातुस ने यहोवा को जंजीरों में जकड़ कर उसके पास भेज दिया; उसने आरोपों की और यहूदियों की चितौनियों की एक प्रति भी भेजी, और कहा कि वह मामले पर फैसला सुनाएगा।

29) हेरोदेस ने कहा, मैं ने इस मनुष्य के विषय में बहुत कुछ सुना है, और उसे अपके आंगन में देखकर प्रसन्न हूं।

30) और फिर उसने यहोवा से उसके दावों, उसके सिद्धांतों और उसके उद्देश्यों के बारे में पूछा।

31) और यीशु ने एक भी उत्तर नहीं दिया; और हेरोदेस क्रोधित हुआ; उस ने कहा, क्या तू उत्तर न देकर देश के हाकिम का अपमान करता है?

32) तब उस ने अपके सिपाहियोंको बुलाकर कहा, इस मनुष्य को ले ले, और जब तक वह मुझे उत्तर न दे तब तक उस पर अत्याचार करता रहे।

33) पहरेदारों ने यीशु को पकड़ लिया और उसे मार डाला; उसका मजाक उड़ाया; उसे एक शाही वस्त्र में लपेटा; उन्होंने काँटों का मुकुट बनाकर उसके सिर पर रखा; उन्होंने उसके हाथ में एक टूटा हुआ सरकण्डा रखा;

34) तब उन्होंने ठट्ठा करके कहा, हे राजभवन, जय हो! आपके विषय और आपके मित्र कहाँ हैं?

35) लेकिन यीशु ने एक शब्द भी उत्तर नहीं दिया। तब हेरोदेस ने उसे इस शिष्टता के साथ पीलातुस के पास वापस भेज दिया:

36) रोम के सबसे योग्य सलाहकार, मैंने गलील के इस देशद्रोही व्यक्ति के बारे में सभी आरोपों और चितौनियों की जांच की है, और जब तक कि मैं उसे आरोपित अपराधों के लिए दोषी ठहरा सकता हूं,

37) मैं न्यायी के रूप में अपने अधिकार तुम्हें सौंपता हूँ, क्योंकि तुम मुझ से शक्ति में श्रेष्ठ हो। मैं इस मामले में आपके द्वारा दिए गए किसी भी निर्णय का अनुमोदन करूंगा।

38) अब, पीलातुस और चतुर्भुज दुश्मन थे, लेकिन इस घंटे के अनुभव ने उनकी दुश्मनी को नष्ट कर दिया और वे बाद के दिनों में दोस्त बन गए।

39) जब यीशु को पीलातुस के दरबार में फिर लाया गया, तो रोमी राज्यपाल यहोवा पर दोष लगानेवालों के साम्हने खड़ा हुआ और कहा,

40) मैं इस नासरी को अपराधी नहीं मान सकता जैसा आरोप लगाया गया है; इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि उसे मृत्यु भोगनी चाहिए; इसलिथे मैं उसको अच्छी तरह से कोड़े मारूंगा, और जाने दूंगा।

41) यहूदी क्रोध से रोए, ऐसा खतरनाक मनुष्य जीवित न रहे; उसे सूली पर चढ़ाया जाना चाहिए।

42) तब पीलातुस ने कहा, मैं कहता हूं, तुम थोड़ा ठहरो। और फिर वह एक भीतरी कमरे में गया और मौन विचार में बैठ गया।

43) और जब वह अपक्की पत्नी का विचार कर रहा था, तब गौल्स में से चुनी हुई एक धर्मपरायण स्त्री भीतर आई, और कहने लगी,

44) मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं, पीलातुस, मेरी बात सुनो: इस समय तुम क्या कर रहे हो, उससे सावधान रहो। गलील के इस व्यक्ति को मत छुओ; वह एक पवित्र व्यक्ति है।

45) यदि आप इस आदमी को कोड़े मारते हैं, तो आप भगवान के पुत्र को कोड़े मारते हैं। कल रात मैंने यह सब दृष्टि में देखा जो इतना ज्वलंत था कि एक बेकार सपने के रूप में अलग रखा जा सकता था।

46) मैं ने इस मनुष्य को समुद्र के जल पर चलते देखा; मैंने उसे बोलते हुए सुना और एक गुस्से वाले तूफान को शांत किया; मैंने उसे प्रकाश के पंखों के साथ उड़ते देखा;

47) मैं ने यरूशलेम को लोहू में देखा; मैं ने कैसर की मूरतों को गिरते देखा; मैंने सूरज के सामने एक परदा देखा, और दिन रात की तरह अँधेरा था।

48) जिस भूमि पर मैं खड़ा था वह हवा के आगे सरकण्ड की नाईं हिल गई। मैं तुम से कहता हूं, पीलातुस, यदि तुम इस मनुष्य के लहू से अपने हाथ धोते हो, तो तुम महान तिबेरियस की भौहें, और रोम के सीनेटरों के श्रापों से भयभीत हो सकते हो।

49) तब वह चली गई और पीलातुस रोने लगा।

अध्याय 168

पीलातुस का यीशु को छुड़ाने का अंतिम प्रयास विफल हो गया। वह नकली मासूमियत में हाथ धोता है। यहूदियों को फांसी के लिए यीशु को बचाता है। यहूदी सैनिक उसे कलवारी ले गए।

एक अंधविश्वासी लोग यहूदी हैं। उन्हें विश्वास है कि उन्होंने दूसरे देशों के मूर्तिपूजकों से उधार लिया है, कि हर साल के अंत में,

2) वे अपने पापों को उठाने के लिए अलग किए गए किसी व्यक्ति के सिर पर अपने सभी पापों का ढेर लगा सकते हैं।

3) मनुष्य भीड़ के लिए बलि का बकरा बन जाता है; और वे मानते हैं कि जब वे उसे जंगल में या परदेश में भगा देते हैं, तो वे पाप से छूट जाते हैं।

4) इसलिए हर बसन्त ऋतु में पर्व के पहिले वे देश के बन्दीगृहों में से एक बन्दी को चुन लेते थे, और वे अपना रूप धारण करके उसे अपने पापों से दूर कर देते थे।

5) यरूशलेम में यहूदी कैदियों में तीन थे जो एक नीच, देशद्रोही बैंड के नेता थे, जो चोरी और हत्याओं और बलात्कार में लिप्त थे, और उन्हें सूली पर चढ़ाए जाने की सजा सुनाई गई थी।

6) बरअब्बा बरअब्बा इज्जिया उन आदमियों में से था जो मरने वाले थे; परन्तु वह धनी था, और आनेवाले भोज में लोगोंके लिथे बलि का बकरा होने का वर याजकोंसे मोल लिया था, और अपनी घड़ी के आने की बाट जोहता था।

7) अब, पीलातुस ने सोचा कि प्रभु को बचाने के लिए इस अंधविश्वास को हिसाब में लिया जाए, और इसलिए वह फिर से यहूदियों के सामने गया और कहा,

8) हे इस्त्राएलियों, अपनी रीति के अनुसार मैं आज तुम्हारे लिथे एक बन्दी को छोड़ दूंगा जो तुम्हारे पापों को दूर करेगा।

9) इस मनुष्य को तू जंगल में या परदेश में ले जाता है, और तू ने मुझ से बरअब्बा को छोड़ देने को कहा है, जो बहुत से मनुष्यों की हत्या का दोषी ठहराया गया है।

10) अब, मेरी सुनो, यीशु को रिहा करने दो, और बरअब्बा को क्रूस पर अपना कर्ज चुकाने दो; तब तुम इस यीशु को जंगल में भेज सकते हो, और उसके विषय में फिर कभी नहीं सुन सकते।

11) यह सुनकर लोग क्रोधित हो उठे, और वे रोमी महल को ढा देने की साज़िश करने लगे, और पीलातुस और उसके घराने और उसके रक्षकों को बंधुआई में ले जाने लगे।

12) जब पीलातुस ने निश्चय किया कि भीड़ की इच्छा न मानने पर गृहयुद्ध होगा, तो उसने पानी का कटोरा लिया, और भीड़ के साम्हने हाथ धोकर कहा,

13) यह मनुष्य जिस पर तुम दोष लगाते हो, वह परमपवित्र देवताओं का पुत्र है, और मैं अपने निर्दोष होने का प्रचार करता हूं।

14) यदि तुम उसका खून बहाओगे, तो उसका खून तुम्हारे हाथों पर है, मेरे ऊपर नहीं।

15) तब यहूदी चिल्ला उठे, और उसका लोहू हमारे और हमारी सन्तान के हाथ पर रहे।

16) और पीलातुस डर के मारे पत्ते की नाईं कांप उठा। बरअब्बा, उस ने छोड़ दिया, और जब यहोवा भीड़ के साम्हने खड़ा हुआ, तब हाकिम ने कहा, अपने राजा को निहारना! और क्या तू अपने राजा को मार डालेगा?

17) यहूदियों ने उत्तर दिया, वह राजा नहीं है; हमारे पास महान तिबेरियस के अलावा कोई राजा नहीं है।

18) अब, पीलातुस सहमति नहीं देता था कि रोमन सैनिक अपने हाथों को निर्दोषता के खून से रंगेंगे, और इसलिए महायाजकों और फरीसियों ने सलाह ली कि यीशु के साथ क्या करना है, जो कि मसीह कहलाता था।

19) कैफा ने कहा, हम इस मनुष्य को क्रूस पर नहीं चढ़ा सकते; उसे पत्थरवाह किया जाना चाहिए और कुछ नहीं।

20) तब खरगोश ने कहा, फुर्ती से! उसे पत्थरवाह करने दो। तब वे उसे नगर के फाटकोंके पार पहाड़ी की ओर ले गए, जहां अपराधी मार डाले जाते थे।

21) जब तक वे खोपड़ियों के स्थान पर नहीं पहुँच गए, तब तक खरगोश इंतजार नहीं कर सकता था। और नगर के फाटक से होते ही वे उस पर लपके, और अपके हाथोंसे उसको मारा, और उस पर थूका, और पत्यरवाह किया, और वह भूमि पर गिर पड़ा।

22) और एक परमेश्वर का जन खड़ा हुआ, और कहने लगा, यशायाह ने कहा, वह हमारे अपराधोंके कारण कुचला जाएगा, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएंगे।

23) जब यीशु सब कुचले और लहूलुहान होकर भूमि पर पड़ा था, तब एक फरीसी ने पुकार कर कहा, ठहरो, तुम लोग रहो! देखो, हेरोदेस के पहरेदार आकर इस मनुष्य को क्रूस पर चढ़ाएंगे।

24) वहां उन्हें नगर के फाटक के पास बरअब्बा का क्रूस मिला; तब उन्मादी भीड़ चिल्ला उठी, कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए।

25) कैफा और अन्य शासक यहूदी आगे आए और सहमति दी।

26) तब उन्होंने यीशु को भूमि पर से उठा लिया, और तलवारों से उसे भगा दिया।

27) शमौन नाम का एक व्यक्ति, जो यीशु का मित्र था, घटनास्थल के पास था, और घायल और घायल यीशु अपना क्रूस सहन नहीं कर सके, उन्होंने उसे इस व्यक्ति के कंधों पर रख दिया, और उसे कलवारी के पास ले जाने के लिए कहा। .

अध्याय 169

यहूदा पछतावे से भर गया। मन्दिर को फुर्ती से चांदी के तीस टुकड़े याजकों के पांवों पर फेंक देते हैं, जो उसे लेकर कुम्हार का खेत मोल लेते हैं। यहूदा ने फांसी लगा ली। उसका शव कुम्हार के खेत में दफनाया गया है।

अब, यहूदा, जिसने अपने प्रभु को धोखा दिया, भीड़ के साथ था; लेकिन हर समय वह सोचता था कि यीशु अपनी शक्ति का दावा करेगा और परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन करेगा जो उसके पास है, और पृथ्वी पर पैशाचिक भीड़ पर प्रहार करेगा और अपने आप को मुक्त करेगा;

2) परन्तु जब उस ने अपने स्वामी को भूमि पर पड़ा देखा, और बहुत से घावों से खून बह रहा था, तो उसने कहा,

3) हे भगवान, मैंने क्या किया है? मैं ने परमेश्वर के पुत्र को धोखा दिया है; परमेश्वर का श्राप मेरी आत्मा पर छा जाएगा।

4) तब वह मुड़ा, और मन्दिर के द्वार तक फुर्ती से दौड़ा; उस ने याजकों को पाया, जिन्होंने यहोवा को पकड़वाने के लिथे चांदी के तीस सिक्के उसे दिए थे, और कहा,

5) अपनी रिश्वत वापस ले लो; यह मेरी आत्मा की लागत मूल्य है; मैंने परमेश्वर के पुत्र को धोखा दिया है।

6) याजकों ने उत्तर दिया, यह हमारे लिए कोई मायने नहीं रखता।

7) तब यहूदा ने चाँदी को फर्श पर फेंका, और शोक से दण्डवत् किया, और चला गया, और नगर की शहरपनाह के बाहर एक सीढ़ी पर फांसी लगा कर मर गया।

8) समय के साथ बन्धनों ने रास्ता दिया, उसका शरीर हिन्नोन घाटी में गिर गया और कई दिनों के बाद उन्होंने वहां एक आकारहीन द्रव्यमान पाया।

9) हाकिम लोहू का दाम भण्डार में न रख सके, और वे चांदी के वे तीस टुकड़े ले गए, जिनसे उन्होंने कुम्हार का खेत मोल लिया था।

10) जहां वे उन लोगों को दफना सकते हैं जिन्हें अपने पवित्र मैदान में झूठ बोलने का कोई अधिकार नहीं था।

11) और वहां उन्होंने उस मनुष्य की लोथ रखी, जिसने अपने प्रभु को बेचा था।

अध्याय 170

क्रूस पर चढ़ाई। यीशु अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना करता है। पीलातुस क्रूस के ऊपर एक शिलालेख लगाता है। यीशु पश्चातापी चोर को प्रोत्साहन के शब्द बोलते हैं। जॉन को अपनी मां और मरियम की देखभाल करने के लिए प्रतिबद्ध करता है। सिपाहियों ने उसके कपड़े आपस में बाँट लिए।

यहूदी भीड़ कलवारी की ओर बढ़ गयी और जब वे मरियम के पास गयीं तो मरियम और कुछ अन्य स्त्रियाँ प्रभु के निकट थीं।

2) वे जोर-जोर से रोने लगे। जब यीशु ने उन्हें रोते और विलाप करते देखा तो उस ने कहा,

3) मेरे लिये मत रो, क्योंकि चाहे मैं जाऊं, तौभी क्रूस के द्वार से होकर जा, तौभी सूर्य के दूसरे दिन अपके मन को ऊंचा कर, क्योंकि मैं तुझ से कब्र पर मिलूंगा।

4) महान जुलूस कलवारी में आया। रोमन सैनिकों ने पहले ही दो राज्य कैदियों को सूली पर चढ़ा दिया था।

5) (वे कीलों से नहीं बंधे थे, बल्कि बंधे हुए थे।)

6) रोमी रक्षकों के चार सैनिक जिन्हें हेरोदेस गलील से लाया था, दरबार के आदेशों का पालन करने के लिए बुलाया गया था।

7) ये वे लोग थे जिन्हें यीशु को यातना देने और उसके अपराध का अंगीकार करने के लिए अलग किया गया था।

8) ये वे मनुष्य थे जिन्होंने उसे कोड़े लगवाए, और उसके सिर पर कांटों का मुकुट, और टूटे हुए सरकण्डे को उसके हाथों में पहिनाया, और उसे राजकीय वस्त्र पहिनाया, और राजा की नाई उसके साम्हने दण्डवत् की।

9) इन सिपाहियोंने यहोवा को पकड़कर उसके कपड़े उतार दिए, और क्रूस पर लिटा दिया, और वहां उसे रस्सियोंसे बांध दिया; लेकिन यह पर्याप्त नहीं होगा।

10) क्रूर यहूदी हथौड़े और कीलों से निकट थे; वे रोए, रस्सियां नहीं, पर कीलें; कीलों को तेजी से चलाओ और उसे क्रूस पर पकड़ लो।

11) तब सिपाहियों ने कीलें लीं और उसके पांवों और हाथों में से निकाल दीं।

12) उन्होंने उसे पीने के लिए एक शामक, सिरका और गंधरस का एक मसौदा दिया; परन्तु उसने वह मसला पीने से इन्कार कर दिया।

13) सिपाहियों ने अन्य अपराधियों के बीच बरअब्बा का क्रूस लगाने के लिए एक जगह तैयार की थी; और यहां उन्होंने यीशु का क्रूस उठाया, जो मसीह कहलाता है;

14) और फिर सैनिक और भीड़ उसे मरते देखने के लिए बैठ गए।

15) यीशु ने कहा, हे मेरे परमेश्वर पिता, इन मनुष्योंको क्षमा कर; वे नहीं जानते कि वे क्या करते हैं।

16) अब, पीलातुस ने क्रूस पर चढ़ाने के लिए एक पटिया तैयार की थी जिस पर इब्रानी, लैटिन और यूनानी भाषाओं में सत्य के ये शब्द लिखे हुए थे: यीशु मसीह, यहूदियों का राजा।

17) और इसे क्रूस पर चढ़ाया गया। क्रूस की पटिया पर इन शब्दों को पढ़कर याजक क्रोधित हो गए।

18) और फिर उन्होंने प्रार्थना की कि पीलातुस यह न कहे: वह यहूदियों का राजा मसीह है; परन्तु कहो, वह यहूदियों का राजा मसीह होने का दावा करता है।

19) पीलातुस ने कहा, जो कुछ मैं ने लिखा है, वही लिखा है; इसे खड़े रहने दो।

20) जिन यहूदियों की भीड़ ने प्रभु को क्रूस पर देखा, वे हर्षित हो उठे; उन्होंने कहा, सब जय हो, नकली राजा!

21) तुम जो मन्दिर को ढा देते हो और तीन दिन में उसे फिर से बनाते हो, तुम अपने आप को क्यों नहीं बचाते?

22) यदि तुम परमेश्वर के पुत्र मसीह हो, तो क्रूस पर से निकल आओ; तब सभी पुरुष विश्वास करेंगे।

23) याजकों, शास्त्रियों और फरीसियों ने उस स्थान पर दृष्टि करके ठट्ठा किया; उन्होंने कहा, उस ने औरोंको कब्र से छुड़ाया; वह खुद को क्यों नहीं बचाता?

24) यहूदी सैनिक और रोमी पहरेदार जो गलील से आए थे, जोर-जोर से उसका उपहास उड़ाते और उसका उपहास करते थे।

25) क्रूस पर चढ़े अन्य लोगों में से एक ठट्ठा करने में शामिल हो गया; उस ने कहा, यदि तू मसीह है, तो सामर्थ है; केवल वचन बोलो, और अपने आप को और मुझे बचाओ।

26) क्रूस पर चढ़े दूसरे व्यक्ति ने उस व्यक्ति को डांटा; उसने कहा, हे दुष्ट! क्या तुम्हें परमेश्वर का भय नहीं है?

27) यह आदमी किसी भी अपराध के लिए निर्दोष है, जबकि आप और मैं दोषी हैं और हम पर कर्ज चुका रहे हैं।

28) फिर उस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, मैं जानता हूं कि तेरा राज्य आता है, वह राज्य जिसे संसार कभी नहीं समझ सकता;

29) और जब तू आकाश के बादलों पर आए, तब मेरी सुधि लेना।

30) यीशु ने कहा, देख, मैं आज के दिन तुम से आत्माओं के धाम में मिलूंगा।

31) अब, यहूदिया और गलील की बहुत सी स्त्रियाँ क्रूस के पास खड़ी थीं। उनमें से यहोवा की माता और मरियम भी थीं,

32) और मरियम, दो प्रेरितों की माता, याकूब और यूहन्ना, और मरियम मगदलीनी, और मार्था, रूत और मरियम, और सलोमी।

33) जब यीशु ने अपनी माता और गायक मरियम को क्रूस के पास और यूहन्ना को पास में खड़ा देखा, तो उसने यूहन्ना से कहा,

34) आपकी सबसे कोमल देखभाल में मैं अपनी माँ और अपनी बहन मरियम को छोड़ देता हूँ।

35) यूहन्ना ने उत्तर दिया, जब तक वे मेरे घर में रहेंगे, तब तक तेरी धन्य माता और तेरी बहिन मरियम का निवास होगा।

36) यहूदियों की एक प्रथा के अनुसार, जो कानून के जल्लाद थे और अपराधियों की जान लेते थे, वे अपराधियों के वस्त्र थे।

37) सो जब प्रभु को सूली पर चढ़ाया गया, तब रोमी रक्षकों ने प्रभु के वस्त्र आपस में बांट लिए।

38) लेकिन जब उन्होंने उसका कोट पाया तो वह एक निर्बाध कोट था और अत्यधिक मूल्यवान था।

39) इसके लिए पहरेदारों ने चिट्ठी डाली, और इस प्रकार यह निर्धारित किया कि पुरस्कार किसके पास होना चाहिए।

40) और इस प्रकार वह वचन पूरा हुआ, जिसमें कहा गया था, कि उन्होंने मेरे सब वस्त्र आपस में बांट लिए, और मेरे वस्त्र के लिथे चिट्ठी डाली।

अध्याय 171

सूली पर चढ़ाने के दृश्यों का समापन। यूसुफ और नीकुदेमुस, पीलातुस की सहमति से, यीशु के शरीर को क्रूस से उठाकर यूसुफ की कब्र में रख देते हैं। कब्र के चारों ओर एक सौ यहूदी सैनिकों के पहरेदार रखे गए हैं।

अब, दिन के छठवें घंटे पर, यद्यपि सूर्य अपने चरम पर था, दिन रात के समान अँधेरा हो गया;

2) और लोगों ने लालटेन की तलाश की, और उन्होंने पहाड़ियों पर आग लगा दी कि वे देख सकें।

3) और जब सूरज ने चमकने से इनकार कर दिया और अंधेरा आ गया, तो यहोवा ने कहा, हेलो! हेलो! लमा शबक्तनी (तू सूर्य! तू सूर्य! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?)

4) लोगों ने उसकी कही हुई बातों को नहीं समझा; उन्होंने सोचा कि वह एलिय्याह नाम बोलता है और उन्होंने कहा,

5) वह एलिय्याह को उसकी आवश्यकता की घड़ी में पुकारता है; अब हम देखेंगे कि क्या वह आएगा।

6) यीशु ने कहा, मैं प्यासा हूं। एक रोमन सैनिक ने एक स्पंज को सिरके और लोहबान में डुबोया और अपने होठों पर रख दिया।

7) अब, दिन के नौवें घंटे में पृथ्वी कांपने लगी, और उस धूप रहित दिन के अँधेरे में, क्रूस के ऊपर सुनहरी रोशनी की बाढ़ दिखाई दी;

8) और ज्योति में से एक शब्द सुनाई दिया, जिसमें कहा गया था, सुन, हो गया।

9) यीशु ने कहा, हे मेरे परमेश्वर पिता, मैं अपना प्राण तेरे हाथ में देता हूं।

10) एक रोमी सैनिक ने तरस खाकर कहा, यह वेदना बहुत बड़ी है; राहत आ जाएगी। और उस ने भाले से उसके मन को बेधा, और हो गया; मनुष्य का पुत्र मर गया था।

11) और तब पृथ्वी फिर से थर्रा उठी; यरूशलेम नगर इधर-उधर हिलता-डुलता रहा; पहाड़ फट गए और कब्रें खोल दी गईं;

12) और लोगों ने सोचा कि उन्होंने मरे हुओं को उठते और सड़कों पर चलते देखा है।

13) मन्दिर कांप उठा, और पवित्रस्थान और पवित्र स्थान के बीच का परदा फटकर दो टुकड़े हो गया, और सारे स्थान में भय व्याप्त हो गया।

14) सूली पर पड़े शव को देखने वाले रोमन रक्षक ने कहा, यह निश्चय ही परमेश्वर का पुत्र था जो मर गया।

15) तब लोग कलवारी से फुर्ती से चल पड़े। याजक, फरीसी और शास्त्री भय से भर गए।

16) उन्होंने अपके आराधनालयोंऔर घरोंका पर्दा ढूंढ़ा, और कहा, देख, परमेश्वर का कोप!

17) यहूदी पास्ट का महान दिन निकट था, और यहूदी कानून के अनुसार किसी अपराधी को सब्त के दिन क्रूस पर लटकाने की अनुमति नहीं दे सकते थे।

18) और इसलिए उन्होंने प्रार्थना की कि पीलातुस उन लोगों के शवों को हटा देगा जिन्हें सूली पर चढ़ाया गया था।

19) और पीलातुस ने अपने सिपाहियों को कलवारी भेज दिया, ताकि पता चले कि सब लोग मर गए हैं या नहीं।

20) और जब पहरेदार चले गए, तब दो वृद्ध यहूदी हाकिम से भेंट करने को राजभवन के द्वार पर आए, और वे यहूदियों की महासभा के सदस्य थे;

21) फिर भी वे मानते थे कि यीशु परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक नबी था।

22) एक अरिमथियान सलाहकार रब्बी जोसेफ था, और वह न्यायी था और परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करता था।

23) और नीकुदेमुस दूसरा था जो आया था।

24) ये लोग पीलातुस के पैरों पर गिर पड़े और प्रार्थना की कि वे नासरी के शरीर को ले जाकर कब्र में रख दें।

25) और पीलातुस ने हामी भर दी।

26) अब यूसुफ ने प्रभु की देह में लगभग सौ पौंड एलो और गन्धरस की महक लेने के लिए एक महँगा मिश्रण तैयार किया था, और उसे लेकर वे कलवारी को निकल गए।

27) और पहरूए लौटकर कहने लगे, नासरी मर गया; अपराधी जीवित हैं।

28) और पीलातुस ने सिपाहियों से कहा, कि जाओ, और जीवित लोगों को मारो, कि वे मर जाएं, और फिर उनके शवों को आग में जला दें; परन्तु नासरी की लोथ उन रब्बियों को दे दो जो उसकी मांग करेंगे।

29) सिपाहियों ने वैसा ही किया जैसा पिलातुस ने कहा था।

30) तब रब्बी आकर यहोवा की लोथ ले गए, और उन सुगन्धित वस्तुओं से जो उन्होंने मोल ली थीं, तैयार कर लीं,

31) उन्होंने उसे उस नई बनी हुई कब्र में रखा जो यूसुफ के लिए एक ठोस चट्टान में बनाई गई थी।

32) तब उन्होंने कब्र तक एक पत्थर लुढ़काया।

33) याजक भयभीत थे, कहीं ऐसा न हो कि यीशु के मित्र रात को निकलकर नासरी की लोथ को उठा ले जाएं, और उसके कहने के अनुसार वह मरे हुओं में से जी उठे, ऐसा समाचार न दें;

34) और उन्होंने अनुरोध किया कि राज्यपाल मृतकों के शरीर की रक्षा के लिए अपने सैनिकों को कब्र पर भेजे।

35) पीलातुस ने कहा, मैं रोमी पहरेदारों को नहीं भेजूंगा; परन्तु तुम्हारे पास यहूदी सैनिक हैं, और वे एक सूबेदार के साथ कब्र की रखवाली करने के लिये सौ पुरूष भेज सकते हैं।

36) फिर उन्होंने कब्र की रखवाली के लिए सौ सैनिकों को भेजा।

भाग 3/धारा XX

परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उदगम/चर्च

खंड XX
RESH

यीशु का पुनरुत्थान

अध्याय 172

पिलातुस ने कब्र के पत्थर के दरवाजे पर रोमन मुहर लगा दी। आधी रात को मूक भाइयों की एक टोली कब्र के चारों ओर मार्च करती है। सिपाही घबराए हुए हैं। यीशु जेल में आत्माओं को उपदेश देता है। रविवार की सुबह जल्दी वह कब्र से उठता है। पुजारियों द्वारा सैनिकों को यह कहने के लिए रिश्वत दी जाती है कि शिष्यों ने शरीर को चुरा लिया था।

जिस कब्र में उन्होंने यहोवा की लोथ रखी वह फूलों से भरपूर एक वाटिका में, शीलोआम की बारी थी, और यूसुफ का घर निकट था।

2) पहर शुरू होने से पहले कैफा ने याजकों की एक टोली को सिलोम की वाटिका में भेजा ताकि वे आश्वस्त हो सकें कि यीशु का शरीर कब्र के भीतर है।

3) उन्होंने पत्थर को लुढ़काया; उन्होंने वहां शव को देखा, और फिर उन्होंने पत्यर को द्वार के साम्हने रखा।

4) और पीलातुस ने अपने मुंशी को भेजा, जिसने पत्थर पर रोम की मुहर लगा दी, ताकि वह जो पत्थर ले जाए वह मुहर तोड़ दे।

5) इस रोमन मुहर को तोड़ने का अर्थ उस व्यक्ति के लिए मृत्यु था जिसने मुहर को तोड़ा।

6) यहूदी सिपाहियों ने सभी को विश्वासयोग्यता की शपथ दिलाई; और फिर घड़ी शुरू हुई।

7) आधी रात को सब ठीक था, लेकिन अचानक मकबरा प्रकाश की एक ज्वाला बन गया, और बगीचे के नीचे सफेद-पहने सैनिकों का एक दल एक ही फाइल में चल रहा था।

8) वे कब्र पर चढ़ आए और द्वार के सामने कूच किया और पलटवार किया।

9) यहूदी सैनिक सतर्क थे; उन्होंने सोचा कि दोस्त नासरी के शरीर को चुराने आए हैं। गार्ड के कप्तान चार्ज करने के लिए चिल्लाया।

10) उन्होंने आरोप लगाया; लेकिन एक सफेदपोश सैनिक नहीं गिरा। वे रुके भी नहीं; उन्होंने कूच किया और भयभीत लोगों के बीच पलटवार किया।

11) वे रोम की मुहर पर खड़े थे; उन्होंने बात नहीं की; उन्होंने अपक्की तलवारें न खोलीं; यह साइलेंट ब्रदरहुड था।

12) यहूदी सैनिक डर के मारे भाग गए; वे जमीन पर गिर पड़े।

13) वे तब तक अलग खड़े रहे जब तक कि सफेद-पहने सैनिक चले नहीं गए, और फिर कब्र के बारे में प्रकाश कम हो गया।

14) तब वे लौट आए; पत्थर अपनी जगह पर था; मुहर को तोड़ा नहीं गया, और उन्होंने अपनी घड़ी फिर से शुरू कर दी।

15) अब, यीशु कब्र के भीतर नहीं सोया। शरीर आत्मा का प्रकट रूप है; लेकिन आत्मा प्रकट के बिना आत्मा है।

16) और आत्माओं के दायरे में, अव्यक्त, प्रभु ने जाकर शिक्षा दी।

17) उसने बन्दीगृह के द्वार खोल दिए और बन्दियों को मुक्त कर दिया;

18) उसने बन्दी आत्माओं की जंजीरों को तोड़ा, और बन्धुओं को ज्योति की ओर ले गया;

19) वह पुराने समय के कुलपतियों और भविष्यद्वक्ताओं के साथ परिषद में बैठा;

20) वह सब समयों और युगों के स्वामी से मिला, और बड़ी सभाओं में खड़ा होकर पृथ्वी पर अपने जीवन की, और मनुष्य के बलिदान में अपनी मृत्यु की कहानी सुनाई।

21) और उसकी प्रतिज्ञाओं के विषय में कि वह फिर से शरीर पहिनकर अपने चेलों के साथ चलेगा, केवल मनुष्य की संभावनाओं को सिद्ध करने के लिए;

22) उन्हें जीवन, मृत्यु और मरे हुओं के जी उठने की कुंजी देना।

23) परिषद में सभी स्वामी बैठे और आने वाले युग के रहस्योद्घाटन के बारे में बात की,

24) जब वह, पवित्र श्वास, पृथ्वी और वायु को पवित्र श्वास से भर देगी, और मनुष्य के मार्ग को पूर्णता और अनंत जीवन के लिए खोल देगी।

25) सब्त के दिन शीलोआम की वाटिका में सन्नाटा था; यहूदी सैनिक देखते रहे, और कोई कब्र के पास न पहुंचा; लेकिन अगली रात दृश्य बदल गया।

26) आधी रात को प्रत्येक यहूदी सैनिक ने एक आवाज सुनी, जिसमें कहा गया था, अदोन माशियाच कूमी, जिसका अर्थ है, प्रभु मसीह उठो।

27) और उन्होंने फिर सोचा कि यीशु के मित्र सतर्क थे, अपने प्रभु के शरीर को लेने के लिए आ रहे थे।

28) सिपाहियों ने बिना म्यान की और खींची हुई तलवारों से चौकन्ना किया, और फिर उन बातों को सुना।

29) ऐसा लगता था मानो हर जगह आवाज थी, और उन्होंने किसी भी आदमी को नहीं देखा।

30) सिपाहियों ने भय से दम तोड़ दिया, और फिर भी भागने का अर्थ था कायरता के लिए मृत्यु, और इसलिए वे खड़े होकर देखते रहे।

31) फिर, और यह सूर्य के उदय से ठीक पहले था, आकाश प्रकाश से चमक रहा था, एक दूर की गड़गड़ाहट एक आने वाले तूफान की घोषणा कर रही थी;

32) और फिर पृथ्वी कांपने लगी और प्रकाश की किरणों में उन्होंने एक रूप को स्वर्ग से उतरते देखा। उन्होंने कहा, देख, एक स्वर्गदूत आता है।

33) और फिर उन्होंने सुना, अदोन मशियाच कूमी।

34) और फिर सफेद वस्त्र वाली आकृति को रोम की मुहर पर रौंदा गया, और फिर उसने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया; उसने उस शक्तिशाली पत्थर को हाथ में लिया, मानो वह नाले का कंकड़ हो और उसे किनारे कर दिया।

35) तब यीशु ने आंखें खोलकर कहा, सब के सब उगते सूर्य की जय हो; धार्मिकता के दिन का आगमन!

36) और फिर उसने अपने दफनाने के गाउन, अपने सिर के बैंड और अपने ओढ़ने को मोड़ा और उन सभी को एक तरफ रख दिया।

37) वह उठा, और एक क्षण के लिए श्वेत वस्त्र के पास खड़ा हो गया।

38) दुर्बल सैनिक भूमि पर गिर पड़े, और अपके मुंह अपके हाथोंमें छिपा लिये; मजबूत खड़ा था और देखता था।

39) उन्होंने नासरी के शरीर को बदलते देखा; उन्होंने इसे नश्वर से अमर रूप में बदलते देखा, और फिर यह गायब हो गया।

40) सिपाहियों ने कहीं से आवाज सुनी; हाँ, हर जगह से, उसने कहा,

41) शांति, पृथ्वी पर शांति; पुरुषों के लिए अच्छी इच्छा।

42) उन्होंने देखा, कब्र खाली थी, और यहोवा अपने वचन के अनुसार जी उठा था।

43) सिपाहियोंने यरूशलेम और याजकोंसे फुर्ती से कहा,

44) देखो, नासरी उसके कहने के अनुसार जी उठी है; कब्र खाली है और मनुष्य का शरीर चला गया है; हम नहीं जानते कि यह कहाँ है। और फिर उन्होंने रात के अजूबों के बारे में बताया।

45) कैफा ने यहूदियों की एक परिषद बुलाई; उस ने कहा, यह समाचार न निकले कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा है;

46) क्योंकि यदि ऐसा होता है, तो सब लोग कहेंगे, वह परमेश्वर का पुत्र है, और हमारी सब चितौनियां झूठी ठहरेंगी।

47) तब उन्होंने सौ सिपाहियोंको बुलाकर उन से कहा,

48) तुम नहीं जानते कि नासरी का शव अब कहाँ पड़ा है, इसलिए यदि तुम जाकर कहोगे कि उसके चेले आकर तुम्हारे सोते हुए शरीर को चुरा ले गए,

49) तुम में से हर एक के पास एक चाँदी का टुकड़ा होगा, और हम उसे पीलातुस के साथ रोमी मुहर तोड़ने के लिए ठीक कर देंगे।

50) सैनिकों ने वैसा ही किया जैसा उन्हें करने के लिए भुगतान किया गया था।

भाग 3/धारा XXI

परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उदगम/चर्च

खंड XXI

SCHIN

यीशु के आध्यात्मिक शरीर का भौतिककरण

(**अध्याय** 173-180)

अध्याय 173

यीशु अपनी माँ, मरियम, मगदला की मरियम और पतरस, याकूब और यूहन्ना को, पूरी तरह से भौतिक रूप में प्रकट होता है।

अब, जब रब्बियों ने यहोवा के शरीर को ले लिया और कब्र में रख दिया। वहाँ यहोवा की माता मरियम मगदलीनी और मरियम थीं।

2) और जब लोथ में कब्र हो गई, तब वे यूसुफ के घर गए, और वहीं निवास किया।

3) वे नहीं जानते थे कि यहूदी सैनिकों को कब्र की रखवाली के लिए भेजा गया था, और न ही पत्थर पर रोमन मुहर लगाई गई थी;

4) इस प्रकार सप्ताह के पहिले दिन की भोर को वे सुगन्धित वस्तुओं के साथ कब्र पर गए, कि यहोवा की सुगन्ध और भी अधिक सुगन्धित हो।

5) लेकिन जब वे कब्र पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि आतंक से त्रस्त सैनिक इधर-उधर भाग रहे हैं।

6) महिलाओं को इसका कारण नहीं पता था; लेकिन जब उन्हें एक खाली कब्र मिली तो वे उत्साहित और दुखी हुए।

7) सैनिकों को पता नहीं था कि क्या हुआ था; वे यह नहीं बता सके कि यहोवा की लोथ को कौन ले गया।

8) और मरियम मगदलीनी फुर्ती से यरूशलेम की ओर दौड़ी, कि पतरस और औरों को समाचार सुनाए।

9) वह फाटक के पास पतरस, याकूब और यूहन्ना से मिलीं; उस ने कहा, किसी ने पत्थर को लुढ़काकर यहोवा की लोय को उठा लिया है।

10) तब तीनों चेले कब्र की ओर दौड़े; परन्तु यूहन्ना तो पहिला था, और कब्र पर पहुंचा; उसने इसे खाली पाया; उसके प्रभु का शरीर चला गया था।

11) जब पतरस आया, तो वह कब्र में गया, और कब्र के कपड़े अच्छी तरह से मुड़े हुए और एक तरफ रखे हुए पाए।

12) अब, शिष्यों को दृश्य समझ में नहीं आया। वे अपने पालनहार का अर्थ नहीं जानते थे जब उसने अपनी मृत्यु से ठीक पहले उन्हें सूचित किया कि वह सप्ताह के पहले दिन मृत्यु से जी उठेगा।

13) तीनों चेले यरूशलेम को लौट गए; यहोवा की माता और मरियम दूर न गईं।

14) और मरियम ने कब्र के भीतर झाँककर देखा, कि वहां दो स्वामी बैठे हैं; उन्होंने कहा, तुम क्यों रोते हो?

15) और मरियम ने कहा, क्योंकि मेरा प्रभु चला गया है; किसी ने मेरे प्रभु की लोय को उठा लिया है; मुझे नहीं पता कि यह कहाँ है।

16) तब वह उठकर चारों ओर देखने लगी; एक मनुष्य ने पास खड़े होकर कहा, तू क्यों रोता है? तुम किसको खोजते हो?

17) और मरियम ने समझ लिया कि यह माली है, और कहा, यदि तुम मेरे प्रभु के शरीर को ले गए हो, तो मुझे बताओ कि यह कहां है कि मैं इसे एक पवित्र कब्र में रख सकता हूं।

18) तब वह पुरूष पास आकर कहने लगा, हे माता! और मरियम ने कहा, हे मेरे प्रभु!

19) मरियम की आंखें खुल गईं और उसने यहोवा को देखा।

20) यीशु ने कहा, सुन, मैं ने तुझ से कहा, जब हम क्रूस के मार्ग पर चलते थे, कि मैं सप्ताह के पहिले दिन कब्र पर तुझ से मिलूंगा।

21) अब, मरियम मगदलीनी दूर नहीं बैठी थी, और यीशु ने उसके पास जाकर कहा,

22) जीवित 'मृतकों के बीच' की तलाश क्यों करें? तेरा रब जी उठा, जैसा उसने कहा, अब, मरियम, देख! मेरा चेहरा निहारना!

23) तब मरियम ने जान लिया कि यह प्रभु है; कि वह मरे हुओं में से जी उठा था।

24) तब सलोमी, और मरियम (दोनों शिष्यों की माता, याकूब और यूहन्ना), योआना और अन्य स्त्रियों ने जो कब्र पर निकली थीं, यीशु को देखा, और वे उससे बातें करने लगीं।

25) और मरियम मगदलीनी आनन्द से भर गई। उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना के लिए फिर से खोज की; उसने उन्हें पाया और उसने कहा,

26) देखो, मैं ने यहोवा को देखा है; और मरियम ने यहोवा को देखा है; यहोवा की माता ने यहोवा को देखा है; और बहुतों ने उसका मुख देखा है; क्योंकि वह मरे हुओं में से जी उठा है।

27) लेकिन शिष्यों ने सोचा कि उसने केवल प्रभु का दर्शन देखा है। उन्होंने यह नहीं सोचा था कि वह मरे हुओं में से जी उठा है।

28) तब मरियम ने मण्डली के अन्य सदस्यों को पाया और उन सभी को जी उठे हुए प्रभु के बारे में बताया; लेकिन उनमें से किसी ने विश्वास नहीं किया।

29) अब, पतरस, याकूब और यूहन्ना सिलोम की वाटिका में थे; माली के साथ उस दिन की घटनाओं के बारे में बात कर रहे थे जब यूहन्ना ने एक अजनबी को चलते हुए देखा।

30) उस परदेशी ने हाथ उठाकर कहा, मैं हूं। तब चेलों को पता चला कि यह प्रभु है।

31) और यीशु ने कहा, देखो, क्योंकि मानव शरीर को उच्च रूप में परिवर्तित किया जा सकता है, और तब वह उच्च रूप प्रकट चीजों का स्वामी होता है, और अपनी इच्छा से कोई भी रूप ले सकता है।

32) और इसलिए मैं आपके परिचित रूप में आपके पास आता हूं।

33) थोमा और उन लोगों से जिन्हें मैं ने मनुष्यों के लिये प्रेरित होने के लिये बुलाया है, जाकर उन से कहो,

34) कि जिसे यहूदी और रोमी मरा हुआ समझते थे, वह सिलोम की वाटिका में चल रहा है;

35) यरूशलेम के मन्दिर में याजकों और फरीसियों के साम्हने फिर खड़े होंगे;

36) और संसार के ऋषियों को दिखाई देंगे।

37) उन से कहो, कि मैं उनके आगे आगे चलकर गलील जाऊंगा।

38) तब पतरस, याकूब और यूहन्ना ने निकलकर अपने भाइयों को पाकर कहा, देख, यहोवा मरे हुओं में से जी उठा है, और हम ने उसे आमने-सामने देखा है।

39) तीनों शिष्यों ने जो कहा, उससे भाई चकित हुए; तौभी उन्होंने उनकी बातों को व्यर्थ की बातें समझा, और उन पर विश्वास न किया।

अध्याय 174

यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक रूप से, ज़चुस और क्लियोफास के लिए जब वे एम्मॉस की यात्रा करते हैं, लेकिन वे उसे नहीं जानते। वह उन्हें मसीह के बारे में बहुत सी बातें बताता है। वह उनके साथ शाम का खाना खाता है और खुद को उनके सामने प्रकट करता है। वे यरूशलेम जाकर समाचार सुनाते हैं।

पुनरुत्थान के दिन की शाम की ओर, यीशु के दो मित्र, ज़ाचुस और एम्मॉस के क्लियोफास, सात मील दूर, अपने घर जा रहे थे।

2) और जैसे ही वे चल रहे थे और जो कुछ हुआ था, उसके बारे में बात कर रहे थे, एक अजनबी उनकी कंपनी में शामिल हो गया।

3) उसने कहा, मेरे दोस्तों, आप निराश और उदास लग रहे हैं। क्या तुम पर कोई बड़ा दु:ख आया है?

4) क्लियोफास ने कहा, क्या तू यहूदिया में परदेशी है, और जो रोमांचक बातें यहां हुई हैं, उन्हें नहीं जानता?

5) अजनबी ने कहा, क्या बातें? आप किसका उल्लेख करते हैं?

6) क्लियोफास ने कहा, क्या तू ने गलील के उस मनुष्य के विषय में नहीं सुना जो वचन और काम दोनोंमें पराक्रमी भविष्यद्वक्ता था?

7) एक व्यक्ति जिसके बारे में बहुतों ने सोचा था कि यहूदियों के राज्य को फिर से पाया, और रोमियों को यरूशलेम शहर से निकाल दिया और स्वयं राजा बन गया?

8) उस परदेशी ने कहा, इस मनुष्य के विषय में मुझे बता।

9) क्लियोफास ने कहा, उसका नाम यीशु था; वह बेतलेहेम में पैदा हुआ था; उसका घर गलील में था। वह लोगों से उतना ही प्यार करता था जितना वह खुद से करता था।

10) वास्तव में, वह परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक स्वामी था, क्योंकि उसके पास अतुलनीय शक्ति थी। उसने बीमारों को चंगा किया और बहरों को सुनने के लिए, अंधों को देखने के लिए, लंगड़ों को चलने के लिए, और यहाँ तक कि मुर्दों को भी जिलाया।

11) यहूदी शास्त्री और फरीसी उसकी प्रसिद्धि और शक्ति से जलते थे, और उन्होंने उसे गिरफ्तार कर लिया; झूठे गवाहों द्वारा उन्होंने उसे कई अपराधों का दोषी साबित किया,

12) और पिछले शुक्रवार को उन्हें खोपड़ियों के स्थान पर ले जाकर सूली पर चढ़ा दिया गया।

13) वह मर गया और उसे शीलोआम की बारी में एक धनी की कब्र में मिट्टी दी गई।

14) आज सुबह जब उसके मित्र कब्र पर गए, तो उन्होंने उसे खाली पाया; प्रभु का शरीर चला गया था।

15) और अब यह समाचार विदेशों में फैल गया है कि वह मृतकों में से जी उठा है।

16) उस परदेशी ने कहा, हां, मैं ने इस मनुष्य के विषय में सुना है; लेकिन यह अजीब लगता है कि यहूदी भविष्यवक्ताओं ने उसके बारे में बहुत पहले ही भविष्यवाणी की थी कि जब वह आया तो लोग उसे नहीं जानते थे।

17) इस आदमी का जन्म लोगों के सामने मसीह को प्रदर्शित करने के लिए हुआ था, और यह कहने के लिए ही है कि यीशु ही मसीह है।

18) वचन के अनुसार, यह यीशु मनुष्यों के हाथों दुख उठाने के लिथे आया, कि मनुष्य के सन्तान के लिये अपना जीवन नमूना के रूप में दे;

19) मृत्यु से जी उठने के लिए कि मनुष्य मृत्यु से उठने का मार्ग जान सकें।

20) तब उस परदेशी ने दोनों चेलोंको व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और स्तोत्रोंके विषय में सब कुछ बता दिया, और गलील के इस मनुष्य के विषय में लिखी हुई बहुत सी बातें उन्हें पढ़कर सुनाईं।

21) और अब वे पुरूष अपके घर पहुंच चुके थे, और रात निकट आने पर उन्होंने परदेशी को अपने साथ रहने को कहा।

22) और वह उनके साथ भीतर गया, और जब वे सांझ के भोजन के समय मेज़ पर बैठे थे, तब उस ने रोटी का एक टुकड़ा लिया, और उसे मसीह के नाम से आशीर्वाद दिया।

23) और तुरन्त उनकी आंखें खुल गईं, और उन्होंने जान लिया, कि वह परदेशी यहोवा है, जो गलील का रहने वाला है; कि वह मरे हुओं में से जी उठा था; और फिर यीशु का रूप गायब हो गया।

24) जब वह चला गया, तो दोनों चेले चकित हुए। उन्होंने कहा, जब वह मार्ग में हम से बातें कर रहा या, और व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं और भजन की चितौनियों को खोल रहा था, तब क्या हमारा मन प्रसन्न न हुआ?

25) तब जखुस और क्लियोफा यरूशलेम को लौट गए, और वे चारों ओर जाकर कहने लगे, सुन, हम ने यहोवा को देखा है;

26) वह हमारे साथ इम्माऊस तक चला; उस ने हमारे साथ सांय का भोजन खाया, और हमारे लिये जीवन की रोटी तोड़ी।

अध्याय 175

यीशु प्रकट होता है, शमौन के घर में दस प्रेरितों और लाजर और उसकी बहनों के लिए पूरी तरह से भौतिक।

पुनरुत्थान के दिन की शाम आ गई थी; दस प्रेरित बैतनिय्याह में शमौन के घर में थे। वकील थॉमस वहां नहीं था।

2) दरवाजों को बंद कर दिया गया था, क्योंकि यहूदियों ने कहा था कि वे गलीलियों को देश से निकाल देंगे।

3) जब वे बातें कर रहे थे, तो देखो, यीशु आकर उनके बीच में खड़ा हो गया, और कहा, कुशल! शांति!

4) और चेले डर के मारे सिकुड़ गए; उन्होंने सोचा कि यह एक प्रेत था जिसे उन्होंने देखा था।

5) यीशु ने कहा, तुम इस प्रकार क्यों व्याकुल हो रहे हो? तुम क्यों डरते हो? मैं कोई प्रेत रूप नहीं हूं। मैं तेरा रब हूं, और मैं मरे हुओं में से जी उठा हूं।

6) मैं बार-बार कहता था, मैं उठूंगा; परन्तु तुम ने मुझ पर विश्वास नहीं किया; और अब यहाँ आओ और देखो। एक प्रेत के पास मांस और हड्डियां नहीं होती हैं, जैसा कि मेरे पास है।

7) अब आकर मेरे हाथ पकड़, और मेरे पांव छू, और अपने हाथ मेरे सिर पर रख।

8) और सबने ऊपर आकर हाथ जोड़े, और उसके पांव छुए, और उसके सिर पर हाथ रखे।

9) यीशु ने कहा, क्या तुम्हारे पास खाने को कुछ है?

10) और उन्होंने एक मछली का एक टुकड़ा निकाला; उस ने उन सभों के साम्हने खाया, और तब दसों ने विश्वास किया।

11) नतनएल ने कहा, अब हम जानते हैं, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है; वह मरे हुओं के जी उठने के प्रति आश्वस्त है। और यीशु गायब हो गया।

12) अब, मरियम, मार्था, रूत और लाजर अपने घर में थे, और उन्होंने यह अफवाह सुनी थी कि उनका प्रभु मृतकों में से जी उठा है, और मार्था ने कहा,

13) ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि जब से दुनिया शुरू हुई है तब से ऐसा कभी नहीं हुआ।

14) परन्तु मरियम ने कहा, क्या यहोवा हमारे भाई को मरे हुओं में से वापस नहीं लाया? और वह निश्चय ही अपने आप को फिर से जीवित कर सकता है।

15) जब वे बातें कर रहे थे, तब यहोवा उनके बीच में खड़ा हुआ, और कहा,

16) सभी जय हो! क्योंकि मैं मरे हुओं में से जी उठा हूं, जो कब्र का पहिला फल है!

17) और मार्था दौड़ी और उस कुर्सी को ले आई जिस पर प्रभु को बैठना पसंद था, और यीशु उस कुर्सी पर बैठ गया।

18) और वे बहुत देर तक मुकद्दमे और कलवारी और सिलोम की वाटिका के दृश्यों के विषय में बातें करते रहे।

19) तब यीशु ने कहा, मत डर, क्योंकि मैं सदा तेरा संगी रहूंगा; और फिर वह गायब हो गया।

अध्याय 176

भारत में राजकुमार रावण के महल में पूर्वी संतों के लिए यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक; फारस में जादूगर पुजारियों के लिए। तीन बुद्धिमान लोग नासरी के व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हैं।

भारत के राजकुमार रावण ने भोज दिया। उड़ीसा में उनका महल वह स्थान था जहाँ सभी सुदूर पूर्व के विचारक मिलने के लिए अभ्यस्त थे।

2) रावण वह राजकुमार था जिसके बच्चे यीशु कई साल पहले भारत गए थे।

3) पर्व पूर्व के विद्वानों के सम्मान में बनाया गया था।

4) मेहमानों में मेंग-त्से, विद्यापति और लामा थे।

5) ज्ञानी लोग मेज पर बैठकर भारत और दुनिया की जरूरतों की बात कर रहे थे।

6) भोज-भवन का द्वार पूर्व की ओर था; मेज पर पूर्व की ओर एक खाली कुर्सी थी।

7) और जैसे ही ज्ञानियों ने बात की, एक अजनबी ने प्रवेश किया, अघोषित, और आशीर्वाद में हाथ उठाकर कहा, सब जय हो!

8) उसके सिर पर एक प्रभामंडल था, और सूर्य के प्रकाश के विपरीत, प्रकाश ने पूरे कमरे को भर दिया।

9) पण्डितों ने उठकर सिर झुकाकर कहा, सब जय हो!

10) और यीशु खाली कुर्सी पर बैठ गया; और तब पण्डित जान गए कि यह इब्री भविष्यद्वक्ता आया है।

11) यीशु ने कहा, देख, मैं मरे हुओं में से जी उठा हूं। मेरे हाथ, मेरे पैर, मेरी तरफ देखो।

12) रोमी सैनिकों ने मेरे हाथों और पैरों को कीलों से छेद दिया; और फिर एक ने मेरे दिल को छेद दिया।

13) उन्होंने मुझे एक कब्र में रखा, और फिर मैंने मनुष्यों के विजेता के साथ मल्लयुद्ध किया। मैं ने मृत्यु को जीत लिया, मैं उस पर मुहर लगा कर खड़ा हो गया;

14) अमरता को प्रकाश में लाया और समय की दीवारों पर मनुष्यों के पुत्रों के लिए एक इंद्रधनुष चित्रित किया; और जो कुछ मैं ने किया वह सब मनुष्य करेंगे।

15) मृतकों के पुनरुत्थान का यह सुसमाचार केवल यहूदी और यूनानी तक ही सीमित नहीं है; यह हर समय और समय के हर आदमी की विरासत है; और मैं यहाँ मनुष्य की शक्ति का प्रदर्शन हूँ।

16) तब उस ने उठकर सब पुरूषोंऔर राजसी गणोंका हाथ दबाकर कहा,

17) देख, मैं क्षणभंगुर हवाओं से बना मिथक नहीं हूं, क्योंकि मैं मांस और हड्डी और भूरा हूं; लेकिन मैं अपनी इच्छा से सीमा पार कर सकता हूं।

18) और फिर उन्होंने वहाँ एक साथ बहुत देर तक बात की। तब यीशु ने कहा,

19) मैं अपने मार्ग पर जाता हूं, परन्तु तुम सारे जगत में जाकर मनुष्यों की सर्वशक्तिमानता, सत्य की शक्ति, मरे हुओं के पुनरुत्थान के सुसमाचार का प्रचार करोगे;

20) जो मनुष्य के पुत्र के इस सुसमाचार पर विश्वास करता है, वह कभी न मरेगा; मरे हुए फिर से जीएंगे।

21) तब यीशु गायब हो गया, लेकिन उसने बीज बोया था। जीवन के शब्द उड़ीसा में बोले गए, और पूरे भारत ने सुना।

22) जादूगर याजक पर्सेपोलिस में खामोश थे, और कास्पर, और जादूगर स्वामी जो बेतलेहेम में चरवाहे के घर में प्रतिज्ञा के बच्चे का अभिवादन करने वाले पहले व्यक्ति थे, याजकों के साथ थे।

23) और यीशु आकर उनके साथ बैठ गया; उसके सिर पर प्रकाश का मुकुट था।

24) और जब मौन समाप्त हुआ तो कास्पर ने कहा, साइलेंट ब्रदरहुड की शाही परिषद का एक स्वामी यहाँ है; आइए हम स्तुति करें।

25) तब सब याजक और स्वामी खड़े होकर कहने लगे, सब जय हो! शाही परिषद से आप क्या संदेश लाते हैं?

26) और यीशु ने कहा, खामोश ब्रदरहुड के मेरे भाइयों, पृथ्वी पर शांति, शांति; पुरुषों के लिए सद्भावना!

27) युगों की समस्या हल हो गई है; मनुष्य का एक पुत्र मरे हुओं में से जी उठा है; ने दिखाया है कि मानव मांस को दिव्य मांस में परिवर्तित किया जा सकता है।

28) मनुष्यों के साम्हने यह मांस जिस में मैं तुम्हारे पास आया हूं, मनुष्य के शरीर के प्रकाश के वेग से बदल गया। और इसलिए मैं वह संदेश हूं जो मैं आपके लिए लाता हूं।

29) मैं आपके पास आता हूं, एएम की छवि में परिवर्तित होने वाली सभी दौड़ में से पहला।

30) जो कुछ मैं ने किया है, वही सब मनुष्य करेंगे; और जो मैं हूं, सब मनुष्य होंगे।

31) लेकिन यीशु ने और नहीं कहा। एक छोटी सांस में उसने अपने मिशन की कहानी पुरुषों के बेटों को सुनाई, और फिर वह गायब हो गया।

32) जादूगर ने कहा, कुछ समय पहले हमने स्वर्ग की डायल प्लेट पर यह वादा पढ़ा था, जो अब पूरा हो गया है।

33) और फिर हमने उस व्यक्ति को देखा, जिसने अभी-अभी हमें मनुष्य की शारीरिक मांस और लोहू से परमेश्वर के मांस में उठने की शक्ति का प्रदर्शन किया है, जो बेतलेहेम का एक बच्चा है।

34) और बहुत वर्षों के बाद वह आकर हमारे साथ उन्हीं अखाड़ों में बैठा;

35) उन्होंने अपने मानव जीवन की कहानी, परीक्षणों, कष्टदायक प्रलोभनों, कष्टों और विपत्तियों के बारे में बताया।

36) वह जीवन के काँटेदार मार्ग में तब तक दबा रहा जब तक कि वह जी उठा और परमेश्वर और मनुष्य के सबसे प्रबल शत्रुओं को न मार डाला; और वह अब मानव जाति का एकमात्र स्वामी है जिसका मांस दिव्य मांस में बदल दिया गया है।

37) वह आज का ईश्वर-पुरुष है; परन्तु पृथ्वी के सब लोग जयजयकार करेंगे और उसके समान परमेश्वर के पुत्र होंगे।

<u>अध्याय 177</u>

यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक रूप में, यरूशलेम के मंदिर में। यहूदियों के शासकों को उनके पाखंड के लिए फटकार लगाते हैं। उनके सामने खुद को प्रकट करता है और वे डर में वापस गिर जाते हैं। वह शमौन के घर में प्रेरितों को दिखाई देता है। थॉमस आश्वस्त है।

सब्त का दिन था और बहुत से याजक और शास्त्री और फरीसी यरूशलेम के मन्दिर में थे। कैफा, हन्ना और कुछ अन्य शासक यहूदी वहां थे।

2) एक अजनबी मछुआरे के वेश में आया और पूछा, यीशु को क्या हो गया है जो मसीह कहलाता है? क्या वह अभी मन्दिर में उपदेश नहीं दे रहा है?

3) यहूदियों ने उत्तर दिया, कि गलील का वह पुरूष एक सप्ताह पहिले क्रूस पर चढ़ाया गया था, क्योंकि वह बड़ा खतरनाक, घटिया, देशद्रोही मनुष्य था।

4) उस परदेशी ने पूछा, तू ने गलील के इस मनुष्य का शव कहां रखा है? उसका मकबरा कहाँ है?

5) यहूदियों ने उत्तर दिया, हम नहीं जानते। उसके अनुयायी रात में आए और शव को कब्र से चुरा कर ले गए, और फिर घोषणा की कि वह मृतकों में से जी उठा है।

6) उस अजनबी ने पूछा, तुम कैसे जानते हो कि उसके चेलों ने कब्र से शव चुराया है? क्या कोई चोरी का गवाह था?

7) यहूदियों ने उत्तर दिया, उस स्थान पर हमारे एक सौ सैनिक थे, और उन में से हर एक यह घोषणा करता है, कि उसके चेलों ने कब्र से लोथ चुराई है।

8) उस परदेशी ने पूछा, क्या तेरे सब सौ पुरूषोंमें से कोई खड़ा होकर कहेगा, कि मैं ने कब्र से लोथ को चुराते देखा है?

9) यहूदियों ने उत्तर दिया, हम नहीं जानते; ये लोग सत्यवादी हैं; हम उनकी बात पर शक नहीं कर सकते।

10) उस परदेशी ने कहा, हे याजक और शास्त्री और फरीसी मेरी सुनते हैं, मैं सत्य का साक्षी था, शीलोआम की बारी में था, और तुम्हारे सौ पुरूषोंमें से खड़ा था।

11) और मैं यह जानता हूं, कि तुम्हारे सौ पुरूषोंमें से कोई भी यह न कहेगा, कि मैं ने कब्र से लोथ को चुराते देखा है।

12) और मैं आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर के साम्हने गवाही दूंगा, कि लोय कब्र से चुराया नहीं गया; गलील का मनुष्य मरे हुओं में से जी उठा है।

13) तब याजक, शास्त्री और फरीसी दौड़कर उस मनुष्य को पकड़कर बाहर निकालने लगे।

14) परन्तु तुरन्त ही मछुवारा ज्योति का रूप बन गया, और याजक और शास्त्री और फरीसी घातक भय से पीछे हट गए; उन्होंने गलील के उस व्यक्ति को देखा।

15) यीशु ने डरे हुए आदमियों की ओर देखकर कहा, यह वह लोय है, जिसे तू ने नगर के फाटकों के पार पत्यरवाह करके कलवारी पर क्रूस पर चढ़ाया था।

16) मेरे हाथ, मेरे पांव, मेरी बाजू को देखो और सिपाहियों द्वारा किए गए घावों को देखो।

17) यदि तुम विश्वास करते हो कि मैं हवा का बना हुआ प्रेत हूं, तो बाहर आकर मुझे संभालो; भूत मांस और हड्डियाँ नहीं ले जाते।

18) मैं पृथ्वी पर मरे हुओं के पुनरुत्थान को प्रदर्शित करने के लिए आया था, जो कि शारीरिक मनुष्य के मांस के रूपान्तरण को मनुष्य के देह में परिवर्तन के रूप में दर्शाता है।

19) तब यीशु ने हाथ उठाकर कहा, तुम में से हर एक को शान्ति मिले; सभी मानव जाति के लिए सद्भावना। और फिर वह गायब हो गया।

20) अब, थोमा ने प्रभु को उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद से नहीं देखा था, और जब दसों ने विश्वास किया कि उन्होंने उसे देखा और उससे बात की, तो उसने कहा,

21) जब तक मैं उसके हाथों और पैरों में कीलों के निशान, उसके पांव में भाले के घाव को नहीं देखता, और उससे बात नहीं करता जैसा कि मैंने उससे पहले बात की है, मेरे पास यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं हो सकता है कि वह मरे हुओं में से जी उठा है।

22) शमौन के घर बैतनिय्याह में गलील के लोग मिले थे। सप्ताह के पहिले दिन की सांझ थी, और कल को सब अपके अपके घर की ओर मुंह करके मुंह फेर लेते थे।

23) ग्यारह प्रेरित वहाँ थे: द्वार बंद और वर्जित थे, और यीशु ने आकर कहा, सभी को शांति मिले!

24) तब उस ने थोमा से कहा, हे मित्र, तुम नहीं जानते कि मैं मरे हुओं में से जी उठा हूं; आपके जानने का समय आ गया है।

25) यहां आओ और मेरे हाथों में कीलों के निशान, मेरी बगल में भाले के घाव को देखो, और मेरे साथ बात करो जैसा तुमने मुझसे अक्सर बात की है।

26) और थोमा ने आकर देखा, और कहा, हे मेरे स्वामी, और मेरे प्रभु! मैं अब विश्वास नहीं करता, मैं जानता हूं कि तुम मरे हुओं में से जी उठे हो।

27) यीशु ने कहा, मुझे देखकर विश्वास करते हो, और तेरी आंखें धन्य हैं;

28) परन्तु तीन बार धन्य हैं वे जो मुझे नहीं देखते और फिर भी विश्वास करते हैं।

29) तब यीशु उनकी दृष्टि से ओझल हो गया, परन्तु चेले अपने विश्वास में दृढ़ हो गए।

अध्याय 178

यूनान में अपोलो और साइलेंट ब्रदरहुड के सामने यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक। क्लॉडस और जूलियट को रोम के पास तिबर पर दिखाई देता है। हेलियोपोलिस में मिस्र के मंदिर में याजकों को दिखाई देता है।

APOLLO, ग्रीस के साइलेंट ब्रदरहुड के साथ, एक डेल्फ़ियन ग्रोव में बैठा था। ओरेकल ने जोर से और लंबी बात की थी।

2) याजक पवित्रस्थान में थे, और वे देखते ही देखते दैवज्ञ ज्योति की ज्वाला बन गया; ऐसा लग रहा था कि आग लगी है, और सब भस्म हो गए।

3) याजक भय से भर गए। उन्होंने कहा, बड़ी विपत्ति आने वाली है; हमारे देवता पागल हैं; उन्होंने हमारे Oracle को नष्ट कर दिया है।

4) परन्तु जब आग की लपटें समाप्त हो चुकी थीं, तब एक मनुष्य तांडव की चौकी पर खड़ा होकर कहने लगा,

5) परमेश्वर मनुष्य से लकड़ी और सोने के दैवज्ञ से नहीं, परन्तु मनुष्य की आवाज से बातें करता है।

6) देवताओं ने यूनानियों से, और अन्य भाषाओं में, मनुष्य द्वारा बनाई गई छवियों के माध्यम से बात की है, लेकिन भगवान, एक, अब मसीह के माध्यम से मनुष्य से बात करता है, जो एकमात्र पुत्र था, जो था, और है और हमेशा रहेगा।

7) यह Oracle विफल हो जाएगा; ईश्वर का जीवित ओरेकल, एक, कभी असफल नहीं होगा।

8) अपोलो बोलने वाले को जानता था; वह जानता था कि यह नासरी ही थी जिसने कभी एक्रोपोलिस में ज्ञानियों को शिक्षा दी थी और एथेंस के समुद्र तट पर मूर्ति पूजा करने वालों को डांटा था;

9) और एक पल में यीशु अपोलो और साइलेंट ब्रदरहुड के सामने खड़ा हो गया, और कहा,

10) देख, मैं मनुष्यों के लिए भेंट लेकर मरे हुओं में से जी उठा हूं। मैं आपके लिए आपकी विशाल संपत्ति का शीर्षक लाता हूं।

11) स्वर्ग और पृथ्वी की सारी शक्ति मेरी है; मैं तुम्हें स्वर्ग और पृथ्वी की सारी शक्ति देता हूं।

12) आगे बढ़ो और पृथ्वी के राष्ट्रों को मरे हुओं के पुनरुत्थान और मसीह के माध्यम से अनन्त जीवन का सुसमाचार सिखाओ, परमेश्वर का प्रेम मनुष्यों पर प्रकट हुआ।

13) और फिर उसने अपोलो का हाथ पकड़ लिया और कहा, मेरा मानव मांस दिव्य प्रेम से उच्च रूप में बदल गया था और मैं मांस में, या जीवन के उच्च स्तरों में, अपनी इच्छा से प्रकट कर सकता हूं।

14) जो मैं कर सकता हूं वह सभी पुरुष कर सकते हैं। जाओ मनुष्य की सर्वशक्तिमानता के सुसमाचार का प्रचार करो।

15) तब यीशु गायब हो गया; परन्तु यूनान और क्रेते और सब जातियों ने सुना।

16) क्लॉडस और जूलियट, उनकी पत्नी, रोम में पैलेटिन पर रहते थे और वे तिबेरियस के नौकर थे; परन्तु वे गलील में रहे थे;

17) यीशु के साथ समुद्र के किनारे चला था, उसके वचनों को सुना था और उसकी शक्ति को देखा था; और उन्होंने विश्वास किया कि वह प्रकट हुआ मसीह है।

18) क्लौदास और उसकी पत्नी एक छोटी नाव में तिबर पर थे; एक तूफान समुद्र से बह गया, नाव बर्बाद हो गई और क्लॉडस और उसकी पत्नी मौत के घाट उतर रहे थे।

19) यीशु ने आकर उनका हाथ पकड़कर कहा, हे क्लौदास और जूलियट, उठ, मेरे संग लहरोंपर चल।

20) और वे उठकर उसके साथ लहरोंपर चले।

21) एक हजार लोगों ने उन तीनों को लहरों पर चलते देखा, और उन्हें भूमि पर पहुंचते देखा, और वे सब चकित हुए।

22) यीशु ने कहा, हे रोम के लोगों, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं। जो मरे हुए हैं वे जीवित रहेंगे, और जो जीवित रहेंगे वे कभी नहीं मरेंगे।

23) परमेश्वर ने बहुत पहले देवताओं और देवताओं के मुख से तुम्हारे पुरखाओं से बातें की थीं; परन्तु अब वह तुम से सिद्ध मनुष्य के द्वारा बातें करता है।

24) उसने अपने पुत्र, मसीह को, मानव शरीर में, दुनिया को बचाने के लिए भेजा, और जैसे ही मैंने पानी की कब्र से उठाकर तिबेरियस के इन सेवकों को बचाया,

25) इस प्रकार मसीह मानव जाति के पुत्रों और पुत्रियों को, हां, उन में से प्रत्येक को अन्धकार से और शारीरिक चीजों की कब्रों से, ज्योति और अनन्त जीवन की ओर उठाएगा।

26) मैं मरे हुओं में से जी उठा प्रेम का प्रकट हूं; मेरे हाथ, मेरे पांव, मेरी भुजा को निहारना, जिसे शारीरिक पुरुषों ने बेधा है।

27) क्लॉडस और जूलियट, जिन्हें मैंने मौत से बचाया है, रोम में मेरे राजदूत हैं।

28) और वे मार्ग दिखायेंगे और पवित्र श्वास और मरे हुओं के पुनरुत्थान के सुसमाचार का प्रचार करेंगे।

29) और उसने बस इतना ही कहा, लेकिन रोम और पूरे इटली ने सुना।

30) हेलियोपोलिस के पुजारी अपने मंदिर में थे, अपने भाई नासरी के पुनरुत्थान का जश्न मनाने के लिए मिले थे; वे जानते थे कि वह मरे हुओं में से जी उठा है।

31) नासरी प्रकट हुए और एक पवित्र आसन पर खड़े हो गए, जिस पर कभी कोई व्यक्ति खड़ा नहीं हुआ था।

32) यह एक सम्मान था जो उसके लिए आरक्षित किया गया था जो पहले मृतकों के पुनरुत्थान का प्रदर्शन करेगा।

33) और यीशु सभी मानव जाति में मृतकों के पुनरुत्थान को प्रदर्शित करने वाले पहले व्यक्ति थे।

34) जब यीशु पवित्र आसन पर खड़ा हुआ तो स्वामी खड़े हुए और कहा, सब जय हो! मंदिर की बड़ी-बड़ी घंटियां बज उठीं और पूरा मंदिर रोशनी से जगमगा उठा।

35) यीशु ने कहा, इस सूर्य के मन्दिर के स्वामियों का सारा आदर।

36) मनुष्य के शरीर में मृतकों के पुनरुत्थान का सार है। पवित्र श्वास द्वारा तेज किया गया यह सार, शरीर के पदार्थ को एक उच्च स्वर में बढ़ा देगा,

37) और इसे ऊपर के विमानों के शरीरों के सार की तरह बनाओ, जिसे मानव आंखों से नहीं देखा जा सकता है।

38) मृत्यु में एक पवित्र मंत्रालय है। जब तक स्थिर का समाधान नहीं हो जाता तब तक पवित्र श्वास से शरीर के सार को तेज नहीं किया जा सकता है; शरीर को विघटित होना चाहिए, और यह मृत्यु है।

39) और फिर इन विशाल पदार्थों पर भगवान सांस लेते हैं, जैसे उन्होंने दुनिया के गठन के समय गहरे की अराजकता पर सांस ली थी,

40) और मृत्यु से जीवन की उत्पत्ति होती है; शारीरिक रूप को दिव्य रूप में बदल दिया जाता है।

41) मनुष्य की इच्छा पवित्र श्वास की क्रिया को संभव बनाती है। जब मनुष्य की इच्छा और परमेश्वर की इच्छा एक हो, तो पुनरुत्थान एक सच्चाई है।

42) इसमें हमारे पास नश्वर जीवन का रसायन, मृत्यु का मंत्रालय, दिव्य जीवन का रहस्य है।

43) मेरा मानव जीवन पूरी तरह से मेरी इच्छा को ईश्वर की इच्छा के अनुरूप लाने के लिए दिया गया था; जब यह किया गया तो मेरे पृथ्वी-कार्य सब हो गए।

44) और हे मेरे भाइयो, तुम उन शत्रुओं को भली-भांति जानते हो जिनका मुझे सामना करना था; तुम गतसमनी में मेरी जीत के बारे में जानते हो; पुरुषों की अदालतों में मेरे परीक्षण; क्रूस पर मेरी मृत्यु।

45) तुम जानते हो कि मेरा सारा जीवन मनुष्यों के लिए एक महान नाटक था; पुरुषों के बेटों के लिए एक पैटर्न। मैं मनुष्य की संभावनाओं को दिखाने के लिए जीया।

46) जो कुछ मैं ने किया है, वह सब मनुष्य कर सकते हैं, और जो मैं सब मनुष्य हूं वही होगा।

47) स्वामी ने देखा; पवित्र आसन का रूप तो चला गया, परन्तु मन्दिर के सब याजक, और सब जीवित प्राणी कहने लगे, परमेश्वर की स्तुति करो।

अध्याय 179

गलील के समुद्र में प्रेरितों के सामने यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक। बड़ी संख्या में लोगों को दिखाई देता है। अपने प्रेरितों को फिर से यरूशलेम जाने के लिए कहता है और वह उनसे वहीं मिलेगा।

अब, प्रेरित गलील में अपने घर में थे; स्त्रियाँ पिन्तेकुस्त तक यहूदिया में रहीं।

2) और पतरस, याकूब और यूहन्ना, और अन्द्रियास, फिलिप्पुस और नतनएल कफरनहूम में थे। और वे योना और जब्दी के साथ मिल गए, और अपनी नावों पर मछली पकड़ने को निकले,

3) उन्होंने सारी रात मेहनत की और जब सुबह हुई तो उनके पास मछली नहीं थी।

4) और जब वे किनारे के निकट पहुंचे, तो एक मनुष्य किनारे पर खड़ा होकर कहने लगा, तेरे पास कितनी मछलियां हैं?

5) पतरस ने उत्तर दिया, कोई नहीं।

6) उस मनुष्य ने फिर पुकार कर कहा, तेरी नाव की दाहिनी ओर मछली का एक पाठशाला चल रही है; अपना जाल निकालो।

7) उन्होंने अपना जाल डाला, और वह भर गया; और यूहन्ना ने कहा, यह तो यहोवा है जो तट पर खड़ा है।

8) और पतरस समुद्र में कूद गया और तैर कर किनारे पर आ गया। और लोग जाल में लाए, और उसमें एक सौ तिरपन मछलियां थीं, तौभी वह टूटा नहीं।

9) यीशु ने कहा, हे मेरे बच्चों, हम यहां मिल कर अपना उपवास तोड़ें।

10) उन्हें समुद्रतट पर कुछ जीवित अंगारे मिले और पतरस ने मछलियों को लाकर कपड़े पहनाए; उनके पास कुछ रोटी थी।

11) और जब भोजन तैयार हो गया, तो उन्होंने अपना उपवास तोड़ा, और यीशु ने मछली और रोटी दोनों में से खा लिया।

12) नाश्ते के बाद सब लोग समुद्र तट पर बैठे थे, और यीशु ने पतरस से कहा, क्या तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन से प्रेम रखता है, और क्या तू अपके पड़ोसी से वैसा ही प्रेम रखता है जैसा अपने आप से करता है?

13) पतरस ने कहा, हे प्रभु, मैं अपके परमेश्वर यहोवा से अपके सारे मन से प्रेम रखता हूं; मैं अपने पड़ोसी से उतना ही प्यार करता हूँ जितना मैं खुद से करता हूँ।

14) यीशु ने कहा, तब मेरी भेड़ोंको चरा।

15) फिर उस ने याकूब से कहा, क्या तू उस से, अर्थात् पवित्र श्वास से, अपने सारे मन से प्रेम रखता है, और क्या तू अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम रखता है जैसा अपने आप से करता है?

16) और याकूब ने उत्तर दिया, हां, हे प्रभु, मैं पवित्र श्वास को अपने पूरे मन से प्यार करता हूं; मैं अपने पड़ोसी से उतना ही प्यार करता हूँ जितना मैं खुद से करता हूँ।

17) तब यीशु ने कहा, मेरी भेड़ोंकी रक्षा कर।

18) फिर उस ने यूहन्ना से कहा, क्या तू मसीह से प्रेम रखता है, जो उस ईश्वरीय प्रेम को अपने सारे मन से प्रकट करता है, और क्या तू अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम रखता है जैसा अपने आप से करता है?

19) और यूहन्ना ने उत्तर दिया, हां, हे प्रभु, मैं मसीह से अपने सारे मन से प्रेम रखता हूं; मैं अपने पड़ोसी से उतना ही प्यार करता हूँ जितना मैं खुद से करता हूँ।

20) यीशु ने कहा, तब मेरे मेमनोंको चरा।

21) तब यीशु ने उठकर पतरस से कहा, मेरे पीछे हो ले। और पतरस उसके पीछे हो लिया।

22) जब पतरस ने देखा कि यूहन्ना उसके पीछे हो रहा है, तो उसने यीशु से कहा, हे प्रभु, देख, यूहन्ना तेरे पीछे हो लिया है! वह क्या करे?

23) पतरस ने स्वामी की नहीं सुनी जब उसने यूहन्ना से कहा, तो मेरे मेमनों को चरा।

24) यीशु ने पतरस से कहा, यूहन्ना क्या करे, यह तुम्हारे लिथे महत्व नहीं रखता; तौभी मैं न चाहूं कि वह मेरे फिर आने तक बना रहे।

25) बस अपना कर्तव्य करो; मेरे पीछे आओ।

26) और यीशु चला गया, वे नहीं जानते थे कि वह कहाँ गया था।

27) शीघ्र ही सारे कफरनहूम में यह समाचार फैल गया कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा है, कि वह अपने शिष्यों के साथ समुद्र के किनारे चला और उनके साथ सुबह का भोजन किया। देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी।

28) पतरस, याकूब और यूहन्ना उन अन्य लोगों के साथ, जिन्हें प्रभु के प्रेरित होने के लिए बुलाया गया था, कफरनहूम के पास के पहाड़ों पर प्रार्थना करने के लिए गए।

29) और जब वे प्रार्थना कर रहे थे तब स्वामी आया; उन्होंने उसे देखा और उन्होंने उससे बात की।

30) उस ने उन से कहा, पिन्तेकुस्त का दिन निकट है; यरूशलेम को जा और मैं वहां तुझ से मिलूंगा।

31) और जब वह बातें कर रहा था, तब लोगों की भीड़ आ गई; उन्होंने यहोवा को देखा; उन्होंने कहा,

32) देखो, अब हम जानते हैं कि वह नासरी मरे हुओं में से जी उठा है, क्योंकि हम ने उसे आमने सामने देखा है।

अध्याय 180

यरूशलेम में प्रेरितों के सामने यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक रूप में। उन्हें अपने निर्देश देता है। उन्हें पिन्तेकुस्त पर उनके काम के लिए एक विशेष बंदोबस्ती का वादा करता है। जैतून पर्वत पर जाता है और कई शिष्यों की दृष्टि में स्वर्ग में चढ़ते हैं। चेले यरूशलेम को लौट जाते हैं।

यहोवा के ग्यारह प्रेरित यरूशलेम में और उस बड़े कमरे में थे, जिसे उन्होंने यहोवा की आज्ञा से चुना था।

2) और जब वे प्रार्थना कर रहे थे तब यहोवा ने उन्हें दर्शन देकर कहा,

3) सभी को शांति मिले; हर जीवित चीज के लिए अच्छी इच्छा। और फिर उसने उनसे लंबी, लंबी बात की।

4) और चेलों ने पूछा, क्या अब तू इस्राएल को राज्य फेर देगा?

5) यीशु ने कहा, मनुष्यों की सरकारों की चिन्ता न करना; स्वामी निर्देशित करेंगे।

6) वह करो जो तुम्हें करने के लिए दिया गया है और प्रतीक्षा करो और बड़बड़ाओ मत।

7) स्वर्ग और पृथ्वी की सारी शक्ति मुझे दी गई है, और अब मैं तुम्हें सारे जगत में जाकर मसीह के सुसमाचार, परमेश्वर और मनुष्य की एकता, मरे हुओं के पुनरुत्थान और अनन्त जीवन का प्रचार करने की आज्ञा देता हूं।

8) और जब तुम जाकर प्रचार करो, तो लोगों को मसीह के नाम से बपतिस्मा दो।

9) जो विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं, वे मसीह के जीवन के नएपन में जी उठेंगे, और जो अविश्वासी हैं वे मसीह के जीवन के नएपन में नहीं जी उठेंगे।

10) और जो अधिकार मैं तुम्हें देता हूं, वह तुम मनुष्यों को देना।

11) जो विश्वास करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं वे बीमारों को चंगा करेंगे; अंधों को देखेगा, बहरे सुनेंगे, लंगड़े चलेंगे;

12) अशुद्ध आत्माओं को मोहग्रस्तों में से निकाल देगा; घातक नागों पर रौंदेगा और हानि न पहुँचाएगा; आग की लपटों में से होकर निकलेगा, और जलेगा नहीं; और यदि वे कोई विषैला द्रव्य पीएं, तो वह न मरेगा।

13) आप पवित्र शब्द को जानते हैं, जो शक्ति का शब्द है।

14) जो गुप्त बातें मैं ने तुम से कही हैं, जो अब सारे जगत को नहीं बताई जातीं, तुम उन विश्वासयोग्य लोगों को बताना, जो उन्हें दूसरे विश्वासियों पर प्रगट करेंगे।

15) जब तक वह समय न आए, जब सारा जगत सत्य और शक्ति के वचनों को सुनेगा और समझेगा।

16) और अब मैं परमेश्वर के पास चढ़ूंगा, जैसे तुम और सारे जगत् के लोग परमेश्वर के पास जी उठेंगे।

17) देखो, पिन्तेकुस्त के दिन तुम सब को ऊपर से सामर्थ दी जाएगी।

18) परन्तु तब तक तुम पवित्र विचार और प्रार्थना में यहीं बने रहोगे।

19) तब यीशु ओलिवेट के पास गया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए, और बैतनिय्याह से दूर एक स्थान में मरियम और सलोमी से मिले;

20) मार्था, रूत और मरियम से मुलाकात की; लाजर और गलील से आए कई अन्य लोगों से मुलाकात की।

21) यीशु अलग खड़ा हुआ और हाथ उठाकर कहा,

22) पवित्र लोगों की, सर्वशक्तिमान ईश्वर की, और पवित्र सांस की, मसीह की, ईश्वर के प्रेम को प्रकट किया गया,

23) जब तक आप उठकर मेरे साथ सत्ता के सिंहासन पर विराजमान नहीं होंगे, तब तक आप पर विश्राम करेंगे।

24) और उन्होंने उसे ज्योति के पंखों पर चढ़ते देखा; उसके चारों ओर एक माल्यार्पण किया गया; और उन्होंने उसका रूप फिर न देखा।

25) परन्तु जैसे ही उन्होंने आकाश की ओर देखा, दो मनुष्य श्वेत वस्त्र पहिने हुए प्रकट हुए और कहने लगे,

26) हे गलील के लोगों, तुम इतनी उत्सुकता से आरोही प्रभु की ओर क्यों देखते हो? देखो, वह फिर से स्वर्ग से आएगा जैसा कि तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।

27) तब ग्यारह और लाजर, और गलील के अन्य पुरुष, विश्वासयोग्य महिलाओं के साथ, कुछ नहीं, यरूशलेम लौट आए और वहीं रहे।

28) और वे लगातार प्रार्थना और पवित्र विचार में थे। वे पवित्र श्वास की प्रतीक्षा कर रहे थे, और ऊपर से प्रतिज्ञा की हुई शक्ति के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

भाग 3/धारा XXII

परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उदगम/चर्च

खंड XXII

TAU

क्रिस्टीन चर्च की स्थापना

(**अध्याय** 181-182)

अध्याय 181

यहूदा के दलबदल से खाली हुई जगह को भरने के लिए ग्यारह प्रेरित मथायस को चुनते हैं। क्रिस्टीन खुश हैं। मरियम स्तुति का गीत गाती है। प्रेरितिक रोस्टर।

यह तथ्य कि यीशु मरे हुओं में से जी उठा था, यहूदियों के बहुत से शासकों ने इनकार नहीं किया था।

2) और पीलातुस ने आदेश दिया कि नासरी के अनुयायियों को उसकी पूजा में उसके क्षेत्र में किसी भी स्थान पर छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए।

3) पिन्तेकुस्त का दिन निकट था और हर कोई आत्मिक शक्ति के प्रकट होने की खोज में था।

4) अब, यरूशलेम में ग्यारहों ने यहूदा के स्थान को भरने के लिए एक व्यक्ति को चुनने के लिए इकट्ठा किया था, जिसने अपने प्रभु को धोखा दिया था।

5) पतरस ने कहा, प्रभु ने इस सेवकाई में बारह आदमियों को बारह नींव के पत्थरों के रूप में बुलाया, जिन पर क्रिस्टीन का मंदिर बनाया जाना चाहिए।

6) यह यहूदा जिसने अपने रब को पकड़वा दिया, वह परदे के पार अपने स्थान को चला गया।

7) उसके विषय में भविष्यद्वक्ता ने लिखा: उसका निवास उजाड़ होगा; कोई मनुष्य उस में न बसेगा; उसके कार्यालय ने दूसरे को लेने दिया।

8) गिलगाल से, जहां अग्रदूत ने बपतिस्मा दिया था, हमारे संग रहने वालों में से बारहों की गिनती पूरी करने के लिये एक ही चुना जाए, जिस से हमारा भाई अपराध करके गिरा हो।

9) और तब ग्यारहोंने बहुत समय तक प्रार्थना में बिताया, और जब उन्होंने चिट्ठी डाली, तब मत्तियाह, जो नील नदी की तराई से था, उस स्थान के लिथे चुना गया।

10) मथियास वास्तव में एक इस्राएली था; परन्तु वह मिस्री विद्यापीठोंकी सारी विद्या में पहिचाना या, और उस ने यरीहो में मिजरैम के भेदोंकी शिक्षा दी या।

11) वह अग्रदूत का अभिवादन करने वालों में सबसे पहले था; नासरी को परमेश्वर के पुत्र, मसीह के रूप में पहचानने वाले पहले लोगों में से;

12) वह गलील, यहूदिया और शोमरोन के देश में उनकी सभी यात्राओं में क्रिस्टीन बैंड के साथ रहा था।

13) एक दूत भेजा गया जिसने मथियाह को पाया, और वह आया और ग्यारह में शामिल हो गया, और कुछ समय के लिए बारह मौन प्रार्थना में खो गए।

14) जो क्रिस्टीन गलील से और यहूदिया के स्थानों से आए थे, वे लगभग छः अंक थे, और पतरस ने उन्हें मथियाह के बारे में बताया, और कैसे, चिट्ठी के द्वारा, वह प्रभु का एक प्रेरित चुना गया था।

15) सभी क्रिस्टीन आनन्दित हुए और परमेश्वर के नाम की स्तुति की; और मरियम ने स्तुति का गीत गाया।

16) प्रभु के प्रेरितों के नाम ये हैं; पतरस, याकूब और यूहन्ना; फिलिप, एंड्रयू और नथानिएल;

17) थॉमस और शमौन, उत्साही; मैथ्यू और मथायस; याकूब और यहूदा (अल्फियस के पुत्र)।

अध्याय 182

पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाएँ। प्रेरितों की बंदोबस्ती। क्रिस्टीन चर्च की स्थापना की। पतरस परिचयात्मक उपदेश का प्रचार करता है। उपदेश। तीन हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया और चर्च के सदस्य बन गए।

अब, जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो यरूशलेम पवित्र यहूदियों और बहुत से देशों के मतधारकों से भर गया।

2) क्रिस्टीन सभी मिले थे और पूर्ण सामंजस्य में थे।

3) और जब वे मौन प्रार्थना में बैठे थे, तो उन्होंने एक आवाज सुनी, जैसे आने वाले तूफान की दूर की बड़बड़ाहट।

4) यह ध्वनि तब तक तेज होती गई, जब तक कि गड़गड़ाहट की गड़गड़ाहट की तरह, यह उस कमरे में नहीं भर गया जहां प्रेरित बैठे थे।

5) एक तेज रोशनी दिखाई दी, और कई लोगों ने सोचा, इमारत में आग लगी है।

6) बारह गेंदें, जो आग के गोले की तरह लग रही थीं, स्वर्ग से गिरीं - आकाश के सभी चक्रों के प्रत्येक चिन्ह से एक गेंद, और प्रत्येक प्रेरित के सिर पर आग का एक जलता हुआ गोला दिखाई दिया।

7) और एक एक गोले ने आग की सात जीभें आकाश की ओर भेजीं, और हर एक प्रेरित ने पृथ्वी की सात बोलियां बोलीं।

8) अज्ञानी खरगोश ने जो कुछ सुना और देखा, उसके साथ हल्का व्यवहार किया; उन्होंने कहा, ये लोग पियक्कड़ हैं, और नहीं जानते कि क्या कहते हैं।

9) परन्तु ज्ञानी चकित हुए; उन्होंने कहा, क्या ये सब यहूदी बोलनेवाले नहीं हैं? यह कैसे है कि वे पृथ्वी की सभी भाषाओं में बोलते हैं?

10) पतरस ने कहा, हे यरूशलेम के लोगों, और नगर के फाटकोंके पार रहने वालों; आपको और पूरी मानव जाति को शांति मिले।

11) यह वह समय है जिसे प्राचीन काल के पवित्र लोग देखना चाहते थे, विश्वास से उन्होंने इस घड़ी को देखा, और अब वे हमारे साथ आनंद में खड़े हैं।

12) योएल भविष्यवक्ता ने पुराने समय में उन बातों के बारे में बताया जो आप देखते और सुनते हैं। पवित्र श्वास ने अपनी जीभ से बात की और कहा,

13) और अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं मनुष्यों पर फूंक लूंगा, और उन्हें पवित्रता की आशीष से भर दूंगा।

14) तेरे बेटे-बेटियाँ खड़े होकर भविष्यद्वाणी करेंगे; तेरे जवान द्रष्टा होंगे; तुम्हारे बूढ़े आदमी सपने देखेंगे।

15) और मैं ऊपर के आकाश में अद्‌भुत काम और पृथ्वी पर अद्‌भुत चिन्ह दिखाऊंगा।

16) स्वर्ग से शब्द सुनाई देंगे और ऐसी आवाजें सुनाई देंगी कि लोग समझ नहीं पाएंगे।

17) सूरज चमकने में असफल रहेगा; यहोवा के उस बड़े दिन के आने से पहिले चन्द्रमा लोहू लहूलुहान हो जाएगा।

18) और ऐसा होगा कि जो लोग विश्वास में परमेश्वर का नाम लेते हैं, उन्हें छुड़ाया जाएगा ।

19) यह क्रिस्टीन शक्ति का दिन है; जिस दिन वह गलील का पुरूष महिमा पाए।

20) वह बालक की नाईं बेतलेहेम में आया और उसके जन्म के दिन से ही पृथ्वी के राजा उसके प्राण लेने के लिये निकल पड़े।

21) भगवान ने उसे अपने हाथ के खोखले में पकड़ लिया।

22) लोगों ने उसका नाम यीशु रखा, और उन्होंने उसे अच्छा बुलाया, क्योंकि वह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्‌धार करने के लिए भेजा गया था।

23) और यीशु मर्दानगी में बढ़ गया और मनुष्यों की सभी परीक्षाओं और परीक्षाओं के अधीन हो गया, ताकि वह उन भारों को जान सके जिन्हें पुरुषों को सहन करना चाहिए और उनकी सहायता करने का तरीका जान सकता है।

24) वह दूर देशों में रहता था, और पवित्र वचन के द्‌वारा बीमारों को चंगा करता था, बन्दीगृह के द्‌वार खोल देता था, और बन्दियों को मुक्त करता था, और हर जगह उसका प्रचार किया जाता था, इम्मानुएल।

25) परन्तु दुष्टों ने उसका तिरस्कार किया और उसे अस्वीकार किया, और रिश्वत देकर उन्होंने उसे अनगिनत अपराधों का दोषी साबित किया;

26) और बहुत से लोगों के साम्हने जो अब मेरी सुनते हैं, उन्होंने उसे क्रूस पर कीलों से ठोंक दिया;

27) उन्होंने उस पर मृत्यु की मुहर लगा दी; परन्तु मृत्यु इतनी निर्बल थी कि उसे कब्र में पकड़ नहीं सकती थी, और जब अमर स्वामी ने कहा, अदोन माशिच कूमी, तो वह मृत्यु के बंधनों को तोड़कर फिर से जीवित हो गया।

28) उसने न केवल यरूशलेम के हाकिमों को, परन्तु पृथ्वी के दूर देशों के बहुतों को अपने को जीवित दिखाया;

29) और फिर, बहुतों की चकित आंखों के सामने, जो अब मुझे बोलते हुए सुनते हैं, स्वर्गदूतों के दरबारियों के एक दल ने भाग लिया, वह परमेश्वर के सिंहासन पर चढ़ गया।

30) और अब ऊंचे पर चढ़कर, और पवित्र श्वास को पूरा करने के बाद, वह फिर से हम पर सांस लेता है, और इस तरह जो कुछ तुम देखते और सुनते हो, उसे बहा देता है।

31) हे इस्राएल के लोगों, जान लो कि परमेश्वर ने इस मनुष्य को गलील से बनाया है, जिसे तुम ने गाली दी और क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु और मसीह दोनों।

32) तब लोगोंने कहा, हम क्या करें?

33) पतरस ने कहा, इस क्रिस्टीन प्रभु ने हमें भोर के फाटकों को खोलने के लिए भेजा है। मसीह के द्वारा सभी मनुष्य ज्योति और जीवन में प्रवेश कर सकते हैं।

34) क्रिस्टीन चर्च इस धारणा पर खड़ा है कि यीशु ईश्वर का प्रेम है जिसे प्रकट किया गया है; वह प्रेम पुरुषों के पुत्रों का उद्धारकर्ता है।

35) यह क्रिस्टीन चर्च आत्मा के भीतर पवित्र का राज्य है, जिसे प्रकट किया गया है।

36) इस दिन क्रिस्टीन चर्च खोला गया है, और जो कोई भी प्रवेश कर सकता है, और, मसीह की असीम कृपा से, बचाया जा सकता है।

37) फिर लोगों ने कहा, हम कैसे प्रवेश करें, कि हम मसीह के असीम अनुग्रह में भागीदार हों?

38) और पतरस ने कहा, सुधार और बपतिस्मा ले, और पाप से फिरकर परमेश्वर में मसीह के साथ गहिरे जीवन में चला जा, और तू भीतर प्रवेश करके छुड़ाया जाएगा।

39) तीन हजार लोगों ने पाप से मुंह मोड़ लिया और बपतिस्मा लिया और परमेश्वर में मसीह के साथ गहरे छिपे जीवन का नेतृत्व करने की कोशिश की।

40) और एक दिन में क्रिस्टीन चर्च एक शक्तिशाली शक्ति बन गया; और मसीह एक शक्तिशाली वचन बन गया, जिसने बहुत से देशों में लोगों को रोमांचित किया।

समाप्त

हिब्रू वर्णमाला (जैसा कि इस पुस्तक में प्रयोग किया गया है)

एक्वेरियन गॉस्पेल (द बुक) में प्रत्येक खंड को रोमन अंक और हिब्रू वर्णमाला के एक अक्षर द्वारा दर्शाया गया है

भाग 1 - **नासरत का यीशु** (**जन्म से** 30 **वर्ष की आयु तक**)

I	II	III	IV
ALEPH	BETH	GIMEL	DALETH
א	ב	ג	ד
अध्याय 1	**अध्याय** 2 - 6	**अध्याय** 7 - 12	**अध्याय** 13 - 15

V	VI	VII	VIII
HE	VAU	ZAIN	CHETH
ה	ו	ז	ח
अध्याय 16 - 20	**अध्याय** 21 - 35	**अध्याय** 36 - 37	**अध्याय** 38 - 41

IX	X	XI	XII
TETH	JOD	CAPH	LAMED
ט	י	כ ך	ל
अध्याय 42 - 43	**अध्याय** 44 - 46	**अध्याय** 47 - 55	**अध्याय** 56 - 60

भाग 2 - **ईसा मसीह** (**उम्र** 30 - 33)

XIII	XIV	XV	XVI	XVII
MEM	NUN	SAMECH	AIN	PE
מ ם	נ ן	ס	ע	פ ף
अध्याय 61 - 64	**अध्याय** 65 - 71	**अध्याय** 72 - 90	**अध्याय** 91 - 123	**अध्याय** 124 - 158

भाग 3 - **परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उद्गम/मसीह का चर्च** (**क्रिस्टीन चर्च**)

XVIII	XIX	XX	XXI	XXII
TZADDI	KOPH	RESH	SCHIN	TAU
צ ץ	ק	ר	ש	ת
अध्याय 159 - 164	**अध्याय** 165 - 171	**अध्याय** 172	**अध्याय** 173 - 180	**अध्याय** 181 - 182

त्वरित सूचकांक

भाग (एक -दो-तीन)

भाग 1

नासरत का यीशु (जन्म से 30 वर्ष)

खंड I - XII

I ALEPH	II BETH	III GIMEL	IV DALETH	V HE	VI VAU
VII ZAIN	VIII CHETH	IX TETH	X JOD	XI CAPH	XII LAMED

अध्याय 1 - 60

खंड I - ALEPH - (अध्याय 1) - यीशु की माता मरियम का जन्म और प्रारंभिक जीवन

अध्याय 1

खंड II - BETH - (अध्याय 2 - 6) - जॉन द बैपटिस्ट ("जॉन द हरबिंगर"), और यीशु का जन्म और शैशवावस्था

अध्याय 2 | अध्याय 3 | अध्याय 4 | अध्याय 5 | अध्याय 6

खंड III - GIMEL - (अध्याय 7 - 12) - जोआन, मिस्र में एलिजाबेथ और मैरी की शिक्षा

अध्याय 7 | अध्याय 8 | अध्याय 9 | अध्याय 10 | अध्याय 11 | अध्याय 12

खंड IV - DALETH - (अध्याय 13 - 15) - जॉन द हरबिंगर का बचपन और प्रारंभिक शिक्षा

अध्याय 13 | अध्याय 14 | अध्याय 15

खंड V - HE - (अध्याय 16 - 20) - यीशु का बचपन और प्रारंभिक शिक्षा

अध्याय 16 | अध्याय 17 | अध्याय 18 | अध्याय 19 | अध्याय 20

खंड VI - VAU - (अध्याय 21 - 35) - भारत में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 21 | अध्याय 22 | अध्याय 23 | अध्याय 24 | अध्याय 25
अध्याय 26 | अध्याय 27 | अध्याय 28 | अध्याय 29 | अध्याय 30
अध्याय 31 | अध्याय 32 | अध्याय 33 | अध्याय 34 | अध्याय 35

खंड VII - ZAIN - (अध्याय 36 - 37) - तिब्बत और पश्चिमी भारत में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 36 | अध्याय 37

खंड VIII - CHETH - (अध्याय 38 - 41) - फारस में यीशु का जीवन और कार्य (यीशु की आयु 24)

अध्याय 38 | अध्याय 39 | अध्याय 40 | अध्याय 41

खंड IX - TETH - (अध्याय 42 - 43) - असीरिया में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 42 | अध्याय 43

खंड X - JOD - (अध्याय 44 - 46) - ग्रीस में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 44 | अध्याय 45 | अध्याय 46

खंड XI - CAPH - (अध्याय 47 - 55) - मिस्र में यीशु का जीवन और कार्य (यीशु ने 7 भाईचारे की परीक्षा पास की)

अध्याय 47 | अध्याय 48 | अध्याय 49 | अध्याय 50 | अध्याय 51
अध्याय 52 | अध्याय 53 | अध्याय 54 | अध्याय 55

खंड XII - LAMED - (अध्याय 56 - 60) - सात ऋषियों की परिषद

अध्याय 56 | अध्याय 57 | अध्याय 58 | अध्याय 59 | अध्याय 60

भाग 2

जीसस द क्राइस्ट ऑफ नासरत - आयु 30 से 33

खंड XIII - XVII

XIII	XIV	XV	XVI	XVII
MEM	NUN	SAMECH	AIN	PE

अध्याय 61 - 158

खंड XIII - MEM - (अध्याय 61 - 64) - जॉन द हार्बिंगर मंत्रालय

अध्याय 61 | अध्याय 62 | अध्याय 63 | अध्याय 64

खंड XIV - NUN - (अध्याय 65 - 71) - यीशु की क्रिस्टीन मंत्रालय - परिचयात्मक युग

अध्याय 65 | अध्याय 66 | अध्याय 67 | अध्याय 68
अध्याय 69 | अध्याय 70 | अध्याय 71

खंड XV - SAMECH - (अध्याय 72 - 90) - यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का पहला वार्षिक युग

अध्याय 72 | अध्याय 73 | अध्याय 74 | अध्याय 75 | अध्याय 76
अध्याय 77 | अध्याय 78 | अध्याय 79 | अध्याय 80 | अध्याय 81
अध्याय 82 | अध्याय 83 | अध्याय 84 | अध्याय 85 | अध्याय 86
अध्याय 87 | अध्याय 88 | अध्याय 89 | अध्याय 90

खंड XVI - AIN - (अध्याय 91 - 123) - यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का दूसरा वार्षिक युग

अध्याय 91 | अध्याय 92 | अध्याय 93 | अध्याय 94 (प्रारंभ - पर्वत पर उपदेश)
अध्याय 95 | अध्याय 96 | अध्याय 97 | अध्याय 98 | अध्याय 99
अध्याय 100 | अध्याय 101 (अंत - पर्वत पर उपदेश) | अध्याय 102 | अध्याय 103
अध्याय 104 | अध्याय 105 | अध्याय 106 | अध्याय 107 | अध्याय 108
अध्याय 109 | अध्याय 110 | अध्याय 111 | अध्याय 112 | अध्याय 113
अध्याय 114 | अध्याय 115 | अध्याय 116 | अध्याय 117 | अध्याय 118
अध्याय 119 | अध्याय 120 | अध्याय 121 | अध्याय 122 | अध्याय 123

खंड XVII - PE - (अध्याय 124 - 158) - यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का तीसरा वार्षिक युग

अध्याय 124 | अध्याय 125 | अध्याय 126 | अध्याय 127 | अध्याय 128
अध्याय 129 | अध्याय 130 | अध्याय 131 | अध्याय 132 | अध्याय 133
अध्याय 134 | अध्याय 135 | अध्याय 136 | अध्याय 137 | अध्याय 138
अध्याय 139 | अध्याय 140 | अध्याय 141 | अध्याय 142 | अध्याय 143
अध्याय 144 | अध्याय 145 | अध्याय 146 | अध्याय 147 | अध्याय 148
अध्याय 149 | अध्याय 150 | अध्याय 151 | अध्याय 152 | अध्याय 153
अध्याय 154 | अध्याय 155 | अध्याय 156 | अध्याय 157 | अध्याय 158

भाग 3					
परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उद्गम/मसीह का चर्च (क्रिस्टीन चर्च)					
नासरत के ईसा मसीह (**उम्र** 33)					
खंड XVIII - XXII					
XVIII TZADDI	XIX KOPH	XX RESH	XXI SCHIN	XXII TAU	
अध्याय 159 - 182					
खंड XVIII - TZADDI - (**अध्याय** 159 - 164) - **यीशु के साथ विश्वासघात और गिरफ्तारी**					
अध्याय 159	अध्याय 160	अध्याय 161	अध्याय 162	अध्याय 163	अध्याय 164
खंड XIX - KOPH - (**अध्याय** 165 - 171) - **यीशु का परीक्षण और निष्पादन**					
अध्याय 165	अध्याय 166	अध्याय 167	अध्याय 168		
अध्याय 169	अध्याय 170	अध्याय 171			
खंड XX - RESH - (**अध्याय** 172) -**यीशु का पुनरुत्थान**					
अध्याय 172					
खंड XXI - SCHIN - (**अध्याय** 173 - 180) - **यीशु के आध्यात्मिक शरीर का भौतिककरण**					
अध्याय 173	अध्याय 174	अध्याय 175	अध्याय 176		
अध्याय 177	अध्याय 178	अध्याय 179	अध्याय 180		
खंड XXII - TAU - (**अध्याय** 181 - 182) - **क्रिस्टीन चर्च की स्थापना**					
अध्याय 181	अध्याय 182				

दृष्टान्तों का सूचकांक

दृष्टान्त - महान व्यक्ति और उसके अन्यायी पुत्र (अध्याय 25)

दृष्टांत - टूटे हुए ब्लेड (अध्याय 27)

दृष्टांत - रॉकी फील्ड एंड द हिडन ट्रेजर (अध्याय 33)

दृष्टान्त - बिना रुके दाख की बारी और दाखलता (अध्याय 34)

दृष्टान्त - एक धर्मी राजा और उसका एकमात्र पुत्र (अध्याय 36)

दृष्टांत - एक राजा और उसका विशाल क्षेत्र (अध्याय 73)

दृष्टांत - अमीर आदमी और उसकी प्रचुर फसल (अध्याय 111)

दृष्टान्त - बोने वाला (अध्याय 115)

यीशु बताता है कि वह दृष्टान्तों में क्यों सिखाता है (अध्याय 115)

यीशु ने बोने वाले के दृष्टान्त की व्याख्या की (अध्याय 115)

दृष्टांत - गेहूं और तारे (अध्याय 115)

यीशु ने दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या की: आंतरिक और बाहरी राज्य (अध्याय 116)

यीशु ने दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या की: बाहरी राज्य (अध्याय 116)

दृष्टांत - गेहूं और तारे की व्याख्या: अच्छा बीज (अध्याय 116)

यीशु ने दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या की: शुद्ध करने वाली आग (अध्याय 116)

यीशु ने दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या की: वृक्ष की वृद्धि (अध्याय 116)

यीशु ने दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या की: खमीर (अध्याय 116)

यीशु ने दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या की: छिपा खजाना (अध्याय 116)

दृष्टान्त - रोटी और जीवन का जल: यीशु अपने मांस और रक्त का प्रतीक है (अध्याय 125)

दृष्टान्त - अच्छा चरवाहा और खोई हुई भेड़ (अध्याय 131)

दृष्टान्त - अच्छा सामरी (अध्याय 136)

दृष्टान्त - महत्वपूर्ण गृहिणी (अध्याय 137)

यीशु चरवाहा और भेड़शाला (अध्याय 139)

दृष्टान्त - छोटा बीज और महान वृक्ष (अध्याय 140)

दृष्टांत - अमीर आदमी और उसका पर्व (अध्याय 141)

दृष्टांत - अमीर आदमी और लाजर (अध्याय 142)

दृष्टान्त - **पति और मजदूर** (**अध्याय** 143)

दृष्टान्त - **उड़ाऊ पुत्र** (**अध्याय** 144)

दृष्टान्त - **अन्यायी न्यायाधीश** (**अध्याय** 145)

दृष्टान्त - **फरीसी और जनता** (**अध्याय** 145)

दृष्टान्त - **दस प्रतिभाएँ** (**अध्याय** 149)

दृष्टान्त - **गृहस्थ और दुष्ट पति** (**अध्याय** 154)

दृष्टान्त - **विवाह भोज और बिना शादी के लबादे के मेहमान** (**अध्याय** 154)

दृष्टान्त - **गृहस्थ और सेवक** (**अध्याय** 158)

दृष्टान्त - **दस कुंवारी** (**अध्याय** 158)

दृष्टान्त - **भेड़ और बकरियाँ** (**अध्याय** 158)

त्वरित संख्यात्मक अध्याय सूचकांक

भाग 1: नासरत के यीशु (जन्म से 30 वर्ष)						
अध्याय 1	अध्याय 2	अध्याय 3	अध्याय 4	अध्याय 5	अध्याय 6	अध्याय 7
अध्याय 8	अध्याय 9	अध्याय 10	अध्याय 11	अध्याय 12	अध्याय 13	अध्याय 14
अध्याय 15	अध्याय 16	अध्याय 17	अध्याय 18	अध्याय 19	अध्याय 20	अध्याय 21
अध्याय 22	अध्याय 23	अध्याय 24	अध्याय 25	अध्याय 26	अध्याय 27	अध्याय 28
अध्याय 29	अध्याय 30	अध्याय 31	अध्याय 32	अध्याय 33	अध्याय 34	अध्याय 35
अध्याय 36	अध्याय 37	अध्याय 38	अध्याय 39	अध्याय 40	अध्याय 41	अध्याय 42
अध्याय 43	अध्याय 44	अध्याय 45	अध्याय 46	अध्याय 47	अध्याय 48	अध्याय 49
अध्याय 50	अध्याय 51	अध्याय 52	अध्याय 53	अध्याय 54	अध्याय 55	अध्याय 56
अध्याय 57	अध्याय 58	अध्याय 59	अध्याय 60			
भाग 2: नासरत का यीशु मसीह (उम्र 30 से 33)						
अध्याय 61	अध्याय 62	अध्याय 63	अध्याय 64	अध्याय 65	अध्याय 66	अध्याय 67
अध्याय 68	अध्याय 69	अध्याय 70	अध्याय 71	अध्याय 72	अध्याय 73	अध्याय 74
अध्याय 75	अध्याय 76	अध्याय 77	अध्याय 78	अध्याय 79	अध्याय 80	अध्याय 81
अध्याय 82	अध्याय 83	अध्याय 84	अध्याय 85	अध्याय 86	अध्याय 87	अध्याय 88
अध्याय 89	अध्याय 90	अध्याय 91	अध्याय 92	अध्याय 93	अध्याय 94	अध्याय 95
अध्याय 96	अध्याय 97	अध्याय 98	अध्याय 99	अध्याय 100	अध्याय 101	अध्याय 102
अध्याय 103	अध्याय 104	अध्याय 105	अध्याय 106	अध्याय 107	अध्याय 108	अध्याय 109
अध्याय 110	अध्याय 111	अध्याय 112	अध्याय 113	अध्याय 114	अध्याय 115	अध्याय 116
अध्याय 117	अध्याय 118	अध्याय 119	अध्याय 120	अध्याय 121	अध्याय 122	अध्याय 123
अध्याय 124	अध्याय 125	अध्याय 126	अध्याय 127	अध्याय 128	अध्याय 129	अध्याय 130
अध्याय 131	अध्याय 132	अध्याय 133	अध्याय 134	अध्याय 135	अध्याय 136	अध्याय 137
अध्याय 138	अध्याय 139	अध्याय 140	अध्याय 141	अध्याय 142	अध्याय 143	अध्याय 144
अध्याय 145	अध्याय 146	अध्याय 147	अध्याय 148	अध्याय 149	अध्याय 150	अध्याय 151
अध्याय 152	अध्याय 153	अध्याय 154	अध्याय 155	अध्याय 156	अध्याय 157	अध्याय 158
भाग 3: परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/उद्गम/मसीह का चर्च (क्रिस्टीन चर्च)						

अध्याय 159	अध्याय 160	अध्याय 161	अध्याय 162	अध्याय 163	अध्याय 164	अध्याय 165
अध्याय 166	अध्याय 167	अध्याय 168	अध्याय 169	अध्याय 170	अध्याय 171	अध्याय 172
अध्याय 173	अध्याय 174	अध्याय 175	अध्याय 176	अध्याय 177	अध्याय 178	अध्याय 179
अध्याय 180	अध्याय 181	अध्याय 182				

कुंभ राशि का सुसमाचार - विषय-सूची (सारांशित)

किताब

भाग (एक-दो-तीन) -धारा-अध्याय

अंतर्वस्तु

भाग 1

खंड I से XII

नासरत का यीशु

जन्म से 30 वर्ष तक

(अध्याय 1 - 60)

भाग 1/अनुभाग I

Aleph

यीशु की माता मरियम का जन्म और प्रारंभिक जीवन

अध्याय 1

अध्याय 1 - फिलिस्तीन। मैरी का जन्म, जोआचिम का पर्व। मैरी को पुजारियों का आशीर्वाद प्राप्त है। एक पुजारी की भविष्यवाणी। मैरी मंदिर में रहती है। यूसुफ से मंगनी की है।

भाग 1/खंड II

BETH

अध्याय 2 - 6

जॉन द हरबिंगर (बैपटिस्ट) और यीशु का जन्म और शैशवावस्था

अध्याय 2 | अध्याय 3 | अध्याय 4 | अध्याय 5 | अध्याय 6

अध्याय 2 - जकारिया और एलिजाबेथ। जकारिया, एलिजाबेथ और मरियम को गेब्रियल के भविष्यसूचक संदेश। जॉन का जन्म। जकारिया की भविष्यवाणी।

अध्याय 3 - यीशु का जन्म। परास्नातक बच्चे का सम्मान करते हैं। चरवाहे आनन्दित होते हैं। जकारिया और एलिजाबेथ मैरी से मिलने जाते हैं। यीशु का खतना हुआ है।

अध्याय 4 - यीशु का अभिषेक। मैरी बलिदान प्रदान करती है। शिमोन और अन्ना भविष्यवाणी। बच्चे की पूजा करने के लिए अन्ना को फटकार लगाई जाती है। परिवार बेथलहम लौट आता है।

अध्याय 5 - तीन जादूगर याजक यीशु का सम्मान करते हैं। हेरोदेस चिंतित है। यहूदियों की एक परिषद बुलाता है। कहा जाता है कि भविष्यवक्ताओं ने एक राजा के आने की भविष्यवाणी की थी। हेरोदेस बच्चे को मारने का संकल्प करता है। मरियम और यूसुफ यीशु को ले जाते हैं और मिस्र भाग जाते हैं।

अध्याय 6 - हेरोदेस यूहन्ना के मिशन के बारे में सीखता है। बेथलहम के शिशुओं को हेरोदेस के आदेश से मार डाला जाता है। एलिजाबेथ जॉन के साथ भाग जाती है। क्योंकि जकर्याह यह नहीं बता सकता कि उसका पुत्र कहाँ छिपा है, उसकी हत्या कर दी गई है। हेरोदेस मर जाता है।

भाग 1/खंड III

GIMEL

अध्याय 7 - 12

ज़ोआन, मिस्र में एलिजाबेथ और मैरी की शिक्षा

अध्याय 7	अध्याय 8	अध्याय 9	अध्याय 10	अध्याय 11	अध्याय 12

अध्याय 7 - आर्केलौस शासन करता है। मरियम और इलीशिबा अपने बेटों के साथ ज़ोआन में हैं और एलीहू और सलोमी उन्हें शिक्षा देते हैं। एलीहू का परिचयात्मक पाठ। एक प्रतिलेखक के बारे में बताता है।

अध्याय 8 - एलीहू के पाठ। जीवन की एकता। दो स्व. शैतान। प्रेम - पुरुषों का उद्धारकर्ता। प्रकाश के डेविड। अंधेरे का गोलियत।

अध्याय 9 - सैलोम के पाठ। पुरुष और स्त्री। मानव मनोदशा का दर्शन। त्रिगुण देव। सेप्टोनेट। भगवान ताओ।

अध्याय 10 - एलीहू के पाठ। ब्राह्मण धर्म। अब्राम का जीवन। यहूदी पवित्र पुस्तकें। फारसी धर्म।

अध्याय 11 - एलीहू के पाठ। बौद्ध धर्म और बुद्ध के उपदेश। मिस्र के रहस्य।

अध्याय 12 - सैलोम के पाठ। प्रार्थना। एलीहू के समापन पाठ। अध्ययन के तीन साल के पाठ्यक्रम को सारांशित करता है। छात्र अपने घरों को लौट जाते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/खंड IV

DALETH

अध्याय 13 - 15

जॉन द हरबिंगर का बचपन और प्रारंभिक शिक्षा

अध्याय 13	अध्याय 14	अध्याय 15

अध्याय 13 - एंगेडी में एलिजाबेथ। बेटे को पढ़ाती है। जॉन मथेनो का शिष्य बन जाता है, जो उसे पाप का अर्थ और क्षमा का नियम बताता है।

अध्याय 14 - मैथेनो के पाठ। सार्वभौमिक कानून का सिद्धांत। मनुष्य की चुनने और प्राप्त करने की शक्ति। विरोध के लाभ। प्राचीन पवित्र ग्रंथ। दुनिया के इतिहास में जॉन और जीसस का स्थान।

अध्याय 15 - एलिजाबेथ की मृत्यु और दफन। मैथेनो के सबक। मृत्यु मंत्रालय। जॉन का मिशन। बपतिस्मा के संस्कार की संस्था। मैथेनो जॉन को मिस्र ले जाता है, और उसे सकारा के मंदिर में रखता है, जहां वह अठारह वर्ष तक रहता है।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/अनुभाग V

HE

अध्याय 16 - 20

यीशु का बचपन और प्रारंभिक शिक्षा

अध्याय 16	अध्याय 17	अध्याय 18	अध्याय 19	अध्याय 20

अध्याय 16 - यूसुफ का घर। मैरी अपने बेटे को पढ़ाती है। यीशु का सातवां जन्मदिन। यीशु अपने सपने के बारे में बताता है; उनकी दादी की व्याख्या। उनके जन्मदिन का उपहार।

अध्याय 17 - यीशु नासरत के आराधनालय के रब्बी से बात करता है। वह यहूदी विचारों की संकीर्णता की आलोचना करता है।

अध्याय 18 - यरूशलेम में एक भोज में यीशु। बलिदानियों की क्रूरता से दुखी है। हिलेल से अपील करता है, जो उसके साथ सहानुभूति रखता है। वह एक साल मंदिर में रहता है।

अध्याय 19 - जीसस बारह वर्ष की आयु में मंदिर में। कानून के डॉक्टरों के साथ विवाद। भविष्यवाणी की एक किताब से पढ़ता है। हिल्लेल के अनुरोध पर वह भविष्यवाणियों की व्याख्या करता है।

अध्याय 20 - भोज के बाद। स्वदेश यात्रा। लापता यीशु। उसकी तलाश की जा रही है। उसके माता-पिता उसे मंदिर में पाते हैं। वह उनके साथ नासरत को जाता है। बढ़ई के औजारों का प्रतीकात्मक अर्थ।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/खंड VI

VAU

अध्याय 21 - 35

भारत में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 21	अध्याय 22	अध्याय 23	अध्याय 24	अध्याय 25
अध्याय 26	अध्याय 27	अध्याय 28	अध्याय 29	अध्याय 30
अध्याय 31	अध्याय 32	अध्याय 33	अध्याय 34	अध्याय 35

अध्याय 21 - रावण यीशु को मंदिर में देखता है और मोहित हो जाता है। हिलेल उसे लड़के के बारे में बताता है। रावण यीशु को नासरत में पाता है और उसके सम्मान में दावत देता है। रावण यीशु का संरक्षक बन जाता है और उसे ब्राह्मण धर्म का अध्ययन करने के लिए भारत ले जाता है।

अध्याय 22 - यीशु और लामाओं की मित्रता। यीशु लामास को सत्य, मनुष्य, शक्ति, समझ, ज्ञान, उद्धार और विश्वास का अर्थ समझाते हैं।

अध्याय 23 - शूद्रों और विसयों में यीशु और लामा। बनारस में, यीशु उदरक का शिष्य बन जाता है। उदरक का पाठ।

अध्याय 24 - जातियों का ब्राह्मणिक सिद्धांत। यीशु इसे अस्वीकार करते हैं और मानवीय समानता की शिक्षा देते हैं। पुजारी नाराज हैं और उसे मंदिर से भगा देते हैं। वह शूद्रों के साथ रहता है और उन्हें शिक्षा देता है।

अध्याय 25 - यीशु शूद्रों और किसानों को शिक्षा देते हैं। एक रईस और उसके अन्यायी पुत्रों के दृष्टांत से संबंधित है। सभी पुरुषों की संभावनाओं को ज्ञात करता है।

अध्याय 26 - कटक में यीशु। जगन्नाथ की कार। यीशु ने लोगों को ब्राह्मण संस्कारों की शून्यता, और मनुष्य में ईश्वर को कैसे देखा जाए, के बारे में बताया। उन्हें बलिदान का दिव्य नियम सिखाता है।

अध्याय 27 - यीशु बिहार में एक भोज में शामिल हुए। मानवीय समानता पर क्रांतिकारी उपदेश देता है। टूटे हुए ब्लेड के दृष्टांत से संबंधित है।

अध्याय 28 - उदरक यीशु के सम्मान में दावत देता है। यीशु परमेश्वर की एकता और जीवन के भाईचारे पर बोलते हैं। पुरोहित की आलोचना करता है। किसान का अतिथि बन जाता है।

अध्याय 29 - लाहौर का एक पुजारी, अजैनिन, यीशु को देखने के लिए बनारस आता है, और मंदिर में रहता है। यीशु ने मंदिर जाने के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। अजैनिन रात में किसान के घर उससे मिलने जाता है और उसके दर्शन को स्वीकार करता है।

अध्याय 30 - यीशु को अपने पिता की मृत्यु का समाचार मिलता है। वह अपनी माँ को एक पत्र लिखता है। अक्षर। वह इसे एक व्यापारी द्वारा रास्ते में भेजता है।

अध्याय 31 - ब्राह्मण पुजारी यीशु की शिक्षा और उन्हें भारत से निकालने के संकल्प के कारण क्रोधित हैं। लामा उसके लिए याचना करते हैं। पुजारी उसे मारने के लिए एक हत्यारे को नियुक्त करते हैं। लामास ने उसे चेतावनी दी और वह नेपाल भाग गया।

अध्याय 32 - जीसस और बाराता। दोनों ने मिलकर पवित्र पुस्तकें पढ़ीं। यीशु विकासवाद के बौद्ध सिद्धांत का अपवाद लेते हैं और मनुष्य की वास्तविक उत्पत्ति को प्रकट करते हैं। विद्यापति से मिलता है, जो उसका सह-मजदूर बन जाता है।

अध्याय 33 - येसु वसंत ऋतु में आम लोगों को शिक्षा देते हैं। उन्हें बताता है कि खुशी कैसे प्राप्त करें। चट्टानी क्षेत्र और छिपे हुए खजाने के दृष्टांत से संबंधित है।

अध्याय 34 - कपिवस्तु में जयंती। यीशु प्लाजा में पढ़ाते हैं और लोग चकित होते हैं। वह अप्रयुक्त दाख की बारी और दाख की बारी के दृष्टान्त का वर्णन करता है। उसकी बातों से पुजारी नाराज हो गए।

अध्याय 35 - यीशु और विद्यापति दुनिया के आने वाले युग की जरूरतों पर विचार करते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/खंड VII

ZAIN

अध्याय 36 - 37

तिब्बत और पश्चिमी भारत में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 36	अध्याय 37

अध्याय 36 - लस्सा में यीशु। वह मेंग-त्से से मिलता है जो उसे प्राचीन पांडुलिपियों को पढ़ने में सहायता करता है। वह लद्दाख जाता है। एक बच्चे को ठीक करता है। राजा के पुत्र के दृष्टान्त से संबंधित है।

अध्याय 37 - यीशु को एक ऊँट के साथ प्रस्तुत किया गया है। वह लाहौर जाता है जहां वह अजैनिन के साथ रहता है, जिसे वह पढ़ाता है। भटकते संगीतकारों का सबक। यीशु ने अपनी यात्रा फिर से शुरू की।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/धारा VIII

CHET

अध्याय 38 - 41

फारस में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 38	अध्याय 39	अध्याय 40	अध्याय 41

अध्याय 38 - यीशु ने फारस को पार किया। कई जगहों पर पढ़ाता और चंगा करता है। पर्सेपोलिस के पास तीन जादूगर पुजारी उससे मिलते हैं। कास्पर और दो अन्य फ़ारसी गुरु उनसे पर्सेपोलिस में मिलते हैं। सात गुरु सात दिन मौन में बैठते हैं।

अध्याय 39 - यीशु पर्सेपोलिस में एक भोज में शामिल हुए। जादूगर दर्शन की समीक्षा करते हुए लोगों से बात करता है। बुराई की उत्पत्ति की व्याख्या करता है। प्रार्थना में रात बिताता है।

अध्याय 40 - यीशु जादूगरों को शिक्षा देता है। मौन की व्याख्या करता है और इसे कैसे दर्ज करें। कास्पर ने यीशु की बुद्धि का गुणगान किया। यीशु कुस्रू के उपवनों में शिक्षा देते हैं।

अध्याय 41 - यीशु एक चंगाई के फव्वारे के पास खड़ा है। इस तथ्य को प्रकट करता है कि विश्वास चंगाई में शक्तिशाली कारक है, और बहुत से लोग विश्वास से चंगे होते हैं। एक छोटा बच्चा विश्वास का बहुत बडा पाठ पढाता है।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/धारा IX

TETH

अध्याय 42 - 43

असीरिया में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 42	अध्याय 43

अध्याय 42 - यीशु ने जादूगरों को विदाई दी। असीरिया जाता है। कसदिया के ऊर में लोगों को शिक्षा देता है। अशबीना से मिलता है, जिसके साथ वह कई कस्बों और शहरों का दौरा करता है, बीमारों को पढ़ाता और चंगा करता है।

अध्याय 43- जीसस और अशबीना बाबुल जाते हैं और उसके उजाड़ होने की बात कहते हैं। दोनों स्वामी सात दिनों तक संग में रहते हैं; फिर यीशु ने अपनी स्वदेश यात्रा फिर से शुरू की। नासरत पहुंचे। उसकी माँ उसके सम्मान में दावत देती है। उनके भाई नाराज हैं। यीशु अपनी माँ और चाची को अपनी यात्रा की कहानी सुनाते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/अनुभाग X

JOD

अध्याय 44 - 46

ग्रीस में यीशु का जीवन और कार्य

अध्याय 44	अध्याय 45	अध्याय 46

अध्याय 44 - यीशु यूनान का दौरा करता है और एथेनियाई लोगों द्वारा उसका स्वागत किया जाता है। अपोलो से मिलता है। एम्फीथिएटर में ग्रीसियन मास्टर्स को संबोधित करते हैं। पता।

अध्याय 45 - यीशु यूनानी आचार्यों को शिक्षा देते हैं। अपोलो के साथ डेल्फी जाता है और ओरेकल की बात सुनता है। यह उसके लिए गवाही देता है। वह अपोलो के साथ रहता है और उसे ईश्वर के जीवित ओरेकल के रूप में पहचाना जाता है। अपोलो को अलौकिक भाषण की घटना के बारे में बताते हैं।

अध्याय 46 - समुद्र पर एक तूफान। यीशु ने कई डूबते हुए आदमियों को बचाया। एथेनियाई लोग मूर्तियों से प्रार्थना करते हैं। यीशु उनकी मूर्तिपूजा को फटकार लगाते हैं और बताते हैं कि परमेश्वर कैसे मदद करता है। यूनानियों के साथ उनकी आखिरी मुलाकात। मंगल जहाज पर पाल।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/खंड XI

CAPH

अध्याय 47 - 55

मिस्र में यीशु का जीवन और कार्य - यीशु ने 7 भाईचारे की परीक्षा पास की

अध्याय 47	अध्याय 48	अध्याय 49	अध्याय 50	अध्याय 51
अध्याय 52	अध्याय 53	अध्याय 54	अध्याय 55	

अध्याय 47 - मिस्र में एलीहू और सलोमी के साथ यीशु। अपने सफर की कहानी सुनाता है। एलीहू और सलोमी परमेश्वर की स्तुति करते हैं। यीशु हेलियोपोलिस के मंदिर में जाते हैं और एक शिष्य के रूप में उनका स्वागत किया जाता है।

अध्याय 48 - यीशु ने अपने रहस्यवादी नाम और संख्या को चित्रलिपि से प्राप्त किया। भाईचारे की पहली परीक्षा पास करता है, और अपनी पहली डिग्री, SINCERYITY प्राप्त करता है।

अध्याय 49 - यीशु भाईचारे की दूसरी परीक्षा पास करता है, और दूसरी डिग्री, न्याय प्राप्त करता है।

अध्याय 50 - यीशु भाईचारे की तीसरी परीक्षा पास करता है, और तीसरी डिग्री, विश्वास प्राप्त करता है।

अध्याय 51 - यीशु ने भाईचारे की चौथी परीक्षा पास की, और चौथी डिग्री, परोपकार को प्राप्त किया।

अध्याय 52 - यीशु चालीस दिन मंदिर के उपवनों में बिताते हैं। पांचवीं भाईचारे की परीक्षा पास करता है और पांचवीं डिग्री, वीरता प्राप्त करता है।

अध्याय 53 - यीशु ने भाईचारे की छठी परीक्षा पास की और छठी डिग्री, लव डिवाइन प्राप्त की।

अध्याय 54 - यीशु चित्रलिपि का एक निजी शिष्य बन जाता है और उसे मिस्र के रहस्यों की शिक्षा दी जाती है। सातवीं परीक्षा पास करने में, वह चैंबर ऑफ द डेड में काम करता है।

अध्याय 55 - भाईचारे की सातवीं परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, यीशु ने सातवीं और सर्वोच्च उपाधि, द क्राइस्ट प्राप्त की। वह मंदिर को एक विजेता छोड़ देता है।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 1/खंड XII

LAMED

अध्याय 56 - 60

विश्व के सात संतों की परिषद

अध्याय 56	अध्याय 57	अध्याय 58	अध्याय 59	अध्याय 60

अध्याय 56 - विश्व के सात संत अलेक्जेंड्रिया में मिलते हैं। बैठक के उद्देश्य। उद्घाटन पते।

अध्याय 57 - ऋषियों की बैठक, जारी रही। उद्घाटन के पते। यीशु आता है। सात दिन का मौन।

अध्याय 58 - ऋषियों की बैठक, जारी रही। सात सार्वभौमिक अभिधारणाओं की प्रस्तुति।

अध्याय 59 - ऋषियों की बैठक, जारी रही। शेष बतलाते हैं। ऋषि यीशु को आशीर्वाद देते हैं। सात दिन का मौन।

अध्याय 60 - यीशु ने सात ऋषियों को संबोधित किया। पता। यीशु गलील जाता है।

सामग्री - भाग 2

यीशु मसीह

(आयु 30 - 33)

नासरत के ईसा मसीह की 3 साल की सेवकाई

खंड XIII से XVII

(अध्याय 61 - 158)

भाग 2/खंड XIII

MEM

अध्याय 61 - 64

जॉन द हरबिंगर मंत्रालय

अध्याय 61	अध्याय 62	अध्याय 63	अध्याय 64

अध्याय 61 - यूहन्ना, अग्रदूत, हेब्रोन को लौटता है। जंगलों में एक साधु के रूप में रहता है। यरूशलेम का दौरा किया और लोगों से बात की।

अध्याय 62 - अग्रदूत, जॉन, फिर से यरूशलेम का दौरा करता है। लोगों से बात करता है। सात दिनों में गिलगाल में उनसे मिलने का वादा किया। बेथानी जाता है और एक भोज में भाग लेता है।

अध्याय 63 - जॉन, अग्रदूत, जेरिको का दौरा करता है। गिलगाल में लोगों से मिले। अपने मिशन की घोषणा करता है। बपतिस्मा के संस्कार का परिचय देता है। कई लोगों को बपतिस्मा देता है। बेथानी लौटता है और सिखाता है। जॉर्डन को लौटें।

अध्याय 64 - यीशु गलील आते हैं और यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया जाता है। पवित्र श्वास उसके मसीहा होने की पुष्टि करता है।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 2/खंड XIV

NUN

अध्याय 65 - 71

यीशु की क्रिस्टीन मंत्रालय - परिचयात्मक युग

अध्याय 65	अध्याय 66	अध्याय 67	अध्याय 68	अध्याय 69	अध्याय 70	अध्याय 71

अध्याय 65 - यीशु आत्म-परीक्षा के लिए जंगल में जाता है, जहाँ वह चालीस दिन तक रहता है। तीन प्रलोभनों के अधीन है। वह मात देता है। जॉन के शिविरों में लौटता है और पढ़ाना शुरू करता है।

अध्याय 66 - जॉन के छह शिष्य यीशु का अनुसरण करते हैं और उनके शिष्य बन जाते हैं। वह उन्हें पढ़ाता है। वे मौन में बैठते हैं।

अध्याय 67 - यीशु ने जॉर्डन में जॉन से मुलाकात की। लोगों को अपना पहला क्रिस्टीन संबोधन देता है। पता। वह अपने शिष्यों के साथ बैतनिय्याह जाता है।

अध्याय 68 - यीशु बैतनिय्याह में लोगों से बात करता है। उन्हें बताता है कि दिल से पवित्र कैसे बनें। यरूशलेम जाता है और मंदिर में भविष्यवाणी की किताब से पढ़ता है। नासरत को जाता है।

अध्याय 69 - यीशु और नासरत के आराधनालय के शासक। यीशु सार्वजनिक रूप से नहीं सिखाता, और लोग चकित होते हैं।

अध्याय 70 - काना में एक विवाह भोज में यीशु और उसके चेले। यीशु शादी पर बोलते हैं। वह पानी को शराब में बदल देता है। लोग चकित हैं।

अध्याय 71 - यीशु, उसके छः शिष्य और उसकी माता कफरनहूम जाते हैं। यीशु लोगों को सिखाते हैं, पृथ्वी के राजाओं और स्वर्ग के राजाओं के बीच के अंतर को प्रकट करते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 2/खंड XV

SAMECH

अध्याय 72 - 90

यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का पहला वार्षिक युग

अध्याय 72	अध्याय 73	अध्याय 74	अध्याय 75	अध्याय 76	अध्याय 77	अध्याय 78

अध्याय 79	अध्याय 80	अध्याय 81	अध्याय 82	अध्याय 83	अध्याय 84

अध्याय 85	अध्याय 86	अध्याय 87	अध्याय 88	अध्याय 89	अध्याय 90

अध्याय 72 - यरूशलेम में यीशु। व्यापारियों को मंदिर से भगा दिया। याजक नाराज हो गए, और वह एक वफादार यहूदी के दृष्टिकोण से अपना बचाव करता है। वह लोगों से बात करते हैं।

अध्याय 73 - यीशु फिर से मंदिर जाते हैं और लोगों द्वारा उनका स्वागत किया जाता है। एक राजा और उसके पुत्रों का दृष्टान्त बताता है। मसीहा को परिभाषित करता है।

अध्याय 74 - यीशु सब्त के दिन चंगा करता है और फरीसियों द्वारा उसकी निंदा की जाती है। एक डूबे हुए बच्चे को पुनर्स्थापित करता है। एक घायल कुत्ते को बचाता है। एक बेघर बच्चे की देखभाल करता है। दया के नियम पर बोलता है।

अध्याय 75 - नीकुदेमुस रात में यीशु से मिलने जाता है। यीशु ने उसे नए जन्म और स्वर्ग के राज्य का अर्थ बताया।

अध्याय 76 - बेथलहम में यीशु। चरवाहों को शांति के साम्राज्य की व्याख्या करता है। एक असामान्य प्रकाश दिखाई देता है। चरवाहे यीशु को मसीह के रूप में पहचानते हैं।

अध्याय 77 - हेब्रोन में यीशु। बेथानी जाता है। रूत को कुछ पारिवारिक परेशानियों के बारे में सलाह देता है।

अध्याय 78 - यरीहो में यीशु। आशेर के दास को चंगा करता है। यरदन के पास जाता है और लोगों से बात करता है। बपतिस्मा को शिष्यत्व की प्रतिज्ञा के रूप में स्थापित करता है। छह शिष्यों को बपतिस्मा देता है, जो बदले में कई लोगों को बपतिस्मा देते हैं।

अध्याय 79 - जॉन, अग्रदूत, सलीम में। एक वकील यीशु के बारे में पूछता है। यूहन्ना भीड़ को यीशु के मिशन के बारे में समझाता है।

अध्याय 80 - लामा यीशु को देखने के लिए भारत से आते हैं। वह सलीम में जॉन की शिक्षाओं को सुनता है। जॉन उसे यीशु के दिव्य मिशन के बारे में बताता है। लामा यीशु को यरदन में पाते हैं। गुरु एक दूसरे को पहचानते हैं।

अध्याय 81 - क्रिस्टीन गलील की ओर यात्रा करते हैं। वे कुछ समय के लिए याकूब के कुएँ में ठहरे हुए हैं और यीशु सामरिया की एक स्त्री को शिक्षा देते हैं।

अध्याय 82 - जब यीशु उपदेश दे रहा है, उसके शिष्य आते हैं और आश्चर्य करते हैं क्योंकि वह एक सामरी से बात करता है। सीकर से बहुत से लोग यीशु को देखने आते हैं। वह उनसे बात करता है। वह अपने शिष्यों के साथ सीचर जाता है और कुछ दिनों तक रहता है।

अध्याय 83 - जीसस सीचर के लोगों को शिक्षा देते हैं। एक जुनूनी से एक दुष्ट आत्मा को निकालता है। आत्मा को उसके स्थान पर भेजता है। कई लोगों को ठीक करता है। पुजारी जीसस की सीचर में उपस्थिति से परेशान हैं, लेकिन वह उनसे बात करता है और उनका पक्ष जीतता है।

अध्याय 84 - क्रिस्टीन अपनी यात्रा फिर से शुरू करते हैं। वे शोमरोन नगर में कुछ समय के लिए ठहरे हुए हैं। यीशु आराधनालय में बोलते हैं। एक महिला को मानसिक शक्ति से ठीक करता है। वह गायब हो जाता है, लेकिन बाद में अपने शिष्यों से जुड़ जाता है क्योंकि वे नासरत की ओर जाते हैं।

अध्याय 85 - जॉन, अग्रदूत, हेरोदेस को उसकी दुष्टता के लिए निंदा करता है। हेरोदेस ने उसे माकेरूस के कारागार में भेज दिया। यीशु बताता है कि परमेश्वर ने यूहन्ना को कैद करने की अनुमति क्यों दी।

अध्याय 86 - क्रिस्टीन नासरत में हैं। यीशु आराधनालय में बोलते हैं। वह लोगों को नाराज करता है, और वे उसे मारने का प्रयास करते हैं। वह रहस्यमय तरीके से गायब हो जाता है और आराधनालय में लौट आता है।

अध्याय 87 - क्रिस्टीन काना जाते हैं। यीशु एक रईस के बच्चे को चंगा करता है। क्रिस्टीन कफरनहूम जाते हैं। यीशु अपनी माँ के लिए एक विशाल घर प्रदान करता है। उसने बारह प्रेरितों को चुनने के अपने इरादे की घोषणा की।

अध्याय 88 - यीशु समुद्र के किनारे चलते हैं। मछली पकड़ने वाली नाव में खड़े होकर लोगों से बात करते हैं। उनके निर्देशन में मछुआरे बड़ी संख्या में मछलियाँ पकड़ते हैं। वह अपने बारह प्रेरितों को चुनता और बुलाता है।

अध्याय 89 - बारह प्रेरित यीशु के घर पर हैं और अपने काम के लिए समर्पित हैं। यीशु उन्हें निर्देश देते हैं। वह सब्त के दिन आराधनालय में जाता है और सिखाता है। वह एक जुनूनी व्यक्ति में से एक अशुद्ध आत्मा को निकालता है। वह पतरस की सास को चंगा करता है।

अध्याय 90 - यीशु अकेले पहाड़ पर प्रार्थना करने जाता है। उनके शिष्य उन्हें ढूंढते हैं। वह बारहों को बुलाता है और वे गलील में शिक्षा और उपचार करते हैं। तिबेरियस में यीशु ने एक कोढ़ी को चंगा किया। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए। अपने घर में यीशु एक लकवाग्रस्त व्यक्ति को चंगा करते हैं और चंगाई के दर्शन और पापों की क्षमा के बारे में बताते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 2/खंड XVI

AIN

अध्याय 91 - 123

यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का दूसरा वार्षिक युग - पर्वत पर उपदेश

अध्याय 91	अध्याय 92	अध्याय 93	अध्याय 94	अध्याय 95	अध्याय 96	अध्याय 97
अध्याय 98	अध्याय 99	अध्याय 100	अध्याय 101	अध्याय 102	अध्याय 103	अध्याय 104
अध्याय 105	अध्याय 106	अध्याय 107	अध्याय 108	अध्याय 109	अध्याय 110	अध्याय 111
अध्याय 112	अध्याय 113	अध्याय 114	अध्याय 115	अध्याय 116	अध्याय 117	अध्याय 118
अध्याय 119	अध्याय 120	अध्याय 121	अध्याय 122	अध्याय 123		

अध्याय 91 - येरूशलम में भोज में यीशु। एक नपुंसक आदमी को ठीक करता है। उपचार में एक व्यावहारिक सबक देता है। पुष्टि करता है कि सभी पुरुष भगवान के पुत्र हैं।

अध्याय 92 - लाजर के घर में दावत में क्रिस्टीन। कस्बे में भीषण आग। यीशु ने एक बच्चे को आग की लपटों से बचाया और वचन के द्वारा आग पर काबू पाया। वह एक शराबी आदमी को छुड़ाने का एक व्यावहारिक सबक देता है।

अध्याय 93 - क्रिस्टीन पके गेहूँ के एक खेत से होकर गुज़रते हैं, और चेले उस गेहूँ को खाते हैं जिसे यीशु उन्हें बरी करता है। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए। यीशु सब्त के दिन सूखे हाथ को चंगा करते हैं और अपने काम की रक्षा करते हैं।

पहाड़ी उपदेश (अध्याय 94-101)

अध्याय 94 - पर्वत पर उपदेश। यीशु ने बारहों को प्रार्थना का रहस्य बताया। आदर्श प्रार्थना। क्षमा का नियम। पवित्र व्रत। धोखे की बुराई। भिक्षा देना।

अध्याय 95 - पहाडी उपदेश जारी रहा। यीशु ने आठ धन्य वचनों और आठ विपत्तियों का उच्चारण किया। प्रोत्साहन के शब्द बोलते हैं। प्रेरितिक कार्य के उच्च चरित्र पर बल देता है।

अध्याय 96 - पहाडी उपदेश जारी रहा। यीशु दस आज्ञाओं पर विचार करता है। मसीह का दर्शन। आज्ञाओं की आत्मा। यीशु पहले चार आज्ञाओं के आध्यात्मिक पहलुओं को प्रकट करता है।

अध्याय 97 - पहाडी उपदेश जारी रहा। यीशु ने पाँचवीं और छठी आज्ञाओं के बारह आध्यात्मिक पहलुओं को प्रकट किया।

अध्याय 98 - पहाड़ी उपदेश जारी रहा। यीशु ने बारहों को सातवीं, आठवीं और दसवीं आज्ञाओं के आध्यात्मिक पहलुओं का खुलासा किया।

अध्याय 99 - पहाड़ी उपदेश जारी रहा। यीशु ने बारहवीं आज्ञा के आध्यात्मिक पहलुओं को प्रकट किया।

अध्याय 100 - पहाडी उपदेश जारी रहा। यीशु ने बारहों को आध्यात्मिक नैतिकता का एक व्यावहारिक कोड तैयार किया और प्रस्तुत किया।

अध्याय 101 - पहाड़ी उपदेश का समापन हुआ। आचार संहिता का अंतिम भाग। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए।

अंत: पर्वत पर उपदेश

अध्याय 102 - यीशु के घर पर क्रिस्टीन। यीशु ने उन्हें गुप्त सिद्धांत के बारे में बताया। वे सारे गलील में जाकर शिक्षा देते और चंगा करते हैं। यीशु ने नैन में एक विधवा के बेटे को जिंदा किया। वे कफरनहूम लौट जाते हैं।

अध्याय 103 - यीशु के घर में क्रिस्टीन। यीशु हर सुबह बारह और विदेशी गुरुओं को पढ़ाते हैं। यीशु अग्रदूत, यूहन्ना से दूतों को प्राप्त करता है, और उसे प्रोत्साहन के शब्द भेजता है। वह जॉन के चरित्र की प्रशंसा करता है।

अध्याय 104 - यीशु लोगों को सिखाता है। साइमन के घर में एक दावत में भाग लेता है। एक धनी गणिका बहुमूल्य बाम से उसका अभिषेक करती है। शमौन उसे डांटता है और वह झूठे सम्मान पर एक धर्मोपदेश का प्रचार करता है।

अध्याय 105 - कई धनी महिलाओं के संरक्षण में, क्रिस्टीन एक भव्य मिशनरी यात्रा करते हैं। अपने शिक्षण में, यीशु ने ईमानदारी की प्रशंसा की और पाखंड को फटकार लगाई। वह पवित्र सांस के खिलाफ पाप के बारे में बोलता है।

अध्याय 106 - क्रिस्टीन मगदला में हैं। यीशु एक ऐसे व्यक्ति को चंगा करता है जो अंधा, गूंगा और जुनूनी था। वह लोगों को पढ़ाते हैं। जब वह बोलता है, उसकी माता, भाई और मरियम उसके पास आते हैं। वह पारिवारिक संबंधों पर सबक सिखाता है। वह मरियम को लोगों से मिलवाता है, और वह अपनी जीत के गीत गाती है।

अध्याय 107 - एक फरीसी यीशु से अपने मसीहा होने के चिन्हों की माँग करता है। यीशु उसे डांटते हैं क्योंकि वह उन चिन्हों को नहीं पहचानता जो लगातार दिए जा रहे हैं। यीशु लोगों को प्रकाश प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं ताकि वे प्रकाश बन सकें।

अध्याय 108 - यीशु ने लोगों को स्वार्थ के लिए फटकार लगाई। क्रिस्टीन एक दावत में शामिल होते हैं, और फरीसी द्वारा यीशु की निंदा की जाती है क्योंकि वह खाने से पहले नहीं धोता था। यीशु शासक वर्गों के पाखंड का पर्दाफाश करते हैं और उन पर अनेक विपत्तियां सुनाते हैं।

अध्याय 109 - क्रिस्टीन प्रार्थना करने के लिए अलग जगह पर जाते हैं। यीशु ने उन्हें फरीसियों के खमीर के विरुद्ध चेतावनी दी और इस तथ्य को प्रकट किया कि सभी विचार और कार्य परमेश्वर की स्मरण की पुस्तक में दर्ज हैं। मनुष्य की जिम्मेदारी और भगवान की देखभाल।

अध्याय 110 - मरियम विजय का गीत गाती है। गीत। यीशु ने मिस्र से कनान तक इस्राएल की यात्रा के प्रतीकात्मक चरित्र को प्रकट किया।

अध्याय 111 - यीशु सिखाते हैं। एक आदमी उससे अनुरोध करता है कि वह अपने भाई को उचित व्यवहार करने के लिए मजबूर करे। यीशु ने ईश्वरीय नियम, सत्य की शक्ति और संपत्ति की सार्वभौमिकता को प्रकट किया। अमीर आदमी के दृष्टांत और उसकी भरपूर फसल से संबंधित है।

अध्याय 112 - मैग्डाला की मैरी के घर में क्रिस्टीन। यीशु अपने शिष्यों को "छोटा झुंड" कहते हैं और उन्हें अपने प्रेम को ईश्वरीय चीजों पर रखने का आरोप लगाते हैं। वह उन्हें आंतरिक जीवन के बारे में सिखाता है।

अध्याय 113 - लामाओं के एक प्रश्न के उत्तर में, यीशु ने शांति के शासन और विरोधों के माध्यम से उसके रास्ते पर एक पाठ पढ़ाया। समय के लक्षण। पवित्र सांस का मार्गदर्शन। क्रिस्टीन बेथसैदा जाते हैं।

अध्याय 114 - समुद्र पर एक बड़ा तूफान कई जिंदगियों को तबाह कर देता है। यीशु मदद के लिए याचना करता है, और लोग उदार हाथ से देते हैं। एक वकील के प्रश्न के उत्तर में यीशु आपदाओं का दर्शन देते हैं।

अध्याय 115 - यीशु समुद्र के किनारे शिक्षा देते हैं। वह बोने वाले का दृष्टान्त बताता है। बताता है कि वह दृष्टान्तों में क्यों सिखाता है। बोने वाले के दृष्टान्त की व्याख्या करता है। गेहूँ और तारे के दृष्टान्त से संबंधित है।

अध्याय 116 - क्रिस्टीन फिलिप के घर में हैं। यीशु गेहूँ और तारे के दृष्टान्त की व्याख्या करता है। वह दृष्टान्तों द्वारा राज्य के विस्तार की व्याख्या करता है: अच्छा बीज; पेड़ की वृद्धि; खमीर; छिपा हुआ खजाना। वह एक पहाड़ पर जाता है

अध्याय 117 - माचेरस में एक शाही दावत का आयोजन किया जाता है। जॉन, अग्रदूत, का सिर कलम कर दिया जाता है। उसका शरीर हेब्रोन में दफनाया गया है। उनके शिष्य विलाप करते हैं। क्रिस्टीन रात में समुद्र पार करती हैं। यीशु एक प्रचंड तूफान को शान्त करता है।

अध्याय 118 - क्रिस्टीन गदरा में हैं। यीशु ने एक मनुष्य में से अशुद्ध आत्माओं का एक जत्था निकाल दिया। आत्माएं शातिर जानवरों में चली जाती हैं जो समुद्र में दौड़ते हैं और डूब जाते हैं। लोग डर में हैं और यीशु से अपना तट छोड़ने का अनुरोध करते हैं। वह अपने शिष्यों के साथ कफरनहूम लौट जाता है।

अध्याय 119 - कफरनहूम के लोग यीशु का स्वागत करते हैं। मैथ्यू एक दावत देता है। फरीसियों ने यीशु को पापियों के साथ खाने के लिए फटकार लगाई। वह उन्हें बताता है कि उसे पापियों को बचाने के लिए भेजा गया है। वह उपवास और अच्छे और बुरे के दर्शन पर सबक देता है।

अध्याय 120 - नीकुदेमुस दावत में है। वह यीशु से पूछता है, क्या यहूदी सेवा में सुधार करके क्रिस्टीन धर्म को अधिक सफलतापूर्वक पेश नहीं किया जा सकता है? यीशु नकारात्मक में उत्तर देता है और अपने कारण बताता है। यीशु एक महिला को रक्तस्राव से चंगा करता है। याईर की बेटी को चंगा करता है। गायब हो जाता है जब लोग उसकी पूजा करेंगे।

अध्याय 121 - क्रिस्टीन नासरत में हैं। मरियम स्तुति का एक क्रिस्टीन गीत गाती है। यीशु आराधनालय में पढ़ाते हैं। वह एक गूंगे आदमी को ठीक करता है जो जुनूनी है। लोग उस पर विश्वास नहीं करते हैं। फरीसी उसे बील्जेबूब का औजार कहते हैं। क्रिस्टीन काना जाते हैं।

अध्याय 122 - क्रिस्टीन सात दिन प्रार्थना में बिताते हैं। यीशु ने बारहों को अपना कार्यभार दिया और उन्हें कफरनहूम में उनसे मिलने के निर्देश के साथ उनकी प्रेरितिक सेवकाई पर भेज दिया।

अध्याय 123 - यीशु अपना अंतिम प्रभार विदेशी आकाओं को देते हैं और उन्हें प्रेरितों के रूप में दुनिया में भेजते हैं। वह अकेला सोर के पास जाता है और राहेल के घर में रहता है। एक जुनूनी बच्चे को ठीक करता है। सीदोन और फिर लबानोन के पहाड़ों को जाता है। माउंट हेर्मोन, कैसरिया-फिलिप्पी, डेकापोलिस, गदारा का दौरा किया और कफरनहूम लौट आया। बारह प्राप्त करते हैं, जो अपने काम का लेखा-जोखा देते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 2/खंड XVII

PE

अध्याय 124 - 158

यीशु के क्रिस्टीन मंत्रालय का तीसरा वार्षिक युग

अध्याय 124	अध्याय 125	अध्याय 126	अध्याय 127	अध्याय 128	अध्याय 129	अध्याय 130
अध्याय 131	अध्याय 132	अध्याय 133	अध्याय 134	अध्याय 135	अध्याय 136	अध्याय 137
अध्याय 138	अध्याय 139	अध्याय 140	अध्याय 141	अध्याय 142	अध्याय 143	अध्याय 144
अध्याय 145	अध्याय 146	अध्याय 147	अध्याय 148	अध्याय 149	अध्याय 150	अध्याय 151
अध्याय 152	अध्याय 153	अध्याय 154	अध्याय 155	अध्याय 156	अध्याय 157	अध्याय 158

अध्याय 124 - क्रिस्टीन समुद्र को पार करती हैं। यीशु ने अपने शिष्यों को गुप्त सिद्धांतों का पाठ पढ़ाया। लोगों को पढ़ाते हैं। पांच हजार खिलाता है। शिष्य समुद्र को फिर से पार करने लगते हैं। एक तूफान उठता है। यीशु, पानी पर चलते हुए, उनके पास आते हैं। पतरस के विश्वास का परीक्षण। वे गेनेसेरेट में उतरते हैं।

अध्याय 125 - गेनेसारेट में क्रिस्टीन का स्वागत किया जाता है। कई रोटियों और मछलियों के लिए यीशु का अनुसरण करते हैं। वह उन्हें जीवन की रोटी के बारे में बताता है। जीवन की रोटी और पानी के प्रतीक के रूप में अपने मांस और रक्त की बात करता है। लोग नाराज हैं और उनके कई शिष्य अब उनका अनुसरण नहीं करते हैं।

अध्याय 126 - शास्त्री और फरीसी यीशु के पास जाते हैं। वे उसे बिना हाथ धोए खाने के लिए निंदा करते हैं। वह अपने कृत्यों का बचाव करता है और पाखंड पर एक सबक सिखाता है। निजी तौर पर बारह को उनकी सार्वजनिक शिक्षाओं के बारे में बताते हैं।

अध्याय 127 - क्रिस्टीन समुद्र को पार करके डेकापोलिस तक जाती है। यीशु को एक सेवानिवृत्त स्थान मिलता है जहाँ वह बारह को निजी तौर पर सिखाता है। वे तीन दिन रहते हैं, फिर समुद्र के किनारे एक गाँव में चले जाते हैं।

अध्याय 128 - यीशु रात में एक पहाड़ पर प्रार्थना करने जाते हैं। उनके शिष्य और गांव वाले उन्हें ढूंढते हैं और वह उन्हें तीन दिनों तक पढ़ाते हैं। चार हजार लोगों को खाना खिलाते हैं। क्रिस्टीन कैसरिया-फिलिपी जाते हैं। वे मसीह के व्यक्तित्व पर विचार करते हैं। पतरस को प्रेरितिक नेता चुना गया है।

अध्याय 129 - यीशु लोगों को सिखाता है। वह पतरस, याकूब और यूहन्ना को लेकर एक ऊँचे पहाड़ पर जाता है और उनके सामने उसका रूपान्तर किया जाता है।

अध्याय 130 - यीशु और तीन शिष्य कैसरिया-फिलिप्पी लौट आए। नौ एक मिरगी के बच्चे को ठीक करने में विफल रहे थे। यीशु ने बच्चे को चंगा किया और अपने शिष्यों को परमेश्वर में विश्वास की कमी के लिए फटकार लगाई। क्रिस्टीन कफरनहूम लौट आए।

अध्याय 131 - यीशु और पतरस ने आधा शेकेल कर का भुगतान किया। शिष्य सर्वोच्चता के लिए संघर्ष करते हैं। यीशु उन्हें डांटता है। उन्हें कई व्यावहारिक पाठ पढ़ाते हैं। अच्छे चरवाहे का दृष्टान्त।

अध्याय 132 - यीशु एक ऐसे व्यक्ति का बचाव करता है जिसे रोटी चोरी करने का दोषी ठहराया गया है। फैसला उलट जाता है। आदमी मुक्त हो जाता है, और लोग उसके भूखे परिवार की जरूरतों को पूरा करते हैं।

अध्याय 133 - बारह यरूशलेम में भोज में जाते हैं, लेकिन यीशु कफरनहूम में रहता है। वह सत्तर शिष्यों को चुनता है और उन्हें सिखाने और चंगा करने के लिए भेजता है। वह अकेले दावत में जाता है और रास्ते में दस कोढियों को चंगा करता है। वह मंदिर में पढ़ाते हैं।

अध्याय 134 - यीशु मंदिर में उपदेश देते हैं। उनकी बातों से शासकों में रोष है। नीकुदेमुस उसका बचाव करता है। वह जैतून पर्वत पर प्रार्थना में रात बिताता है। अगले दिन वह फिर से मंदिर में पढ़ाता है। एक व्यभिचारिणी को उसके सामने न्याय के लिए लाया जाता है।

अध्याय 135 - यीशु मंदिर में उपदेश देते हैं। वह क्रिस्टीन मंत्रालय के कुछ गहरे अर्थों को प्रकट करता है। शासक बहुत क्रोधित होते हैं और उस पर पथराव करने का प्रयास करते हैं, लेकिन वह गायब हो जाता है।

अध्याय 136 - यीशु मंदिर में उपदेश देते हैं। अच्छे सामरी के दृष्टान्त से संबंधित है। बेथानी जाता है। लाजर के घर में पढ़ाता है। इस जीवन की चीजों के बारे में चिंता के लिए मार्था को फटकार लगाता है।

अध्याय 137 - यीशु और उनके शिष्य प्रार्थना करने के लिए एक सेवानिवृत्त स्थान पर जाते हैं। यीशु लाजर को प्रार्थना करना सिखाता है। आदर्श प्रार्थना। महत्वपूर्ण प्रार्थना का मूल्य। महत्वहीन गृहिणी का दृष्टान्त।

अध्याय 138 - यरूशलेम में क्रिस्टीन। वे जन्म से अंधे व्यक्ति से मिलते हैं। यीशु रोग और विपत्तियों के कारणों पर एक पाठ पढ़ाते हैं। वह अंधे को चंगा करता है।

अध्याय 139 - यीशु उस व्यक्ति से मिलते हैं और निर्देश देते हैं जो अंधा था। राज्य के रहस्यों को उजागर करता है। भेड़शाला। खुद को चरवाहा घोषित करता है। मस्सालियन के घर जाता है, जहाँ वह कुछ दिनों तक रहता है।

अध्याय 140 - यीशु और तीन शिष्य कफरनहूम लौटते हैं। यीशु को सत्तर की रिपोर्ट प्राप्त होती है। अपने शिष्यों के साथ वह विश्वासियों को प्रोत्साहित करते हुए सभी गलील में जाता है। वह एक महिला को ठीक करता है। छोटे बीज और महान वृक्ष के दृष्टांत से संबंधित है।

अध्याय 141 - यीशु प्रोत्साहन के शब्द बोलते हैं। एक आधिकारिक फरीसी को डांटता है। शादी समारोह में शामिल होता है। एक ड्रॉप्सिकल आदमी को ठीक करता है। मुख्य सीटों की तलाश करने वाले मेहमानों को फटकार लगाते हैं। एक शादी की दावत के एक दृष्टांत से संबंधित है।

अध्याय 142 - शिष्यत्व का मार्ग, उसकी कठिनाइयाँ। क्रॉस और उसका अर्थ। धन का खतरा। वह युवक जो मसीह से भी अधिक धन से प्रेम करता था। धनी व्यक्ति और लाजर का दृष्टान्त।

अध्याय 143 - पुरस्कारों में धार्मिकता। यीशु ने किसान और मजदूरों के दृष्टान्त का वर्णन किया। तलाक के दैवीय नियम से अवगत कराता है। शादी का रहस्य।

अध्याय 144 - तिबेरियस में क्रिस्टीन। यीशु आंतरिक जीवन पर बोलते हैं। उड़ाऊ पुत्र के दृष्टान्त से संबंधित है। बड़े भाई की नाराजगी।

अध्याय 145 - यीशु क्रिस्टीन राज्य की स्थापना और भविष्य में प्रभु के सत्ता में आने पर बोलते हैं। वफादारी का आह्वान करता है। अन्यायी न्यायाधीश का दृष्टान्त। फरीसी और चुंगी लेने वाले का दृष्टान्त।

अध्याय 146 - गलील में अपने शिष्यों के साथ यीशु की अंतिम मुलाकात। मरियम स्तुति का गीत गाती है। गीत। क्रिस्टीन यरूशलेम के लिए अपनी यात्रा शुरू करते हैं। वे एनॉन स्प्रिंग्स में आराम करते हैं। जेम्स और जॉन की मां का स्वार्थी अनुरोध। क्रिस्टीन यरूशलेम पहुँचे।

अध्याय 147 - यीशु मंदिर में लोगों से मसीहा के बारे में बात करते हैं। यहूदियों को विश्वासघात के लिए फटकार लगाता है। यहूदी उसे पथराव करने का प्रयास करते हैं लेकिन यूसुफ द्वारा रोका जाता है। क्रिस्टीन यरीहो जाते हैं, और बाद में बेथाबारा जाते हैं।

अध्याय 148 - लाजर मर जाता है और यीशु और बारह बैतनिय्याह लौट जाते हैं। लाजर का पुनरुत्थान, जो यरूशलेम के शासकों को बहुत उत्साहित करता है। क्रिस्टीन एप्रैम की पहाड़ियों पर जाते हैं, और वहीं रहते हैं।

अध्याय 149 - यहूदी जेरूसलम में दावत में शामिल होने के लिए इकट्ठा होते हैं। क्रिस्टीन जेरिको जाते हैं। यीशु ने जक्कई के साथ भोजन किया। वह दस प्रतिभाओं के दृष्टांत से संबंधित है।

अध्याय 150 - यीशु ने नेत्रहीन बरतिमाई को चंगा किया। बारह के साथ वह बैतनिय्याह को जाता है। भीड़ उसका स्वागत करने और लाजर से बात करने के लिए आती है।

अध्याय 151 - यीशु आराधनालय में शिक्षा देते हैं। यरूशलेम में अपना विजयी प्रवेश करता है। लोगों की भीड़, बच्चों के साथ, उसकी स्तुति गाती है, और कहती है, राजा को होस्ना! क्रिस्टीन बेथानी लौट आए।

अध्याय 152 - यीशु ने एक बंजर अंजीर के पेड़ को डांटा। व्यापारियों को मंदिर से भगा दिया। लोगों को पढ़ाते हैं। बेथानी को लौटें।

अध्याय 153 - क्रिस्टीन यरूशलेम जाते हैं। वे सूखे अंजीर के पेड़ पर ध्यान देते हैं; इसका प्रतीकात्मक अर्थ। यीशु मंदिर में शिक्षा देते हैं। पुजारियों द्वारा निंदा की जाती है। एक अमीर आदमी की दावत का दृष्टांत बताता है।

अध्याय 154 - यीशु मंदिर के दरबार में उपदेश देते हैं। गृहस्थ और दुष्ट किसानों का दृष्टान्त। शादी की दावत का दृष्टांत और बिना शादी के मेहमान।

अध्याय 155 - यीशु ने धर्मनिरपेक्ष करों का भुगतान करने के न्याय को मान्यता दी। वह आगे के जीवन में पारिवारिक रिश्तों का पाठ पढ़ाते हैं। सबसे बडी आज्ञा प्रेम में समाहित है। वह अपने शिष्यों को शास्त्रियों और फरीसी के पाखंड के खिलाफ चेतावनी देता हैएस।

अध्याय 156 - शास्त्री और फरीसी क्रोधित हैं। यीशु ने उन्हें उनके पाखंड के लिए फटकार लगाई। वह यरूशलेम पर विलाप करता है। विधवा की टिकिया। यीशु मंदिर में लोगों को अपना विदाई भाषण देते हैं।

अध्याय 157 - जैतून पर्वत पर क्रिस्टीन। यीशु यरूशलेम के विनाश, और भयानक आपदाओं की भविष्यवाणी करते हैं जो युग के अंत को चिह्नित करेंगे। वह अपने शिष्यों को विश्वासयोग्यता के लिए प्रेरित करता है।

अध्याय 158 - ओलिवेट में प्रार्थना के समय यीशु और बारह। यीशु अपने शिष्यों को गुप्त सिद्धांतों के गहरे अर्थ बताते हैं। वह उन्हें बताता है कि लोगों को क्या सिखाना है। कई दृष्टांतों का संबंध है। वे बेथानी लौट जाते हैं।

सामग्री - भाग 3

परीक्षण/निष्पादन/पुनरुत्थान/चर्च

33 साल की उम्र में यीशु

खंड XVIII से XXII

(अध्याय 159 - 182)

भाग 3/धारा XVIII

TZADDI

अध्याय 159 - 164

विश्वासघात और यीशु की गिरफ्तारी

अध्याय 159	अध्याय 160	अध्याय 161	अध्याय 162	अध्याय 163	अध्याय 164

अध्याय 159 - क्रिस्टीन साइमन के घर में एक भोज में शामिल होते हैं। मरियम एक महँगे बाम से स्वामी का अभिषेक करती है, और यहूदा और अन्य लोग उसे लापरवाही के लिए डाँटते हैं। यीशु उसकी रक्षा करता है। यहूदियों के शासक यीशु को गिरफ्तार करने के लिए हनन्याह को नियुक्त करते हैं। हनन्याह ने मदद के लिए यहूदा को रिश्वत दी

अध्याय 160 - यीशु और बारह नीकुदेमुस के घर में अकेले फसह खाते हैं। यीशु ने चेलों के पैर धोए। यहूदा मेज छोड़ देता है और प्रभु को धोखा देने के लिए आगे निकल जाता है। यीशु ग्यारह सिखाता है। वह प्रभु भोज की स्थापना करता है।

अध्याय 161 - यीशु ग्यारह को सिखाता है। उन से कहता है, कि वे सब उस से अलग हो जाएंगे, और पतरस भोर से पहिले तीन बार उसका इन्कार करेगा। वह प्रोत्साहन के अंतिम शब्द बोलता है।

दिलासा देने वाला वादा करता है

अध्याय 162 - यीशु ने पवित्र श्वास के मिशन को पूरी तरह से प्रकट किया। अपने शिष्यों को स्पष्ट रूप से बताता है कि वह मरने वाला है, और वे दुखी हैं। वह उनके लिए और विश्वासियों की सारी दुनिया के लिए प्रार्थना करता है। वे बैंक्वेट हॉल से निकल जाते हैं।

अध्याय 163 - यीशु पीलातुस से मिलने जाता है, जो उसे अपने जीवन को बचाने के लिए देश से भागने का आग्रह करता है। यीशु ने ऐसा करने से इंकार कर दिया। वह मस्सालियन के बाग में अपने शिष्यों से मिलता है। गेथसमेन में दृश्य। यहूदा के नेतृत्व में यहूदी भीड़ निकट है।

अध्याय 164 - यहूदा अपने प्रभु को चुम्बन से धोखा देता है। भीड़ ने यीशु को पकड़ लिया और चेले अपनी जान बचाने के लिए भाग गए। यीशु को यरूशलेम ले जाया गया। पीटर और जॉन भीड़ का अनुसरण करते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 3/धारा XIX

KOPH

अध्याय 165 - 171

यीशु का परीक्षण और निष्पादन

अध्याय 165	अध्याय 166	अध्याय 167	अध्याय 168	अध्याय 169	अध्याय 170	अध्याय 171

अध्याय 165 - कैफा के सामने यीशु। पतरस ने अपने प्रभु का तीन बार इन्कार किया। सात सत्तारूढ यहूदियों द्वारा हस्ताक्षरित अभियोग। सौ झूठे गवाह आरोपों की सच्चाई की गवाही देते हैं।

अध्याय 166 - महासभा के सामने यीशु। नीकुदेमुस न्याय की याचना करता है; वह गवाहों की अक्षमता को दर्शाता है। परिषद यीशु को दोषी घोषित करने में विफल रहती है, लेकिन कैफा, पीठासीन न्यायाधीश, उसे दोषी घोषित करता है। भीड़ यीशु के साथ दुर्व्यवहार करती है। उसे पिलातुस के दरबार में ले जाया जाता है।

अध्याय 167 - पीलातुस के सामने यीशु। दोषी नहीं बताया गया है। हेरोदेस के सामने यीशु और अत्याचार किया गया और पीलातुस के पास लौट आया, जो उसे फिर से निर्दोष घोषित करता है। यहूदी उसकी मौत की मांग करते हैं। पीलातुस की पत्नी ने अपने पति से यीशु की सजा से कोई लेना-देना नहीं करने का आग्रह किया। पिलातुस रोता है।

अध्याय 168 - यीशु को रिहा करने के लिए पिलातुस का अंतिम प्रयास विफल हो गया। वह नकली मासूमियत में हाथ धोता है। यहूदियों को फांसी के लिए यीशु को बचाता है। यहूदी सैनिक उसे कलवारी ले गए।

अध्याय 169 - यहूदा पछतावे से भर गया। मन्दिर को फुर्ती से चांदी के तीस टुकड़े याजकों के पांवों पर फेंक देते हैं, जो उसे लेकर कुम्हार का खेत मोल लेते हैं। यहूदा ने फांसी लगा ली। उसका शव कुम्हार के खेत में दफनाया गया है।

अध्याय 170 - सूली पर चढाया जाना। यीशु अपने हत्यारों के लिए प्रार्थना करता है। पीलातुस क्रूस के ऊपर एक शिलालेख लगाता है। यीशु पश्चातापी चोर को प्रोत्साहन के शब्द बोलते हैं। जॉन को अपनी मां और मरियम की देखभाल करने के लिए प्रतिबद्ध करता है। सिपाहियों ने उसके कपडे आपस में बाँट लिए।

अध्याय 171 - सूली पर चढ़ाए जाने के दृश्यों का समापन। यूसुफ और नीकुदेमुस, पीलातुस की सहमति से, यीशु के शरीर को क्रूस से उठाकर यूसुफ की कब्र में रख देते हैं। कब्र के चारों ओर एक सौ यहूदी सैनिकों के पहरेदार रखे गए हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 3/धारा XX

RESH

अध्याय 172

यीशु का पुनरुत्थान

अध्याय 172

अध्याय 172 - पीलातुस ने कब्र के पत्थर के दरवाजे पर रोमन मुहर लगाई। आधी रात को मूक भाइयों की एक टोली कब्र के चारों ओर मार्च करती है। सिपाही घबराए हुए हैं। यीशु जेल में आत्माओं को उपदेश देता है। रविवार की सुबह जल्दी वह कब्र से उठता है। पुजारियों द्वारा सैनिकों को यह कहने के लिए रिश्वत दी जाती है कि शिष्यों ने शरीर को चुरा लिया था।

भाग 3/धारा XXI

SCHIN

अध्याय 173 - 180

यीशु के आध्यात्मिक शरीर का भौतिककरण

अध्याय 173	अध्याय 174	अध्याय 175	अध्याय 176
अध्याय 177	अध्याय 178	अध्याय 179	अध्याय 180

अध्याय 173 - यीशु अपनी माता, मरियम, मगदला की मरियम और पतरस, याकूब और यूहन्ना के सामने प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक।

अध्याय 174 - जब वे एम्माउस की यात्रा करते हैं, तो यीशु जचुस और क्लियोफास के सामने पूरी तरह से प्रकट होते हैं, लेकिन वे उसे नहीं जानते। वह उन्हें मसीह के बारे में बहुत सी बातें बताता है। वह उनके साथ शाम का खाना खाता है और खुद को उनके सामने प्रकट करता है। वे यरूशलेम को जाते हैं और कहते हैं

अध्याय 175 - यीशु प्रकट होता है, शमौन के घर में दस प्रेरितों और लाजर और उसकी बहनों के लिए पूरी तरह से भौतिक।

अध्याय 176 - भारत में राजकुमार रावण के महल में पूर्वी ऋषियों के सामने यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक; फारस में जादूगर पुजारियों के लिए। तीन बुद्धिमान लोग नासरी के व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हैं।

अध्याय 177 - यीशु पूरी तरह से भौतिक रूप में, यरूशलेम के मंदिर में प्रकट होते हैं। यहूदियों के शासकों को उनके पाखंड के लिए फटकार लगाते हैं। उनके सामने खुद को प्रकट करता है और वे डर में वापस गिर जाते हैं। वह शमौन के घर में प्रेरितों को दिखाई देता है। थॉमस आश्वस्त है।

अध्याय 178 - यूनान में अपोलो और साइलेंट ब्रदरहुड के सामने यीशु प्रकट होता है, पूरी तरह से भौतिक। क्लॉडस और जूलियट को रोम के पास तिबर पर दिखाई देता है। हेलियोपोलिस में मिस्र के मंदिर में याजकों को दिखाई देता है।

अध्याय 179 - यीशु गलील के समुद्र में प्रेरितों के सामने, पूरी तरह से भौतिक रूप में प्रकट होते हैं। बड़ी संख्या में लोगों को दिखाई देता है। अपने प्रेरितों को फिर से यरूशलेम जाने के लिए कहता है और वह उनसे वहीं मिलेगा।

अध्याय 180 - यीशु यरूशलेम में प्रेरितों के लिए, पूरी तरह से भौतिक रूप में प्रकट होते हैं। उन्हें अपने निर्देश देता है। उन्हें पिन्तेकुस्त पर उनके काम के लिए एक विशेष बंदोबस्ती का वादा करता है। जैतून पर्वत पर जाता है और कई शिष्यों की दृष्टि में स्वर्ग में चढ़ते हैं। चेले यरूशलेम को लौट जाते हैं।

अवलोकन पर वापस जाएं

भाग 3/धारा XXII

TAU

अध्याय 181 - 182

क्रिस्टीन चर्च की स्थापना

अध्याय 181	अध्याय 182

अध्याय 181 - यहूदा के दलबदल से खाली हुई जगह को भरने के लिए ग्यारह प्रेरितों ने मथायस को चुना। क्रिस्टीन खुश हैं। मरियम स्तुति का गीत गाती है। प्रेरितिक रोस्टर।

अध्याय 182 - पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाएँ। प्रेरितों की बंदोबस्ती। क्रिस्टीन चर्च की स्थापना की। पतरस परिचयात्मक उपदेश का प्रचार करता है। उपदेश। तीन हजार लोगों ने बपतिस्मा लिया और चर्च के सदस्य बन गए।

सार्वजनिक डोमेन - प्रकाशन सूचना

--सर्वाधिकार सुरक्षित। यह पीडीएफ शैक्षिक उद्देश्यों के लिए तैयार किया गया है--

लेवी एच। डॉउलिंग द्वारा द एक्वेरियन गॉस्पेल ऑफ जीसस द क्राइस्ट मूल रूप से 1908 में लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया में प्रकाशित हुआ था।

एडवेंचर्स अनलिमिटेड प्रेस द्वारा प्रकाशित 1996 के संस्करण के शीर्षक पृष्ठ में, यह कहा गया है:

"यह पुस्तक सार्वजनिक डोमेन में है और इसमें निहित सामग्री के किसी भी पुनरुत्पादन के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है।"

आप नीचे दिए गए लिंक पर हमारे नवीनतम ऑनलाइन और पीडीएफ संस्करण पा सकते हैं:https://theaquariangospel.yolasite.com

यह पीडीएफ संस्करण तैयार किया गया था और इसे नियमित रूप से अपडेट किया जाता हैएक्वेरियन थंडर प्रोडक्शंस™

हम इस पीडीएफ प्रारूप को पुन: प्रस्तुत कर रहे हैं

लेवी एच. डाउलिंग द्वारा ईसा मसीह का एक्वेरियन गॉस्पेल

आखरी अपडेट:Thursday, July 28, 2022

कृपया अद्यतन संस्करणों के लिए वापस देखें

—यह पीडीएफ बिक्री के लिए नहीं है—